॥ ... चुगा ल्यगत
॥वपरेरवेसेरी चले
॥नेमुरगीरी रोगारी
॥जर दीन्हेनेमीमेसुन
॥नरागेयछेवेनबरी
॥मनमन्नावरारेनेनेक
॥वरमन्नोनास्तरनबे
॥नेबवाकरोनेस्यान्न
॥नेनन्नेवस्तन्चुगाने
॥नवराबोरीबोरीक
॥नुराकपुरजायफ
॥नजावनरीकेसर

ने ऊनाला
मेवानररा
काकनीरा
बीजचार
रा।

हरितरडेभाजरीविध
अफ्प्रसाढरडेंपीढुलीनरांका दाबमैलगोलीट
सावणभादवेरडेसोधीउणट १अमाणलीजे
आसोजकातीरडेसाकरट १अमाणलीजे
मागसिरपोसरडेसुठिट १गमाणलीजे
माहफागुणरडेपीपलिट १लीजे
चैतवैसाषरडेटांक १मसतराकरलीजे

नावरागरागनीघ्रतपराजुकयकनीफुटकरवातीजस
रागाछोजवीइनेकनेकयेवेइ१४७३पूरो रागा

पीगत

दीतवार
भेरागतले गोरतवी
देवदोतटी केसु
जेगीमइ वालो
पाकंटइ परवाय
नवनीले नातीकरागसा
फुटे
वाहरागतबीरो

सोमवार
इगायेनो इगायरी
मथराग गायरो गोकुलरगायेरो
हथीरीमइ वांधर्द
मोतीपरकव कलगारीरी
गोयेल जन
कलमुकोकनी
टीको
वाहरागतबीरो

मंगलवार
वालो रेजन
वालोझालो जाकुलमाफल
यामागीपुरु हीमइ
नाघबारोमोर बहारीमीजी
मोनेमव वाहरागमएनी

बुदवार
मयुरागकुलगायरो वाहोविष नारंगी
गवरबंदे खोजमो
सोहमुलाम केमपुटे वाहरागमारीन वावरायधानर
माटरी

गुरवार
जावतरी यीजाव
महीरंपव बुधा
जेगीमइ मारगहेमाई
वाहरागपनी
कुकजाभगछत्री
तेवरे

शुक्रवार
लोकापुरबी मेरागवले
वालो वीजोरो
मुलानल केदार
कुपाराग मंपीनावली

शनीवार
तलझातो छालीमीइ
छालीनीहुइ वपाको
नटारमाथ लोहेनीरुबे
रगामालकोसमधोनाव राग

सोठतन
कोइ मोव तलयोला
पनदन माथु जनम
केपुर वालो नगा
यानाक लगणबिनन

कोतवन
भाबाज खदर मोषा
मोर
डेरवा कोइ मामच
बागीरा जवनीक राखर
क कपुर
वालो पुष्प

यागरागपरकम्नजनवी
गनवानराग:मन्नजन
कमराग:मोता
मलजवाइवनपुर
तेनअभरागीइद्ध
रागीआगीपीना
वेवरंताइप्री
रागवरलागर
नहवाचंदन
वानचनकीरी

॥६०॥श्रीरामोजयति॥श्रीसारदायनमः॥श्रीगणेसायनम॥श्रीबाल्मीकं
यनम॥श्रीसरबदेवायनम॥ अथश्रीअवतारचरित्रचौवीसअवताराकीक
थाबरननं॥ नाभाकारहटनरहरदासेनविरचितं॥बासनेरुद्र॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥गुनसाटक॥अथप्रथमश्रीगणेसस्तुतिबरननं॥ ॥सूंडाकुं
प्रचंडमेकरदनमदगंधगल्लसिथलं॥सिंदूरारुणकुंभमंडितमुषलंगसगुंज
रवं॥येपरसकरधारसारसगणं प्रारंभअग्रेसुरं॥तंसमतंदबुधिसेवसफलंब
रदायलंबोदरं॥१॥अथश्रीसरस्वतीअसतुतिबरननं॥ याधवलंगिर
बासबेष बरनीहंसबरंबोहनी॥याधवलंअवतंसअंगअमलंकरबीनबं
नीबर॥याधवलंबसना॥बिसालनयनीस्यामंचसरलंकचा॥सामनुकंप
सरस्वतीसुबदना॥विद्याबरदायनी॥२॥अथश्रीगुरदेवस्तुतिबरननं॥
येप्रथमगुरदेवसेवसुरदेविद्याप्राप्यामिहं॥श्रीमतुजन्तुसुदीक्तंगिर
धरंतस्रसारदेवसांतदिष्ट्वं सतपंथकाविकरणंविघनस्य हरनंपरं॥श्रीसु
रसेविपदारविंदेविमलसरनागतंथाम्यहं॥३॥गुण आरज्या॥गनप
तिगहरज्ञानगुनअप्पन॥सरसतिसुहतिसुमतिसमप्पन॥गुरपरसादप्र
स्फुरज्ञानो॥कृतनावजुगजुगतिबषानं॥४॥छंदपधरी॥ इकसमयसे
षसज्यासमान॥हरिसयनकरतबलअप्रमान॥अरिभुवनचतुरदसउद
रबास॥सोनयेसेषसज्यानिवास॥बहुकालनयेतिहिगबितीत॥मनमे
हरहतमायाअजीत॥बिसतारबिस्वकारनबिषात॥परब्रह्मनएजाग
रतप्रात॥अथश्रीप्रथमब्रह्मअवतारउतपतिबरननं॥कबित्त॥ह
रिथरतचितलीलाम्यान॥चतुराननउपजेनानिधान॥बिधिनएप्रजाप
तिअतिप्रतिष्ठ॥लोअनतनएमानसीश्रिष्टि॥नवदिभ्रबीजनिरमांनकीन॥
बरबदतनिसमाषानवीन॥नगगनतेजजलवायुजांन॥मनकलहस
तिपरमातसान॥जुगचारिबेबुधिबलनिदान॥क्रत-त्रेता-द्वापुरक
लिप्रमांन॥प्रगटेजुप्रथमकलिजुगपुनीत॥क्रमजुकतनएपरब्रह्म
मीत॥सतत्रेताद्वापुरजुगसुन्तारा॥त्रयप्रनतएएकधरमहिसहारा॥नहाब
देधरमनांतिनअनेक॥सतसीलसुक्रतबिद्याबिबेक॥तिहिसमय
धरमचलिचऊपारा॥सबिसेषरिषनिबरन्योबनारा॥त्रयजुगनिसहज
मनएकरीति॥कलिजुधनयेरबिपृथ्वीकीति॥मनथपहित्रिजुगकलि
करहिषंक॥बिपरीतबिरुधंबादअषंक॥इकओरत्रिजुगकलिएक॥

अप॰ समतानेंहीपावतदुष बियाप॥कलिरहेसाजिकऊभेंनथांन॥बिनुसम
यरथकरिबेबिधांन॥दूहा॥ कलिकेसंगीकलिबिनं॥हीयबिभ्रदुति
हीन॥तरफरातअतिजितहितिन॥जोंबिनुनीरहिमीन॥१॥ छंदपधरी॥नव
नएषीनदुतिदुषितपाप॥भयरोगउपजिउरसहिनदाप॥उतमदवारपाव
हिनजांन॥उरपारंसलबाटअमांन॥अकुलरपापनयेसोकलीन॥कलिसं
नजोंउयहमंत्रकीनं॥ दूहा॥ जिहिरांनीनिरलजत॥जाकेअपजसप्र
ता॥कलिसोराजअोरके॥मंत्रीकपटअनूत॥१॥यहसमाजकलिकेंसमु
गि॥अरूआपनेंसुनारा॥सफलकरनअभिलषसब॥कीनेंगवनबजारा॥
॥छंदपधरी॥कलिहारपुकास्योंअोनिपाप॥सरनगतपावेअनयछाप॥प्र
तिहारतबहिंसुदरेप्रमांन॥कोउदीनपुकारतद्वारथांन॥तीनोंहकारि
हियलसमीप॥थितसिंघासननृपकलिहथीप॥सादरनिहारअवतनुप
प॥नहरारसनासमउगेआप॥ दूहा॥ कलिकोंअयबंदनकरो॥बेगक
रईबताय॥सतानिहारिबिचारितब॥अंतरबेगेआय॥१॥कलिरुवाच॥
छंदपधरी॥कोरेसबंसबलनांमकर्म॥मनतजहुसोकअरुकहुमर्म॥
पापउ॥नास्योअकासअरुथस्योनूमि॥अबकरिनजूमिअसषेअगमि
उरसहिनजातमोदुषअसेस॥करहिनजूमिकीजेप्रवेस॥अरिरुथरदषि
सुनिअप्रमांन॥कछुअजऊाषिफूटेनकान॥कलिरु॥ निजमरमनि
वेदरुबेगिमित्र॥रहिकालअहियेरचिरित्र॥पापउ॥जोपूछतहोमे
हिदुःषनेव॥छिनकीजेदिष्टप्रसारदेव॥मनराजनथेबलअप्रमांन॥
सुनअसुनहेतबेता॥निदान॥तिहिबरीउनयबामंअनूप॥निरवृत
प्रवर्तिरतनामरूप॥प्रीयप्रीयापरसपरमिलिप्रकृति॥रसरासिरमे
मतरेतिबिरति॥मनतेजनयेद्वैउदयबंस॥करमंअकर्मरहिनंमअ
स॥करमअकरमनएउनयत्रात॥निरवृतिप्रवर्तिमनमाततात॥त्रात
सुथरममेपित्रीयजात॥मातासबिघदुःकरमतात॥पूछीजुदेवममम
रमबात॥मातात्रबिघदुःकरमतात॥करमाहिनएथरमाधिकार॥दुःक
रमआदिहमपापसार॥नलवंतबीरमोहिपापनाम॥करुनाबिरोधधी
मित्रकांम॥प्रनुहोरजहमेरोप्रचार॥छिनमांडकरोसोदेसछार॥रहि
नोतिनईजबबेसहथ॥रकअरूबासबिगस्योप्रसिध॥हमवेनबसाहि
ऐकत्रथान॥मनतनएबिरुधबलअप्रमांन॥हमथपहिताहिवेंउथपिदेहि
तैतजहितहिहमरंबिलेहि॥पितुदेहिदुषवेअतिअसंका॥हममिलेच

... ॥
लहिसे वहिस संक॥ स्वछंद जात मन कहुं सुभाइ॥ करमादि केरे केतत बहिआ
इ॥ लै मेलै सोकार गार मांझ॥ निकसत न हीं देही नेर सांझ॥ मनपवन तन हि
वकास कोर॥ पुनि मारन कों जेजत न होर॥ पित बचन नेग वे करत पूत॥ अ
नसस त्रबधक कहिये अकूत॥ मन पेरम हासं करट सषेद॥ करमादि पुत्र पु
निल होत भेद॥ पित्र घात जानि करमादि भूत॥ उरत्रास मन न हि उपजे
अकूत॥ मन बात॥ पुन सार कहो मन निसंदेह॥ करमादि बसहुं छिन
दीन ओह॥ उपधान पत्र फलन्न हू मान॥ जल पात्र सरित सज्ञा पषान॥ क
रपत्र अहहुं तुम पंच आस॥ नव दिवस असन लगिरहि निरास॥ त्रिनरू
स नआसन उरथ पास॥ पुनि ग्रे हपर न सालसु नारि॥ नैरास रह हुं संप
ति बिहीन॥ गत मोह मान नहिं अधीन॥ समब्रह्म चर्य अंतर अकाम॥ व
न मांझ अकेले रहत बाम॥ नष बाल रुष्य छुर करम हीन॥ नित अंगरागन्न स
मी नवीन॥ हिम ससि र काल निरवसन जाहु॥ पुनि ग्रीषम पंचानल तप
हु॥ बरषा बसेष जलधार सीस॥ यह दई पित पुत्र नि असीस॥ रिषनग
नदंड धारी अनाथ॥ सबु जनम हो हुं तुमउनहि साथ॥ दूहा॥ पाप ठ
करमादि कन सत्रास कै॥ दीने पित निवास॥ नवेअ करमादिक न हम
कीनो मंत्र प्रकास॥ १॥ छंद पद्धरी॥ रक समय देषि मन मोह लीन॥
कहुं देहुं बास हम पनि तकीन॥ सब अंग निअ करमादि कसु जात॥ कर
जोरि रहे थित ऐक पाइ॥ अबिबेक असं गत अनाचार॥ अतिसय अनी
ति अनरथ अपार॥ रमादि सबै लेबे सनारि॥ आग्या अधीन पितु हेत
कारि॥ पितनु ऐम सन हम अनुज देषि॥ सुत होहुं रुधिक तिजुग बिसे
षि॥ इहि नां तिहि तो हम त्रसन कीन॥ दिग बिजय होहुं बर हम हि दीनो॥
मन कलह बढत देषे अमान॥ थितकरे पुत्र तब तनय धांन॥ इहि नां
ति पिता कीनो बिनास॥ कछु हमहि उनहि नहि लाग जाग॥ सतकर
मगये तब रिषि निवास॥ उन लऐमां निहित चित प्रकास॥ सादरा हिरह
हि रिषि करम साथ॥ गावहिस प्रेम हरि चरित गाथ॥ परचार करे हम
जमदेस॥ सुषबास हेत देस निबिदेस॥ प्रति पुरुषन जे जग जनपु
नीत॥ ते करहि नेक हमसों न प्रीति॥ दीज हि कपार हम जाहि द्वार॥
स्वसथान कहुं न पावहिसं चार॥ निसबस सुनत हम पथ ज्ञात॥ पुरजा
रि छार सोई करत प्रात॥ बिपरीत चरित कै गऐ बिहाल॥ सहि रहे न
सके हम परमसाल॥ निसचय बिचार हम यह कीन॥ पे समय पाइ

बरते प्रबीन॥सो हौं हीन हम अबल सत्र॥तबैं निसा निउ चले अत्र॥हम न
जतै टरियो कसो राज॥कलिजी तिआ हिराजाधिराज॥तब दई तुने तौ तुम
हेरि॥हम कहि न सकत लघु मुष हि फेरि॥यह नई बिपति हम मोकेर
व॥सो लाज प्रभु हि हम करहि सेव॥ कबि रू बाच॥ दूहा॥ करतु अकरतु
समर्थ हरि॥अरु अनथा प्रकार॥याव निरंअरु त्रिन भुरे॥सो कारन कर
तार॥१॥ छंद पधरी॥ उर सोक कछु जिन करहु मित्र॥रहि कालआ हि
ये रचि रित्र॥सुष होत तिन हि फिरि होइ दुष॥यह जानि सोक तजिये विदु
ष॥ वेदपरणौ॥जह रवि होत उदोत तहां तम नाहि बल॥ बसुरत्न ए
बितीत सुनि सच यरा त्रितल॥मैं रंग होउ रबी रन दुष है रचनौ॥परि
हां अपनी अपनी बार सुनारिक नचनौ॥१॥ ज्यों यौ बिभ के अंतसु व
रषा आर हैं॥ बरषा होत बितीत सीत समदार है॥ यो ही अनुगम अनुसार
अनुक्रम लेषि है॥ परिहां कबहु सुदिष्ट दरी व हम ऊतो देषि है॥२॥
जो नषित बहु मोहि तो आप बिचारियो॥ सुष के गये निदान स दुष नि
हारियो॥ फिरि सौ हि मिन थास बहुरि सुष पाइयो॥ परिहां कौथ बिरे
धनि वारि न सोक बढाइयो॥३॥ छंद भुजंगी प्रयातु॥ नये दुष तोको
तुमें दुष पाये॥ बडे लाग मेरे रहा न जआये॥ सदा हेतकारी सु स्वा न
च तेरे॥ करूं तो हि मो सो फिरे द्यौस मेरे॥ पाप उ॥ बली बिक्रम
उदमी मोहि जानें॥ सदा धरम द्वेषी कुकरमे सयानें॥ यहै नेम सा
चो सुनो देव मेरे॥ तको देह आवे कहू काज तेरे॥ बडे सत्रु सं घरत जे
बच्यो हौं॥ सु तो स्वामि के काज देही सच्यो है॥ कलि बाच॥ बजे बा
तुजे सोग हे और तेसो॥ सोई सूर सामरथ संदेह कैसो॥ छंद मुलि
॥ ये कबात हम सुनी अनेस॥ सुनिये मित्र कहु तो हितेस॥ सो
अबके है कहत समूल॥ सुधि आये बादत उर सूल॥ पापउ॥ प्रछी
पाप जु बिसतर बातो॥ क अनिष्ट नवत असुतातो॥ कलि रू॥ फेरि
कहत कलि सुनो अय मित्र॥ जो कछु होने अहि निचरित्र॥ है है महा व
तार प्रबोधी॥ धरम सहाइक पाप बिरोधी॥ तेस बहु भूमारि संघरि हैं
धरम निरंतर रिछ्या करि हैं॥ माया रहत निरंजन स्वामी॥ अषिल चर
चर अंतरजामी॥१॥ दूहा॥ निसकलंक निरजित निगम हित अनुलि

तजो तिअषंम। येकयेककचकूप जिहि। कोटिकोटिब्रह्मंड॥ छंद मुरिल।
ल तअखिल ब्रह्मंड निवासी॥ रोमकूप ब्रह्मंड प्रकासी॥ रोमकूप ब्रह्मंड समे
हे। तेअवतार उदरकि हिले हे॥ कलि रु॥ दीननचावत तेसो मोनाचे। सेवकसं
ग फिरे हित साचे॥ कारन पार सुदेह हि धारे॥ काज नये निजलोक बिहारे॥ पा
प उवाच॥ कलि अवनीप कृपाय ह कीजे॥ दासजानि मो सो हिंग दीजे॥ सो
प्रसंगस बिसेष निदाने॥ अनुक्रमसे अवतार बखाने॥ कलि रु॥ मो
हि नसकति रती सुनि मित्र॥ जिहि बरनो अवतार चरित्र॥ नेति नेति जिहि
निगम बषाने॥ कहि ताको अनुक्रम को जाने॥ नही अवतार अनुक्रम दी
नो॥ कारन पारस्रूप सोई कीनो॥ आदि मध्य अवसान न जाके॥ केसें कहुं
अनुक्रम ताके॥ जग ही मांझ जगत ते न्यार॥ पलहि समेटे पलहि पसा
र॥ कोटि गयंद एक के तोले॥ बाहिरि नावे नीतरि बोले॥ आहि प्रगट पैके
रन पावे॥ जो पावे सो फेरि न आवे॥ जाकी माया जगत नुलाने॥ सिवबिरं
चि कु पार न जाने॥ कीट कुंजर साथ पुकार॥ प्रथम कीट की हेत संभा
र॥ निसन जीन जाको जस गावे॥ सेषसहसमुष औरन आवे॥ अगम अगाध
निरंतर लेषे॥ जो कछु होइ चरित्र सु देषे॥ कवि रुवाच॥ दूहा॥ कलि अरूप
पत्र सिधु हे॥ इहि बिधि कीऐ केत्र॥ मनमनसा मरमन मिलो॥ सहज सुहाये मित्र
॥ इति कलिजुग पाप संवाद॥ कुंडलीया॥ बास कीयो अगातम हि। कलि
संजुत परिवार॥ जब जेसी कछु देषिबो॥ तेसो तब हि बिचार॥ तेसो तब हि बि
चार॥ कछु अवकास जु पेहो॥ जो तिस बेसं सार॥ महामन मोद बढे हो॥ सुन
र बंधु सुत त्रीय॥ साज सेवक संग लीनो॥ सहचरि समूध समेत॥ बास अग
तजु कीनें॥ दूहा॥ चारन ग्याति सु बारहठ॥ नरहर मति अनुसार॥ मैं सागर
पैरन लयो॥ कहन चरित अवतार॥१॥ रुद्र सपंच बिरंचि चव॥ सेषसहस
मुष संग॥ नित रसना जस कहत नव॥ औरन लहत अभंग॥२॥ रसन एक सु
स्वाद रत॥ सब दिन रहत सषेद॥ कितक तिहि हरिजस कहुं॥ बरनत नेत सु
बेद॥३॥ जो आपन असमर्थ हो॥ कहियेमति अनुसार॥ पावन दीन दयाल
प्रभु॥ कृतमान तक रतार॥४॥ जथासकति नरहर सुकबि॥ कहि अवतार
सरूप॥ जिहि जिहि ग्रंथ निज सुने॥ रिषमनीन अनुरूप॥५॥ नरहर स
नु बारहठ॥ अवनि उधारन हेत॥ निरमल निदि तिजात कुल॥ देहस
समय सेत॥६॥ अथ श्री आदि श्री बारहठ॥ अवतार चरित्र बा
रहठ नरहरदासेन बिरचिते॥ बरनन॥ छंद पधरी॥ परगु

तपकाल इक चित प्रकास॥ बपु धरन चले माया बिलास॥ हरि प्रीया आइत वति हि
निकेत॥ हरि चरन लीन हरि रस हेत॥ जुग द्वारपाल जय विजय नांम॥ करजोरि
रहत निसस हत कांम॥ करक ससुत्र वप्रति हार कर्म॥ कीनें निषेद जनें
न भर्मी॥ मुसकाइ कलेत व जगत मात॥ करक ससुन वेक लल हउ तात
पुनि इक काल जब कछु बितीत॥ पग धारे सनकादिक पुनीत॥ कृत गमन
मध्य दरसी त्रिकाल॥ छ टिका निरोध कीय द्वारपाल॥ थित हे कु छिनक इं
हिं गरिषीस॥ जो लों सुधि द्यावहि जगत ईस॥ मुनि नैन बेक्रोधा इमं
न॥ पुनि दिये श्राप दुसह निदान॥ कृत दुष्ट जा कृत नूनिकेत॥ अवतरहु नें
नि असुर अचेत॥ भय गजीन तनव भनु मुरारि॥ सनकादिक सनमुष प
धारि॥ आदर असेष कीनें अनंत॥ नुत दरसन द्यो लषि परम संत॥ अर
धादिक बंदन आसन कीन॥ अभिलाष पूरि प्रभु बिदा दीन॥ हारन सराप ते
द्वारपाल॥ भये बिनत्र मत बपु अति बिहाल॥ प्रतिहार उ॥ जय बि
जय आनि हरि प्रनय कीन॥ अवतरन भूमि हम श्राप दीन॥ तुन छूटत
है प्रभु चरन साथ॥ अपराध बिना हम भये अनाथ॥ जगदीस करहु गति
न जानि॥ जिहि होइ न हीप्रभु दरस हांनि॥ श्रीभगवानोवाच॥ सन
कादि स्ये जो कि सराप॥ सो नये बिना मिटि हैं न श्राप॥ अवतरहु एक
सि परिषीस॥ दितगरभ हो हु असुर अधीस॥ सुधि लेहु गरभ सथानमी
त॥ पुनि दैहुं दरसन जग पुनीत॥ भव लोक जाइ अवतरहु आप॥ तुमहुं छेर
जन महमसें मिलाप॥ अति बिरोध हु जे पे मोहि॥ तौ सरेजनम तें मिलन
होहि॥ कबिरुवाच॥ दूहा॥ हांनी होइ सुदेह रहौ नौ हि न टरे निदान॥ भूत
नव ष्पत नरत मन॥ प्रष्ठ हु वेद पुरांन॥ १॥ छंद पधरी॥ यह कहत जे
ति निकसी अनंत॥ आनंद दीप सेर हे संत॥ कसिप प्रजापउरसन कूल॥
सो जोति आनि प्रगटी स मूल॥ दिति नाम दक्ष पुत्री सुदेस॥ सुन प्रीया प्रसन
कसिप रिषेस॥ अति नये प्रीया ब्याकुलित अंग॥ उर छिदे जब हि बान नि
अनंग॥ आकुलाइ आइती य पीय समीप॥ रति जाचि तें इसमय रिषीप॥
हो संध्या जद पि असुर काल॥ रति दान दये प्रीय ह्वै कृपाल॥ दिति दुष्ट
रभ सिसु धरे दोइ॥ सत बरष बीति पुनि प्रसव होइ॥ तिहि काल द्ये दरस
न अनंत॥ निज बाचा प्रतिपालन निमंत॥ हिरनाछ हिरनकसिप बलिष्ट॥
जो रुवा असुर प्रगटे प्रतिष्ट॥ सो भये देह परबत समांन॥ अति दुष्ट करम
बल अप्रमान॥ राजा निषेक हिरनाछि कीन॥ निज धरे छत्र चांमर
नवीन॥ थित राज भये असुर अजेय॥ तिहि समय अनय प्रगटे अमे

थ: तीरथसुतपक्कत होमदांन॥मष बिप्रबेदसु नियेनकांन॥औषधीग्रनसु
रणौग्रद्रिष्ट॥निरबीजगर्रछितिसत निष्ट॥तब को पिग्रसुरम्रूलकसतल
सबलरीक्रादि पृथ्वीसम्रूल॥घितकरीरसातलन्नूपचेरूजलबिंबल
येतिहिगंग्रथंम॥सुरसालनीयेग्रासुरसमाज॥तललोकक्रिग्रनिसं
कराज॥मषनागरह नन्ययेसुररिषेस॥उरबरीतबे चिंताग्रसेस॥पु
निगएँ सबे मिलिब्रह्मथांन॥रुषकहेतु सहस्राग्रुन निदांन॥बिधिक
रतजोग धारनसबेय॥उधिहन्नकुरि रोमाउदेव॥सुनग्रानदह्नसुछि
मसरीर॥ग्रगुष्टमात्रबाराह बीर॥निजरूपब्रह्मबारा॥नांम॥ग्रवतार
नयोप्रभुधरमधांम॥बेदमषजगपबाराह बीर॥सुनहु पत्रयेग्रनुक
मसरीर॥बहुबेदमनकुपरबतबिथार॥संजुकतरामनीछनसुदार॥स
सिहेजउनयदंदासरूप॥चलनेत्रनांनि घुरघुरसजूप॥स्वासावसि
थरूकरप्रकास॥न्नबत्रिरहिकरतग्राग्रंनिनास॥तबगंधग्रांनग्रांन
निस्रबयसुनास॥जलमगनन्नरी पृथ्वीसुपास॥बरनबरप्रलयबारि
धबिहार॥ग्राछौटत्छराजलसुरउधार॥तललोकजाहबाराहदेव॥उरबी
उधारकीनेग्रजेव॥सितदंतग्रग्रन्नयेहप्रमांन॥गजदंतग्रंतकरदमस
मांन॥हिरना छिजुरतबग्रा बिजुध॥कोउग्रवतार हरितियेकुध॥प्रतिदुंद
होतहरिग्रसुरभव॥संन्यमतनयेतबलेकेस्रब॥जुधकरतसहस्रग
नसारिकिलप॥पहजरीकोयकीउग्रनलप॥निग्रहेदैतमायाग्रनूप
रहग्रग्ररहीनुवतिलसरूप॥उधारिदेवबलग्रप्रमांन॥घितकीनरत
नगरन्नासथांन॥महतकतध्यांनकृततहामुरारि॥जयसबदसिधच
रनचारि॥ग्राछादितनेसुररथग्रकास॥सुरपुहपवृष्टकीनीसहास॥की
नोपुरानबाराहदेव॥ग्रध्ययनकरतगऐरिषसनेव॥बिधिग्रारंभ
ब्रह्मको बिलास॥संतोषपोषपित्रगनप्रकास॥ग्रनादिबीजग्रोष
दग्रपार॥सोकीयेप्रगरग्रासुरसंघार॥पृजाहरितीरथमषप्रसार
बिधिजुकतहोतसबनिरबिकार॥इहिहितग्रादिग्रबतार॥ग्रापासुरथ
पेग्रषिलग्रासुरउथप॥बाराहतबेनिजपुरबिहार॥प्रभुकरतत
येलीलाग्रपार॥ छं०॥ बिमलबेहारबराह प्रभु॥सागरपेविसह
स॥हतेग्रसुरहिरणाछिरन॥कीनीपुहविप्रकास॥ कबित॥बिस
दरूपबाराह बिसदबलतेजबिराजित॥बिमलह ब्रह्मकमादि ग्र
गतिगतिहेतउपाजित॥सुरसुधारषिलिहरबयार ग्रवतारग्र
जोनीय॥तपबिधानमषहोमदांन पुहवीपरकासीय॥ग्रयग्रसु

रअसितभानुषअवनि·कोउसहारनोहिनकरन·उथारमूलनरहरसुक
बि-सितबराहअसरनसरन॥ इतिश्रीश्रीआदिबाराहअवतारनो
माजारहनरहरदासेनबिरचितं॥ ॥अथश्रीसनकादिकअ
वतारबरननं॥ छंदपधरी॥सनकादिआदिउतपतिसरूप॥नैष्टक
ब्रहमचारीअनूप॥सिद्धासनतपकृतब्रहमसंत॥अबिलेसपुत्रन
येतबअनंत॥बिग्रह बिनागकीयचवप्रकार॥सनकादिकउपजेजो
गसार॥ दूहा॥सनक सनंदनद्वैनये॥तीजेसननकुमार॥चौथेनयेस
नातनो॥आदिपुरुषअवतार॥१॥आतमतत्वअनष्टने॥पहलेहोस
मास सो॥बिचारकरिबिसतरचे॥ब्रहमचर्यअधिकार॥२॥पांचबरष
केबालसम॥मतिअबिकारसरीर॥उपजेउतपतिमानसी॥अष्ट
बिहारसथीर॥३॥तीनलोकअणमनिगम॥नतनवप्पनगपांन॥न
रहरप्रभुअवतारने॥सनकादिकभगवान॥४॥इति श्रीचतुरवी
रहरप्रभुअवतारने ॥सनकादिकभगवान॥४॥इति श्रीचतुरवी
सतश्रीअवतारचरित्रेनामजाबारहटनरहरदासेनबिरचितं॥सनका
दिकअवतारसपूरन॥अथजग्यअवतार॥ मनुसुतानईआकूति
नाम॥रुचिपानिग्रहनकीयधरमधाम॥तिहिउदरजग्यअवतारली
न॥मघकरमअबिलबिसतारकीन॥नरतारजग्यदहनात्रजा॥सं
तोषपोषमघसुरसमाज॥उगनसमेतकीयतपविसेष॥इंद्राधि
कारपायोअसेष॥ दूहा॥ स्वायंभुमनुराषीयो॥कीनोअसुरसंघ
र॥निजइछालीलाकरी॥जग्यपुरुषभगवान॥१॥इति श्रीनाबा
रहटनरहरदासेनबिरचितं॥श्रीजग्यअवतारसपूरन॥अथ
नरनारायनअवतारबरननो॥ दूहा॥ ब्रहमाकेसुतमान
सिक॥नयोधरमयहनाम॥दहप्रजापतिकीसुता॥मूरतितईति
हिबाम॥१॥छंदपधरी॥ पितुनयेधरममूरतिसुमात॥उपजेनरनार
यनबिष्यात॥तेबेगिबदरिकाश्रमप्रबीन॥नवनूतहेततपउग्रकी
न॥नरनारायनतपबलप्रभाव॥आनंदनयेत्रयपुरअमाव॥समस
हस्रवरषउपवाससिध॥फलमात्रकीनपारनप्रसिध॥सोउग्रतप
सासुनिसुरेस॥इंद्रासनकंपतनेअसेष॥इहिसमयइंद्रपठयो
अनंग॥नयपरमेहितपसिधनंग॥मिलिमदनमित्रमाधवसमान॥
आरंनचमूसजिअप्रमान॥अनमषबधूधरिअयनाग॥बनिसेन
निबिधिमारुतबिनाग॥इहिनांतिबदरिकाश्रमसमीप॥मनमुदित
आरमनमथमहीप॥बनफूलिलतातरपुरपपात॥मारुतसुगंध

चलिअकसमात॥इहिरूपनयोआगमअनंग।उदपनउपजेअंगअंग॥प्रि
दसुछियारिकारदीन।कोवंउबांनसंधानकीन।आकरषेनवसकारक
अनंत।उनमादकप्रवणसोषअंत॥येबांनलगेप्रभुअंगअंग।बालीज
मथेरतिपतिनिफंग।लेदनिकुराछिअरुहावभाव।सुररमनिथकी
करिकरिसहाव॥निरनीजगयेउदिसअनेक।उपचारमारनहरिफुरत
येक।अक्रुद्धोमनोजकरिकरिउपाधि।धारनाध्याननहींटरिसमाधि॥उ
रकामत्रासउपज्योअनंत।मतक्रोधदिष्टजारेमहंत।तकतयेषिसानेम
दनजांनि।आदरप्रभुकीनोयेहमांनि।करजोरिकोमतवप्रनितकीन।
अषिलेसअषिलमायाअलीन।जितकामक्रोधतुमनितजयंत।अविक
रषुरूषबिनुआदिअंत।उतपतिथितलयंतअंत।सवरेछाररवरीपर
मसंत।तुमकरक्रोधकिहिंपरकृपाल।वक्रुदेषिपितानेहीहततबाल
जेतिरहिकोमसागरसुजान।गोपदगक्रोधतूकहिंअपान॥तिहिंदिनदेषि
प्रभुनयेदयाल।करुनासरूपसंततकृपाल।सबम्रसहअवनितासरू
पा।अषिलेससंगदेषीअनूपा।अपछरासहतबिसमतअनंग।अदभुतर
सउपजेअंगअंग।उरवसीनामअपछराएक।वासवकहेपररीकरिबि
बेक।सोकरेबिदाउरवसीसंग।इन्द्रकहेआनिदीनीअनंग।इहउरउप
जिआनंदअपार।सोनरईनीयासुरपुरसिंगार।सुरराजलिषेअवु
तारसिध।परब्रहमप्रभुरूपपूरनप्रसिध।इहजानिइन्द्रप्रभुपरस्याम।सोस
विसेषइंद्रवनकीयसुनाय।सेभृटदेवजानेनेनमरम।सोछमकुन
यामोतेअकर्म॥छूहा॥नरहरप्रभुअवतारने॥नरनारायनदेव॥
दुसतरतपबलजीतिजग।आपुनरहेअजेव॥१॥इतिश्रीअवतार
चरित्रेभाषाबारहटनरहरदासेनविरचिते।नरनारायनअवतार
चरित्रसंपूरन।अथकपिलदेवअवतार।कवित।ब्रहमसुवनतपतेज
नयोकर्दमद्विजमुनिवर।मनुतनयाइकदेवहूति।कृतवासत्यहून
कर।कपिलदेवअवतार।भयोअवतारसुपंचम।सांषिज्ञोगसथ
यो।कगिनजिनयोकालक्रम।उपदेसब्रहमबिद्याअषिल।कलि
मातुकारनकरन।उतपनसियपुरसरस्वती।प्रभुनरहरअसरन
सरन॥१॥अगरदेषिपुहवीप्रसिध।सोरोंपुरबिसमल।देवदेवक
पिलावतार।तहाकरेतपोथल।बेगततपयोकलो।बिघनजोक
रहिध्यांनमहा।सोममदिष्टहसांन।नसमझेहैंततछेनतहांन

करत बिती तास तजुग· असत्रेता आरंनये॥ दिवसे सब सराजा सगर·
तब हि अजे ध्यात पयो॥११॥ नप बाऊ करनन्निरत· पिसनसों नये परज
या॥ नुबनछो किले नाम· बिकलचित गहन बास गया॥ तहां ब ये पं चल·
त्रीयासह गमन बिचारीया॥ सासुं गरनपति भूता· नियतन छिगुर हि तो
वारीया॥ गरलनी जानिसोतिन गरल· दे षताइताक हे द यो॥ जनम्यो सुपुत्र
तागरल जुत· सगर नाम तातें नयो॥१२॥ छदपध री॥ व्याही सुसगर नब उ
नयबाम॥ निज प्रीया केसनी सुमति नाम॥ संतति हितसेये तिन रिषीस॥
अति प्रसन उरबदी नी असीस॥ उचरेव चन केसनीय उ॥ दुब वंस तिन
कम मपुत्र देऊ॥ बर मांगि सुमति नहा करि बिबेक॥ अब हो हि पुत्र मेरे अने
क॥ संतान हेत न सिस रसा थि॥ नवत था असत ये उरब ना थि॥ सुगर
रीगरस्व थित त्रीय निजानि॥ मुनिवर प्रसाद मन मोद मानि॥ उपजे असमंज
सपुत्र एक॥ केसनी फले बं छित अनेक॥ तहां नये गरभ पूरन सजीया दस
मास प्रसब बस रूवरई वा॥ तू बरी सुमति र कउ नीन त्र॥ उपजे सब हि न
संदेह अत्र॥ आराथ द्विज हि मांगे अनेक॥ ति हि में र न पाये पुत्र एक॥ सो फ
री तुबरी यां बहि सन हा दे ष सु बाल तिलमात्र देह॥ सुत साठि सहस सं ष्या
सुनाम॥ ते धरे मां ऊ घृत कुं न ताम॥ प्रति कुं न पुत्र ति हि व्रथ पा इ॥ सा हस्सी स
रउपजे सुनाइ॥ बिक्रमी बली अति का र बीर॥ निज कूपषे दिक दहित नीर॥
नप सगर सु क्रत अनेक कीन॥ सत बाजि मेथ सं कल पलीन॥ क्रत हेत
लगे आरं न काज॥ संनार सार मुनिवर समाज॥ परजन्न बाधि छूटहि सुवं
ग॥ अनुसर हि जि गप र ह क अतंग॥ इछ सु फिर हि हय अब निअंत॥ प्रतिज्ञ इ
थान आव हि परंत॥ जब नये निनान जज्ञ जानि॥ मनर इ रु रे अतित्रास मा
नि॥ क्रत सत म काज आरंन कीन॥ म षपर बांधि हय सु कि दीन॥ कीय
अस्व तास रक्ष क कुमार॥ सुत साठि सहस सन यथार॥ तिहि अस्व हर
न कहं इन्द्र आप॥ बन संग फिरत मन दुष बियाप॥ यों न कन इन्द्र इक दि
वस आइ॥ छल ये दाव नहां समय पाइ॥ करि बेष बिप्र रजय हस्यो बा
जि॥ नय टरे सकले गये ताजि॥ गहन बन गरत दुरगम गुही राधरि कपि
लदेव तहां ध्यान धीर॥ ले अस्व तहां बां ये लुकाइ॥ पुनि गय इन्द्र निजपुर
पलाइ॥ सेवक पुकार कवर नि सुनाइ॥ आजी नलहत मनु गो बिलाइ॥
सब काल कह त थों पर मसाथ॥ बलवान देव माया अबाथ॥ उभि
ले कवर मन क्रोध आनि॥ जरते क्रसा न यू त दयेजानि॥ कबित॥ क्रो
धवंत दिग अंत· सो धली नों बसुमती या॥ कउन बाजि कर चढ्यो·

छो है दाहन तिहि छत्रीया॥ षोजन षिति हय बनत· करे सागर रतनाकर॥ षारनी
र गंभीर· गहरदनु देवनि दुसतर॥ परिवे बषो दिष्ट थी प्रबल· नवो उदधि
जनु निरमये॥ पुरति ऊप्रसिध नु जबलप्रबल· त्तलत्तवषतलो नये।
॥१३॥ छंद पधरी॥ संक्रम्यो सेन षोजत सुनारा॥ पुहमी पवंग परदचि न्हपा
ईल वक वर आइ तिहि विवर तीर॥ नय छा लिग रत पे रेग तीर॥ सब हिन
लै आये कालसंग॥ तिन लषे तहा बांध्यो तुरंग॥ तहा देषि ध्यान जुत कपि
ल देव॥ नतिग हेग हे पाये न भेव॥ अषि चोरि विवर अंतर अगाय॥ सजि
मैं निमृदि चषनये साथ॥ परहांत हन्यो सुनि नेत्र बोध॥ कालानल उ
पजो दिष्ट कोय॥ उठि अगनि नेत्रजन साअसेष॥ सब करे कवरत्तसमो·
विसेष॥ कवित॥ तहा विन्ने बऊ काल· पुत्र हय सोय न पायो॥ जग समय
थरि जात· राजमन संभ्रम छायो॥ कीय संकलप विकलपं· कछु न उ
दिम बनि आवत॥ किऊन पान पिंत हा तविन· हसऊ दिसि धावत॥ सब
सुचरम त्रि रिषि राज सों॥ करि विचार निरधार कीय॥ कि जये सोय कारन क
वन: कवरसे न कहा संक्रमीय॥१॥ छंद पधरी॥ बरबीर सगर सुत जुत बिव
को॥ असमंजस जेगे पुत्र एक॥ असमंजस के सुत असुमान॥ गुनवंत सरव
ऊ चिन्न गर्पन॥ सोक पिल देव परसु कि साथ॥ अति दीन ना षिकीनो अराय
तहा नयो दे वसु प्रसनतास॥ परिपार अस्वना चे प्रकास॥ लै अस्व अजोध्या
पुरी आय तास विसेष कहि कारन सुनाय॥ सुनि बदसे कन ही उर समात॥ जुग
जुग समान छिन इक जात॥ सुत जरे जग बिगरे समूल॥ सुनि सगर नृपति
उर ऊगत सूल॥ विधि वेद धरम जुत कृत बिवेक॥ नृप सगर दान मष की
ये अनेक॥ असमंजस कवर उर बढि विराग॥ तिहि पिता संग कवर राज त्या
ग॥ दिन सो षि पोत्र कहि राज दीन॥ कुंवर जुत सगर बनवास कीन॥ यो अं
स तराज नृप असुमांन॥ प्रगटो दिलीप तासुत प्रमान॥ तब भयो भगीरथ
पुत्र तास॥ पावन जलकीने प्रकास॥ प्रगट्यो सु भगीरथ पुनि सरूप॥ ज
ग जेत रूप धुरधरम रूप॥ कवित॥ नृप तिन गीरथ एक काल· हय जा
न जात जहा॥ गली मध्य पुनि हाति॥ थकाल गिकुंत गिस्यो तहा॥ ति
हि चेरी दुरमुषी· मरम छिद बचन सुनाये॥ जरे पितामह अनल ज्वा
ल सोग तिन मिलाये॥ दुरबचन बानलागे दुसह· मन संभ्रम हि अरु
झ्यो॥ अंतर विष्पाद उपजे अमित· तब ही तपोबन तक्यो॥१॥ वे वि
तपोबनराज· ध्यान विस्व नरधर्यो॥ मन बाचा काइक समेत तहा त

अनुसरयो॥ कछुककाल बितयो॥दिव्यरसनतहापाये॥उग्रतपअनिल
॥अकसो प्रभुहिसुनाये॥प्रभुकहिप्रवाहगंगाप्रगटा॥जोतिहिथलजल
बिथरहि॥अपमृतुमरेपुरुषा॥अघिलातलोंअधोगतउधरहि॥॥पुनिर
जासुरसरितहेत·काननतपकिनो.तहामहाकनिप्रसनहोइ·बछितबर
दिनो॥मातत्रिपथगांमनी·येत्रसकरपाउधारऊ॥ममपुरुषाजेअगतिप
र अबसेवउधारऊ॥प्रतितेजपतनआकासतें·कोसमधाराधारिहोंजे
जाहिरसातलजेहिजल·कहिकिहितोंतिनिकारिहो॥राबऊरिराजबन
जेवि·उग्रतपकरेअघंलित॥संभुहेतसबिसेष·छदममायाछलछलितात
वद्यालत्रिपुरारि·दीनभागीरथदेषे॥आगमगंगतरंग·बिस्वहितकाज
बिसेषे॥सिवदयोबचनअनिलाषसुनि·इछाजुतजलअनुसरऊ॥पर
बनप्रवाहममसीसपर·आनिस्वरगतेउतरऊ॥दुहा॥राजासंभुप्रसन
करि·परमइष्टबरपाय॥प्रणप्रतिगंगासोंप्रगट·कीनीसबसमझाइ॥१
॥माताहरजटजूरमहा॥परऊप्रवाहपुनीतामोंहिमदनारिसंतुष्टमना॥ब
चहरीबिनीता॥२॥हेजननीतवतेजजला॥सकोंबसहनसमथा॥इकां
पिनाकीबिनुअवराचहिमसबेअकिथा॥३॥गंगात्रयपुरगांमनी:सिवसि
रकरऊप्रवेसा॥मातरयेबरदानमुहि॥सोसबफलहिअसेसा॥४॥कबिक
गंगतरंगअनंगगति॥प्रतिआवरतअथाहा॥परेआनिसिवसीसपरा॥प
रेपुनिप्रवाहा॥५॥भ्रमतरहेकछुकालतवा॥जटाजूटजलजाला॥प
वतनहीप्रवसपथा॥भ्रमतजरीअयसाला॥६॥अनंगारिसोंनृपतिय
हा॥बिनतीकरीबिसेसा॥पातकहरनपुनीतपया॥पुहमीहोहिप्रवेसा॥
॥७॥गंगा३॥ जिहिकारनकीनोंजतना॥जलपावनलेजाऊ॥आगेन
पतुमअनुसरऊ॥पाछेंचलेप्रवाहा॥८॥कबित॥जटछोडिजनहेत मुक
तकीयजरामहेसरा॥तिहिपथगंगतरंग·अगरबिथुरेपुहवीपरा॥नृप
नगीरथअग्रभाग·पाछैजलपावना॥जनुकरतजहाजगजाप·वहि
थलतोआवना॥मिलिजलअपारसंचारमेघ·बिमलधारजामोनह
ना॥सबमुनिबिचारिरिषराजसों·करिपुकारलागेकहना॥१॥तबेज
नुकृतकोप·गंगकरअंजुलिआंनी॥लिमेलीमुषमांऊ·रहेअवसेवन
पांनी॥करजोरेकारनसुनाइ·नृपदीनतिकीनी॥जानिजगतउधारहि
न·मुनिआपदीनी॥निकसेतरंगगंगातहिन जयफारिपवित्रजल॥
जगतयेनामजाहनवी·बेदबिदिततबतेबिमला॥२॥ सुरसरित
लीयसंग·रजचालेसुभगीरथा॥परेहाउजलपरस·प्रानउधरेजात
पथा॥इहिबिधिपुनिप्रवाह·करतपावनपृथ्वीतला॥जहासगरसु

वधूत मायाअतीत।। असो हंस छो हंस जो हंस नीत।। अनाम अकाम अगम अजे
यो।। अनाथ आकार महिमा अमेय।। प्रसुद्ध तली नेत्र षेषां नपांनी।। किंवार अ
चार बिहार बिमानी।। कबित।। रिषभदेव आतमा जये अवधूत असंग।।
मोह मान मद मारि अगति जये अनंग।। बरजित विषय विकार सील सं
तोष सहज सम।। दयारूप निजदेह दीनबछल आतमदम।। परब्रह्म पर
मपावन पुरुष अविकारी आनंदमय।। हरन प्रसिध नरहर सुप्रभु जयजय
जय रिषभदेव जय।।१।। इति श्री रिषभदेव अवतार चरित्र संपूरन।। जोग
बारहट नरहरदास बिरचितं।। अथ ध्रुव अवतार चरित्र वरनं
नं।। दोहा।। कवित।। आगम निगम नित अगम।। अषिल उदार अपार।। सुत
उकट नरहर सुकवि।। ध्रुव वरद अवतार।।१।। स्वायंभ्रमनु ब्रह्म सुत
जये प्रतिष्ट प्रजाप।। ता सुत नृप उतानपद।। राषी पुहमि प्रताप।।२।। रानी दोय
मद्धि वा हितो।। नई सुनीति यह नाम।। ता गरभ संभूत ध्रुव।। जये जगत
बिश्राम।।३।। परम सुहाग निल्ल सुनीय।। रानी सुरुचि सरूप।। तास तनै कों
पुत्र भो।। उत्तम कुवर अनूप।।४।। कबित।। ऐक समय उत्तानपद सीहास
न बैठे।। सुहाग दोउ कुमार बैठत लघु जे ते।। रानी सुरुचि समीप राज
अति मान पीयारी।। लीनो उतम कुवार नृपति अंकवारी।। ध्रुव नि
कट आइ तब आपते।। पिता गोद बैठन भयो।। करि कुटिल दृकुटि दुरव
चन कहि न बही सुरुचि निवारीयो।।५।। छंद पधरी।। पितगोद दे
षि उतम कुवार।। तहां करे ध्रुव बैठन विचार।। तब निकट सिंघासन ग
ये बाल।। जननी सपत्नि उर उठी ज्वाल।। सुरुचि।। करि दृकुटि बंक बो
लीक रूर।। दुरभाग सु वन ध्रुव रहो दूर।। उपजे दुरभाग नि उदर दीन
रु तछ त्रेजोग को उ तैं न कीन।। जो हुतो ध्रुव मम उदर जात।। बनि बै
ठत सिंघासन बिष्यात।। तिहि कुषि नयो तव जनम जानि।। बितिपर
न वनां जन दुःष षांनि।। जदपि कुल उतम छित्रि जाति।। राजपद जोगि
न हीं जन मराति।। कविरुवाच।। यह सुनत ध्रुव परजरे अंग।। नैक्रो
ध मनहु चांपे भुजंग।। निस्वास वदन जल धार नैन।। उपज्यो क्रोध
नल उर अचैन।। इह दसा श्रवत दृग अश्रुधार।। जननी पहि आये ध्रुव
कुमार।। देषे सुनीति ध्रुव सु षमलीन।। अहि सुत ज्यों प्रेम सुतनगो दल
न।। सुनीति ध्रुव प्रबोध।। मतकरहु रुदन दुष होत मोहि।। सिर
परहु वज्र जु न स हैतो हि।। किहु दुष्ट कहे दुरवाद कोइ।। सो ईकहहु
पुत्र राषहु न गो इ।। जे कहे सुरुचि दुरवाद जाल।। सब सेष सुनायेष

दयमाल॥१॥सुनीतिबाच॥दूहा॥ मातानबैसुनीतिधुव॥सुतकहंकरतिप्र
बोध॥दुषदुषअपनेकरमफल॥करहिनिरथकक्रोध॥१॥पुत्रनमेतैसे
नमो॥दीनानाथदयाल॥तातेयेपरिज्ञवअसर॥सहीयतअंतरसाल
॥३॥विदुवदलेउपकारहरि॥करतदीनसोंदेव॥करिहैदुषनिरमूल
सोई॥सुषनिधानप्रभुसेव॥४॥करिधीरजमनबचक्रमन॥निजसरू
पधरिध्यान॥आपतिकालअधीरक्यों॥करतरुदनअग्यान॥४॥कबित॥सु
रअसुरादिकसिध॥जेदुगधरबमहामुनि॥जपतपसंजमनियम॥कर
तमषदानग्यानगुनि॥अपनेकरयहिसत्र॥सीसकारतसंकरहित॥
भैरवादिघरनेग॥करतअनरोगअगीकृत॥जिहिठीयासकलनवनत
जग॥जाचतजिहप्रसादजीय॥सोनजकुपुत्रजाकेसरन॥संततचरन
निवासश्रीय॥१॥दूहा॥जातेपरमनिधानपद॥पावतहैससार॥प्र
भुकारनकरन॥अनंतनजकुअधिकार॥२॥छंदपधरी॥उतानप
दतवपितुनरेस॥इहिजननथोआषंकलेस॥मनुस्वायंभुपितुपि
तुमहीप॥प्रथीप्रभुतपायेप्रदीप॥प्रपितामहूतेरेबिधिविनी
ता॥पदलहेप्रजापतिअतिपुनीत॥तुवजननमन्येतिहिकुंचवंस॥पदलहि
कुंचघूथीप्रसंस॥ध्रुवसुनेजबहिजननीप्रबोध॥करिनिसचयनि
कसोबिगतक्रोध॥ध्रुवचलेतबहिबनहितविसेस॥मगमांऊमिले
नारदमुनेस॥परिक्रमनध्रुवकीनेप्रमान॥मुनिपूछिकेहेनिजबंस
नाम॥नारदउवा॥सेवकसहाइबिनुमाततात॥क्योंबालअकेलेब
नहिजात॥ध्रुववाच॥ऊंजातबनहितपकाजदेव॥नृपसुव
कहेदुषरोषतेव॥सबकहेमातलघुबचनसूल॥तेलगेहृदय
बिषबानतूल॥श्रीनारदउ॥कबित॥पंचबरषबयपेषि॥ध्रुव
सोंकहेब्रहमसुत॥अलपदेहबयअलप॥अतिहिअमरषकतउप
जत॥समयनआतमदमन॥देहपोषनकेयेदिन॥लाडजननिप
तुलहनि॥बाललीलासुषसेवन॥देषऊमुनिनतपसा॥बिषमा॥अ
तिदुरंततिहिअनुसरन॥बयबुधिसुबलगुरगम्यबिनु॥कीहि
धितिहिवाहतकरन॥१॥ यहेंदरीबीगतिअगम॥देवरिषमुनि
नऊदुत्तर॥अतिसदमअप्रमेय॥बचनमनकरमअगोचर॥अ
मरुसनकादि॥सकलबोजतननहींपावत॥इंद्रीयनिग्रहकर
नोंहदपुनिरधारनआवत॥जिहिनेतिनेतिभाषतनिगम॥अ

बलो कौउ ग्रनु सरयो॥ नाग तिहि लहहिं किहि नां तिल। इथा बाल हठहि
परयो॥२॥ पंच अनल जल पंच । सीत पंच तिन पसाधत॥ ग्रीषम बरषा
ससिर । ऐक आसन आराधत॥ कौउ अधो मुष उरध पाइ । लंबित भू मासन
जुत पिपासन यरहत । रहत केवल पवनासन॥ इहि दसा कलप बीतत
अनंत॥ तउ नहीं दरसत जो ति तिहि॥ अति दुराराधित पस अगम । कहिस
धहिंगो जननकिहि॥३॥ कहा जोग जुगति अति कठिन होत पसाधन उपार ।
ताते फिरि घर जउ धुव॥ नारद कहे बिचार॥४॥ बाल अवसथा पे षितन
बल बिक्रम जब होइ॥ समय पाइ उदिम करत॥ तब फल पावत कोइ
॥५॥ सुष दुष करम अधीन सब॥ रे बालक अपमान॥ सो बिनु जुगते नारद रो
यहै जु निगम निदान॥६॥ धुव बाच॥ सैय्र छोडे नेमकरि। कुफिरि जो
ऊथेल बचन तुम्हारे सीस पर॥ मन उर श्यो संदेह॥७॥ प्रीतिन पे
षनकरत आस बदन बिसाल॥ आंतिम चांनक वीचही ऊपटि जात
लैकाल॥८॥ छत्रीयय अवतार मम। स्वायंभू मनु बंस॥ करी प्रतंग
क्यों तजों॥ सुनि मुनि जगत प्रसंस॥९॥ तुम जानत छत्रीय धरम॥ मह
कठिन बिवहार॥ बचन तंग तै देव रिषि॥ कौउ पहास संसार॥१०॥ मेर
करम उदोत तैं॥ दरसन पाये आज॥ तुम बियंग जित बिस्व हित॥ बिग्र
मो हरि बराज॥११॥ निंदत करम जु आचरो जिहि बर जे संसार॥ मो हिव
ंतसु चकृत करत॥ यह न नीति बिवहार॥१२॥ कबित्त बाच॥ जब देषे बालक सहित उरआ धरि बिस्वास॥ नारद पर मप्र सन कौ॥ साधसाध
कहि तास॥१३॥ नारद बाच॥ ठौर पधरी॥ सप्रसन्न एै नारद रिषीस
हित है कुंनग तिदीनी असीस॥ श्री बासदेव मंत्रोपदेस॥ रिष कहे धु
व हिंक हनो बिसेस॥ है मधु बन पावन जमन कूल॥ तह बसत कमल आनंद
मूल॥ धुव कर धुध्यांन तुम उहां जाइ॥ निज रूप स्याम दीनो बताइ॥ कहित
ॐ नमो भगवते बासदेवाय बिस्वंभरा॥ द्वादसाक्षर मंत्र करे उपदे
स मुकति करा॥ नारद अंतर ध्यान॥ नये धुव आये मधुबन॥ तर निसुत
कीना देषि बैठे तप साधन॥ तरलता पुंज गुंजत मधुप॥ नाचत मत्त
मयूर जंग॥ धरि निज सरूप उर ध्यान जुत॥ कीनो जोग अरंभ है॥१॥ प्र
थम बेरि ऐकाग्र चित॥ इक मास फलासन॥ पुनि गदे रहे उनयपार
प लव फल तज्ज दन॥ त्रितीय मास जल पान॥ रहे इक पग इनिरंतर॥ चौ
थे पवन अहार॥ चरन पल पलटे के धरा॥ पंचवे मास स्वेरहत जि पवन॥
पद अंगुष्ट अधारयो॥ धसि गई धरनि इहि भ्रांर जब॥ द्वितीय अंरकज

लये॥२॥ सहिनजारबसुमतीय होतअधउरधमनअतुल॥तिहिनि हरि
लोकेस जयेजयसंकुलआकुल॥सुरसमाजसुरराज गयेहरिसरनतत
छन॥रूमिचालनवरूत हालसबकरेनि वेदन॥ब्रह्मेस्लोलकगमगत
यह पवनरूधबिथकेगवन॥अरुतचरितउलरतअवनि॥ कहिनजात
कारनकवन॥ श्रीनगकांने वाचा॥ दूहा॥ देषिदसायहसुरनिकी॥हसि
बोलेबिस्वेस॥मेंपायोजयहेतसबा।जयनकरफलोकेस॥१॥छंद पध
री॥इकराजपुत्रतपकरतबाल॥सहिनहिनसकतजोरूमिचाल॥बिथि
वतबिधनेतिहिसकलकीन॥मनबाचकरमजयेमोहिलीन॥तजिची
तजावथिरकरफुचेत॥हैंनाहिअवरकोउजीतहेत॥सबकरिअतकेअ
रथसिध॥तपसाफलदेहूजगप्रसिध॥निजलोकजाहुमलोकनाथ॥
सबलोककरहुरहासनाथ॥करिदरसनवंदनईसकाज॥स्वसथान
पधरेसुरसमाज॥ कबि कं॥ श्रीनारायनकरूनानिवास॥परब्रह्मे
पधारेध्रुवपास॥कमलारतलोचनकमलपानि॥जगदीसकरीसुधि
दासजानि॥ध्रुवदेहदमतदेष्योसधीरा॥परब्रह्मसहतनहीहासपीर॥
मनलगनमगनजयेक्लेसभंग॥सिसुसमझिपरतनहींजोरसांग॥
इहिदसाजयोबालकबिदेह॥समजावसलहरिसोंसनेह॥देदीप
कआनएकदीस॥इहिजातिमिलेमनदासईस॥गरुडध्वजगदेअ
अ्रांनि॥ध्रुवध्यानमनहिनहिपैरेजानि॥ध्रुवमुषहरिफेरेसंषमुध॥
गतजोगसुनिद्रा जोप्रबुध॥प्रभुपरेदिष्टतवचतुजाचारि॥बनमाल
मुकटकुंडलहरिमुरारि॥बपुस्यामपीतअंबरबिसाल॥मकराकृतकुं
डलतुलसीमाल॥आनंदमगनध्रुवदरसपाय॥बिधिजुकतकरीक
जोबनाय॥श्री ध्रुवबाचा॥ कबिता॥ सतुति॥ ॐकारअपार अषिलअ
धारअनामया॥आदिमध्यअवसांन असमसमआतमअव्यया॥एक
अनेकअनंत अजितअबेद्धतअनोपमा॥अनिलअनलआकास अवनी
वनीमयआतमा॥उतपतिनासकारनअतुल ईसअधेगतउधरनःअ
धमअउरधअपतअमित तुमअनंतअसरनसरन॥१॥ परमधाम
परजोति परमआनंदपरमेसुर॥परहितपरकृतपरमपुन्य परब्रह्म
जोगपर॥परआतमपरप्रीति परमपदप्रीतिपरोदय॥परमारथपर
श्रेय परमरिथप्रकृतिपराश्रय॥परनिधिसिधि परस्वरूपपुन॥परमपु
रुषपरधामपति॥परध्यानध्यानपरहेतप्रीय परमपतितनउपरमग
ति॥२॥ निराकाररनिरलेप निगमहित निकट निरंतर॥निरबिकार

निरधार॥निसनवधाबसनरहरा॥निरालंबनिरगुननिरीहा॥निरबिच्छिनिरं
जन॥निरबिग्रहनिह्चलनिदान॥निहकलनारायन॥नरबोधनिराकृतत
श्रनिज॥निगमहेतनरनाथनित॥निग्रहननागनगउधरन॥नमसकारन
वरूपनिरूप॥१॥जयतिजयतिजगदीस॥जगतकारनजोगेस्वर॥जगजित
जगहितजगंनाथ॥जगजोतिजगतगुर॥जगनिवासजगस्रजन॥जगत
पोषनजगनासन॥जगततरनजगसरन॥जगतमांठनजोगासन॥जगबं
धजगतपतिजगतनिधि॥जयोजगतकारनकरन॥जगपोषनजगतनि
धांनजस॥सदासुकबिनरहरसरन॥२॥श्रीहरिउवाच॥दूहा॥श्री
भगवतप्रसनह्वै॥बोलेदीनदयाल॥जिहिइछातपसाध्यो॥सोफलमांग
ऊबाल॥१॥ध्रुवउवाच॥कैसनाथलवधुवके॥कटेअकमकलेस॥मन
इछापूरनकरी॥दीनबंधुदेवेस॥२॥सुरसिधनिदुरलभपदरस॥सोमैंप
योआज॥सबैमनोरथसिधईया॥नयेसमंगलकाज॥३॥भगवानफेरि
करकेकरुनाउदयि॥दीनबंधुजगदीस॥लीजेबंछितराजसुष॥अ्रबरु
लअवनीस॥४॥ध्रुवउवाच॥राजश्रीयकेबंधतो॥छूटतहेहरिनाम॥सो
हरिहरसनपाइऊ॥बंधनपरोंनस्याम॥५॥राजश्रीया॥बिलासमें॥सुध
रहैनहीचेत॥देवदेवपतिराजहो॥सबअनरथकोहेत॥६॥भगवानबोले
सबदिनरहिहोसुधमति॥मनगतिमलिहेमोहि॥राजकरतऊराजके
बंधनपरेनतोहि॥७॥दिब्यबरषनवचोकतुम॥सहसकरऊगेराज
पाछेलहिहोउरधगति॥सबसरिहेमनकाज॥८॥हेतदेसजोमुनि
नकौ॥तपबलनयेबिदेह॥कैहसासुराजमहातवध्रुवनिसंदेह॥९॥
कबित॥ध्रुवकेसबसाधनफले॥दयेदरसभगवान॥मनबंछितब
रदानदे॥हरिनयेअंतरध्यांन॥१०॥ध्रुवचलेजबघरकों॥बीचपंथम
जात॥आनिमिलीनहीराजश्री॥मनबंछितसबबात॥११॥राजथा
नउतमकवरा॥गोआर्षेरकहेत॥तहाजदूनसोंजुथनये॥आपपरे
रतषेत॥१२॥रानीसुरचिकुमारदुष॥करेअगनिपरवेस॥तबराजउ
गनपदा॥नयोबिरागबिसेस॥१३॥ध्रुवआयेतेहीसमय॥राजामिले
प्रहास॥तिलकछत्रपुत्रहिदयो॥आपगयेबनवास॥१४॥बरषअग
रहसहसदुबा॥ध्रुवकीनोजुवराज॥नृगतेकोटिकइंद्रसम॥सब
सुषसाजसमाज॥१५॥अवधिपारनिरबानपद॥पायोप्रगटनरेस॥स
बलोकनिकेसीसपर॥प्रथीभुनिप्रदेस॥१६॥सोध्रुवदेषऊबिस्व
नबा॥बऊकलपंतरबिस॥करजोरेखदनकरत॥नमसकारकरे

नित॥१॥कबित॥ सहसबरषछतीस-राजनिहकंरकुकरयो॥जाकेनीति
ग्रताप॥धरमचकुपदअनुसरयो॥राजजोगसधयो॰कऊअनुरागनकि
नैं॥ज्योंजलजलसंजोग॰चरनपंकजचितदिन्नो॥सुरगनसहारनरहर
सुकबि॥जयजयजयजगदीसजय॥ध्रुवबरदनामजगउधरन॰इतिकार
नअवतारनय॥१॥इतिश्रीध्रुवबरदनामअवतारचरित्रसंपूरन॥नाराय
णअवतारचरित्र॥कबिरुवाच॥
हरनरहरदासेनबिरचितं॥अथश्रीप्रिथुअवतारबरननं॥कबिरुवाच॥
दोहा॥ अथआरंभअनंतप्रभु॥कहिऊंप्रिथुअवताररदीनदयालदयाल
॥१॥सुषदायकसंसार॥१॥ स्वायंभूमनुबंसमहि॥भयोअंगअवनीस॥ज
केजप्रतापजग॥सासनमानतसीस॥२॥परदानीनृपअंगके॥नईसुनीथ
नांम॥पतिबरतालावन्यजुत॥सकलगुननिकेधाम॥३॥ताकेउदरहिंऊ
पज्यो॥अधमयबेनकुमार॥सातोसेवनतुरबिसन॥नीतिरहतसबिकार
॥४॥येकसमयतिहबापसो॥मिथ्यावादीहोयबेद
रूपमननयोमलीन॥५॥ छत्रीयकुलअवतारलो॥मिथ्याबादीहोयबेद
पुरांननिमेकसे॥नरकबिलासीसोय॥६॥ राजेबाबा॥पुत्रहिदेष्योउष्ट
मति॥राजाकेहेरिस॥य॥जापापीयादेसतें॥मोहिनबदनदिषाय॥७॥ क
हिकहाव॥बेननिकस्योदेसतें॥कस्योअनादरराजा॥दुहलेनिकस्यो॥ति
हिसमय॥सबेनजेसुषसाज॥८॥गयेबेनकऊबनगहन॥तहातपस
धनकीन॥प्यासछुधानिंद्राहता॥भयोध्यानलोंलीन॥९॥राजाअंग
हिकालबऊ॥राजकरतगएबीत॥उपज्योतबबैराग्यचित॥छुटीराज
सोप्रीति॥१०॥येकसमयगतअरधनिसि॥निकस्योराजाअंग॥कऊनूज
नोंकितगयो॥सबैअहतजिसंग॥११॥सेवकमंत्रीसुनरजे॥षोजतरहे
दिगंत॥कऊंनपायोसोधसो॥मनभयेमलिनसुसंत॥१२॥नदीअराज
कन्मितह॥नयत्रासितनवन्नृता॥येसेसोकसोबसतयहा॥सबैबिग
तसुषसत॥१३॥लोकदसाअवलोकिकें॥रानीपरमकृपाल॥न्युहिअ
दिदेअवररिष॥बोलिलयेततकाल॥१४॥कीनीप्रजाजोरिकर॥बं
दनबारंबार॥देसअराजकलोकदुष॥कहेसबेबिबहार॥१५॥साचिव
बधसामंतसब॥उतमअंतिजलोग॥रिषनिकसेयेपूछिसब॥पुनिचि
तवऊप्रयोग॥१६॥इनसबहिनकेलेऊमत॥करऊमंत्रनिरधार॥पाछे
षोजऊबेनकह॥बऊदिसिपठवऊचार॥१७॥सबकेसंमतसोमिले
कीजेकाजबिसेस॥रानीसोपेहोतदिढ॥यहेनीतिउपदेस॥१८॥पिता
निकास्योदुष्टगनी॥यहजाननसबको॥य॥पापीराजाकेनये॥सबेअ
निष्टेहोय॥१९॥अंगबंसमहअवरको॥छत्रीरछेनअहि॥सहज

सुन्नावसु बेनको तुमकु जानत नाहि ॥२०॥ अरथी दोषन देषही ॥ अन हित गिनै न
कोर: सो आतुर यों ही कहे ॥ जो त्रवतम्ह सुहे रहै ॥२१॥ दुषी जहां हां होत सब लो
क निकरी पुकार ॥ को ऊ साध असाध हो ॥ नृप कीजै निरधार ॥ लोक बाच ॥
सब मिलि कीनो मंत्र यह ॥ रिषि सों जोरे हाथ ॥ लै आवे कुं नृप बेन कों ॥ कीजे
नृभि सनाथ ॥२२॥ कवित्त ॥ जिहि बन सांधत बेन तप ॥ भृगु तहां गये रिष
सा ॥ रन बंदन कीने बिबिधा ॥ उन सु नद ई असीस ॥२३॥ बेन करे उपदेस रिषि ॥ लै
आये गहि बांह ॥ मान सुनीथा सों मिले ॥ गहे अहिज ए उछाह ॥२४॥ बेद मंत्र जुत बेन
को ॥ भृगु कीनो अभिषेक ॥ परजा गन नृप ना प्रगट ॥ अवनि तप्यो छत्र एक ॥२५॥
छंद पधरी ॥ पायो सुपीठ पत्तन प्रदेस ॥ इक छत्र तप्यो अवनी नरेस ॥ सेना सम
थ चतुरंग साजि ॥ बरबीर सुन्तर रथ सजव बाजि ॥ अनुसरत उअ सासन अ
षेरू ॥ दीनी थत अतहि अपराध देख ॥ लुटाक चोर लंपट कुलोक ॥ जहां तहां मिलं
न सत्र बस सोक ॥ बिष बदन गंध मृष क बितान ॥ इहि नीति गए बल षय अरा
ता ॥ रिथ पार निकंटक करत राज ॥ संग दुष्ट नृप सेना समाज ॥ मद अंध नऐत्र
कुसअ मांन ॥ रीसन मांनि आप हि अपान ॥ ॥ दोहा ॥ सुरापान पलनोजन
बेस्या रत बिलास ॥ आषेटक दुरबृत्त सक्रम ॥ परत्रीय सेव प्रहास ॥२६॥ छंद पध
री ॥ सब करत सातु रबिसन सेव ॥ द्विज मानत नाहिं न गुरन देव ॥ अति उग्र
तेज तें अहंकार ॥ बिपरीत चरित बढि अति बिकार ॥ छल बचन उचरत मर
म छेद ॥ तव नाहिं साध अनसाध भेद ॥ चित बसत क्रूर रह अनाचार ॥ अबिबे
क असंगत सुष उचार ॥ निकसे पुर बाहरि जब नरेस ॥ सुनि होत सब्ब द
हरं न देस ॥ निरदोष पर कृत धरम नास ॥ सजित उपाधि निसन बसहास
मष होम मिटे पूजा महंत ॥ सुर बिप्र सुर भिसन मान संत ॥ बलि अनल नै
म तप न ए बाथ ॥ सब कर्म करम प्रगट अंसाथ ॥ दोहा ॥ जे कृत निरत नृप
तिक हो ॥ ते सब सेवत राज ॥ ताते हा हा होत जग ॥ बाढत सोक समाज ॥
॥१॥ छंद पधरी ॥ निसनैं मअगति होत्री द्विजात ॥ बिपरीत करम नित सु
नत बात ॥ द्विज गए तबे मिलि भृगु निकेत ॥ अवनी सकह अनरथ हेत ॥
भृगु आदि अवर सब रिषि समाज ॥ जुत सोक नये गत द्वार राज ॥ प्रति
हार ॥ प्रतिहार कहे नृप सों प्रमान ॥ थिर राज द्वार मुनि मुषमलान ॥ त
ब लये बोलि लीन रिषीस ॥ द्विज निकट आर दीनी असीस ॥ बोले बाप
नृप करे प्रसन अंतर कुचेत ॥ द्विजराज कहहु आगमन हेत ॥ रिषि बाच ॥
दोहा ॥ बेद प्रणीत जु नृप धरम ॥ सो पै सुनहु नरेस ॥ करह तिहार श्रय
लगी ए रिषि हित उपदेस ॥१॥ सुरमुष कहीयत अनल सों ॥ यह जानत
सब कोइ ॥ ताम हहवन जु होत है ॥ सुर निपजु चत सो इ ॥२॥ हयमेधा

कजहजे॥होतपुहमिपरराज॥तबसबसुरसंतुष्टके॥करतराजहितकाज॥१॥
बरनचारिन्पपरेहतया॥तजतनहिग्राचार॥तिनकेपुनिहसंसफल॥न्पपाव
तनिरधार॥१॥बादतपुन्मप्रस्तावते॥कोसदेसबलकिन॥राजग्रकंटकजोगव
ता॥न्पभूरनतानित्त॥२॥अपुरबतकुलउग्रत॥सुषसेपतिजयजुधायेसब
पावतधरमते॥सदारहतचितसुध॥३॥होतप्रसनसुधरमते॥ब्रह्मा विसुम
हेस॥तातेमनबचकरमकरि॥धरमनतजतनरेस॥४॥जपतपतीरथजोग
मष॥विमलबिसुविस्वास॥रनकेकीयेनिषेधते॥होतन्पतिकेनास॥५॥
राजोवाच॥राजपूछेरिषंनिसों॥कहियेकरिनिरधार॥किहिनिमंतनुमम
षकरत॥सहतकलेसअपार॥६॥रिषउवाच॥ब्रह्मबिसुरुद्रादिसुर॥जिनहि
तकीजतत्याग॥होतसंतुष्टसुबासनो॥ग्रहिसंतोषदिजभाग॥बेणब
चकछित॥ ससिनिवासआकास· न्कुरिजबरविदिगरजीय॥नासदेस
अस्वनिकुमार· श्रुतिअनलसुसजीय॥बारुरंद्रजलबरन· स्वादरसना
अनुरतीया॥हृदीयब्रह्मनिवास· मानसबअगप्रवरतीया॥अपनेअनंतस
बराअमर॥बसतजननमतेअतबया॥पुनिजाननबेसनीततुमा॥महीपालब
पुदेवमया॥११॥ तुमजाननतनरनाथके॥अंगअंगसुरबास॥तातेराज
देवमय॥कहतपुरानप्रकास॥१॥जग्यकरतजोसुरनिकहा॥मेहिसमर
पऊआनि॥लेजारतहेअगनिमेहा॥कोनपरीयहबानि॥२॥न्पजोबीजन
अंकुरो॥जस्योनपवेकोय॥नसमन्पऐतेकाजकहा॥हमहिबतावऊसोय॥
रिषउ॥फेरिकहेरिषबेनसों॥अंतरउपजीज्वाल॥अपनेपथीगतधर्मा
नहीछांडतनुवपाल॥४॥आगेभ्रराजान्पणु॥अबलेसुनऊनरेस॥तिनजो
अंगीकृतकस्यो॥सोईकरमविसेस॥५॥अरथकामनोधरमकरि॥साथेमुक
तिविसेस॥चारिपदारथतिनहिलगि॥तनपररहतनरेस॥६॥बेणवाच॥
रेपटपसुब्रह्मरिषा॥मोनतनाहिनषेध॥फेरिकेरिसोईकहत॥अपुनन
ऐसुमेय॥७॥आपानंगनरेद्रको॥हिंअससत्रबधपाप॥रिषऊनीतिबि
चारकरि॥पंफिनहोपुनिआप॥८॥राजाकेतेहीसमया॥ग्रांनिचढेउरके
थ॥मारिनिकासऊद्वारते॥हमकहकरतप्रबोध॥९॥बेणउ॥बेणकेले
पनिहारसों॥पापीकाढेघेरि॥रहिबिधिद्वारलंघाईयो॥सुहनरिषाव
हिफेरि॥१०॥ कंस्योअनादरदिजनको॥न्पमनुअपपापा॥कीनेबत्रम
हारतहो॥मुनिवरउगेरिसार॥११॥रिषवाच॥तबेरिषीस्वरकोपजुत॥ल
गेकरनविचार॥राजाहिदीनेंश्रापके॥
हदीनोंराजहमा॥यासिवे
[illegible]

रेदोषनहोइयहहैबेदबिवहारा॥१॥ ब्रह्मबिरोधकपापनरूपा॥आपत्तयेनृग
वंत॥आपदयेनृगुयोकलो॥इहिठनयाकोअंत॥२॥ सियासनतेनृपगिले
ग्यानगयेतजिदेहा॥करेसुपावेकरमफल॥निसचयनिसंदेह॥३॥नृगुमुनि
निकसेआपदेह॥बेलमेरेसबिकारा॥नाहीछनरनिवासमरा॥करेसोहाह
कारा॥४॥ मनसुनीधावेनको॥करिकरिकहेबिलापा॥ग्यानीपावतकरमफ
लाहेमनमिथ्याआपा॥५॥न्रतककलेवरलेधरयो॥तेलद्रोणकामहिराि
नीबिद्याजोगतें॥कमगतबिगसैनाहि॥६॥कबिरुवाच॥छंदपधरी॥
नृपमरयोगोराजकरयोरेसा॥अवनीअनरथप्रगटेअसेसा॥परत्रीयासक
तबिआपहारा॥जनहतकपात्रधारकनुनारा॥बिसवासघातबेसाबिहार
परनिंदकतसकरपापचारा॥निसिदिवसतेरनहीपरतधारा॥गेहनक
रतपुरदेतजारि॥बालजकषीपसुपालको॥मुनिदेखिबराबरतएस
सेको॥बसतएदीनसीदतसाथ॥आचारनृष्टउमगेअराथ॥कुपिहतज
मिबनबरिबिसाल॥निरझरनिकरबकुबालनाल॥अतिवृष्टिहेतजहेतह
असेषा॥बननरीनईमनरितबिसेषा॥हाहपुकारसंसारहेाा॥करतारबिन
नरिरहकेसा॥कुपुकालदसारहिनिअनीत॥नयबिसतबरनचाहे
सनीत॥इकसमयलोकसबजुरआनि॥मिलिमंत्रकरेमनत्रासमानि॥
नृगुसरनचलकुकतिदासनाव॥सुनिदुखितलोककरिहैसहाउ॥सरस
गीतरखितिपुनिषेत॥नृगुकरतजग्यजहमुनिसमेत॥जनतएदीनरिष
अअजाय॥बंदनप्रनामकीनेबनाय॥मरतउसासरोदतदुखार॥करित्र
हित्रहिकीनीपुकार॥ लोकवाच॥ नयसोकउदधिबूडतबिहाल॥दुप
नयेसरनआयेदयाल॥दुहा॥नरीदसाजेदेसकी॥बिनाराजरिषराज
ग्यानबिनाजोदेहपे॥कोऊसरतनकाज॥१॥रिषउ॥रलोनराजअग
को॥सेरतिछत्रीकोय॥अवरबरनकहराजको॥हमपेतिलकनहोय॥२॥बे
नपतनतोकरमबस॥करियेकवनउपाय॥पुत्रनराजाकेभये॥दयेस
रीरजराय॥३॥लोकउ॥लिराछ्ये्रहैतेजमहादलोनअगनिसरीर॥पर
मसाधपाउधारीये॥हरियेजनकीपीर॥४॥लोकबिलोकेदुषितजब॥नृ
मुनिबरनएदयाल॥कहनिवारनबिसवको॥आएतेहीकाल॥५॥नृ
गुपउधारेराजग्रह॥रानीकरेप्रनाम॥मुनिवरतुमहीतरहोयह
करतधनधाम॥६॥आपग्रनुग्रहजोग्यतुम॥यहदेवतअघिकार
दउरयाकरिकरतहोय॥यहहैबेदबिवहार॥८॥कबि उ॥नृगुसु
रानीकेबचना॥समकिलोककत्रासा॥जहाकलेवरबेनको॥आए
हसहास॥७॥ छंदपधरी॥ नुवमोधिजपा॥बिधिबेदजानि

सनदरनादिकरचेआंनि॥ बपुमृतक धरेतापर बिसेष॥ उचारमंत्र कीनें असेष॥ रु
द्र॥ जंघामथत जु बेनकी॥ उपज्यो बाहुकराज॥ तिहिते बेस निषाद्यो॥ करत ज
थाकुलकाज॥१॥ करेजु बेनअ कमकृत॥ अघमय तिनकें अंस॥ सहलै ही वाहुक
न्यो॥ प्रगटे पापप्रसंस॥२॥ छंदपधरी॥ रिषमथत प्रथम जंघा नरेस॥ प्रगटे
निषाद पति नृप्रदेस॥ लघु अंग थूल मसतक लिलाय॥ कच कपिल अंग कारे
कुधाय॥ बेगंध देह चष अरुन बान॥ बानी कराल करकस बिधान॥ परहिंसक
परबित्ताप हार॥ परमोह ग्रान घातक जुवार॥ बिपरीत करम गत धरम बाय॥
रहि रूप उपजि अंत जिअगाध॥ कुदरा गुट परबत प्रकास॥ रिष दये तिनहिं
बनगहन बास॥ प्रथम हि अक्रम जे कृत प्रमाद॥ न्यपाप अंस उपजे निषाद॥
षिति अधम जे चांडाल षाति॥ जगत ए उनहिं ते नीच जाति॥ अघ निकसि बेन
तेसुध अंग॥ अन्हवार देह सो उदिक गंग॥ कवित॥ दहन सुज मथांनन्क
रिज बबेन कलेवर॥ अति उदार अंसवतार· पृथुनपे पुरुषपर॥ बांमबाहु
के मथत· अर त्रिसगटी त्रीय अरदुत॥ पत्निबरता लछमी प्रसछ· लछनजु
नसंजुत॥ अंग अंग चिन्ह देषे असम· कीय बिचार निसचय करे॥ नवन्त्व
सकल मानऊ अनय· अषिलरीस पृथु अवतरे॥१॥ छंदपधरी॥ प्रथुच
रनपदम रेषा प्रकास॥ कर संषचक्र अरु गदा तास॥ प्रतिपाल लोक ये रिष
प्रसेस॥ बिसेस प्रगट अंगबेस॥ निसचय जु तदरसन कर ऊनेम॥ परज
हमन जऊ जुतस हतप्रेम॥ नईदेह कृष्ण पूरन प्रमांन॥ महिमा यह देवी
अप्रमांन॥ पृथु अर चिअंग पूरन प्रतछि॥ लषि कीने बंदन बिसुलछि॥
रहि सिमय बजे दुंदुभि अकास॥ मुनिन ईपुहुप बरषा प्रकास॥ ब्रहम
दिदेव रिषपितर आय॥ गंधरब गान कीनें सुनाय॥ सुरकंन्या नारक
रतप्र सिध॥ जय सबद करत चारन सुसिध॥ ब्रहमादिक बंदन कृत बि
सेषि॥ दांहनै हसत तन हग दृदेषि॥ तुज बाम सं षच क्रा दिसाव॥ परम
कृत रेषा मध्य पाव॥ सुरनि सचय कीनें मानि सीस॥ अवतार स्वये त्रय
लोक ईस॥ सुरमुनिन करे आनि तिषेक॥ बिधि तिलक छत्र चामर बि
बेक॥ सुरआनि आनि अपने सुनाय॥ परब्रहमने टि कृत बंदिपाय॥
सिंघासन हेम मय सहल साज॥ बैश्रवन दये बिधि बिधि बिराज॥ न
लधरन ताय हछत्र जाल॥ बिधिजुक तबरन दीने बिसाल॥ कीरतिम
यमाल धरम देव॥ बिजनादिक चामर दीय सबेव॥ कृतनीतिरंठमय
धरमकाज॥ रतनमय मुकर दीय देवराज॥ सरसती माल मुकता सु
रेष॥ दीय ब्रहमकवच ब्रहमा बिसेष॥ दीय चक्र सुदरसन चक्र
पानि॥ अभ्यय श्रीलछमी दई आंनि॥ दीय रुद्र षडग दसचंद्रहास॥

अंबिकाषऊगसतससिप्रकासा।।नारदथबिस्वकरमासेतेजा।।ससिसुधाषीरसाग
रसुसेजा।।दीयअगनिप्रभुषअजगवअनूपा।।रबिदयेकिरनिमयबानरूपा।।द
अनजोगमयचक्रप्रकासा।।सुरसुमनदृष्टिकीनीअकासा।।जलचरनिचरमअन
नेदिजानि।।अतिगंधजनसपतिदयेगोनि।।गनदिष्टगमनअकासचारिरथ
मारगसरितादयनिहारि।।मनिदईप्रकासबिषमुषनिमानि।।अनलदिक्क
रथगिरनिआनि।।कामलासक्रलतकोमगावा।।सबसिधकलपतरमनिसु
लावा।।दईचक्रदयेदेवनिप्रदीपा।।मुनिदयेमित्रआसिषमहीपा।।रसादिलेद
दीयसबनिआनि।।मनबाल्कररसपृथुलईमानि।।स्वसथानगयेब्रह्मादिदे
वा।।पृथुकरतराजअवनीअजेवा।।सबधरमनीतिजुतबिधिबिसेसा।।रहितो
तितपतआधिमलेसा।।दिनऐककृषीमिलिराजदार।।सबकहेनृपहितरवीसक
रा।।षितिरहीअरोजककछुककाला।।बनगहनवृछबादेबिसाला।।रजवृष्टबा
नबसहेतरेना।।सबलयेषेत्रजलमयसुषेना।।जलचरषिनिरंतरजलदज
ला।।षितलयेलयोनकलयेषाला।।रहितेतरहीअवनीअजेता।।हमलयेनि
रुदिनकछुनहोता।।पृथुराजसुनीजबजनपुकारा।।आरंभकरेलीलाउदार
गिरकदरनिरझरबनगहीरा।।नदबिसदनिरंतरबहतनीरा।।दिगबिजय
काजरथुकीयप्रयाना।।समकलिकरेसबथानथाना।। कबित।। दुगमदे
षिथलदिद्ध लयोआ चिजअवलिपति।।बिमलषालसरिताबिसाल
नरलतामईषिति।।प्रभुपअयपरबतदिहार नदलयेनिरंतर।।थलबि
थारतिहिथान पूरिकीयषेतसुपधर।।समकरेषेतबनकाटिसब उप
जिअनऔषधअतुल।।पसुपालकृषीनिजबृतपर सुगमजथाउदि
मसफल।।१।।कतबिसाल बसुमतीय परबऊदसपत्तन।।नगरग्राम
अनेक बिसदबाटिकागहनबन।।आषेटकउद्यानथान कीनेगिरकं
दरा।जलनिधानसरवरसकूप बापीसोनाबरा।।बनधातरतनआकर
बिमल बिधिअपारबिबिहारबिधि।।संसारजथाअनिलाषसुष सेव
नअहअत्रभूसिधि।।२।। जिहिजिहिथलमिलिदुष्टजाति उतपात
उग्रकीय।।जग्यबाधसंतारसाध संतारडीनिलीय।।दीनत्रीयाद्विज
गऊबक्त बालहत्याजिहिकिनीय।।अवनितारिआक्रोति नरीतिन
श्रोणितलीया।।हयमेधआदिदेमषदेवन लयेमुनिमयअषिलसुर
पृथुनृपतिसोधिजनबसुधकीय पृथीनामतरासगरफुवा।।होरसस
नवहथीय कलापृथुस्वयकारन।।तुमअनंतअवतार अषिलसुव
रउतारन। धेनरूपरूधरो प्रगटनवरछापूरन।।करउबछके

क॰सबैहोस्कंधसंपूरन॥करिबिचारनिरधारंकीय॥ जगतहेतदोहारजबा॥
मतारसुषदसंसारसिधि अउरतनमयहिसब॥१॥ नयोब्रह्मसुरराज
पृथीमिलिधेनदयापरा॥दुहनहारसबदेव तहारिषजदातपेसुर॥पितर
जछगंधरब॰जोगसाधक द्विजदानवाराकसअसुरपिसाच॰नगनर
रतसुमानवा॥सतपुरुषसूरजेसाधनर॰बरनचारिनिजकृतकरा॥ऐसे
दुहतरतनगरत्नागरवनि॰पुरुषसिघउद्योगपरा॥३॥ छं॰ह॥ जथाकामन
सिधसुष॰सबपायेसंसारा॥ पृथुप्रसादपृथीदुही॰पुनिप्रकारअपार
॥१॥ सुनतटप्राचीसुरसती॰ब्रह्मावरतसुषेत॥पृथुप्रभुराजसथानत
हा॰नयोसुधरमसमेत॥२॥ दंडअसाधनिसाधसुष॥दीनेजथाप्रक
रा॥बेदप्रनीतजुधरमबिधि॥कीनेपृथीप्रचार॥३॥ होतअवधिकालतं
तकम॥जानेपृथुनरेस॥जुगतेपूरनराजपद॥अरुदईवनअसेस॥४॥नृ
पउपजेबैरागतब॥तोबनवासबिचार॥पुत्रहिदीनोतिलकतब॥
अपनेहाथउदार॥५॥ नयोनृपतिबिजतासतहो॥राजश्रीयपरपु
रारांणीअरचिसमेतपृथु॥बासकीयेबनआइ॥करीतपसाउग्रत
हा॥दंपतिसंजुतनेम॥इंद्रीयनिग्रहदेहदमा॥परंब्रह्मसोप्रेम॥७॥ राज
जोगअभ्यासजुत॥नएजोतिमहलीन॥रानीअगनिप्रवेसकरि॥धरम
पतिब्रतकीन॥८॥ अगमजोगअभ्यासकरि॥कीनोप्रानप्रयान॥पृथु
परलोकप्रवेसने॥रानीअरचिसमान॥९॥ बाजेगगननिसाननब॥सुम
नबृष्टिआकास॥आनेदेवब्रह्मादिसुर॥नृपबैकुंठनिवास॥१०॥ कबित्त॥
देवनावनपदाव॰दासनसुनसोंदषीया॥प्रसुप्रभावअवर्नित॰बयरू
बमक्रोधबिसेषीया॥स्यादंडअनुसार॰देवदानवप्रमतकीया॥रवि
कारनअसावतार॰सुबैनारबिनासीया॥ जिहिआदिमध्यअनअंतक
ऊ॰कबिनरहरहिबिरदक हो॥पृथुनएदेवत्रयलोकपति मह
राजअवतारमहो॥११॥ इतिश्रीपृथुअवतारचरित्रसंपूरन॥ना
मावर हरनरहरदासेनबिरचित॥ अथहयग्रीवाअवतारबर
नंन॥कबित्त॥छं॰ह॥ अंबकहिवोहेकरमजुता॥सुषदसाधसंसाराजि
हिकारनसुवलोकने॥ हयग्रीवाअवतार॥१॥ ब्रह्माकोवसुर
प्रलय॥नयोअवधिबसआनि॥रजनीमुषकीनोसयन॥समयकमल
नजानि॥२॥ पृथीप्रसरप्रलयजल॥नासनृपेजगजंत॥ज्योंनटस
जसमेटिसब॥सोइरहतदिनअंत॥३॥ बाटेफेनतरंगबसा॥मिलिज
लमलसबिकारा॥तातेउपजेअसुरदुइ॥असाननआकारा॥४॥ जिहि
[illegible]

यो सुरन न्नयो प्रमान ॥१॥ अरम बिरोधक पापमय ॥ नये बिग्रह विसत
र ॥ बुधि बिक्रम बिवसाय जुत ॥ माया रुचत अपार ॥३॥ छं०प धरी ॥ इक सम
न वेदे अ सुर असेत ॥ सुभ लिग्र गत जे हा ब्रह्म सेत ॥ बिधि ग्यान नसो ग्या
न न मिलाय ॥ सो बेद स्वास पीते सुनाय ॥ जब न्नये उदर गत निगम चारि ॥
ले गये दुष्ट सब हिन संचारि ॥ बेदा प्रनाव असुर बिसेष ॥ अ तिलाष सिधप
त असेष ॥ बिचिप्र लयनी रमंदिर बिसाल ॥ सो बसे असुर तह सुर निस
ल ॥ नहीं निगम सम बत अनमोल ॥ निस्वास उदर चढि आ समान ॥ मुष
जगति बेद तब असुरम्नद ॥ अहमा रुधरे करि जतन गूढ ॥ बिधि निसा जी
ति जागे बिनीत ॥ दिन प्रलय अवधि बसते बितीत ॥ अहकलप अष्टिउ
पराजि देव ॥ मषकरत न्नये महिमा अमेव ॥ पितकरे जबे आग पा प्रसाद ॥
मिलि पुत्र न्नये तब अप्रमाद ॥ अधिकार जथा क्रम नाम अंक ॥ आरंभ न्नज
ग्य कीनो असंक ॥ मुनि न्नये बिधि हि पूछत बिधान ॥ धित न्नये पुत्र सब
थान थान ॥ निःसेष निगम लेगो निलाज ॥ निगमूद ब्रह्म न्नये सर निकु
ज ॥ बिनु बेद बत बेकहा बिधान ॥ मष बाध न्नये चिंता अमान ॥ पाषानम
ई प्रतिमा प्रमान ॥ यो न्नये ब्रह्म रूरे न आन ॥ उरम अबेद षोजत अ
नंत ॥ पावत न लेस कछु परम संत ॥ न्नये ब्रह्म बिकल चित बार बार
करता रत्ता हि कीनी पुकार ॥ तुम दीन बंधु देवाधिदेव ॥ न बन्नत तत्त्व भूत
इछान सेव ॥ सब काल करन कारन समर्थ ॥ तिहि नारनजे जिहि लहि
तथ ॥ रिषपाल बेदराजाधिराज ॥ अनसहन अनसथा परी आज ॥ दुषव
नि ब्रह्म जब सुनी देव ॥ इहि समय आनि प्रगटे अजेव ॥ क्रतअर चाप
जा कमल जात ॥ बिधि बार बार बंदन बिष्यात ॥ देवाधिदेव बंदीनजि
दयाल ॥ करुना निधान बोले कृपाल ॥ सब बिधि बिरंचि तुम धरम सेत
कीनो सो हि सुमरन के न हेत ॥ बिधि बाच ॥ न्नगवंत हमन कछु ल
हो नेर ॥ विस्वेस बिष्णु कहा गये बेद ॥ दिग ग्रंथ न्नये ओ जथा जेत ॥ करि
येस हार अब रमा केत ॥ तहा नारायन करुना निधान ॥ धरि दया बि
तकुत जो ग्यान ॥ अप्पान उदधि महँ असुर एक ॥ अस्वानन अथका
रक अतेक ॥ लै गयो बेद सो हरि निलाज ॥ यो कहे बिष्णु मे लिषो आ
ज ॥ बिधि उ० ॥ बिधि कहे जो रिकिर बिवस है ॥ तुम ते अगम्य नहीं मे
र केश ॥ कृतकारन कारन जु रमाकंत ॥ अनमथा करन तुम ही अनंत ॥ उ
मदये बेद मो कहे दयाल ॥ पुनि करि है तुमही प्रनित पाल ॥ नही १४
होत निगम बिनु करम नाथ ॥ असमथ न्नये द्विज बरग नाथ ॥ बिधि
जुकत सुनी बिधि दीन बानि ॥ अपि लेस बढी उर दया आनि ॥ अद

तुत सरीर अकृत अनूप॥ हरि जयेत हो हैग्रीव रूप॥ प्रभु करे अंब निधि मह प्र
वेस॥ सामु हे असुर आये बिसेस॥ जाती सुनाव कीयन कजोर॥ कछु काल
नये संग्राम घोर॥ बिअले दुष्ट मास्यो बिसेष॥ हयग्रीव देव कृत बिजय लेष
प्रभु करे अ सुरमंदिर प्रवेस॥ आकरषि बेद लीने असेस॥ निरये षदेव दु
दुभि निनाद॥ परपुरुष दयो दरसन प्रसाद॥ अंबज नू दीनें निगम आनि
बिस तार बिबुध जय जय तिबानि॥ मष जोग जाप तप करम तंत्र॥ सबि
सेष करन मुनि गन सुतंत्र॥ इथ्थी सथरम प्रगटे प्रकास॥ बैकूंठ नाथ बैकुं
ठ वास॥ कबित॥ इहि प्रकार अखिलेस· पुरुष हयग्रीव प्रगटीय॥ दु
ष्ट मारि संघारि· असुर मध्य ग्रोहरीय॥ अमर बृंद आनंद· निगम हित नु
हत निरंतर॥ बिधि सनाथ कृत बिस्वनाथ· परब्रह्म दयापर॥ हति दे
ग्रीव आसुर अहित· जये अखिज त्रय लोक तुव॥ उधार निगम नरहर सु
कबि· हयग्रीव अवतार हुव॥ १॥ इति श्री हयग्रीव अवतार चरित्र
संपूरन॥ भाषा बारहट नरहरदास नव विरचितं॥ अथ श्री कूरम अवता
र बरनन॥ कबित्त छंद॥ दुहा॥ येक समय सब दैत मिलि कीं
नो मंत्र बिचार॥ सुक्र हमारे कुलगुरु तप बल बुधि अपार॥ १॥ जिहि बि
धा सजीवनी॥ उरन मंत्र प्रकास॥ गुर प्रसाद हम मृत्यु तें॥ अनय नवे बि
षास॥ २॥ अब पे रूप करि ये प्रगट॥ सुर सुरराज संघारि॥ बास करहि
तिहिं बिमल॥ इंद्रलोक लें मारि॥ ३॥ सबे दनुज सनधे ओनिलगे
सुर धाम॥ त हाम हा दुसहल नये॥ देवासुर संग्राम॥ ४॥ जो ई दानव रनम ह
गिरे॥ सुक्र जिवावे ताहि॥ सो ईऔ निसार थनिरो॥ ससत्र ससत्र संब
हि॥ ५॥ महाजुध कछु काल नें॥ असुर घटे न कोइ॥ घटन लगे संग्राम
सुर॥ रहे सोच बस होइ॥ ६॥ सुरनि कसे संग्राम तो॥ लयो सरन बिधि
जाइ॥ कस्यो ब्रह्म उपदेस जब॥ करिहैं बिस्नु सहाइ॥ ७॥ देव गये ह
रि के सरन॥ दुष निवेद्यो तथ्थ॥ तुमद्याल त्रय लोकपति॥ कारन करन
समथ्थ॥ ८॥ श्री हरिबाच॥ मंत्र सजीवन सुक्र पह॥ ताते वे बलवान॥ सं
धि उचित बलवान सें॥ मंत्र कस्यो भगवान॥ ९॥ अमृत पयो निधि मांझ
है॥ काढ़ उक रि मथान॥ सुधा तुम्हारे कर चढ़े॥ तो तुम उन हि समान॥ १०॥
उनके बल सजीवनी॥ तुम हि सुधा बल होइ॥ जा इक रउ यह मंत्र अब
संधि काज नें होइ॥ ११॥ कबित्त॥ स्वामी दैत निके कुते॥ जहा बिरो
चन राजा॥ कनपवाये सुरनि तहा॥ संधि करन के काज॥ १२॥ छंद॥ हू त बि
रोचन मांझ हे॥ ... एक ... ते अपने बं समह॥ नाहि बिरोध स

नसंस॥१॥ अबतोकरियेसंधियह॥दोउमिलिबलअप्रमान॥सुधापयोनिध
मांझहैकोढकुकरिमथान॥२॥ मांनिबिरोचनमंत्रयह॥उत्तरदयोबिचारि·
जोकछुनिकसेउदधितें॥लेसमतासंवारि॥३॥हमहितुमहिसमव
गेसबा॥अतलबिक्रमबिबहारा॥जहांयरऊगेकाजतें॥जहांजुधनिरथा
सा॥४॥दिवदनुजयोंकरिकै॥संधिप्रबलमतठानि॥आपमांझमिलिएक
ढोउदिमकीनोंआनि॥५॥ मिलिसबदैत्यमहाबली॥मंदरलयोउगइ
अरधपथमहलैउस्यो॥करिकरिचितकआर॥६॥ देवरतातेचले॥
मंदराचलअनमाना॥अरथनागहमतुमसकल॥करिबोबचनप्रमान
॥७॥ बलबिक्रमकरिहुरथको॥मंदरउठेनम्हला॥नबहरिकोसमरथ
केस्यो॥लाहिनकोउसमत्तला॥८॥ आयेदीनदयालप्रभु॥तिहिछिनदे
वसहाइ॥मंदररापेउदधितरा॥गरुडपृष्ठिधरिआइ॥९॥ गिरमेषलजोज
नसहस॥सहसउरधचालीस॥मंदराचलपरमानयह॥सोनापिमितसु
दीसा॥१०॥ नेतकाजमनुहारिकरि॥आन्योबासुकिनाग॥सुरासुरनिताते
केलै॥लीजउअमृतबिभाग॥११॥ छंदपधरी॥ पुनिसुनऊकमनगअ
वतारहेत॥कलरूपअतुलबलधरमकेत॥इहिसमयदेवदानवबलि
छा॥मिलिकरतजतनहोंउमतिछा॥सामुद्रमथनकीनोंसमथा॥उधरहिरत
नचवदरूसुतथ॥नितेसुकस्यो॥बासुकिनिहारि॥मंथानदंडमंदरबिच
ते॥पयमांझधरेपरबतबिसेष॥सोनयोलीनदेख्योअसेष॥जातीसुनव
यहउपलजानि॥जलमांझधरेकूरमनिदान॥नहानयेनिरुदिमदेसरे
वा॥पैनिधिअगाधपावहिनतेव॥सुरअसुरनयेआतुरसपेद॥करजो
रिकैकरुनांनिवेद॥कीजेसहाइराजाधिराज॥केतेगहोतहेंदेवक
जा॥सबकालनयेतुमसुरसहाइ॥जातीसरूपप्रभुज्ञानराइ॥हस्ति
येनहाकमगवतार॥बपुदेधमहपयनिधिअपारा॥सुधारिमहपयनि
धिपहारा॥उधरेदेवकूरमवतार॥आवरिनअंगबासुकिसमूल॥सोन
योकूटकरबंगतूल॥धरिपुंछदेवसमदेवराज॥बलिआदिमुषहिअसुर
समाज॥बिषज्वालनागमुषतेंनिसेस॥अतिधूमजुकतनिकसीअसे
सा॥तिहिजरेअसुरतननयेस्याम॥तेसुकजिवायेमंत्रनाम॥परचंफत्र
मतमंदरप्रकास॥उछलतहिपयोनिधिपयअकास॥उषचदिनुबस
नषैगोलमांझ॥पैरुयअरकजनुनरैसांझ॥कनकष्टिमनऊकरूय
मांन॥निरगणतनएकरुनानिदान॥सुरअसुरकरतकीउसमान॥म
धिकरेषीरसागरमथान॥प्रगरेजुहला॥हलमथमकाल॥त्रैलो

ला॥६१

नयेनीलकंठतबतेंनवेस॥पुनिकदीमुंथत
॥लामत॥छौ॥सुरकलसलयोसोईसुरअपछि॥उनिमिकसिकनकघटअ
॥निअसुरनिसमूरि॥संग्रामउदितनयेउन्नयसथ॥स
सत्रगुधसंजुतन्नरसमथ॥निरघोषपरवासंषनाद॥बिपरीतबिरुधबाद
बिष्याद॥तहांफेरेसुरनिसमरनससोक॥तुमहोसहरस्वामीत्रिलोक॥अ
कासबांनिप्रनुकलोएह॥मायाप्रपंचरचिहोंसदेह॥योकहतमात्रएकत्रीय
आइ॥सुदरसरूपसोभासुनाइ॥दांनवबाच॥मिलिकलेतबेदानवस
माज॥कहांबसतकोनतुमकहाकाज॥श्रीमोहनीबाच॥निसमेरेरबिमंड
लनिवास॥कंन्यास्वइछबिहरतअकास॥त्रिलोकगमनमेरोस्वतंत्र॥महिदे
षतडोलतन्यारमंत्र॥फलनाणकरेपहलेप्रमान॥मिलिकरषीरसागरमथ
ना॥लाबचबसह्वैसबलागलेउ॥देणउबिचारिनहीनीतियेउ॥उपजेद
ऊकसिपबसआद॥दनुदेवबिहतनाहिनबिबाद॥नसजबऐकबादेबि
रोय॥उपुहमिआरकारनप्रबोध॥बिसवासकरउमेरोबिचारि॥समन
गसबनिदेउंसनारि॥दैतउ॥सुनिदैसतहबोलेसहांस॥तुमबरोह
महिउपजेबिस्वास॥कंसउ॥कंमातबबोलीसानकूल॥ममबचनन
नहीकरउमूल॥तोबरोतुमहिउकेस्वतंत्र॥मेरैयहइछामूलमंत्र॥क
बिरु॥निरधारबचनकीनेसनेम॥प्रगटेबिस्वासइउयसप्रेम॥मोहनी
तक्ककेमोहनीबचनतास॥सोऊकलसदेउउपजेबिस्वास॥कबिरुबाच
आसुरनिदयेदीउकलसत्राय॥सोईसुरअमृतपूरितसुनाय॥जहांसर
काजमोहनीजांनि॥स्नातक॥कनकघटलयेमांनि॥मोहनीरूपअरदुतमु
रारि॥सुरहेतदैतमनमोहकारि॥मुषदेषिअसुरनएमोहलीन॥तथ ७
केकलहपुनिप्रनिलकीन॥मोहनी॥अमृतबिनागउकरतआज
थितथानहोउदेउसमाज॥कबिरु॥नऐअसुरतिनपंकतिप्रमान॥
गतमोहमनउप्रतिमापषांन॥सबकीयेबिवसमायासमथ॥सुरलेहि
सुधाभरदेतसथ॥इकराहनामअसुरअमांन॥हरिकेपटलिमोतिहिं
धपांन॥सुररूपकरेतिहिसुरसमांन॥थितनयेदेवपंकतिसुथांन॥जबपी
योराहअमृतसुजांनि॥मिलिदयेसोधससिसूरमांनि॥प्रभुअसुरजानि
कीनेप्रहार॥सिरछेदिचक्रअनदिष्टसार॥तबदेतजीयोकेषरुदोइसि
रनपोराहधडकेतसोइ॥पीमस्योनहीअमृतप्रभाउ॥नयेसूरचंद्रसों
बैरभाव॥सुरअसुरसुधासबपांनसंग॥अनिलाषपूरिरसरतरंग॥स
गरमथानफिरिकरतसोइ॥हितआपआपउनमतहोइ॥सुरनएप्रब

लपट्ट अमर पाश ॥ धनरतन लै हि असुर निधकाश ॥ निकसे पिनाक ससि सिवनि
हारि ॥ सोई धनुष तिलक लीनें संवारि ॥ श्रीवंक कौसत नम निसमेत ॥ हरि
धरत नये प्राचीन हेत ॥ आनूप नग्र आयुध श्री याश्री ॥ तिउर बाम पांनि ग्रंगध
रिश्रन ति ॥ मातंग तुरंगम धेनकांम ॥ लरु रतन धनंतरि बेदि तामि ॥ धररतन
दये इंद्र हि बिसेष ॥ इंद्रासन नृपति सो असेष ॥ पुनि निकसे बाडवप्रलयरू
प ॥ यह देव चरित माया अनूप ॥ नुवगगन धर हे बाडवनयांन ॥ त्रजलहि
ज्वाल जल अप्रमांन ॥ सुरअसुर गिरास निश्चलित कीन ॥ करहि धरहि बिष
म बाडवनवीन ॥ । सरस्वती बाच ॥ बांनी सुदृयो उतर बिचारि ॥ सुकवे
के रिपय नि थिमं जरि ॥ सब सम जि उदधि मह धस्यो सोय ॥ हृत करम देव
मेरै न कोय ॥ त्रजलहि ज्वाल तप अपि तजंत ॥ उरउदधि तापबादे अनंत ॥
तव उदधि गिरा प्रतिस्र निरकीन ॥ नहीं समो पडत बाडवनवीन ॥ बिधि
सुत प्रसन्न तहाँ कै बिचारि ॥ दीय सागर सु हकु उलसु जारि ॥ हिम धव
ग झल जीव आय ॥ सोई तहाँ तगह कै हे सुनाय ॥ सरस्वती आपगा हे
यस तास ॥ सुम तुम हि नहीं एक त्रबास ॥ कबित ॥ छुट्यो पयो निधि
नयो छाछि ॥ सबल थे रतन सुर असुर सांछि ॥ उधरे रतन को उउदारा
हरि कि केते हाँ कमन पतारा ॥ सो अमृत कछु उबरे जु सेष ॥ लै चले इंद्र नि
जपुर बिसेष ॥ असुरनि इंद्र रोके अमांन ॥ भजी यत लरके अमृत अंनोर
जा सुल सुरासुर न ऐजुधा ॥ कछु काल अमृत कारन सक्रुध ॥ असुरी बिरोचन सु
त ऐक ॥ अति कार उपद्रव जु तअ ने क ॥ त्रीयरीरय जि ज्ञान मतासा ॥ गज इंद्र
हि धाई करन ग्रास ॥ गज सक्र सहत तिहि असतजानि ॥ प्रभु उसह चक्र मेषि
सुपानि ॥ उतमंग छि दे परि सिंधु आय ॥ सो करे न सम बाडव सुनाय ॥ रन
अजिर बिरोचन परे राज ॥ बलि कवर सहत दानव समाज ॥ करि सक्र समर
असुर संघारि ॥ लै गये सुधा सुरपुर सनारि ॥ तिहि काल सुक्र आये रिषी
स ॥ गुरदीनी सजीवनि असीस ॥ रन नृमिन पाये सी सराज ॥ परलोक बि
रोचन करे काज ॥ सबल हे संग्राम गेरा ॥ बलि कवर जीये पुनि असुर अै
रा ॥ मिलि सुक्र तबे असुर समांन ॥ लैगये बलि हित बसुतल थांन ॥ तव
दयो बलि हि लै तिलक छत्र ॥ तिहि सम यं राज बलि करत तत्र ॥ सुरअसुर
गये निज धाम तांम ॥ कीउ निवरतन ईलि बथकांम ॥ तहाँ कथ्य कमठरू
रमपुरांन ॥ कृत सतुति सिधचारन समांन ॥ इहि कारन कछप रूप कीन ॥
निजर तन चतुर दस लीय नवीन ॥ प्रभु तयन बेजे तीप्र वेसा ॥ सुरलोक
बजे दुदुन्ति बिसेस ॥ १ ॥ दूहा ॥ आपुन कछप रूप करि ॥ नर हर प्रभु बि १६
सतारा ॥ अद्रि भ्रमायो पिछि पर ॥ पयनिधि मथ्यो अपार ॥ कबित्त ॥ चार

सिंधप्रसिध· जपत जिहि कि ति निरंतर॥ कमठ पृष्ठि कठम्य· चमनकु
नकूर्म चक्र बर॥ ७ दृषि रुग धउ छलीय· अनिल बल मिलत अचगल॥ मनु
मधेरूकरु नां निविद· कारन दिग्मंडल॥ अद्भुत चरित बिक्रम अतुल॥
कैंति सुक बिनरहर करीय॥ सब काल बिजय पंजर सरन· भागत चरन नि
सत्रीय॥१॥ इति श्री कूरम अवतार चरित्र संपूरन॥ नाराच छंद नर
हरदासेन बिरचितं॥ अथ श्री महामछ अवतार बरननं॥ कबिरुवाच॥
॥दूहा॥ नरहर प्रभु कारन निषल॥ पुनरु जथा क्रम संता॥ पृथ्वी राघीभ
यो॥ नृपे मीन अंगवंत॥१॥ द्राविड़ देस नरेस ने॥ सत्यब्रत यह नाम॥
दश्रनीत बिधानमय॥ सकल धरम को धाम॥२॥ राजनीति जुत नियत ब्रत॥
ब्रह्मपरायन बीर॥ छित्रि धरम मरजाद छिति॥ बिजई समर सधीर॥ बिलु
बाच॥ ब्रह्मा के बासुर प्रलय॥ समय निकट नये ज्ञान॥ नृपत पअ बधि
सुहरित ब॥ प्रभु चित चिंता मांनि॥४॥ जावी बस ब्रह्मा प्रलय॥ कबकुरुरेन
सोस॥ जगति परायन सत्यब्रत॥ सुकै प्रलय बसरोह॥५॥ जो कैहें मिथ्यास
कल॥ सत संजम तप दान॥ अरु उपहास जु जगति को॥ निसचय हरि नि
दांन॥६॥ जावी मिथ्या कौन ही॥ जग तिन निदें कोय॥ अबतोय हकरि बो उ
चित॥ नृपति हिरदा होय॥७॥ कारन करन समर्थ हरि॥ कीनोंय हरि निर
धार॥ जिनते दुःकरना हि कछु॥ बेद धरम बिबहार॥८॥ सरिता द्राविड़ दे
समहि॥ कृतमाला तिहि नाम॥ करत नृपति तहा निसकृत॥ बिबिध नीति
आम॥९॥ तहा कीय मंजन सत्यब्रत॥ नृप तप करे सने हा तरपन ज
लकर गत जये॥ सफर स्वयं नृ देह॥१०॥ अति सूछम तन कनकमय॥ पु
स्रंजुलि गत तास॥ रहा रहा बारद्वौ॥ बोलो सफर सत्रास॥११॥ बालस
बिलो कित हा॥ क्रै दयाल नरनाथ॥ लेमलेले जलपात्र सो॥ हि तकु
रि अपने हाथ॥१२॥ मीन अनुकम वृध बस॥ नहि तिहि पात्र समात॥ तबे
कलस से॥ तहा पे वृध बिभात॥१३॥ लेराभो जल सरित महा
बिग्रह बढे बिसेस॥ कहु समात न सफर से॥ बिसमय भयो नरेस॥१४
राजो बाच॥ नहि पराकृत जंत यह॥ कछु कारन रहि गेरा॥
बिकलप नृप॥ उपजत है कछु और॥१५॥ श्री मीन बाच॥ बोले
॥नृपति सुनहु निरधार॥ आय बधि दिन सातवो॥ ह्वै है प्रलय सं
रा॥१६॥ अब नृप यह करिबो उचित॥ मीन रूप कहि मर्म॥ बिस्व बीज रा
॥ औषध अन सथर मो॥१७॥ नाव करहु उरबी निषल॥ ले बाथहु
मम श्रंग॥ मुनि समाज जुत बैठियो॥ सकल चराचर संग॥१८॥ कबि
सने नृपति ब्रत तसबा॥ महक लोग ... कृतमाल सरिता बिपय

दीबो मीन प्रवाहि ॥१९॥ नदी संगमि तिस फिरति हि ॥ सागर करे प्रवेस ॥ जो जनल
हे सु अंग तंथ ॥ बिश्रह थ बिसेस ॥२०॥ मछ देव जो जो कहे ॥ सोई रूप करे
प्रमान ॥ तावी मलय सु नां दरी ॥ सोई इछ भगवान ॥२१॥ छंद पधरी ॥ जब भ
ई अवधि प्रलय प्रमान ॥ तो प्रलय नीर बढे तयान ॥ तप करीन तव उरबी म
सिय ॥ सब बढे चराचर अमर सिध ॥ औषधी अनबन त्रिन अपार ॥ सो बिस
बीज राषे संसार ॥ इह नये अवनि जल बिंदु आनि ॥ बिस्वंभर सोक हि दीन
बानि ॥ तुम दीनबंधु दयनिदयाल ॥ करतार करजुर हा क्रपाल ॥ तह मह म
छ अनमानि अंग ॥ तुम्ह तल छिल छि जो जन सु संग ॥ इह हि समय दयो प्रभु दर
स आय ॥ सोई सफर रूप बेद निसहाय ॥ प्रभु दरस दे बिसं सुतसनेस देवी
सुसक तित्तरीर जदेह ॥ आगम सु दैवअ हि सेष आय ॥ सत्यव्रत नृपति क
र नसहाय ॥ कृत सेष मरीर स्ना बिसेष ॥ इक और बाधि दथ अ सेष ॥ अहि दि
दीय औ र बिसतार अंग ॥ कोइ लियो बाधि सुर सफर संग ॥ सोई अंग बय ओ
ची सुगाय ॥ अवनी सप्रलय जल उपर आय ॥ इक मलय कार केन हा बानः छ
थी सरो तिज्योनल निपात ॥ उरलो कत्रा सउ पज्यो अखेवा ॥ दीय अत यसम
य तिहि मछ देवा ॥ प्रभु कहे सत्यव्रत सो प्रकास ॥ हम करहि बिबिधि बास्थ
बिलास ॥ निस त्तरी ब्रहम तह करेसे न ॥ जलप्रलय तरंग निबद के न ॥
अन मोघ देव रछा प्रमान ॥ प्रभु धरहि चितसो इ ह्वै प्रमान ॥ जल मल सु ह
स्त यो एक जोग ॥ उपजो संषा सुर अयप्रयोग ॥ सुर सत्तु उपजि सोई पाप
संग ॥ उदि मे अनर थ अय थ रूप अंग ॥ सुषनि द्राव सज हा ब्रहम साथ ॥ इहि
स्रा स्रा सुर अ साथ ॥ बिधि स्वास पीये संजुकत बेद ॥ तुव कमलनपये
उ प्रते द्या जब भई ब्रहम रजनी बितीत ॥ बिधि प्रलय बीति जगे बिनीत ॥ चि
त करे प्रात संध्या बिचार ॥ दिग भूत तए भ्र ष्टा से सार ॥ उरमो रु बेद षोजत
असेस ॥ तो सल निकस्य पावत न लेस ॥ बिधि करे मीन समर न बिसास ॥ त
त काल आर भतु हरन त्रास ॥ धरि मछ देव तह जोग ध्यान ॥ गए निगम स्वा
स संग लहे पान ॥ मीन बाच ॥ लैगए संषअ सुर निलाज ॥ व हिमा रिआन
रु बेद आज ॥ तो धरम बिरोधी पापजीनो ॥ लै बेद तये जलजलधि लीन
क बिरु ॥ लैग सेअ सुरज बनि गम जाम ॥ धर लए धरम अब छिनताम ॥ सु
नि येन हो मजप मंत्र जाग ॥ तथे सुषित देव पावे हि न भाग ॥ प्रतिपाल धरम
दिना धि देवा ॥ इहि समय मीन के पेअजेव ॥ जल थाह लीन ज ब मीन ज
र्या सु धर चेस संष अ सुरज गा ॥ कछु काल करे की रुन स सुधा ॥ करुनां न
भन ए मीन कुधा ॥ तब मारे संषासुर पछारि ॥ सबि से षबेदलीने संज
रि ॥ सो करे प्रगट लेन्हू निकेत ॥ सुन्न निगम बाचओ षय समेत ॥ १ ॥ सं

भउ॥दोहा॥ संषक लैतनव बिस्नुसों॥मेटिहि तौ कै मीन॥यह गति कर हु दया
लअवार कु चरन अधीन॥१॥श्रीमीन उ॥ तवगलनी रहु वाहमुहि॥सेव हिंसि
धरु जांन॥मनसा बाचा मांनि कु॥भ्रजावहै प्रमान॥२॥ बेदपषाले विमल
जल॥अबु धि निधि दीयअानि॥पीये न उदर अ सगमल॥बि प्रति करी गलां
नि॥३॥ चवमुषसे जलचारन हि॥दया जुकत ले दीन॥प्रीति सुहित नहा पांन
कीया॥बादत बुधि प्रबीन॥४॥ छंदपधरी॥ ब्रह्मा हि पदाये बेद आंनि॥मुनि
मूदबाल अध्ययन मांनि॥प्रथुक थ्योंतह मछो पुरान॥सुपदार ब्रह्म पुत्र नि
प्रमांनि॥बिधि बिनय करेसन कादि साध॥ध्रुव दीन निवारे दया नाथ॥सव क
लस बनितु महो समांन॥अवअूत है तकरुना निदान॥त्वसथान ब्रह्म सनक
दि संग॥सुप्रसन गये गावत प्रसंग॥करजोरि सतसहत प्रनितकीन॥प्रभु रेकु
चरनसंगम प्रबीन॥भगवान हेत करि के हुलास॥जगराजभोग नृपकरकु
जास॥सुघराजकरहु मम अगरसंत॥अवतार चरित महिमा अनंत॥नृपत
बिलस कछु कालनेम॥पुनि मिलहु जोति देवी सप्रेम॥प्रभु पारस्व अायपा
साद॥महरपंत लगे अप्रमाद॥सुरबजे देव डुंदुभि अकास॥पुनि भई पुहपव
रषा अकास॥इहि कारन भए मछावतार॥जगदीस करन उधार पार॥दोहा॥
बेद सहारक बिस्वहित॥प्रभु अवतार प्रमान॥अंतर ध्यान करन गगन॥भ
ए मीन भगवान॥१॥इहि बिधि सकर सरूप हरि॥कीनो ब्रह्म सहाय॥संष
सुरसे निंग्रहे॥आने बेद छुमाय॥२॥ समबृत कृतराज सुष॥पूरन अनु
बधि सुपाय॥करनी जोग अभ्यास करि॥जोति मिले पुनि जाय॥३॥निगमहि
तनरहर सुप्रभु॥मछदेवमष मित्र॥बिसदहि बिबस इनुता॥चंचल अच
लचरित्र॥४॥ इति श्रीमहामछ अवतार चरित्र सपूरन॥नरहरनर
हरदासेन बिरचिते॥ ॥अथ श्रीनरसिंघ अवतार बरननं॥कबित
बाचा॥दोहा॥नरहर प्रभु नरहरि नृपे॥लीला अगम अपार॥सुषदायक अनुक्रम
सहित॥सुनहु जथा बिसतार॥१॥छंदपधरी॥ हिरनाषि मरन इक अनुज
भ्रात॥कहु बचे हिरन कसिप बिष्यात॥सो भयो भूमि भव बै प्रतिष्टा॥सम
सचिन सुभट अरु बंधु इष्ट॥बसुधा प्रभुत पायो बिबेक॥भव भयो ताहि
राज अभिषेक॥बलवंत असुर साहस असेष॥सुरसाल धरन इंद्रादि धष॥
तिहि श्री याकया धूधर मबामा॥तीयधारे गरभ सुरतन यंमा॥धितगरभ भ
ये कछु दिन बितीत॥नृप चले होन तव जगत जीत॥यह उपजि ग्यान अ
सुर अजेय॥दिढ करे देह तप बलसु नेय॥बिधि निमत करन बन तप बि
चार॥गि निक सिराज तजि राज नार॥सब सुनर भृत्य मंत्री सुजांन॥सब भ
रत राज कारिज सथांन॥नृप गये सुमदराचल निकेत॥तहा देषि गोरजल

तरसमेत॥ बिधिसह तकेरत हातप बिचारा॥ धरिध्यांनर हअन्नये निराधारा॥ सुव
चरनउरथ अनुज मिलतनेता॥ जअनए देह जागरतचेता॥ तपकरे उअधरिऐक ध्यां
ना॥ मनबाचकरसत्र हिब्रह्मग्यांन॥ यहगईकथसुरपुरअसेस॥ सेअनये दुचि
तसुनिकेसुरेस॥ सुअनगर हिरनकसिपसथान॥ परचकरअआये प्रमांन॥
पुरजारि सुनरअसुरसंघारि॥ सबलयेकादिहयगयसंनारि॥ सजलूटफ
रिनंरारपटा॥ सुनरतनत्रिब्मलीने संघाट॥ पुनियही कयाधूसीयाराज॥
सुनगरनवती बिचत्रीयसमाज॥ लेचले कयाधु हिपकरिइंद्रतरा॥ मिलेबी
चे नारदमुनिंद॥ ना॥ ६३॥ सोरठ॥ कहे नारदसन्नेव॥ २॥ हि गरभसुत्र हेरतन
देव॥ जय बिजयअंसइहिगरभराज॥ निसेषकरनअसुरसमाज॥ प्रतिहार
बेसबबुधरि पुनीत॥ निरखंसहे तनिसचरअनीत॥ ६५॥ बाच॥ बसुक
सोतबे नारद बिनीत॥ प्रतिपाल करकुरि गतुमपुनीत॥ कबिकालेगयक
याधु हिमुनिनिकेत॥ हितकरतताससुत्रिकाहेत॥ ग्यानोपदेसरिषिकरहि
नित॥ सिसुयहे गरभअंतरसुचित॥ कबित॥ नहीचूके निजधरम की
रकुंजरसमलेबो॥ हानिश्चयनहीनेद ब्रह्ममय बिस्वसपेषो॥ उरउप
जेअबेनबार हरिजोतिप्रकासो॥ कामक्रोधमदमोह लोभत्रिस्नात
जिनासो॥ लघु आपसबनिगुरकरिगिनों॥ संततसतसंगतियहे॥ सुनिपु
त्रिकरनकारनलिषे ब्रह्मग्यान नारदकहे॥ १॥ छंद पधरी॥ सोरह
नहीउरजन निलेस॥ सिसुजये ब्रह्मग्यानीसुदेस॥ त्रीयगरभसथूरन
नयेनाम॥ पुहचाइदई रिषिराजधाम॥ सो र ग॥ मातरसोनलेस
नारदके उपदेसके॥ उपजी नगतिअसेस॥ गरभतब्रह्मग्यानीनये॥
॥ ६८॥ गरभमोबसतबरषने॥ हरीअवधिप्रकास॥ परमजनगव
तपुत्रने॥ जिहि हरिको बिसवास॥ १॥ छंद पधरी॥ तिहिपुत्रनाम
प्रहलाद दीन॥ बपुबदे नित्यपोरुषनवीन॥ सोरहे सोरूपअंतरसमाइ
बिचदयेगरभनारदबताइ॥ संसारसकलअथरधाम॥ मनिदीपप्र
गटइकरामनाम॥ मनजानियहे हरिनाममोह॥ छलछदमतासलागे
नछोह॥ बनिकरे केवरनिजपुरबिहारा॥ सिसुगनेसकलमिथ्या
संसारा॥ कछुकाल नए नपतपकरंत॥ सुधिकरीब्रह्मनिजजांनिसं
त॥ आरूढ हंस बिधिआइआप॥ बनिरहेसीततपजलबियाप॥ प
लरुधिरदीवआयप्रचारि॥ दलदरनिकसिअंगनिबिदारि॥ अ
वासकीनासिरसकुनिआस॥ सोरहे जीवअसथनिसमाय॥ ६ हिंदस

सुनिरषे तप ग्रषरा। करउ रधर है मनु कागदरा। नरि ब्रह्मक मंडल सलिल न
रि। छिरके सरीर पल रुधिर पूरि। नृप जगे जोग निवारि। चढि दिष्ट ब्रह्मतह
बद नचारि। जग्योपवीत च व बेद बांनि· आरूढ हंस ज लपत्र पांनि। आ
नंद उदित नृप करी टेक। अस्तिलाष देव पूरे अनेक॥ बिधिबाच॥ बिधिक
हत नये नृप को बिचार। जिहि हेत सेथ बन जोग सार। देत उ। इक अग्नि
चित्र चित अमान॥ तिहि हेत थह्यो मे ब्रह्म ध्यांन॥ निज नाग मोहि सुम
दरसदीन। उर बाच अहि करत प्रबीन॥ बिधिबाच॥ जिहि काज आनि
बन दृम्यो देह। फल लहु नृपति सो निःसंदेह॥ देतबाच॥ मोहि हे
त रूप जो बिधि रूपाल॥ मागो सल हों बाहन मराल। जो दीजे बाचा
जलजजात। सबि सेष करो बिनती सुतात॥ कबित॥ सिव ब्रह्म बि
ष्णु बाच सुदीन। कर जोरि देत बन निहकीन॥ हिरनंक सप। सुथ
जीति सके मे सेन देव॥ स सार सकल मुहि करे सेव॥ निसि दिवस म
रो नहीं रयान थ॥ घर अगन मेल्हे अरि न हाथ॥ मोहि न दैन सस त्र
असत्र अग। नर असुर जुरे मो सो न जंग॥ सुन्नर थी अस्व य जचढि
सम्र। मो हि अंग घाव घाले न सूर॥ मोहि त्रं तमि लेन हीं छांह घांम॥ स
ग्राम रूढ नहीं बिघन ताम॥ आकास थर निगिर जलन अंत॥ सोदेऊ मो
हि बर परम संत॥ ब्यापे न अंत करबरन चारि॥ पसु पषि सकिन सन मुष
निहारि॥ विधिबाच॥ बिधि तथा अस्तकहि बदन चारि॥ आरोहि हं
स निज पुर पधारि॥ कबित॥ तब देत गयो निज राजधान॥ सुतमि टे
आ निरदल बल समान॥ उरधारि लये त वक वर राज। सब नगर बजे
बाजित्र समाज॥ उछाह नये आसुर अवास॥ नृत्यादि गीत नाना बि
लास॥ मह लादस हन नवग्रह पधारि॥ नोछावरि कीनी असुर नारि॥
गह सुनी इंद्र कीनी अनीत॥ उर बढे कोध आसुर अनीत॥ तिहि रोष
करे थर मा व छीन॥ पेत पे असुर सु वप्र पत्नीन॥ नवषंड ऊं मति हिनर
हि आनि॥ करजोरि रहत नृप संक मानि॥ तहा हे मदान मष मिटत॥
मा सुर असर लत नये दुबदाम॥ ऐा बिप्र तिलक जग्योपवीत॥ अपमं
न होत तुलसी अनीत॥ सेवा न देव आतिथ साध॥ रहि ग्याति नये थ
रधरम बाध॥ झलरी घंट सुनिये न कांन॥ द्विज देव दुबित अति दी
न मान॥ न्हलई पाप पीउत सपूर॥ निरबीज ग ईअ सित अंकूर॥ छिति
नरति बेन्ना रा रंक ता॥ अवतार धरन चाहे अनंत॥ रहि ग्याति हिरन

कासिपन्नपाल॥ सो करै राज सुरराज साल॥ इहि करम काल कछु तो अतीत॥ अकु
रे पाप निज कृतन अनीत॥ उपजे कुबुधि आसुर असाधि॥ सुत देषि औरस प्रहलाद से
धा॥ इक समय राजमन चित कीन॥ पसु पारन्नपति बिद्या बिहीन॥ असुरादि गुर
हित मति अषंड॥ सुत सुक्र उत्तय मरका रुसंड॥ राजोवाच॥ सहजा निबोलि
गुर निरबिषाद॥ प्रहलाद करहु बिद्या प्रसाद॥ आसुरी धरम बिद्या उदार॥
सो पढ कुजनन संजुत कुमार॥ कविरुवाच॥ कृतच रित्वित कुंकम अषितत्तं
वाले चलेक बरक हे चटसाल॥ उपधान गरुन आवरन अनूप॥ आरोहि बिर
द्र विविभ रुरूप॥ निज सिसु निगयले गुर निकेत॥ त्रीय गोनदान मंगल समे
त॥ प्रहलाद सहत चटसाल साज॥ चटसाल नये प्रमेस काज॥ जब नये कुवर सु
ख रत लीन॥ बिप्र तिग्र सेष असि षसु दीन॥ कीय गोनदान मंगल बिधान॥ सा
रद सजि गनपति समान॥ ॐ नमो सिध अक्षर अनादि॥ प्रहलाद पढत नय नि
र बिषाद॥ लषि दये जथा क्रम सिसु निशंक॥ सो पढत सबै बरन निसंक॥ तह
बे गिस रुमकी सुनाय॥ बिच धरे जु अछर सन बनाय॥ कर छुरी त्रास असुर
कुमार॥ सब पढत आप संथा सुदार॥ गुर गम्य सब्ब नित्य अषिर गोन॥
प्रहलाद करी सुधि गरन थान॥ उपदेस करे रिषि गरत्त वास॥ सो ईग्यान प
रम बिद्या प्रकास॥ जो कछो ऊ तो नारद रिषीस॥ सो ईनाम पद पढ बेदि
सीस॥ बिच गरत्त दरी नारद बनाय॥ सो री कृदय रही मूरति समाय॥ कर
चारि सु नगत न सघन स्यांम॥ सबिलास नेत्र बेजे तिदाम॥ संष चक्र गदा न
रज सनाल॥ आजान सुजा कंधर बिसाल॥ बामंग रमा उर भ्रिगु बिकास॥ सु
नपीत बसन रथ गरुडजा सा॥ यह दसा लरी सिसु उर उदोत॥ मन हो थत्त
ऐसे मुनिन होत॥ बाल्वा सु करम मन निरबिषाद॥ उर रंग स्याम अद्वैत ब
हा॥ कै रिलिषे कवर हरि हरि सुअंक॥ सुत ध्यांन पढे हरि हरि निसंक॥ प्रह
लाद॥ सुत सषा पढउ हरि हरि संभारि॥ हरि पढत न आवे जनम हारि॥
हरि नाम सु तगनै का संसार॥ हरि पढ कहो ऊत्तव जलधि पार॥ हरि नं
म श्री तिलाव ऊस भीत॥ हरि आह्नि षि लमाया अजीत॥ कविरु॥
सु तन नाम कवर चटा समेत॥ हरि हरि जु पढे लिषि परम हेत॥ मुनि च
य सरुमस कास रक्कुध॥ बिकराल दंत बानी बिरुध॥ बे बरन दह बेगंध
नास॥ आरकत नेत्र उतफुल नास॥ करकस कुत्ताव त्ताषा कराल॥ जिकास
ल बरज तिलक ज्वाल॥ फरकंत अधर जल स्रम सरीर॥ कत उर धरे मंत्र त
रुअधीर॥ कुलगरुग सुरवे महाकाय॥ जाजुल्य नये कौ निकट जाय॥ च

रिमकापानिदैरिकुचाल॥नयनीतनयेनुवगिरेबाल॥तिहिचरमकरेकवरहिगह
रा॥किरिलगीनाहिनलेसनारा॥तिहिवोरनऐबिहवलद्विजात॥करिवसथचि
तनोकरतबात॥गुरबांचाकुलदेतथरमनाहिनकुमार॥यहकवनपाठक
ढेकुचार॥हरिनामकहेइहिबसकोयानपहलेता॥हिनिसकहेशवहनामकहाइ
तेमुरारिसुरहेतकेरकुआसुरसंघारि॥पितामहतेरेछितीस॥सबमारिनये
हैंआपईस॥हरिनामलेइकोउअसअगयान॥तूंकवरराजथतननिदान॥त
वपितात्रालोक्यजगजेय॥हिरनाछनामबलअप्रमेय॥तिहिधरीनमिस
हमपयाल॥आधंकलेसंसुरपतिहिसाल॥हरिहतेताहिमिसकासमान॥
कूलेतनामताकोअगपान॥नृपहसोचहततिहिबयरत्रात॥तेहेतुकरेवपु
मततातामलतीयतबसेजो॥निरविषाद॥धिकतासजनमयहपरमबाद॥
महो॥जाकुअरिविसमरनहोय॥जोनहिअरिउरसाल॥ताहिजनेप्रहलादसुनि
रथानयेअमकाल॥१॥छंदपधरी॥सुनतसामदामअरुभेददंड॥गुरदइ
कवरसिषाअषंड॥यहपाठपढ्यौक्कवरआज॥पुनिपढतसुन्योकहिदे
चराज॥द्विजदयोबोधहितचितबढाइ॥प्रहलादनयेगजसोंचप्रनाघ॥
गजमंजनकृतगजनृतससंचारि॥छंनबीचपरेपुनिमिलेछार॥त्रीयलेय
श्रेविद्रिगलाजलीन॥त्रीथमिलहिजारपुतरीप्रबीन॥इहिभांतिकवरवि
नमिलिअनंत॥उथपुथमहिनीरनीरहिमिलंत॥चटाउ॥सबवेगिजास्वर
सथान॥प्रहलादनयेपूछतनिदान॥कहिदेनकहतगुरनृपहिवोल॥नयहे
नगुननकूपतसुगात॥जोकहऊजिहिनगुरसुगासिसाम॥जिहिपढ
होरसुप्रसनराम॥प्रहलादउ॥कोरामकाहिसुप्रसनकाम॥सुप्रसन
करऊजिहिरामनाम॥जिहिरोमकूपब्रह्मंडबास॥सुवर्नंगहोतनयपु
रविनास॥ब्रहमादिकरतजिहिचरनसेव॥जिगसूरचंददेवाधिदेव॥
यहजानिपढतहमरामनाम॥करुनानिधानसबसरहिकाम॥कबेक
ररउगीएकधुनिरामराम॥परजलेसुनतगुरहृदयताम॥किलकारिउ
गेसठकुचीत॥नुवगिरेसबेबालकसनीत॥मानंदपढतप्रहलादस्त
रा॥गुरत्रासचितआनेनमूर॥गुरबाचाकरिकोपसंठबोलेकराल॥
तेसबेबिगारेअसुरबाल॥रिपुनामलेतकतबारबार॥यहछांडिकुवि
घाकुलकुगार॥कबिरायहकहतमात्रसंठसुचार॥नरनारिमिल
सतन्नथआघ॥आयेनुउग्रासुरअनीत॥असुरीसबेसीअनी
त॥सोकहतगुरहिसिसुमारिमारि॥यहमूढलगावतवंसगारि॥
सोकहतचलेनरनारितामि॥३०॥गएसंठमरका॥सुधामा॥सविष्णु

दऐ आये सु बिप्र॥ सब मिली आं निजु वनी सछिप्र॥ निस्वास अश्रुधार जुनैन
योंदे षि सेन मरका कुचैन॥ सब नर तिह जुवती सत्रास॥ पुनि रही घेरि छौल
हिन पास॥ जुवती वाच॥ कछु न ये अज अविराज क्रुध॥ बढि पर किधु क
रु बिरुध॥ अपमान नये कि धूर राजद्वार॥ इन फिरे किधु विहि तु मरुमार
कि कुल ईश्वर सकंर्ह कुमार॥ द्विज जुवति तु बिन प्रछति सुनार॥ द्विज बा
च॥ कहा कहे कछु कहिवे न जोग॥ उर उपत सूल सुनि अमय जोग॥ बिपरी
त नर्ई इक आनि बात॥ जो है न ही ये न हिनसमात॥ सत्री वाच॥ पेअंत कु
शब नि है कृपाल॥ सहि जात न हिन हम परम साल॥ द्विज बाच॥ फल लप
न्यपहि इक बकु तकाल॥ पठ्यो सुपद वनवर साल॥ कुल अप्रसुत बिन
न्यपहि इकब कुतकाल॥ ... सो लरी ये कहे बार संथ
बिद्या कुमार॥ सब ता हि पिर बन क सोसार॥ सो लरी ये के है बार संथ
पुनि गसेक वर बिपरीत पंथा॥ यह सुने राज जो अनाचार॥ करि है न
संक हति है कुमार॥ नव त कछु यह सुधि बियप॥ अनक है संकक
हियेत पप॥ सिसु ते राज हम अ जस होय॥ पर छै इकरत सर सुकर
सोय॥ यह त रीअ निचिंत असेस॥ कछु बन्नत ना हि कारन बिसेस॥ से
अलो बिकब हिन सुसार॥ कै उपजि कछु कुल सा कुमार॥ कबित्त॥
यह सुनत बिप्र बिनता अपार॥ चरत्ता लगर जहा न्यप कुमार॥ द्वि
त्रीया मिली सब पार सोय॥ ग्र ह ला इक रत सिभा प्रबोध॥ सत्रीउ
कहि है नकहत सुरन्यप हि बेद॥ ति हि हो त हम हि सुनि परम खेद॥
न्यप हते तो हि सिद्द है ना हि॥ यह है इमल यसु निकर जा हि॥ सुषक व
न दिषाव हित बहिरा नि॥ अब छांडि पुत्र बिपरीत बानि॥ ग्र ह ला द
सबसुन कुमात तुम कहंयसुध॥ बिपरीत बानि जिहि हिरद बिरुध॥ मो
हिय है बानि उधार मूल॥ सो तजो न ही है नांन कूल॥ प्र ह बानि र हऊ पेज
कुमांन॥ निज बुधि यह है मेरे निदान॥ सत्रीउ॥ सुरनाम ले तुम बार
बार॥ ति हि काज कहा तुम्हरे कुमार॥ सुर असुर जवे प्रतिजुध है य सुर
बिजय पराजय असुर सोय॥ सुर सु ब्रहो हि मिष नगपा ह॥ मष बाधक
रे निसेष राय॥ न्यपद तआवे जो ब्रह म गपान॥ जिम्पा थिकार ताम ह
निदान॥ तुम पढ कुअ सुर बिद्या प्रबीन॥ स नु है हि इध सुर पर हिषी
न॥ आगम सुनि निगम जलथल अकास॥ ना ना लग मन सीष कुम्पक
सा॥ छल बल रु धनुर बिद्या प्रबीन॥ बसकरन जु यमाया नवीन॥

परका राम नसी षकुत्रमांना॥ कुलवाद पुत्र पठिये सुजांनां॥ येसवै पद कुबि
द्या अषंठा॥ सुरराजन वाव कुले कुरंठा॥ प्रहलाद उ॥ प्रहलाद बोलित बन्नग
तमोर॥ हम तुम हित स्निबक बादंगे र॥ मो हिलगत सु बिद्याय हे मारु जि
हि पटै वैसन हीन रकजाय॥ मोहि सबै अबिद्या अवर सकृ॥ अहि कुजेन
रकलो गूरु॥ छंद पधरी॥ जे रंग स्याम सुंदर सुरंग॥ फिरि चदतन हीति
हि आनरंग॥ त्रीयजार क हेत व त्रीय निकेत॥ प्रहलाद न छलत ब्रह्म
हेत॥ गुरपुत्र संठमरका गहीरा॥ उनि आ निबो लि अंतर अधीर॥ द्विज वाच
मत रे कुक वर अबदो सभो हि॥ करतार त्तयो प्रतिकूल तोहि॥ हम कहत
नृप हि अपठर ठराय॥ किनु कहे निका से देसराय॥ प्रहलाद उ तुम कह
कुराज पर जहि निसका भैपदेउ नय अदै त अंका॥ सो तजो न हीजो तजे
प्रांना॥ यह सुन कुसंठमरका निदान॥ द्विज वाच॥ कुंडली॥ मूढ षिज
व कुराज मति॥ नजे पै बलवंत॥ वा के बलि बे त्रलत॥ तेरो द्वै वो अंत॥
तेरो द्वै बो अंत॥ द्वार वाके गज गाजे॥ देस कोस रथ वाजि सुवरवकु सेन
साजे॥ अरु बनिता सुत जूथ दं ठ सुर सुर को आवो॥ उष्ट असुर जिहि दास
सद मत ताहि षिजावो॥ कुवर वाच॥ छंद भुजंगी॥ कहा मत्त मातंग
जो द्वार गाजे॥ बने हेम जंजीर घंटा विराजे॥ मदं मो षदंत वली तुलसी है
नये कर्ण संगी तुरंगी॥ त्रिमोहो सतं मे घरे चलै अपूरंगो॥ पुरं दौल हजं
जीर अै चै अनंगो॥ वृथा ये बिना राम संदेह नांही॥ सबै नष्ट जे है मनु अ
त्रछांहि॥ अथ हयवर्न॥ कहा वाजि बेगी बथेवा जिसाल॥ जरजीन रा
जेमनी कंभ माल॥ महा तेजता जो सुषं बाग साचै॥ चटे पीठि पीठि चितं पाल
नाचै॥ धरा वायु धावे तरछे तरकै॥ मनु फाल लंगूल साषा फरकै॥ सबै मत्त कू
पिठ त्र मि समे हो॥ जगं ना पदेषि लये अंत जे हे॥ अथ सिंदून॥ कहा सिंद
ने संग सो नाय मांनं॥ जरे हेम हीरं नगं मुक तमानं॥ रसं रेसम पट पूरे प्रमां
नं॥ सबै राम हीनं सु मिथ्या बषानं॥ कहा सूर सामंत सेवा सयांनं॥ सजे दं
ड सनध सायुध सानं॥ कहा दार नीसांन बाजे बधायो॥ जिने गर्ज तें मय ल
जाल जायो॥ कहा भ्रात पुत्रं जलद समानं॥ सभं दंड सो नाय तड़ितं लजानं॥
कहा सिंघ पीठं सुस्वरं नवनायो॥ कहा चामरं सेत चकुर्यां चलायो॥ कहा को
स थानं धनं अप्रमानं॥ बने देस ना सं उदेगं असतमानं॥ कहा सेजं संध्या सुषं
भोग साजे॥ वृथा गीत नत्यादि नाना विराजे॥ कहा मंदिरं सप्त थानं
अवासं॥ बिना राम नामे सबै सत्र निवासं॥ कहा रत्त मंत्री चलै चित लीनें॥
कहा सेन चतुरंग संग प्रबीनें॥ कहा कोट दुर्गं अगंजी विराजे॥ सबै रंग अफ
र र ज बूर साजे॥ जरे द्वार कपाट सारं जंजीरं॥ तिनै षित षाई सरी निस

सेवा बिमोहो।कहा बरन
नीरं।कहा जपतप संतसमसो हे।कहा दास षवासे सेवा बिमोहो।कहा बरन
आश्रोम जाबाचकारी॥कहा परनें हरबां निजचारी॥कहा तुल लीलारमेध
न थाने॥ब्रथाल सकोरी दीपं द्रुजाने॥कहा नामग्र मीन कें लेबिराजी॥समं हेम
मुकतागुअंगारसाजी॥कहा तुरगमं ग्रदिउतंग थाने॥समं बारनेंमा ग्रजं तु न
सान॥कहा सिग्रारम्य रहं बनाये॥मगं साव जंते रुग्रा पेट ग्राये॥सरंसार संग्र
बग्रेबाज फूले॥कहा गुजपुंजेरसं रंग फूले॥कहा ते यथे जंनरं दीपवाने॥महा मछ
कछ नरंपोत माने॥कहा सागरं ग्रोर किती कयाने॥महा ग्राह ग्रावरत जंतुन
याने॥कहा षानि जेरागरं षोदिकादेः नगं लाल हीरा मनी मोल बादे॥कहा बा
रिका रूछ साने सुहायो॥रहे नित्य फूले फले चित्त लाये॥समं नंगसो रंपिकं
मोर सोरं॥कहा तेनि रुरं सीत छाया सजोरं॥कहा कूपबापी सुदारं संवारी॥हिमं
नारकू तेल सैनी रनारी॥कहा छेल छाके रमे जारनारी॥बिल सेरसे सेज दिम
धकारी॥कहा प्रेमवंती त्रीयाजु थपाये॥रसे रूप कीरा सिषे ले बिलाये॥मी
समुगधम धा सप्रोढ ग्रमानो॥समं बेउ स्वाद षनं मोहमानं॥निजं नार
कजारु नोगं ग्रयानो॥जकं बासमेगंधधूपं समानें॥सतंनु थदासं सुतेसे
वसाजे॥बने ओ बग्रवरस्सेना बिराजे॥कहा ग्रापरी स्वर्यकी नेक हाये॥ब
रीयो बकारी कहा बिरस्पाये॥कहा जार जाग्रो करे दानदीनो॥कहा सत्रु
को नाल साग्रा पेत्रे लोककोराजकीनो॥बिना तगति थे तग्र सथे बषानें॥
सजऊ केनारायनं ससमानो॥सबे पाठ रूगे पढे तूजसे ऊ॥यहे नरकको मूल
रेसो ग्रणंक॥ गुर बाच॥कहा बंस बिद्या नजेते बकारी॥कहा रामनामें रटे स
तपारी॥कहा बापग्राग्या तजे दुबदीनों॥कहा सत्रु को नाससानं दलीनो॥क
हा सत्रुसेवा कीये धरम मानों॥कहा ग्राप लोयरम सो ही नजानें॥कहा सत्रु
सो पीगिने मित्र दोषी॥कहा धरम बाधी तयेपापपोषी॥कहा बापग्रपमान
ग्रकरामसमानें॥कहा धूरिपी लेके हाछार छानें॥प्रहलाद उ॥कहा मूढ सत्र
ढिजानी कहायो॥छकरमा तये ये विसं प्राग्र लाये॥कहा बेद ग्रध्यन
उपवीत धारो॥सतं पुस तकं पात्री कासवारो॥कथे छार देषे करे मूढ मोही॥जू
थाताबेदो हे सबे सिधताही॥ग्रहे बालपानं सुतेग्रग्य जानें॥बके बंस बारे
नर्कते बषानें॥कहा सेतमाथे कहा बाल देही॥कहा बापदेषी करामें सने
ही॥महा मूढ जो बृथ सो ग्रेत लेषे॥लघो बालपानी बिहे बृध देषे॥ऊते
पाइउतान छथं न पालो॥धुवं पंच बरषं ऊते देह बालो॥कहा कौन बूके
तिस्येकोनिदानें॥हहा गुपुननी को कि युबे बषानें॥सको बाच॥हु
॥ हासनयोल सत्रुके॥मेरि पिताको कोनि॥जो याते दुष ऊपजे मे
रो दोष न मानि॥१॥कवि रुवाच॥ गुरसु तयों कहि ग्रहाये उरग्र

बनारीये कंत्र द्वेः प्रछतिगतिप्रहलाद॥ द्विजबाच कुंडल
॥स्वानपूछकी बिकत॥ग्रहप्रहलादकोस्वाव॥कोटिजतनकरिकहिथके
॥वा॥नैंकनतजतसुभाव॥बांसमरुपोरखनाई॥ मुनिजुर
षरमास निकसिबांकीबकियाई॥जुकतिग्रनेकनिहमकहे॥सोसवमं
म्योतुछः ग्रपनोंत्तबनछांडही॥जेसेस्वानकीपुंछ॥१॥छंदपधरी॥नबसुत
बंसकीजेकलत्र॥सबजानतनरीप्रहलादजत्र॥पुनिकवरग्रांनियेस्यो
सुनाइ॥तिकहनलगीबातेबनाइ॥ मत्रीउ॥मतपुत्रजरावेजरेदेहाम
राम नामसुषकेरिलेहु॥तुरत्रासकरेसबवंसत्राज॥तोहिदेपिप्रहू
लितहोहराज॥कहोहुराजथंननकुमार॥तुरराजहालसुरपुरउजार॥
सुरहोहिषीनग्रसुरसहार॥ग्रबकरहुकवरसोपेउपाइ॥जबनयोग
नमतेरोकुमार॥नपग्रेहबजेसानंदथार॥सुषसनरहेतोसंजतात॥सुष
लोनतउतारेदेपिमात॥दुषतेरेहमकोहोइदुःष॥सुषहोहितोहिलबहमहि
सुष॥जाजुसतेजनफग्रतिसबंक॥सोप्रानहतनहीकरतसंक॥पितब
चनपुत्रजोकरेलेग॥पित्रवधकनामपावेग्रलेग॥पितमातपुत्रजोदेईसु
ष॥तेदेहधनकहियेबिदुःष॥सुषहोहनपतिपरिवारसब॥सोपागपर
हुतुमक्वरग्रब॥नवषंडडंडमांगहुनवाइ॥सुरराजसुरतिसंकामन
इ॥कीजेबिबाहमनमोदकारि॥सुरग्रसुरनागकंन्यासंवारि॥बिनताबि
लाहिकीजेबिलास॥सोगंधसेजउतमग्रवास॥प्रतिदिवसकरहुनवरस
प्रचार॥बिनताग्रनेकमुगधाबिहार॥पहबचनकहेत्रीयबारबार॥करग्र
वनमूंदिवेगेकुमार॥प्रहलादउ॥ हकरामनामकारनउधार॥बिनु
नामतिह्रथाजीतबसंसार॥यहजांनिपरतमोहिजुगग्रंधार॥बिषीया
दिकग्रासीमुषबिकार॥जगमिथ्याहेत्रयलोकराज॥सबंधग्राहिस
पतिसमाज॥कहाबेगेसिंयासनबनाइ॥सिरछत्रकहाचामरचलाइ
॥कहाजुवनबनायेसंमथान॥सुषसेजकहासोगंधसमान॥कहा
पुरुषप्रीतिजिहिमसहेत॥सोपुत्रकहाजेजससमेत॥कहाग्रापबनि
ग्ररुत्रीयबनाइ॥सुंदरसरूपमुगधासुनाइ॥सोगंधकहाषोउपास
गर॥बहुरंगबसनपहरेसुढार॥कहाग्रंजनमंजनतिलकतेल॥ता
म्बूलकहारतिरंगषेल॥पटनूपरकासबहारमांन॥छुद्रघंटिकहार
तननिसमांन॥नगजटितकहाकेरबलयनेक॥ग्ररुकहाकेउभूषन
ग्रनेक॥श्रुतकहाहेमकुंडलसुनाइ॥बहुमुक्तिनासमुकताबनाइ
उपमाकहाषंजननेनमीन॥करनालंकहारुचितिलककीन॥लप

सुरी कहा चंचल सुदेस॥ सुनसरलक हो जो पास के स॥ आवरन कहा पर ब
छुरी कहा चंचल सुदेस॥ सुनसर लक हा जो पास के स॥ आवरन कहा पर ब
रसंग॥ मातंग चाल अंग नि बिलंग॥ रहि रूप कहा जो पीय रिझाय॥ सब अंग हि
अंतनमी समसराय॥ त्रीय आहि सबे निंदत सरूप॥ पतिके न कदे ति हि मो हक्रू
प॥ त्रीय रूप रसे बास व छतीस॥ नए रेध्र सह सतन आप सीस॥ पुनि हेत ब्र
ह्म रहि रूप लीन॥ जो पंच भूमस तक आप कीन॥ इह कहे त्रिसंकर रघुबंस
राज॥ रहि मेर हिये सब ब्रह्म हि काज॥ प्रेलस ति हतें अति बल प्रबीन॥ रिग
देष बंस सब नास कीन॥ सखी बाच॥ दूहा॥ तो कहें सकेउ त तन यहां की
जे कहा कुमार॥ जो पे त्रीय निंदत मह॥ क्यों आहत संसार॥१॥ तुम रहछनि
ही उपजे॥ विनाग रस धूत मत॥ यह उपदेस न जब कस्यो॥ त ब न्नालेन
बनात॥२॥ मह लाद बाच॥ छंद पधरी॥ गुर बधू करत मि थ्या बिबाद॥ उ
न कुर क बोध भ्रुरो सवाद॥ जो सुनो कुतो भें गरस न पान॥ ति हि बिन नह
उत मो हि आन॥ जो जन नि क लो नार रस प्रकास॥ सो लत्रग लोभें गरस वास॥
मतओ रत्री यात तहि बिरोध॥ सोलेउ नेक भमज न नि सोध॥ गहात नहि
गज उदर बस॥ सोफल क पि श्रम निकसत प्रकास॥ सोन हिनरहत त्रीय उ
दर पान॥ गुरु रूहेय सिष्य सुजान॥ हम तुम हिन हिन ब कबार गेर॥ हम
नये ग्रंथ सके न ओर॥ कुंव रोबाच॥ क्रूकर सू को हठ ज्यो॥ चाबत हे ख
छंद॥ नारूक्र रे को रति हि॥ चलेरु धिर के बूंद॥ चलेरु धिर के बूंद अस थि
लो रूल परानो॥ ताक हे चार त स्वान लीये यकांत स यानो॥ सोही का
मी पुरुष प्रेम जुतर हत बिसय पर॥ न ही आ यात न ही तजत हार रूके
जो क्रूकर॥१॥ प्रहलाद बाच॥ छंद पैंअ परी॥ जो तुम जुवती रूप बष
नो॥ तिनको भेप ह सुन कुनि दानो॥ जिहि तन नव संत मं जन साजो॥ आप
रत रंग नादि क लाजे॥ जिहि सिर मांग सुहाग संवारहि॥ भूपति पास केस
बिसनार हि॥ मध्य बिताग मांग मुक तागन॥ रिष भक तिमानकुनन
अंगन॥ से दुर मांग नरी सुन कार॥ रवित नया बि चिसरस ति धारा॥ ब
नि पारी पुनि अस ति बिसाला॥ स्यामजल रस सिऊपर सुहाला॥ बे
नी कुसम कुर बिबनारी॥ नाग नि मन ऊपथे नि घि न्हारी॥ जिहि सि
र लस पासी मुकरा वति॥ रस बस के त्रीय पार लगावति॥ मन मीनि
अलका बनसीसी॥ किं चित पुथि कपा सि पसरी सी॥ राज ति मनि
मयरी का ग्रेसी॥ नाम नि ता लन्ता गामि लि जे सी॥ कुंकम बिंद
छबि ग्रेसी॥ ग्ररथ चंद्र पर ब्रूदनि बेसी॥ जिहि मुष मुंवब ही नि
ताव हि॥ अलि सुत से ऊरु तछ बिपावहि॥ स्वर नरे षत्र यन्त्र कु
...जिहि नासा बेसरि छबि...

ति॥मुषमुकतागहिंसुकछिरकावति॥जिहिंमुषअमनसुकतिमनमोसै-
स्वातिबुंदमुकताफलकोहै॥कुंडलकनकबिराजितकैसो॥ससिपारसजु
गदिनकरजैसो॥जिहिंमुषसुनगकपोलसुहाये॥मानहुंकनकतबकेस
नाये॥जेदृगबिसदबंकरतनारे॥मीनमृगजंषजननगनहारे॥पुनिअंज
नअंजितचबकोरे॥मदनबिसषमानहुंबिषबोरे॥करतकटाछिअव
नलगिकैसे॥उछलिमीनजलबाहरिजैसे॥सुनगकटाछिरतेपरसे
हैं॥नरनिकहानरुनीमनमोहें॥जिहिंमुषमध्यदसनयोंलसें॥जनुबि
कसेदारिमसेहसें॥सहजरागअधरनिअरुनाये॥मानहुंपानिपानस
माये॥सहजसुगंधस्वाससछबिछावत॥मानहुंफूंकेमदनजगावत॥
जिहिंमुषबांनीमधुरबषानें॥मोहनमंत्रपरतिसीमानें॥जिहिंमु
षचिबुकबिंदबनिअैसे॥मांनहुंचंद्राहरदजैसे॥कंम्बोतिस
नितसबिसेष॥राजतरुद्रगरलकीरेष॥पुनिउरमुकताहारसु
हावहिं॥मेरहुंतेसुरसरिअथआवहिं॥ग्रीवासुमनमालसुबिसा
ल॥मदनसदनमनुबंदनमाल॥बनितअंसबिसेषबषानें॥
भीयसुजलतापीरसेमानें॥जेकरकमलकमलछबिदेहीं॥कूलत
बिरहउदधिअहिलेहीं॥उजजुगउरधअलसबसजरति॥छूटतिमन
हुंतडितसीतरति॥करचूरीबलयादिकराजत॥मांनहुंमदनफंदसे-
साजित॥करपल्लवमुद्रामुनमोहैं॥चंपकलीसीलंकितसोहैं॥पल्लव
नातअरुनसुतअैसें॥मकरकेतरथनेदनजैसे॥कुचककेरकर
कुंनबिराजित॥सुठिनावरोमावलिसाजित॥उरजउतंगबनतजु
गअैसे॥प्रीयअभिलाषअषिलफलजैसें॥चोलीउरजबनावबना
ये॥कामकलहनवकवचकसाये॥नवबनिअसितकंचुकीदूटी॥क
नकरेषधरिकामकसोटी॥रष्टनागसोनायेंलागत॥कामपागप
रीअनुरागत॥निमतनाभिसरसगभनलोम॥त्रिबलितरंगअउ
लत्रीयसोम॥कटिमनिजटितमेषलाराजहिं॥समतारहतसिंघगन
लाजहिं॥जेंनितंबकदलीसमलीनें॥जेपदकमलकमलछबिछी
नें॥येदोअरुनबिराजितअैसें॥करदलिदलतरनारंगजैसें॥नूपर
धुनिकिंकनिरवराजे॥कामद्वारमनुमंगलबाजे॥गजगतिचलति
पतिहिंअतिभावति॥रतिमानहुंरतिमंदिरआवति॥तिहिंतनपु
ष्पाभूषनधारी॥मांनहुंबसंतपुरीसुषकारी॥जिहिंतनसहज

सुबास सुहाई मलय बात मनु चलि उपराई ॥ जिहि तन बसन बिराजित ऐसो सं
मनि जलद लपेटी जैसो ॥ तन बहुरंग बसन फहरावहि । बात बिधूत जलद से धा
वहि ॥ जिहि तन रति ते छबि अधिकाही ॥ ग तिहि बिलोकि मराल लजाही ॥ रूप
न बसन बनी पीय प्यारी ॥ जिहि सम्रग सुरति सुषकारी ॥ नवसत सा जि मिलन म
न भावन ॥ मनु मनमथ अहरनि कर आवन ॥ जिहि तन परासि प्रीय सुष बाढति
जे मिलि बिरहनादसन का दति ॥ जिन तन पति सज्या अनुसरही ॥ हाव भाव संजुत मन हर
ही ॥ राजत तन षछित प्रीय अनुरागन । कंचन षंलत जिति मानिक गन ॥ सुंदर श्रम तन
कंकन सो हो ॥ मेर अंग जनु ओस बिंदो हो ॥ जातन सबे सुषद जुवतीतन ॥ पति अ
निलाक्ष करत परि पूरन ॥ जिहि तन चरन पलोटहि दासी ॥ हेषित ही होत सोलि उ
हासी ॥ तुम जुवतीन अंग विसेषो ॥ निंदत नासह है तुमे देषो ॥ जतन प्रीय सो प्री
ति चढे है ॥ सो पे अंत छार मिलि जैहै ॥ कबित्त रूबाचा ॥ दूहा ॥ जैसे गंध बिगंध मि
लि ॥ निकसत है सब ठौर ॥ देषो महिमा पवन की ॥ आपुन औरै और ॥ १ ॥ तोहि
समिप्र हलाद सिषा । सब हिनि को सुनि लेत ॥ आप असंग अलिप्त रहि ॥ नही छांड
न हरि हेत ॥ २ ॥ इहि बिधि प्रसनोत्तर नये । गुरपतनी प्रहलाद सो । उठि गवनीय
र आपने । पतिहि मिली सबिषाद ॥ ३ ॥ गुरु बाच ॥ छंद पधरी ॥ द्विज पूछिउ
प्रीय को बिचार ॥ कछु मानत है सिषा कुमार ॥ सत्रीउ ॥ समझा रकसे
हम ग्यान गूढ नही होत ए कैते दौर मूढ ॥ दूहा ॥ जो भावी सो होत है ॥ नृप
हि करो समझाइ ॥ कहा करी चूकि हों ॥ परलीये पतराइ ॥ १ ॥ कहि जे प्र
य तुम राज सो ॥ और फेर सों बात ॥ तातै यह बालक जीये ॥ कैन परे उतपा
त ॥ गुरु बाच ॥ छंद मुरिल्ल ॥ तुम धोक हो कहा हम कहे ॥ जिहि ते राज
रोस न गहे ॥ स्त्री बाच ॥ ग्यान तत्व भयो यह बाल ॥ लाग तिहारे बठे नृप
ल ॥ गुरु बाच ॥ अंत तिहारो त्रीय को ग्यान ॥ ऐसी कहत जीय को जानि हि
म कहि हैस्त्री समझाय ॥ जो होनी सो होइ बजाइ ॥ समझा रोस त्वं अ सर
ल ॥ अति आतुर आयो चटसाल ॥ दूहा ॥ बाल बिलोके पढत गुरु ॥
राम नाम निसंक ॥ बिधि ना लिष्यो सु नाटरो ॥ लिपि लिलार पर अंक ॥ १ ॥
गुरु बाच ॥ छंद पधरी ॥ मैं बरज्यो बालक बहुत बार ॥ नहीं तजत कुवि
द्या कुलकुमार ॥ यह ग्यान छोडि अज हुं अग्यान ॥ ये करुत नये कौ ते
हि ग्यान ॥ हम पार परत हजे कपाल ॥ तक वर कवर मनित जिक चाल ॥
कुंवरो बाच ॥ दूहा ॥ कहा करो बिधि निरमयो ॥ ऐके ग्यान अजान ॥ सम
हरि के नाम परि ॥ वारि दै उसत ग्यान ॥ १ ॥ गुरु बाच ॥ छंद पधरी ॥ उ नि
न कुबुलावे तो हि राज ॥ अब कहा हम हि बकबाद काज ॥ कबित्त ॥ यह

ऊ ग्निवसे कुमारा॥ सानंद जात पठिप हसुदारा॥ गुरसुरि मिले तबहि रिस
॥ अति परंग बालजल चट तजा॥ सुरगये लीयें जहां असुरराय॥ उन पानिपुरी
अपनें सुताय॥ गुर कहें तबें नृपसो सुनराय॥ यह बालक नाहिन पठत राय॥ हमरहे
न तन करिकि रिस अनेक॥ यह कवरन छोडत अपटेक॥ अब हम हि दोस न हिन
नरेसा॥ हम सबे कछु कारन बिसेसा॥ समझार कहे अ पुनि सयाना॥ जे पुत्र न
जेयह ब्रह्मग्यान॥ राजोवाच॥ नृपक लीन तबें पुत्र हि रिसाय॥ उम पढ्यौ क
हा मोकहें सुनाय॥ कबिरुवाच॥ नृपनिकट गयो बालक सधीर॥ प्रहलाद नाम म
रिनगत बीर॥ प्रहलादोउ॥ मैं पढे उनय अस रंग अनूप॥ सुनराम राम महरि ह
रिसरूप॥ राजोवाच॥ ये कौन पढाये तोहि अंक॥ सो कहे पुत्र मो सो निसंक॥
बालकोवाच॥ यह मोहि दई नारद बताय॥ मन बाच करम हम पढत राय॥ कें
बेरुवाच॥ यह सुनत दैत परजस्यो अंग॥ घृत नये मनऊ पावक प्रसंग॥ करष
गउ रिस असुर क्रूर॥ सो यह बीच मंत्री सम्रर॥ मंत्रीउ॥ यह पुट्रै लिअ गत
राज॥ अपराध छम ऊराजा थिराज॥ इन सुरति बालत्री यअवधि रेव॥ यह सुने
सुक्र पहु परम नेव॥ यह जानि करत हम फरि राज॥ करजो रिति हारेओ यक काज॥
उनिकर ऊलपारतनी कृपाल॥ रकबेर पुगव ऊफे रिसाल॥ यह पुट पैरिते
दैन हीन॥ कुलपांग पढै तो कृपा कीन॥ राजोवाच॥ यह बेग हे मुष काल मोरि
रहि म्रतु बुलारी दे जुबाह॥ उमगऊ मत दिव जह कवर मातो॥ समझार को
सब बिचरि बात॥ दुषवारि कहऊ तुम ज्ञान न तात॥ मगछांडि कृपादिन परत
सब बिचरि बात॥ दुषवारि कहऊ तुम ज्ञान सता॥ सहलाद हि निज जननी अ
प्रत॥ कबिरुवाच॥ लेगये तब मंत्री सत्रासा॥ सहलाद हि निज जननी अ
वासा॥ सोरथो कथा धुहिं सत्रि वसो य॥ उनि करत नरी पुत्र हिं प्रबोध॥ बेगरि
अक सिरसु घिमास॥ सुत देतन री सिष्या सुनाय॥ तक्रोध रूप नृप को सं
नारि॥ छिगन रत कथा धरे तटारि॥ रानीवाच॥ सुर नजत कछु नाहिन
सुनाव॥ तुम उनहि निरन रबेर नाव॥ निसि दिवस पढे तसत्रु नाम॥
ति हि नाम पुत्र नेहि कवन काम॥ देवा सुरजुध निसु न ऊगीत॥ सुरहे
न बिजय रनु पराजीत॥ नित पढत जाहि तजा निहष्ट॥ तिहि मारे सं
पासुर बलिष्ट॥ तव पिता भ्रात हिरणाषि नाम॥ इहि हते ताहि तकर
नाम॥ तूले इव यरकें दास होय॥ यह करम न लोक हिहैं न को य॥ तुम प
स्तत्र हम बिद्यानुकूल॥ कछु गई असुर बिद्या समूल॥ कुल बधूक
हैकुल लाज लीन॥ सो पुत्र पिता आग्या अधीन॥ मातै गर हत अकुस हि
मानि॥ निरमूल वहै गज तिलक जानि॥ कतजगर ईसक सियेअसेष॥
रस बास बदै बानी बिसेष॥ पुत्र बाच॥ दूहा॥ मेकसिराधे प्रान
मम॥ जो तिहि मिले अनंग॥ रंगे जु स्याम सुजान रंग॥ बदत न आन कु

रंग॥१॥ कहा कृत बक बादल गि। माता सुन कृ निदान। मैं पाये हरिनु
म लिषि रहये बया ईसान॥ सोरठा॥ छँ दूप धारी। लेके हावे रलै हैके म्र
जो नये सत्रु सेवक अज्ञ न। दुष बवन कृ हत रानी सुदेस। सुनते हे रवे
उतन नयन नेरस। गति नरहीक क्रूर रिस रघुआस। बषत्र गात जे नषब बुधि
नास। कुनराज सदा मंत्राधिकार। हमंक हाके हेतु म बुधि सार। नन सी
नय है मेरे कुमार। सो गाहि गं मठ टिकाग्र धार। धरिबां हनु महि सोप
नग्र स्थान। सोक रकृ नंग न हीहो हि मिनं। कि हिनो नि जीय नर हि हेके म्र
तात न बस लानि हारे मन हिन्नत। मम बवन मंत्र क हिये महीप। पर जल
तनयो मनु सान्त दीप। न नगर जन नयो के गरल मा ष। केनयो न ष्ट फलक
हसो ष। हहि बो जप र कुम नआप राये। कुल न्तो कलंक कर बिष हिये
या नहीं कर तश्र्गग निउ प जिन्याये। पित बास नरे सिसु न होउ पाये
कुजि को। लेग ये न सिसु नृप निकेत। सबनी तिन बन क हि के हिस
हेतु। सुनि के हे सब्बि वरानी के राव। नि हि निसो कछु कत तिक रनाव
नृप बाल। नृप के हे सं अमर फा सुटे रि: लेजा कुस गहि वट सा तफे रि: अ
सुरी धरम बिद्या अपार: अस्यन करा वृक्ष गुर कुमार: मु पढ़े बि
धा फे रि सब तन कालक कुभोसोंग्रस्त। कं बि सा। ल षि दृग आरपा
या द्विजात। महला रघुरी मनु अग नि गात। उ गियो ते बेर निवास राज
न कुर के धैल वषर ते साज। पुनि कीनेआ नि रांनी सस त। पित से जसुक
त धुनाव तैसा॥ तनी बाद। अपराधन कि नम मसान नाथ। हत केठ
करत व्रू हम्र टहाघ। सुषन यास नुब हि मिंन्र बेद भन्न बल ल्बुमार रसो
ई करत छिद्र। अह नयो ये कर्कुल मह के मत। सिसु हते पाप उपजे गन्ते
परिये न बाज वाके नपाल। सुहृम्र सिन रे कुरेस हि तिकाल। कोई कु
वाल। बिष रोष ज्ञारिस बिनी रखाम। मनुग रुउ मंत्र गाहि कि रि बिराम
उनि द्वितीय दिवस उर प्रात काल। द्विज नये गानि थित बट साल।
रहा॥ सिसु के ये क मा धार हरि। रुष पानो कीरी ति: जो जल में लोहि पर
हरे। डांके सान मतीत॥१॥ पिता बध परि जनन जै। मात तजो मह लाहि
लोह रिन टक रिस गलो। गे ते षि मप साद॥ आ पटे निरंतर नाम हरि
अंतर पर नन दे ज्ञा। मन सिलिगा जल दुग अलो। बाल कनयो बिद्द
छँ दूपधारी॥ करक तज्ञ थर द्विज सुन्ना फेरि: सिसु रा मरा मय हके लो
टेरि: सु नि उते नबेसलो निसंको। करन रम सिसु हि मिारन निसंक। केतो
ते म्र रमा। मनासि क्रे सा हि मा रि रि रां तु गंम: कर नये कारन हेवि

लतपाश्यजलमिलतनैनहारेपिजाय॥ताक्रूसंजिकमिलिदंतवास
श्रुतनासरुधनहीफुरतस्वास॥अकुलाइगिरेगुरलुगतऋमि॥अरुन
तनयेसिसुरहेभूमि॥कछुकालनएनयोद्विजहिचेत॥उगियोदिरिखि
नपतिनिकेत॥करपायफिकरेमूरछित्रा॥इतांतकहतराजहिसुछिप्रा
सुतरटतरामरामहिबिसेस॥हमदैहिबृथासंथनरेस॥पुरजरराज
द्विजकहतबार॥आरकतनेत्रक्रोधाधिकार॥यहलाउछुठेमूसबेरे
का॥यहकहतदुष्टदैत्यअनेक॥लिगयेदुष्टबालकउगह॥पाटिकापति
हरिरटतजाहि॥जननयोहिहगोचरनरेस॥प्रहलादकरतचिंताबिसे
स॥ प्रहलाद वाच॥ कुनलीपीमोहिनरोस्मोस्यामको॥सोमिण्य
नहोयाइरीनसहायकदुष्टहो॥बिरदकहंवितसोइ॥बिरदकहावं
तसोअहीनदासनिरषवारो॥नहाअगरेतिहिरूप॥जहांगिहितासस
नरि॥पैसबकीरपठंग॥सोरसएकरतसरोसो॥सोमिष्यानहोय
मोहिजोसामनरोसो॥१॥मेरेस्यांमआधारहो॥मनकूरहिनिसचंत॥
येसबबातबिरतलेय॥तलउठेहैगेंत॥तलउठेहैअंतकरुषरा
पेजनपेबोय॥ये नगतिबिरोधहोत॰ इनहिसऊयोहैजेबो॥अनु
औहेसुरसंग॥निकआतुरकैंटेरों॥ऊंसबतेबलिवंत॥सामआधार
सुमेरें॥ कबिरुवाच॥छंदपधरी॥ त्रिणकूटमिलेअसुरअग
ना॥प्रहलादबांन्हिकनिकासमान॥थोंसूऊपरतसबहीनिब
ल॥ प्रगट्योमनुअसुरप्रलयकाल॥करचापबाननृपअतिसक्रुध॥
प्रहलादअग्रगदोप्रबुध॥ राजोवाच॥तबकहिनृपप्रछतनरपे
ला॥अबपढ्योसुमोहिसुनाउबाल॥प्रहलाद उवाच॥ हांभैंनृप
दैइकनामहरिसुमहिसुनायोसबी॥हनिरंतरपढतऊक
हतबेंकहांअब॥१॥छंदपधरी॥ कबिरु॥ यहसुनततैलधनु
जुकतबान॥आकरषिकरलैनिकरकांन॥राजोवाच॥अबबो
लिछुडावेतो॥हिमूढ॰ जिहिजपतनिरंतरग्यान॥कबिरु॥नृप
बानदेषिसिसुनयेत्रास॥हरिहृदयमांझमतिछूवेंजास॥राजे
॥उरबेधकरोंतोहिबांनबाल॥प्रतिपालकरैबोलऊसुलाल॥
निसिदिवसजपैतूजासनाम॥अबकहेकहांपैवैसुस्वाम॥यहज
निकहतहमतोहिधूत॥अजऊमतछांडैप्रानपूत॥सबसत्रुपरोस
लगीआगि॥तबमनतकूपसगनीरलागि॥दिष्योनककुतूजप

अनदिष्ट तज्यौ तेरामदीन।। मो हि छो
तजासु पाताल बसे कै धों अकास।। अनदिष्ट तज्यौ ते रामदीन।। मो हि छो
डि छत्र धारि प्रबीन।। सठ तजें मो हि तिनि कौ लजार।। सो रह्यौ अनि निसिर परत्र
मार।। दूहा।। अब कौ कारी सीस तो हि लीनें षग उधार।। अति बलजा के मूल
तो की जैत हि उकार।।१।। छंद पधरी।। अब हम करि देषें नैक ताहि।। अरेत
सहार जिहि बिरद आहि।। तब कलें टेरि जो होर सरी।। प्रनुजो तिरही घरघर
निप्रसि।।१।। दूहा।। वह जग में वहि मौ रु जग।। बीज फलहि फल बीज।। जै
बिडु तम हे जल बसे।। जैसें जल महबीज।।१।। वहर हकन्न दा कवहे
व हेउ पा जक मूल।। सो ईमो हि बिचार हो।। और न जिहि सम तूल।।२।। छंद
पधरी।। सब देषि सु नेमें बिधि बिचार।। वहि बिन आहि सो ईन ही संसार।।
पाताल स प्रजिहि चरन थांन।। अरु कुद सप्त सागर प्रमांन।। तुजमूल जास
तुत्त गिरनि अंग।। दस दिसा जास आन न अनंग।। ससि सूर ब न्हि जिहि नेत्र ज
पा।। आकास लिंग जिहि परम रूप।। जल पात्र पवित्र जिहि जलद जाल।। बसु
मती पीठ बैठक बिसाल।। नारद अजा लतिहि पुहप माल।। अरु बदन बेद बा
नी रसाल।। अष्टाद स बन जिहि रोम राजि।। अरु ब्योम जास मस्तक बिरा
जि।। बिनु मीच मोहि नहीं मरन देत।। तिनरे नत लैं लष बरि लेत।। बिधिस
चिव जास सिव दंड धारि।। कुर बाल धरमराज हि निहारि।। सुरराज सहत
सुर करत सेव।। प्रभु दीन बंधु हे बाधि देव।। गज की रतरा जुरे कमांह।। हरि
नो लि नि बाहे करषि बाह।। तिहि रचे बिसद बैरार रूप।। ब्रह्मंड कोटि
तिरोम कूप।। तासे अनेक तिहि मो ऊकीय।। निजईस कहां सीस हि किरीय।।
बल बंड असुर उर कोप कीन।। सुत सोक नयौ अति मन मलीन।। राजा ब
अस पुत्र बिना है सुष असेष।। यह तयेंतयें मोहि दुष बिसेष।। पछिता
त हिरनकसिप अपार।। यह तये बज्र क्रूर कुसुधार।। बिष अमृत बृछ नहि
ने दकोर।। फल लगेंत बहि निरधार होर।। कछु जानि परत नहीं बालक
ला।। बैसा वत सकोउ होत साल।। यिकमो हि त्रीया करयहन कीन।। यिक
मन्नयो जिहि रति अधीन।। जे जानि परे यह जन्म काल।। कछु पापन
ही अस हते बाल।। तो हि राषन हार हि बोलि पूत।। सुबनार कहा हे बेकू
ना ऊ तो हि जरे रूअग निमांह।। कै बोरि दे उजह जल अथाह।। अहि
कि गिराउ गिर उतंग।। गज मर्दन करा कै अंग अंग।। संसो षन लेहे सो
षि प्रांन।। वह बोलि तो हि राषे निदांन।। बालक बाच।। जिहि नाम र
रब मत लोक बास।। नप गर बक हा असद हतास।। सेण धपुरुषसज्ञ

सहास॥आनंदघनतेजनरतिबिलास॥संतजुवतिनजहिउरचरनधारिअ
रूपीयतसबेजलवारिवारि॥जहिचलतबिछवहिसीसवास॥जिहिदेह
करतमजनषवास॥जिहिदेहकाजतुमबरेगरबा॥सुनितकेकछुनिंद
नसबी॥कैंजारिआगनिउठिछारजाय॥महिमोदिगडतरीवृकमिलाय॥कैंनमि
लुठतजहानरकजाल॥खगहनसिषासूकरश्रगाल॥बहुदेतस्वजनजलते
मरबुहार॥कैंषातकिउकिमकुलअयार॥मलपात्रदेहतिहिकहामोह॥है
नसेहैतजरदपिससोह॥प्रभुजोतिरहीघटघटसमाय॥वहजोतिलिषै
सोईस्वरगजाय॥मोहिरसकहैंवहजोतिमूल॥सोन्नासततेहीमहस
मूल॥जलथलअकासगिरबसततेहो॥नवरूतरहीसेईजोतितोय
जोतिषैनिकटतातेनदूर॥जोकहैदूरतितिहिजैदूर॥मनबाचकरमहरि
चरनमूर॥सोसेइकरतोहिआनगूद॥१॥दोहा॥हरिकरताहरतासुहरि
हरिरछकसंसार॥हरिहीतेसबउपजे॥हरिहीमहसंचार॥१॥रजोबाच॥
छंदपधरी॥हैंबचोसहीमैपुत्रमानि॥दुबदतगयेसिरमेटिकानि॥अ
बमोहिकरावतसत्रुसेव॥मैसबैठिछाडेजुदेव॥कैंपदैअसुरबिद्या
अपान॥गजपासिरूंदाउहतेप्रान॥बालकों॥कैंपढैपढावैकहै
कोन॥कुलकाहिअसुरबिद्यासकोन॥गजकोंनमरेमारेसुकाहि॥कै
प्रानरहादेहीसुकाहि॥सतकूंतजनरेजलभूरिथाना॥ससितावत्तनयप्र
तिबिंबग्यानि॥घटनष्टतएजलजूनिवास॥वहचंदवहैएकैप्रकास॥
यहग्यानिसमझिअजऊमदंथ॥वहजोतिगयेतनकसमंथ॥कबि
त॥यहसुनतबातपरजरिसुवाल॥आरूढबातजनुजलनज्वाल॥ज
रिबरनलेहहथकरीहाथ॥जलबोरिदयोसिसुकरिअनाथ॥जल
जासमीनपावहिनथाह॥मातंगबुडहिजुतमकरग्राह॥दोहा॥पानी
प्रानपिसाचबना॥पावकप्रलयपहार॥सुतपतप्रातेअरिष्टजय॥दीन
हिरेवअधार॥१॥आगजामहरिनामरत॥बालरहेजलबीच॥काल
ग्रस्योतोरोसबस॥जग्योनिसाचरनीच॥२॥छंदपधरी॥निहिअ
निदरसदीयप्रातकाल॥सबसखिबजहाषलसुतदजाल॥रजोबा
च॥हसिकहेराजसिसुषबरिलेहु॥बहिगयोकिधुकिउतिरतदेह
कैबिरूबाच॥यहकहतदेखिअसुरअपार॥नहगयेजहाजलधित
कुमार॥दोहा॥तहादेषेअस्तुतचरित॥सिसुबैठेजलजीति॥प
रब्रह्मप्रहलादप्रभु॥औसीप्रीतिप्रतीति॥१॥छंदपधरी॥नजिगये
नीरबऊगेरपास॥जलमोरुचयोथलसावकास॥हथकरीजरीअस

पैजनीर॥ सुनपीत बसन पहरें सधीर॥ चोवा चंदन चरि चित अंगराग॥ पर
नाल तिलक सिर बनी पाग॥ सब अंग संग चक्रादि अंक॥ सो बाल देषि अकु
लित निसंक॥ चरनार करें नृप सों बिचार॥ उरगासुर सर लउपजे अपार॥
कर॥ औसे प्रभु हि बिसारि सव॥ जि हि जग जो तिअरू दा॥ आपन सों उर
चिल कलो॥ ईस कहा वत मूढा॥१॥ प्रभु औसे को पर हरे॥ आप कहा वत
रास॥ करनी तें बीजु ह मन॥ लेकन तजत सुनाव॥४॥ बाल खंचे जल थ
लन्तये॥ असुर करें अपान॥ पुनि अपनें जीय की परी॥ कांपन लगे प्रा
न॥२॥ छंद पधरी॥ यह देव के व नगवत सो आ॥ सुत काल रूप उ
पजो सुनाय॥ आकृत सु नाव नही असुर वंस॥ येक पर न्नेष को उग्र म
स अंस॥ इहिं भांति असुर उर मानि हारि॥ सिसु लेकु कह्रो जल तें निका
रि॥ जब काढि लये जल मगन बाल॥ नृप अग्र कह्यो ले तात काल॥ राज
मत न बरे षि बाल बोले नृपाल॥ निचिंध रुअंग निर्माल बिसाल
सठ भूत करें कुअंगु क्रम समेत॥ जल मध्य नयो थल के वन रेत॥ मलज
नम बल आवरत या हाम चलो धमीं न पावहि निवाह॥ दिढ लोह पास हय
करी हाथ॥ छुरिग ईस बेक्यो येक साथ॥ बाल को उ॥ तैबांधि मोहि जि
ल मांझ दीनों॥ करतार तं हाम मज तन कीनो॥ राजोवाच॥ कहि मृदु जल हि
करतार को थि॥ लं आहि उपासत सकर चो थि॥ बाल को वाच॥ अष्ट
मी चौथि जानें न आन॥ पर ब्रह्म येक जानें कृपाल॥ मेरो ना यास नन
हिन साधि॥ आकर षि दिष्ट बंधन उपाधि॥ फं ऐक उपासन राम नाम ॥२
आरिष्ट निवारन वे सुखांम॥ सब बेगे रर सें जल तरस मा॥ वहि बिना अ
हि सोई विन सिजार॥ राजोवाच॥ कहा॥ सो त्राता हरना हां नृप
के न पे बलवंत॥ जुग बीते इहिं वसंत॥ नहीं देषो नगवंत॥
॥५॥ बाल हि छाया काल की॥ नये अनो षे पान॥ वापी सरवर
नद बिसद॥ कूपही में नगवान॥२॥ बाल को वाच॥ काल असेमा
सो जानिजे॥ निकरन सत जाहि॥ घट ही म ह बोलत प्रगर
अजन देषो ताहि॥३॥ छंद पधरी॥ सुनि लेकु प्रथम नामाथि
कार॥ पुनि हते तम हि जिन करे बार॥ इक नाम द्विजा ती अज
मे ला॥ इहि जन म नयो धरम हि अमेल॥ तिहि नजग तन हरि पुत्र हे
त॥ तितउर धत्तरी मन क्रम समेत॥ तुकं निसा प दावत बारन रि॥
हरि हेत नरी सुर पुर बिहारि॥ वय पंच बरष धुव न ल सरा पदंके

वलसो देष कुअगरु ॥ कबिरुवाच ॥ उरअसुरबचन लगि वज्र तूल। सत्त्नये
कोपतन मनहि सूल ॥ घृत तेल तूलका ष्टसमान। य हर आगु ष्ट न्हतल नयां
व कुअोरर बिअा सुरअन्हत। मतनि कसिजार ककु केकपूत। त्तुव संगकीन
नृपन्वष करूर। उवकारलये बालकसमूर। आकरषि दुष्ट असुर अनि थप्र
लादकरेति हियहमतिष्ट ॥ दूहा ॥ राजाकी नगनी दुष्टा। दूढा नामअसायि
नेगति बंधअस्पासबकुगा। अवरोमत्र उपाधि ॥१॥ सो लैबेगि गोद महाप्र ह
हितिहियेहाला रदृईचकुंधा अगनि। ज्वालकरा लअछेह ॥२॥ तहा लाग
दढा जलना। बिकल न्वयेसबमेत्रा। वलछूटे प्रह्लादके। लीनोसरनसूतंत्र
रनबाच ॥ संगति साध अलाथके: सदा होत सुन्नकाजा मेरेछूटे मंत्रवल। कोउ
कुसनअाज ॥४॥ बालको ॥ इहिदिनतेरीमानिता फिरेंजगतअसेषा। जो कोउ
लोक इूजिहोबढिहे आयु बिसेष ॥५ ॥ इहिबिधिप्रसनोतरन्वये। दूढाअरुप
लाद। बालहि छुयेन तापतन। वहजरी सबिषाद ॥६॥ छंदपधरी ॥ परजलेअनलग
प्रलयकार: जो जुत्सगगन मिलिज्वाल माल। आसुरी असुरायिरिज थआयासव
बेअ मरहेसुरर थनिछाय। जब लगे उरन मंदिरसुनाय। नृगगन नरी सुनि हार
हार ॥ सुरनाचा ॥ न सिसुररहरथअेवि हप्या। उपदीनसहन्त्क्योदयानाथा सु
सबदन्वये हाहा अकास ॥ हरिरा बिलेकुसमसिदुषि तरास: हरिक हतविरदअ
नाथनाथ यहकस्योसबनि बालकअनाथ ॥ दूहा ॥ वासदेव गो विप्रहित: सं
त्मबेद सहारा। दुषीन्वये दुमदीनको। अगनि न्नई जलप्रार ॥१ छंदपधरी ॥ ज्वाल
कालजब मिटीजोनि। हररत्क अगारन्न पअापप्रूनि। दुनिन्वये अनल ज्वालाप्रक
सा। कछु असुरजरेनृप हेजु पासा। जवटारिकरे पछ हाअगार। जव हरित बीस्व वे
गेकुमार। वपु पीतवसन अरुतिलकमाल। तुलसीदलमाला उरबिसाल। अ
सुरोंजो निससर्गपाप। जरिगयेसवे सिसुको निपाप। ननताइ कहे जनुस्वरन
था प्रहलाद अमलदेषत प्रबुध ॥ दूहा ॥ तादिनतेपूजितनरी। दूढाहारी न
उरेषकु देषी साधको। गारिल हल्लबगंउ ॥१॥ जालनवेगो दलै। बालति
यातबिसास। सोप्रति सबतजारियत। पात्रनई उपहास ॥२॥ छंदपधरी ॥ प
लहरेसकत्सो कुसलबाल। निरखे नृपसु अापकाल। कुल्यअसुरोन्त्र
तिसयसकोप। प्रह्लाद वदनअेा वदतत्र्याप। नृपदेषिपुत्र मनमलिनकीन
रिपुके रिजीयो मनुकेनवीन। आकास न्वये जयजयासदा। सुरन्वये हरषअानु
रविनदा। सुनवजेबिबिधि दुदुभि अकास। सुरवधू वृष्टिकीनी सहास ॥गंथ॥
विकरत नारक सगान। धिक कहहि सवे असुरअगान ॥ दूहा ॥ त्रिनन ह
दूरतवज्रतो जो जमकरेप्रहारा। नगतजेरेकु ... दाककरते।

रा॥१॥ अब अनुसाय हरि नग निसी॥ रहि बो चित लग गयो॥ देष कुं जल्म स्थल नये॥ अ
गलि नहीं जल समायो॥२॥ छंद पधरी॥ रूप लये निकर बालक हरि कोरि॥ कर जोरि
रहे सनमुष निहारि॥ राजा उ॥ बलि कहा देई यह कौन मंत्र॥ तिहि नरई अग नीसी
नल सुतंत्र॥ क्यों उपये हरि तजब अगनि माहि॥ कछु पढे कि युसेल षिषां हि॥ कोउ
वीर कि यु अधारय कीन॥ तिहि नबे अनल ज्वाअयीन॥ बालको वाच॥ दोहा॥
सुनि देवै सुनिरत करें॥ सोम बिना सुरज्ञान॥ गरि क्रूर जरि जाकु सेसरमन
लो चकान॥१॥ हरि की एक उपासना॥ मेरें सुनि नृपाल॥ मा दिन आंन उपासि
यो तब ही सु हवै काल॥२॥ छंद पधरी॥ कवित्त॥ क्यों लन होत उरदयार
ना बकुओ दुहूआ सुरसमाज॥ गिर थेक बिकरओ घट उलंग॥ आंक्रम तलगत्र
तिअग नभोग॥ तरुलत अरु कित अप्रमांन॥ नयजं नत हा कंद रजयांन॥ सुजा रसि
अमति सब दहे तो॥ सुहवै न चितव ही कपोत॥ नृप दयो नवे आप सरिस हे
सिसु उतरि दिउ परबत चढाय॥ लेग ये सुब बाल हि अनेक॥ गिर सीस अत्र सुरस
बअहरेक॥ सुरस्थ नि नयो सो निर अकास॥ हा हूंनबा निकरु नां प्रकास॥
आकर षिकें गलि सुदयो गारि॥ हरिअ सोबी चक्र कुकनि हारि॥ गिर मूल थ
स्यो सानंद बाल॥ सिसुसी सबर बिसुर सुमन जाल॥ सिसु उरि दयो जब
सुन्यो राज॥ सानंद चलो जहा न्रुतसमाज॥ गिर मूल जाइ देष्यो नृपाल॥ सु
नपद तराम रामहरि साल॥ मन असुरन हिन चिंता समाय॥ रहि मांन लेउ
कोनैउपार॥ दोहा॥ गरि दयो सिसु सै नहीं॥ केलि लयो हरि बीच॥ प्रभु
जाकें रछक नये॥ कोन्नु रा नृप नीच॥१॥ छंद पधरी॥ लेगये राज सि
सु राजद्वार॥ सब लये बोलि तहा सर्प धार॥२॥ दोहा॥ सर्प लपेरे कंक राति
हाम दो सिसु फूलि॥ मांन फूल चंदन बृछ सो॥ रहे सु जंगम भूलि॥१॥ छंद पध
री॥ नहीं उसे सर्प जब जगत बाल॥ तब छुरी जीयन आस नृपाल॥ जब कु
रत कछु नाहिन उपाय॥ तब संघि बिचारन लगे राय॥ सुस लार बुलाये निक
र बाल॥ तहां लगे देंन सिष्य सु बाल॥ राजो वाच॥ बस करन और अ
कर षमंत्र॥ सुनपढअ अ सुर बिद्या स्वतंत्र॥ बालको॥ को असुर असु
र बिद्या न रेस॥ मोहि का जकहा पढि बै बिसेस॥ मोहि लागत बिद्या सबै
सूल॥ इक राम नाम उधार मूल॥ सोई पटतरा दूम हत हेत॥ दिन राति न
अंतर परन देत॥ कोसिय कवन साधिक सरूप॥ को बिद्या अबिद्या कवन
रूप॥ सबि सेष रही घर घर समाय॥ सब छंद जो ति आर तन सहाय॥ कंदे षत
कौ लिपति न सूज॥ अति हृथ राजनी फअक्रूर॥ राजो वाच॥ अन बुजि बि
चार कुल नाहि रत॥ कुल अोर रत जिहिम तअन्रत॥ सानंद पढत जो सतुर्ण

न्याकुलपगलग तकरवो निदान॥ न्मेतलगे सीकरतबात॥ बातो बिसेषके
सनिपात॥ जो नजे मो हिमन बाचलाय॥ नो करोबेग मोसो बदाय॥ रथक
रीअस्वसेवक समाज॥ अरधासन वा मरछत्रसाज॥ हिमअ हराज छिति
अरथरैंउ॥ सुषकालमांऊतेकादिलैंउ॥ बालकोबाच दूहा॥ तोसो तुहि
हीऊ नृप॥ सो हिनितो सोंकाम॥ मोकहाधें चिबदार हो॥ कवाही मतवा
म॥१॥ मोकहिषे बि बंदार हो॥ तूहीनासहिलीन॥ कं बाह्यो नगवंतको॥
जगजाकेआधीन॥२॥ छंद पधरी॥ अतिऊंच हेमभयये अवास॥ परवाल
थंनकलसो प्रकास॥ सुनजुवति सेजमन सिजबिलास॥ नोसहतसबे
हेंकालआस॥ राजोबाच॥ नृपअहेन्ये तुपुत्र आयाकेमांननरीसाति
कसुनायथि कतो हिजिनमसगनहधूत॥ कुलग रिलगावतकाकपूत॥ अ
जऊ जसमजिन जिमो हिआजा॥ जो बदे च हतसिरछत्रसाज॥ बालको बा
च दूहा॥ बद्यो बद्यो नृपकाक हो॥ सूऊतना हिनिदान बदिबो सोईजानि
ता॥ जो बाटेउरग्यांन॥१॥ छंदपधरी॥ संतोषसहतमनमांनमारि॥ कमनि
लाषगुनगरबगारि॥ मनमो हअहेमद करेनास॥ सुनिंदर हेसमसावकास॥
सतसीलसुकृतगहिसाथसंग॥ परदारदब्यछांडेप्रसंग॥ सुषसोकनबा
धेलवयहानि॥ लयुरहेआपगुरसबनिमानि॥ उरसूऊपरेतबनत्वग्यां
न॥ सबराजरंकदेषेसमान॥ गजकीटहोरजबयेकदिष्ट॥ नवन्नतकरेक
रिपरमइष्ट॥ निरजानसत्रुनिरबंधनेह॥ निहसंकफिरेजलथलबिदेह॥
निरलोनरहेनिरदोषनित॥ हरिबिनासकलमानेंअनित॥ सटचारिए
कतबलहेतत्र॥ पुनिहोरबिमलमायाबिरत्र॥ बपुपंचत्तपिठीबनाइ॥
तेकाहिबदावनकहतराय॥ कछुमेरोमोमहन हिनराज॥ ज्युंकहतब
दावनमो हिआजा॥ ताकोकछुकरियेजतननात॥ कहिहैनकछुबलयटदे
हा॥ यहसमजिकरऊसामेंहिसनेह॥ तुमरहमहिदिषावतराजलोन॥
सुनिलीजेताकेछदमछोन॥ मनमेरहलीनमायामदेय॥ बकूनजेता
जेपासबंध॥ सबकालरहेमनऊ हलीन॥ छनछनहिसलबादेनवीनाअ
पमांनअबिद्याअनाचार॥ सबदेषेराजहिमहिप्रकार॥ पापनुरागथरम
पहार॥ सतनकहेतनपतासंसार॥ सकलंकराजतवनरकरूप॥ कोरे
बिपरेतिहिपापकूप॥ कबिरुवाच॥ सबथक्यो राजकरिकरिसनम्र
ल॥ प्रहलादयेकमेलीनमूलः नृपकहेरेरितवपापतोहि: तमरतबाल
नहीदोसमोहि: मुबरन्नबिकरन्नकुटीबिरूर॥ कृतकोपनेत्रलोहित
करूर॥ बिपरीतरूपबारनबिसाल॥ मातंगमगायोतबनृपाल॥ अ

तुबचन लीनसतपीलवांन।करबांमचरबिगजफेरि थांन।अतिकष्टसाधि
बारनअनीत।बैगरिछारिबचन निबिनीत।लतबय कंरयंटसजोप
तोगरिचढेगज न्रतसबोध।।अंकुसअसंकबाचाअलीन।करनीअनेकअ
वर्तकीन।।औरेपहारजनुपीलवांन।।छूनीसतंगनोजगनथांन।गजज
थमअभंजनतज हीर।जमरूपचल्योअंचतजंजीर।जनकरेचूननपद्म
रजात।जानुलिमनकुंजमकीजमाति।।हरिरूपनयोनृपदिष्टआइ।
दिगसेनकरीतामसजगाइ।गजपेलेतबप्रहलादओरि।।निजिचलेलो
कसबगेरजोरि।बेगेनिसंकप्रहलादबाल।आनेनचित्रासिरत्रम्पे
काल।।गजनयेआंनिसिसुचरनलीन।करतारदीनरहामुकीनाग
जलयेतबैगजन्रतउतारि।उरखरनचापिमसतकउषारि।। छप्प
हरिसबकेसंकटहरो।बालकहरिकोदास।बंदिचरनप्रहलादके
गजफिरिचलोप्रकास।।१।।छंदपधरी।। नृपतबेमहलतेंउतरि
आइ।पुनिकरनहिरनकसिपउपाइ।तबबोलिपूछिमंत्राधिकार।य
हबालमरहिकोनेप्रकार।।कअसुर नामसंसोषकार।पररेहपवन
कैपेगिजाइ।उरपेसिप्रांनसोषेअसेष।निजिजातमृत्तेअंगपातनेष।
संसोषनबोलेतबेराइ।चरचलेसुनतअतिगतिपलाइ।संसोषन
पतनीसिरफिकारि।सबिष्यादजातवहराजद्वार।मिलिगरीबी
चियहिचरनेबांम।सबिष्यादकरीनृपअग्रताम।। राजोवाचाउ
षकवनआरत्रीयरजद्वार।बिपरीतबेषपूछऊबिचार।। संसोष
नसत्रीबाच।पतिमोरबलीसंसोषनाम।रहिकवरहतोसोम
अधाम।।बलवंतउहाअरुरहाबाल।प्रहलादचरितअरनुतनु
वाल।। राजोबाच।। मैंजाननदेखोदेजुपीरि।कबकहाहतेव
हअसुरधीर।।कबिरु।।तबबोलिपरोसीअसुरराइ।सबन्ते
दसबनिपूछोसुनाइ।।परोसीबाच।।प्रहलादरूपअतिबल
प्रचारि।तिहमारेसंसोषनपछारि।सतषंडकरेनहलईबार।य
हअबहीमारिआयोकुमार।कबिरुबाच।।करजोरिरहेसनमुष
बाल।।संकोचतहिपूछतनृपाल।।राजोबाच।।छलकवनकरये
तेकहहिधूत।मातंगसरूसतिहिबलअनूत।। बालकोबाच।।
यहमेरमनसरूअजऊराय।जोल्योवृथअरुबनीआय।।वहतो
जेसिंघारेवहेयेक।सोरलोपूरिघटघटअनेक।।घटपोमिबिन

सेवहेसोय॥तिहिलगिकह अंनकरेकोय॥दिन दिन्सस्त प्रतुतो हिनदीस॥
छतनेत्रंथन्तेछतीस॥कवित्त॥गुनसारउग्रे निसचंर रिसाय॥जवन
येसबेनिफ़लउपाय॥मुह्यांधिपत्तोसगसईसांझ॥दैपरूग्रकेलो तुव
नमाझ॥निसचारि जामसोचतनपाल॥रहितातिनथोतबसातकाल॥
नृपआरतबेसुनंसनाथांन॥अकुलाइनगरतब फिरीआंन॥कोउअस
रजाउमतआपकाज॥आग्याप्रसादयहकरेराज॥रहिनोतिफिरेटेर
तअछेपो॥कृतआहितीय॥अतिराजकोपा॥दरबारनग्रेहैआजकोइ॥
नृपहतेलाहि निसकेहोय॥राजासुबेगिदरबारंनाम॥मितिसचिवसुत
रसबनंमंगम॥नृपनरीतबेआग्यासकेरि॥थलऐकरबकूआरन्य
रि॥प्राकारओटकछुपरिनसरू॥हितअहितसबेतिहिंमभूमिआ
रुनमांझइहरबिअंतरूप॥जटिष्टिष्टि थंनपाषानजूप॥मिलिआसुरबो
दिसबबृक्षमूल॥चक्रओरकरे वोगांनतूल॥चवदिसाथानजोजनसुग्र
न॥तहांसतदिपरतवीरचलंत॥बिसाषमासमुनसुकलपरूव॥प्रारंन्व
उरदिसितिथिप्रतछि॥सियासनवामरछत्रसाज॥तिहिअहत्येथि
तआनिराज॥सनथबधआसुंसहाय॥सबमिलेआनिआपन्याय॥
मानीबिलासकरकसबिडंबा॥कालीकरालजिह्वाप्रलंबा॥परबतनिदे
ह्वषअरुनकूप॥गिरगुहानासजुतसूपरूप॥कृतकालदंतमोनकुकु
दाल॥मुषमकूछगरदनापूंछमाल॥सिरकेसउरधकपलेकुसान॥बिरके
उरोमतनदीरघरानि॥कुजदियमनकुतरसाक्षनराय॥अतिमंककरनपत्र
बकुनाय॥करनषरमनकुषरछुरीलेषि॥वपुचर्मचिर्मगीया बिसेषि॥
गजबरनचलतिगतिऊंटगाज॥कारेकरूपकरकसकुसाज॥सिरति
मअरुनचंदनकुनाय॥असबनेमुरुमुरुनिमुराय॥तिसुनटससत्र
असत्रनिसजूप॥बिचिकरीऐकपंकतिबिरूप॥तिहिपरपंतिपारक
प्रकास॥करफरीषगकृदहिसहास॥बिचिमद्यतुजाकंधरबिसाल॥
असफोटकरहिबोलहिकुदाल॥गजकेरिसमअवतीगजंत॥छजदु
ष्टहकरजोरिपंति॥संचारनहिनतहापवनसर॥योंकरेदुष्टमंड
लअरुरा॥असमिलिदुष्टजुवतीनिजाल॥बिंकरालरूपअतिपुथि
तबाल॥मन्नाधिकारमतिनयेमूल॥सिरपरीकालछायासमूल॥
थितताहानृपासनमनमलीन॥बरदयोब्रह्मसोरीनयेपीन॥
मतिधरीनयेउरउलटपान॥धरपापनरेनुबनारमान॥असरी
सहरनकसिपनरेस॥दिटअहमनकुकरकालकेस॥धरनरीज

जबहिं नारहकें तामति चालन ऽग्रासुरग्रमित॥ बिहसा हिं मिलनअंतरजु
बोम॥ कृबल्लनजरई नततृिमकोम॥ नृपकहें तब हिं सति हारेटेरि महब
चनकहे सबहीनि फेरि॥ इहिं मंडलग्रावेग्रवरकोइ॥ बिनुग्रसुरदेवमा
नुषजहोइ॥ धरिलेकुग्रचानकताहिंग्रेको॥ सहर्तई नृपतिग्रागपानिस
क॥ कुलधरमलिटतजुनकरिउपाय॥ घिकतासजनमयोकहतराइ॥
प्रहलादहतनजोरा पिलेया॥ ममसत्रुनबाकहेंजानदेया॥ जिहिंमंडहे
इहरिनागिजाइ॥ सकुरैबहतोंयोंकहतराइ॥ निजदावपरेहरिपकरि
लेऊ॥ मलकरेसबैमिलिमारिलेऊ॥ ऊसियाररहऊग्रायुधसजाइ
मतिसत्रुकऊक्लेनागिजाइ॥ सबनयेजबेमंडलसुरद॥ प्रहलादबु
लायोतबमतह॥ नृपदुष्टबिदाकीनेंग्रपार॥ करिजतनसबेलावऊ
कुमार॥ प्रहलादप्रतिहिंचिरकसोजाइ चलिकवरबुलावेतोहिराइ॥ प्रहल
दगयोलवग्रेहमाता॥ ऊजा तबुलायोबेगितात॥ रानीबाचा॥ तवकले
जननितवबिजयहेऊ॥ सोपदऊपिताजिहकरहिमेऊ॥ दहाऊनहि
चाहतरहिंजनम॥ मातापितकोमोहा॥ सामसनेहीउरबसता॥ तासोंनि
सचलहेऊ॥ कबिरुबाचा॥ योंकहिचलेप्रनामकरि॥ मातासोंप्रहलाद
जाकोसाहसजगबिदत॥ चदितनयोउदमाद॥ १॥ छंदपधरी॥ सिसुचले
उहपुहचेनजाय॥ सोगयोबीचमंडलसुताय॥ नृपग्रग्रनयोकरजोरिबा
ला॥ करधनुषतानिबोल्योनृपाला॥ ग्रतिरूपबालसोताग्रपार॥ पुनिलग
नेतेषकीनेंकुमार॥ हरितिलकभालउरतुलसीमाल॥ बपुपीतबसन
राजितबिसाल॥ परिबेषराहमनुससिसमीप॥ ग्रथारबीचजनुरबिप्र
दीप॥ त्रिनकूटमध्यकेंग्रगनिज्वाल॥ बिचग्रसुरलिषेंहें परतबाल
सुरलोकसुनीजबयहग्रनीत॥ सुरचढेसबेहरिनगतिप्रीति॥ इंद्रादिबि
मानतिगगनछाय॥ सुरग्राइसबेग्रपनेंसुताय॥ रविचंद्ररहेथिरहेग्र
कास॥ ग्ररुपवनगवनबिथकेंप्रकास॥ पसुपंषिकरतकरुनपुकार
करतरकरऊरताकुमार॥ ग्राकासछयेजनुजलदजाल॥ बनिरहे
देवसिंदनबिसाल॥ यिकारकरहिसबग्रसुरजाति॥ यहपुत्रहतन
क्योंउरसमाति॥ राजोबाच॥ करधनुषतानिबोल्योंकरूर॥ जिह
करतपेजसोकहोकूराग्र॥ बलेऊबेगरहेकबुलाय॥ यहहनतबान
उरबेधजाइ॥ बालकोबाचा॥ महा॥ जोपसुहोइरतोटेरिऊ॥ करि
ऊगेहेंनारा॥ ग्रहनुजजोतिग्रनंतगति॥ घटघटमहकरतार॥ १॥ म
महतोमहकोग्रमहरजकीटीमहसो॥ तीतकहेंटेरिबुलाईयेत
सोग्रंतरहोय॥ २॥ मोकहंस्करूतमोरग्रनु॥ सबहीघरसबेय॥

तो हि नसकत बाचेरो॥ श्रो षिन ही छतअेथ॥ राजो वाच॥ तुम हम ही को गुरुलं
ये॥ रूगब ता वत सारा॥ अपने प्रानन राषही॥ मारत पा हकुगर॥ १॥ छंद प
धरी॥ हसम मरलो तुव उदर कूप॥ उ निन्यो जनन सुंदर सरूप॥ लेगो दल
गाये मात तात॥ कुल धरम अग लोय ह होइ विष्यात॥ ले तो हि पगयो च दस
ला॥ कुलपा गत औ तो हि सु ऊिकाल॥ यह सेस वजे हे अब ही मदा॥ पुनि आन
हे हजो बनो रूढा॥ सुष से जतर नि सो गे धवास॥ गज वा जि सुनर से वा वि
लास॥ सुष कर कुवर धरि छत्र सीस॥ हग्छा कि कौन हेजे छतीस॥ बल
के॥ कासुंदर मंदर सेज वास॥ गज बाजि कहा नृपता बिलास॥ सिर छत्र
कहे त्रे लोक राज॥ बहु सुनर कहा जो सेव समाज॥ नृप न ये जगत जे दु
षकारि॥ जग गये जु वा सो जन महारि॥ राजो वाच॥ तिन हारि जनत
सुनि धृत बाल॥ कुल पा गम लगे ति हि परम साल॥ जि हि करी सत्रु से व
स हास॥ जे न ए सत्रु के दीन दास॥ कुल पा गत जे पदि सत्रु पान॥ ते हा रिग
ये जग जनम जा नि॥ जल मां झ रहत जे सीत काल॥ पंचाग नि ताप हि उ ष्ण
काल॥ बर षा रति मे दिर छांडि जाहि॥ गिर हे रहत जे हि मअद्रि माहि॥ सु
रथा सों षे हसदा न दे हि॥ इय मे ध करे दहा सु ले हि॥ कर के ब का टि अ
रये महेस॥ तब होहि चक्रवरती नरेस॥ करि उग्र तपस धूम्रपान॥ त
व सीस छत्र धारत नि दान॥ सुष सब के कहत कं बिषकपूत॥ नृप अ ज
नम तयो व थाधूत॥ सब की कहा तो हि राज काज॥ तो हि देषि लगत
कुल अ सुरलाज॥ बालको वाच॥ छितनृपति कहा जो बिजय कीन॥
रिअ वनि कहा जो दंड लीन॥ अरु कहा नये इंद्र राज॥ हरि बिमुष ल
गव तकुल हि लाज॥ हरि बिमुष होइ जे नृप कहाइ॥ जग जीयत जन
म जे हैं गमाइ॥ नृप उ॥ हम जीय त पुत्र जनम हि गमाय॥ सिर धरत
छत्र जे लगत पाय॥ सुनि जे न कहुं देषेन सोय॥ तिन करत से व सुष म
न होइ॥ अब जनम ति हारो प्रसपूत॥ जो नये सत्रु सेवक अकूत॥ बा
लको वाच॥ होउ न हि कहुं तें मानुषी देह॥ उरलन राज ना हिन सं
देह॥ प्राचीन पुन्य तुमने ही सोय॥ सिर ईक कछु नन न न हीन सहोय॥
न ही छुटत जतन करि हो नृपाल॥ इकबीस चोकन्न मि हो बिहाल॥ उ
नवकृत होत सब गरन वास॥ सहि दुसह दुःष चूरत प्रकास॥ उ
तपतिस बेजल बुंद ऐक॥ पुनि बरन न गर्भ क्लतग नेक॥ अथ ब दन
उरथ पर स्वास रूध॥ गनि ऐकरा जर कनिम बुध॥ जि हि जग र ज्याल
सं बजर त जाय॥ तन ति नज सो का के ना य॥ ति हि कि दे ज्वाल क
राल मांझ॥ सो बिसस्यो सकि न ने रसांझ॥ लगि पवन नयो तें छु

थालीन: करवार बिसरि जिन मोषकीन॥ जब चले पारस लगि घेल बालात
नि छुधा पिपासा गें अजाल: पुनि न ये जबे जो बन प्रवेसा॥ ताकुल तेज बि
बीया बिलास: अलिषे कन्ये जुव पति कहा र: धरि सी सत्त्व चाम
रखला साथ है हे राज जि हि कुल अधील: अगार करत नित्य प्रति नबीन
तन छोकि जबे हरि जो तिजाय॥ कहि छीयो छीयां सब कुल पिनाद: प्रति दि
वस पीवत जेनी रवाति: करि तास निगोली देत गारि: तिहि बिगर बते
हि ये रा गाजन नाजि आलन हीं सगजा य॥ सो गेयचदना जिहि बार बार:
सो दे ही को है अति छार: बुरसन दे हि पोषित जु वाल कैंत स अये है स्वा
न स्याल: ॥ कुं र लीया वैसे प्रभु हि बिसारि करि: प्रजत ग्यान सरूप: अ
थ अथ के कं ध्द बिलो ध्यास परत सकूप॥ ध्यास परत स कूप: गरत को
बासन जाने: जिहि को देव हि किछु नो हि नहीं नैंक पिछाने: पुनि अैहे व
हि ध्यास जु तेजु व देव जेसे: आपन ये अवरी सन आ हि बिसरे प्रभु वैसे:
राजो बाच॥ छंद पधरी॥ जदपि सुने न रस मछिर बच न रा य॥ अति कोप च ब्रो
उर अ सुर आय॥ कहि को मूक लोन्द पवच न ये ह॥ तो हि राषे ता को बेलि
ले कु॥ तव रत्त कदे वे लन जुता हि॥ किहि सुरग अरु कवन आहि॥ बा
ल कौ बचा तु वहि बुरी है काल रूपा न बस तब है वा को सरूप॥ रह
जल थल काठ पषानन मह॥ है प्रभु ही को बास॥ घर घर प्रति बिंबत स
वे॥ आपुन बस हि अकास॥ राजो बाच॥ छंद पधरी॥ हरि तू जक ह
त पाषान मांह॥ यह थंभ कछु पाषान नाहि॥ पाषान मांझ हरि बस
त आहि॥ वह थें न बुताव कुं बगता हि॥ बालको॥ दुहा॥ मेरोस
तु या बं नम हा॥ सो नि थ्या नहीं होइ॥ मन बच करम बुलाइ कौ॥ दर
सन दे है मो हि॥ १॥ राजो बाच॥ सो मन बच करि बो कहा॥ मरते ल
नहीं होय॥ तब दरसन करि बो कहां॥ उर ते क्रूर पोय॥ २॥ गये बि
देस नि बंधु सब॥ तरनीत मो सने हा॥ कुषि नासी पसु मरि गये॥ रय
नि बर सह मेहा॥ ३॥ मैं मायो उर अैवि य हा॥ बानस नले जाइ तब
धो हरि करि बो कहा॥ ते वै वेद नु आय॥ ४॥ कुंडा॥ छंद पधरी॥ वेस
ष तु कल चो इस बिसाल॥ रवि होत अ सत गत संधि काल॥ प्रह्लाद क
री कृत नु कारा॥ यह रार ते न न प्रपूरि द्वारा॥ धर तरि त थंभ न गम
गत ये हा॥ हल हल ति न मि र अ सुर दे हा॥ कसम सत कम न कनल
स ति सेस॥ उर परी त्रास अ सुर असेस॥ बाल को बाच॥ तुव तारउ
तारत प्रभु प्रबीन॥ हरि स्तो उ रक बरु न कीन: ये मूर हि पावत मे

हिंग्रास॥ अवरेऊ दरसक रुना निवास॥ दुषदीन हरन देवाधिदेव॥ सबका
लकरत तरंग दिसेव॥ पितमात तनो लक रिश्र नाथ: कोम्है हैं मो तेरी न नाथ
सवैया॥ अघिल जगत्र सवग्रा पुने करम बाध्यो नाचत हे तारी है है तुम
हीन चार है बे॥ करतु अकरतु नाथ अनथा समरथ हरि विग्रता रूमन
मैं न मन को बदर है बे॥ अति ही रसकि रमार हतरसे री जो पै यहन उचि
त पै बिरद विसरार है बे॥ मोरूसे पतित की पुकार जो न लगै तत छांडि है रू
पनिउ धार नक हार है बे॥ कबित्त॥ छंद पधरी॥ यह कहत गरज दुह चौ
अकास॥ इंद्रासन डोलेग्र तिस त्रास॥ सिवदरे जोग निद्रा समेध॥ मदहु किन
नये दिगज मदंध॥ दिगपाल चकित ब्रह्म डोल॥ अकबकत अमर नहीं कु
रत बोल॥ थकि रंग निरतिग ईताल चुकि॥ मुषहास स्वास निस्वास मुकि॥
जय जयंत सिय सुरनय उच्चार॥ ब्रह्मा दृलिष्यो तु वटस्ये त्तार॥ यहरारंघ
षत वकूट थंच॥ अवतार तथो नरहरि असंच॥ ससि सूर ज्वलन त्रय चष प्र
कास॥ करकर हि दसन दरा बिकास॥ रूलजं त्र प्रदीपत मुष कराल॥ सार कृपि
घजि हास चाल॥ कत नृकुटि कुटिल बँक रस कोय॥ उधिष्ट सटा बघु पीन ओ
प॥ करन षर बज्र कर फरउ गदा॥ आछो रत्न मत सिर पुंछ अपदा॥ घुकार स
बद गरजन गहीर॥ बिकराल रूप नरसिंघ बीर॥ ततु अचकि हिरनक सिप
पछारि॥ धरि गोद नये थिन अहदारि॥ रनुउदर सिष रन षर निविदारि॥ आ
नंद सुर नि जय जय उचारि॥ तहा करे देव कीउ स्वतंत्र॥ आंदोल हारउर असु
रअंत्र॥ असुर सैयरमाय अनूप॥ हरिनये कालतुगवान रूप॥ रतलिसव
दन करग्र रून रंग॥ नकुटी बिलास त्रय लोक नंग॥ असुरी गरनडावनि
अपार॥ सिसुकरत सनय हाहा पुकार॥ हमातलात नाते ति देश क रुक
हत आन त्रालान कोर॥ रुष नासन बेछित को बिलास॥ सुरर स्वत नउ
ननाद कसहास॥ करठ वरुना कहर समर कुथा॥ घर घर निपत्र त्रुम्र निप्र
बुध॥ बेताल ताल मिलि हाक बीरा॥ गुरगेतन रु गरजन गहीर॥ ठाकन
यठा कत्रेन कत्र रक्त॥ गो मायु चि ल्हग्रधी यहक॥ आनंद नारद अंगन
ग॥ यहनु आनि मिले ओसर अनंग॥ ऐरावत आरूढ रंभ आय॥ बरकुसम
बरषि दुंदुभि बजाय॥ सुर करत अमर कंन्या सगान॥ नत्ता दिगीत नानन
विधान॥ गंधरब करत नाटक सुगेय॥ उच्चार बिरद तुब रंग जेय॥ दिग
जारूढ दिगपाल आय॥ सबकरत सबद जय जय सुनाय॥ पग धारि हि
सबी हनस कास॥ सुरवेषि ब्रह्म कीउ बिलास॥ चवबेरउ कनिहि

त मंत्र दीन्ह: मुष चारिउ चित आसिष सुदीन· ते तीस कोटि सुर सहत तां
म: भुवन्नार हरे प्रभु उरस्याम रिष कहत ऐ आनंद ऐव· जग जय प्रतिजय
ति नरसिंघ देव: सकुटेन हिरनकस्यप सम्हल।। हरि क्रोध अनल जरि सलन्त
न्त: कछु बचे न जि असुर कुचाल: विसेष स्यो प्रभु न्ह मितारा। न्ह यन्त्री
तन्ह ये रिषि देवन्ह रूप।। सुन निकर अरकम लाल सरूप: दे ठवत कीन करुना दि
आसा। न्ह ये सात रूप नरहरि तुम्हारा।। सुन रक्को रिदीप ति सरीर। बपु दथ बि
मलन नरसिंघ बीर: नरसिंघ देव वेगरि सूक: न वत्त गत तिन्ह क बालक निसि
क: चारत नृसिंघ निजर म निबाल· दुष्ट हरन नरहरि दयाल। बरष सु
होत कुसम निअकास: लै अमर चमर ढारत तस हास। तह धरे छत्र मरुल
ह सीस· दीय तिलक आपने लोक ईस।। मीन्ह सि घवाद। न्हपत बिसेष छि
ति तुम हि दीन। पुनि होर चित जाचे कृपा लीन: प्रह्लाद।। मुष चारि रटत विधि
चारि बेद: सो रीनि नैनि गावत सबेद।। इन्द्र दिग सबे सुर संग लीन। निति निति ह
सुजस माया नवीना।। ध्यान सघित हृ धारि।। दिगवास नयमुष मेकच
रि।। त्रयनेत्र दे बिजल थल अकास।। निरधार पार पायो न तास।। कछि बस
तसयन उध्यान तीर।। जल पत्रपात्र पोषत सरीर।। द्रिग मूदि रहत तप एक
ध्यान।। पै देवन हि न पायो निदान।। न्ह वत तमन्त तप जोग साधि।। अष्ट
ग उपासत निरउपाधि।। अरु होत सिध साधिक अनेक।। ये ऊन बनत
न हेत ऐक।। बर मंत्र जु साधत नित बिप्र।। सो ई जोति फिरत षोजत सु छि
प्र।। जुग सहत रसनि निस नाम जोर।। आराधस पन हीन हत ओर।। तुम
रहत आदिम ध्यावसान।। कारुन्य रूप करुना निदान।। उरल न्ह जोति
तुम देह धारि।। मुहि दीन दरस दीनो मुरारि।। गहि बांह मोहि वेगरि गोद।। म
न बंछित पायो सहत मोद।। अभिलाष सबै पूरे अनंत।। सिर धरे हाथ मो हि
करे संत।। कर जोरि ये है जाचत कृपाल।। हित नगति देउ दीन निदयाल
नित रहै नैन तव दरस लीन।। प्रभु सुजस सुनो श्रवन निप्रबीन।। नित
नाम रटै रसना नवीन।। अरु रहै रस तव रन अधीन।। सिर रहै नमस कु
त चरन संग।। पुनि न्हाल देस पद रज प्रसंग।। सुन जोति रहउ हरि उरस
मारा।। प्रभु करु संत परिक्रमन पार।। छबि संग रहउ चित बंदसा बि·
न्हवत था असतु नरसिंघ न्हा बि।। कीनो पुरान नरसिंघ देव· निज बक्त
न्ह कउधार न्हे व: सब अग्र निकट तब सुर समाज।। सानंद कहत महि
मासकाज।। ।।अथ श्री ब्रह्म स्तुति बुलंन।। छंद भुजंगी।। नमो देव
नारायनं नारसिंघं।। नमो देव नारायणं बीर सिंघं।। नमो देव नारायणं

क्रूरसिंघं॥नमो देवनारायण आद्य सिंघं॥नमो देवनारायन उग्र सिंघं॥नमो
देवनारायणं पुरुष सिंघं॥नमो देवनारायणं रोद्र सिंघं॥नमसतेनमो नी
चनेत्र सिंघं॥नमसतेनमो बिज्जलानेत्र सिंघं॥नमसतेनमो श्वेततेज
त सिंघं॥नमसतेनमो निरमलंचित्र सिंघं॥नमसतेनमो निरजितं काल सिं
घं॥नमसतेनमः कल्पितं-कल्प सिंघं॥नमसतेनमः कामरंकाम सिंघं॥
नमसते दयास्वरूप दुष्टान्ति सिंघं॥नमसतेनमः कालजगवान सिंघं॥नमसते
नमः रूपनवनेक सिंघं॥नमसतेनमः हेतप्रहलाद सिंघं॥नमसतेनमस
ते लिछमीन सिंघं॥ अथ रुद्र सतुति॥नमसतेनमो हेमकसिपद्राहं॥नमसते
नमो हेतप्रहलाद चाहं॥नमसतेनमो कोटिसूरंप्रकासं॥नमसतेनमो दुष्ट
नारं बिनासं॥नमसतेनमसते सुरं हेतकारं॥नमसतेनमसते असुरंष-
यारं॥ इंद्र सतुति॥ नमसते हितंचेत रीनं दयारं॥नमसते कृतं रूप
थंतं बिहारं॥नमसते तिवारंन पारं अनीतं॥नमसतेनमसते तिमत्याअ
तीतं॥ अथ दिगपाल सतुति॥नमसते अकेयं अजेयं अनादिन
मसते अलिप्रअछिप्रअबाद्धं॥नमसते सकुतुअकेतुअनाथं॥नमसते
अरूपं सरूपं सनाथं॥नमसते समोहं अमोहं अमृतं॥नमसते सबिद्धं
अबिद्धं अमृतं॥नमसते अकासं अवासं अजेयं॥निराकार निरधार महि
मा अमेयं॥अबामं अकामं सकामं उदासी॥सयके टिब्रह्मं करोमेत्र
कासी॥स्वरं मेध औघ जितं गर्ज सिंघं॥नमसते नमसते लिछमीन सिंघं॥
अथ रिखि सतुति नमसते अपारं अधारं अनाथं॥नमसते अचारं बिकारं प्र
माथं॥नमसते सधीरं उदारं दीनपीरं॥नमसते हितंगो द्विजं धरम धीरं॥
कबिरुबाच॥कुंडली॥ उथास्यो प्रहलाद हरि अवनीनारउतारि॥श्री
नृसिंघ सुरसंग तब॥प्रतुबयकूरपधारि॥प्रतुबयकूर पधारि देवं
दुंदुभि बाजत॥गांन करत गंधरब-तानरंन दिकसाजत॥बामंगल
गकमला बिमल॥आरतिबंथ मुरारि॥बिरदन्तयो जुगजुग बिदित॥ह
रिप्रहलादउधारि॥१॥ छंदपधरी॥ अति दुखित कयाधूत हां अ
सुरनअजिरपरेत हां असुरराश उरलगे जननि प्रहलाद अनि॥सबि
सेषकरत करुना सबानि॥मातबाच॥कहि साधु साधु पुत्र हि सम
तात बपानथं मानि हितरितात॥सम्या हिकरायहगति सन्ते वा॥घरि दे
हदेति निजकर निदेव॥घरमिष्टन्तयो सुतत्तसधीर॥सुनछुदे मरनजा
मतसरीर॥ रानीबाच॥दूहा॥ गति जेसी या दुष्ट कहा॥क्रूरीनका
रूहोति॥तो हितहरि यह देहधरि॥मारि मिलायो जोति॥ कबिरु॥
छंदपधरी॥ नृपनिकरकयाधूत बहिआइ श्री पञ्चरनरहीम सत

फलगार॥ कुन्द तीग्रा रानबस्य॥ सतरानेबीते समय॥ वृथाकस्यो नपरो
सा॥ ग्राप कमाये करम ये॥ ग्रब कि हि कीजे दोस॥ ग्रबकि हि दीजे दोस॥ ग्राप
ही करम कमाये॥ सब दिन जाने ऐको ऐक केपंथन धाये॥ पुनि लागे पिछता
न॥ समय बीते सतराने॥ छंद पधरी॥ प्रीय जो तिन सूरौ तुम हिग्रानि॥
परैगा सिर ही गजक्रम प्रमानि॥ वह मोहि दई नारद बताइ॥ तिसु ग्रहीग
रनगत चिततलाइ॥ ग्रप ऊर ऊरार नहीं कही तो हि॥ मेजानि कऊतो ल मोहि
यहनयो ब्रह्म ग्यानी सपूत॥ फलनयो तासतु मकहंग्र ऊत॥ तुम पंथ बुहार
त नरक जान॥ सुत करेस बिषिसदगति सुजान॥ सुत नयो साधनि हितन
ऊ॥ हगिर नमांऊ तिसु ग्रहीग ऊ॥ सुनपंथ यह है हिना लवेस॥ तुम
त्रासदई या के हंग्र सेस॥ तुम हतन ग्रान या के॥ बिचारि॥ प्रसु नये प्रगट
तब धंनफारि॥ रावरे ऊते क्रत नरक जेग॥ सुत साग नयो कि ऊकर मजो
ग॥ दुहा॥ ता ते संतत सेइजे॥ साध संग मन लाय॥ जैसे जाती संगते कु
करंगगा न्हाइ॥१॥ छंद पधरी॥ पतिते हिन सूरौ तनग्यान॥ हरलिग
ति प्रगटन ही वंधे प्रान॥ तप सो बिजोग नहिं बिषि समेय॥ बिषि जुकत
न कीनें बाजि मेथ॥ सत संग न जे नहीं चितलाइ॥ बस सर नगर बहार
नजाइ॥ ऊदया सतरा जग्र ऊन्ग्र छसि षि॥ गज बाजि साज सुषन वेनि
षि॥ यह गरबन सूरौ तुम हि सांम॥ प्रीय चलेग्र केले छांडि धांम॥ दु
हा॥ कहे कथा धूछा लिहरि नरक पर ऊजिन को राग्रानदेव के सेवक
हि॥ निस चय मुकति न होइ॥१॥ धुव बालक हरि तेथरे॥ तिहि ऊरथप
रपाइ॥ टिकर ही प्रहलाद की॥ कीनौ सांम सहाइ॥२॥ कीनो राज हिंद
मकुत॥ प्रेम सहत प्रहलाद॥ नारद रेनुव लोक के॥ वासव टरे बिषाद॥
होत दुषी दुष दीन के॥ संतत ऊलत साथ॥ संकट हरन ग्रनाथ के॥ देष
ऊग्रापग्रनाथ॥३॥ हिमकसिपरि पुसंघरो॥ करे नगन उधार॥ रहि कै
रननरहर प्रसन्न॥ नयो नृमिग्र वतार॥४॥ कबि रुवाच॥ छंद पधरी॥ प्र
हलाद नयो राजा निसेस॥ इक छत्र तपोग्रवनी नरेस॥ गोबेद बिप्र
तनीति नाइ॥ तिहि राज धरम वलि चकु पाइ॥ रस ग्रवतग्रवनि ग्री
षधग्रसेष॥ तरलता फल तफूलन बिसेष॥ प्रति ग्रेह होइ पूजा प्रसाद
ऊालरी सुन कसु नसंषनाद॥ कीर्तन कथा मुष वेद बाद॥ परित्याग
कीन लोकनि प्रमाद॥ इक छत्र राज प्रहलाद कीन॥ पुनि नये ग्रमर
हरि जगति लीन॥ तिहि पुत्र बिरोचन दयो राज॥ सिर धरे तिलक सुच
छत्रसाज॥ दुहा॥ सुनत कथा प्रहलाद की॥ साधे प्रीति प्रकास॥ जा के
गैरन लोक त्रय॥ जाहि नहीं बिस्वास॥१॥ सवैया॥ जा दिन ग्रानंद पा

रूपकेसब तादिनना इसहारकरैंगे। सोकंत्र लोक बिलोक त्रिलोकर
लीनरपूरिसुन्दरिटरैंगे॥ जेसेंचंदग जराजकीपीरितोकूकरनादेख
न्हासिमरैंगे॥ जोकरूनामयरामकृपाते कहाजगकीअरुपाबिगरै
गे॥ कबित॥ इहिप्रकारअवतार रूपअदभूततनुधास्यो॥ कोटिब
ज्ञनषकरिन उदरहिरनाकुसफास्यो॥ उधारेप्रहलाद राजमहि
मंडलदिनें॥ अरुकीनें असुरेस सदाअपनें करिलिनें॥ यहलयं
बिरदजुगजुगबिदित बिस्वसुजसबिसतारयें॥ नरसिंघदेवनररू
रसुकबि अवनीभार उतारयें॥१॥ इतिनृसिंघअवतारचरित्रसंपू
रण। नाभाआरहटनरहरदासेनबिरचितं॥ अथश्रीबामनअवता
रवरननं॥ कबित॥ अबबामनअवतारकृत सुनऊसंतम
नलाय॥ बलिबंधनबपुबिसतरयो॥ तिहुपुरमेनसमाय॥१॥ छंदपधरी॥
कारनरूपहरिकमगकीन॥ मथिषीरोदधितहांरतनलीन॥ सबरतनज
थाबिधिसुरनिपाय॥ सुरलोकनयेलषितसुनाय॥ न्नरूपमोहनीत
बचुलाय॥ इच्छासुआपहरितहांआय॥ दितिनित्रमारत्रनुसुरादीन॥ सु
रनप्रसादसुरसुधापीन॥ पुनिरहेसेषसोअमृतपाय॥ लेचलेसकसुरपु
रपलाय॥ आसुरनिहरे कैयोअमान॥ हमजीयतलरकेअमृतआनि॥ भ
जानुलसुरासुरनयेजुध॥ कछुकालअमृतकारनसकुधा॥ रनजूझि
बिरोचनपस्योराज॥ बलिकवरसहतदानवसमाज॥ जयजुधसकदान
वसघार॥ लेगयेसुधासुरपुरसुढार॥ रननूमिसुकआये रिषीसहित
हादीनीसजीवनिअसीस॥ रनन्रमिनपायेसीसगंभ॥ पंचतबिरोचन
नयोतांभ॥ सबलहेअंगजिहिजिहिसंग॥ बलिकवरजीयेअरुअसु
रऔर॥ रनजूझि बिरोचनसुजसलीन॥ सो तिलकछत्रलेबलिहिदी
न॥ गुरराजसुकनयसकभानि॥ लेगयेबलिहितबसुनलथांन॥ रा
ज्याभिषेककंबलिनयोजानि॥ सबनयेदैतऐकंत्रआनि॥ बलिस
नानपासनवलिबिधांन॥ थितनयेजथाक्रमसुनटथांन॥ गुरर
गसुकतिहिसनाआस॥ बलिदरीमध्यबेगकबतास॥ सिषासन
सुकहिअयकीन॥ तबसुनटनयेमनमहमलीन॥ उगियेसबेकहि
सुरनिसालन॥ द्विजकरिहोदिगबिजइनृपाल॥ गुरराजलिषेतबछीन
चित्र॥ इकराजजगपकरिनौउचित्र॥ अमकररहेबलिकछुककाल॥ म
घकरेसिषटोमापताल॥ तिहिअगनिकुंडरथनिकसि एकं॥ तन त्रा
नसहतआयुधअनेक॥ गुरकहेबलिहितनिरबिष्मास॥ दिगबिज

यहे ऊतवमषप्रसाद: रथचढेराज तिहि बिजयकाज: सनधबध ससत्र निस
माज: तिहि रथारूढदेषेनकोइ: यहजेसवनि निरसंके होइ: नृपजीतिसबै
बलि बलबिधांन: भुवलोक लयो भुजवलप्रमांन: बसकरेनागमंडलबि
सेष: प्रतिभुधसमनकोअरिअसेष: यहसुनीसुरनिजबड्ड सहबात: तब
सो बिषाद उरन हीसमात: सबलगे अमरतहांतजनलोक: सुनिइंद्रबढ्यौ
रअतुलसोक: सक्रादिसनामि लिसुरसमाज: कसिपप्रजापपहगयेसक
ज: कारननिवेदकसिपहिकीन: दीयबिहासबनितहांअभयदीन: उ
परेसकरेकसिपसकेत: हतकरऊअदितितुम बिष्णु हेत: पतिबचनग्रीया
आप्पासुपाइ: सबसेबकरेपतिहितसुचाइ: जबभयेबरषव्रतकरतजांनि
विधिजुक तजथावितऐकथांन॥ श्रीभगवांनोवाच॥ हरिदयोतहांदर
सनदयाल: हमबचनलेऊ हतबिलबिसाल॥ अदितउवाच॥ पुनिकेअदि
तहरिसोंप्रकास: बलिजयोबिजयसुरपतिहित्रास॥ श्रीहरिउवाच॥ हरि
जयेस दयतहांकहिसुचार: ऊसहंआहिधरमहिसहाइ: बलिमहाबलीअ
रुधरमवीर: प्रतिभुधनहिनकोऊसमरबीर: तवउदरअनुजअवतरेंआर
कैइंद्रआतकरिऊसहाइ: बरपाइअदितिउपजबिस्वास: हरिगयेतबे
निजपुरनिवास: बलिलयेतबहिबलइंद्रथांन: इंद्रादिगयेपालायमां
न: सुरतजेसबैतजिथांनथांन: कबिकहेंतबबलिभ्रयमांन॥ उरबा
चा॥ छलबलहिउपाजितभुवनेस: अतयनहोतबेरोपदेस: धरमबल
लेतछितिनृपतिकोइ: अनेककलपअहयसुहोइ: सततजगपकीयेसु
रराजहोत: सुरलोकतबेनृपताउदोत: धरमाधिकारउरपांनदीप:
बलिमहाचक्रबरतीप्रथीप: तिहिअहलमथसुरपतिसमान: धरमा
धिकारबलिअप्रमांन: तिहिसमयसुबलिउदेमप्रबीन: सततजगपक
रनसंकलपलीन: मखहोनलगेनानाप्रकार: सबभांतिबसकीनेंसंसा
र: दनुदेवमनुजसासनअधीन: इकऊनसबिधिसततजगपकीन: इह
भांतिसबैसुरलोकबात अतिदुसहइंद्रउरनहीसमात: तहांभयेगीत
बासवसेतष: अतिबलीअसुरमषकृतविसेष: परब्रह्मगयेबासव
पुनीत: सबकहेबिधिहिकारनबिनीत: परचंडदेतअतिमषप्रसाद
दिगबिजयंजयोवहनिरबिषाद: सुरलोककाजवाहिजतनकीन:
सततजग्पकीयेपुनिऐकहीन: आरंभजयोतिहिमषसमूल: सहिजा
इनहिनहमउरहिसूल बिधिसकंजयेआरूढबिमांन: ऊतगमनज
हांकरुनानिदान: परब्रह्मदेवपोढेपुनीत: जलतलपरचितम
याअजीत: थुतिबेदकरीतहांब्रह्मआर: सुनिजगेसेषसाईसुनि

र॰ तुमआइ ब्रह्मबासवसमेत: मोहिसम प्रबोधेउ कवन हेत॥ बिधिबाच॥ नि
जदासप्रभु हि करुना निवेर: बिधिकहतनयेनयसकून्तेर: लोकेसथपेतु
मलीकलोक॰ स्वछंदवसतअपआपओक॰ मृतलोकलपन बलिदेसराइ:
धरमाधिकारमषबलिसहाइ: सोलयोचहतअबइन्द्रीन: इकऊनतनेमष
मतबिधान॰ आरतनयोतिहिमषहिकाज॰ मनछुभितहोततिहिदेवराज: सुरलो
कहोतआसुरसंचार: यहजानिकरीप्रभुसोंपुकार॥ श्रीहरिबाच॥ धारमिकरा
जरतबेदनीति॰ किहिहेतहनोंबलिजगपुनीत॰ मरजादबेदलंघहिनमूल: स
ततसहारतिहिकसमूल॥ दहा॥ बिधिबाच॥ उपजेंग्यानपिसाचकरि: जोप्रभु
अगलातिनपाइ: ताकेलीनेंउ चितनही: तजिबोदेवसहाइ॥१॥ हरिउरस
नकारनबरनको: जोउरतअप्रकास॰ कहितबाधेजगतिके: ओलतग्रबुनि
अकास॥२॥ बिधिउ॥ जोहितबाधेजगतिके: ओलतहोमहाराज: करिहोस
कसहारतुम: आपथपेकीलाज॥३॥ सततबेदससहारतुम॰ औरतिबंध
उदार॰ सुरपतितुमहीकरिथप्यो: आरतकरतपुकार॥४॥ रचेसुइछालो
कत्रय निजलीलाबिसतार: लोकप्रजादाटरतहैं॰ करिहोतुमहीबिच
रा॥५॥ इतबाच॥ छंदपधरी॥ इहिभांतिब्रह्मवसुकरिबिचार: प्रभुनिग
येतबेनिजपुरसुदार: इतनियेतबेचिततबिसेष: अपराधबिनाअबउ
चितदेष॰ नृपबलिपुनीतबेदिकसुभाव: किहिहेतहनोंतिहिबियरनाव:
बसुनातहोइलघुब्रह्मचार॰ तबबिहितकछुककरिनोबिचार॰ नत
कसियपरिषीसपितुअदितिमात: बसुन्नअनहरिलियेअनुजतात: नत
मासद्वादसीसुकलपक्ष: मध्यान्नजनमबामनप्रतछ: इहिभांतिइन्द्र
त्राताअनूप: हरिलियेबिस्वबामनसरूप: प्रारंतकरयोबलिजग्य
पकाज॰ सुक्रादिसबिबुधआसुरसमाज: बिधिसहितहोततहांमषबि
धान: हव्यादिहोमद्विजबेदगान: जगपासतबेबलिइथीप: संभ्या
बलिबामभ्रमसमीप॥ दहा॥ कोउजाचतआरेकछु॰ बंछितदेतछत
स: कलपलताजुतकलपतरु: देहधरेजनुदीस॥१॥ कारनबामनरू
पकरि: हरिआयेबलिद्वार: कौतकहितसंगनगरके ओलतलोकअपा
रा॥२॥ छंदपधरी॥ इहिसमयआइबामनअनूप: नैष्टकब्रह्मचारीसरूप
अपतात्रिपुंड्र सीसससोह॰ उपवीतकंधमनहरनमोह: कुसदंडअद्द
मालाप्रकास॰ करबामककमंडलसावकास: कोपीनअमोजीकटिप्रदेस
मेषलाअजिनसोभितसुदेस: घनस्यामसुजगमुषनेत्रचारि: कांनी
बिलासश्रुतमोहकारि: लघुकाधारजरजरसरीर: सिरहोतकंपअ
तरसधीर॥ प्रतिहार बाचानृपकीनगुदरप्रतिहारजाइ: बामनसु

रूपद्विजद्वारआर: चलजगपलीनबामनबुलाइ: नृपनिकटतेबेद्विजदेव
आइ॥ बावनउ॥ आसिषसुदीनबामनअसेष: द्रिटनगतिहोऊ संजुत
बिसेष:॥ बलिउ॥ कोआपुनकहियेअतिथदेव॥ बांवन॥ हमआहि
द्विजबब्रह्मदेव॥ बलिउ॥ स्वछंदबासकिककवनगाम॥ बांवन॥ थि
तअषिलब्रह्मसजितसुधाम॥ बलिउ॥ सुनकालेकवनरहकसरूप
बांवन॥ सबसमऊमोहिअनाथरूप॥ बलिबाच॥ कोबेसपितउ
तपतिकाल॥ बांवन॥ मोहिनहिनाथसमरननृपाल॥ बलिउ॥
अविलाषकवनचितधरिआमेव: फलतेऊकरऊपूरनकुदेव: स्वर
नरतनसजासयेह: कनाहयबारनगोसदेह: अरुमहादानषोडसस
बास: भूमीसनेमपतनबिलास: जुतदेसदीपबिलिषकलेऊ: तह
करऊराजआसिषसुदेऊ॥ बांवन॥ त्रयपरगभूमिममदेऊमोहि
स्वसथानबसहिनिरचीतहोहि॥ बलिबाच॥ जाचेभाकीकअलप
दान: मोदेतभूमिकात्रिपदमान: दातासुषेअअरुपात्रकाल: अनु
सरकऊजाचकऊतातकाल॥ बांवन॥ येबचनजुकतहैतुमहिभूप
प्रह्लादपितामहधरमरूप: तुमरेतअधिककोउनहिराज: त्रयलो
कसहितसंपतिसमाज: संतोषसहितअपनेसमान: मागेनरेसदी
जेसुदान॥ बलिउ॥ नृजदपित्रयोजनहोरविप: तोदेसषंडलीजेसु
दीप॥ बांवनउ॥ नवषंडसहितदीपनिसमेत: लोतीनकेरसंतो
षलेत: जोलयोअसंतोषीद्विजान: तोब्रह्मतेजतिहिछीनिजा
त: मोहिआहित्रयोजनहतेराज: संतोषमानिलेऊसकाज: चि
तइयाजुकतजोदेयराइ: सबहैमोहित्रयलोकभाइ॥ सुकउ॥
कुलगरूसुक्रहरसीत्रिकाल: तिहिकहीनाहियेद्विजनृपाल:
बलिउ॥ नृपगहतबेप्रतोलरास: कोआहिकहेअनुक्रमप्रक
स॥ सुक्रबाच॥ हरिकपटदेहधरिसुरसहाइ: तवजगपबिगास्योच
हतराइ: मांगतत्रिपेडछितकाजआक: छलसाजिछीनिलेहैत्रि
लोक: पुनिकहोकिऊनदीनेबितार: फलहासिरूपसुरपतिसह
इ॥ बलिउ॥ छनमांझकोटिब्रह्मंडदेहि अहंनाहिसुमेपैलौ
षदेहि॥ गुरबाच॥ छलछीनिलेहिछितराजसाज: तिहिदयेध
रमकहामहाराज॥ बलिबाच॥ दोहा॥ जाचकहरिसोकपटजु

नाऊं नि हकपटे देत॥याको सुक बिसेष फल॰ बेद बिमल कहि देत
॥१॥ आप तहां द्विज रूप धरि: असुरराज सहार: सोसे सुक्र तिग्नि
रको॰ ताप लत रुक आ[illegible]॥२॥ अग निजरावत ह्मबकु॰ मषको जतहि
नदेव॰ हाथ मांगि अबलेतहैं: हरि देवनि के देव॥३॥कबित्त॥ उतरत
न दिन रब दा: येत्र तहां न गुकछ: तहां करत बलि राज तब: पावन जग
श्रतछ॥४॥छंद पधरी॥गुर लिओ तबेनृप नियम कीन: तब तयो आप
जलपात्र लीन: द्विज लेऊं स्वसति करि कैसो राज: संकलप करत हम पु
निकाज: संकलप हेत बलि कर पसारि: जलपात्र सुक्र रुंधित द्वार:
~~तयेकांण ग रूतवर हुष्क सु~~: जल चलत न हीत तब कीय बिचार: हरि
करत बेकुस करि प्रहार॰ द्विज दान निवारन फल सुपार: तयेकांण ग
रूतवर हुष्ट तार: जल मेलि हस्त तस संकलप लीन: बलि भूमि त्रिपद बा
मन हि दीन: तरि पैड लेऊं निज पद द्विजात: स्वसथान भूमि जो मन सु
हात॥१॥कबित्त॥ बपु बध्यौ तहां बामन बिराट: सुरराज काज तहां कप रथ
: हरि कियौ अहनत पुत्री याकीन: अनदिष्ट चक्र तब सीस छीन: पुनि
आनि लगे कर असुर और: तेई मारि पछारे गेर गेर: पद ऐक सु बपु छि
म आजत: द्वैआदि उतर रहन दिगंत: क्रम त्रितीय भूमि रक चरन की
न: ब्रह्म अंड छिद्र रक उरध कीन: परब्रह्म चरन दरसन जुपाइ: बि
धि करी तहां पूजा बनाइ: पुनीत कमंडल सलिल आनि॰ क्रतग्र रद्य
पादप आप पानि: सो बलेनीर हरि चरन संग: त्रैलोक गमन पाव
न तरंग: तिहि हरि धरन ये गंगावतार: तब तल करन उधार पार:
न्ग गन अतत्नौ अरध पाद: पुनि रहे अरधं तब पूछि राव॥बावना॥
अब नृपति बतावऊ मेर कोर: त्रय पर गत हां पूरन सहोर॥ बलिउ
छितिदई तुम हि बामन बिनीत: मम सीस धरऊं अब पद पुनीत:
बावना॥ नृप रहत अरध पद भूमि सेष: क्यौं होइ सीस पूरन बिसे
षा॥बलिउ॥द्विज भूमि सबै मम सिर अधीन: तुम अरध पद या सदे
हकीन॥कबित्त॥हरि धस्यौ चरन जब चांपि सीस: बलि गये सुतल
दानव अधीस॥बावना॥बलि साधु साधु कहि सुर समाज: तहां करी
सुमन बरषा सकाज: सतु कथ्यौ तहां बामन पुरान: धरि नाम त्रिबिक्र
म बिधान: बलिराज भये मन काज सिध: पुनि करत भये बिन
तीप्रसिध॥बलिउ॥बर देऊ ये हितचित समोर: हरि चरन दर

सबैतरन होय॥ बांह न बाध॥ बलि अस्तलराज न वसुन न होऊ: पुनि ले पु
मांगि जिहिमन हिमोऊ॥ क॥ बे रु॥ बलि नये तहा हरि चरन लीन: क
जो रिस सु षतन भक्ति कीन॥ ब॥ दे॥ बरदेऊ ये देव याचि वै: सबका
लर ऊरत चरन सेव ॥ सु कहे हत कैसनो मकास॰ मैं रहि ये हतव द्वार
मास: तेली सको हिसु रस हत ताम: थरि गहा सु बसि ऊ वारथान: बलि
॥ नथ न्यत वस न बोल: उ बलो सुक स्यो निस चय अनेत: रुहलन
लग्यो होतो हिरन: सो हुल्यो नो हिसु मल समज: मनम व लग्यो समा
साग्र पार: बिसा हि दुरंतन को बिचार: कर तारन पयो पार को र॰
सतवल हिल ही न पछी नि सोर: बिस्वास याते मैं कप रकोन: नहि क
रेसद पिसु मन न मलीन: यह सु तल राज सु सुरस मान: बिरजीवक
ऊ बलि बल नियांन: सुष सम्द्धे न्कौ रहन्यार: सो कर ऊ तो गह
म हैं सो हार: ॥ सो बाना रानीत व बानी कहि रसाल: तुम दे ऊ ले कु
तुम ही दयाल: हता सु पार रहना हि कोर: कीनो सत पयो कर सो सु
होर: बि ऊ बलि पयो बर बिनीत: सो ना पग अमर पद ई पुनीत॥ क
॥ बे॥ यह सत यत सु जन तक तमलीन: हित स्वामि करतम मन्त्र हि
तकीन: दैहरि हिस्रा पक रिऊ कु दाउ॰ न ग बं तत लोक बिचित चाव:
बाह नो बा चा॥ ल तबा मन सु क हि समाधान: ये काछितह पिदुव स
मन ग्यान: स्रुपत न्यात न वसनु वस्मार: न ब ताम अस्तु न कै है सु
नार॥ क॥ बे॥ ब्रहमा दिबिनय कीनो बिसेष: याका सब जे दु
नि अ सेष: सुकरे बिमल लीला बिलास: ब्रहमादि सहत बैकुंठ ब
स॥ न ॥ कस्यो अस्तु अहंद को॰ अरु बलि को उधार: कीनत्र
नय सुर लोक सब: नो बामन अवतार॥ ११॥ जाके को ऊना हि स्र
ताको करतस हाउ: सेवक के सेवक तये॰ नरहर प्रभु हि सुभाव
क॥ बे॥ अदितकु छि अवतार नरेक सिपत्र जे सपति: दिय्य सहे
वरदे वराज॰ लयु ग्रात्य रस हित॰ बढे बिसद बिय रबिराट॰ नि अहि
दैते सुर: कारत बाध सुर काज॰ कस्यो ये काछि असुर पुर॰ ति ऊ पुर
न मात बिख्यात तन॰ ब्रहम वार हु तब र बरन: कारन सो बामन
रूप कीय॰ सदा सुक बिनर हर सरन॥ १॥ इति श्री ...
... न बा ... र ... हर ... बि ... बि ...
... के ना हि ... ॥ बि ॥ उहवित्रिकु रा स्वल स्त सिय स

बजंतसुसंगम· जोजनअयतउतंग· अयतमेषलाअनूपम: महाअंगनयमिल
न· हेमअरुतारलोहमय· उगयसिंधकेमध्य· रतनसुनधातसुसंचय: तरव
र निरंतर फूलफल· बिमलनीर निरझरबहत: गंभीरगुफाचऊओरगिर
सुष निवासरिषवररहत॥१॥ छंदपधरी॥ गंधरबसिधचारनसगोन: मि
लिकरतसुजसमहिमांअमान: बिद्याधरकिंनरगनबिबेक: निजभाव
करतबिहरतअनेक: मिलिगानताननूपरसरूर: प्रतिसबदगुहाऊंक
रपूर: उरगादिजनतआश्रितअपार: सुषलहतजथाबंछितसुदार: कुंभ
रसबदसिंधादिहेत: आरुमजंतपंछीकपोत: निरझरनिझरिबिदिसि
रिलनीर: सुररमनिलहमेजितसरीर: सोजनजुसहजसोगंधसंत·
अमोदप्रसरिदिसिदिसिअंत: मिलिअनिलचलनसोरंतमान: स
बकालसुषदपरबतसथान: परबतसमीपरकबनपुनीत· सोबरन
देवरहकबिनीत: रितवंतसघनबनरुकरसाल: सबकालफलनफूलन
सुढाल:॥ छंदउधोर॥ सरएकतिहिबनमाह· अतिअमलनीरअथाह· म
धरिमनिमयमूल· कनरतनबालककूल· नरकलपबलीयताम: घन
छांहश्रमहरघाम: बनकनककमलबिराज: रबिउदितप्रफुलितराज
चमिनिकरनंगीयनंग: उनमत्तरगअनेग: ऊंकारगुहपनिकूल: नर
भ्रमतअलिरसमूल: तहांलताकुमदनितंत· बकुसुमननिसिबिग
संत· सोगंधसीतसमेय: अतिपवनत्रिबिधिअमेय: मिलितरलतंडव
मोर: चितमत्तचितचकोर: रसहंससारससंग· तहांनीरबिबिधितरं
ग: जलजंतअगनितजाति: सबबसतनांतिनिनांति: चवनक्कचक्कनयांत
मिलिआहतंत्रअमांन: फतकमगमकरकलोल: तरिमीनटोलनिटोल ज
लजरगदादुरजीव· सबबसतआपनीसीव: बनमहिषमउगनराह· अति
प्रबलअनयअथाह: चमरीसुअबमृगचित्र· बनसिंघसरसबिचित्र: ज
बजीवअनअनचाति: नहींजोनितिरजगजाति॥१४॥ कबित॥ द्रबिडदे
ससबिलास· अगरउकंबसतपृथीपर: येरावतीअनूप· पुरीबसिबर
नचारिबर: सबसंपधसंजुकत· निरतनिजकरमनिरंतर: इंद्रदुमनि
महाराज· करतनपधरमधुरंधुर· आपाअषंडजुतदंडजग· देसकोस
चतुरंगदल· भगवंतपरायनमृदगाति· तपतएकरविचक्रतल॥१॥
एकसमयनिसकरम· करतवैठदिभासन· मोनव्रतसंजुकत· नेत्रमि
लितपरायन· लग्योध्यानएकाग्रचित· मनबाचकरमजुत: सिष
सत्रकरतुलसीमाल· रसरूपसांतरत· निसीममिल्योमनपरब्रहम
मिलतनीरज्योंनीरमह· कहीयतजुबतमरदायनकी· जहांसचेतगु

नृपांनतहां॥ २॥ छंद पधरी॥ निजबसतकुलाचलतपनिधान: आयो अ
गसतिसो ईसिषसमान: नहीकस्यौ द्वारपालकनिबेद आयो जु मुनि मुनि
वरसमेध: जिहिं ऐहांकीरतनितकृतराज: अनिवारतआयौ द्विजसमाज
नयो आवनकुलनअर्कसमान: नपध्यानाबसथितनहिनपात: असम
यनहीवंदनअर्घकीन: मुनिनयौअप्रजितमनमलीन: उरबढ्यौक्रोध
रिषराजआनि: आरक्तनेत्रमुखबिषमबानि: अतिक्रोधकंपरोमांच
अंग: परजल्यो अनलजनु घृतप्रसंग:॥ अगसतिबाच॥ मुनिकल्यो न
येनृपमदाअंध: बनकरीमनजैसे बिबंध: नपहो कुंजारहु बनगजबिसा
ल: महअंधरहहिं सगसरबकाल: कबहू न हिताहित नेद कोइ: हम ऐ
कनजकुमर बिबसहोइ: नपलिषोल्हू तनावी निदान: मानीसुदेव
मायाअमान: पुनि उग्रो राजकंपतसरीर: अनसहनआपअंतरअ
धीर: कीयराजतहां बंदनअनेक: बिसतार बिनयबांनी बिबेक॥ इं
द्रउमनि॥ मनुकरकुदंडअथवा असार: मैं नयो धारिसिरअप्रमादि
कृतौध्यांनपरसुषनिद्धान: अहकाजबिअनांहिनगुमान: रिषसि
वतुमहीधरमरीति: अनसमहि आपदे बेगनीति: जोकरीबहे बि
धिअबिधिजानि: सो ईलरीसबेमैंसीसमानि॥ कबित्त॥ दीनमदेषिरि
षनयेद्याल: कीनी अनीतिसो बसौं काल:॥ रिषिउ॥ नृपरहस्यो
हमनिरपराध॥ कबित्त॥ सोनयेलजितमनसमकिसाधा॥ अगसतिउ
समनावकलोकंनजसधीर: बिनुजुगते आपनहरैबीर: कछुकाल
बिते होमहाकाइ: तुमअवसिकुंजरीजोनिआइ: करिहो हरिसमर
नअंतकाल: तद्रूपसुद्धहोति हीकाल॥ कबित्त॥ गवनौं अगसति
देआपअेह: दिनते हीछुट्यौ नृपतिदेह: इथीपनयौ गजअवधिपा
र: सोजनमत्रिकूटाचलसुन्दर: सतपंच कारनिबहुन्नगासंग: मद
मत्तछरितघमलमतंग: संप्रासहुअगजजूथसाथ: निसिदिवसक
रतक्रीडासनाथ: मदगंधलुबधअलिब्ब मतमत्त: गुंजारसबदतरअ
बनरत्त: षटरितिअनेकसुषकरतबेल: मनमथबिलासरतिरमनि
मेल: कमजुकतआरतहांउश्नकाल: जलसुधाअनिलनयेअन
लज्वाल: रितबंतबरनबनसघनछांह: मातंगजूथतिहिरहतमां
ह: जलपानसमयगजजूथजानि: मिलिगये सरोवरत्रिषामा
नि: सबपैगिधिरदअपनेसुन्दार: जलपानकरेसरमध्यजाइ: मि
लिकेलिसलिलआदोलमान: मनुनयौबकुरिसागरमथान:

जलजीव विकल कलपंत जानि: थलपरे आनि पाव हि निथांन: अंतक स
रूपजल ग्राह ऐक: आवरति त्रीय परिजन अनेक: तिहि समय रहे सो से
वत निसंक: बिधि लिषत अंक बस दिवस बंक: जल हलत जानि त्रीय पु
अगाह: जानुल ग्राह जमसो जगाह: इहि भेर उपद्रव होत आज: करुच
लकुअंत सब छोडि काज: सु निअरुन नेत्र रसना सचाल: के पेकृतात
जनु प्रलय काल: जगे जनात अरसात अंग: संचरे अनल मनु अनिल
संग: उचि सोइ देव प्रेरित असंक: अनि थान हि निबिधि लिषत अंक:
दारुन सुग्राह गजराज देषि: बिसतार करे तंना बिसेषि: परलय नाथि
नीयो प्रकास: पसरे जोरतं नाबरुन पास: कृतबध आहतं ताकरूर: सं
अलोराइ मनु दिरदसूर: जब बंध चरन बसन्नयो जानि: अेओ सुग्राह
उरक्रोध आनि: गजतीर नीरदि सिगैनि याकु: बलमत्त होत ज्यों जुथ बा
कु: गज ग्राह होइ देषि गजजूथ गाजि: सबल गेआ निबल बुधि सा जि है
सहस दुकृदि सिकरत दाउ: संग्रलीना थकी नौं सहाउ: गज गिरे ग्राह
आछोर गोम: बसबात पत्र ज्यों भ्रमत ब्योम: प्रति जुध होत गज ग्रा
ह्यूर: उछल हि सलिल नहीं स्फिस्ट्र: मथि देव दनुज गज ग्राह मांन
सुनघी रसिंधु सरन्नये समान: जल उछलि गगन ज्यो मीन जाति: बि
परीत काल बरसे बिस्याति: दिन होत निसा बदि तम दिगंत: बिपरी
तगताग तजल बिहंत: नयनीत नंत जल थलन्नमंत: तनन्नये बीनज
निजु गात: जुत छुधा त्रिषा त्तये दीन जीव: दिन प्रलय थरी सर रुक दरवि
जल बिनन्नयो थल थल निजार: सरनीर उछलि नाहिन समार: ये
नये बर बदस सत्त बितीत: नवन्नूत चराचर सब बसन्नीत: पति बि
थसी कबादे अपार: करि त्रा हि त्रा हि करन पुकार: गिरजंत दिर
द जलन्नंत ग्राह: थकि यद्यत बदत बल जल अथाह: बिनु नद बर
मगज सहस बीत: बलनय नंग उरबद्दी नीत: नवन्नरी जी विग्रं
सासु नंग: अतिबिह बलबारन अंग अंग: झूरे कुरं बबलन्नये छी
न: देबो ज्ञा जे सअतिहीन दीन: गज षेविकरे जल मगन याहि थ
लगत नाहि पग जल अथाहि: करिराज सुजाने अंत काल: सु
धि नयी जन मपूर बसु दाल: अन मगन रह्यो जब सुंडि अंत: सुष्ठि क
मात्र देषत महंत: बहि त्रा हि त्रा हि बारन बिहाल: करतार कर कु
रसा कृपाल: आनंद अश्रु रोम नि उन्नार: करिराज करी हरि हरि

पुकार: सुषसेजसयनकमलासमानं: निज्ञबसहेकरुनानिधान: बैकुंग बिहु
लीलाबिलास: ब्रह्मादिकअगनगम्यबास ॥ कबित ॥ बिषमदीनआधीन
बानि: जवसुनीबिस्वेस्वर आतिअसमयआतुरअनंत: प्रभुउठेदयापर: कर
दहनलीयचक्र: बामकरबसनबिराजित: सोपायेबाहनबिसेषि सैन
देहीनहिल पतमांऊलदजेजनप्रहबि गरुडचलतसेपातिगति: सोरजि
निबीचछाडेसिथल आपुनदोरिदयालआति ॥१॥ कालअलपपथअथ
क: जगतपतिअतरजानीय: प्रेरिअतुरनिजपानि अगरबिसतारप्रमा
नीय: सुदरिसनत्रमतेज दलिजबलहीसिललसिर: हसतबांमसअरी
य: औबिकाडेगजआतुर: करचक्रअहुवसठकीय: कतत्रिलोकजय
जयकरीय: हरिनामलेतगजराजहरि योनरहरत्रतुउधरीया ॥ सवैया
आहअलेबडुकालबलीबलहीननयेजलथाहनपायो: भूतप्रीयापरि
वारनप्रीतम प्रीतिछुरीनयोदेहपरायो: सामसुजानहकारसुन्यैनिज
नामसतंगरिकारलेनायो: आनिअचानकदीरहिबीचछुटेनप्रानगजे
रछुडायो ॥१॥ थिरबासससदासुबिलासथलीसुषहेतकृतेतहाउषसमं
नें: मेगलमत्तमहामदसोकलवारिथसोंतहातत्रबथानें: बालनरत्रि
यलोकबिचत्रसदाउषसोचनसामसयानें: औरलखीबिधिरैरैन
ईगजआहअसोसोईआह्यहानें ॥२॥ अनकेयसदामनबाचअगोत्व
रजानेनबेदबतावाहिजैसे उपहारलेउपकारकरे कृतऊपरकृतसुदे
वहैकेसे: नवनतनिसंकटआनिनयेतहाकारुनरूपधरेप्रभुतेसे उप
कारबिनाबुपकारकरे हरिदीनसोदेवदयालहेऐसे ॥३॥ कबितासि
पदगधगधरब बिसदतनआहमहाबल अवधिअंतलेअनय षेत्रति
हितालबसोषत: नयेस्वक्रहलदेह फेरिअपनोपदपायो: गावतगुनस
रिगीत सहतसुषअहेसिधायो: कृतजनामगंधरबहो: द्विजरिषदेव
लश्रापदीय बहुकालरहेजकरमबस आहजेनितिहितुगहीय ॥
छंदपधरी ॥ हरिगमनअचानकलषिनहेत चिंतवनकरतकमलासचे
त: सुषसयनसमयअबलोसधीर: रहितिनतिउगेकबडुनअधीर: बि
समयमनउपजतबारबार: बडजतातईसमन्रमबिचार: जेरहतनिरं
तरनिकरदास: प्रभुगमनहेतजानिनप्रकास उगियलोसंगआतु
रअनंत: सबमिलेजारहरिपरमसंत: बिधिरुद्रइंद्रदिगपालदेव:
अदेनूतकरमदेषोअजेव: रहिसमयपुहपबरषाअकास: सुरष

जेगगनउँउदितप्रकास·गुनप्रसिधसिधचारनसुगीतः जसपटतबो
निजयजयअजीत·सुरबिबिधिबधूनाटकसगान· गंधरबकरतसुरतानग
न· इनतेहेपलटितयोबिस्नुआप· सबटेरेदुषनयमुकतआप·कुंजचारि
पीतपटतिलकभाल· मनिफटयसुनगउरतुलसीमाल: सुनबरनसो
मअयुधअनंग· सारूपमुकतिमिलिबसोसंग॥२१॥ करिबंदनअसु
दितकसेः ब्रहमादिकसुरसिभः बेदबिदितनबतेअबनि· हरिअवता
रप्रसिध॥१॥ भगतबछलबतमन: असतुनचरितअनंत· दीनाना
थदयालहरि·सबकहिहेसुरसंत॥२॥ सुरसमूहजुतगजसहित: हरि
बपकंगपधारिः नरहरअस्तुगावतनिगम: चरितबिदितजुगचारि
॥३॥ कबित॥ इनदुमनिनपयेक· आपहतनयोसुसिंधुर: बारनब
नसरवरबिसाल· तंत्रआसितनेआतुर· इहिअवसरअनुओनि· बि
षमजलग्राहबिदारयो· तंत्रीजोनिसतरयो: अंतगजराजउधारयो
अषिलेसबिरदकीनेअतुल· जयेप्रसिधजयलोकतुव· कारनसरू
पनरहरसुकबि· हरिप्रसिधअवतारधुव॥१॥ इतिश्री हरिअवता
रगजमोहककबार हट नरहरदासेनबिरचितं॥ अ॥५५॥ क
ओसा॥३॥ अथश्रीहंसाअवतारबरननो॥ कबिरुवाच॥दूहा
॥१॥ येकसमयबिधिलोकबिधि· बेठेसभाबनाइ: सनकादिक
नारदसहित·सबसुतबेठेआइ॥२॥ सकलसभासदबंदनो· करिबे
ठेसबथान: होनलगीतहागोसटी: तत्रग्यानबिग्यान॥३॥ तहानारद
सनकादिसें: कस्योप्रसनसानंद· दियजोनितपसाअतुल· देखिधा
तुतजगबंद॥४॥ तबसनकादिकप्रसनतिहि: करिकरिरहेबिचारि
तदपिनउतरउपजत: नहीपावतनिरधार॥५॥ दीनदिष्टसनका
दितब· चितयेपतिकीओर· ब्रहमारहेबिचारितब: उत्तरलहत
नभोर॥६॥ चिंताबसथितबिधिभये: जगतपितामहनाम: प्रस
नोतरउपजतनही: लघुताकेहेनाम॥६॥ बिधिबाचाछंदपधरी
मुहिदयेपितामहपदमुरारि·चवबेदबानिजसबदनचारि उत्त
रकछुनायोतदपिअंत· उपहासिजगतकेहेअनंत: हरिबिरद
नबंधूदयाल: सबकालकरतसबकीसंभाल: दुषहोतदीनके
दुषीदेव: तबसाधकहतयहपरमभेव· येजहमकरेसमरन
अनंत: करियेसहायममरमाकंत: बिधिकीयनिवेदआतम

बिषाद : परपुरुषकरऊ सिः प्रासाद ॥ कबित्त ॥ उतपति स्वयंत्र
नाथनाथ : बपुधरे हैं सबे कूं रनाथ : माया अजीत इंछा मुरारि : प
ब्रह्म हंस तन हघा बधारि : ब्रह्मादि करे सृजन बनाइ : कारुनानंद
प्रभु हैं सकाइ : जो करे प्रसन्न नारद रिषीस : उतर सो ईदीनो जगद
दीस ॥ १ ॥ दोहा ॥ माया ब्रह्म बिभाग करि : कोटि निरूपन कीन : त्रि
ना निन्न बनारके : नाइस उतर दीन ॥ १ ॥ जेसे छाया देह सों : रहत
निरंतर संग : त्योंही माया ब्रह्म को : देषो प्रगट प्रसंग ॥ २ ॥ ब्रह्म
दिक चीन्हे बिमल : स्वयं ब्रह्म बिसेस : अपने अपने तावजुत : असत
ति करी असेस ॥ ३ ॥ इषारे उपदेस दे : धरि बपु ध्यानिधान : हंस
रूप अवतार हरि : पुनि तये अंतरध्यान ॥ ४ ॥ समाधान कीय दि
जनको : चिंता हरी अपार : कारन रहि नरहर सुकबि : नयो हंस अ
वतार ॥ ५ ॥ इति श्री हंसा अवतार चरित्र नाम बारह टनरह
रदास नबिरचितं ॥ अथ मनंतर अवतार बर्नन ॥ कबित्त
रा ॥ ब्रह्मा के सुत उपजे : सनकादिक तपसिथ : ऋषि करन
आगाद री : बेन रिगये प्रसिथ ॥ १ ॥ तहां बिधि आपो तेग ने :
रोष बढ्यो उरआर : तिहि छिन कुटी न्रकुटि तहां : क्रोधन अंगस
मार ॥ १ ॥ तिहि न्रकुटी पथ रूद्र तेहां : नयो क्रोधमय देह : पंचान
न प्रतिमा सगट : सम अंगुष्ट अरेह ॥ २ ॥ ताही छन तन रूद्र को : बा
टे जथ प्रमान : पित आगे तब जोरि कर : गटे जोग निधान ॥ ३ ॥
आग्या दीनी ब्रह्म तब : सहत बिबेक बिचार : ऋषि उपाजऊ
संतुतम : स्वयं बिबिधि बिसतार ॥ ४ ॥ छंद बेताला ॥ बिपरीत बी
र पिसाच बितर : जूतप्रेत नवावने : बेताल निसचर बिकर ष
चर : इस हरूप उरावने : जा जुलम जइजमा तिज हांतहां : ज
गत अनहित जांनिये : माया अनेक सुमान सीयह रुद्र अछि
प्रमानिये : जीय हतक जो वर पाप संजुत : कपट जुध बऊ ब
पुकरे : बिस्वास घात अमाप बिग्रह : बिस्वद्रोही बिसतरे :
बेल सकर पद बदन बांणी : रंग आकृत आंन सी : पलपि
सत रुधिर सरीर पोषक : मिलन उतपति मानसी : सो देषि
ब्रह्म अछिसि नव : नय त्रिसत बिाकुलनय : सुरसिथ जोग

नतातापस: अतुरब्रह्मापहगये: नवअष्टिकरमचयित्रनयजुत: ब्रह
मचकिथकिसेरहे: बिधिबोलिरुद्रहिकेलेअपनी: अष्टिपूरनकी
जीये: सुरसियसाधिकब्रह्मअष्टिहिं: अनयदानसुदीजीये: न
वरुद्रबचनप्रमानपितुको: कस्योअपनेंअहगये: तहानयेब्रह्म
चित्रसंत्रम: महातपसाधतनये: कछुकालसाधीउग्रतपस्या: ग
गनबानीतहांनरी: करिहेहनोतनतनऊजीरन: देवयहआगादई
बिधिकस्योबियहद्वितीयततछन: द्विधापहलोतननयो: निहिं
देहहहनगतेनेब: मनुस्वयंभू निरमयो: असावतारउदारत्र
स्तुत: प्रथममनुतिईतिये: बिष्यातबुधिबलअतुलबिक्रम जग
तउपदारकजये: बिधिअरधनागजुसेषबियह: अखिलमविये
अनुसरी: तिहितनईगुनसीलसंजुत: सतरूपासुंदरी: अखि
लेसतिछमीअंसउपजे उत्तयबरबरनीजये: अतिकरबिमल
बिबाहउछव: देबिसुरमुनिमनरये: पतिस्वयंभूमनुप्रीयापु
वन: सतरूपासुंदरी: मैथुनीअष्टिअमेयमहिमां: बिसदतनते
बिसतरी: तहास्वयंभूमनुपारपदवी: करनअष्टिमांनये: सु
तनयदैअरुतीनकंन्यां: परमधरमनिधानये: प्रथमप्रीयब्र
तपुत्रलघु: उत्तानपादअनूप: देविकूतिप्रसूतिअरु: आकूति
अतुलितरूप: नवअष्टिजुतपिसाचनिरनय: करतअतिउपात
ब्रह्मअष्टिसनीतनाजत: बोजिषेजिसुषात: यहसुनीब्रह्म
अनीतिअतिसय: चिंतबहुचिंताकरे: देतिलकचामरछत्र
मनुतहां: स्वयंभूअधपतिकरे: तेलगेषानपिसाचमनुकहं
निकसिकहुअगपातगो: कररणइसुमेरकीतहां: महातपसा
धनलगो: कछुकालबीतदयालकेसब: अगरतहादरसनदये
तिहिंगिरस्वायंभूतहांमनु: बिष्नुसोंयहबीनयो: प्रभुस्वरगअरू
रलेकभेंते: करअरहातांबने: तुमअनंतअजेयअस्तुत: जो
गहितकृतकारने: बरदयोबिष्नुप्रसन्नमनुकहं: भिरदाउ
मकरो: स्वरगकोहंमजतनकरिहें: चित्रचिंतामतिधरो॥
॥ स्वायंभूमनुकेहृदयो: मनबंछितबरदान: दीनाना
थदयालपुनि: हरिनयेअंतरध्यान॥१॥मनुआयेनुवलोक
फिरि: करतनयेसुषराज: अतुलिततेजप्रतापअति: सह

[illegible] कछुअअवतार [illegible]

[illegible] धरवि वीतमनुयेजये : अपनी अपनी बार

[illegible] अजथा प्रकार ॥१५॥ बैवस्वतमनु तातवो

[illegible] अरुमाता संग्या जई : पुहवी प्रसिध प्रकास

[illegible] : श्रीबामन अवतार : तीन परग कृत मे

[illegible] ॥१७॥ बैवसत मनु इन्द्र जुत : बरतमान सं

[illegible] मनु बास अवतार ॥१८॥ मनु साव

[illegible] : बिवसान तेई पिता : सो पे संग्या मात

[illegible] जानिबो : अरु बलि नामा [illegible] हैं

[illegible] ॥२०॥ नवम दक्ष सावर्णि मनु : पि

[illegible] नामात [illegible] पति : पंडित कहत

[illegible] सावर्णि मनु : उपलोक पितु नाहि : इन्द्र

[illegible] प्रसिध [illegible] ॥२२॥ नाम धरम स

[illegible] पिता [illegible] बसु बिदित धर

मसे तअवतार॥२३॥मनुजबक्षे हैं रुद्रसम:रुद्रसावर्णिसनाम:
देवनुमताकोपिता·इंद्रनामरितुधाम॥२४॥रुद्रकबेरमूजादके
बिबिधिधरमबिसतार:नामसुधामातिहिसमय: प्रभु ह्वैहैं अ
वतार॥२५॥मनुजबक्षे हैं त्रयोदसम·देवहोतपितुजानि·इंद्रदि
वसपितुतासमय:रविअवतारप्रमानि॥२६॥बरनइंद्रसाचत्र
दसम: अहैं सेनतिहितात:श्रुतिसुचिनामातिहिसमय: ह्वैहैंबि
स्वबिष्यात॥२७॥द्विजसुरनीमषदीनके·करिहैंजतनअपार:सु
नियतह्वैहैंतिहिसमय:ब्रहदभानंअवतार॥२८॥कलिनाआपने
अपनेंसमय·बिहततपतेजराजबल:धरमनीतिदिनलोक
करतरहामहिमंडल:तिहिप्रसादमषलाग·सकलनिरभयसुषप
वत·आपआपनेंकाज·लोकलोकेसचलावत:बिसतारअष्टबिधि
निरबिघन·जिनअनेककुरजनजये·कहिसमझननरहरसुकबि
मनंतरअवतारयो॥१॥इतिश्रीचतुरदसममनंतरअव॥तार
चरित्रनामास पूर्ण बार हरनरहरदासेनबिरचितं॥ अथश्री
धनंतरअवतारबरननं॥ कबिरुवाच॥दोहा॥आमयषकारक
अखिल:धनंतरअवतार:तंत्रमंत्रओषधससत्र:रचेचारउपव
रा॥१॥छंदपधरी॥इनुदेवउनयबलअप्रमान:मिलिकरेउगथ
सागरमथांन:उछलेफेनकनकअकास:तेनयेरोगप्रथीप्रक
स:जगबातपित्र·कफउतकजंत:इत्यादिअगटआमयअनंत·बि
सोतबआगमगपानचेत:हरिजानिबिस्वयेनासहेत:परब्रह्ममलले
रोगनिप्रताप:नवनूतहेतकृतदयाभाव:तेजमयपुरुषइकप्र
गटिनाम:कनककुंभसुधापूरितसकाम:बपुस्यामपीतबासनबि
साल:कमलाइतलोचनतिलकभाल:कुंडलकिरीटमनिमयप्र
कास:कचकुंचितसोभितअसितनास:अतिसुंदरआकृतबिसुत्र
स·सबअंगचिन्हसोभावतेस:तेजमयधनंतरिनामतास:बिष्प
तबेदबिद्याबिलास:नाटिकाकालओष्यगिनान:बसबरतरोग
नासकबिधान:आमयबिनासकीनेंअपार:प्रगटेसुग्रंथबिस्वो
पकार·सुनतंत्रमंत्रओषधसुतार:बिधिससत्रक्रियादीनीब
ताइ:पुनिधातकरममूलीप्रचार:कीनेप्रचारजगपरूपकार
परब्रह्ममनयेप्रथीप्रकास:निजनामधनंतरिरोगनास:दीने
बतारयेततदव:नावनासिधबिस्वासभाव:निरलोचनबेदरहि

बो निदान: सो ईस फल न होत बैदिक बिदान: करि दया जीव उपदेस की
न: जगदीस तये पुनि जो तिलीन:॥ दूहा॥ नर हर प्रभु रहि हेतसो:
धनंतर अवतार: तिहि प्रसाद तयरेगतें: सब निरतय संसार॥॥ इति
॥ श्री पंच ह दसम॥ श्री धनंतर अवतार॥ चरित्र लछन
नामा बार ह रतन दह ह रासेन॥ बिरचित॥ अथ श्री परसराम अ
वतार॥ बर्नन॥ कबि रुवाच॥ छंद पधरी॥ द्विजराम सुन अ
वतार हेत: कृत करम उग्र तिहि धरम सेत: कुस तये न्रपति रक्स
मवंस: सुत तयो कुसिक पुहमी प्रसंस: तिह करे महा तप पुत्र काम:
सुत होइ समर्थ रम धाम: यह कथा सुनी जब इंद्र आप: तप बिघन कर
नको अतिसि ताप: कीने सुरेस उर मिअ सेस: तप भंग होत ना हि नि
रेस: सुरराज गये तब गुर निकेत: ह उ कहे सकल तप भंग हेत॥ इं
द्र बाच॥ करि जतन बिघन बहु तें जु कीन: न्रप रहत निरंतर ध्यान
लीन॥ गुर बाच॥ गुर कहे सो इंद्र सो धर ध्यान: मिलि न्रप हि कर उमै
त्री समान: छिट तप निहारित बर्द्धवराज: कुसक सों करी मैत्री सकाज:
इंद्र बाच॥ कुसक सों का कयह प्रसन कीन: कोमन काक वन तप रत
जु लीन॥ राजो बाच॥ निरधार कसो उत्र नरेस: सुत हो कृपा निमेरै
सुरेस॥ इंद्र बाच दूहा॥ तप पूरन करि राजतव: सुष भोगव कुस
रीर: मम अंस अवतार सुत: तेरै ह्वै है धीर॥१॥ कबि रु॥ यों कहि इं
द्र स्व स्थान गे: राज आयो ग्रेह: रस बिलास सुष राज के: जुग
त सहत सनेह॥२॥ अवधि पाइ सुत ऊपज्यो: राजा गाधि पुनीत: त्रै
सन्य पोसुर राजको: बिद्या नीति बिनीति॥३॥ कन्या उपजी गाधि के
सत्यवती यह नाम: सुंदरता सो जास हत: समगुन लछन धाम॥४
ब्रह्मा के सुत भृगु तयो: सुक्र तयो भृगु ग्रेह: रिषरिचीक ताके त
यो: महा तेज बल देह॥५॥ रिषरिचीक न्रप गाधि की: कन्या जा
चन कीन: राजक सो रिषराज सो: कुऊं इत आधीन॥६॥ गाधि ब
चा॥ हयस हस्र ससि क्रांति तन: स्याम करन सुत रूप: इत समर पे
आनि मुहि: कन्या बरो अनूप॥७॥ मैं यह लीनो एक ब्रत: सो मि
थ्या नही होइ: जो यह पन पूरन करै: सत्यवती पति सो इ॥८॥
कबि रु॥ तब रिचीक गये बरुन पहि: हय जाचन ता कीन: स्या
वकरन लछन सहत: हयस हस्र तहा दीन॥९॥ आनि दये हय

गाधिकहे: कीनोबचनप्रमान: सत्यवतीसंकलपकरि: दीनीकंनादान
॥१०॥मुनिहृतकेमांगिनोनिग्रहे: लैआयेनिजग्रेह: करमचारग्रहस्थके
निवसतसहितसनेह॥११॥सत्यवतीअनपुत्रता: कछुकोकालबितीत
औरसुषनरनारसों: बिनयोपरमबिनीत॥१२॥सत्यवतीकीमाततबु
आयेअपुत्राजानि: जाचेनांजामात्रसों: पुत्रीसुषहिअमांगि॥१३॥पुत्रहे
तत्रीयसासुके कीनोजग्यबिधान: मषप्रसादसुनिमंत्रजुत: हेचरक
रेसमान॥१४॥छंदपधरी॥चरनयेसपूरनमंत्रजोग: रिषप्रेमजुक
तकीनेमयेग: त्रीयहेतकरचोजोचरसुतंत्र: तिहिब्रह्मसकतिमेल
सुमंत्र: सक्षनिमंतचरकृतसतेज: तिहिछत्रसकतिदीयफुतेज:
चरनयेसिधपूरनप्रभाव: सोसांनउअसंजुतसुभाउ॥ रिचीकउ॥
संध्यासनानसरितासनेम: रिषकलेजानपरब्रह्मप्रेम: मुनिआरस
देखचरपुनीत: बिधिजुक्तहोउतुमफुबिनीत॥ कबिरुबाचायो
कहिरिचीकगयेनिसकाज: सानंदसरितसंजुतसमाज: रिषरहेक
लकछुसरिततीर: आतुरसुभाबत्रीयनईअधीर: पुनिपुत्रमनोरथ
सिधपार: अबासमेतमषसालआर॥ दूहा॥ सत्यवतीकीमाततबु
कीनोचितबिचार: सुनिजकरचोनिजत्रीयनिमित: यामहकछुअधि
कारा॥१॥सत्यवतीकेनिमितचरु: कीनोउतोरिषेस: मातासोचरुअ
पले: कीनोतहबिसेस॥२॥मेपरलोचरपुत्रिका: नहनकरचोसमू
ल: बिधिकेअंकनअनिष्या: नाबीटरेनमूल॥३॥करिआयेरिषमुनि
सफुन: चरनहीपायेथांन: सत्यवतीसोंतिहिसमय: पूछतनयेनि
दांन॥४॥प्रीयादयोतवप्रीयकों: उतरप्रेमप्रसिध: नहकरेहमजग्य
चरु: होफुमनोरथसिध॥५॥छंदपधरी॥ततकालगरनयितनई
संताप: मुनित्रीयाकष्टउपजेअमाप॥६॥सत्यवतीउअबहीमोहि
उपजेकष्टअपार: सुनगरनतहेलपूरनसुनार॥ रिचीक॥ कहि
बिप्रनईबिपरीतकार: कल्यानहेतनहीकष्टकोइ॥सत्यवती॥
चरकरचोबिपरजयहमअचेत: त्रीयजातिनिजानैहितकुहेत
रिचीकबाच॥ तवहोइत्राबिसातिकसुनार: अतिघोरकरमम
नहोतआर॥सत्यवतीउ॥नरनाहिकसोअतिसनयुनाज: सु
तघोरकरममोहिकोनकाज॥रिचीक॥ प्रीयदयोबचनर
नीप्रसिध: सुतहोतसंतस्वाजावसिध: तवपोत्रजरपिन्नउ

लगु बीत : है रउ अघोर करम अनीत :॥ कवित्त॥ सुनि मंत्र उदिक पा
यो प्रकास : त्रीय सोत रूप लोग रंग तास : नये पुत्र अंश वधि परम तप लहे :
जमदग्नि महा सातिक सुनार : राजा एक रेनुक धरम धाम : पुत्रिका तास
रेनुका नाम : उभय ग्य नि रेष हि सो ईद ईस रांन : रेनुका बेद संजुत बिधा
न : तिहि लाई गरल छिन सभय पार : द्विज बंस तद पिट्र लेन सुनार : द
समास बीत नये जलनम देव : अवतार हर सधारन अंजव : रहि का
लु हछु त्रीय अनीत : जुवकरी नार पीड नसनीत : अवतार रीस तिहि
समय आर : श्री परसराम उर बीर हार : बिधि जुकत करी सेवा बिसेष :
सिव ईई धनुर बिद्या असेष : तसन्नास सत्र ब्रह्म बिद्या समान अध्य
यन सिध पाई प्रमान : तप करे परस थर गंग तीर : सातिक सुभाव बेर्स
धीर : जमदग्नि अगनि होत्री द्विजात : प्रति दिवस करत कृत समय प्रा
तै : रेनुका नित सपति ब्रत नेम : पर कलस नीर आनत सप्रेम : एक दि
वस अहि गंधरब राज : सुर सरित बिबि यि केल्या समाज : तिहि नाम प
द्म माली प्रसिध : संजुत बिलास सुष सकल सिध : बंधान राग बा
जित बिबेक : अपछरा करत नाटक अनेक : अवगाहि गंग जल अंग
अंग : मिलि करत मन ऊझी उमंग : तिहि समय रेनका नीर आइ : गं
धरब देषि सब सुष सुनार : मन चकित करत चित नैन मूल : सुष
त्याज हरि सान कूल : बसुधा हि पेऊ दे हवांन : इक देह धरति भ
ऊ अंपान : सेठ यव सत्र सज्यान सेन : चित नैं मकरम जुत नहि नैवे
न : ताछ्ल रतन छषन न तेल : अगार न हि न सुष समय बेल : न
पग्रे जन मन मथ थापार : ब्रत नियम तप हिजे है बिहार : मन सो
चेरे न का करमा हि : निस बीर कलस जल रहत नाहि : पर पात्र नी
रन ही चलत पेषि : तय बीत हेत बिसमय बिसेषि : जब काल अंत विथ
क्रम जयो जोति : पुनि आरसो हत बरिक तपोति : जुगह सतजो रिप
ति अयजार॥ रिषु बाच॥ कहा नीर कलै लरत सुनार :॥ रेणुका
पर पात्र आज आवेन आप : मह कलस के हो त्रानै अमाप॥ कवि
त॥ त्रीय बचन सुनत तप मन नये अग्र : पति ध्यान दिष्ट कारन सुप
र : गंधरब देषि सपति समाज : रहि चित अनागी चले आज : बि
न चार नाव तिहि उप निबांम : मुनि करे रोष च पर सुत ताम॥ रहा
ब सुमन अदि सुपे च सुत : पितत ब लोनें टेरि॥ जम दग्न उमसत

ककार कुमात के: उतरे ऊनफेरि॥३॥ पुत्र बाच। तब पांचऊ पुत्र निबंधन: फ
रिकहेउ परेर: ऐसे पाप पग्र क्रमयह: हमपं हलात नहोर॥ कबिरुवाच
परसरामतिहि छिनसुतप: करनसुरसुरीतीर: सुनिजमदग्निसकोपमन
बोलिलये रनधीर॥५॥ पितानग नहारुन प्रकृति: आये परसउत्तारि:
पितुदीनी आग्या प्रगट: मातभ्रात तब मारि॥६॥ कांटे सीस कुमारकरि फेरि न
पूछी बात: पृथी ललतार तपरे: पांचऊ भ्रात अरु मात॥७॥ जमदग्नमउ। तब्ये
प्रसन्न रिषि जमदग्नि: कीनी आग्या सिध: जो कछु इच्छा चित्त मह: मांगउ
पुत्र प्रसिध॥८॥ परसरांमउवाच॥ जोरिकलाकर परसधर: क्रोधा
धीन अनुआप: जननी सोदर जीउगे: मुहि न लगे बधपाप॥ कबिरुवा तह
जिवाये मृतक तब: ब्रहमतेज रिषिराज: मांनकुसे वलसेउगे: करतन
येग्रहकाज॥ परसरांमउवाच॥ फेरि केलौ न हा परसधर: मेरे नियम
अनंग: कबऊ जननी जनककी: करिऊ आग्या भंग॥९॥ जननी छिन्न
मन्नविउत: उपजे बैराग्य पार: कबऊ आग्या देर मुहि: तुमहि सो निरु
धार॥१०॥ तुम तो देवी सकति करि: सबै जिवाये आज: इन पह जो तुमन
जीयो: सबके होइ अकाज॥११॥ माते जुकतन निकर तुम: अंतरहिहों
जार: होइ प्रयोजन मोहि लग: लीजऊ बेग बुलाइ॥ कबिरुवाच। येकहि
कीन्हो राम तब: आश्रम गंगा तीर: तप वृत संजम नियम जुत: करतन
येतहाधीर॥१३॥ हेहय बंस प्रसिध मंह: जो राजा तिहि बार: नामसह
आरजुन नृप: बिद्याबल बिसतार॥१४॥ दत्तात्रय आराध कीय: पुर
बंदन करि सीस: सेवा है हयराज सो: प्रसन्न भये जगदीस॥१५॥ तिहि बि
घाग्रानीप्रकी: दीनी सक्ति बिसेस: तातें जल थल गगन पथ: पाये न
पति प्रवेस॥१६॥ रिपु कर समर अजेयता: उवदिसि हाथ हजार: जो
गसकति अघरतिअथा: पाये एक ही बार॥१७॥ केनारेनक नृपतिकी: म
हीहेयहराज: परम प्रीय पुर रागनी: सो नासील समाज॥ छंदपधरी॥
इकद्योस प्रबल हेहय नरेस: बनगहन चल्यो मृगया बिसेस: बनित
जुसंग सजुत बिबेक: धो करत उचित क्रीडा अनेक: थलजल बिहारपु
बनसथान: कंदरा बिबिधि निरउर निधांन: सरवरनि बिमल पंकज बि
कास: बनकुसम त्रिबिधि मारुति सुबास: गंधरब करत संगीत गा
सुरसरसतान बाजित्र बिधांन: रित रित बिलास बे नव बिसेष: उ
बअनेग बिलसत असेष: सेना समूह चतुरंग संग: अनेक सुभट जे
रित

लगु नीत: होइउ अघोर करम अनीत: ।। कवित्त ।। सु निमंत्र उदिकाप
यो अकास: श्रीय सात रूप लोग रन तास: नये पुत्र अवधि परमान पाइ:
जमदग्नि महा सातिक सुनार: रजा रक रेनुक धरम धाम: पुत्रिका तास
रेनुका नाम: जमदग्नि रिषि हि सो ईर्ष्या दान: रेनुका बेद संजुत बिधा
न: तिहि नईगर लछिन समय पार: द्विज बंस तद पिदारुन सुनार: द
समास बीत नये जनम देव: अवतार अरसधारन अजेव: इहि का
लु गुष्ठ श्रीय अनीत: जुव करी नार पीउ तसनीत: अवतरे ईस तिहि
समय आर: श्री परसराम उर भो सहार: बिधि जुकत करी सेवा बिसेष
सिव देई धनुर बिद्या असेष: सस्त्रास सस्त्र ब्रह्म बिद्या समान अध्य
यन सिष पाई प्रमान: नृप करे परस धर गंग तीर: सातिक सुभाव बेअ
धीर: जमदग्नि अगनिहोत्री द्विजात: प्रति दिवस करत क्रत समय प्रा
तैं: रेनुका निस पति ब्रत नेम: पर कलस नीर आनत सप्रेम: इक दि
वस अद्भुग धरब राज: सुरसरित बिबिधि केला समाज: तिहि नाम प
दमसाली प्रसिध: संजुत बिलास सुष सकल सिध: बंधान राग बा
जित बिबेक: अपछरा करत नाटक अनेक: अवगाहं गंगजल अंग
अंग: मिलि करत मन रुकी उमंग: इहि समय रेनका नीर आइ: ग
धरब देषि सब सुष सुनाइ: मन चकित करत चिंतन मूल: सुष
तहां जहां हरि सानकूल: बसुधा है ऐ कद द्वान: इक देह धरति हम
रुअ प्रान: सेवक घबस तसन ज्ञान सेन: चित नैंम करम जुत नाहि नेवे
न: ताबूल रतन भूषन न तेल: अंगार नहि न सुष समय षेल: नृ
प अंजन महम वृथा पार: व्रत नियम तप हि जे हैं बिहार: मन सो
चिर नक करे माहि: निस बीर कलस जल रहत नाहि: पर पात्र न
रन हीचलत पेषि: नय त्तीत होत बिसमय बिसेषि: जब काल अतिथ
क्रम नये जानि: पुनि आइ अहे लवरि कत पानि: जु गहस तजो रिप
ति अयजार।। रिष बाच।। कहा नीर कलेंल तर तासु नार:।। रेणुक
पर पात्र आज आवेन आप: मृद कलस कहा आनेअ माप।। कवि
त्त।। श्रीय बचन सुनत तत्रम नये अोर: पति ध्यान दिष्ट कारन सुष
इ: गंधरब देषि सपति समाज: इहि चित अनागी चलेआज: बि
नचार नव तिहि उप जि बाम: मुनि करे रोष चव पर तनाम।। दो
बसु मनअ दिजु पंच सुत: पित नब लोनेंटे राज महदग्नि मसत

ककारकुमातकी: उतरे कुनफेरि॥१३॥पुत्र बाच।तबपान्कुपुत्रनिबचन:फे
रिकह्योउघरोर: ग्रैसेपपग्रक्रमयह: हमपैहतोतनहोर॥१कबिरुवाच॥
परसरामतिह्छिनसुतप: करतसुरसुरीतीर: सुनिजमदग्निसकोपमन
बोलिलयेरनधीर॥५॥पितानगत्नदारुनप्रकृति: अथेपरसउत्तारि
पितुदीनीग्राग्याग्रगर: मातन्रातनबमारि॥६॥काटसीसकुगरकरि फेरिन
पूछीबात: श्रथीतललेरतपरे: पांचत्रातग्रसमात॥७॥जमदग्नउ॥न्ये
प्रसनरिष्ठजमदग्नि: कीनीग्राग्यासिध: जोकछुरंछात्विग्रमह: मोयकु
पुत्रप्रसिध॥६॥ परसरामबाच॥जोरिकलीकरपरसधर: द्वेग्र
धीनजुग्राप: जननीसोदरजीउठें: मुहिनिलगेबधपाप॥कबिरुवाच
जिवायेमृतकतब: ब्रह्मतेजरिषिराज: मानकुसेवनसेउठे: करतन
येग्रह्काज॥ परसरामबाच॥ फेरिकह्योतहापरसधर: मेरेनियम
ग्रभंग: कबकुजननीजनककी: करिकुग्राग्याभंग॥६जननीछिन
मन्तुविजुत: उपजेबेरग्रपार: कबकुग्राग्यादेहमुहि: तुमहिहेनिर
धार॥१०तुमतोदेवीसकतिकरि:सबैजिवायेग्राज: इनपहजोतुमन
जीये: सबकेहोहग्रकाज॥११॥तातेजुकतननिकटतुम: ग्रंतरहिहो
जार: होइप्रयोजनमोहिलग: लीजकुबेगबुलाइ॥ कबिरुवाचकहि
कीनेरामतब: ग्राश्रमगंगातीर: तपव्रतसंजमनियमजुत: करतन
येतहाधीर॥१२॥हैहयबंसप्रसिधमंह: जोराजातिहिबार: नामसहं
स्रारजुननृप: बिद्याबलबिसतार॥१४॥दत्तात्रयग्राराधकीय: पद
बंदनकरिसीस: सेवाहेहयराजसो: प्रसनत्रयेजगदीस॥१५॥तिहिबि
घग्रानीबकी: दीनीसहतबिसेस: तातेजलथलगगनपथ: पायोन
पतिप्रवेस॥१६॥ रिपुकरसमरुग्रजेयता: उबदिसिहाथहजार: जो
गसकतिग्रघटतिग्रीया: पायेएकहीबार॥१७॥कंमारैनकनृपतिकी: ना
हीहेयहराज: परमप्रीयपटरागनी: सोत्रासीलसमाज॥ छंदपधरी॥
इकद्योसप्रबलहैयनरेस: बनगहनचल्योमृगीयाबिसेस: बनित
जुसंगसेजुतबिबेक: योंकरतउचितक्रीडाग्रनेक: थलजलबिहारपर
बनसथान: कंदराबिबिधिनिरभरनिधान: सरवरनिबिमलपंकजबि
कास: बनकुसमत्रिबिधिमारुतिसुबास: गंधरबकरतसंगीतगान
सुरसरसतानबाजित्रबिधान: रितरितबिलासबेनवबिसेष उदन्
वग्रनंगबिलसतग्रसेष: सेनासमूह्चतुरंगसंग: ग्रनेकसुभटजोधा
ग्रभंग: मृगीयाबिलाससंजुतसधीर: तिहिसमयग्रायसुरसरितती

र: जमदग्नि करत तहां तप द्विजात : बन बिमल तपोधन जग बिष्यात :
चवदेल सिथित रानी रुराज ; देष्यो मुनि आश्रम बन बिराज ॥ रो॥३॥ थ
लरम्य देषि रानी सथान : यह कलो कलिको नृपनिधान ॥ राजोवाच ॥ नृप
उष्ट ताव उतर संदीन : अहंकार तरक्क मनमलीन : रहो बसत तिह
री बहुन आज : मिति चलहु देषि नृप लि समाज ॥ कबिरुवाच ॥ दू॰॥ से
ना कूरे रोषित व : आय गये मुनि आश्रम : मिले परस पर मोद मन : संजुत रि
तु हिसनेह॥१॥ द्विज बिहित प्रसंन मन : परन कुटी बैगारि : कीनें प्रसनोत
र कुसल : बिबिधि सप्रेम बिचारि॥२॥ सुनत्र तरीहै हय नृपति : आप ज
चन कीन : यह मुनि रिषपत नीत बै : मन नम हन्त्य मलीन॥३॥ केरिक
लोत हां जमदग्नि : रोष कुधरम हमार : बन फल तोजन जल बिमल : क
रियें अंगीकार॥४॥ अहो आये अतिथ क्रम : जो न करे अहवान : धरम बिप
रजय होरत व : तुम सब जानसयांन॥५॥ राजोवाच ॥ नृपति कलोक
छु हासि जुत : बचन कहहु कतफेरि : मेरे सेन अनंत विहे : रिष देषउ दियहे
रि॥६॥ रिषि उवाच ॥ महपुरी माहि बमती : जिनके राज सथान : तिनके
आचिरज कोन नृप : जो दल मिलि अप्रमान ॥ कबिरुवाच ॥ तब राज
रिष राज सों : कीनों बचन प्रमान : सरितातर पर अहकरि : नृप गय
म प्पसथांन॥७॥ कामधेन जमदग्नि के : ह्वै बप्पमती यह नाम : प
रनसाष लपि नृप जिथात : देय सु बंछित कांम॥८॥ दीय तो जन अ
सन बिबिधि : हेहय राज बुलाइ : सो सामंत सुसेन नव : सु बियहे
बेरे आरांणा॥ छंद पधरी॥ इछा सु करे तोजन अनेक : मिष्टांन पा
न बिजन बिबेक : मृगमद कपूर तांबूल तेल : सुन मेरजसयन सो
गंधमेल : नरी इछा पूरन तोति नाति : षल नृपति बदी लहां बिचरपा
ति : नृप जयो महा आचिरज निदांन : उलि पूछि सबै सेवक सुजा
न॥ नृप बाच॥ तिहाल कवन देष्यो सुनाइ : इछा मन ज हो तब
तनु आइ ॥ सेवका॥ देषी रकांन हम नृप दयाल : इक सुरती बै
धी परन साल : कहियत बहु हरि षके कामगाव : यह सिय सबै त
को प्रभाव॥ नृप उ॥ मंत्राधिप तिन सों कहि महीस : यह सुरत्नि
का जजा चकु रिषीस॥ मंत्री उ॥ तब सचिव कलो जो नृप रिसा
इ॥ नृप उ॥ नृप कलो तनो लीज्यो छिनाइ॥ कबिरु॥ प्रतु व
ले जबै मुनि बिदा पाइ : सो धेन सचिव जाची सुनाइ॥ रिषिबाच॥

होईस्वर तुम हयगय अनेक: अहमेरे बंछियां आहियेक: अहिअनसस्विसे
देउगार: प्रति दिवसु पीयनजलदरस पार॥ मंत्रीवाच॥ सोक सोस विंव
रपसों सुनार: गहिरेतन हिनअमरग निगारु॥ कबित्त॥ बलकरषिरि
षि हिदैमहरेस: लेगये धेन हेहयनरेस: रिषराम रामकहिकी पुकार:
धरिकोप सुआये परसुधार:॥ परसराम॥ तुमबोलो कारन कवन
तात: सोक ऊमो हिजो बिषमबात॥ कबित्त॥ कतसुनेतु छछत्रीजुकी
ने: नगुर्वस तिलकत हारोस नीन: मेष लाअ जिनमो जोसमान: बैषम
कुमार कर धनुरबान: जटितिलकदरत उपवीतजोग: तुवतार उतारन
हित नेग: जुतब्रहमचर्ज उरकोध ज्वाल: क्रमजो एगु कुचिमनु प्रलयका
ल: आवरत बातच लिअसहमान: नतरेनरूयसूकेनतान: नाषित्र दिव
सउल मुकनिहारि: चदिगगन अथपंछी प्रचारि: पलचारन षीकुलमिलि
अपार: सबद्दारमानधावत सुदार: बेताल बीर मिलि प्रेत वंद: उरबद्रो भे
हानुगनिअनंद: हेहयदलदेषत असुचहेत: बिपरीत निमत चलावि
चलचेत: उरबिकासि सूर अंतर अनंद: बिसमो हपरेकातर निरंद:
पुरधसनराज हेहयप्रबीन: द्विजराम घष्टित हाहाकरीन: सुनिबचन
फिल्यो संग्राम सूर: करसहससजे आयुधकरूर: मिलि नयो महान
रथ नयान: उमगे सबीर मनु आसमान: रहिओर परसधरएक आप:
दससससउतहि षोहनिसदाप: मुषमार मारकै ग्रामसूर: सोरसोसब
र ब्रहमंड पूर: रकपरतसूरयारन अनंद: उछिउरिकबंधरकतिर
तआर: दलचाल नूमि नयकालदीस: हयबरमतंग मिलिगरजहि
स: दिगदंतनीत दिगपाल कोल: कसमसतिकम गनहीरहलकोल
कगमगत अचल थिरचरउदास: पुनिपवनगवनबिथक्यो प्रकास
करसहससछेदिकरकसकुमार: सिरकाटिराम सेनासंघार: मिलि
मांसओनकर्दमम हीस: दिनप्रलयकारथिरचरनदीस: सतरत्र
होहनिपरेसूर: प्रभुहेत सिधपो रूपसपूर: बसओनलि मरनन्द
बिहार: करउरथघोरधाराकुमार: थितअयकामयनाअनीत:
जुधअजिरबिराजितअरिअजीत: रहिरूपदेषिब्रहमादिआर:
सुतकरीपुहपअरषासुनार: बागीसु बिबुधजयजयबिसेस:
सानंद बजे दुंदुभि सुरेस: निःसंकमारि हेहयनरेस: पुरपरसरा
मकीनो प्रवेस: जयपाइमहासंग्रामजीत: पितदई आनि धेनपुनी

त: तपकरनगयेगिरिरामतांम: करिनियमकरुंनेंग्रकाम ॥ दुहा ॥ सहसात्र
रजनकेसुवन: मो पितु बयरसंनारि। दिनकछु बीतेंउ छत: बदिकुकरम
बिचारा ॥१॥ कोपेहेहयराजके: सुतआयेदल साजि: ततछंनआश्र
मगंगतर: बेढ्यो लि लिगजबाजि ॥२॥ छंद पधरी ॥ जमदगनिनियमजु
त ध्यांनजाप: इहिसमय करतबेंग्रमाप। चष मुद्रित मिलि परब्रह्मचे
त: आनेंदमगन उधारहेत: इतमोंनजुकतबरजितबिबाद: मुनिबे
ठेंग्रसमयअप्रमाद: अनसमयउ छत्री अनीत: जमदगनिकुंतेन
सकोधजीत: हाहंतसबदरिषयेहहोइ: रेनकासहत सबउठेरोइ:
सुनिउग्रहद्दनतबरामदेव: अतिबेगतहांआयेअजेव। सुनिछित्र
करम दारुनउरंत: तहारामनियमलीनेंतुरंत: षलरुधिरपूरितरनी
बिष्यात: तिहिपेंरितिलंजुलिदेंउतात। संकलपकस्योसुरनरप्रसि
ध: सोईजामदगनिसंग्रामसिध। देंअगनिदाहपितुकीयाकाज: सबक
रुंअनुजमिलिकुसलसाज: देंआग्याबंधुनिरामदेव। उगिकलेंआ
पसायुधअजेव: हीयनयोकठिनआयुधप्रहार: तिहिकरनतिषध
राकुठार ॥ दुहा ॥ रामआरम्भाहिंषमती: कहेजुबचनकराल: पुत्रसुहेहयर
जके: आनिनिरेततकाल ॥१॥ छंद पधरी ॥ संग्रामनयोदारुनसकोप
रनबीरजुरेतहपेंजरोप: मचिमारपरसपरअतिअमांन: नाराचनयोज
तलनयान: द्विजराम हते रिपुसुवनदोइ: सामंतसूरसेनासमोइ: मारे
असेषिछत्रीअमोन: रनभरेरुधिरनिरझरनिवांन: तिहिपेंगिकस्योतरप
नसुतात: बिसतरीलेकनयनियमबात: मसतकनिअछिकीयपुरीमां
हिं: जगजीवदेषिनयत्रिसतजाहि: इहिंनातिसोधिउरबीअनीत
निरमूलकरेछत्रीअनीत: नयकेंपेंअनलनयेगरनआव: आंकूरछेदि
सततिअनाव: इकवीसबेरदेउसहदाव: नवकरीनिछत्रीबेरनोव: दी
नेंलेबिप्रनिउदिकदान: नमीसनोम थितरजथान: प्रतिजुधरुधिरत
रपनप्रकार: धरिकोपबेर हितपरसधार: इहिंनो तिदईलेंअमाप: पृ
थीसगमारीलोनपाप: परसकरकरोबिप्रनबिरोध। इकवीसबारषो
ईअबोध: इकसमयमिलेछत्रीयअसेष: बदिबिप्रनिसोंबियहबि
सेष: धरपरसकुतेकउध्यांनलीन: कतसुनेंबकुरिछत्रिजुकीन: आतु
रआनीततबरामआर: संग्रामरच्योदारुनसुनाइ: बिपरीतबीरकू
उबिसेष: दिवदेवचकिततनयेचरितदेषि: द्विजरामदीपअरिस

लन्कआर॰ अनसबिपरेधारेनअधार॰ पलचारग्रीधआहारपार॰ सबन्नये वि
प्रनअपनैसुनार॰ कुरखेतन्हमिसेश्रामकीन॰ तहांचलीश्रीनसरितानवीन॰
नरिरामकुडरुधिरनिनयीन॰ परसधरपेष्किंबलिश्रमीन॰ तिहिरुधिरक
रेतरपनपुनीत॰ बिप्रनवापत्रयपुरबिनीत॰ इहिसमयपितजमदग
निआर॰ सबपितरनुकतसातिकसुनार॰ श्रहमादिदेवमुनिगनविसेष
हानविलासपित्रनगतदेषि॰ सुतनदईसुमनवरषाअकास॰ सुरसिधस
बदजयजयसहास॥ पितरवाचा॥ नयेपितापितरसंनुहतात्र॰ सुतहेहु
अबेसातिकसुनाव॰ करियेनिवरतक्रोधाकराल॰ सुषनयेहमहिमिटिबैर
माल॥ प.र स रा म॥ परसधरकलेपितसोसप्रीत॰ रिषजाननहेतुम
धरमरीति॰ रनबद्धोमेंहितुमहिंथोरोष॰ सेवबनदेहुसंजुतसंतोष॥
कबित॥ पितकरीपुत्रकाचप्रमान॰ अरुकहेअहिंसाकृतबिधान॰ अ
तिरोषजदपिसुतहेअसेष॰ अनुसरहुअहिंसाधरमएक॥ पिता उ॥
सुतधन्यधन्यपारषसुनाव॰ तपकरहुबिगतक्रोधवैरभाव॥ कबित॥ भ
सुरपितरगयेस्वसथानसंग॰ परसधरकहतपोरूपप्रसंग॰ अतिआतु
रआयेरहीकाल॰ छिजरामद्विजनयेस्योदयाल॰ रसहुदिसिजाचतबि
प्रदीन॰ अनुपरसरामबोलेप्रबीन॰ अन्वारुधिरबेरारकीस॥ परस
रा म॥ छिनदईतुमहिहतिहतिक्षितीस॰ दिगअतलहोतुमपथीदान॰ नि
जअसंतोषसोईगईनिदान॰ थरिबिप्रआपआपहिबिरोध॰ इकबीसबे
रषोईअबोध॥ कबित॥ सवसतिसमयद्विजमहासूर॰ महिमाप्रसिध
महि॰ रनहिरीकुप्रधान॰ करमजुतमरमनिगमकहि॰ बिषमपरसप
रबेर॰ उतीयसुषदेषिमहदुष॰ असहमानउतंकर्म॰ आनमिलिहोतम
लिनसुष॰ तिहिनालिनिष्टथीजोग्यतुम॰ निहापररहिउदरस्तर॰ द्वि
जरामकसेयहद्विजनसों॰ अनुतातदृषिबिरोधपर॥ कबित॥ १२॥
थोकहिरामसुसातमन॰ बिरतिचलेबनवास॰ बैरबिरोधबिहारसब
प्रनदयाप्रकास॥ १॥ कबित॥ परसरामपृथीपवित्र॰ परिक्रमनप्र
कासीय॰ पुनिकालतीरथप्रसिध॰ कमनेमजुकतकीय॰ संतनाव
अनुसरीय॰ दयादीआपतिदीनीय॰ मनबचकरमबिसुध॰ बुधिकरु
नारसनीनीय॰ बनगहनमहिंद्राचलबिमल॰ सरितानटआश्रमसु
षद॰ निसब्रहमचर्यसजुतनियम॰ अनुसाधतचिरजीवपद॥ २॥

ब्रह्मबंसअवतरन: दुष्टछत्रीयकुलदारुन: जगतिलक जगपवित्र कृस
नाजिनधारन: दरनसोजमेषला धनुषतुनीरबिसषधर: धाराधरकु
र। बिषमबिस्वेसबिहनबर अवतरनसरनबर जितअनंत जगरहित
रनीयबिजत: तपकरतअतुल त्रैलोकपति धावतसुरउधारहित:
॥११॥ ब्रह्मअरूपपरब्रह्म धस्यो निजदेहधरमहित मातबंधुपितब
चन तनत उपाप अलेपित करमछत्रि द्विजदेह ब्रह्मचारीब्रतध
रीय: कीयनिछत्रि रकवीसबार भुवनारउतारीय: कृतचरितकहन
रहसुकबि बिमलकित्ति जगबिथरीय: त्रयलोकनाथरउकुल
तिलक कारनयह अवतारकीय॥१२॥ इति श्रीपरसरामअवतार
बर्ति त्रसपूरन॥ नाभाबार ह्टनुरहरदास नंबिरचित ग्रंथश्री
बेदग्रंथमासअवतार बर्नन॥ कल्किबाच॥ दोहा॥ मंद्रिकेतगंध
रबरक: प्रीयामंद्रिकानाम: ब्रह्मश्रापहनकरमबस: सफरमिथन
नएनाम॥१॥ गंधरबोवाच॥ श्रापसमयद्विजसोंत्रीया: कसोंब
चनयहरोइ: लीनोसीसचढाहम: श्रापमोक्षिकबहोइ॥२॥ द्विज
बाच॥ सफरीबीरजमनुजतनि: पुत्रीगरततिवास: तबेमिथुनतुम
जालपति: पचनतहतुअकास॥३॥ कन्यानिकसे उदरतब: रहेसुडोव
रयेह: तबतुमपावहुआपपद: फिरिगंधरबोदेह॥४॥ मंद्रिकउबाक
ह्यो बचनयौं मंद्रिका: डोबरनीवसुनाव तातेजोकन्याकरे कोउकर
मकुनाव॥५॥ सोफलपुरुषेमातपित: यहजानतसबकोइ: ताहम
केसेपदलहे श्रापमोक्षिक्यौंहोइ॥६॥ द्विजबाच॥ फिरिकह्यो द्विजप्र
सनह्वै नकरहुसोचबिचार: सोकन्यानपरअहगत करिहै धरमप्र
कार॥७॥ देहतजीगंधरबतब मीननयेजलमाह करतबिहारजु
करमबस जमुनापुलिनप्रवाह॥८॥ बसुनामकोउकबस्यो: गिरक
बोमानाम: पितआपानतकालभौ: बनआपेबिलास॥९॥ ताकीबा
मारतिसमय सुकस्रोदयोसंदेस: मृगीयाजेतनकरचढ्यो: हीउ
सकतबिसेस॥१०॥ नलिकाबीरजमेलितहों सोदीनसुकहाथ का
जसफलसुकफिरिचल्यो मारगगगनसनाथ॥११॥ तरनिसुताकेम
ध्यतर: जबसुकनिकस्योआनि: मछताकताबवत रूपटयो बी
चसिचानि॥१२॥ तहानलिकाअधमुषभई: बीर्यगिस्योजलबीच

गथरची सफरी गिली: जबनी यरानी मीन्व॥१॥ तिहिगरन्तथित कंनि-
का: मछगंधा सुजरूप: लिपिलिलए परनारे, जो बिधि लिषी अनूप॥२॥
माछी नसे मालत हो: मीन मिथन परिबेध: सुषु दुबन्तु गते जे विसम: सबही क
रम सबेधा॥३॥ छंदपधरी॥ माछी ले आये सफरगेह: लैस सत्र बिरालो उदर
देह: तब निकसी कंन्या अतिअनूप: सब अंग अंग सुंदर सरूप: य हदे षित्र
संवत बालऐक: उतपन्न तये अब्रिज अनेक: वह कुल अपुत्र कर्म निमूरे
सो पोषि पुत्रिका करि सुदार: सब देह मछ सोरं न सुतार: मछगंधा नाम सो
कहार: अति सुंदर अतुलित रूप अंग: अरु जतम नकुसेन अनंग: पितनाम
समारन समय प्रात: मछगंधा रूप नतन समात: इहि समय परासुर पाउ
धारि: यह नांउ मोफ कंन्या निहारि॥ रिष बाचा॥ दिष्ठे रि नाव जलमों फु
गरि: उ रिमांछनि मोहि सरिता उतारि॥ मछगंधा उ॥ हिज छल कवि
लंब कुरहो देव: षिन आवत पुरुष कर हि षेव:॥ व्यास उ॥ अवकास-
बिलंबन मोहि आज: करिबो आवसिक बेगकाज॥ कंन्या बाच॥ मन ताप
सकल पहि आस मांनि: वहि आगे कीनी नाव आनि: बेगे महरिषि नौका
बिसाल: तिहि कीनो षेवा तात काल: सुंदरी देषि कंन्या सरूप: जोबनारू
ढ मनमथ जरूप: मुनि जरी तवे मन मथ मार: उस हन बान निकसे उसा
र, बहु बयो रिष हि का मेर्स्वेव्य: प्रीय बचन करे कंन्या सबोय॥ न्या
स बाच॥ मारत अनंग रहि समय मोहि: तिहि ता क्यो सुंदरी सरन तोहि:
रति दान देहु न दृषित रंग: रकवि जकु करत बाधा अनंग॥ कंन्या बाच॥
तब कहो मीन गंध सुता हि: इक कंन्या अरु दिवस आहि: यह उचि
त नाहि करम हि कुअंक: कंन्या विनसि चढ़ि है कलंक॥ रिष बाच॥ रि
षनि मुष कुहर कीनो बिथार: आकास तये दिग अंधकार: मुनि कि लोत
जफुरहि दीप मोहि: तब काल रहे उनत अपतेति हि॥ कवि रु॥ कुलला
ज जरदषि पितमान कांनि: जीय करी अपत्य उसहजो नि: कंन्या न दीउ
त्तर फेरि कीन: दिज राम तहा रति दांन दीन॥ रिष बाचा॥ प्रीय बचन प
रासुर ये पसन: मांग फु बनिता बर रंछ मन॥ कंन्या बाचा॥ कंन्या तर.
है जो निनको इ: दुरगंध न से निध्यान होइ॥ रिषि बाचा पसरे सुगंध
जोजन प्रमांनि: तुव जो जन गंध्यानाम जांनि: बिनता बिसेष बेन वबि
साल: कंन्या न र हो तुव सरंब काल: इह गरन्त थर उर हि दीप आज:
फलैस फल हो उ मरस्छ काज॥ कवि रु॥ त्रिनमासि पर न आछ।

दितीय: धरि जु जनहा सोगई थाम उपजे सुराम बरन सुंदर सरीर : सो जानम
न उठि गो सथीर : लघु लिय साथ सातिक सु नार : परपुरुषम हादेवतप्र
ताव: अपकरे सुफलकजु बेबिनाम : आरथ अनंत अनंतकाम : बिनु अस
नपानबास न बिहीन : निस्प्रदंत देपोरुष नवीन : अतिसहे कष्ट पटलि
गतंग : उतपन सियतरा अंग अंग : यह पुरुष ब्रह्म अंसावतार : सुप्रस
नतये हरिकीयसंसार : इकदिवस आनि हरि दरस दीन : पर ब्रह्म अपि
लक निज अंस लीन ॥ नग वानी बाच ॥ बिष्णु नराक सो बर मांगि आस जि
हिकाज लयो बन गहन बास ॥ व्यास उवाच ॥ करतार जानि जबसानकुल मे
हि देकुवेद बिद्या सम्हल : रिषि पुत्रकम्मे राजाधिराज : यह मांगत हो व
रदान आज ॥ श्री नग वा नु वा ॥ परब्रह्म कलानि हरासि प्रबीन : कलजु
ग मबतन पउपजीन : बरने कु बि बिधि सुष नेगव्यास : बिसतार राज केन
व बिलास ॥ व्यास उ ॥ सुथ संपति मेरे यहै सन्तेव : दीजै दयाल देवाधि
देव ॥ नग वानी ॥ द्विज दीनों इछादान देषि : व्यास स्व बिस्व कहि है बिसे
षि : तब वेद चारि बानी बिलास : पूरन पुरान करि हो प्रकास ॥ कबिरा
रह्ं ॥ बर बंछित दे व्यास कहं : सदा स राइक संत : नगत बिछलति छि
न तये : अंतरध्यान अनंत ॥ कबित ॥ धरम निरूपन कह्यो महा ना
रथ अनुष्ट्राभो : वेद बिनाग बिचार रि पूर बिमंडल राष्यो : वेद व्या
स बिख्यात कम कै पारन करयौ : तीन नवन तप सिध लोक अमरप
द लहीयौ : कृतकि तिकहीनर हर सुकबि अपसकति मतु अनुसये :
अवतार अंस अपिलेस को व्यास नाम जग बिसतस्यो ॥ इति श्री बेद
व्यास अवतार चरित्र संपूरन ॥ गोपाला र हट नरहरदास न बिरचि
तं ॥ अ ॥ ॥ श्री राम जयति ॥ अथ श्री रघुना
थ श्री राम अवतार बालकांड बरनन ॥ गण्पा ॥ कबित्त छंद ॥
आरंभे अग्र सा बदन सिंदूर अरुन बिथरयं ॥ बाहन अष्टु बि चत्रा बरद
न बुधि लंबोदरं ॥१॥ स्वेत गिर बास सु कला ॥ स्वेत बसन अय बिमल स
सि बदनी ॥ हंसरथ बीना हसता ॥ सद बिद्या दान सरस्वती ॥२॥ मू
लसकतिम हमाया ॥ ज्वालानन जो तिजा लपा ॥ नगर कोटि निवा
सं ॥ जगजे ताव द्विज गजननी ॥३॥ सहस कर सम हास : उदित अमु
र नास तम अषिल : अति मांग्र के यपुरुषं : नय हंता देव नास करं :

सिद्ध सक्ति सर्वे यं॥ वृषतको वाहनविछावने हैतेमरिष विषहूँ चाको नासक्रोधके निके नहे आसी विषस्थ यनतथन विषविधुनाल मगलतिलक सर्वमंगलासहेत हैं विषय बिन सबे विषरहत विमे हीरत स्तलञ्जो कपालसहिसंपनिसमेत है दृषे धोञ्ज नतनत नत नोथरैके पलनजेरीझे मृसनोमा निअस्तेन पददेत हैं॥१॥ जोरेस्तु तिजा तनवनो गरेदेने तोरही लो तोरी गोरी नवाकेसमान नारीयतु है॥ रतिहीसार अञ्जो बिरनसे बिसेषरत आरत पुकारमुनिके उधारीयतु है॥ तपकी पवित्रताई तेज की अतुलताई यनकी पवित्रताई पारधारीयतु है॥ कासीनाथ कासी सवकासी क्रनहेत ने कहासी नजे वासी ते विसासी नारीयतु है॥२॥ कवित॥ जराजूटसिरगंग चंद्रसेषर चषकुतवह गरलकंठञहिहार मूंडमाल विपतमह डवरूसूलकपाल पानिधुवानभ कासित वपुविभूतिअवधूत सियगजचरम सवासित वामगसिव वाहनवृषभ जयतिजयतिसंकरअमर रघुनाथचरितकथा नहित सुमति देहु ग्राहकसमर॥१॥ अथस्वयंभू मनुतपसाधनं॥ कविस॥ दूहा॥ जाह्न बलकिमुनिस्कसमयं उत्तानंदसहास नारदजसोय हकथा कहीजुप्रेमप्रकास॥१॥ कवित्त॥ स्वयंभूमनुसमप्रपार तपसाधनकिने पतिवरतासपुनीत सतरूपासंगलिन्हे॥ जहानैमषारुण्य परमपावनथलपायो धेनमतीसरितासतीर मनुध्यानलगायो तबद्वादसअक्षरमंत्रतह जपतनिरन्तरसमनुरगति मनदंपतिमहासंतोषमिलि नेरमूलपत्रवनुगति॥१॥ पुनिछोडेफलमूल पत्रजुगछुधासुजिसीय एकवारिआधार बरषषटसहसजुबितीय बरषतहस्रकछोडिबारि बातासनकिन्हो अयुतबरषरहिनिराहार तजिपवनसुदिन्हो स्कपायरहे गहेअवनि असथिमात्रअवसेषतन सेईउअजोगमंतुमथयो मिलिसमकार कबाचमन॥२॥ तदपिनसरयाधरत रहतरतध्यानिनिरंतर अनंत देषितापसअस्नन्न प्रभुनयेदयापर बिमलहेतआकासबाति मनुमागिमांगिमुष सुनतसपुष्ठसरीर नयेसबरोमरोमसुष आनंदमगनमनुउचस्यो प्रभुनुभदातापरमपद सिवकाकसुसनिजुउरबसन सोहोदरसनदीजेसुषदा॥३॥ छप्पय॥ जगहे तजगतपतिजगनिकास श्रीरामरूपवैदनिप्रकास मुनसपामदेहनीरदसमान परि

थोन पीत बिद्युत प्रमान: रतनमय कनक कूषन रसाल: मकराकृत कुंडल
मुकतमाल: कटि पीन सिंघ तन कसि निषंग: आरंत बिस्व जेता अनंग: मार
गबाम कर निमत सोह: मिलि रहे नयाम तबिसषमो है: सुन आदि
कति बांमो ग संग: अवलोकि उ दित सुभ अंग अंग: यह रूप देषि सरति
उदार: मनु करे दंडवत नमसकार ॥ श्री हरि बोच ॥ हरि लये बांह थ
रि मनु उठार: बर लेहु हेत जिहि लपे आर ॥ मनु बाच ॥ मनु कों देव क्रम
सरे काज: सब नये मनोरथ सफल आज: करजोरि कृपा सो सार मूकंत
अभिलाष एक अवर अनंत ॥ श्री हरि ॥ हरि कहे लेत बेकरि परमहेत
मनु मांगहु सो इछा समेत ॥ मनु बाच ॥ दो० ॥ स्वायंभू मनु तिहि समय
अगर कहे बर पाइ: तुम सो मेरे पुत्र होइ: तिहि हित लेउ लगाइ ॥ श्री
हरि ॥ पुनि हरि कहे प्रसन ह्वै: सत रूपा सो यहु: जो अभिलाष वि
तमर: तुम हु मागि सु लेहु ॥ सति रूपा उवाच ॥ मम मन्त रता मांगो जु बर
सोई हु मोग तदेव: दीनानाथ दयाल तुम: जानत अंतर नेव ॥ श्री
हरि बाच ॥ तब हरि परम प्रसन ह्वै: दीय बंछित बर दान: ऐसे ही के
हे अवास: मनु की जे परमान ॥ कबि बाच ॥ दे दयाल देवाधि देव बर
दान दयो तब: कछुक काल मनु परद बिसाल: सुष करहु तापस
व: अवधि पार अ बैथस: अगर ह्वै है पृथीपति: तब तव ग्रह अवत
र: आंनि लेहु नर आकृत: तिहि समय जे ग्रमाया अजित: बैर ही के
है बिमल: मनु कर हुय है निरधारमन: तब है हो हि साधन सफल ॥
इति स्वायंभू मनु बर लब्ध प्रसंग ॥ अथ रावन जन्म
म बरनन ॥ कबि बाच ॥ दो० ॥ अब रावन पूरब जनम: सुनहु
था कै म साथ: द्विज सराप है तजो नृपति: ग्रावुर त्नय अ साथ
केकेना मादेस एक: कूतल बस तग्रनील: सत्य केतु राजा नृ
राज करै त्रिभु नीता ॥१॥ ताके पुत्र प्रसिध द्वै: नये बिस्व बिष्यात: जे
ठे भान प्रताप यहु: अरिमर्दन लघु भ्रात ॥२॥ सत्य केतु नृप ब
नो: राज पुत्र कहं दीन: बिमल चित बैराग्य जुत: बन तप सथ व
त लीन ॥३॥ भान प्रताप सु नृपति ने: आसमु द्र अवनीस अल
चि: नीति निपुन निसंक: दरी जित निरतो तअगति: ऐकसा [illegible]

तत्रैक॥५॥छंद पधरी॥ इक समय राज दल बल हि साजि : करि मंत्र चंद्र
दिग विजय काजि : अनेक सत्रु मारे संग्राम : नि:भे पलये थल थरा धाम ·
दिग अंत करी आज्ञा अनेक · नरी का मुख एथी न चेक : कुतम [illegible]
प हो मकीन : निस हो तं पुनि निस वयन वीन : आये रच्यो नृप ऐक काल
जनजंत विविधि संग सुनट जाल : आरू मजी विमारे अमान : विंध्यान
लव न वाज ननि सान : पहले इक आसुर काल केत : परताप जान सा [illegible]
चेत · सत पुत्र असुर दस बंधु तास : सो मारि लिये तिन्हा संग्राम · पुत बंधु निरस
नास मेत : कर मीजत नाग्यो काल केत : बनमीजर हे आसुर विसेष जासम
या करे अनेक वेष · अरबी जिहि हे आसुर अमान : नृपो आबन न हा परत
प जान · सो नये असुर सूकर सरूप : उविचल्यो असुर आगम नृप · नृप
लग्यो पीछि सूकर निहारि · संधान बान धनु पसंचारि : दुरिजात निकट
रसे दुरंत · इहि नाती करे माया अनंत : नृप पंणकु आपको उसंसागन नाहि : मु
ल्यो बराह बन गहन माहि : थलन त्यौ विवर पर बत आहि : बन पाइवि
वर गत नो बराह : देख्यो पद चिन्ह सुविवर द्वार : नृप ति त्योगर तु रंगम
नि हारि : तहान यो त्रिषातुर स्वरूप तास : नहीं पयो पीजन जलनिवास ·
नुवली नीछी निप्रताप न्यांन : नृप गयो नाजि इक त्रास मांनि : वनक्रम
नत हउत स्यो विचारि · मुनयसे नक उरहि सकत नृप : निपत्रे पत्र फल
हक पर रूप : नृपनान तास तप पलनि हारि : वनक्रमत न हांउन स्यों वि
चारि : मुनि कप रबेघबे गे महंत : नृप करिर दंपिके नयन नत : नस नंत
सोन बीन्हो नि दंत : गति परी वि पति न यो उद्यत : नृप नर्लपिउं
क्यों ति हि निरेस : उरवथु रतना वउ पस्यो विसेस : [illegible] नांन कंना मंज निपंत
उर त्रिषानो हि उपजो अनंत · इक परी दीनो जल बनाइ : पीनो [illegible]
अत पाइ : नृप आयो कि ति कंपरी नि वस्य : [illegible]
[illegible]

गिअनुहरसपाइ: सबभांतिकृतारथभेसुनाइ: तहांकसोतंनकजोरि
नास: प्रभुअपुनकोकहीयेप्रकास॥ कविरुवाच॥ अवनीसयसो
बिस्वासएक: यहकपटबातमिलवेंअनेक: छत्रीयनरेसजुतकपटसत्रु
तिहिजरतनेत्रनपदेषितत्र॥ कपटी॥ कपटीनबबोलोकपटलीन:
रूनिरधनमहकथानहीन: तउचीन्हतनाहिनृपततास: बसभयो
मोनमायाबिलास॥ नृपउवाच॥ करजोरिसोनपुनित्रनिनकीन: तुम
बीतरागबिधीयाबिहीन: तवकहहुनामकरिकृपानाथ: हितजुक
तसीसममधुरकुहाथ॥ कपटी॥ बसभयोसत्रुजानौंबिसेष: बा
चाहेबोलोकपटबेष: जनसंगनयतपध्यानजाइ: रहिहौंतोतिरसो
येकांतआइ: जोमनप्रसन्नतुवनृगतिनाव: राषिहौनहीतोसोंदुरा
व: ममनामएकतनसुनहुमूल: तनदेषतहूंसबब्रह्मतूल॥ राज
उवाच॥ पुनिनृपतिसोनपूछेनिपाप: रहिनामअरथमुहिकहहुआ
प॥ कपटीउवाच॥ यहअषिलसृष्टिउपजीअनादि: तहिसमयभयोमम
जनमआदि: नसिरोनयोनहीफेरिदेहु: येकतननामकोअरथयेहु: त
पतेकछुदुरलभनाहितात: सिधांतकहतयहसाधसंत: बिधिभयेसृष्टि
करताबिधान: प्रतिपालबिस्नुहूथीप्रमान: तिहिबिस्वबिनासकसिवबिष्या
त: तपबलअगम्यकछुनाहितात: आजनमकरेमैंतपअपार: जितन्
येप्रबलमायाप्रचार॥ कविरुवाच॥ उतपत्तिप्रलयबातेंअसेष: व
सकरयोनानकहिकहिबिसेष॥ कपटीउवाच॥ नृपलगेप्रकासनआप
नाम: तिहिबीचबोलिकपटीसताम: अबलौंदुरावकीनेंअपान: नृप
पतितुम्आहिप्रतापभान: तववपिताभयेनृपसत्यकेत: कृत्रिकालग
गुरकृपाहेत: पुरुषनहीकरतनिजगुनप्रकास: अनगम्यलसोनितवअफ
स: अभिलाषचित्रनृपमांगिआज: करिहौंसबतेसफलकाज॥ नृप
उवाच॥ नृपतोनकलोनबयहबिहोन: प्रभुमांगतहोंअभिलाषमोन
अरिकरिअजेयअरुअजरअंग: समरजितअमरहुबरहतसंग: नि:कंट
कएकहित्रनाथ: सतकलपराजनृपगतोसनाथ॥ कपटीकहित
थाअस्तकपटीकरूर: सबहोहैबिछिनकाजसूर: बसभेरजगहो
नरहिदरक: येरहिअजितनपबलअरोक: जोहोहिबिप्रवव
सनरेस: तोब्रह्मबिसुतुमहीमहेस: निस्चयद्विजआपहिहोइ
नास: बिधिहरिहरकृतबनहीबिनास: केबानपरेषहत्तुगेकौन

नृप मरन तब हितेरो निदांन ॥ राजोवाच ॥ निरण अनवपु जो नृपति त्रानै: व
स होहि बिप्र कहिये बिधान ॥ कपटी ॥ इनै बस कारक बउ उपाउ: सो पे दुरं
तु साथि दाउ ॥ राजोवाच ॥ प्रभु करौ वह साधन प्रसार: बस होहि विप्र
जेहि निरविस्तार ॥ कपटी वाच ॥ रियक सो फेरि तव कपट रूप: तो जन
सकत है बिप्र रूप: करौ मा कबिधि जुकत वाति: आपन पुरस व उरा
ज आनि: सो करहि बिप्र तो जन प्रहास: बस होहि नियत मानउ बिस्वास
रके आति कठिन सुति बनी आहि: मन तर्क बितर्क निपट्यो नाहि: आ
जन मसु नऊ निसचिय नरेस: मैं करे नाहि पतन प्रवेस: तु वनगरगये
बिनु सर बतंत्र: किहिं नाति होहि साधन सुमंत्र ॥ राजोवाच मुनि सुन
ऊ बेद मरजाद मूल: तजि बेअंगी क्रमल युन थूल: सिष धूम कूट त्रिन नी
रफेन: सिर लीये बहुत जोंधर निरेन: करयु सो मोहि तुम दया कीन: निरव
हसबे तुम ही अधीन ॥ कपटी ॥ करिये जु गुप्त साधन सकाम: तव होरसि
धिसो री तंत्र ताम हो रमात न रूप तुम चल ऊ गेह: द्विज लहू निमंत्रण
जा रहे ऊ: परजंत मास झूह सस प्रेम: नित नित हि जिमावऊ सहत नेम
सम होम कहिले द्विज समूल: सुर होहि तव हितु हितानुकूल: सुनि गुप्त ब
त रक नृप सहास: रहि रूप न आऊ तक अवास: याते मोहि उपजी बुधि ए
क: यह होइ सिध साधन अनेक: आदि कुल परोहित तव जु आहि: नृप
बल ले आऊ रहा ताहि: तव हे कमे रो रूप तास: करि करूप वाके
प्रकास: कआऊ मो हित रूप होर: करतर हि मम चीन्हें न हिन कोर:
परजंत वरष तव रकै पास: करि ऊ रूप वाको प्रकास: कआऊ प्रो
हित रूप होर: करतर हि मम चीन्हें न हिन कोर: परजंत वरष तव रकै
पास: प्रोहित हि रहरा पौ प्रकास: साधन मो हि दुरल न नहिं सार
का रिज तुव करि ऊ रहि प्रकार: आज तें तुमहिं दिन त्रितीय आति: प्रो
हित सरूप मिलि ऊ प्रमाति: पहचानि मोहि बात नि प्रकास: ये कांत
को लिलीज ऊ प्रवास: निरधार कर ऊ नृप तुव निकेत: तप बल पुहुचे
कहय समेत: अव से परही अब निसाआर: सुष सयन नृपति कस्थि
सुहार: नथये ट पीन मृगीया न मंत: तहा निद्र बस नृप ऊ बहुरंत:
क बिरुवाच ॥ कपटी को मित्र जु कालकेत: निसचर न व आये सु
नि निकेत: जो नथ्यो बिसद रा हु सवराह: छल छिद्र पारकी नो उ
छाह: सुत बंधु वय परराह सम संनारि: चित कपटी मिलि नृप वध बि
चारि ॥ कालकेतवाच ॥ कहि कालकेत यों कपटकार: बयस

सत्रउचितनांहिन बिचार: जोहीन तन पिनृप छि त्रिजाति॥ ग्रति लघुक
रिगनियेनही ग्ररति: सीरषा बिसे बजोरऊ सत्र: तउकरत ग्रहन ससि
स्रतत्र: निह्चेसुष ही होइ सत्रुनास: सु निश्चै मन मेरे सांबकास: निर
म्मल सत्रु कुल करि निसेष: बा सुरचतुरथ मिलिहैं बिसेषि॥ कपट
बोच॥ कहिकालकेतसो कपट रूप: जब होऊ बिजय तब ग्रसुर नृ
प॥ कबित्त॥ करि माया राक्षस कालकेत: मेल्यो नृप मंदिर हय समेत:
रानी ढिग सयन कराइ राज: बिचि बाजिसाल बांध्यो सु बाजि: सो ग्रा
नि पुरोहित ग्रह समीप: ग्राकरषि द्विज हि लै गयो ग्राप: तहां करी नृ
त माया ग्रनूत: धरि बेष पुरोहित ग्राप धूत: तहां दयो ग्रापनो रूप त
हि: करि गदसु राष्यो कंदराहि: कृत ताको रूप जु कालकेत: तिहि से
ज सयन कीय सुष समेत: निसि कछु कसेष जाग्यो नृपाल: जीय ग्रह
ग्रपन बिलोकि काल: उठि ग्राहरि ग्रायो नृप ग्रगार: ते ही हय चढि बन
नयो जात: काननहीं जाम्यो यह प्रकार: दिन मध्य ग्राइ फिरि जहार:
करि सनान सुनग मेत्रा धिकार: सिंघासन बेगे नृसुढार: कमजुकत दे बि
सपति ग्रनेक: कृत सना बिसरजन जुत बिबेक: त्रय दिवस तहां जुग
सम बितीत: पुनि नयो सनाथित नृप पुनीत: मुनि कपट सु महि मोल
गो मोह: बसन यो नृप निमाया बिमोह: प्रतिमा जु पुरोहित ग्रसुर रू
प: रहि समय ग्रा निरीयरस ग्राप: नृप नमस्कार कीय सहित ने
म: ग्रो हित नहा ग्रासिबरीय सप्रेम: उठि जान तबै ऐकांत ग्राप: ग्रो ह
तसरूप लीय बोलि पाप: नृप तहां करे संकलप नेम: पूजा द्विज तो ज
नल सप्रेम: ग्राएा नृप प्रोहत दरी यहै: दिन लख निमंत्रन द्विजन
देऊ: तावी सु प्रबल नृप लहत ग्यान: ग्रारंत ग्रान कछु होइ ग्रान: ग्रो
हित नृप सासन जबहि पाइ: सकुटुंब बिप्र निमंते सुजाइ: मोयाप्रपंच बिधि
बिधि बनाइ: कीय पाक ग्रसुर धरि बिप्र काइ: दस सम न दिन ते जन सु देस
ग्रनेक स्वाद बिंजन बिसेस: पसु मांस बिबिधि राधे प्रकार: तिन मांऊ बिप्र
ग्रामिष ग्रपार: जब नरी रसोई सिध जानि: द्रुत बिप्र निमंत्रत मिले ग्रानि
नृप न्हान सबिधि द्विज पद पषारि: बेग रित बैपे कति बिचारि: ग्रपर स
नृपति गदे प्रबीन: परुसार पाक ग्राये प्रबीन: रहि बीच तब ई ग्राकास
बानि: हैं तो जन कीने धरम हानि: बिप्राम षरी ये रुबनाइ: जो ब्र
ह्म न षेसो नरक जाइ: यह सुनत बिप्र ऊगे रिसाइ: बस तांवी नृप हिं
बचन ग्राइ॥ द्विज वाच॥ बिप्र निसरापदी नों बिसेस: सकुटुंब होऊ
राक्षस नरेस: तदे वमास तब होऊ तदु: पुनि करऊ पाप रघुपति छे

कवरष मांऊ तवनासहार: कंदातरहुऊ जिनवंसकोर: पापिष्टकरेहत्
रविप्र: अनुत्तये धरमरहकसु छिप्र: नपरलोऊपो सोकछुनजानि·
नेरथारनरी फिरि गगन बानि ॥ आकास बानी ॥ निरदोष नृपति नि
स्वंयनिपाप: अपराध बिना द्विजदयो आप:॥ कबिरुवस्व ॥ जो बिस
मयसुनतप्रतापनान: नगिरा देवईछा निदान: अननीतपाकमदिर
हिआर: नहीं ओहिलपाकेन पात्रपर: कारन बिप्रनिसेषगुरकोन: सुर
छगनत्तोनृपमनमलीन:॥ द्विजबाच द्विजकलोनानसो देस्याल: ना
वीव लिष्टमानऊनुवाल: निरदोषनानुवनिसंदेह: अन समकिआप
हमदयोयेह: सबक हलसुरासुरवेदसंत: अन थाहि हनहीस्वापअंत·
दथीसरछे हेतुकतपाप: अवधिलेंआपनजिहेसुआप: श्रीरामबान
हतसमारिय पुनि मिलकुलो तिदेवीप्रसिध्य ॥ कबिरुवाचासवग
योबिप्रदीनेंसराप: प्रानीकृतनुगनतपुनिपाप ॥ दूहा ॥ प्रोहितन
ननरेसकों: अहदयोपुहवार: कालके अनुनिकपरसों: जयजुतमि
लोसुजाहा ॥१॥ श्रीनमकेअरुआपने: लीनेंबयरबसेष: केकेदेस
नरेसको: कोयो बंसअसेष ॥२॥ दुसहजानप्रतापको: दीनोआप
द्विजात: आतिअनीतिजुतबातयह: नरी बिस्वबिष्यात ॥३॥ बलदुर
जनअरु महद को: रनकेसिधसुनाव: छिद्र हितकेतरहतनिस
दिनसमयपरदाव ॥४॥ बैरी ज्ञाननरेसके: येकेनयअनेक: जह
तहांतेसमिटिसब: कीयउदिम जुनटेक ॥५॥ कबित ॥ आगे नृपति
प्रतापनान· जिहिप्रसिनव दिनो· राहसमनुजअनेक राज· मिलि
मंत्र जु किन्नो: सत्रुसेन चतुरंगसाजि: परिहैसंनारिय: चऊअ
रचटिसीम बैरबिग्रह बिसतारीय· दऊदिसि प्रचंडअनपारदल· थ
रमस्वामि रिमपालधर: दिनफिरे नवे नृपज्ञानके· परेवीरसंग्रा
मपुर ॥१॥ बरषेएक बरबीर· बिषमसंग्राम जु किन्नीय· बलघुट
मगथार· करीरबि मंडलकिन्नीय· सुनतमंत्रिसुतबंधु· सहतसेन
चतुरंगीय· पच्योसुनृपतिप्रतापनान· नारायण जेगीय: उबरेन
बेसअवसेषरहिं· कोऊजलअंजुलिकरन: नहीदरनदेवईछानिपत
जोमहीपरहिबिधिमरन ॥२॥ रावननृपतिप्रतापनान· कुंनसुअरि
मर्दन· मंत्रिधरमरुचिथरमम्रल· कोहेसुविजीवन· अवरसुनटसे
वकअनेक अवतरहिजथाक्रम· आकृतदहुउतंग· महाबेकृतपाप
उपरितापप्रानहिसकपतित· बिस्वद्रोहमनमथ बिवस: अ

बेकजोनिराहसग्रथम नयेनवषहेंअवधिबस ॥ इतिश्रीरावणपूर्व
जनम ॥ अथरावनजनमवर्नन ॥ कबित्त ॥ रावणहिके
जनमअब कहिउंमतिअनुसार जिहिकारननुवनरहरन नेरांमे
अवतार ॥१॥ क्रतजुगबिषेपोलसतिरिषि साधनतपसंत आये
सुमेरकी थलदृष्येकेत ॥२॥ तपहितकरेनिवासतहां बनबि
चित्रबिसतार सरसरोजकुस्त्रीयसुषद मत्तमधुपगुंजार ॥३॥ तह
साधनकीयउग्रतप नयोब्रह्मचितलीन धारनजोगसमाधिथर
मनआसनदृढकीन ॥४॥ तहांराजात्रिणबिंदकी पवननिकरप्रसिध
बरनचतुरनामहबसत सबसानंदसमृध ॥५॥ किंनरसुरमुनिकंनि
का गंधरबीसुतनान तिहिसरवरआंशीतबें करतबिलासबिधांन
॥६॥ तेनचलगावतहसत बाजितबिबिधिबजाइ क्रीडतिदंकर
तालिका धरतिपरसपरधाइ ॥७॥ कोलाहलक्रतकंनिका आश्र
मकीदिसआइ अंतरायजोध्यानमइं कसोपुलसतिरिसाइ ॥८॥
पुलसतिउ ॥ रेपापनिममदृष्टिपथ इहिसरजेपेंआइ गरभव
तीसोहेकंनिका व्हेहेंसहजसुनाइ ॥ कबित्त ॥ नववेकंनोमंनयं
त्रिसत आपआपग्रहजाइ भेदनकाहूसोंकह्यो लघुबयसीलजा
इ ॥१०॥ कन्यानदपत्रिनहुंदकी अवरेंहिनअपात षेलततिरनय
आनिसो बिनुजानेंवहबात ॥११॥ परीजुदृष्टिपुलसतिकें अकस
मातनहांआइ गरभसथितताकहभइ नावीप्रबलसुनाइ
॥१२॥ तदपधारी ॥ बेवर्णलग्योतनहोनबांम तबगरभसुलछनप्र
गटितांम अबाबिलोकिसबिकारअंग पतिसोंनिवेदपुत्रीप्रसंग
नृपलिष्योतबेकरिजोगध्यांन मुनिक्रतसदोषयहसमांनि
त्रिनबिंदतहांधरिगरभग्यांन पुलसतिहिदईपुत्रीप्रमांन निसकरे
तुरहेसेवासनेम पतिबरतपरमसाधीसप्रेम ॥ मुनिबाचाअव
क्रप्रसनबोलेपुलसति सुनिप्रीयेकहुंइकबचनसति इकहे
हैतेरेसुतअजेव उवबंसबधकारककुदेव ॥ कबित्त ॥ ताके
पुत्रप्रसिधजो बिस्रवाअवायहनाम बिद्याजुतलछनबिमल
तेजसीअतिरमा ॥१॥ रिषपुलसतिकेपुत्रअरु ब्रह्मपुत्रबरबां
नि ताकहकंन्याआपनी नारदजदईआनि ॥२॥ सोमाहीबि
स्रवा मिलिआनंदअमेव ताकेपुत्रकुबेरभो जोउत्तरदिग

रेव ॥३॥ विधि निमंतकी यवैश्रवन: उग्रतप साध्यो नि: मन संजम ग्रातम
दमन: अलतम सीत न जानि ॥४॥ छंद पधरी ॥ जिय साधि जोग सहि
उ: पंजाल: दीय दरस नयं ब्रहमा दयाल ॥ विधि बाचा वैश्रवन मं
गि विधि बाच दीन: कारन नि हित पसाउ अकीन ॥ कुवेर बाचा थे
सर्य देऊं देवत अनंत: अस्तय धने स पद अवयि अंत: पद वी धनेस नो
दिसापाल: दीनौं बिमान पुष्पक दयाल ॥ क। बि रुा पायौ कुवेर प
थी पताप: अब जनन वगए स्व सथान आप: इक दिन कुबेर रथ चढि
आर: पितवैरनकौ नेह रस पार: ॥ कुबेर बाच ॥ वैश्रवनकौ ले
पतिसौ सप्रीति: बरदयौ मोहि ब्रहम बिनीत: बिश्राम बनावकु
कौउ बिख्यात: नहा बसौ जाय निस्लीत साल: इक उरगपुरी लंका अ
नूप: सो रचिन बिस्वकर्मा सरूप: बनगहन त्रिकूटाचल बिसाल
साकारकनकके थंभ गुसाल: पाथोनिधि परिषा गहर हर: संचार तह
इक प्रानस्वर: निरभय ऊत राहस निवास: ते गये सुतल ज्न जि विष्णु
त्रास: सो आहि सुनि दुरगम सथान: तह पुत्र बास करियै प्रमान ॥
कबिरु ॥ पितबैन नमार आप प्रबीन: निरभय धनेस तहां बास की
न: संपति सबत्र हय सुषसमाज: रस तो गकरै तह जछराज ॥ इहाँ मा
लिवा न राछस अधम: अब नि सुतल ते आर: संपति सुष वैश्रवन के लंक
बिलो के जाइ ॥१॥ राछस थान क सुरनि पह: देषत उपज्यो द्वेष: सत्रुनाबु
ते नि हि समय: बाढ्यौ दुष बिसेष ॥२॥ षलजब देषे आनसुष: अंतरज
रे अपार: ताके बिघन बिसेषकौं: करे अनेक प्रकार ॥३॥ मालवान
फिरि गेहगो: करन कुबेर अकाज: कन्या अपनी केकसी: लै आयौ निरल
ज ॥४॥ मालवान उ॥ तिहिं बलकं मासौं कहौ: तरी सजपा नाम:
बिधि नाती बिसवश्रवा: ताकरु तज ऊ सकाम ॥५॥ तबतुव पुत्र कुबेर
से: होहि महाबलवंत: छीनि लेहि सो सुरनि पह: तुव लंक परजंत
॥६॥ छंद पधरी कबिरुवाच ॥ करि मंत्र पगरी पुत्र काहि: जय हेउ
पुत्ति सुसी प्रजाहि: केकसी आरत बरिष निकेत: सेवा सुकरै मन
क्रम समेत: पोलस्त तिसमय इक चित प्रकास: सो जपै जोग निज्ञानि
वास: केकसी अग्र गटी कुमारि: ऊरही अधो मुष मुष निहारि: जोव
नागमन उरस्न व अनंग: उफनात जु सो तां अंग अंग: पदन षनि लि
षित र षा प्रमान: लज्जा निलाषन्त यमिलि समान ॥ बिस्व अवा बाच ॥
मुनिकहौ ता हि लषिलजाम: … नके … ॥

न॥ केकसी बाच॥ सरबग्य सदा प्रभु परम सनेत। ग्यान कछु न तुम तें अ
चेत॥ कबि रु बाच॥ कै ध्यान ब्रह्म सथित रिषसईस। चित चिंता बुत्री पति
भो बेत॥ रिष बाच॥ अप्पा सुंदरी पोलस्त तिं एव। दै पुत्र दुष्ट कौ है अदेव॥
केकसी॥ प्रभु हो हि दुष्ट तुम तें जु पूत। आवेन चित्त यु हृग्य अस मन्त तप रिष
बाच॥ कीय जाचं बन्यातें असुर काल। बल असमय हो हम ध्यान बाल। सुत
कै है नैती यसु बावसिध। परब्रह्म जगत पावन प्रसिध॥ कबि रु॥ तिं
हि बरई गिरन थित द्विज प्रसाद। बस अबुधि प्रसवन्तो निरबिसाद। त्रिहि
जात मात्र नये असुन जाल। ब्रह्म कलो लिषि रचर बिहाल। आकृत अ
साथ अति मग्र नीत। नुबकं पत्र बेन्नयतो कन्नीत। उतपात होत दुरनि
मत आति। जनन्नये जन भरावनसु जाति। बिग्रह अमान अरुनु ज्व
बीस। स्वाकबु दुष्ट दस बने सीस। बल अमित देह धर धरम बाथ। अ
ति कुंत करन उपज्यो असाथ। अन त्रिस कोमग्रय स्तुप अाप। पुनि स्त
पनष पुत्री सपाप। उतपन बिभीषन सुनसुनाव। नग बंत परायन
नगति नाव। यो उतपति रावन कुनाग्राप। पिस्ता सन बालन मनुज पा
प। होरता सवृथ नगनासहेत। मिलि बट नरो गज्यो बपु समेत। परि
तापबिस्व हिंसक समान। अनुनवग्य नीत बल अप्रमान। बैश्रवन ब
चै पुष्पक बिमान। पित दरसन हित अ प्रगम प्रमान। कीनें कुबेर तें
नमसकार। पुनि दृये पिता आसिष अपार। बैश्रवन देषि अति तेज व
त। केकसी उपजि असुर षअ नंत॥ केकसी बाच॥ सो गई पुत्रि रावन
समीप। मम सोति पुत्र नो महमहीप। उरउठ तआग त्रिबस बैरनाव।
सुष आन अस हस बत्री यसुनाव। सुत करउ जतन तुम कैस दाप
बातें बिसेष तुम हो उआप॥ रावन बाच॥ अबान चिंत तुम रह उ
अंत। अब हम उकरें उदिम अनंत॥ कबि रु॥ रावन सबंधत बछी
ठिराज। गोकर्ण गये तप करन काज। अपनैं सुतासत्र युबंधुतं
म। कृत नियम जेण साधत सकाम। ये काय चित्त रहि ऐक पार। पंच
सवरष सतगत सुनार। सबनारस भोतप ध्यान सेवा। रीयदर
स बिभीषन ब्रह्मदेव॥ बिधि बाच॥ चित हेत कसो बिधि बद
न चारि। बर मांगि बिभीषन मन बिचारि॥ बिभीषन बाच॥ मग
सु बिभीषन परम प्रेम। निस्र है बुधि रत धरम नेम। रछा अधरम
उपजे न आर। ईस्वरी नगति सब दे न सुनार॥ बिधि बाच॥ सो

२होऊकलो बिधिदियासंग॰ अरुअजरअमरआतमअभंग॰ सबफलेजो निस
थनमुनाइ॰ उग्रितबैबिनीबनतपबिहार॥ कबि रू॥ नयेबरषअयुतजव
तपबितीत॰ ब्रह्मातबदरसनदीयबिनीत॰ सुरसतीप्रेरितहासुरसमाज॰ इ
हिदुष्ट क्रूरयमुषवसकुआज॰ बानीनवकीय जिह्वाप्रवेस॰ सुनजानिकं
नयहछलसुरेस॰ उरबसोकुंतअनिलाषअनि॥ बिधिबाच॥ बिधिकेस
मांगिसोईमोदमांगि॥ कुंभ बाच॥ बरषमहएकनेजनबिसेष॰ षटमासनी
दसोऊंअसेष॥ बिधिबाच॥ ब्रह्मावरदीनोंलहि बिस्वास॰ यह्योंहीकैहै
अनयास॥ कबि रू॥ पुनिदेवदनआनंदपार॰ संसारअहितरिगोसुना
२॥ देवबाच॥ यहजागरकरतोनिमअहार॰ सहजहीनासघावतसंस
र॥ कबि रू॥ सरसतीब्रह्मआयेसथांन॰ करि बिबिधि बिसरदा बि
धान॰ इहिउग्रतप तरावनअषंड॰ कृतअयज्वलितअतिअय निकुंभ॰ ज
बदिब्बसहसइकबरषजोहि॰ मसतकइकहोमतअनलमोहि॰ ऐकास
नबेगेतपअपार॰ नवसहसबरषगतनिराहार॰ आकृतिदसमसिरसम
यआइ॰ सोउसीसलग्योछेदनसुनाइ॰ निःकोषषडगजबजयोपानि॰ तब
बोलिब्रह्मआकासबानि॥ ब्रह्मबाच॥ मामेतबाचबोलनमरालः तहां
आनिदरसदीयतातकाल॰ दससीसमांगि बिधिबाचदीन॰ निरयारजु
मनरेछानवीन॥ रावनबाच॥ सुप्रसनदेषिजबब्रह्मसंत॰ तबकहे
दसाननकृत्यतंत॰ सुरअसुरजक्षनागरक्षसाथ॰ नहीनगऊकरिममअंत
नाथ॰ ममनहनतमनुषमहीप॰ सोगिनतनांहिहमबलसमीप॰ अमर
तअनयनलथलअकास॰ पातालगमनमांगतप्रकास॰ बिधिवथाअस
तकहिबिमलबानि॰ मन निसचय सोदससीसमांनि॰ फरिजुसीसतहे
मकीन॰ नवअहयक्रहैंफिरिनवीन॥ कबि रू॥ योंकहतमतअदयअ
रूप॰ सिरनयेप्रगटसुंदरसरूप॰ आमसबंयरसकंधआइ॰ प्रफुलित
स्वरछबरदानपाइ॰ बिंमानन्नरत्रयलोकबान॰ सुरसाधसिधकाऊन
सुहात॥ रुहा॥ दससिरकोनानेदुष्ट॰ मालिवानतिहिनाम॰ सोसु
निआयेसुतलरैं॰ सहतकुदबसबाम॥१॥ असुरप्रहसतहिआदिदै॥
संगमारीचसुबाकु॰ आनिमिल्योदोहित्रकहं॰ सिंघनयेससनाह॥२॥
मालवान बाच॥ तिहिमलरावनसोंकह्यो॰ हमछांडीजबलंक॰ सोग
दपायोसनितहां॰ बसतकुबेरनिसंक॥३॥ छलबलअथवासामक
रि॰ लीजेबेगछिनाइ॰ राक्षसकोवहहरगहै॰ देवबसेतहांआइ॥४॥ रा
वन बाच॥ तबरावनउत्तरदयो॰ तुमजानतसवरीति॰ जेष्टथकु
बेरसों॰ नाहिनउचितअनीति॥५॥ प्रहसत उ॥ तबप्रहसतनिस
कहै॰ रावनसोंकहिवात॰ राजा [illegible] तिनकेकेसेत्रात ६

।२। दीऊ कसिप के सुवन : दांन वदेव प्रतिष्ठ : भूमि राज के काज सो : अंजक
लरत बलिष्ट ॥३॥ कबित्त ॥ रावन सुनि प्रहसत मत : लोन्ह अनरथ बड
र जेठे भ्रात निकासि कें : लंका लई छिनाइ ॥४॥ रावन तहं कुबेर जुत
आनि बसे गढ लंक : सब राछस मिलि राज दीय : कत अनखेक निसंक ।
।५। रावन की बहनी तहां : बिद्रुत जिह्वा नाम : कालषंज को तिहि समय
आहि दई बर बाम ॥६॥ छंद पधरी ॥ पित सों कुबेर कीनी पुकार : बृतांत क
ह्यो सब बार बार : जब पितु ताकु बेरहि दुषित जानि : उपदेस करे मन मोद मा
नि : दुष तेरो हरिहै सुनु देव : सुत कर ऊग्र म जुत जा रसेव : मन धरि बिस्वास
पितु बचन मांनि : उग्र तप करे कैलास आनि : हर देव तबै सु प्रसन होइ :
सुन्न सषा आपनो कह्यो सोइ : अलकापुर उतर दिसि अजेय : सो रचि
त बिस्वकरमा सुमेय : पुर बास द्यो सिव कों दयाल : दीनों धनेस पद
दिसापाल ॥८॥ बसि कुबेर अलकापुरी : रावन लंक निवास : इहि
बिधि भूमि बितावतो : सहत प्रताप प्रकास ॥१॥ कबित्त ॥ क
सिप पितु इनु मात उदर मय त्यो निसाचर : सब असुरनि तिहि दई बि
स्वकरमा पद इबर : ताकी कन्या अतुल रूप नाम मंदोदरि : गुन लछन
बिद्या प्रबीन : त्रैलोकहि सुंदरि : सो बिनता ब्याही रावनहि संग्राम
य दीनी सकति : बरबरनि भोग बिलसति बिबिधि पृथी करक लंकपति
।१। दोहा ॥ दैत बिरोचन दोहत्रा : बज्र ज्वाला नाम : कुंभकरन तिहि कारय
हन : कृत सुष बछित काम ॥१॥ बिदुत नाम सेलुष बिनु : गंधरबनि को रा
ज : सरमा ताकी पुत्रिका : साथी सुमति सुलाज ॥२॥ सो ब्याही जु बिभीषन
हिं आनंद बढे अनेक : बरनी बरजोरी बिमल : बनि ज्यों नीति बिबेक ॥३॥
उइ पुत्र मंदोदरी : जायो षल बलवंत : अधकारक अनसंकप्रति : अवनि
अधरम असंत ॥४॥ जात मात्र घननाद तिहि : कीनों गरज कराल : मेघ
नाद तातें भयो : नाम सुरेस हिसाल ॥५॥ कुंज बाच ॥ कुंभकर्न दस
कंध सों : निद्रा बाधत मोहि : मुष मांग्यो पायो सु मैं : कहा करूं अब तोहि ॥
६॥ कबिरुबाच ॥ गुफा त्रिकूटाचल गहर : कृत अनेक प्रकार : कुंभकरन त
हां सयन कीय : करि अहार अन पार ॥७॥ देव दनुज नर नाग द्विज : त्रय
पुर भयो संताप : सब ही कों रावन ससुत : पीड़त दे संताप ॥८॥ सुन्यो
अधरमाचरन जब : रावन को सबिसेष : पठयो दूत कुबेर तहां : क
हिक हि बिनय असेष ॥९॥ कुबेर बाच ॥ ब्रह्म बंस उतपन बिनु
कुल पुलस्ति जय कार : तिन कहं जु कतन आचरन : अवनि अधरम
चार ॥१॥ रावन बाच ॥ रावन सुनि उर परजरयो : अस हमा न अहमेव :

हमकहेंउपदेष्टान्यये तुमकुबेरहिरिवग॥ कबिरुवाच॥ छंदपधरी॥ मिलि
सेनांकेरककोधमांनि: अलकापुरघेर्योतबहिआंनि निकसोकुबे
रमनत्रासमांनि: तहांलयोछीनिपुहपकबिमांन: जिहिरथारूढजम
बरनजीति: अतिकरनलग्योदससिरअनीति जबघेर्योबासवले
कजार: रहोइंद्रकर्योसंग्राममआर: देवासुरकीनेंकछुककाल: सो
मेघनादसुतजयेसाल: आयोतहांआतुरकुवरआप: हारूनसंग्राम
कीनोंसदाप: लेचलोबांधिइंदहिनिलाज: दीनोछुडाइबिधिदेवरा
ज: अतिबलीसमरकृतिबिजयअंक: इंद्रजितनामपायोअसंक: इह
रावनगिरकैलासआइ: सबकरेसिवहिबंदनसुजाइ: लीलाउगहर
कैलासलीन पुनिधर्योफेरिइथ्थप्रबीन: दीयसापजुनंदीगनस
हास: नरबानरकरिहेहैरनास॥ दूहा॥ पुरीसुहैहयराजकी
माहिषमतीप्रसिध: रेवातटतयउपरहत: सबकोउबसतसमृध:
सुंदरिसिसुनगसमूहसंग: नरहीडतनरनाह: करसहस्त्रबिसतारक
न: पांनीरुकेप्रवाह॥१॥ दससिरसंध्यामध्यदिन: बिमलनदीतल
वास: पेमजुकनहरपूजियत: कीयपारथीप्रकास॥२॥ पानिलये
जबअग्रेंत्रिनृप: चलेप्रवाहसपूर: मिलितरंगसिवलिंगगत: कोपि
तग्रोषलकूर॥३॥ पर्योजूकिराहसनृपति: जूतलमहात्रयांन
कछुककरेक्रीडाकलह: निसचरबध्योनिदांन॥४॥ आयोतहपु
लसतिरिष: सोयहसुनीसुनार: करिजाचेंनांनृपतिकहं: दीय
दसकंधछुडाइ॥६॥ छंदपधरी॥ तबगयोसुतलबिजईबि
हार: देतनिसोरोक्योउराचार: दससीसदेतेंउतबलिसराप: अ
नन्तंगमिलेदेउजुधआप: उऊओरकरेबलप्रबलदाव: निरथ
नपातबाजहिनिहाव: देतेसतहारादससरबार: बलिलयोबांधि
रावनबिदार: पोलसतिथंनबांध्योसपाप: आवासआरबलि
बिजयआप: दससीसबीसभुजदेषिदेषि: बिनतानिबिनोदउ
पजोबिसेषि: देकवलहाथिदेतेंइंद्रहासि: हनितातनचावतिकर
तिहासि: इहिसमयसुक्रबलिद्वारआर: सगथंनबध्योदेष्योसुन
र: छुटकारदयेउरबंधछोरि: बलतोलितंकआयेबहोरि॥
कबित॥ नयोनरेसप्रातापनांन रावनलंकेसुर: अरिमरदननो
कुंभकंन आलसनिअग्रेसुर: सबिवधरमरुचिधरमसील: नयो
नगतबिनीषन ... मायाकरिमलीन

मन: द्विज आपदोषगनतु रगतिहि: बिस्वबिनासक बुधि बिकल: रा
छसी जे निसुगवन अनर्थ: चरबाहन निरलाज षल:॥ इहा मनथन
जोबन राज मद: कुलदलबल इक ओर: इनहीते उपजत अबिल:
हेत अनरथ नओ र। ओर ॥ छंद पधरी ॥ इक समय दसानन सत्ता आ
नि: बैठे सबंध सिरछत्र तानि: सुत पौत्र सत्ता सब सचिव संग: आ
आर सुभट राछस अनंग: ॥ रावन बाचा करिकोपक सोकं रककं
रूर: तुम सबै निसाचर समर सूर: इक मूलमंत्र सो सुन ऊ आज: ऊ
कहत निसाचर श्रेय काज: हमसो हितकारी हर अवंत: सुप्रसन सदा
सिव ब्रहम संत: इंद्रादि देव हम सत्रु आदि: असुर सुर बैर उपजो अना
नादि: इनके सहाई है बिष्नु ऐक: सो करत अमर रछा अनेक: वहबि
सुमरे जिहिति हि उपार: सब होहि काज अपने सुनार: बिबुध के
मूल हैं मष बिधान: निसेष उषार कृते निदान: जब नाग न पावहिं
अमरजाति: आपुहीदीन ह्वै हैं अराति: हीनबल परहिं तब मारिले
हि: थल छांडि जांहि कै दंड देहिं: बिबुधत जिजाहिं जिब देस बास:
तहा असुर बसावहि अनायास: सब दुष्ट उमेय हमंत्र मानि: ऋतथ
रमबाध मषछांडि कानि: द्विज जो जप आराध जप होम दान: अरूपा
ख बेद सास्त्र पुरान: गौब्रहम तिलक जग्योपवीत: अतिहोतस
थ तुलसी अनीति: पुनि करत ध्यान मुनिजहपार: देअरथ चंदई
जतउगार: प्रतिमा करि बंदन पद प्रहारि: आमूल लेत देवलउ
षारि: रुधिर द्विज मांस आवहिर सोर: हित जु करत तास आप
रहोर: अति कोप चढ्यो रावन असाध: बल छांडि किर न धर ध
रम बाध: तह आअ नाग धरि इंद्रजीत: अनेक संग सेना अचीत:
इंद्रादि देव दिगपाल अंत: ते कुवर बाधि आनि कुतुरंत: दलचलत थ
सकि धरनी दिगंत: पर बत निअंग दहिदहि परंत: नीसान गरज धु
नि परि निहाउ: सुनि होत अमरत्रीय गरत आव: यहलोक लोक ज
बबात आर: स्वस थान सुर निछांडे सुनार: मिलिछपे मेरु कंदर
मांऊ: सुर समय पन जानत अजोर सोऊ: दिगदेवलोक जब सूनिद
खि: बसगार ब्रह्म सो रावन बिसेषि: अहमेव अ सुर उपजो अ
सेस: सनमुष न तयो कोऊ सुरस सुरेस: बेश्रवन सूरससि बरु
न बात: जम अगनि काल किंनर बिष्यात: मुनिज दासि धगंधर
बनाग: नये बिबुध षीन मषर हत नाग: बिधि अष्टि न ईबस

बरतवांन·कोऊस्व। तंत्रसुनियेनकांन.सबजांनिबुधिबलमंत्रसा
धि·बसकरयौविस्वउपजीउपाधि· सुरजदानवकिंनरनरेस·गंध
रबदैतदानवगिरेस·श्रीयबधूसुनगकंमाप्रकास·ललतेतछी
निजीयलगतजास·सुरदेषदुष्टसेवकश्रसाधि·अनेकरूपकार
कउपाधि·जहसुनतसाधद्विजसुरनिसिध·पुरजादिदेनपतन
प्रसिध·निरमूलकरेसबधरमनास·गुरदेवनपूजाअतिथआ
स·जपजोगजुगतिगुरगंमग्यांन·कहूनीतिनेकसुनियेनकांन
केउकरेनमातापिताकांनि·जगत्रयेत्रष्टिआचरजांनि.इहि
नांतिधरमगतआदिग्रंत·नत्रईतदानारइकंत·नत्रईधेन
रूपासत्रीत·अतिअसहमानरावनअनीत·जबनईबिकलबि
हबलबिहाल·सहिजाततहिनकुरपरमसाल·सुररहेमेरकंद
रसमार·अतित्रासजुकतगेतहांआइ॥ पथीबाचासबकहिअ
नरथजेत्रयेसंसार·नईदेवतासउदुषितनार·चवबांनिच
राचरनहीबिचार·त्रकलेअवरमोहिसुगमनार·बिस्वास
घातअरुस्वामिद्रोह·मनकनकतेयकृतछेदमोह·संसरगीए
नहिंसुत्रावसिध·येपंचमहापापीप्रसिध·पापिष्टतहांयेधरत
पार·कैदिकतकंपममहोतकार· इनआदिअवरपापीअपार·स
बरलोधूरिदिससंसार·अवनिजबनईअघनरअधीन·करि
इदनसुरनिसोप्रनितकीन॥ द्वहा लषचोरासीजीवजग·आ
कतदेहअमांन·तिनहिबिहतनिसंकह्वै·मानतफूलसमांन॥
कबित्त॥ इंद्रादिकसबमिलिअमर·संगवसमतसिसलोक·कि
नरजबिंधरबमुनि·आयेबिधिकेलोक॥१॥ अवनीकेअल्प
पनेः दुषसुषकहेसुनाइ·ब्रहमासोंबिधिबिधिबिवरि·इं
द्रादिकअकुलाइ॥२॥ ब्रह्मा॥ तपसफलपहलेंतिनहिं·मेदी
नोबरदान·अबतोमेरोनाहिबल·ब्रहमाकहेनिदान॥३॥दी
नबंधुजाकोबिरद·अषिलबिस्वआधार·सदासहरकअपने
करियेतिनहिपुकार॥४॥कबित्त॥ सिवबिरंचिसुरपतिसुर
नि·कारनकरुनाकीन·पाहिपाहिपूरनपुरुष·हमबुधिबल
नयेहीन॥ श्रीचतुर्भुज॥ इंद्रादिककीआपदा·सुनिबैकुं
ठनरेस·नरवां ((·अ) अबिलेस॥६॥

नरोगे बिद्दल अगहरक्रिदा दिनमनिवसप्रसिधमर तैसन
रबरन हियस्तुतीयसहिता नपताध्योसुतहेत तिनदियो
रद्दानिमै मनकनबवतसमेता छंद पधरी मनुसायलेदस
तोसे तितप केसत्मोमुबेस तिहिदरजनमतेकजवान
हेनिस गतनोश्रवतावतारनय अवरजात केकहेमित
तनहिमात मैद्दसीसकतिजुतधरम्नुख नबअवनितारयहिसन
अजमनुनिहये नारदस्ता अवतारतब्ब तताकरिकृयाम सुभव
नहतुकहु नेसुत्तन कटिकुप्तसेबसबदेवक जरा कनिकरवडि
बधयहतुर कात्तवति बिखातनयाम नतोद्दमोति बिडि
येकहे ह्ये हैबरहिसत तिहितध्यनबातरमनुजनात
अवतरजार कपिलात बिकुयहैमरोकार कर ब
कुमनुसुबबिसघात्तार हयोसुत रषतअवयपाग्न मलेह
नरबिहैबबदतो ति अवतरकोटिवितीसअति येकहेतजे
अवतरं छिबलत्न अतिबसीमहबियहोबहु
अवतरजुधउ कउबहुरातउतपृतिकद्देबत
बबिहतारदिपतव्क मतपरबतर्म कंबसरव
सुबहुत मेतोरितपकव जिहिबउकंतनैसर तम
लिवहुत हातपुर तारहेति साथीरतसुवेत यकल
कतिबतत तिल्ल तात्क तिरतआर सरसथिपहयास्वर
तित्पहुनिर कनह पतवत रेतपारवेबरे
जलतन्रतिमै अधकतककेयात ववतजाहेतु
सबेतन जतिमुत्रै हतेमजती नयाउहरतिल
कतुजनबैबतुरबितो फिलिकलन
तनबतुवत्र तउठककहे नतटैतासततवेर
जत कअत कैसइकेतम तिकिहिकातउर
नतबघेबातिपरकवतपन्न तिहिल
कतेतब बबहेसत पबनतुविबुक
तहिरकत जात बेकमतनतेहहम
नतबह सर बिसैसब्रबरह
कनतत बोकस्तन

तुवगरन्नप्रबल पृथीप्रसंस : श्रीरामनगतसाहससधीर : विष्यातनामह
नुमतवीर : तवपुत्रप्पारहेरुद्रनाम : सुरकाज सिधकरिहेसंग्राम ॥ अं
जनीबाच ॥ निरदोषरोषमम लग्योदेव : अंजनीकह्योमनुररैयेवं ॥ क
विरुवाच ॥ केसरीनामकपिमहाकार : सोकरतसंतुसेवासुचार ॥ हर
रत हितपस्वनिअंजनी । उतकेसरिकपिराज : हरआग्यापायोनिजग्रहन
कस्योधरमसुरकाज ॥१॥ तपसासेवाफलतबहि : पायेउ ऊनित्र
सिध : तवप्रसादत्रैलोकनो : सबहरषतसुरसिध ॥२॥ अवधिप्रार
अंजनिउद्र : महावीरहनुमंत : अमरसहारकअवतस्यो : त्रिभुवनग
नबलवंत ॥३॥ इति हनुमत उतपति अथ बालिसुग्रीवउतप
ति ॥ कबि रु ॥ दूहा ॥ मध्यजुशृंगसुमेरको : सतजोजन विसत
र : ब्रह्मसभाताके विषै : वेगत नित्यविहार ॥१॥ येकसमयसुर
सिधजुत : वैगेसभाबनाइ : ब्रह्मग्यानचरचाविमल : हेनलगी
सुषदाइ ॥२॥ चतुराननकोविग्रतरु : नयोब्रह्ममंहलीन अ
श्रुचलेआनंदमय : सोकरअंजुलिकीन ॥३॥ बिधिसोअपनोअंश
जल : करते दीनोंडारि : नमिपरतबानरभयो । बिजयनांमअवि
कारि ॥४॥ बिधिआग्यावस बिजयत हां : बलिसेवाहितबीर : निस
बंदनररसननिरत : रहतध्यानजुतधीर ॥५॥ इकदिनअरथअर
रकै : बिजयत्रमतबनमांह : तहांबापीसुंदरसुषद : देषीउरकि
अथाह ॥६॥ तिहिबापीबानरत्रिषत : ऊपरबैगेआनि : मुंहलषि
जबनीरमंह : तोप्रतिबिंबभ्रमानि ॥७॥ असहमानअतिदरपतें :
बांनरजानिबिसाल : तावीबसअतिक्रोधनम : कूदिपस्योततका
ल ॥८॥ छंदप ध री ॥ बापीप्रभावदेवीसुबारि : नरपरेमध्यसोहे
तनारि - तिहिपस्योमांझकपिबिजयतेष : बिनतासुजयेअदभु
तबिसेषि - बारितैं निकसितिहिसमयबांम : तहरहीबै चिन्तजित
सुतांम : रहिसमयआइबासवबिनीत : तहांकरीब्रह्मप्रजापु
नीत : बासुरहिमध्यसंआबिसेस : सोबापीतिहिआयेसुरेस :
सुरराजत्रीयादेषीसुनाइ : उरबटीबिथामनमथआइ : नयो
बीर्यपातपी ड़ि त बिअंग : सोबीर्यपस्योबालनिप्रसंग : बीर्यनिहि
च्यपजोमहाबीर : धरिबालनामकपिराजधीर : मिलिसनाब्रह्म
दिनकरसनेम : परस्परजनकीनोसरततप्रेम : निसक्रत हेतआयेदिने

स॰ प्रनुकस्योतबेवापीप्रवेस : वापिकामध्यदेषीसुबांमे॰ मिहरतहानवे
उदबोयकांमः समर बसन्ययोत हारेतआवु: सोयस्योग्रीवसुंदरिसुनावः
ग्रीवउपजितिहिबीर्यसाथ॰ सोरामसखाकेहैंसनाथ :देवीप्रनावसुतनये
देरः सुंदरिसलजत हार हीसोर: प्रतिमासरूपअपनोप्रनात :फिरिबि
यनयोबानरबिष्यात :बिधिलोकआरतवबिजयबीर: सुतउनयअय
बिलसनसधीर ॥ बिजयब्रा चा॥करजोरि ब्रह्मसोंप्रनितकीनः प्र
भुदेऊवासथानकसबीन ॥ ब्रह्मोवाचा॥ बिधिकह्यो किंकंधापुरी
बीरः सुनरचिलबिस्वकरमोसधीर॰ बनसफूलबिषमपरबतबि
सालः निरझरनिनीरषिनिबहुतषालः तुमबसऊबालिसुग्रीवतत्र
येबिजयसेवमभरहमित्र॰ ॥ ब्रह्मोवाचा॥ कबिता॥ बिसदम
ध्यब्रहमेरु॰ बीरजेरीछसुबानर॰ अमरअवनिअवतरे॰ प्रगटस
यः ज्रुथपज्रुथअनंगजुध जगबिदितअसुरजयः आग्याअथीवत
नअनुसरहि॰ सेवपरायनकपिसकलः जोगवऊजारप्रनुताअनय
केकंधानगरीअकल॥१॥ दूहा॥ ब्रह्मांअपनोगनबिबुधः सनकेस
ब्रहमाकोगनबालिकहैः लेआयोकेलासः बिधिआग्याहरसोंबि
वरिः कारनकहोप्रकास॥२॥ हरपठयोहनुमंतनहोः बालिसह
रकबीरः केकंधपरवेसकीय॰ समसुग्रीवसधीर॥३॥ अबुज
नवकोनतवहः इदलोकतबआरः सुरपतिआगेसबकहे॥ बि
धिकेबचनबनार॥४॥ इंद्रादिकसुरमुनिसकल॰ आनिनयेएकं
त्र: कपिबालिहिदीनोतिलकः केकंधपुरछत्र॥५॥ नबतारारोमां
तरनि॰ सुंदरिअनथसुजानः बालि बिबाही बिजयजुतः बिलसत
मदनबिधान॥६॥ ताराधानीउदरतहोः अंगदनयोकुमारः मह
प्रनाविकबीरमहि॰ अतुलअमरअवतार॥७॥ सबेअकंटक
राजसुषः करतबालिबलवंत॰ सेवकज्रथपज्रथसंगः आगप
आनअबंत॥८॥ बालिसुग्रीवमहाबलीः इंद्रअरकअवतारः त्रि
रनअसुरषुजबातनुजः उछवजुधअपार॥९॥ केकंधपुरबा
लिकपिः रीतिसहत हतराजः प्रतिदिनहथीपरिक्रमनः कर
तसुनोजनकाज॥१०॥ छंद पधरी॥ संध्याहित बालीमोनि

दिगबिजयकाजराबुनदु सं
धि: सोकरतध्यानकहुलगिसमाधि · रिहिसमयआरकरकअसाथ:बल
आरनअरन कृतअवनिअंत: करनामग लोकपिअसुरकंध:मेल्हे
रबिसीसकपिकरनबाध · संरपाकरिकगोबालिसंत: रीनीपरिकरमां
कांष लेमदअथ: जिजेतकेबाधिपानि: अंगदकेक्रीडाकाजआनि: न
रहित - रथी बिजेतकेबाधिपानि सतत्रीय गनसमाज: बालिसों
रकारस्योपलनानिलाज: सोदे गिहसतत्रीय गनसमाज: छुरकारहयो
करीनारप बिनीत: नयोजीनजातनिसचरअनीत: रहिनानिअमरअ
मलबंधछोरि: मुसकानगयोमूछनिमरोरि · रहिनानिअसुरसंत
वतअिसेष: बलीमुखनालनलबिसेष।। कबिना।। असुरसंत
पितअवनि · नारपीडितसनीलजय · धेनरूपनिहियलो · मनसु
बितेकरुनामय: नारायनआकासबानि · अवतरनकलोनर · देव
सबेयरिदे · रीछके हैबरबानर: आपाअनंतजपजेअमर · मह
बीरबिक्रमअमित: श्रीरामचंद्रअवतारसंग · नियननिहारनपंथ
निसा।।१।। इति बलीमुख नाल उतपति।। अथ राजादसरथउ
तपतिबनर्न।। दूहा।। राजाअजअवधेसके · स्वायंभू मनुआर: दस
रथ हैकैं अवतरे: तपसाको फलपाइ।।१।। उतरेसकोसलनृपति: तिहि
पुत्रीअनिराम: सतरूपाअवतारतो: कोसल्याइहिनाम।।२।। राजा
दसरथधरमधुर: कोसलदेसनरेस: ताकहं ब्याही बिधिजुकत: कौ
सल्यासुतवेसा।।३।। अतिप्रसिधपावनपुरी: संजुतसुषनिसमूथ धरम
उपासकलोकसब · नितसनमुषनवनिधि।।४।। इहदसवादसकोस
लौं · चउघांचारिजदार: सारथमथसुपचतुव · बिसदजुरतहरवार:
।।५।। दसपंचापरिवेषदिढ · पन्नकोरिप्रमान: चउदिसदीयबार
चव: बज्रकपाटबिधांन।।६।। बारीजलपूरितबिषम: अहजलजंतअ
गाध: मीनकमवन्नकीमकर: सुसिआहअनसाध।।७।। मध्यकोटि
नृपमंदिरन: आसपासउतंग: अंषलसलकपाटसंग: चारिपैरि
चतुरंग।।८।। छंदपधरी।। जलपूरिपरिषाजोप · जनुअबसागर
प: बिबिराजधामबिकास · मनुउदितसेकैलास: नगबिबिधि
रनियंक: प्राकारकुरनिपंक: परवालथंननिपार: कृतमलय
गरकपाट · मनिनीलखूनीमान: सुनसिरालालसमान: रवि
मकांतिरसाल: जहामीनजालनिजाल: कृतकाचअंगनकाम
मनियांम: बनिबातपथबिसतार: प्रतिअहबिबि

प्रकार: नगरचितप्रतिमानेक: तरलतागुलमअनेक: जवहूतअनअनजाति:
बनिचित्ररंगबितानति: अत्यअहनिगोषउतंग: रचिजवनिकाबहुरंग: ध्वजक
लसअंकितधाम: दिगबिजयचिन्हलिदाम: परलोमसूत्रप्रकार: प्रतिधां
मबिछयअपार: अहअहनिदीपप्रकास: तपरतनमनिमयतास: नगषचि
तकनककेयक: प्रतिधामधामअजंक: बनिसेजउजलवांन: सिंधुषीरफे
नसमान: राजाधिराजसमथ्थ: सुषजोगनृपदसरथ: निसबसतअहने
वनिधि: अनकूलअष्टसुसिध: रसबिबिधिरततरनिवास: बिनताबिबे
कबिलास: नरदेवपुत्रीनाग: पुनसेवनृपतिसजाग: मुगधासमसामो
न: पुनिअगलनासुअमान ॥ दूहा ॥ तीनपचासबिबाहिता: नृपकेमास
मनाम: सोनगुनजुतसुंदरी: ज्योराजतरतिकाम ॥१॥ तिनमहपटरां
नीसुत्रय: नित्यप्रीतिदृढनेम: कहीसुमित्राकेकई: सीयकोसलाप्रेम ॥२॥
अवरदासिकासहसदस: निकरबरतनीनारि: बिबिधिसेवबिस्वासबस
अतिमनीनअधिकारि ॥३॥ चेरीचतुरअनेकचित: योराजतिरंनिवास: मान
ऊरतिकोनगरसो: सुषसंजुतसबिलास ॥४॥ कलकुसलजेकामनी: गा
नतानसंगीत: सुरतियालेरागमनु: बाजतनित्यबिनीत ॥५॥ समयसमय
सुषसमसुर: रसषरत्रिसतराग: निसनवनवनाटिकनिषल: सेवत
नपतिसजाग ॥६॥ छंद उधोर ॥ बामने कुबजेबुध: प्रतिहारषरप्रसिध
रनिवासरहकराज: कंचुकीचातुरकाज: अतिसनाबिसदअवास: अ
काराबिबिधिप्रकास: परिबेषपोलिप्रचेन: सुषयंजतोरनमंन: धित
सूलअंषलध्वार: उदघाटबज्रकपाट: परबसत्रबिबिधिबिछार: बि
चिपीनृपतिबनाइ: सुनछत्रचामरसंग: अदेनउजलअंग: जतनिकर
बरनीजत: जेराजमनुअनुरूप: गुरबामदेवबासिष्ट: समधरमकरमति
सष्टि: पुनिआगमंत्रप्रमानि: सबनीतिधरमसुजान ॥ अष्ट मंत्र
नोमांनि ॥ दूहा ॥ सिद्धारथ१ साधक२ अरथ: दृष्ट३ बिजय४ जय५ पपेषि
पालकधरम६ असोक: पुनि: बरोसुमंतबिसेषि ॥१॥ देसकोसदलदंड
दम: दानाधरसनत: द्वारपालदैवज्ञदिढ: अधिकारीअनुरूप ॥२॥ र
षगजहयगोरसबनी: पतिअधिकारिप्रमानि: कबिपौराणिकनिषज
कुल: मागधनरतकमांनि ॥३॥ छंद उधोर ॥ सुरनागनरबससेव: दिग
बिजनदसरथदेव: कृतराजनृमिसुरदह: येस्वर्यइन्द्रतह: पुरतास
धरमप्रकास: सबबसहिधरमसहास: धितबणिकबिक्रयवंत: ज
नुशीयासचिवलसंत: उदघटहिहाटकपाट: ज्योंधामसेधनराट: को
टीसध्वजीअनेक: बनिलहरीपबिबेक: बहुकरमकारबजार: अ

सकतंकुलअधिकार : पुरबाटिकासुषपुंज : जुतबकुलकुंजनिकुंज : तरल
ताकलपसुतंत्र : बनिपुहपफलनिबिचत्र · सरकूपबापीसंग : जलजंतचल
ततरंग : मिलिअमरभ्रमरीमत्त · गुंजारसोरंनरत्त : पसुवृधपसुपतिपार ·
सबसुषीअन्नयसुनार : बसिरूषीकुसलबिबेक : अतिउपजिअनअनेक
मनचिंतबरषहिमेह : सबधरमबृधसनेह · ककुसोकदुषनहीसंग : अ
नंदमनअनंतंग : पुरबकुअोरप्रकास : बनगहनबागबिलास : नदमह
सरयूनाम : उंयारजगअभिराम : मिलिबिसदपरबतमाल : बनिलता
दृहबिसाल : निसचलतनिरझरनीर : गिरदरीअगमगंभीर : आषेटजंत
अपार : प्रतिदिवसमिलतप्रकार · मृगराजगरजसमूर : प्रतिसबदकंदरपूर ·
बनमहिषबउगबराह · गजछरतमत्तअथाह : गिरगवयचमरीगव : स
तजूथजूथसुभाव : मृगचित्रसोरंतमांन : बनससकअनअनबांन : सार
गकूलनिसंग : करूसाषसाषप्रसंग : कपिजालजूथपजूथ · बनसत्तबि
बिधिबिरूथ · जेनषीअंगीजीव · दंतीजुअछिद्रदीव : जलथलनिगिरच
रजाति : बरव्योमबरनिबिजाति : बनबासिवासबिबेक · कजूकोलभि
ल्लअनेक · आषेरहितनरइंद · बनजंतुवंदनिवंद ॥ छंद पधरी ॥ उत
पतिषानिरतनतिअनेक : बकुरंगजातिजातिनबिबेक : षितितारतात्र
मथकनकषानि : अनेकधातमयषानिअांनि बकुरंगसंगसोगंधबो बा
न : पथबलतअषयनिरझरपहार : बारनतहांमंजतजलबिहार · च
कुअोरदेसपरबतनिवाउ : बिसतारबिमलबनबनबनाउ · सरित
अनेकतीरथसथांन · मुनिरहबासतहांमुनिमांन : स्वाध्यायनिरत
तपससप्रेम : तपजापहोमबनिमनेम : सरसीबिलासजलजंतसं
ग · नीरजबिकासनानाबिहंग : पतनअनेकदृथीप्रमांन : चबबरन
वासअतिचैनमांन : द्विजपुंजकरमजुतअतिअदीन · निसअनलहोत
बिद्यानवीन : जुतस्वामिधरमछत्रीसधीर : गुनवंतसूरदातागहीर
ब्योपारनिपुनबनिकवृंद : उपराजकपोषकधनअनंद : दिनक
थाकीरतनदेवद्वार · झालरीघंटसुरझातकार : पसुपालकरतपसुनि
करपोष · प्रनहोतप्रातमथांनघोष : अनेकरूषीकृषिकरमआस ·
अतिउपजिअनबरषाबिलास : त्रयबरनसेवरतसूद्रतत्र · अनुतत
पंरसाधकयहपरत्र : अतिनिपुनबिबिधिसिलीउदार : दृथीसक
रमकारकअपार : बारनजुमतषटरितिबिनीत : अनुसरतअचलज
गमअनीत : करनीअनेकआचरतसकोप : बगपतिदंतउजल
संजोप · प्रतिरंगरेषमनुसकचाप · मनुजलदष्यजायतिहित

धाप: सिन्नरसीस बिथुरे सुरंग : आकास मनहु आगम पतंग : महलेषु असित
अबिरल अनूप : गुंजार मधुप कृतकरण जूप : महरु रततल्ल निलग मतंग
निझरनि नीर मनु गिरउतंग : घहरात सघन जनु रतिग जीर : मदमोष
घोषगरज निगहीर : प्रतिरंग बसन बासित जु नाग : बरषा कि बिबिधि
बादल बिभाग : घटा सु घोष घूघरनि नद : हिमतार लिमजंजीर हद : च
तुरंग चलत चामर सजोप : अवरित पुहुप तरु बसंत ओप : नग जोरित
कनक बगरी अनूप : राजित रदन कर बलय रूप : मातंग फिरत मोकल
मरंथ : सतनार सार अंषल सबंध : दुसाधि उर करकर तदांन : प्रेरति
पहार मनु पीलवान : सत सेत परेच्वरषी सुरंग : रहि रूप वार आवहि अन
ग : किऊ निरत बारन सकुथ : जानु ल्पमनहु परबत निजुथ : करिहो
तक फुयुररहोर कोप : आरूढ पवन जनु जलद ओप : बिरदैत करीके
उगट बिदार : पे बथमन ऊयूमत पहार : असिलस तिबाजिसाल अ
नेक : बिधिजुकत तेजलहन बिबेक : प्रतिषेत्र षंडसत्तवपवंग : अने
करंग आकृत उतंग : अतिसजव कूंउ कनरत क अनूप : रहवाल केउ
कनुषचाल रूप : धावंत सजव केउ पहधाप : करकंत फाल केउम
हिअमाप : मृगगहत केवकेउ धनुषमेल : मिलिजात अनिल संग बागमे
ल : हिमघटित जीननग जटित ओप : जरतार सार सुषमंलस जोप : सुष
बगलोरिरेसम सुरंग : प्रतिबाजिसाज सोभित सुचंग : सिंदन अनेक बिज
ई संग्राम : सनाहसस्त्र अस्त्र निसनांम : रथराज केउ कसुषसेज सा
ज : हिमरचित षचित नग मनि बिराज : कोउ जु कतवृषभ कोउ जुक
त बाज : बारन सजुकत कोउ रथ बिराज : प्रति करसनारवाहक अम
व : मदमग्गरजयुकारमेव : जेचलत दृढ जोजन नजमाज : करतीअ
नेक हित राजकाज : सत जूथ संग नामी समर्थ : प्रति बेगवंत बाहक
सुअर्थ : मनिरतन हेमबकुमुल्लिमांन : महिकोषथांन धन अप्रमान
सेणंघव सत्र सालासमाज : सुत्त सस सत्र अस्सत्र साला समाज : अनेक
नेजसाल अनूप : नवत्रिम होत अनेकरूप : पलत्रिया विधा मि
लि अनपूर : समपंच साषषरस सपूर : घृत ऐक बिबिधि रचनां
बिधान : दस सस मद बिनोजन निदान : अनिवारत भोजनकरत
आनि : अनेक मनुज मन मोद मांनि : षटदरस ताषषट मिलि महं
त : जयकि श्रिजपत दससरपुजयंत : अनेक दान पावत अनेक : बिद्य
गमानगुन बिधि बिबेक : चतुरंग चलत दल सूर चित्र : नव झूमि उर
गबस होत नित्र ॥ तजि जात राज दुरजन दिगंत : तेल हत अनत अनि

मेहिमाअभेव: दिग विजैतनपत दसरथदेव। सिधि
गहनईत: उदयास्त तरजमहिमाअभेव: दिगविजैतनपत दसरथदेव। सिधि
सन चामरछत्रसज: आपाअबंउराजाधिराज। उदिमप्रमान दलबल अपार
विसतार सिंधु बियह विचार: महिदुरग दुरगआपाअनग: अतिदया अ
नपाअंगअंग: बहुबंधसंग विरदैतबीर: सबकारनआरसबसस
धीर। अवनी बिलासह्री उअनेक: अंनतेगतपत नपछत्रयेक। अनुकू
पापात्रजसजपतजोनि: विद्याधरचारनजसबखानि।।१।।इति राजाद
सरथउत पति राज अबिरनं नो।। अथ राजा दसरथ रानी केकई बि
रदान प्रसंग। कबिरुवाच।। दोहा।। इक्ष्वाकु नरेस जयतपुर: अहोसबर
इनु जात: कुंतराज बिख्यातकुल: अमितधजालघुत्राला।।१।।तेअपुंच
मायाप्रबल: करम अप्रसाधसक्रोध: जातिस्वत्ताविकारदसों: उपजे
बैरविरोध।।२।।देवासुरकछुकालतो। इंद्रपराजयपाइ: नृपदसरथ
को चिंतवन: कीनोहेतसहाइ।।३।।देवराजसोंदसरथहिं: प्रगटपुरात
नप्रीति: गजहिधुरधुरहोतगज: राजनीतिथहरीति।।४।।नृपमगीया
रन जिहिसमय: केकेईत्रीयसंग: आतुरआयौ इंद्र तहां: बनहीनयेप्र
संग।।५।।इंद्रबाच।।सुरपतिजाचंनाकरी: करियेदेवसहाइ: राज
दसरथसुनतही: चलेनिसानबजाइ।।६।।सबरदानवदसरथहिं
नयेतयानकुथ: विषमपरसपरबीरबर: करतप्रहारसक्रुध
।।७।।नृपरथअहोकीलतहां: गिरीअलबधसुजानि: करअंगुरीकि
तकेकई: रंध्रनिबेसितआंनि।।८।।त्रीयकरपल्लवछिन्नथित: पतिहि
कोतिहिकाल: बिसमयगतअतिप्रभुत: नयोनृपालकृपाल।।
।।९।।प्रथमकउर्कनौसमय: केकेईबयबाल: कीनेबंदनजोरिक
र: द्विजसोंईनियोदयाल।।१०।।दीयबिद्यासजीव: देषिजगतिहि
जराज: सोकं मालीयमांनि सिर: करे सफलमनकाज।।११।।छंद प
धरी।। सोईसबिगरदविद्याबिलास: कीयसमयपाररानीप्रकास
जबनयेअसमाल अदिष्ट: अपआपसं नारतबंधुइष्ट: निसिन
ईजुथकीउनिवर्त: रनबेतरहेरसरोसरत्त: गगधारमरेकोक
सूरषेत: अनेकगिरेघारलअचेत: रनअजिरससत्रहतदिषिर
इ: केकईकरेकरपरसकाइ: छितछुवतमात्रबिनतविसेस:
नि: सेषतईपीउनरेस: पुनिगिरेदेषिसबसुजनटसूर: सजी
वनमंत्रसुजपिसमूर: रहिसमयजिवायेसुनरआंन: सजीव

नि बिद्याबल बिधान : उग्रितबे राज दसरथ अंग : अतिबंदौ कोधन समात अं
ग : तेउ गे सबे संग्राम सिध : अनुअय आ निगटे प्रसिध : निसिर अंगुध दसर
थ नरेस : परब्रह्म मध्य कीनो प्रवेस : मयुकरे असुर बल मारि षेत : सबरस
बंध सेना समेत : सबरै समारि कीनो संघार : कोउ ग येन जिपे निमि पार : स
ग्राम जैति बाजे निसान : बनि रहे गगन बिकुधनि बिमान : संतुष्ट भये जो
लोस याम : बे बित्रकर मपति दे षि बाम ॥ राजोवाच ॥ कीय प्रथम जु रह
रथ प्रमान : अरु मृतक जिवाये बीर आन : कतकर उयत्रीय उत्तय काज :
अबले हु उन्त यबर दान आज ॥ रानी बाच ॥ स्वामी प्रमान हु तप तिस
मीप : मांगो तब दीज हु बर महीप ॥ राजोवाच ॥ अति प्रेम प्रीय प्रीयक ले ये
हु : हो रहे छाम नम हन तब ही लेहु ॥ कबिरुवाच ॥ सुरपति सहाय कीनो नरे
स : दिग बिजय करी आये स्वदेस ॥ २६ ॥ मन हन बंका मंथरा : धात्री बध
बेस : कैकेई हितकारिनी : सबध हकाज प्रवेस ॥ १ ॥ कारन दुव बरदा
न को : दसरथ नृप जो दीन : रानी धात्री सो रहसि : कतो जमो क्रम कीन :
॥ केकई ॥ मातारा बे गृह में : मास नृत निरधार : बात हृदय गत राषवी :
अप नै बुधि उदार ॥ ३ ॥ इति केकई बरदान ॥ अथ श्रवन नृत
पसे बध प्रसं ग ॥ कबिरु ॥ दोहा ॥ इहि बिधि दसरथ नृपति सुब : राज
करत जग जीत : बेस बिना बसु अज सु बन : गवत त्रय पुर गीत ॥ १ ॥
ऐकै समय कछु काल गत : आषेर क नृप आर : बे गे तम सा सरित तट
थान अदि ष्ट बिनार ॥ २ ॥ देपति दृध निकु भ मुनि : श्रवन पुत्र तिन संग
बिधि कृत समय निसी थबन : त्रिषा बिकल भये अंग ॥ ३ ॥ श्रवन गये जब
कलस लै : सरिता जलके काज : प्रति कूल जन सबद सो : जांनो नृप गजरा
ज ॥ ४ ॥ सबद बेद दसरथ तहां : रघु मो असो धनु तांनि : सो लागत बोले
श्रवन : हा हा हत रहि बांन ॥ ५ ॥ सुनो नृपति मनुष सबद : उ गि आतु
रत हां आर : द्विज हत्या लय त्रास ते : रह्यो मन स भ्रम छाय ॥ ६ ॥ श्रव न
बाच ॥ तब हीं बोल्यो श्रवन मुनि : वे स्यपुत्र हूं राज : अंधक मम मात
पिता : आयो हूं जल काज ॥ ७ ॥ आतुर जल लै जा हु वे : बिकल त्रि
षा मय बाप : के मरि है अप मृतु बस : नांतरि दे है श्राप ॥ ८ ॥ क
रहु बिसल प महीप मुहि : र हो उपचार न आन : काढत ही सर श्र
वन के : कीनो प्रान प्रयान ॥ छंद पद्ध री ॥ ले गये नृपति जब क
न नीर : मुनि आहट बोल्यो मुनि सधीर ॥ अथ दंपती रे पुत्र

श्रवन आये सुदेस ॥ राजो उ ॥ इहि समय कछै कोसलनरेस भें हत्यो
श्रवन बन जंतु जांनि अपराध नये अग्यात आंनि ॥ मुनि बाच ॥ ह
पुत्र पुत्र कहि बिषम बांनि : मुरछागत आंत मउ षमांनि । अपराध बि
ना कीय हमें अनाथ : इत पुत्र नहु गहि चलऊ हथ्य ॥ कबि रू ॥ तिनहि
नृप गये लै सरनि तीर : जहां पस्यो श्रवन सर हत सरीर : दंपती अंध तह
पुत्र देषि : उर लाइ बिकल बिलपत बिसेषि : उगि दूर जिलै जु लि सुतहि
अंध : संसार छुट्यो सब सबंध : बस सोक पिता माता बिसेस : सुत सं
ग कस्यो कृत तुक प्रवेस ॥ अथ दंपती ॥ दुष पुत्र तज्यो ज्यों हम नु देह
सुत सोक मरहु नृप निसंदेह ॥ कबि रू ॥ इहा दयो श्राप मुनि दं
पती : जरत को धउर ज्वाल । इहि प्रकार तापस श्रवन : नयो अचां
नक काल ॥ १ ॥ इति श्रवन बध प्रसंग ॥ अथ अंग देस अनावृ
ष्टि प्रसंग ॥ कबि रू ॥ अंगदेस चंपपुरी । लोमपाद नृपतास । अ
ना वृष्टि द्वादस बरष : नदी नवन ज्यौ बिनास ॥ १ ॥ चिंतातुर तब लो
मपद : नयो दीन आधीन : कहुन पावत थाह कछु : तातें चिंत मली
न ॥ २ ॥ त्रिकाल ग्य देवग्य द्विज : ते बोले इक काल : कारन चिंता देस
को : तिनहि कहौ भुवपाल ॥ ३ ॥ द्विज बाच ॥ द्विज निकं लोत बं नृप
ति सों : औरउ पार न को इ : श्रंगी रिष आवे इहां : तो पै बरषा होइ ॥ ४ ॥
ऐसी हैं वत अंत : निसचय अंग नरेसु : नास हो हि दुरन्नपतो : बरष
हि देव बिसेस ॥ ५ ॥ कसिप देव प्रजापको : पुत्र सु बंडक नांम नियु
त करम तप सांनि रत : बन निरहत बिश्राम ॥ ६ ॥ श्रंगी रिष ता के
सुवन : ब्रह्मचर्य बय बाल : रहत सदा अध्ययन रत : पितु आग्या प्र
तिपाल ॥ ७ ॥ राजो बाच । लोमपाद नृप गुर सचिव : बोलि कस्यो य
हमंत्र : किहि बिधि आवे श्रंग रिष : बसत उद्यान सुतत्र ॥ ८ ॥ देहु जे
के आपदे : तातें ठीयत राइ : बलक रिनावे बिप्र वह : करि वोएकउ
पाइ ॥ ९ ॥ प्रव कुबारि बिलासनी : बेष बिचत्र बनाइ : कारने हैत
उपाइ करि : ल्याव हि मोह लगाइ ॥ १० ॥ कबि रू ॥ नृपनहा पुर दीन
इका । दयो मांन बहु दान : सो आपु बस सुंदरी : पन कृत कर
प्रयांन ॥ ११ ॥ ते मुनि बेष बनाय : गई जहा रिष श्रंग : करे पूरस
परन मत कृत : उपजे सुष अंगअंग ॥ १२ ॥ आवन गमन जु बेष र

धनागपारसपवित्र:कौसलसुताहिसोदयोअत्र:जोरसोअरधअवसे
षअांन:थितथालकस्योसोउत्तयथांन:कैकेयसमरपितयकेकीन:
केअसुमित्रहिद्वितीयदीन:सोगतासिधमषत्तेसकाम:बिधिगु
कतदानदीयनृपसबाम:दसलदसपतिकरथरमधेन:सोपूजिबिप्र
दीनीसुषेन:दसकोटिसुब्रणमयपूरनदान:मिलिरजतकोटिदस
चोकमान:द्विजबंदिचिरनकीयबिददेव:जगपअंतकस्योमंज
नअजेव:क्रमजुक्रत्रीयनपयतदकीन:निसचयप्तरंगस्तसथि
तनवीन:प्रतिगरत्तअवधिबसदधपार:समअंगरूपलदनसु
नाद:॥ दहा॥ प्रसवकालनिरबियनचो:नहादसमासबितीत:ज
गतआसबिस्वासतजुत:मनुआगमनपुनीत॥१॥कबित्त॥काबि
त॥ अवधिपारउतपन:अहअवधेसअवधिपुर:पितुदसरथपृथेस
यरमरयतारबहनधुर:पतिब्रतासपुनीत:मातकौसल्यारानी
हसबसअवतंस:जातिछत्रीयजगजांनी:षलगयेअसितमितति
मरषय:हितउद्योतरघुबंसउव:परब्रह्मपरातमपरपुरुष
नयेरामअवतरतुव॥१॥रितबसंतमधुमास:मिलतपषसे
तमथ्पदिन:अमृतसिधजुतजोग:नदत्रअतिजितउतरायन
मेषतानवृषसोम:बुधकंन्याककरगुर:सफरसुक्रसंक्रमन
सेषयहपंचऊंचसुर:सगुनजयेनरहरसुकबि:जतथानउरपर
जरे:काकुसथबंसनवमीसुतिथि:रामचंद्रअवतरे॥२॥अर
कबंसप्रकास:अवधिबित्रीयअरणोदय:कवसल्याप्राचीसु
राम:रविअगरजगतजय:सत्तयनिसाचरतिमर:किरिदिग
किरनिप्रकासीय:दुष्टकुमुदसंकुरीय:सत्रुनहत्रबिनासीय:
नरहरकबिचकवाजयजपत:असुरचकोरसंतापउर:दसबद
नघूकमनमकउव:प्रफुलितसुरपंकजत्रिपुर॥३॥अवधिसिस
रअवसांन:जनमप्रागमजगजांनीय:अमरवृंदआनंद:निषल
बनपुहपनिधानीय:कंटकत्तयनरटरीय:सीतदाहकनहीस
जीय:संतकमलबिकसंत:किलिकबिकोकिलकिजय:मु
निमधुपमालगावतमुदित:बेदनीतित्रयबातबहि:जगअग
टिरामरितुराजज्यों:मिलिउछवआमोदमहि॥४॥मधनिसा
नथुनिगरज:असघनघराबंधिउर:मिलेमनोरथजलद

मोल- संतचातुकरटआतुर सुरसिषंकिमनमुदित जोतिनिदितआलसीय
किलिसरितनिथरीय निरुषमुषसिंधु बिलासीय बरषासुकनकबुंदनि
वदीय बैरबिनालनवासवन मिटिचितारे रवन्दपतिमन रामस्यां
मयकआगमन ॥ सोरठा॥ मंगलबंदनमाल बिमलथालअरध्य व्ह
गे सुरनरसबररसाल जयजयजयरघुकुलतिलक॥१॥ दोहा॥ बिबुध
निसानअकासबजि सुमनवृष्टिसंसार तीनलोकआनंदभव रामचं
द्रअवतार॥१७॥ छंदबेताल॥ कौसल्याबाच॥ परमातमा अनादि पीरू
ष सतरूपसनातन नीलोत्पलदलस्याम सुंदर पीतबासननास
ने दिगअंतभुजअरुनआनो मकरकुंडलसोनये मनिजटितक
नककिरीटमंडित अलिकअलिमनछोनये सुनचारिआयुधचारि
भुत हृदयम निसोभासनें केयूरमुकतामालकंकन बिबुधन्दष
नतनबने गनरीसकोटिनअग्रबरती कुलअमरबंदनकरे बनमा
लउरसि बिचित्रबिलसत हासचंद्रिकचितहरे करिसियमनिस हेमकि
किन नवलरूठतनूपरे जोतिमयनषअरुनराजित रूपअदभुत
मरहरे सोदेषिकौसलसुताबिसमत नहीचितभ्रमाव ही आनं
दधारअश्रुअबिरल प्रेमथाहनपावही करिजोरिकरिफिरिपरम
करुना बारबारबषानही अभिलाषपूरननयअपनें जनमस
फलजानही तुमपारब्रह्मअपार अतुल परमधामअमानीये ज
गकरनपालकनासजगजित जगनिवाससुजानियें रविकोटि
परप्रकाससराजित ईसकोटिमहेस्वरा बिधिकोटिकोटिनबिस्व
श्रजता कालकोटिभयंकरा हयमेधकोटिअधरमहंता मरुतको
टिमहाबली ससिकोटिजगदानंदस्वामी कोटिसुरनगनसंब
ली बैस्रवनकोटिधनेसबेनव सक्रकोटिबिलासनं त्रैलोकवं
दितपरमपदसोई कोटितीरथनिवासनं परपंचकोटिनअतुल
सुंदर षिमाकोटिबसंधरा समुद्रकोटिगंभीरसोभा कोटिबिं
नयकरा बपुकोटिजग्पपुनीतपूजा देवदेवदयालनो सुनम्र
ष्टकोटिकसुधाल्पावक परमगतिदारकप्रनो ब्रह्मंडकोटिसु
बिपुलबिग्रह बिमलजगजसबिसतरे कामधककोटिककाम
दाता बिस्वजितबिस्वंतरे कचकूपजिहिब्रह्मंडकोटिन नियत
निष्कलनिवासये सोईअमितबिग्रहममउदरगत प्रेमभावप्रका
सये यहचरितलोकबिडंबनालगि करनकारनहेत निगमग
वतनेतिनित मनबाककायसमेत ॥सोरठा॥ आदिमध्य

अवसांन : रहितअसंतवरूपयह : भरनप्रेमप्रमांन : विस्वनरममजीयवस
ऊ॥१॥ रहतस्वइछाचारि : जोयहउसतरसुरनिऊ : मोहिआपेनमुरारि : मा
या बिस्वबिमोहनी॥२॥ बिस्वातमा बिसेषि · रूपअलोकिकरावरो · अ
बअदभूतअसेष : करिये अंतरध्यानक्रम॥३॥ बालत्तावरघुबीर : अ
षिलईससोईअनुसरऊ : सुंदरस्यामसरीर · देवमनुजपावहि दर
स॥ सह॥ श्रीभगवांनोवाच॥ मातजोअस्तिलाषतुम : वछित
बेदबिधांन : सोसपूरनअवधिबस : ऊहैप्रगटप्रमांन॥१॥ तुमकीने
तिहिहेततप : दंपतिबनदमिदेह : मातारूपअनूतसम : देखानिस
देह॥२॥ अबजोसंबादयह · करेपागनि : काम : सोलहिहैसारूप
ता · अंतकालममनांम॥३॥ कोसल्यहिप्रबोधकरि : बालत्तवअ
नुसार : रुदनकरनलागेरहसि · नरहरके निसतार॥४॥ सेसुतिअ
ईमातसब : बंसजुवतिबनिर्बंद : बालकरूपनिहारि निज : उरनिबडे
आनंद॥५॥ जुवतिनकीनीआरती : बालकबिमलवधार : हरषतहै
सबलेतहे · बारंबारबलाय॥६॥ दईबधाईदसरथहि · दासनिनव
बधार : नृपतिआनंदमगनभो : मृतकप्रानसेपाइ॥७॥ समयजोति
गुरबिधिसंजुत : देवनथाबलिदीन : आरथनांदीमुषसहित : जात
करमसबकीन॥८॥ मंगलदुदुभिगगन : बजेएकहीबार : नर
पुरसुरपुरनागपुर : उछवनयेअपार॥९॥ आनंदमगनजुलोकय
ह · सुकृतनकाफलजांन : येकअहोनिसिरहिसमय · निकसोमास
प्रमांन॥१०॥ बासुरअंतरअवधिबस : गानन्तयसुत्तगीत : सांवरू
पकेकयसुता : जायेपुत्रपुनीत॥११॥ समयप्रसूतसुंदरी · नरसुमु
मित्रानांम : सरसुलछनतनयसुत : महाधरमकेधाम॥१२॥ करेतिन
ऊकेजातकम : जथाबेदबिधिजांनि : तबतेदिनदिनसुभअमित : ब
सेअवधिपुरआनि॥१३॥ जबबितीतनये दिवसदस : गुरवसिष्टद्विज
आर : देपादारछअरजिनृप : बंदनकरेबनाइ॥१४॥ बेदप्रनीतसह
मबिधि : करेजथाक्रमकाज : नांमकरननिरबिघनतो : सुरसंतोष
समाज॥१५॥ सो र ग॥ महिदेवनिकेंअंसः सोसनदीनृपएकस
हस : रतनस्वरनअभिराम : गावबसनअनके गने॥१॥ कोसल्य
तराम : केकेईसनवन्तरत · सोमित्रेयसुनांम : लछमनसत्रुघन
नयसुत॥२॥ छंदबेताल॥ एकदिवसकोसलसुतअतिहित कुवरत
नमंजनकरे · सोगंधलेपनबसनभूषन · बिबिधअंगअंगबिसतरे ·
पयपानदैपीयूषप्ररन · सुपदपलनांलैधरे : तबमंदमंदझुलाइमा

ता राम निंद्रावसकरे : पुनि मातजाइ अन्हार मंदिर : सुक्रत निमहित्रनु सरी॥
कुलदेवि देवि आइ रचना करि : हुत बिहत प्रजा करी : पुनि आइ जननी पाक
साला : रामरूप बिलोकयौ : तहा करत भोजन देषि बालक : नयचकित
विसमय त्तयौ : पुनि गई फिरि जहा पुत्र पलना : मोरु कीने सेन : तहारे
मपायो सुषहि सोवत : उपजि चित अचैन : उर कंपरो मउ चार श्रुतिसय
असन में हि आइ : तिहि जाति भे जनक रत तिहि गे : पुत्र व फुस्यो पाइ
नयधर कि छतीयां उपजिमन भ्रम : धरति नां हिन धीर : अवलोकि उअ
गरूपएके : सो चिस्न निसरीर : जबराम ब्याकुल जानि जननी : दीर
घरूप दिषाइ : कचकूप प्रति ब्रह्मंड कोटिन : मेर मुषमु सकार : रवि
सोम सिव बिधि : सक्र दिगपति : देव दानव नूतजे : गिरि सिंधु सरित तंर
ककांनन : चराचर अनन्त जे : अनग निति कालजु कर्म गुन गति : स
कल पनिसुनार : माया प्रबल मन बच अगोचर : देषि सं भ्रम पाइ
तन पुलकि कंपत नयन मुद्रित : भ्रमत चित्त सभीत : इहि दिसा जननी पु
निति देषी : हसि कलो मुषमीत ॥ श्री रांमो वाच ॥ छंद पधरी ॥ यह च
रितमात देषौ जु आज : सरब थागो पिकरिवो सकाज ॥ कबिरु कि क
रिमंत्र जननि सो यह कृपाल : बहु स्यों तये अंतर ध्यांन बाल : यह च
रित कहु जाने न आंन : परब्रह्म प्रबल माया प्रमांन : अनुसरे बाल
लीला अनंत : सुष देत कुटुंब पितमात संत : अवधूत धूरि धूसरित अं
ग : परब्रह्म बिगत माया प्रसंग : किलकारि तिजत कबहु सकोप : उरव
नि मनमांति गओप : बससमय अनप्रासन बिधांन : गुर करे कर्म नैगम
निदान : हरि मातगोद लीने सरेत : दधि तंदुल मिलि मुष कमल देत :
भुवफ्रं लिस कत सु चलत नाजि : बदन दधि लिपउर कर बिराजि
हरि छवि हे रि जननी सहास : परत घरलो रिदेत प्रकास : पुनि
लेउछंग अन्हवाइ पूत : यों करत बाललीला अकूत : बनि बाल बसन भू
षन विसाल : हरि कर जचक्र उर मुकत माल : कच सांम सघन बक्रुत ब
रूय : अनु घेरि जलज मिलि भ्रंग जूथ : पदर निति हेमन परम हास : ह
गिवलनि मंद किलक नि सहास : इत्यादि बाल लीला अपार : बिसत
र हि देहि सुष बारबार : जब नयो समय गुरराज जांनि : आरंभ करे
सब सो जग्यानि : सुत लगन सोधि पंचांग सुध : पुनि होम बेद मंत्र
नि प्रबुध : क्रम जुक्त सचूड़ाकरम कीन : द्विज पोष तोष बहु दान
दीन : ब्रह्मादि अगोचर मन सि बानि : जिहि जोति फिरत भोजन

सुछिप्र : सोईमनुजरेहथरित्रहसमूल : नृपअजिरकरतकीउनुकूल :
खेलतबालापनबिहार : अतिचंचलसेसवदसाआर : सुनसामगे
सुंदरसरूप : उतमांगकाकपहाअनूप : कोपीनपटपरिधानकीन :
मध्यदेसमोजीनवीन : जग्योपवीतगुरमंत्रजाप : आग्यानृपद्येबासिष्ट
आप : अध्यनहेतगुरअेहआर : ॐनमोसिधिसंथअनुपार : मनब
ललगेबिद्यानिमोऊ : संथानवज्ञाचतत्तोरसोऊ : गुरगम्मतयेजब
हारग्यांन : सबअंथपटेपूरनप्रमान : जुगजुगमनिगमजिहिस्वासज
नि : संथाहिलेतपटिकापानि : पहिछिनिधरमबिद्याप्रकास : संआ
सिधआयुधअभ्यास : जलतरनभस्त्रबिद्याअजेव : आषेरकरम
पोरुषअमेव : अहिचापबानकटिकसिनिषंग : अभ्यासंतमनउथनी
अनंग : जमदादषडग सकतीसजाप : आकरषचरमबरबीरओप : अ
स्त्रअस्त्रबिद्याअपार : बाजीसुजानगतिचितबिकार : बयपातस
हजबिद्याबिलास : संगराजपुत्रषेलहिसहास : अनुसरहिराज
नृपनीतिअंथ : समप्रीतिअनुजसेवतसुसंथ : सुतरामलषनमिलित्र
४ मसिध : पुनिनरतसत्रयनदेसप्रसिध : पितमातचितजिहिमोदपार : स
कैमतरामतेहीसुतार : अनुसासनबंधुनिदेतआप : यहपरमधरम
नहीलगतपाप : नितसुनतधरमसासत्रनिदान : पुनिप्रेमनेमसंजुत
पुरान : उठिप्रातपितादरसनहिआर : पूजिगुरद्विजनकेलगतपार :
प्रतिदिवसजननिमंदिरसप्रेम : मिलिकवरकरतचोजनसनेम : स
बसविवसुनतकबिसररसंग : पुरराजकाजपरिषदप्रसंग : रहिनं
तिहोतबासुरबितीत : परचारधरमपृथीसप्रीत ॥ इतिश्रीराम
चंद्रजनमप्रसंग ॥ अथसीताजनमप्रसंग ॥ कबित ॥ दोहा ॥ का
लांतरनरनाथकोऊ : मगीयासकतमहीप : बसतजहांमुनिबंदब
र : गोतिहिथांनसमीप ॥ १ ॥ ध्यांनाबसथितमुनिकुतो : नृपसतु
कारनकीन : तातेदुष्टसुताबजुत : मनकीयक्रोधमलीन ॥ २ ॥ प
ग्येनृपतिअनीतिरत : कोपअरुनकृतनैन : अंसहुमारीअवनि
को : आनऊजुगनरिअेन ॥ ३ ॥ पापनिमाग्योअसनृप : सोमुनिबोल
तसिध : काटतबक्षअंसहुम : संपतबेदअसिध ॥ ४ ॥ तहांउपद्रव
तिनकस्यो : मुनिनमहादुषमानि : रुधिरनिकास्योदेहतें : च
रिघटदीनोआनि ॥ ५ ॥ अयथस्यो घटअनुचरनि : रुधिरपू
रिअयरूप : ताकेदेषतमात्रतहा : बयोकालबसनृप ॥ ६ ॥ ता

ीसमयवसिष्टतहां : आइमिलेरिषराज : देष्योदुष्टस्वाग्रति : असनवतअत्रक
न :॥ बसिष्टउवाच ॥ छंदपधरी ॥ तबबोलिसविवपुरलोकतास : कहियोव
सिष्टनिकसेप्रकास : बलछांडिचरनलेगजुवाल : कैवंसनासकेहैंअकाल :
कबिरुवाच ॥ नृपपुत्रगयेतबरिषनिकेत : मिलिसबेराजजुवतीसमे
त :॥ सूतउवाच ॥ सोदीनवानिकैकरीसेव : दीयदंडअनुग्रहकरऊदेव
मुनिअग्रयरुधिरघरधस्योमूल : कृतदोषहरऊधेसानकूल : सप्रसनन
येमुनिरस्योआप : बऊकरतदेषिअबलाविलाप : जबबंस्योबंसनाव
बिनास : अतिहरषबालत्रीयगयेअवास : मुनिनयेसबेमिलिमनम
लीन : कुंतसोईनिवेसतनमिकीन : अनमोघरुधिरवलब्रहमअंस
पुत्रिकाउपजितिहिजगप्रसंस : पूरनसरीरलोगअवधिपार : तिहिबा
लसबदकीनोसुनार : रिषलयोकाढिसोईघरसरूप : निकसीअजे
निकंमाअनूप : कृतजातकरममुनिवरप्रकास : सुनबेदमतीदयोन
मतास : तिहिउपजिउयबैरागताम : धृतब्रहमचर्यआचस्योबाम
आबालब्रहमचारनिअरेह : दैवहितिह्मिरपतकीनदेह : तपसनि
समूहमिलितपतताप : अरषानसीतग्रीषमबियाप : अतिकरतिकष्टज
दपिस्वअंग : स्वाभाविकसोभाबढतिसंग : बनसघनसुगंधआश्रमवि
रज : सुनसंगतहासाधीसमाज : इकसमयतहांदससिरअजीत : अ
तिबलीअसुरआयोअनीत : तिहिजोनिअजोनीजगीताम : बसजीत
बिवरगतंनरईबांम : पापिष्टद्वारपरत्रिम्हपार : सोईथसेरबिवरत्र
पनेसुनार, उग्रिरोमत्रीयाकंपतसरीर : अकुलारथरकिछतीयाग्रथ
र : स्वाभावजोतितनतेप्रकास : तहांदेषिअधमदसबदनतास : बल
कलिकस्योतपनंगबाल : सोदुष्टअसुरषलसुरनिसाल : बपुससत्रछे
दकीनोबिसेष : त्रीयरुधिरपात्रपूस्योसतेष : सनिऊतीतापसीयेक
साथ : हरिरुधिरपात्रतिहिंदयोहाथ : बेतिकासरितउपकंठगबीर
मजनीजुवगाळवघरसधीर : पुनिकलेवरसाननसोप्रकास : नि
सेषकरोतवबंसनास : अवतारद्वितीयरहिलोकआनि : कुलरादस
भोऊछांडिकांति : थोकहतमात्रतनउठीआगि : ज्वालाकरालअरु
मंडजागि : तरीतसमसकेधानलसुनार : हीयसोकलोकनरी
हाहहार : तिहिरुधिरपात्रबेतिकातीर : सबिंदुमिगाडिराभ्योसथ
र : [illegible] :सुन

अंगस तिलकनसुन्तार॰ रहिसमयरमंजुवृतरीझार:कनुकाजजनकयारं
नकीन:प्रभुबोलिसकलमंत्रीसबोलि:संसारसिथजुवजगपसाज॰ नुवसे
धिमृछि छिजबेस्नाज:नवकाजकरतथितिसोधमूल॰ नहीपोदिअवनिरूक
पुरुषकेत;भितिवितहाराजरानीसमेत:कनकमयजोतिहलकनुनिकेत॰
हलसीतअयतवृअस्करेर; सहकैनानिकसोपात्रसोर:जोतहामहाविस
मतनुन्रूप:सोअतुलदेषिकैनासरूप:आनेदपुहपबरषाअकास:पु
नितरीगगनबानीप्रकास॥आकासबानी॥ पोषकुविदेहसुत्र
सप्रेम:निरधारनिगमकरिसहतनेम:कारनयहउपजीदेवकाज॰
राखियेजतननिथलेसराज॥कबित्त॥ हलसीतसुषसगरीसह
स:तिहिनिकसीसीतानामतास:करिजातकरमनानाप्रकार:बाजि
अगोनमंगलबिथार:नपअरेवदीकैन्योअनूप: साध्यातचिन्हलछमी
सरूप॥ नहा॥ दृहमजपतिमषबिषै॰तोसुरसंकरजुथ:ससत्रअ
सत्रप्रहारसो:करतपरसपरजुथ॥१॥ कोयाधिकहरदहकहे
सुरनिसमेतसंघारि:उपजीचितगलानितहा:दयोपिनाकहिडा
रि॥२॥ चापसुपोमिथलेसके:आंगनपर्योसुआनि:उठैनपुरुष
अनेकसों:मनरहेलजामानि॥३॥ तादिनतेवहचापतहा:पर्योर
ह्योथलपार:सुरनरअसुरनसवनसे:गेलिनसकेउगार॥४॥ कालं
तरतहांजानकी:उपजीरूपअनूप:कैमाराजाजनककै प्रगटर
मोअनूप॥५॥ सीतासतवृतसंजुकत: हरकोधनुमनिहारि॰
प्रतिबासुरपूजितसतछि:मनकैमवचनाविचारि॥६॥ छंद प
धरी॥ प्रतिदिवसधनुषआकरषिपोति:वहिगमसुचोकादेत
आंनि: पुनियरिपिनाकपूजनसप्रेम:निरधारमहतयहनित
नेम॰रकदिवसदेषिसोजनककुआर:सीताजुचापपूजितसुतार:चित
महविदेहसहकीयबिचार: बिधिनीतिधरमयहकिबिहार॥जन
ककबाच॥ केनावततिपुनंवहोरकंत:संजोगबनेसुषकन्हसंत
कवनेमजवकहितकनिकाहि:अैचेपिनाकसोरीबरेयाहि॰
पनकैरपूरनमेरापुनीत:सोबरैसुषहिकैमकासीत॥रतिसी
तजनम॥ अथराजादसरथ घरे मुनि बिसामित्रआ
गमन॥कबित्त्वाच॥ बिटपसघनबनजलबिमल:मुनि
तपोथलपार:बिस्वामित्रपवित्रमुनि:आश्रमकीनेआर॥१॥
होतनतउपदेसतहा॰ संजुतरिषनिसमाज:जपतपसंजमनियमज

य:करतजथाक्रमकाज॥२॥ तिहिकाननअंतरबसत॰महादुष्टमारीच
सकुटंरसंगसुबाहुसो॰निलजनिसाचरनीच॥३॥ समयएकतहंगा
धिसुत॰कृतउदिममनुकीन॰सोधितपोथलन्ह मिसुन॰प्रारंभकरेप्रवी
न॥४॥आचारिजहोताअखिल॰पूजिबिप्रपरचार॰बेगिमधासनआपमु
नि॰सिधनयेसंस्कार॥५॥ कुंडप्रदीपतअगनिकृत॰बिप्रनिबिह
तबिधानि॰मंत्रजप्याविधिबेदमय॰गिराप्रगटनयेगानि॥६॥ छंदपधरी॥
सोसुनतमात्रअसुरअसाध॰बहुनिसचरपठ्येजगबाध॰कृतजथाउ
पद्रवआनिकीन॰बसमांसस्रोनबरषानबीन॰केदृष्टिपांसुउपलनिप
हार॰मघरलोनहिनसाहिजातमार॰बससोकनयेरिषविस्वमित्र॰
चितभ्रमतदेखिआसुरचरित्र॰मुनिबलेसंगमिलिद्विजसमाज॰
अजतनयतहांराजाधिराज॰अतिनीतअजोध्यापुरीआइ॰सोराजद्वार
पुहचेसुजाइ॰प्रतिहारन्रपहिंसुदयोपुनीत॰मुनिआयेबिस्वामित्र
मीत॰सामुहेआइदसरथनरेस॰परिपांइकरयोमंदिरप्रवेस॰तहां
प्रथमप्रेमजुतभोरपार॰सुतअरघकीनपूजासुनाइ॰पदकमलद
येआसनअमानि॰निजकुसलप्रसनकीनेनिदानि॰सुतचारिचर
नलायेरिषीस॰आनंदपाइदीनीअसीस॰पुनियेकपाइगदेत्रबीन॰
करजोरिन्रपतिमुनिप्रनतिकीन॥राजोवाच॥प्रथीसुकृतावृत्तरनप
वित्र॰मुनिकेहोआगमनहेतमित्र॰ममअहोभयेपावनमहंत॰सो
कहियेकारनपरमसंत॥रिषवाच॥अवधेससुनहुजिहिकाजआ
इ॰सबजातिसदातुममषसंहार॰हमकरतजग्यन्रपधरमहेत॰त
हांदुष्टनिसाचरदुषदेत॰नहीहोतजग्यपूरननरेस॰बिघनबहुक
रतराहसबिसेस॰इकमांगतहैंमदानआज॰जसलेहुदेहुराजाधि
राज॥राजोवाच॥तबद्यौबचननिसच्यनरेस॰सोईधनतुमहि
दीजेरिषेस॥रिषवाच॥संगचलहिरामलछमनसहार॰सुनहेस
जग्यपूरनसुनाइ॰येराजकवरपठवहुअनीत॰तोहोइनासनिसिच
रअनीत॰परिश्रवनबचनजबयहन्रपाल॰सरसेलगिअहारहद
यसाल॥राजोवाच॥राजादईआग्यामंत्रिराज॰सबसेनकरउच
तुरंगसाज॰मिलिसुभटसूरदलबलसमेत॰हमचलिहैंबिस्वा
मित्रहेत॥रिषवाच॥ मैंपरबसमयजानोमहीप॰सोदीयेब
हेसुनिबेसदीप॥राजोवाच॥करजोरिन्रपतितहांप्रनितकी
न॰यहसरबतुमहिंआग्याअधीन॰धनदेसकोसमसुताप्रजंत

मनहोरसुपेलीजेमहंत· संक्रमेचतुरथ्याश्रमसुन्तारः अवसेषआयुकछुरहो
आर· मुनिकरेअंगरिमममनयोग· सुतन्नयेरामकिजुगतसंजोग ·सोउकाकप
छ्यारीकुमार: ममआहिजेधकु रिकाअधार·तुमाधिजुधराहसदुरंत·तुमवि
कालगुजानतसुनेत· आकरषिमुखिआयुधअत्रास· प्रतुबालकजानां
हिअयास· क्रीडासरथनुहीकरतकेलि· मारगनसजतविनलाषमेलि॥रि
षवाचा॥विषवरनसिंघवरछित्रबाल· लघुकरिनहोगनयेनृपाल· विष
विक्रमअनमितजेजर्वंत· स्वात्तवासिध्ययेकलतसंत॥१॥राजेवाचा॥हमकं
डिकाजकीजेरिषेस· हमचलहिसंगसेनाविसेस· मषकरहिपूरनषल
मारिषेत· तजिसोककरऊविस्वासचेत॥ रिजवाचा॥कविता॥विम
लहेसतुववंस· अगस्थरराजवहेपुर: सोसमाजसोईसाज· सदाभुजि
तसोपेसुर· इसिवंदममवचनलागि· तनविक्रयकरयो: अषयवच
नरथ्यो· नीचमंदिरजलनरयो:· विथरीयकिनित्रयपुरविमल·सस
धरमतिहिपारसिधि: तिहिराजवेगिदसरथनृपति· वचनभंगनहीविद
विधि॥१॥कविरुवाच॥दूहा॥गाधिसुवनकेतिहिसमय: क्रोधअरुन
जिदेषि· गुरवासिष्टअवधेससों: बिनतीकरीबिसेषि॥१॥गुरुवा
चा॥तपबलविसवामित्रके: रामसरहिसबकाज· जयजुतजसजुतकुसल
जुत: वेगिमिलिहिगेराम॥२॥ मुनिकेमनहेरामभय: जानऊनियतनरेस:
ताते बिसवामित्रको: रायऊवचनविसेस॥३॥कविरुवाच॥आगमो
निवसिष्टकीः कीनोंनृपतिप्रमान· तेजनतावप्रतावजुत ·मुनिहि
दयेवकुमान॥४॥रामलषनतहाबोलिनृप: विमलअंकबेगरि·दी
नेविसवामित्रसंग: कारनजग्परविचारि॥५॥अतिहितविसवामित्र
के: नृपतिलगेउगिपार: कंवस्वासउरकंपअति: नेनरहेजलछार:
गयेरामतवमध्यग्रह· मातहिनायेसीस: लेवलारउरलारतव:
दीनीजयतिअसीस॥६॥ विसवामित्रपवित्रमुनि· सिसुनिचलेलेसं
ग: जेसेबालकसिंघके· आगेचलतअनंग॥७॥ सबआयुधविद्यास
मर: दई सिसुनिद्विजदेव· सस्त्रअसत्रधारनसुकर: जुधजईअनजे
व॥८॥विद्याबलाजुअतिबला· देवनिरमितदोइ: कछुकपंथजव
अनुक्रमीय: रामहिदीनीसोइ॥९॥ तिहिविद्याबलजोगते: आपिन
छुधापिपास: आगेगंगापारकीय: कौसिकपंथप्रकास॥१०॥रिषवाच॥
कौसिकश्रीरघुनाथसों: कहतकथाभगजल: अदभुतसुनिसुनिहो
तहें: हरषवंतदोऊभ्रात॥ विश्वामित्र वाचा॥ सरविधिनरविध
मोनसिक: सिषरविषेकेलास: ताते चलीतरंगनी· सरयूनामप्र

कास॥१॥ ताके रहनतर बिषे बन इक रम्य बिसाल· नित्र नयांन कजोंत्करि से
वित तरल तमाल॥२॥ इक करूषमालव द्वितीय· महाबसत सुत्तदेस· परम न
वतेरं इके· विरचित रव बिसेस॥३॥ नांमसुकेत सुजछ इक· मनगन पुत्र म
लीन· तासु बन्रह्मा हेत तिहि· नियत तपसा कीन॥४॥ दीनें ताकहं दरस बि
धि· कारन पूछि कृपाल· कहीसु केतअपुत्र ता· सहि न जात उरसाल॥५॥
छंदपधरी॥ कविरुवाच॥ विधि कह्यो रेषितिहि दुषवियाप· तव पूर्व उप
जित प्रबल पाप· तिहि रोषन पावतु पुत्र तोहि· मनबांछ जु पूछत हेत मोहि·
पुत्री इक केहै अबधिपाइ· सो दुष्ट महापाप निसुताइ॥ कविरुवाच॥
तव उमजी केन्यां प्रथम नाम· निरलाज निठुर ताडुका नाम॥ताउ॥
करजो रिब्रह्म सों प्रनित कीन· दारुन सुताव जह तादीन· सुर जो निज
हसानिक सुताव· नय होहि कुटेव मोहि दुष्ताव॥ कविरु॥ निरबल
बिरंचि वहजो निनारि· बारन सहस्र बल दीय बिचारि· आठ मअगस्ति
केनिसाआइ· सोल सैजोग निद्रा सुनाइ· दारुन पसारि मुषके सदप· व
हत गी अगसत हि षान आप· तब बल अगसत तिन वलमीतास· पापनि हि
श्रापदीनों प्रकास· बेकृत रूप विपरीत बेष· राकसी नहीं सो करम रेष·
तजि जहजो निश्रांनी सताप· पितनासत बियहूम हापाप· दुष्ट सु उप
द्रवकरत देस· वसुधा करूषमालव बिसेस· बिपरीत करम बासव बि
चारि· मालवतें कादीन बेमारि॥ताउ का॥ बासव पहमांगो तिहि बि
सेस· सुषथान बासदीजे सुरेस॥ रिसवाच॥ तब रंद्र बताये बन जु त
हि· अब आज रहांते निकर आहि॥ दूहा॥ जो जनअरधप्रमान जिहि
बन दयो इंद्रबताइ· जंतल हऊ तिहि मध्य जोइ· जहन करऊ सुताइ
॥१॥ ताते जंतन जात तहां· कोउ के ऊकाल· महा त्रयानक लोक महा
बन ताडुका बिसाल॥२॥ वहे पंथहे निकट अब· नमिअल पब ऊनी
ति· महाबसत वहताडका· अति आसुरी अनीति॥३॥ मारग द्वितीय सफे
रम है· निपत तहांनय नाहि· करऊ बिचार कुमार तुम· जिहि मग आश्र
म जाहि॥४॥ श्रीरामोबाच॥ सो सुनि बिसवा मित्र सों· राम कही हसि
बात· तुमहि कहा द्विजराज डर· निकट पंथ चलु तात॥५॥ कबिरुवा
च॥ तब आये बन ताडका· बिसवामित्र बिचारि· सनय पंथ नये दास
रथि· चलिये सर संधारि॥६॥ सो सुनि राम सबे थतहां· लीनें चाप च
ढाइ· कृत टंकार व पन चिके· सब हि नघोष सुनाइ॥७॥ सुनत मात्र तो
ताडिका· पंथ निरोछो आंनि· घोरारव कीनों सघन· बिषमनयांन कवा
नि॥८॥ राम बांन सधांन कीय· निसचय देषी नारि· कहत अबध्य
गुसाधकुल· सरमो धोन संधारि॥९॥ रिसवाच॥ जानें राम ससे

जब: तहांबोलेरिषराज: याकोकछूबिचारनहीं: करिबोहैसुरकाज॥१॥प्र
मकुतीएकपापनी: दीरघजिह्वानारि: दैतबिरोचनकीसुता: मारीचक्रमुरा
री॥२॥बकुस्योमातासुक्रकी: दुष्टाचारनदेषि: सोपैचक्रप्रदिष्टसों: बामनक
ीबिसेषि॥३॥ सहसमत्तगजजोरसों: सदाकरतद्विजदोष: तातेरायवबे
गियह: मारिमिलवकुमोष॥४॥कविरुवाच॥ सुनतमात्रसरताउका
उरमहहनीआसाध: बमतरुधिरगतप्रानतई: बिप्रधरमकीबाध॥५॥प्र
थमपिसाचीपापनी: आपदृगयतईनांम: मुकतारामप्रसादसों: नईजही
निजनांम॥६॥आपबिमुकतसुंदरी: यहीदेहसुपाइ: रामहिकीनोंप
रिक्रमन: पायोस्वरगसुनाइ॥७॥इति ताडका बध॥ बिस्वामित्रा
श्रमआगमन॥ ऐकरजनितंतरतहां: आयेसमयप्रभात: चारनासि
धप्रसिधसों: बनसेवतबिष्यात॥८॥देषितपोबनरामतहां: उपजेउ
षअपार: कोलहमोनकुसिंयहै: कीऊनराजकुमार॥९॥छंदपधरी॥
मुषकमलकमलदलनेत्रमांन: सायुधसकोपतयेसावधान: बिसतीर
लबहकंधरबिसाल: आजानतुजाउतगजाल: छबिसतलहनजुकत
देह: सुनपुरुषसिंघसोदर्सनेह: कोदंडबानकरकटिनिषंग: मनुतपुतन
पआगीआनंग: वषअरुनस्योंमयनूतनबिसाल: पटपीतकसेकटितसुढाल:
बीरासनबेठेउनयबीर: सायुधसकोपउछवसधीर॥श्रीरामउवाच॥रिषि
राजसरसितवकसोराम: करियेद्विजजज्ञारंतकांम: सबआषारिजहो
तास्वतंत्र: मुनिकरहुबेदउचारमंत्र॥कविरुवाच॥समसांतरूपको
सिकसुनाइ: बिचिवेठेआसासनबनाइ: सम लवकसहसरिलजसमा
न: जेनिपुनबेदबिद्यानिदांन: प्रारंतजज्ञतवअनयपार: सजिचापबा
नरघुबरसहाइ: करतबेदधुनिमध्यानकाल: जाजुलिकुंडउठिआगनि
ज्वाल: द्विजदेतमंत्रआहुतिदांन: निरयोषमारीचुनिसाममगांन: दिगर
हेपुरितहावेदनाद: मारीचसुनोसेअप्रमाद: तहांआस्थिरुधिरब
रषासहोत: तमग्रसतिगगनरबिरुतिदोत: बिनुतितराममसंधां
नबांन: तिहिकरैमेपआकरणतांन: मारीचबातसरपंषमार: त्री
मतअकासकलोलसेनार: मेंलैलोमतजेजनतउदधिमाउ: सोबिह
बलसकितनतारसाउ: सरअनलद्वितीयमाल्योसुबाहु: तयोनस
मअसुरइंद्रनिउछाह: सबलषनसेषनिसचरसंघारि: ति:सब
करेनबेतमारि: आकासछयोसुरस्थनिआर: सुनतईपुहुपब
रषासुनाइ: निरयोषदुंदुभीगगननाद: बंदिसिधसुचारनज
यतिबाद: निसदिवससमरहिसावधांन: येकासनबाधेध
नुषबांन: बयसमबरषरघुबीरबीर: संघारअसुरकीनोंस

धीर॰ मषन्नये तहां पूरनसमूल : मुनिअसुरउरनिवटिपरमसूल : उमिराम
ल्षनसरितअन्हाए : सबनि तकरम कीनेंसुनार ॥दोहा॥ कौसिकजग
तिमातवरी : महिमाबरननिजार : जगपुरषनरदेहयह : तेजनक
रतसुतार ॥१॥ त्रितीयदिवसकरजोरिकहि रिषवरसोंरघुनाथ :
अवधिकहं गवनकरहिंअबनाथ ॥२॥ कौसिकतबरघुबीरसें : जाच्यो
सहतसनेह : कछुदिनदिनकरकुलतिलक : उरलनद रसनदेऊ ॥३॥ प्रे
मजुक्तरघुनाथतहां : रहेकमलदललैंन : रजनीतिमतधरमजुत :
सुनतदृढतचितचैंन ॥४॥ छंदपधरी ॥ अथजनकधनकजगपा
रनप्रसंग ॥ तेंहिसमयसोधिसुबलगनताम कीयधनुषजग्य
उदिमसकाम : आरंनस्वयंवररचिउछाऊ : बोलेनरेसअजनबाऊ स
बबोलितहमुनिवरसमाज : कृत बिबिधिमंचतहांनृपनिकाज : दान
वजुदैत्यराहसदुरंत : सबआरदेवरोषीअसंत : मुनिमनुजबीरर
नअपार : मिलिमहासूरसुंदरकुमार : इत्यादिआस्तुवपतिअ
नेक बिबसारजुकतबिक्रमबिबेक अतिदुहृदसानकआस्म
प : दुसाधिबाकआयोसदाप ॥दोहा॥ पत्रीबिस्वामित्रकहं प
ठईजनकनरेस : धनुषजग्यआरंनरह्यो : पगधारियेरिषेस ॥१॥ कौ
सिकतबश्रीरामसों पूछेसहतसनेह : धनुषजग्यकौतुकचलहि दे
षहियेहबिदेह ॥२॥ गुरआग्यारघुनाथतहां : पौरुषकरीप्रमांन :
उभासमयअतिहरषसों : कीनोंप्रगटप्रयांन ॥३॥ धनषजग्यमिथुलप्र
तिगमनं ॥ अहल्याउद्धरबप्रसंग ॥छंदबेताल॥ तबआइकौसिक
सुरसुरीतट बिमलथलजुबिसेषयो तरलतामंजरपुहुपफलजुत
रहतजनअवरेषयो त्रिनगुलमपल्लवबिपुलसंकुल गौतमसाश्र
मगनें : बनजंतबरजितपहमृगगन भृंगपुंजनगुंजनें ॥ रामबाच॥
तिहिदेषिश्रीरघुनाथबिसमत बचनकौसिकसोंकह्यो : यहमु
निजलतटबिमलपावन थलसुनिरजनक्योंरह्यो ॥ रिषबाच॥
पुनिकहेकौसिकसुनहुरघुबर पुरातनजोंमैंसुनें : जवतबदेवी
प्रबलमाया नियतनिगमागमगुनें ॥दोहा॥ राजसुतारकसु
दरी : नामअहल्यातास : ताकेलछनरूपगुन : तीनहुंलोकप्रकास
॥१॥ ताकोनारदइन्द्रपह : बरननकरयो बिसेष : सोसुनिसुरपति
कोभयो : अतिअनुरागअसेष ॥२॥ द्विजइकगौतमसोंपढौ : बिद्या
बेदबिलास : देतभयेगुरदछना : मुनिमुनिनदोसहास ॥३॥

गुर बाच॥ दीनी बिद्या धरम मे : ताके कछु न लेत : पुत्र चलउ अब आपने
सुत कल्यान समेत ॥१॥ सिष बाच॥ सिष कह्यो रिषराज सों : मन क्रम बु
धि समोइ : धरम हि बिद्या जो पढ़ै : जाकी सिध न होइ ॥२॥ गुर बाच अ
ब देख्यो सिष कै : मुनि मांग्यो हित मानि : आहि अहल्या नृपसुता : दे कु
दछनां आनि ॥३॥ सिष गयो सो नृपति पह : कीय जाचना आचार : दीजे कं
न्यां दान कुं : गुर हित मांगन राइ ॥३॥ तें ही समय सुरेस तह : आइ अहल्या
हेत : पुत्री मांगी नृपति पह : मन क्रम बचन समेत ॥४॥ द्विज के जानो
आपकर : इन्द्र महा नय आहि : दोऊ बात दुरंत अति : रह्यो नृपति चकि त
हि ॥५॥ नृपति बाच॥ कीय निरधार बिचार करि : दुऊनि उत्तर देइ : करे
पृथ्वी परिक्रमन : सु पै अहल्या लेय ॥६॥ भुव मंडल करि परिक्रमन :
पहलै आवै कोइ : द्विज अथवा देवेस मह : कन्या पावै सोइ ॥७॥ क
बि रु॥ कह्यो प्रमान जु बचन को : उठि गवने अकुलाइ : उनै मुधी सु
रभी जु एक : प्रसव समय द्विज पाइ ॥८॥ दीनी ताहि प्रदछना : बिप्र सहि
त बिस्वास : सिध कज न्यये राज सों : प्रथम हि मिल्यो प्रकास ॥९॥ छंद
पध्धरी॥ ऐरावत आरूढ़ि होइ अपार : सो मिल्यो नृपहि सातिक सुनार
तहाँ वहै आनि देख्यो द्विजात : सन्तप्यो चित्त न ही दुष समात ॥१॥ इंद्र बा
च॥ उचरयो इंद्र यह अप्रमान : ये ऐरावत तें को सज्जन आन ॥ कबि रु॥
कीय बिहँ बिदुष निरधार कीन : पद चिन्ह जाइ देषहु प्रबीन : जब
देष्यो तिन्ह गोलजाइ : पद चिन्ह बिप्रगज अपार : तिन आइ जथा
बिधि धरम तंत : बिस्तार सहित सब कहि बृतंत : तब गये सबै ब्रह्म
निकेत : सो कही बात कारन समेत ॥ ब्रह्मा बाच॥ बिप्र सों इंद्र उ
पज्यो बिबाद : मिथ्या न होइ बेद निम्रजाद : परिवेष उनय मुष गो प्र
मान : सो सत्य कुमंडल के समान : नैगम बिचार बिधि कहि निदां
न : द्विज देऊ जाइ कन्या सदान ॥ कबि रु बाच॥ द्विज ताहि अहल्या
दान दीन : कन्या बिबाह गौतम हि कीन : ले गये ताहि गौतम स्वाश्रम
निसबासर तप मित दंपति सनेह : पुनि प्रसव गौतम प्रकास :
तहाँ सतानंद नै पुत्र तास : सुंदरी परनहि न सुरेस : पूरबानुरा
ग तो उर प्रवेस : मानसिक बिथा उपजी अमान : अहल्या बिनु अ
वै चित न आन ॥ इंद्र बाच॥ सुरराज कही ससि सों सम्हल : करि
ये सहाइ केसा नकूल ॥ कबि रु॥ इक निसा गौतम आश्रम हि
आनि : ठग करम कह्यो उऊ कपट गनि : बिधु ताम्रचूड़ बानी बि

प्रात: परगास करी जों करतप्रात: सो सुनत उश्रो गोतम सुनार: आनी केहत
जल तीर आर: रिषरूप कस्यो तब देवराज: कीनों अवे समुनिय हि अकाज: गो
तम बिचारित ग्यान छत्र गान: जीयनरी कछुक बिपरीत जांन: पुनि आनि कु
टीमे दिय प्रवेस: अपने सरूप देखो सुरेस ॥ गोतम उवाच ॥ पापिष्ट कु
वन तू अग दिपाप: सठ करू तसम कैं है उआप: सा रूप देह मेरो सुनार:
अन समय अथम द्विज ग्रेह आर ॥ इंद्र उवाच ॥ नाम नीचो रवो सो सनीत:
ऊं हैं काम किंकर अनीत: मैं दुष्ट करम आच स्यो देव: अब त्राहि त्राहि अप
कुल अजेव ॥ गोतम उवाच ॥ मुनि नयो तह क्रोधा रमोन: दारुन सराप
दीनों निदोन: आकोर लुबध जि हिं नो अधीर: रोमांच देह दिग अवत नीर
कबिरु बाचा ॥ दससत जुन्न रीत हा जो निदेह: आकृत अ सन्न फल करम
येह: भगवान इन्न ये गयो नाजि: कीनें कुकरम जिहि अंग काज: अति त्र
सत्रीया कंपत अधीर: रोमांच देह दिग अवत नीर: शहिद साअहल्या लि
षि आप: संक्रोध दयो गोतम सराप ॥ गोतम उवाच ॥ पापनी उपलमय
देहपार: सिल होहि रहाबर जितस हार: अनजंत अजन बन रहु येह
सब काल सिलस्य निसंदेह: इक सहस बरष सहि कष्ट अंग: अतिसं
ताप बरषा अनंग: दिनकरन बंस रघुपति दिनेस: पथ जात करहिं
हि बन प्रवेस: अषिलेस छुव हि सिर चरन आर: सुन देह फेरि पाव हि सुनार:
कबिरु बाचा दारुन सराप नरी सिल देह: सो चल प्रान छूटे सनेह: अमर
बसे रिषज (?) आप: सिल नरी त्रीया तु गते सराप ॥ बिस्वामित्र उवाच ॥ अषि
लेस छुव जुअ बचरन अंग: सो तजे अहल्या उपल संग ॥ कबिरु ॥ ये सुन
त अयोग तके उधार: पद परस कस्यो लीला अपार: सो नरी त्रीया तजि प
पसुध: परत रुग्र अगहीप्रबुध: निजरूप कहे गोतम सनेम: अति मं
सोरी देषी सह त प्रेम ॥ अथ अहल्या स कृत कबित ॥ नील जल
द तन स्याम मंद मुष हास बिलासित: बसन पीत कौसेय कनककुं
डल मकराकृत: उर बिसाल उतंग नाल लोचन कमलाइत: कटि नि
षंग कर धनुर बान भुज जानु प्रलंबित सुप्रसन बदन सानुज सद
य श्रीय सेवित असरन सरन: अवलोकि अहल्या उचरीय हरि त्रि
लोक संकट हरन ॥ १ ॥ जिहि पद रज पावन प्रसिध बंछित बिरं
चि बर: जिहि पद रज पावन प्रसिध हित परस इंछ हर: जिहिं पद
रज पावन प्रसिध इंद्रादि उपासित: जिहि पद रज द्रसन उपरि
नव सिध अन्यासत: अपकरम नेग चुग वत अबिल: प्रति सराप
सिल नु रूपरीय: तिहि रज प्रसि · पावन · · · म:

धरीय॥२॥ जिहि हरि पद पंकज प्रसंग · गंगा पुनीत गति · तिहि जलमंज
न उरध लोक · पापिष्ट कुपावति · जिहि हरि निज नाभी सरोज · ब्रह्मा उत
पत्नीय · जिहि पद पंकज रज पुनीत · ओ गौतम स्रुति पतीय · तेई राम मनुज
बिग्रह अतुल · न वुम मदि गगोचर स्तये · तिहि नाम मोरम हि मांग्रमित ·
जिहि अनेक सुकृत जय॥३॥ जिहि नामो म्रत सार · रषीकत पसत्रिपु
रारे · तिहि अवतार चरित्र · बिचत्र सुरलोक बिहारे · सुर मुनि नारद से
ष · सिय सनकादि सुगावत · प्रति दिन जसन वनव प्रकार · नत औरन
आवत · असि मनुज देह धरनी धरन · सु हित इहि पद ध्यावर्महि · मिलि
उप पुराकृत करम मम · करि बंदन मुनि नारि कहि॥४॥ सोई यह उ
रुष पुरान · परम आतम परमेसुर · स्वयं जोति तन अजन · लोक लीला ·
बिनोह कर · आप येक अनेक · रूप माया प्रति बिंबत · बिधि नव बिस्नु
हिनाम · नेद तेई होत बिस्व हित · बिग्रह सुतंत्र द्रसत बिपुल · पदपंक
ज श्रीय उर परस · अक्रम तज नऐके न इल · रिषतेई ध्यावत जोग रस॥
॥५॥ राम जगत तें आदि अंत · जीव निज गतासृय · सरव प्रान आसको
यंकनास तअनेकमय · उंकार अपार · राम त्वं बचन अगोचर · वाचकब
चन बिनेद · जगत मय त्वं जगदीस्वर · कृत कारन कारि ज करत तत्वं
तिहि फल साधन नेदन व · त्वे राम एक नासित अखिल · तन माया
अनेक तवा॥६॥ तुव माया मोहि तनु बुधि · तव तत न जानत · हैं मा
यान रक परमीस · म्रत तोहि मानुष मानत · ज्यों अकास अयार · बिम
ल नासत बिरंतर · अवल अ सेगत निस · सुधबुधो सब समसर · जे
बिनामृत अग्पान सुत · कनवत जानत हरे · तसमो तराम तुव चरन चि
त · कोटि कोटि बंदन करो॥७॥ नवन मो मिपुरुषेस · नगत बछलन
य हेता · श्री नारायन रिषीकेस · अन बिघ्न अनेता · जन्न जन्त्र द वाधि
देव · अहमि तउतप तीय · नवपद पेकजि नगति · नियम जुत हेफुसु
नितीय · सुरसेवि सदा असरन सरन · अधम उधारन अधतीय · देवेस
दीन बंधु सदय · पावन पतित अनाथ प्रीय॥८॥ नवन नयनासन ऐकन
प · रवि कोटि प्रकास · करधृत सरकोदंड · नील घन आभा नासं · कन
करुचिर पर पीत · रतन मनि कुंडल राजत · अमल कमल दल नेत्र बा
ऊ अजान बिराजित॥ सानुज सहा रघुबीर सोई · असमद हृदीय
धरीय · मिलि प्रेम अग्रह लागो तमहि · कहि स्तोत्र बंदन करीय॥९॥
श्री ता मो वाच॥ यह जु अहल्याकृत स्तोत्र · जो पढे लगति जुत म
न पाप पति हिमुच हि · मुकति साजो जिसुध मति · अदय तिवासित राम

पुत्र कामनाप्रकासै· स बंछरफल सिधहोइ: बंध्यान विनासै· सुपलानम
नोरथ फल हि सब· ताकेरामप्रतावत है: ततकाल देत दरसन तिनहि जे
ई सुमिरत जिहि हेतंजहो॥१॥श्रीन गवाने॥ अहल्या तगुरतलप· अं
मतेई सुरापत्रीय· मातभ्रातपितबाल· मारजिहि कामबिकलजीय:
स्वामिद्रोह बिस्वास· हिसपथहतकपापपर: गोत्रीयमारकुरोन· गांह
देवद्रोह कुलतकर· निमयहसतोत्र जपिहै नियम· सोपरलोकहिसि
धिहै· पुनि तासकहा कहिबेप्रगट आचारी आराधिहैं॥२॥कबिरु
वाच॥ इहि प्रकार कोसलकुमार· रिषनारि उधारीय: इंद्रदोषपतिश्राप
रोष· सिल देह सुधारीय· पावनपदरजपरसि पापपरहरि पुनीत
नय· सुमनबरषि सुरंगगनबानि· जसगावतजयजय: जिहिचरन
सरननर हरसु कबि· ग्रहलबबंधनछेदिगनि· सोईरामकरनकार
नसमथ· महाबाहु अवतारमनि॥१॥ इति अहल्या उधरना॥ दो
हा॥ गौतम आश्रमतेगमन: कौसिककरेसकाम: प्रीतिसहितमिथु
लपुरी: सानुजसंगरघुराम॥॥१॥ श्रीरघुनथहिजेसगुन: भयेनगरप
रवेस: तिनकेअगरप्रतावकहै: कहिनसकतसुरसेस॥२॥जबहिसुनेराज
जनक: आगमबिसवामित्र: सादरआयेसामुहै: पाइनलगेपवित्र॥३॥
अथ मिथलाआगमन॥ जनकउवाच॥ दोहा॥ पूछेजनकनरेसतहां
मुनिवरबिसवामित्र: कौथेदेषतबालबय· पूरनपुरुषपवित्र॥१॥कौ
स उवाच॥ बोलेबिसवामित्रतब: सुनियेमैथिलराज· येसुतदसर
थनृपतिके: मैंआनेमषकाज॥२॥ इनहीमारीताडिका· पथपापनी
बाम: तातेआगमनेतबहि· सियसुरनिकेकाम॥२॥ पुनिममआश्र
म हेतमष: मारयोसबलसुबाहु: बिनुफलसर मारीचमुनि· दयेउठा
रसराहु॥३॥आवत रिषत्रीयउधरी: परसतपदरजराम: पतिकहंमि
लीअपापव्है: निगमसाषिसुजनाम॥४॥बचनजुबिसवामित्रमुनि क
हेनृपहिसुषकंद: सुनतलगेपीयूषसम· उरउपजेआनंद॥५॥कबिरु॥
जथाधरमबिधिवेदजुत: पूजाकरीसप्रेम: जेजनभावजुजगतिसे
निसनवहेतसनेम॥६॥ समयपाइसानुजसुषद· देषननगरनरेस·
कौसिकआग्यापाइमुनि: पतनकस्यौप्रवेस॥७॥ पीतबसनतन
स्यामयन: भुजआजानबिसाल: सरधनुपानिनिषंगकरि· बोल
तबचनरसाल॥८॥जहारामरविबंसरवि: निकसतबिजनमनोज
लहातहापुरनरनारिके· उरबिकसतअंबोज॥९॥छंदपधरी॥सि
सु मिलतआनिअनेकसाथ· सुजदरसकरतषेलतसनाथ: सर

अनेक बागरचन
[illegible] थोन : सुषमो हलतातरवरसमान · [illegible] कातीर · सुत्र
[illegible] रामदेषत बिसेष · तबआरकुसमबारिकातीर · [illegible]
[illegible] सधीर : तरलतातरलसंकुलतमाल : नानानिकुंजबे
[illegible] अनकअनबिहंगकुंजतअसेष · बिथरहि बिबिधबोलि
[illegible] मदनमत्तउवतमोर : साषानिसाषकलकंमसोर :
[illegible] क्रतआराम : तरलताकुसम · तर लिमततम : रस
[illegible] मंजररसाल · मकरंदमत्तं भमित भमरमाल : चहुंआर
[illegible] कौप · प्रतिपत्र निउलहतिअरुनकौप · रस रूप स्वाद
[illegible] कलतारनमितसाषाउतंग · बिचिबागसरोवरबनबि
[illegible] जल बिमलप्रफुलितकमलजाल : मनिमयमजारसोपान
[illegible] हंसकोकगनसोनकूल : तिहिसरसमीपसुतकेतस
[illegible] देवालयअतिउतंग : ॥ छंद बेताल ॥ तहांजन निअ
[illegible] सीयतब · गवरिपूजनकहंचली ॥ संगबेसबैसबिचत्र
[illegible] निआनिमिलीअली : तिहिबारिकासररसलिलसषि
[illegible] बिधिबिधिमंजनकरे : परयोतपरमपवित्रसीयपुनि
[illegible] अस्तुतआवरे · अपरसकीयप्रासादभवसनि · धूपदीप
[illegible] नैबेदपूजाकरिनेम : ध्यानगौरीउरधरे : अनुरूपबर
[illegible] काजजाचंनोकरी : परदछनादेपरमहितचित · पूजि
[illegible] पूरी ॥ तहांनिसनेमसप्रेमसीता : करिप्रनामअनेक : मिलि
[illegible] कुलनिकसिमनहौं : बदीलाजबिबेक : सषियेकदेषत
[illegible] सा · देषिबनरघुबीर : पुनिआरआतुरजानकीपहं :
[illegible] मधीर ॥ सषीबाच ॥ तिहिकिसोरराजकुमारसुंदर
[illegible] रसरूप : इहिबागहेलदेषिआई : पुरुषसिंघअनूप
[illegible] सुनिलेगईसीतहि : हरषजुतातिहिकुंज : जहांराम
[illegible] बनहिबिहरत · परमसोभापुंज : तहांआनि दे[illegible]
[illegible] सुंदर · रामराजीवनेनं : आनंदउरनसमातअतिसय
[illegible] तनबेनं : के [illegible] स[illegible] [illegible] देहधरदं
[illegible] थलेसकेकोउ [illegible] बिसाल [illegible]
[illegible] अनंगअंगी · [illegible]
[illegible] नेनउरके नेह : [illegible]
[illegible] घिबलक

लिऒरनिरषेजानुकी·रघुबंसराजकुमार:अंनमोघवहरागउप
जो:अग्रकृतअनुसार·जोगमायामैथलीअरु·रामब्रह्मअनादि·
बिधिलेषजोगप्रयोगसबबनि:अंकटरहिनआरि॥दूजी सषीव
च॥दूहा॥अेकसषीअेसैंकहो·सबनिसुनारघुकार·येसुतद
सरथनृपतिके:कोसिकमषरषवार॥१॥इनहीअहल्याउधरी:स
तानंदकीमात·आयेबिसवामित्रसंग:पुनीनगरबिष्यात॥२॥कबि
त्वा॥नारदबचनसंतारसीय:पुनिपुनिचितयसप्रेम:लज
नयसजनीसकुंच:नयनरंगउरनेम॥३॥पूजीगौरीप्रेमसों:सी
तासषीसमाज:मंगलगानबिधानजुत:फिरिआईग्रहराज॥४॥
बनउपबननिबिलासकरि:रामआरस्वसथांन:कीनेंबिसवामि
त्रकहे·बरनबिबिधिबिधांन॥५॥बामेअंगबेदेहिके:दरसनअंगनु
राम:नावीस्वचतिसकलसुत·फुरकनलगेसकाम॥६॥सुनबसु
रपूरबप्रहर:कीनेंसनानबनाउ·राजाराजकुमारतहा:बोलेरानु
राउ॥७॥सतानंदकौतिहिसमय:पठयेजनकबिदेह:आंनहुबि
सवामित्रमुनि:समआरदरससनेह॥८॥ओलेहीआयेरंगनु बि
नगरनिवासीलोग:धनुषजग्यउछाहअति·रामदरससंजोग॥९॥
बालतरुनअरुबृधजन·नेहसहितनरनारि:जथाजोगबेसक
ल·अपनीमेरबिचारि॥१०॥छंदबेताल॥ सुनिसीयब्याहउछाह
सब·संनासारसुसिध·निजकाजततपरनारिनर·ग्रहुहेतबु
धिप्रसिध:नृपबंधुमंत्रीयसुहृदसाजन·देसदेससमागता·गु
रबिप्रपूजिअनेककर्मगति·सुकबिपंकितसंजुता·कुलमांनि
मागधबंससेवक·बंदिजनिबांनीबरा·पुनिसिधचारनबि
बुधपूजित·ततसाधनततपरा:मिलिब्रह्मछत्रीयबेससूदसु
निपुनबिद्याआपनें॥बनिदीपदेसबिदेसबासीय:करमकारन
कौनें·समसजनसंकुलबिपुलसोना·परमसुषमिथलापुरी:
सबसिधरिधसमृधसौज्ञात·कोउनपुरसमताकरी:मिलिगगन
पनसुवत्रिदिसिसिरंन·बिबिधिरंगबिराजहीं:बिधिबिस्नुसंतु
सुरेससुरगन·सोमसूरसमाजहीं·जलअनिलअनलदिगेस
जोगी·जहमनमथलोजुरे:रिषसिधुगिरतरसरिततीरथ·सुर
सुरलिमनिसंचरे:जमपितरगजमुषसेषसारद:चारिषानिचर
चरा·जलगगनचरभूतजेते·बृतीतापसबिसतरा·रितनस
त्रयहदिस·दिवसअबुद·सोमबल्लीयसंग:जोईजोतिवंतअ

नंतजनजुत· बेदनाद बिहंग· गंध्रब किंनर अपछरागन: तान गान सुताल:
आकास बाजत बाजन गम· बजत बिबिधि बिसाल: असुर असाध अनीत अ
तिसय दैतदानव दुष्ट जे: आकास छाये रथ निअनगनु· नाव अपअपनेत
जे: रसा हिअ बिलअनंग अंगीय· ब्रह्म अच्छिजु बिसतरे: मषधनुषसीता
आकु मंगल· धरम कारन तन धरे॥१॥सवैया॥ बिक्रम बिसेसदेस देस
केअसे सबल· जिते मेरुसे बलासमुद्र मअंजाये: बिधि अष्टिडपुज
जे ब्रह्म रुद्र बीबवासी· पंच रूतकी प्रवरति राजपद पाये हैं· कौतुक
निमंतकी उन उबलकाजवीर जाहि जैसी नावनो नरोसा मननाए
हैं· पावन पिनाष मंषदेषन दसि दृष्टी· ऐसी अवनी ससीता स्वयं
बर आये हैं॥१॥दोहा॥ कनक यटित नगमनि जटित: बिबिधि मंचबि
सतार· आनि जथाक्रम बैठिन· राजा राजकुमार॥१॥ बिस्वामित्र
पवित्र मुनि: सानुज रघुबर संग· सादर बोले रंगभुव: राजा जनक अ
नंग॥२॥ सतानंद रिषि कौसिकहि: कीनी प्रनति अनेक: सीय स्वयं
बर धनुषमष· आनो बिहित बिबेक॥३॥ सबरिनते ऊपर सुषद·
ऊंच मंच रुक कीन· राम सहित कौसिक तहां· बैठे पुनि प्रबीन·
॥४॥ जो बालक मृगराज के· बैठे अथ बिसेष: मृगपति बिस्वामित्र मु
नि· अतित प्ते जअसेष॥५॥चौपाई॥ राम रूप देषत सबे· सुरनरसु
षपावहिं· चितआनंद समोहवठि· नही पलक लगावहिं· स्यामबर
न तन जलद स्याम· नहीं समता पावहिं: मकराकृत कुंडल कपोल·
छबि अतुलित छावहिं: सोना अमित सरूप देषि· मनत जित मनोजा
कच कुंचित दृगावली· द्रिग सरद सरोजा· उच नाल नासा उतंग· ही
रा रद राजे· मुष प्रसन मिलि मंद हास· बर अधर बिराजे: अतुल कंध अ
जानबाहु· भृगु उर अति पीनो: कंबकंठ हारावली: बनमाल नवी
नो· नाभि सरोज त्रिरेष मध्य· छबि अद्भुत कीनी· रोमावली सबी
यजित्र· जनु रह्या हीनी: करि मृगराज नितंब पीन· पर पीत जु बंधः ज
आवृत्त ससोत्त जांनु· सुत समय सुसंये· चरन कमल सुर सेवित· सु
र सरित निवासा: सरनागत पंजर बिजय· बहु बिघन बिनासा· न
ष सुंदर रतनोपमा· तेज निछु बिछीनें· पदन लअसन कारेष· ब
ज्रांकुस लीनें· पारंगत बिद्या प्रबीन· दसचारिनि दानो: श्रोताधर
मग्पसावधान· नित बेद पुरानो: करि के हरि न्ताथा कसे: करथ
मपसावधान ...
रिकौ दंरुः रघु नाम तकर दहनो पोरुष हि प्रचंडा· क्षत्रि सतल
छन सुदेस· सबअंग नि सोहैं· पुरुष सिंघ देषत सप्रेम: मन बल्य

विमोहैं ।१। छंद चौपई॥ जिहिं इछा करि देषे जैसी· तिनकहं सफल
भावना तैसी: राम नृपति रहिहिं रूप निहारे: मानऊं देह बीररस धारे: ष
ल पत्र तिरघुवर अस देषे: रसवयान जनु वपुहिं बिसेषे: सजन बि
लोकत राम सनेही: हैं मनु करन धरे रस देही: समय निउर राघव
थोसोहत मनफु हासिरस बिस्व बिमोहत: जगत जीय अद्भुत
रसनारी: मिलतेन ई द्रिमत न नारी: रस श्रृंगार सार अवरेषे: देह ध
रे जुवनीजन देषे· गलत गलानि अपेरु अआये: अवनीपति बेन
उउपजाये· असुर दैत जे दनुज अनागे· तिन रस रौद्र कालसे लागे
सेत निउर यों रघुपति सोहे· महासांत रस तन मन मोहे· बिउष निम
नाथ सुहाये: बिसद बिराट रूप सें आये· जोग तत्र संजोग निजानें: वि
रतनेद मय प्रनोप्रमानें: जगत निउर रघुवर यों राजत: २१
उपराजत: सासु सुसर थो राम सपेषे· अतिबलन सुत सम·
षे· देषे सुरनि राम सुषदारुक: सब निसद सुष काज सुनारुक· प्रजाप
संसि परम सुष पावत· अवलोकत नहीं नैन अघावत ॥ कवित्त ॥ जिहि
जैसी भावना· राम रघुवीर निहारे· जैसी इछा तिनहिं· सफल नई कृत
अनुसारे· साधन सुत अगमन: षलनि भय काल उपजीय· उष्ट
निआसांतेग· नये मुष मलिन निलजीय· नवरस सरूप मय नैहन
व· सबहिन चित संचार कीय· जय जयति राम रवि बिंब सरवि· अषिल
चराचर उचरीय ॥ सवैया ॥ पेक जिहि जानें जाहिं· ऐकें जो
सें आप· जानत अनेकें नाहिं· अनेक जनाए हैं: निकट निहारे ना
नगर निकर नाथ देव थंत फारि निरसिंघ ह्वै दिषाये हैं: नरि
जाने तिन्हें· नरिहीं बिठारि दीनें· सुलन निहारे नाहिं·
सहाये हैं: आरत प्रकार सुनि आगी यों अनेग हीं ते प्र रं
रजालकौं नैं धोप गये हैं: ॥७॥ दूहा॥ बाल बिभूषन तना
मल· राम अद्भुत रूप: सोभित बैग नृपसना· अषिलेसु अनु
प॥१॥ साध नृप बाच॥ राम बिलोकि नरेस सब: उरचिंतत अबि
र: दनकहं ग्राम बिजय जस: निगम नय है निरधार॥२॥ नरमरा॥प
चलिये नवन: अत अकारि जहार: दनकर हत असेष बल: कन्य
लहेनेकोर: ॥२८॥ उष्ट नृप बाच जो अब बेकी अथ उर: न
अतिमान: दमहि होत बलवान को: पावे कंन्या आन ॥२९॥
नरोसो बाऊबल: यह जानउ बिधि अंक: कालकुसों जीते र
हैं सांबरहिं निसंक ॥२०॥ साध बाच॥ जे नृप बेर अग

मह्नि॰ हसिबोलेसुनिबात॰ कहणालमारतकृथा॰ अरुमनुलकुवाय
न॥१॥ मृगत्रिसनजोबावरे॰ थतदेषतजलनार॰ तरमहिमत
दिगंतलौं॰ मरिहोसहजसुनाराश॥जगतपिताजगदीसयें॰ कोस
लराजकुमार॰ सीताजगदंबासती॰ निगमकहतनिरधार॥अ
थरावनबानअरग्नम॥कबिरुबाच॥कबित॥ भुजाबीसद
ससीस॰ महारादसषलरावन॰ हैंकटकत्रयलोक॰ सुरअसु
रराजसतावन॰ सहसबाहुदितिबंस॰ समरबिजरीबानासुर॰
तीनलोकतवन्हत॰ नाहिदेषतउपजतजुर॰ दाउदुष्टदेवदोष
अरय॰ पृथ्वीबिहित्तिपेरुषप्रबल॰ पुनिहोतस्वयंबरसीयको
आयेतिहिछिनछपथल॥१॥ दोहा॥असुरअसाधअसंकअति
दोउबिलछनदेह॰ अबचिंततआयेअसर॰ सबनिभयेसंदेह
॥१॥लोरुवाच॥रावनबानबलिष्टअति॰ कहतयहेसबकोरजे
उठनिअैसोधनुष॰ महउपद्रवहोरान॥कबिरु॥ तिनहिबिले
किससोकतहो॰ तयेनिरासनरेस॰ आयेमंगलजानियहां॰ उपजे
बिघनअसेस॥२॥ राजनराजसमाजमह॰ आयेअसुरअनीत॰ नर
नारीहाहाकरत॰ हरिहरियेबिपरीत॥४॥रावनबाच॥मोहिबतावउ
नृपसुता॰ पहलेदेखूताहि॰ पाछेसीतोरिपिनाककहु॰ कन्याजाउबि
बाहि॥४॥बानउ॥बाणकहोदससकंधसुनि॰ पहलेचापचढाउ
पनपूरनकरिजनकको॰ जसलेलंकाजाहु॥कबिरुवाच॥राव
नबातसुबानकी॰ सुनीनकीनीकान॰ पुनसांनोअतिबिसम
है॰ बहुरयोंबोलेबान॥ बाणबाचा॥कबित॥रेरेसठदसक
ठ॰ छाडिहठगरबनकीजे॰ बचनतेंगरकेहोत॰ जगतगउवान
नछीजे॰ नृपुनीतपोलसति॰ बंसउपज्योअभिकारीय॰ सोकरि
येपरवान॰ वातजोमुषउच्चारीय॰ इततीनैंजनकबिदेहसो॰ सो
पोसिरैचढाईये॰ कहुपहलेकेसेंनृपतिकी॰ पुत्रीदेषनपाईये॰
॥१॥रावनबाच॥दोहा॥ममभुजबलकीबातसुनि॰ महिमांअउ
लअपार॰ नवग्रहपाइनकेहैंनित॰ सुरसेवतदरबार॥१॥बाणब
चा॥बानकहोदससीससों॰ बहुभुजहसनापार॰ अपुनीकीरतिअ
पुहौ॰ कहतबडाइबडार॥रावन॥ तबफिरिरावनबानके
हैं॰ उतरदयोसदाप॰ बहुतबाहुजुतदेषीयत॰ अतिबलछेहात्रि
प॥ बानउ॥ रावनमेरेबाहुबल॰ सुन्योअजहुलोनाहि

सबतेंरसगुनश्रवनजे जरगीश्रमदिनजाहि ॥५॥ कबित॥ ऊजवरी
जबजात पितापदबंदनपावन महादानदेतेस निराषिमुषपापनस
वन : तबदेषेबलतेलि सम पाताल निवासी : तहातहाकरतलदेकि
छेनिराषीछलनासी • सहसफनतारटारिसरुज लोकलोकमहजसल
ये। कोजानेकोतुकवारके सेषसहाइकह्नैतयो॥१॥रावनउवाच॥ हसि
रावनतबकहेो बानतुमश्राहिमहाबल : सहसबाहुसेंयान ह
रबहुदेतसेंगदल : बलिसोराजाबहुतकाल हेसुतलनिवासी : पित
तुम्हारोकरहु श्रोनिन्तलहिबिलासी ॥ बाणउवाच छितिमेंरुलरी
नोदहनो सोनिगमागमसाषीयो निकलंकनदपनिरमाल्य
थल कहोकहाधोराषीयो॥२॥दोहा॥ श्रग्रजबंधुकुबेरको उ
मयरलयेछिडाइ : सोहमपहकरतनबने : बेरमहाउदबिहाइ :
॥१॥कबित॥सेषासुरहिरणाक्ष मुरहुमधुकेटभमारे : हिरनक
सिपरत्याहि सबलककोगनेसंघारे : जिन्हिभुजसरनिनिसंक बसत
त्रैलचराचर : कमलाकुचकुंकमसुगंध बासत बिचत्रबर बलिसर
बसरीनेधरमबस उ बरिबवनन हीधरयो सुरपतिसहासोर
हाथहरि ममपितुश्रागेमरयो ॥१॥ दोहा॥ तुमहुसुन्योतुवबंध
कबलि द्विजहिदईनारीन : उरउपज्योसातरस : रहतब्रह्मपदली
न॥१॥ श्रगरपराक्रमश्रापनो सबजानतसंसार : चापचढावतहुजनि
वलि श्रबूझेहेनिरधारा॥२॥कबिरुबाच॥ सुनेंजुरावनबानदत
सबदपतयेसत्रास : कंम्पोग्रामकोगनें छुरीजीयतनश्रासा॥३॥बा
णबाच॥बानकसोदसकंधसों राहसधनुषचढाइ : कहतेश्रोरनु
श्राइहें बातबनाइबनाइ॥४॥रावनबाच॥ कोपहरोकैयाजोउहु मे
बाधेसुरराज : पहलेकंन्यादेषिहुं धुनिकेवलहिकाज ॥५॥बाण
उबाच॥बानकसोतवरावनहि : यामहकवनसवाद : तवमनोरथम
नहरष : करतवृथाबकबाद॥६॥ रावनबाच ॥ बोलिनजानत
बानतु बिधिबिबेककीबात ॥बाणउबाच॥हमहिनकहिश्रावतनी
या : जेसीतोहिसुहात॥७॥रावनबाच॥करिहुजेसीमेंकही : चि
तनश्रावतश्रान करिहेकोउमेरोकहा सुनियस्वातनिदान॥
॥८॥श्रागेहेहयराजनें : जोकीनीतुममोहि : वेसीहीकेहेंश्रवें : सो
सुधिहेकिधुनाहि॥९॥रावनबाच॥कबित॥नृतननाथजुनत्त
सगनवासुकिगनेससंग सुरसरिपावकदृगनसूल श्ररद्धुतनबि
नृतिश्रंग सरबमंगलासहित बासकविलासबिराजित सुरव

नजे तसमेति· सकल सोभा नग साजित· लीनो उगर इगि रंगै दलैं· सो जा
नत सुर नर सकल· त्रय लोक बिदित मेरे अतुल· बान न जानत बाहु बल·
॥१॥ कबिरुवाच ॥ दोहा ॥ तजि बिबाद ले केसव तव: बिबिधि बिमुष सु
नि बानि: मारिमस सामन हि मन· आनि छुये धनु पानि ॥१॥ बाण॥ बान
कहे पेल सतिसो· तुम बल अतुलित अंग जे से कर षउ मुष्टिकर·
होइ पिनाकन लेग·॥ कबिरु॥ जैसे रत उत बिषय बस: जोगी चले
न चित्र· तजत न गोर पिनाक सों: रावन लये कुचित्र·॥ रावन जी
रन धनुष महेस को· ऊते रोगे लोनि: कहीय तबान महाबली
तुम धो देष अनि ॥ बान उ॥ बान धनुष सा लागये· कीये प्रणा
म प्रयोग: मेरे गुर को चाप यह: मोहि न छुइबे जोग ॥५॥ कबिरुवा
च॥ नयो बिसानो लंकपति· गगन गिराये होइ: धनुष न टारि है
गे रतैं: कष्ट करउ जिन कोइ ॥६॥ सर मा सरमी सुनत सो· दससि
र गयो षिसाइ: करि बंदन बिस बास न हिं बान गये सुष पाइ ॥७॥
इति रावन बान सं बाद सम्पूर्न॥ कबिरु॥ धनुष जग्य सं
दोहा॥ जात ही राकसरैत के· सब हि नरस्यो कलेस: ज्यों रवि ससि उ
परागतैं उग्र होत बिसेस ॥१॥ राजा जनक बिदेहतब· बंदीजन
नि बुलाइ: धनुष जग्य पन आपनो: तिनहि कि सो समुझाइ ॥२॥
सुमति बिमति दोउ नाद सुत: सुक बिम हामति सुध: राज सभा के म
ध्य सो: गदे आनि प्रबुधा ॥३॥ छंद वेग घं॥ सुमति बिमति तिनहुं
जाउ गई· कलो जनक पन नृप नि सुनाई: संभु धनुष जो रूप चढावे
सो जस संजुत कन्या पावे ॥ दोहा॥ पूछत बिमत बिसेषसों: सुमति कि
हत समुझाइ: राजन के बरनन सकल· सब नि सुनाइ सुनाइ ॥१॥ बि
रद गोत्र जग बिदित: देस ब सगुन ग्राम· बिक्रम दान जु बीरता·
निज भुज दल बल नाम ॥२॥ नगर सुनत जस आपनो: सूर उग्र
सुषपाइ: परिकरबा घिलपेटिपर: सन मुष रहमनाइ ॥३॥ तम कि
तम कि नृप तेज सों: धरत चाप कर धार: नेक न उत्तक उनमिते: फि
रि फिरि बैठत आइ ॥४॥ मंच नि बैठि गिमही पजे: बोलत बचन बिसेष
परसि गिरीस पिनाक न यै: नर पो रूष निसेष ॥५॥ छंद बेताल॥ त
ब सहस दस नर महा नृपति अन षि उ गिर कबारही· सोरो षष्क्वते
धनुष साल· आनि चाप अधार ही: नही टरत संभु पिनाक सों: बि
धि लिषत अंक लिलाट के· महसती मन न ही चलत ह्रत उत· ग
येल पर गर के॥ मुनि संभु को मनु मदन के बस· नयो नाहिन सुन

रही: नसमा बिसेषअनंगन्नो सोई पुनि फुरे हनपावही॥ अवनीपश्री हत
नयेउ तितिघैासतठमनुमानिपे: बैरागविनुम्मे विषयरसबस जर
न्जोगीजनिये संन्यासपरम्मे नेषसाजे सषीमुगधासंग: नहान
नतहातहा यरतमहिमा अगविवसअनंग: उपरा सिनाजननयेअ
वनिप चापके छिआर: केगनेमुखबीजुकतकरिबो: सकेन्ननछि
ठार: पुनिनाट बोलेजनकपनमष सिधपेनहीपार: तुवचक्रकेअ
वनीपआये नयेनाठसुनार: सुरनगतिसक तिनकन्योसाधन: र
येनही बरदान: पुरुषसेमषसालपेगे फिरेबिनतानान: तुमगरन
हतकिनतयेजननी जनेथालबजार: र थाअमतिनकेजुवति
न बयसरूपबिहार: बरबिहतनं थाकुछि बिनता आवगरन
सहोर: ममजनहिपोरुषरहतपुत्रहि अलनजोबनषोर: इताहि
बनअहरअसहन करतवेरीजनकिते: बलछोकिसीसनवारखेगे
जुरेमषनृपतिजिते: जुगडारिधुरतजि पवनजोते धवलवेग्सथी
र: कछुसिधनाहिप्रहारकीने बिगतपोरुषबीर॥ सुमतिब
अ॥ दुहा॥ सुमतिबिमतहसिकेकहो: नपनिसुनाइसुनार चा
पनचषेषरचढे आपुनरहिमषआरा॥१॥ राजनकीदेषीदसा: ज
नककसोसबिष्मार: देषोमहिमाकालकी: मिटिपोरुषमरजाद
॥२॥ नृपजितेनगेलके बलबिधानबलबीर: आयेपुरुषजुधनुष
मष: औ दिचलेसिरवीर॥३॥ त्रिदसदेसधरिमनुजतन: आयेन
पतिअसेष: नयेनिहरिमतेजहत: तिनजनकछुबिसेष॥४॥ चापच
ढावनकेगने: सकेनअवनिछिठार: नहीउरबीनिरबीरअब
कहोजनकअकुलार॥५॥ जनकबाच॥ कबित॥ सप्तदीपदिगअं
त नयेआवन नृवपति रातस दनुजरिषेस अमरहत मानवआ
हत नप बिदेहकेनिका संगजयलालकिनिसम: काजसाजकोदेम
अषिलकीनैबलउदिम: नहीधस्योनटास्योअवनिते नहीचदार
हिकाह्यो: हाहाजुकालगतिप्रबलयह तुवमंडलनिरबीरनये॥
दुहा॥ जोजानतनिरबीरभुव तोनकरतपनयेह: पावकअजलतय
हसन तनकहापरीयतमेह॥१॥ रहीकवारीकेनिका लिषतबि
रचिलिलार: पनकीनेजोपरहरो तेउपहासिसंसार॥२॥ जनक
बचनसुनिलषनजहा: कोधअरूनचषकीन: मानहुअजलतअ
नलमह: नाइअमृतघृतदीन॥ लछमनबाचा॥ श्रीरामत्र ति
कबितादिवदेवरघुबीर कहोलछमनतवकिंकर: मेरमहीधर

कितकमात्र-जीरनपिनाकहर: देश्र्याग्य अषिलेस-हासबलकौतुकदेष
ऊ जे अषिरऊंकहृत-साररेषासपेषऊ: आकरषिनवारचदारबलि-नि
हचेश्रैचितसारऊ: कहिमुषनजोनऐतीकरों-तोनहीबीरकहारऊ॥
लछमनजनकप्रतिवाक्य॥ दूहा॥ लछमनसुनिनिरबीरनुवः रो
षाकुनकीयनेत: जनकहोतरघुरामजहां: नाहिउचितयहबैन॥
॥१॥ फुरतअधररोमांचनुज: लषनतिसोंहेरूप: रामनिवारेसैनक
रि: सनयजानिनुदवरूप॥२॥ छंदबेताल॥ कौसिकबाच॥ सोसमयदे
षिबिसेषिकौसिक: हरषउरनसमावही॥ हसिकलैमुनिमिथलेस
सों-धनुरामदेषोचाहही॥ जनकबाच॥ पुनिदयोउतरजनकमुनि
प्रति-कालदंडहिकोगने: अतिबज्रतेजकठोरसिवधनु-अद्रिमान
सुआपनें: पनगसप्रतिमांजिहिंप्रतिंचा: कोनतिहिगोरवकहै: त्रै
लोककेसुरअसुरनुवपति-देषिहारेउरदहे: करिबेदनआदिजु
बिस्वकरमां-कोटिमिलिउद्दिमकरे॥ नवन्तनाथसनाथबिनु
सो-टकोषितनेनाटरे: सबदीपकेअवनीपसुरनर-हारिहारिरहे ही
ये: तिलमात्रपेनहीरस्योतिनपे-करनिकरष्पोपनकीये: मुनित
येमनहूतनंगमेरे-राजकेन्मायोरही॥ चितबदीजेअप्रयोगचि
ता-कठिनसोनपरैकही: मुनिसंगलायेबालकनितुम-कीयेम
षजयटेक: महिरावरेतपतेजमहिमां-कहिनजातअनेक: रि
षदेषितपबलजनकहरषत: रामबयलषिउरडरे: पुनिसंनुच
पसंतारिकरकस-पनकगिननहीतजिपरे: चितनयोचलदलप
तजोचल-तदपिमंत्रिबुलारके॥ नृपकलोमिलिजनजथआन
ऊ-ईसचापउगारके: सतयेरहिमिमयमननिसोता: आवरितप
रअंग: जयपारसमरअनेकजाते-ईसदहनअनंग॥ दूहा॥ कवि
रु॥ पंचसहसनरमिलिबल: बिधिआकरषिबिसेष: राजस
नामहलेधरे: सनुचापसबिसेष॥१॥ बिसवामित्रबिलोकि
बर: रामचंद्ररनधीर: नृकुटित्रिरेषाफरकिनुज: सुनरोमांच
सरीर॥२॥ बिस्वामित्रबाच॥ श्रीरामप्रति॥ पंछनयानकबनअव
स-ताडिकानिपातीय: सत्रुसुनुजसेनासमेत-छेदोसरछातीय: बि
नुफलसरकेपंष-बातमारीचहिमास्यो-बातिसिंधुकेबीचनीच
सतजोजनडास्यो: जिहिधनुषकरयेतेबिजय-सोदीजेसामि
नकर: रघुबीरबीरत्रिनवनाबिदित-हरषिचढावऊचापहर

॥कबि रुवाच॥दोहा॥रघुपति बिसवामित्रके· सुनेबचनसप्रसंस·
मनुउदयाचलमंचपर: ऊगि दिनहरि हंस॥१॥कटितटबांधेपी
तपट·भुजारोमउजार· ऊमनिचलेमृगराजकी: कोसलराजकु
मार॥२॥देषिसरासनसंभुको· रामचलेइहिंभांति ज्योंमृगपतिम
नमोदजुत· पाइदुरदमदपांति॥३॥छंदबेताल॥पुरलोकतरक
बितरककरिकरि · बिबिधिबातबनावही· देसकंधबानहिआ
दिदेनप· गयेहारिसुनावहीं॥सीताबाच॥मनहोतसीताअतिह
बिसमय: सनयजानिसुरेस:करकमलकोमलरामके· अतिचापक
ठिनदरव॥१॥रांणीबाच॥जानुकीरूपबिलोकिजननी·रामबयसनि
हारही· लषिकठिनतानवचापकी· अरुहृतबिदेहबिचारही: मुष
सरपज्योंअहिगयमुसी मनहिसोचसमाज· बपुनासनषबषना
सबितजे· उनयहेतअकाज· अनुचढेधनुसीताअनदा रहैयहनिरधार
करिनअबतजोमाऊकीजे· सुजसतउनसंसार ॥सषीबाच॥यहसु
नतकोउसष्चरिसयोनी· नियतउतरदीन· रामहिबिलोकतबाल
रानी· मननकरहुमलीन: मुनिअगसतिसरीरसमता· उदधिकतउ
पजात· येकहीअजुलिकरेअचवन· बातजगपबिष्यात: मुरलोकत
मरबिबिंबप्रतिमा· नियतनहिनप्रमान· अतितेजबलअघारअ
तुलित·नासहोतनिदान·धनुबानकोमलपुहपकेधरि·अतनधुने
अेक· चोषा निबसकीनेचराचर· अंगप्रबलअनेक· मृगराजभुज
बलगजहि मारत· मासरासिनमानिये: मातंगअंकुससमनप्रति
मा: बसतथापिबषानिये: मुनिबीजअक्षरमंत्रमहिमा· बससुर
सुरबीर· देबीनरामहिबालदेषहु· स्वयजोतिसरीर: सषिबचन
सुनिरनिवाससबके· बढ्योउरबिस्वासं· त्रैलोकप्रभुहरिकरहुगे
सी·अबिलम्बजहिआस·॥कबि रु॥करबामरामउगरहर·को
दंडचाढिकगैर· धरिमध्यभाजमुष्टिधारन· अरुचितयदुवअ
र: करसबिकैजोकरषिकीनो· कठिनधनुटंकार· सोसुनतस
ष्यानदउर·आनंदउपजिअपार॥दोहा॥कोलकमठअहिपतिअ
वनि· सावधानदिगदिव: कहिलछमनहरचापकहं·सजतराम
सजीव॥१॥दहाप्रतिचाबानजुत·करिनिसचयरघुनाथ: काके
मुषीआकरषिकर: देषतसभासनाथ॥२॥ओविकरेबिसभास
नहि, मंडलकरनसमान: दूरेमध्यमृनालज्यों: जोआयातनयां
न॥३॥कबित॥सुरसरितासेरवरसमुद्र·मरदयादपमुकीय: ऊ

रद्दिगजडगमगीय : कमलभुवआनभुचुकीय : धरनिधुजियसिगई : प्रब
लपबयबिहारपरि : मिहरबाजिछुटिमग : अगटदिगदेवकंपपरि : नाग
ससेसफनमालनमि · कोलकमठकमतजयो · रघुबीरबीरत्रयलोकप
ति · तिहिछनभवधनुभंजयो ॥३॥ नवबि समतत्रयभुवन · सगनसंकर
समाधिटरि · अष्टकुलाचलबिचल : पनगबधरतकंपपरि : कालरूपर
वंर · पद्मोजमहथबिछुटीय · रविससिग्रहरथरुधि · तेजआफालितलु
टीय : दिग्गजकोलब्रह्मंडडगि · भुवनत्रैयजययजयभयो · दसरथकु
मारसिवचापदलि · नवदुरलभजसलभयो ॥४॥ लसतिसप्तपाताल
मलयपयनगरज्ञपमुकीय : करतगानबंधान : तानरंनादिकचुकीय :
भयेमलीनमदअंध · बिष्णुनिजासुबरजीय · परिमुहनररावनसपाप ·
तपपीगबितजीय : दिगबामक्रूरकिपरस्सधरन : महामोदबेदेहिमन ·
ककुसथजदिननरहरसुकबि · धरिभजेभतेसधनु ॥५॥ सुरसुरेसथ
रिसंक : रजनिचरसंकउपजीय : परीलंकआतंक · कंककंटकमनस
जीय : सुषउपजेसज्जनसमूह · दुजनदुषभारीय : बिकसिजनकसह
बान · नगरआनंदनिहारीय · मुनिभयेमहाकौसिकमुदित · कित्तिसु
कबिनरहरकरीय : त्रयपुरप्रसिध्यअवधेससुत · बिजयकथाजगबि
थरीय ॥६॥ भीमनादधनुभंग · भयोभयभीतउपनीय : तिहिपूरित
दिसिबिदिसि मगमप्रलयाक्रतमनीय : अमरबृंदआनंद · इन्दक
रिजभयोआगम · बिबुधलोकमंगलबिधान · मानोनिगमाग
म · सुभभरीगगनबरषासुमन · सुरनिसानबजेसघन · कहिज
यतिजयतिरघुनाथकी · कबिनरहरमिलिमोदमन ॥७॥ दूहा ॥ उभ
यरूकअवधेससुत : करिलस्योकोदंड · मानभूपरबतबज्रहत ·
भयोमध्यजुगषंड ॥८॥ छंदपधरी ॥ सुरलोकबजेदुंदुभिअसेष : बिस
तारनगरबाजितबिसेष · ननन्दमिमिलतनीसाननद : सुरनरस
माजजयजयासद : आनंदकुसमबरषाअकास : उछबअनेकअ
मरनिअवास · गंधरबकरहिकिंनरसुगान : तहानचतिबिबिधि
सुररमनिबान · गावहिसगीतत्रीयग्रेहग्रेह : नवनवउछाहसीत
सनेह : अतिहरषजूथजुवतीअपार : दिसिदिसितेआवतराज
द्वार : हितवंतनारिनरभीरहोर : कऊनगरपंथपावेनकोर ·
भूपरमनिउदितआनंदनेह · मानऊऋषिसमुकंतबरषिमेह : दि
नबप्रोहितसतानंद : आयेरनिवासहिभुवआनंद : आणपागुरसीतेह

दईआइ पुत्रिकान्वलक्रुसुनसमयपाइ गुरबधूअयकीनीसगांन मुनिच
लीकवरिसीतप्रमानि आवरितसंगजुवतीअनेक निथरहि बिनयबानी
बिवेक सोनगवतीआरतीसज मुकताअबेधकुंकमसमज दधिदूध
बनेतनिसमेत सेंदीपकमंगलकलसहेत सुनगानजुवतिउछवअसे
ष बिसतारहिमंगलबिसेष इहिभांतिकवरिमधथानआनि पुर
पावलिलीनेंकवलपांनि सुन्नलाजसकुचनयनिलतसंग आनंदअंग
उदन्नवअनंग ॥सतानंदवाच॥दोहा॥सतानंदबारकसुषद कहेसी
यहिसुनकाल पुत्रीतुममेलहुपगर रामकेंजयमाल॥१॥सेसुनि
रामसमीपसीय नेहसहतनीयराइ सोनासकुचनिमदसुष यह
काहूनकहिजाइ॥२॥मनुमालाभुजमेंथली बिमलउरजबिसेस
करतसनालसरोजकरि रविहिअरघराकेस॥३॥सीताजयमाल
समय पतिहिरमेलितप्रेम सुनलछनरोमांचसंग निरषतछबि
हितनेम॥४॥देषनकहअकुलातद्रिग अतिहितलजअधीन प
टपरबसजुगजालपरि मानहुतरफतमीन॥५॥मेल्हीजयमाल
मुदित सीयपीयकेंसनेह प्रतिघरघरआनंदपुर दयनिबरषमे
ह॥६॥तुलहनिहलहरामके लेमेल्हीजयमाल एकहीबेलागेग
गन बाजितबजेबिसाल॥६॥ब्रह्मादिकआनेदबढ मनुषज
यजयराम मंगलगांनबिधानमिलि त्रयपुरधामनिधाम॥७॥
सषीसिषावतिसीयकंह प्रभुपदपरसहुपांनि करनिपसारत
सकुचकछु गोतमत्रीयगतिजानि॥८॥सोरहसिकाहूनसम
झि मनहिरामुसकात त्रिकालप्पतवहेतहि सतानंद
सकुचात॥९॥सुमनबरषिसुरहीयहरषि बहुरेब्योमबिमान
अपनेलोकप्रति करेप्रवेसप्रमांन॥११॥षलनृपबाचा॥छं
दपधरी॥सीयरूपछबिहिनिहारिनृपसग नरमहीमनरिसन
रेउगिसजेअंगसनाह अस्तुत कोपबिनुअरथहिकरे नृपब
लदोउधरऊबलही छीनिकंन्यालीजाये कोसकेंबरिहमजीय
तकवरिहि कहतबिक्रमकीजीये कहाबांसंजीरनलंगकीनें
कौनबीरकहारहें तबबदहिछत्रीजनकपुरते जपेसीयलेज
रहें केहेंबिदेहसनेहबसजोई इनासिसुनिकीओर मारिहे
बंधसहतरनमिलि जपेकरिहेंजोर॥१ धर्म ज्ञन पां॥सोस
यनन्नपआनीतसुनिसुनि नृपहितरदीन छत्रीकहायुभ
रबलछबि मननहातमलीन थिकारतुमहिंजुससत्रधारत

रथागालबजाइ· गयेलाजनाकपिनाककेसंग: बलबिधानबिहाइ
तिहिसमयकितगईसूरतायेह· अबजुअगटीआनि· मुषन्तयेकोररह
ततदपिन· मोनलजामानि: सोचहतस्वानश्रगालससह· मृगराज
बलिबसमेह: सबनातिनातिनसपदासह· लहतकोसिवद्रोह॥
मिलिकरतबाइसज्योमनोरथ· बेनतेयबिनाग: हरिबिमुषजेसेपर
मपदवह· नगतिबिनुहतनाग: जसलहतजेसेलोनलोलप· पति
तमहिमपुंज: कामीनलहिअकलंकता· गरुवतमुकतापुंज: सो
मित्ररोषजुप्रलयपावक· परिनहेजुपतंग: दगधकैहोसकुलदल
दिन· त्रिननिकरइवदंग॥१॥दोहा॥अपनेअपनेंजावनजि· रूपग
येउगिलोन: जगजेतारघुबीरबिनु· कंन्याब्याहेकोंन॥१॥जलनि
धिसंसयजानकी: मगनहोतमनमारि: कलपलताअवलंबज्यों
पयेरामपुरारि॥२॥जनकपुरीनरनारिके: साधनफलसुषदाइ·
जनमदलिदीबिकलज्यों· अगटमहानिधिपाइ॥३॥इतिश्रीराम
चंद्रमषबिजय अथसिवधनुषप्रसंग॥कबित्त॥दोहा॥
परमरम्यमिथुलपुरी: सबसंसयमिटिस्तूल: बाजित्रगानबिधान
बदि· घरघरमंगलमूल॥१॥ बेगेसजनसमाजतहाँ: मुनिवरबि
सवामित्र: राजजनकबिदेहतब: अगटीकथापवित्र॥२॥जन
कवाच॥ कोसिकमुनियेहेतजिहि: रलोचापममगेह: सोइ
अबहूतांअंतसब· कहीयतनिसंदेह॥३॥परमसाधकेलासप्रभु:
एकसमयसुषसंग· अयनिवेसतरीसके· सतीरहीतहसंग॥
॥४॥छंदपधरी॥वेहिसमयसंजुलागीसमाधि· एकासनबेठध्यान
साधि: चषमिलतजोगनिद्रासचेत: कैगयेबिदेहमनब्रह्महेत:
संबतसहस्रागतअसीसात: बिस्वेसजुकततपसाबिष्यात: सिवछु
टीसहतालीसंतारि: जागेसजोगनिद्रानिवारि॥सतीबाचा॥मनमु
दितसतीकीनेप्रनाम: मुषधन्यधन्यकहियरमधाम॥जनकवा
चा॥ परतहिप्रजापतिपदहिपाइ: अतिगरबबढ्योउरदछ्यार
लतबिहलदहअरिंभकीन: संतारबिबिधिनिरमतनवीन: करिस
धमभमषहोमकाज: सबबोलिबिलागीसुरसमाज· नगुआदि
रमुनिवरसमाज· बिसतारजग्यकीनोबिराज: तिहिसमयरद
गुत्रीरथोल· केलाससंजुबेठेकृपाल· आकासबहतसुररथअ
सेष: बिसतरहिगानकिंनरबिसेष: सुररमनिरचितनाटकस
हास· आनंदनाददुंदुभिअकास॥सतीबाचा॥ प्रभुकहोकहाय

हृअभमाद : ननमंगलकोलाहलसनाद॥ श्रीसिवबाचा। नवकलेउफे
रितबसुनऊनाम : मषउछवेहेतवपितायाम : सुरजातबुलायेमषअके
स : संगहोतगगननारकसहास॥ श्रीसिवाउ॥ मोहिकरऊदेवआगपाम
हेस : पितुगेहजङ्गकरऊप्रवेस॥ सिव बाचा। यहसुनऊसतीकारन
अकाज : हमसमयसनाएकसुरसमाज : आगमनदक्षतहदेकिआनेउ
गिकहोसबनिआदरसमान : पगधारिहहतबतहाअमान : ऊभानसं
गअनसावधान : उचितसकोनहीतिहिअवसआप : परजसोचिततातेअ
जाप : हमसोतिहिकारनरहतहेत : मनमलिनकीनपरिजनसमेत :
अनमोहत्याग सियातयेह : अनमित्रनगमननउचि
तआज : क्रतपितागेहतवकोनकाज : पितमाताजदपिपरमप्रेय : मन
मानबिनाजेबोनश्रेय : तिहिगेहनगमननजुकततोहि : मनबाच
करमप्रछेजुमोहि : हमनीयाकबऊनहीनरिहेह : कोरिजोकरेउप
देसकोट॥ दृहा॥ मोतिबुलायेदहसब : औरसुताजामात : तुमरे
बाचेजगपते : तहांकहाअबजात॥१॥ जन कबाचा। छंदपधरी॥ मन बचनज
दपिबरजीमहेस : पतिअहलदपिकीनेप्रवेस : सिवसेवकपठयेसतीसं
ग : अतिसावधानसनाथअंग : अतहपुरप्रवसीसतीआइ : सबमिली
बिमनदासीसुनाइ : मदादरकीनेपितामात : बसकोधकुसलपूछीनब
त॥ बधु बहनीबाचा॥ जगनीसतर्ककहिबयनाम : गंगाधरछोडे
कवनग्राम : हेकुसलदषनबिषस्थलसेष : मृगचरमबाघबारनबि
सेष : कनकबनस्रसममानुषकपाल : करदंडज्वलितमेखलकराल
अपतासभिकृतपिसाचसाथ : मेषनीऊलिकापंचमाथ : आवरनअंग
केपीनअंग : आरकतनेत्रअलसासअंग : उनमतबीजनुगीअहार : बि
षअमलचदावतबारबार : संसारमोहबरजितप्रसंग : अतिअहेऊकेय
घूमतअनंग : इहिछबिसोनायेइहांआज : कीयजुकतहोतहासीअक
ज : सुनितरकहासिजहातहासनेद : ममसालसतीआरीसषेद : क्रत
कुंडअनलपरजलितकीन : बिधिजुकतदिअग्रानेनवीन : सबहोतारि
तजसावधान : गावहिसुनसामबेदगान : अधिकारीमषअहिअमरआ
इ : सबअहितभागअपनेसुनाइ : आक्रतिदनदीजतअसेष : बिधि
जुकतहवनसुरमुषबिसेष : बिधिरुद्रबिबुधसनुबिबुधवंद : आ
येसकामममषहितअनंद : दीजतसबहिनमषअंसदान : कऊरुद्रनो
मसुनियेनकान : सोअनाचारदेषेअश्रेय : मनसतीकोधबढिअ
प्रमेय : रोमांचकंपतननयनरत्त : बेक्रतबबदनजीवतबिरत्त : उ
चरयोसतीबसरोबआप : सिवद्रोहीपावऊफलसपाप : धरि

सुताअषिलेसथांन। निहचेयइबरजाच्यो निदान: बरदानयहेमांगतबि
सेष: नरतारहोहितवतवतवेस: योकहतमात्रअंगअंगकराल। कोपा
नलप्रगटेप्रलयकाल: तजिदेहप्रानकीयगमनताम: तसमोबिसेषरहि
रुद्रताम: हाहारवतहात्रैलोकहोइ: करयेसहाइकरतारकोइ: कहाज
हिपुकारहरिमांकंत: त्रातानअवरतुमबिनुअनंत। सिवछुरीजोगनिरा
समाधि: आकारप्रलयजांनीउपाधि। यहकहीरुद्रसोगननिआर: मनुज
रीसतीअतिदुषपाइ॥ कबित्त॥ ततेसततयेतबप्रलयतार: तुवकरबिजय
परकीतुतार: तयोजराजनमतवबीरतद: अतिहीअसाधअमरनिअन
दइ। अनेकबीरसेनाअसंत: अतिकोपचल्योजनुकलपअंत: बिध्वंसन
पतिहिकरेबीर: सिरछेदतिनकीनोंसरीर: सुरनिकरमारिकीनोंसंघा
र। ताज्योसुरेसतजिराजतार: सबरितजहोताकरेसोथ: कतनासत्रा
हित्दुअतिहिक्रोध: ईसबिनुसुरनिअहिजगअंस: तेमारिबीरकीलेबि
थंस। हिजदीनोतवबिनुहोमदान: निसंकबीरतेहतिनिदान: ब्रह्मंडो
लिचलिप्रलयबार: इआदिअमरबिधिलोकआर। कीनीपुकारसिवको
नप्रकास: निरधारहोततवआहिनास। कतकोपबीरमषनासकीन। ल
हिदेवतागनसबमारिलीन। करियेप्रसातबिधिरुद्रकोप: प्रभुहोमबे
दमरजादलोप॥ इआदिलीवा॥ इआदिब्रह्मकैलासआर: सिवअग्रउ:ष
बरन्योसुनाइ॥ रुद्र बाच॥ सुनिब्रह्मसतुतिचिंतासुरेस: सुप्रसनद
ईआग्यामहेस: बिधिजाइजिवावऊबिबुधबृंद: अधिकारदेऊदइह
हिआनंद: तवकमलआइतवदइलोक: संग्रामदषिउरबढ्योसोक
पलचरनिदइसुरमृतकपाइ: षनिसीससबनिकेगयेपाइ: कोज
यहिबिनामसतककबंध: सिरगयेदइअंगसबंध॥ जन कबाचा॥
अबुजनवतहाअबुजकमलआनि: जोप्योसकलेवरदइजानि: कर
परसब्रह्मतवमृतकआर: जगबिदितदइलीनेजिवाइ: पुनिदिति
यअजोमुषनामपार: स्वसथानदइबेगसुनाइ: अनेकजंतसिरवयेवे
र। दगुआदिदेयदिजजीयओर: उतमेंगआनअरुआनअंग: सुरजी
येबिलछनांबिदनसंग: क्रोधबससंतुकीनोंअकाज: मारेजुस्वसरस
लकसमाज: दगुआदिकरेहोनानितंग: संघारदेवतयोदइसंग॥
कृतनिदककारिजबिवसक्रोध: पुनितोदयालउपज्योप्रबोध: उपजी
गलानिउरसतुआनि। डास्योपिनाकयहिप्रबलपानि: तयेदेवरातअ
ष्मबिदेह: तिहिसमयपस्योधनुतासगेह॥ सिव बाच॥ सिवक
लोचापराधक्षत्तारि: हैन्यासततमेरेनिहारि॥ जन कबाच॥ ब
ऊकालतयेइहिंबितीत: क्रतुतयेसफलधनुमषपुनीत: कार

नपिनाकआगमनकाज· रिषकौसिकसोंकहिजनकराज॥ इति सती
दोह रल जप विधं सन जन कबाचा॥ दोहा॥ कौसिककारनधनुषकौ·
आष्टवसुन्योंअसेष· अबसीताउतपत्तिसुत· बरनतहौंसबिसेष·
येकसमयहमजग्यथल· सुधकरतसबगांम· हलसीताकेअग्रतें· निक
स्यौकुनसकांम॥१॥ नामहपाईपुत्रिका· पूरनअंगप्रबीन· तातेसी
तानामतिहि· द्विजनिबिचारिसुदीन॥३॥ कंन्याभ्रजतधनुषकहं· अ
हप्रतिधरतउगार· कारनतिहिहूतधनुषकौ· हमलीनोंदिवरार॥४॥ बरनी
तेबरदिगुनबल· तबहिसबधसमान· कीनोंपनहमधनुषकौ· कुंवर
अमानसुकीना॥५॥ चतुराबरेप्रसादमम· पनपूरनतापार· जनककहे
मुनिकौसिकहि· बचनबिनीतउचार॥६॥ धनुषभंगकृतमबज्यौ॥
सीताबरीसुतार· रामहजबबेनकी· लेऊबुरातबुलाय॥७॥ सीयस्वयंब
रसफलभै· ऊबकरहुनरिषीस· अबजोआग्याहोप्रभु· सोइमं
नममसीस॥८॥ बिस्वामित्र बांच॥ बिसवामित्रपवित्रमुनि· गा
ग्यादीनीयेऊ· चासोंसुतअवधेसके· ब्याहऊजनकबिदेह॥१॥ जन
कबाचा॥ कौसिकबिसवामित्रकौं· कीनोंबचनप्रमान· सबेकवरद
सरथसहत· न्योतिबुलावऊंजान॥२॥ त्रिकालग्यरेवग्यतब· बे
लेबिप्रबिदेह· सुभकारकपंचागसुध· दिन्नलगनलिषिदेऊ॥
॥३॥ पत्र्ये दूतजुअवधिपुर· महीपालमिथलेस· सुनदिनचारिवरात
सजि· आवऊअवधिनरेस॥४॥ बिस्वामित्रहिआदिदे· सोहितगुरसप्र
बीन· बिबिधपुराननिबेरमंत· दिन्नलगनलषिदीनो॥५॥ कबितु॥
बासुरतीजेअतिसजव· दुरविचित्रसुषपाद· कुसलतपत्ररघुबीरकौ·
दयोवसिष्टहिआय॥६॥ सिधजोगआनिजितसहत· बहुतऊंतोतिहि
बार· तीनकालदरसीतबै· कस्योबसिष्टबिचार॥७॥ पत्रलगनदस
रथनृपति· लीनीनेगुरराज· रामचंद्रलछमनकुसले· सुनतफलेम
नकाज॥८॥ तबनरेससोपत्रले· बेगगयेरनिवास· पटरानीकें
बरनिकुसल· प्रछतप्रेमप्रकास॥ कोसल्यादि करं नी बाचा॥
कबिता॥ काकपक्षधरकवर· करनकीऊधनुसाहक· बेबालक
रादसबलिष्ट· लरिबेनहीलाहक· मुनिवरबिसवामित्र· नृप
हिनाचस्यांकीनी· बचनसूरबरसरबस· कहिनाहिनकीनी·
ताडलेरामतरकालषन· बिछुरेजबाहिअदिष्टबस· निकसेनप्रा
नतिहिछिनतिलज· तौंअबकहापतीतसम॥ राजपत्रीअव लो
कनें॥ स्वसतिश्रीदसरथनरेस· अवधेसवीरबर· हेसबसंअवत
सजोग्य· सुनपत्रप्रेमपर· लिषतजनकमिथलेस· सहतबंधवकु

सलीसब : कोसदेसकुलकुसल : अषिलरावरीचहतअब : तिहिदीनीपु
त्रीचारि हम : फरऊ वाकुचास्यो कवर : सजिकै बरातचतुरंगसजि : पावथ
रऊ मम सीसपर ॥२॥ सुनतपत्रसबत्रीयअसेष : आनंदउपजीय : जो
सुकृतधरधांन : गहर बरख्योघनगजीय : बसपीयासचाविगबि
लाप : मिलिस्वातिनीरसुष : जनमदरिद्रीमनकु : संगनद्वनिधि
लहेसुष : परजरतनगरअषिम अगट : धोरियोरिबरषतसघन
कहिनृपतिरामलछमनकुसल : मिलिमातोआनंदमन ॥ कवित्त
॥ दूहा ॥ राजद्वारअरुनगरतें : नृपनिपायेदांन : धातबसत्रमनियन
बिबिधि : मनबंछितसनमांन ॥१॥ कुसलपत्ररघुबीरकौ : सबहीत्री
यनिसुनाए : पुनिबाहरिआयेनृपति : बेगेसभाबनाइ ॥२॥ छंदपध
री ॥ आयेबसिष्टकुलपूजिओर : थितजयेजथाक्रमगोरगेर : ब
ऊबंधआइबिरदैतबीर : सुनसनामअबेगेसधीर : मंत्राधिक
रआयेसुमंत : सोसचिवस्वामिहितपरमसंत : अरुचतुरअग
रदकअनेक : आपारजुकतबिनयबिबेक : नृपमानिमहा
जनपुरनिवास : प्रजबरनबरनआयेप्रकास : नबबोलिसन
नृपजनकदूत : पूछतसप्रेमकुसलातपूत : आनंदबचनसुनिसु
निअपार : बिधिपूछनलागेबारबार : अवलोकिरहतजनदूतओर
चाहतसकोमजोसासिचकोर : आनंदनगरघरघरअनेक : बाजित्र
गीतमंगलबिबेक ॥ मंत्रीबाच ॥ राजासोबिनयोमंत्रिराज : करि
येप्रभुआपआगमनकाज ॥ राजोबाच ॥ महिपालद्योआइससुमं
त : तुमसाधऊसबदिगबिजयतंत : आरंभउचितकरियेप्रमांन
।नहिकालबिपरजयबिधिनिदांन : जिहिजोगपजथाक्रमजा
नजंत : तिहिदेऊउचितमंत्रीतुरंत : सिवकागजहयरथसहतस
ज : करिबिनयदेऊबाहनसकाज : आवरनपरबऊमुल्लिओप : उ
तअलंकारमनिरतनजोप : आमोदबिबिधिसौगधअंग : सनाथ
ससत्रअसत्रानिसंग : सबराजसाजनिकरीसुनाइ : पूरनभंडार
बिसतारपाइ : मिलिसकटजारबाहकअमेय : गजकरभ
षच्चरबामीसबेय : भरिकनककुंभकोटिनभंडार : तहरूपक
संभारहतनार : कोसेयरोमकृतसत्रसार : भरिबिबिधरंगब
सत्रनिसतार : भरियतअनेकसौगधसार : आयुधछतीसजु
सनअनेर : रसवतीनिपुनजेराजरीति : भंडारजदलादीअ

त:नरिनहराज नोजनसुनाइ: बरनैसकैांनसंभावनाइ: लेकनककल सनिकसेकहार· परबहिजुनीरस्वादनिश्कार:कोगनेजुसतनपग्रेह काज· सबकोसकोसरद्दकसमाज·॥ छंद बेताल॥ सुनसाजबाज समाजसोत्ता: राजद्वारबिराजही: नगकनकजरितजरावजीननि जातिजातिन्नाजही॥ जरतारबसत्रसुजीन संजुत· पारदेरिगमे निये· सबतुरंगरेससुषेत्रसंनव· जातिग्रनग्रनजानिये: सुभबाग सचिनटतनाचे·गवनपवननिसमनिने· तिरछीजुतरकनितडित करकनि· सबहीग्रंगसुहावने: प्रतिरंगरंगपवंगपारजु·ग्रंगग्रंगउ तंगये· ग्रारोहस्वामिकग्रग्रगामीय· चालतेजसुचंगये: ग्रारूढग्रे पतसुनरसामंत· ससत्रग्रसत्रसपूरये· बरबीरथारजुबीरबिद्या· साचबाचासूरये· गजपुंजगाजतसघनलाजत: छरितछाकेछ रहरे: मदग्रंथमातेधापधाते जलदमानऊजलनरे· सिंदूरबिथुरेग्र रुनसिरपर· सेतचामरसोनये·मदलेपग्रालितकपोलमंडित·ग्र मरसोरनलोनये: बनिदंतउजलकनकबंगरी·जरीनगमनिजे पये: ग्रारक्तपीतग्रनेकग्राकृत· पताकाध्वजग्रोपये: मदगंधमेग लसततिग्रंघल· लोहलंगरलगये: दलग्रग्रदंतीयप्रबलपतीय· बहतमगग्रमगये· मिलिजलितमंगल·चरषिवेचल·जमतयोउ पमातनी: घनघटाकरीमध्यचऊया· दमकिमानऊदामनी· सजि सुजगसिंदूनसाजसेजुत:बने बिबिधि बिछवने· परदापसलेपाय परमय·सुरंगरंगसुहावने· प्रतिरथनिकलसपताकध्वजप्रति·फ बतिनतक्रहलावहीं॥ जुतछिरदहयबरवृषभजोते· धरासजबि नधावहीं: कृतकनककिंकनिसुजगघुनिसुनि·मुनिसुरनिमनमे हये:समचलतजलथलग्रंतरिषऊ: सबहीजातिनसोहये·सि बकासुषासनजातिग्रनग्रन· सयनसेजसुहावनी· परोमबस ग्रसुरंगलपटी· रूपसुःषसुनावनी· ॥ छंदपधरी॥गजहयर थपयदलमिलिग्रगान: निरयातगगनवाजे निसान: कुलदेवदेवि पूजासकीन: द्विजग्रस्वनकतिगोदानदीन· द्विजगुरबसिष्टग्ररुबाम देव: जाबालिरुकासारनग्रजेव: दीरघायुमारकंडेयद्विजातजु निबिस्वबेदिकसिपबिष्मात: मिलिसुकबिसिधिचारनसमान: बंदिबदिसूतमागधसुजान·॥ २८॥ चढेबसिष्टसुनि ष्टम ति: रथजुग्रग्रगुरराज· दिग्मरथहि दसरथनृपति: ससुजसाज॥१॥ छंद पधरी॥ इसा   ९ ७९

नयेरथारूढ
आरोहरथनिबनिऐकऐकः सहस्तरतसत्रघन छत्रसाजः विसतार बिबुधजयजय
राजाधिराज निरघोषगगनदुंदुभिनिनादः गावहिंमंगलगीत
यतिबाद।।१।। दोहा।। जालगवाष निजुवतिजनः गावहिंमंगलगीत
देषिबरातनुअमितदलः बरषहिंपुहपसप्रीत।।१।। छंदउधोर।।
सुनसगुनहोतसकामः मिलिच्यारुफूलहरामः समकलसजुवतिन
सेगः अरुलयेपुत्रउछंगः सितसुरति समुषसबछ। पयपानदेतम
नछ: मिलिपूरिदधिघटमीनः करउरधमदगजकीनः द्विजदेस
लीलः सुनपुसतकदेषि: बिसतारसुनसुबिसेषि: लेनदचापसलील: सुन
दिसाअरसुतीलः फलसबददहनकंगः नयेनकुलदरससताग
न हालेवआरसुषेतः दिसिदरसपुनिपुनिदेतः मिलिदाहिनेमृगमाल
नः समस्अगआरसुदालः षेमंकरीसुनथानः तरुसिषरबोलिबिधि
नः बरसबदस्पामाबामः तरहरितबेगीताम: उगिपवनत्रिबिधि
अनंदः सोगंधसीतसमंद।। दोहा।। नथ्यामनोरथसगुनसुन
तेअषिलनृपपालः सेचनगारेसघनसे बाजतचलेबिसाल।।१।।
बिधिहरिहरगोरीतेगुरः महागनेसमनाइः बनीजाननरघुबीरकीः कापर
बरनीजाइ।।२।। छंदपधरी।। सुनदिवससगुनदिगबिजयसाधिः आन
दसमूहबरजितउपाधिः चतुरंगचमूसजिजानचारिः संक्रमीयचारि
मगहबिचारि।। छंद बेताला।। गजअस्वकरत निलदअगनित ब
जतमंगलबाजने सहनाइतेरीयसमरअंग झांझिझिमकोंगने: प
चसबदतालमृदंगझरनः बासतेत्रीयबजये गंधरबकिंनरगुनीगं
ननि सकलमंगलसजये: नीसानधुनिगजयराग रजनि बिजयच
उदलबजये: तिहिद्विरितरिनतअंतरायल जनुघनाघनगाजयेः नि
रघातकेजुतसबदनिसचल चमूचतुरंगनिचली: पातालपरबत
मालपृथ्वी अषअसाअकुली।। दोहा।। गरजगयेदनिसानधुनि
हयहेषारवहोइः बातपराइआपनी कहीनसमझतकोइ।।१।। सुरउड
तिनीसानसद बजतबारहीबार बरषिसुमनहरषतबिबुध
दरउछाहअपार।।२।। सेतबधायेसरितसबः बासबासमुषदै
करिरषेसंजुतसकलः असनआदिआनंद।।३।। कुलमंडनरघुराम
कीः जहांजहांबसहिंबरातः नहांतहांसबसंपदाः धरीबिरहबि
ष्यात।।४।। छंदपधरी।। संक्रमिप्रयानदिनच्यारितेनः सुनसमि

सुनसीम आरमि थलसुपेन : इकठी बरात सब जुरे आइ : तहसुनह बीर अ
पने सुभाइ : देरे तु वध उवास मय पेषि : छोग तु तमि ले जनकहिं बिसेषि
देरन वधाई घाइ दौन : अनुनिकर जान आरी समान : सकंमो जनक कंच
तुरंग साजि : बसप्रेम समुहे जयति बाजि : अति बेग नृपति कुंवर अग्रानि :
परसपर कीरि प्रीतम प्रमानि : मिलिउ नयराज समधी समोह : रस बि
नय करेपु निरथारोह : नव नेह सह तनवदूलन रेस : पुर करे मध्यमि
थुल प्रवेस : मिलि आये जनवासे मंहीप : दासीनि सजे आरती दीप :
उछाह कलस अ ये अनेक : बिनता सगान मंगल बिबेक : दिआसन
दसरथ बैठे देव : सजि हेम छत्र चामर सनेव ॥ बिसामित्र बाच ॥
जनक प्रति ॥ कबित ॥ बिसवामित्र बिदेह राजसों कह्यौ बिचारि
य : जथा बंस बिवहार : करऊ सब बिधि सुषकारीय : बेद बिदित अ
चार : बृद्धि गुरमंत्र बुधिबर : मंगल गान बिधान · कलस तोरन उछ
व करि सब बोलि सचिव सेवक सहत · देव सुआग्या दीजीये · जेहि
होरन हि नकालात क्रम · काज बिलंब न कीजीयो ॥१॥ इति श्री राम
चंद्र बराती राजा दसरथ मिथला आगमनो ॥ कबिरुवाच ॥
दूहा ॥ राम लषन दसरथ दरस · देषन कं अकुलाहि · चली सकु
च हप्रेम बस : प्रगट कहि न गुर पाहि ॥१॥ रिषबर बिनय बिबेक
लषि : पायो सुष सुग्यान : पुत्र चलऊ अवधेस पह ॥ मिलिये कुसल मान
॥२॥ आये बिसवामित्र तब : जनवासे सुष पाइ : सुनत मात्र दसरथ स
सुत : आपन सन मुष आइ ॥३॥ बिसवामित्र हि समुहे : आये अवधि
पुवाल · थाह तेसे सुषसिंधु मनु : लीये संग दोउ बाल ॥४॥ छंद प
धरी ॥ पाउ धारि तहां कौसिक पुनीत : आगे सुराम सनुज अनीत :
अवधेस रिष हि सामुहे आइ : कीने प्रनाम दंडवत पाइ : पित चरन लगि
राघव प्रकास : उरलाइ लये सानुज सहास : अवधेस राम लये कंठल
इ : सब से सरीर मनु प्रान पाइ : पुनि राम बसिष्ठ हि लगे पाइ : लीने
आसिष दे उर लगाइ : तहां राम हि हेरे भरत भ्रात : सुष सागर नं
हि न उर समात : बिधि जुक्त परसपर मिले बीर : सब जीव एक अ
रु द्वव सरीर : सानुज रघुबीर हि मिले साथ : हित मन कुमहा नि
धि चढी हाथ : सुनत सतो बेगि सानुज समाज : रिषराज सहित र
जाधिराज ॥ दूहा ॥ सुत मिलि दसरथ जिहि समय : बढि सुष सि
धु समाइ : उपज्यो आनंद काल रहि : जो कापुं न कहि जाइ ॥१॥

छंद [illegible] विकसुनीत: आगे सुराम सानुज अनीत
अवधेस [illegible] कीने प्रनाम सवत पाइ: पित चरन लगे
राघव [illegible] तिक बसतु साजि: बिहसत बितान
सोन [illegible] नजुवति वृंद उरब देस कल जावकअ
नंद: [illegible] नरेस: समतानल हतसे पति सुरेस
मिलि [illegible] क्रिय प्रनास: दीयसतानंद आसीस तोम
सत नंद [illegible] मागसिरलगनलेष: गोधूलसमयछि
मरितु बि [illegible] बेताल॥ सुभसमय सरब कलानि सजु
त [illegible] गुरबसिष्ट हिविदेहके: अवकउ सुनिय
बेस: कुलकरम बिधि बिद तरक रिकरि गुरबसिष्ट हिअयके उ
तबंधसजनम चित्र बिचक साधुसंगसमयके। हथहिरद हयस
मसाजराजित बीरबआरूढबने। नरबाजिघोरिनिसानजित
तित घनघुमरसानछ्यनं: सुपदेषिसपतिनागपसोत। अमरपति
अवधेसके: मुपम [illegible] बिसेषमहिमो समनको उकहिसके
सबह्ठयेगगनअनन्तगन: बिबुधसिंदनबनिरहे सुरमुनि
नारकक्रतकतक: जाहि किबिकपहके उवनपति संपतिद
षिदेषिसु अमरआनिदतनये: रचना अलोकि करी तिराजस ब
रवारहिवरनये: पुरजुवतिजालेसुजालगवषनि सुषबरातस
पेषये: निजनागरामबिलोकिरूपहि: लाजजनमसुलषये:
रहिसमयअवधिनरसआवन नयेयेह बिदेहके: सुषदेषिस
पतिजनकसोतना: नियतहरषेनेहके: नृपद्वारतोरनरचितनिस
चल बिबिधिउरधबिसेसये। सोबिदनाकरिरामसानुज अगर
मध्यप्रवेसये। नरकलससनमुषआनितरनी बनीसुंदर
आरोपितिहिंकनकआसन बेठिबरजगबंद॥ दुहा। पेषि
दुलह प्रेमपर: अअसुवासनआनि तजुनको सुषसुरसुगन: बि
धिकुनकहतबषानि॥१॥ जुगमनरेसुरबधुसुत: मिलेस हतउ
नमाद: जैसेजलनिधिबिमलजल: मिलितपसु किमुजाद
छंद बेताल॥ सुषरामचंद्रबिलोकि सबहिन अमितउरआन
दनये: सारंगकेरसुस्यामताततन बसनतडितबिराजये बि
धुबदनदिनकरतेजबिन्त नैनजलजसुहावने॥ आजानबा

रुसिय करिहर· बिपुलछबि छलहि बने: बपुबाऊ उच्चितरच्चि बिलछन
बसन दिब्य बसे धये: बनि मोरन गमनि· कनक बिरच्चित· अमितछ
बि अवरे भये:॥ इंद्र बाच॥ कबित॥ रामचंद्र लव चंद्र देषि· इन्द्रहि
नेह्तय: सहस बिलोचन सफल जानि· मनमो निजहि मनमय: उस
हगोत मश्राप· आप चितये जु अनुग्रह: महा अहित हितमानि· अ
मरप्रतिक सोरहसिय हु: कृतकाम बिवसनिंदत कस्यो· द्विजसु
थ निम मश्राप दीय· यह समय देषि अश्रयेससुत· लोचन छन जुगल
नलीय:॥ कबिरुबाच॥ छंद पधरी॥ सुन्दर बितपटु मंडपस थान
अति हि उतंग नगि आसमान: कृत काच लिम अंगन अनूप· अनेक
रंग अनेक रूप: अथ उद्देक न कधरपं ति अोप: जुत हरित बांस अ
वलंब जोप: कनकमय कदलि रचि काच रंग· फल पत्र जुक्त अ
पत उतंग· रुकममय रच्चित जरा वृन्द राजि· बिधि अंग रंग मीनां बि
राजि: लचपल्लव मंजर पुहुपहास· बधि सुषद बिबिधि कृतम सु
बास· अनेक रतनमय फल अनूप: राजत प्रमान जिहि रंग रूप· करि
मोतिन के तरु गुच्छ कीन· नहीं चीन्हि परत रच्चना नवीन जुतमानर
गजिहि भेरजोग: प्रतिमां सुरछं कृतम प्रयोग: सो धरे कलस स्वस
थानसंग: उपवन बाटिका मनु अनंग: जुन तरु तरु बिबिधि बिहंग
जाति: बसबात जोग कुंजत सुजाति· बंदन सुमाल अहह बिराजि
रति काम बाग मनु लतारा जि: कनकमय थंभ तोरन जु कीन: निर
म्मित मयूरत हात हानवीन: बनि कलस पताका धुजअवास· उत
अ अषिलचु बित अकास: प्रति द्वार बंधि तोरन प्रसिध: सो देषि बि
मोहत अमर सिध· जोतिमय रतन दीपक सजोर: हसतम नु थाम
परकास होर: बेदिका रच्चित मंगल बिधान: पुरयेस चोक मुक्तान
मान: कुंकम सुरंग जुत अषित कीन· परज्वालि धरे दीपक प्रबीन॥
धरि रंग पर आसन सुधारि: चहुं ओर खनी चोंरी सुचारि· प्रति चोंरी सु
मंगल प्रवेस: रिमजन हा कीनें सुर रिषेस: सो लगवती अंगार साजि·
बिधि जुक्त तहां जुवती बिराजि॥ दुहा॥ तब पल थल मंगल उच्चित
बारोगी बिवहार: करि चोंरी परवेस कीय: चास्यो राजकुमार॥१॥प
रे परमय पावक: नेगी आये लेन: बरकन्या चिरजीव ने: लगे असीस नि
देन॥२॥ चोंरी प्रवेस॥ बेठे मंडप मो कबनि: चास्यो दुलह आनि·
होन लगे बेद निबिहत· जथ जोग्य कृत जानि॥३॥ उत्तै नरेस सबंध
रहा: अद्भुत मंडप आर: दिमीय प्रमान उरं द्दवे: सुरसमाज सम

दाद॥ छंद पधरी॥ सुनयरचितहेमआसनसुरंग॥ अनमोलिजरित
अंगअंग॥ निजबेठितहादसरथनरेस॥ सजिसीसछत्रचामरसुदेस॥ बि
धानबीस्तंबहेसबेस॥ आवरितबेसछत्रावलेस॥ ओपतसबंधतराज
नकआप॥ प्रतिआसनबेठेसुतसताप॥ आराधसिधपरसिधओनि॥
बिद्याधरचारनबिदुषबानि॥ अधिकारीमागधसूतआद॥ सबक
बितबेदीजनसुनाद॥ जाबालिअत्रिगोतमद्विजात॥ तहानारदमोजक
सिपबिष्यात॥ इमादिमुनिरिषबरअनंत॥ महिमासुकरमअतुलि
तमहंत॥ दहा॥ कुलगुरजिनरघुबंसके॥ तहाबसिष्टरिषराज॥ बाम
देवमितिबाकुके॥ करतजथाकमकाज॥१॥ बेदितबेसबिदेहके
सतानंदसविसेष॥ बेदमनीतबिबाहबिधि॥ आचितकाजअसेष
॥२॥ करनसमृधजुअधिकहे॥ मुनिवरबिस्वामित्र॥ अधिकतेज
तपसाअतुल॥ तिनकेअमितचरित्र॥३॥ छंद पधरी॥ कीनेबसिष्टआ
रंभकाज॥ बिसतारअनलबेदीबिराज॥ रैसमधिउचितआलतिद
न॥ कनबेदबिहितआरनकीन॥ छंद उधोर॥ सबरिषनिपूजिसन
ह॥ बिधिजुक्तराजबिदेह॥ मुनिबामदेवबसिष्ट॥ परिपारमुनिप्रति
ष्ट॥ देवतनपूजनदान॥ सबनीतिकृतसनमान॥ अरचेसुअवधिन
रेस॥ सोगंधकुसुमसुदेस॥ सबहेसबसीसाथ॥ लियमुनिजोरहाथ
द्विजबेदब्रह्ममादिकआगमनो॥ दहा॥ बिधिहरिहरदिगन
थलब॥ दिब्यमनावदिनेस॥ आयेब्याहउछाहबस॥ साजिकपरद्वि
जबेस॥१॥ संपतिसोतासुषसमय॥ देषिबिबिधिबिबहार॥ मंग
पबेदेसिकुमिसहि॥ आदबिधिअनिवारा॥२॥ आरअपूरबदिज
तिनहि॥ आसनउचितबनार॥ पूजाअरचाप्रेमपर॥ करीबिदेहबिन
दा॥३॥ रामचंद्रजानेरहसि॥ देवकपरद्विजदेह॥ कीनीपूजामनसि
के॥ समयबिचारिसनेह॥४॥ पहचानतअपनेनपर॥ सबनयेबि
वससनेह॥ रामसरूपपीयूषरस॥ देषनम्लेदेह॥५॥ छंद बेताल॥
बसिष्टोवाच॥ सुनसमयकेतोबसिष्टरिषबर॥ सतानंदहिप्रेम
सो॥ करिबसननूपनजुकतकेन्यो॥ सबहिआनअधमसो॥ अध
त्रम माणिआदि देदेव सत्रीआगमनो॥ कबिरु॥ बिधिबिष्णु
रुद्रहिआदिदेसब॥ बिबुधबिनतातनबनी॥ तिहिसमयअंतहपुर
प्रवेसित॥ कपरबेषसुकारनी॥ छबिरामरलरदुलहनीसीय मा
ऊदेषनब्याकुली॥ रूतक्रपरस्रूपअनूपकामिनि॥ मांऊरनिवासरि

मिली: रहि बीच गुरु रनिवास अंतर· सतानंद सुजान: बिधि सहत लगन बि
सेष बेला· कही सब निसुनाए· तह सुनत रानी बिप्रबानी· सुषन चित्र
सम भई॥ बर बिप्र त्रीय कुल बधू रथ· अति प्रफुलित आवहीं॥ न्हप न
रिकरि कुल रीति नेगम· बिहलकरम बिसेषये· रहित मय बिप्र
जो पुनि आग्नि· लहग आर कलेषयेः॥ छंद पद्धरी॥ सजि म्रुन
दिषोड्स सिंगार: बिधुबदन बिलोकंत बारबार: लषि सो जाजन
नी लोनलेति: नोछावरि दीन बधू निदेत: निमि बंस निमंत्रित सुष
नारि· अवलोकि सीयहि जलपीयत वारि· नंपरानी दीय आपास
नेम: पथरा वक्रमल हनि सहलप्रेम: गुरवधू समंगल गोन गीत: प
धरा रसीयहिं म्रूप सप्रीति आवति मानजुबती अनेक: बिचित्र
ली कवरि गजगति बिबेक: निरषन सुष मिलि चलि अमरनारि
क्रत कपट रूप त्रीय मोहकारि: रहिं तातिक वरि मंरूप हिंआरे: स
मजुवति ब्रंद मंगल सुनाए· तह प्रेम जुकत कंन्या पुनीत: संग
रामचंद्र बेग रिसीत॥ दहा॥ सुतासील ध्रुव जनककी: सीय अ
जो निज जानि: तईअर मिलाओ रसी: बिस्व बिदत सुत बानि॥१॥
क्रतीकुस ध्रुजन्त्रात के: हे पुत्रिका सुदेस: महसुलछनां मांरवी
श्रुति कीरति सम बेस॥२॥ सीताराम समरपित: साथ उरमिल
सेष: तरतमांरवी रिपुयंनहिं· श्रुतिकीरति सबिसेष॥३॥ तब
बेगरें क्रम जुकत: बरकंन्या गुरबाम· तहा बसिष्ठ तिष्टमनि
करत लयेसुतकांम॥४॥ छंद पधरी॥ तह प्रथम सबिधि पाव
क पुजाए· गुरदुऊ दिसके धुनि बेद गाए: सुर पूजि सबे गोरी ग
नेस: आचार हेन लाग असेस: आए जु देह धरि बिप्र बेद: आन
द पढत साषा अषेद: मधुपुरुक आदि मंगल सम्रल: क्रत होनल
गे सब सानकूल·॥ दहा॥ राजजनक पटरागनी: मिलि पुरजुव
ति समाज: आई मरूप मा मेनब: कत समीप सकाज॥१॥ जोरि
गा गिराजा जनक: पटरानी स पुनीत: ज्यो हिमगिर मेना वती
रस्या क्रुरसरीति॥२॥ बामअंग बिनता बनी· दहन राज बि
देह: निकट बेदिका आइ निज: दंपति सहत सनेह॥३॥ छं
द छेअ पदी॥ कोपर कनक अग्र लेधरयो:...

नतिजन्यै : कनकहुं न जलजनकनगरे · सुविसुगंधवकुबिधिनिवनो
सीतामंच रचो हिय महिमो ।। रानचरनकरजनकपषारे : जेमरवु
लकरउरधारे · तेपरसतत्नरगंगसुनीता : बिबुधविदितनयताकेचित
ता : जिहिजपरसतगोतमनारी : सिलतनतजि सरगतिसिधारी ·
जिनके ध्यानविवससुनिजोगी : विषय वियोगी साधकजोगी : ननकू
रेपदनखहिसहरा : तिहिजगसुरसरिगाअवतारा : जेसुकोमरलसेस
सिरसोनित : तातेसुक्रीलिलितिनितसोचित : तेकमलकुचकुंकनन
कित : वेहितसुरनरपपेखिवहिन · जेपदबिधिबिसेषउरधारे : परम
सनेहविदेहपखारे · पावोहिकंजसुरनिपीधारे : जनकसखानसीस
लेधारे ॥ दोहा ॥ नवकुसपत्रकनकपतनजलं · रानचरनजलसीसथा
रत्नकेसिरसुनसुतजन : दीनीतिजविप्रसीसा ॥१॥ जनकरगोजुलिरमनि
सुत · जलकुस्सहेसुजनजोग : सीतसमरनखपिता : दसरनमंत्रनयप्रेम ॥
॥२॥ चरनपखारेजनकिके · कनककेभ्यसंकल्प : दीनीविधिजुतजुग
लिकि · बिगतअनेकविकल्प ॥३॥ बरबरनीलिरमोरबति : मनिमुक
तानपनीति · जोजुलेन्जगतकी · पुकैगारनरश्रोनि ॥४॥ नरकेनंजु
नवेदविधि · करकरयत्नजुकीन · उनयउनरीयत्रारतहो : हिजवि
ये घिहुतदीन ॥५॥ छंदचेताल ॥ त्रतिप्रलोरविवेनुपरत्न : रोगिर
गस्तुरगये · तिनसत्नितिरषतराजरवनी · प्रतिप्रमुदितगगरसो
नरवेतीजुवतिरतिसुख · गीतमंगलगान : त्रिगरिप्यतहीसकन
छिनेसुन · जातमीनसुजान · अहजलरथ निनरतिकोवत · गोषग
षतिगारः त्रतिसबदमितिजेकारथुनरत · सोयसोयसुतारः दिसि
दिसिनित्तुकुलनअसासनि · नवउछाहनि हारही ॥ सुषगोनमे
गलबितुतमिलिलिलि · बिबिधितरकबियारही ॥ त्र्यथगोत्र
चारकथनं ॥ दोहा ॥ गोत्रचारवसिष्ठगुर · कहतनयसुनक
ज · सुनतजथाबिधिपुनिसुष · मुनिवर राजसमाज ॥ वसिष्ठ
बच ॥ छंद उधोर ॥ बहिबेदसम्मतविचार · रहाचलोसाष
चार : सबजततहलितनगवेत : रकसनयदेवअनंत : प्रभुसेषफन
पर्यंक · सुषसयनकीनिनिसंक : बहिमतयजलतिहिवार · अति
सयअगाधअपार · चितनाभिकृपसथोन : मिलिपंकनीरसनो
त · करतारनाभीकूप · उत्पनकमलअनूप : तत्वबसवमति

हिकाल: समसलिलनाल बिसाल: जलअंतनालसुजार: सोईकमलबि
कासिसुतार: अद्वीतीय पंकज एक: आमोद प्रसरि अनेक: तिहिकमलते
अवतार: अनजो निब्रह्म उदार: उपजन बिसमय आप: मनन्ह मितेन
अनमाप: अबकोन लोक हांआर: मनुकोन थो पितुमार: कोवरनन नाम
बिसेष: उरबद्यो भ्रमजु असेष: बिच कमल नाल बिसेस: पुनिकरहि
इप्रवेस: बहु गए कूल पबिहार: पै नाल अंतन पार: प्रभु नाभि रिंअ
प्रचार: बिधिदुइरगो तिहिबार: नवबीति नहां चरमंत: नवउदरप्रा
हन अंत: बिधितनये भ्रमत बिहाल: निकसे सुपथ तिहिनाल: गतगरब
नौ तिहिपान: महिमा सुजानि अमान: बलबुधि गतजो बाल: कृतदी
नता तिहिकाल: प्रभुदीन बंधुदेव: अनबिछ अमित अजेव।। ६६।।
मलबरन धरि षोड्स मः एकबीस मबीय आंन: साध कु आपनमतन
सो: बिसुकलेन लखो नि।। १।। छंद उधोर।। बिस्वाससु निनबान्य
सोई कमल न्याहि सांच: तिहि कमल बैठि सुनाम: कृतध्यान बिधि
अकांम: मनलगी जोग समाधि: सब छुथा त्रिसा साधि: समता बरदी
पसोध: बहु उपजि अंतर बोध: परपुरुष ध्यानसप्रीति: बसनपहि
कलप बितीत।। छंद पधरी।। सोई जानि संतमन बचनमेत: हरिदि
रस दयो तप उअहेत: तिहि छन बिदेह लषि गति अनंत: कर पर सकरे
ष रमाकंत: चेतना सकति नईब दनचारि: निरूप सगुन न युनेनि
हारि: आनंद अस्रु रोमांच अंग: उरउपजि नावसालि क अंग: देव
धिदेव बिधिनाम दीन: पद दयो असृष्टि करन प्रबीन: बिधितनये प्रजा
पति चित बिचार: उतपन्न तेज मिटि गौ अंधार: नव द्विसबीज उतपत
नाम: नहां जये चराचर जीव ताम: महि बात गगन जल तेज मेल: पेन
मिसलिलवर रचित षेल: धरिकाल मूल अरु जीव धात: बिसतार स्व
ष्टि बेदनि बिष्यात: चत्रषांनि स्तनव असीचारि: बसकरम जोग सु
षदुष बिचारि: बिसतार बिस्व माया बियाप: अरु रहत सबनि तें
न्यारि आप: कृत उरध पार पर ब्रह्म लोक: सबबसत ब्रह्ममयसु
अलोक: चबबेदन बेदबानी सुचारि: कृतकरम लोक उधारका
रि: उपजे मरीच बिधि उदर आर: सुत तये तासक स्यप सुत्र
र: कस्यप प्रजाप उरसानकूल: बिबसांन तये मनुधरम मूल:
मनु बेब सत तये महीपाल: बिसतार बंस तिन ते बिसाल: इक्ष्वा
क तये अर्क मेल: सुत तिहि बिकुछ उपज्यो बिसेस: उपजे ककु

नघअदिबलअजीत : पुनि नये अनतोएष्ठपुनीत : तये विस्वगंधसुत बेन
धीर : पुबनासय असं सावसतधीर : बृहदस्व कुबलीया स्वकबिनीत : उप
जे द्रिढसस्व तिहि हिबिनीत : हरिजस्व तये सुतपुन्य हेत : महिस्नेय निकु
तहलेबलसमेत : बरबीस्तये तपबहरुधास : समथरसकरसरा
जाकेसात : सेत जितस्तये पुतवाल सदर : प्रघेसमानधाता सर सु
कुसदुतनस्य रसुपाल : अनरण्य हे हरिजस्व श्रार : अरुनहि ति
बंधन पुनतोल : सतब्रत तिसंकि निसंकुतास : चवबेदस सारक ह
रिचंद : अवनासतअश्व जीतरइ : रोहितनरसतय हरितराज
बेपक सुदेतसुबहनसाज : पुनि बिजय नहकेप्रक सतये बीर : बाऊ
क सर्यरसजु तसगरधीर : असबंज रस राजाश्रेसुमान : अगटे दिलीप
सुदवे प्रमान : झतनपति सगीर थव अकीर्ति : पुरष्व सत्तो निंगात्र
बीत : सुन्तयेतब्रिपुनि लिंपु दीप : अंसुम पुत्रगट रूरत हथीप
रितुपरनस्तये महिसरबकाम : तस्यनयेसुदास सौदास नाम : अ
संमकसु लिमूलकस्तयेआप : दसरथ पुनएल बिड़ुस हदाप : बि
स्वसहस्तयेषु हूंगबीर : तये दीरधबाहुरधु अजसधीर : दसर
थ कितीपत यौ बिसुदेव : सबिसेव सुरासुर करतसेव : राजाधि
राज सुतरामचंद्र : अवतरे कबरसुभ्रमतिरइद्र : इक्ष्वाकवंसवर
णो असेष : बरबधनाऊ बैनवबिसेष : जोरी बरबरनी चिरजीव :
दिन दिन मतीपरकदेव ।। दूहा ।। साषोचार वसिष्ट सुत
बरनिके तोरघुवंस : पुनि पुरकमतेजपन : पृथ्वीप्रगट प्रसंस ।।
।। कवित्त ।। निराकार निरलेप : नियत निरविघ्न निरामय : निक
लंक निरसंक नाथ नरसिंघ निपुननय : बारधिजा तानारि ने
ह बांमांग निरंतर : निगमहेत निरबंस करे निसेष निसाचर : त्रैलो
कराज दातानुत दीनसहाइक दुष्टदम : सोई बिस्वथंम्भ नरहर
सुकबि जिह्विसुरामलीयेजनम ।। १ ।। इति श्री राम चंद्रसाषो
चार सूर्यवंस बरननं नाम ।। बार हट नरहर हते नबिर
लि ।। जंन कर्ता लहुजबाच ।। दूहा ।। कहत जनक अबसी
ल ध्रुज सुनऊ बसिष्ट रिषेस : कहऊ हमारा कहि कृपा : बरन
लि बंस बिसेस ।। बसिष्ट उवाच ।। कहो बसिष्ट बिदेहसौं : बि
वरिसबिसतर बात : सुनऊ नये नपमूलसो : जेतवकुल बि

संवैसमध्युनार ४ राजानिमकेपुत्रजो माहाबीरमथिनाम प्रगटकरी मथुलापुरी

ष्याता॥२॥ बेबसतमनुकेजये: नपरह्याकसुनीतिः तिनते
बाथेबिसबर: परमपुनिसोंप्रीति॥३॥कुलमंडनरत्नाकके: नि
मिजयेबेस नेस: औरहोतअवनीतषो उरगमदलबलदेस॥
॥४॥उपजोपरबतनेमिमहे: कोउकारनपाए: जातेपायेनामनि
मि: थनपूरनथनधाम॥४॥छंद उधोर॥ मिथिपुत्रजनकबि
देह: जयेउदावसु दिवदेह: नपनदीवरधननाम: पुनिजेएसुकेतजुताम
जयेदेवरातसुजान: तिहिग्रेहसिवधनुआए: पुनिहहदथुकुलदीप: ज
येमहावीर्यमहीप: जयेसुधृतराजनरेस: तुधृष्टकेतसुदेस: दिब्यदरस
देहयदेह: मरुसदासुकृतसनेह: जवजोप्रतीकपजूप अरुकृतरथजु
अनूप: जयेदेवमीढदयाल: बिसुसुबाहुबिसाल: जयेमहाधृतजु
महीप: पुनिकृतराजप्रथीप: पुनिमहारोमाधाम: धनस्वरनरोमोधाम
जयेहसरोमराज: जवजनकसंग्पात्राज॥२६॥ताकेसीलजनक
धज: अनुजकुसधुजएक: बिद्याबिनयबिबेकबिधि: करतजुधरम
अनेक॥१॥आगेकहियेनामिये: पाछेजनकप्रमान: यहसंग्पानिमि
बंसकी: भगरसुलेकपुरान॥२॥ पवनसीतापुत्रिका: रामचंद्रजाम
न: सीलधुजफलसुकृतको: पायोबिस्वबिष्यात॥३॥ कृतजुतदोउबंस
के: माबोचारसुनाए: होमजथाबिधि होनलगि: सुनबिबाहसुषप
ाय॥४॥कहेबंसनरहरसुकबि: आपसुमतिअनुसारि: बिबसिजलि
छमिजहुबिबुध: सजनपदहुसंवारि॥५॥इतिश्री निमिबंसब
रनन॥ अथबंस कीर्तन॥ छंद बेताल॥ कबिहुबंसोऽक
रयहनआहिसुकृतकरिकरि: सतानंदबसिष्ठ: पुनिबामअंगनिअ
निबोमो: मोगिलहिमनइष्ठ: परिक्रमनमंगलजावरीपरि: पानिम
रषितपानि: पतिअग्रतुलहनि दृष्टिपावनि: प्रीतिदृथप्रमानि: नह
दईद्बिप्रनिपूरनाहुति: बेदबिधिजयेभाऊ: जुवगगनधुनिजय
जयतिजाषा: उरअसिषउछाह: सुरसुमनबरषेहीयनिहरषे: बिबु
धदुंदुभिबाजही: मिलिगोनतानिनिअपछरागत: गगनमंडलगा
जही॥ नपद्वारबाजिनिसानिनिरन्तर: नत्तथरासानाद: पुनिलहेज
चकदानपूरन: बिहसिजयजयवाद: उरजनकअतिआनंदउपजे:
नयनसुषजुनिहारि: कृतकुलाचारसबामकीने: बारिपीनेंवारि।
नपजनकबहुरीपाटरागनि: परमआनेंदपार: गनिसिधसबमनु
बोधिगोगिहि: आपनेंघरआर॥ दोहा॥ जोहिमगिरगिरजाहरी:

श्रीयाहरिहिजलरासि : सोबिदेहरमहिदई : सीतासबसुषरासि ॥३॥ सि
वकाआरुहरामसीय : थेजनवासेआर : मकरध्वजरिब्युकुमनु : च्यु
नीसानेबजाय ॥४॥ कवरकमनजनवासकहै : मिलिसुषमंगलमूल
नतनिरघोषनिसानधुनि : सुरगनबरषतफूल ॥४॥ जनवासेदुलह
निसेजुत : दुलहसबेसियार : दसरथनृपतिबिदेहतब : बिदाकेरपरि
बा पाय ॥५॥ सबेबिलोकिबिहसुष : उमगतहेतअसीस : अतिआदरअ
नंदसों : डेरनिगयेरिषीस ॥६॥ सुषहिबिहानीसरवरी : दिनकर
ररसनदीन : सुरपूजानित्यक्रतसब : लोकजथाक्रमकीन ॥७॥ जन
कबिदेहसनेहसों : संजुतरिषनिसमाज : जनवासेअवधेसपह : अ
येसमयसुसाज ॥८॥ सनमुषआयेअजसुवन : प्रेमसहितपधराय
धरमसत्यमनुदेहधरि : बेठेसनाबनाइ ॥९॥ सतानंदबाछंद
पधरी ॥ नवसतानंदसबहिनसुनाइ : यहकरीबिनतीबिनतीब
नाइ : तुमसबेब्रह्मरिषबरबिनीत : पाउधारेइहिंजगपुनीत नि
मिबंससरसितुमक्रपाकीन : नहिबरनिजाइइकमुषनवीन ॥ ज
नकबाच ॥ साधतसियसमाधिजोगआराधतजोगी : तउनहीदर
सनहोत : रहतनिसबिषयबियोगी : रूपनरेषबिसेष : आदिअ
तनअावत : निगमागमजुपुरान : कोउनकहुहेनबतावत : जो
बसतनिरंतरहृदयजीय : जुनजोनमुषबारिजुत : सोईजोतिदेहधरि
सगुन : सबनिदिषाईगाधिसुत ॥१॥ तिनकेकुलतपतेज : पुनिजलब
सुहिबिहारीय : जिनकेसत्यसदेह : अवधिसुरलोकसिधारीय : जि
नकेसुतपदरजछिपार : सिलत्रीयतनपायो : हरधनुतेजोजीति
जगपबरसुजसबढायो : जिनआसुरसमरअनेकजय : रिषसुरेसरि
ताकरीय : महिमाप्रसिध्यजिनकीअमित : हमकोअमरनिउचरी
य ॥२॥ छंदपधरी ॥ रमादल रघउ ॥ दुरलहमहिरावरीह
सि : पुनिदीनीपुत्रीरूपरासि : रविबंसमरसितुमजनकराज :
कीनेजुअनुग्रहहमसुकाज : पूरनअमोदसगपनप्रमानि : जु
गनयेराजमनुऐकजानि ॥ नरदूजउ ॥ सुषदुषजयेतुमए
कसंग : नृपतअरुपायेपदअनंग : कोउऐकबकोकुलमहकहाय
कुलकरतगरबतिहिबचनकाय : प्रतिपुरुषनतुमराजपुनीत :
गावतजसजिनकेसियगीत ॥ बसिष्टबाचा ॥ कोउहोतसु
षीइहिलोकऐक : वहिलोकनिरयबिलसतअनेक : दुषसहत

कोउ रहि लोक देह : सोउ रास्वरग जुगत तलनेह : दुवलोक सहलके
उगारि दीन : तव ऐक नृरिग्र घजालनीन : अतिलोक लोक महिमा
प्रकास : निथले सनक्री समसावकास ॥ सवैया ॥ जोग कुजोग संजो
ग बिजोग के पूरन पुनि प्रकासे : रजस सातिक तावन के सुष : क
ष्ट करे रिपु रोर बिनासे । रसस वाद बिष्माद बिनोपद वी जुग साधि
प्रमोद प्रकासे : अद्भुत चरित्र बिदेहनि के सुनि देव अदेव न
रेस समासे ॥१॥ जाबालि बाच ॥ छंद पधरी ॥ मनजोति जदपि
तिअप्रमान : दिनकर संजोग बहुत निदान : निज कुल निसाकर बंदनीय :
लहि सत्तु नालम हिमा सुलीय : सुरसरित पवित्र हासुनाइ : पदवावनपु
वनताहि पाइ : नमिवसकुती महिमा बिसेष : सीय अगम पुनि बदी असे
ष ॥ बिस्वामित्र बाच्य ॥ हाँकृत सुनकु नकनरेस के : वेद बिदित बि
षात : सीतापावन पुत्रिका : जगकरता जामात ॥१॥ कबि रूा जन
क नृपति अवधसजुत : महिरि ओलिम हीप ; वेग्नेोजन सालब नि : अ
पिल संग अवनीस ॥२॥ ऐविजि थाक मपो ति बकु · बरन चारि सुनवे
ष · आसनु रजाच क अवर : अरनि निजा हि बिसेष ॥३॥ जनक चर
न अवधेस के : पुत्र निसरत पषारि : अनमोलि क आसन उचित अ
थाजुक नबैठारि ॥४॥ छंद रंगोनरी ॥ रतनजरित चौकि जुकनककलि
धौर नृपति दसरथ आगे धरि : मनिमय थाल बिमल बिसतीरन ॥
तापर धरे मध अवेलागन : स्वरनरजतमय थाल सुहाये · नृपनि
अग्र धरे मन भाये : परुसन लगे सुधारस पावन : भोजन सतरह
बिधि मन भावन : अरु मिष्टान बिबिधि बकुआये : जे जुवतिन ब
कनाति बनाए : स मयन सार अवके सुगंध नि : बे छित स्वाद अने
कनाति बनि : पातिपातिछन मह परुसारो : पूरन त्रयो अमृतपन
वारो : थितचव कवर पितार कथालहि · करन त्रये भोजन सुनक
लहि : दासी जूथ जूथ मिलि दिसि दिसि : बनी सिंगार बनारित दब
स · गारितर कजुत गीत सुगावत : सोदसरथ सब नृपनि सुनावत
छंद पधरी ॥ दासी बाच ॥ का देहि गारि दसरथ कुमार : सुन पित
सुजस सुनिये सुढार : बऊ बीर बिहारे ठीनिबाम : कुकलत्र करी
सोई बिबस काम : यह करम करे दसरथ अनंत : पितकीरति सु
नकुसपतष त : कछु ताकके सुनिये सुचार : हम जथा सकति ब
रनहि बनाइ : ताके काज नें चरित तंत्र : माने नहीं कामजंत्र मंत्र

उरनाहिनदयादुषदेषिश्रांन: सुषमानलकरिश्रोनीसनान ।। छंद पध
री।। कुकलत्रकीनीरसहिनीनी· निसनवीनानगरी।। मनबिस्वमानी
जगतजानी: श्रतिहिलछनश्रगरी।। कोगनैकीलैनिसनवीने: पति
सुश्रवसरपाइकै: कृतकरमतकेबिषमवाके: सचहीकहतिसुन
इकै: परपुरुषप्यारी निलजनारी· सुनऊतलहसांवरे: करतीकु
लछबमिलनतलमन: रतपतिसोरावरे: दिश्रतनदहीरूपरेहु
निसनवनवयोबनी।। गिरेषकजलबसननिधिजल ग्रहनक
तुकिश्रनतनी।। बनिनीललहंगामोलिमहंगा· प्रतिहिपतिरते
ग्रतुरी।। उपरेतिसोहैमनबिमोहै· चितचंचलचातुरी: नागे
सकनमतिसेजसुभगनि· सहजसोरतसुंदरी।। दिसउदयप
दथरिश्रसतसिरकटि· नेगजुतनितरसनरी।। हल्लग्योहर
नषिरऊसिषनष· कपटरतजुतिहिकीयो: कृतगुमपापी
सुतलषापी· लालइयतातिहलयो: तिहिकालतिहथल: बदि
प्रतयजत· उपजिश्रननग्रोषधी।। भिटिमिषनिचवीत्रमर
श्रची· श्रहस्त्ररबितावधी।। लषिश्रषिलईस्वर· प्रभुदयापरबिस
दसपबराहकै: बारयिबिहारीयधरऊधारीय· छनकहीरदश्रयद्धै:
नपबेलनवलपाइप्रबला· नामकरिकछुनेगई· नवपापतीनीमर
मलीनी· नारपीउनतहलैई: रिषश्रापरीरवदाहमनुदव· बेणल्ज
रिनिरयो: सोउतुगतिनाको श्रातछाको· चलततेकनचितयो· व
हलरीबिहलतमिलतश्रथमल· रसनिश्रसियोहीरही: प्यारीपराई
दधुजपाई· सहतश्रादरसग्रहीं: तबहीयोहरप्रेमपरषे· सुयि
तकीनीसबै· श्रृंगारसाजेबजेबाजे· तिहिंदपतितुगतीतबे· परले
कपायोश्रनश्रघायो· दधुजछोलीप्रीतिसो· नहीसोककीनोमनमल
नो: नियतनेहश्रनीतिसो: तिहिसमयजुततप· हिरनकसिप· दैतत्र
तिबलदेषिकै: परश्रेहपेसीश्रजऊबेसी· बपुसरूपबिसेषिकै।। तस
रसहिरतीमदनमाती· नाहिनहिरकैछुनतज्यो: श्रनयासपायोश्री
यपरायो· नातिनातिनसोनतज्यो· श्रतिगरबयाकेचितताके· श्र
नाचारजुश्रादस्यो: सुतहनतसाथहिश्रनपराधहि· करमश्रगी
कृतकस्यो: श्रनरथश्रेसेश्रतिश्रनैसे· सरबब्यापककोसहे।।
दीनहिंदुषारेलषिमुरारि· करतरलानितरहें।। धिरकारियत्त

यहअचंभा· निकटेप्रगटे नरहरी· प्रहलादराषेअसुर निसाषे· बा
तनिगमनि बिसंतरी॥ नरीबेदषीनीछीतिलीनी· दैवंहरि बंदह
दई: सबसार दीने तिसन वीनें· न्रपतिन कुंनेगई: उष्टसदेषी बिधि
बिसेषी· उदिकजुतद्विजअर्पई॥ पृथीपवित्र हिबिस्वमित्र हि· हरिसचंद्रस
मर्पई· द्विजदीनजानेंमननुमानें· वलीबलिदेहतेंबस्यो· सोषीवताप
सबिरतिकेबस· आखुनम वृत आचस्यो: परपुरुषपषनन्दयस्वबन
बवनछल बिसतारयो: महि त्रिपदमापीठरे पापी· न्रपुसुवन बिनुच
बस्तयो: न्रप नियमनांर्घ्यो बलिजुबांर्घ्यो· अविलनुवअपनारके· के
नकपंरकरनी लईधरनी: हर्इंहिंअनिकें॥ तिहिन्रसुपेमननुल
गे: सुनेहैहयअतिबली॥ बासवबिगोयेदुषनिरोये· चित्रचप
लउग्रिवली: अरबस्येअरजन मिलीतनमन· सहसबाहुसनानये
ति हिमननुमानीपाटरोनी· मोहमयरसमांनयो: छविमदसुछ
क्यो हितनतांक्यो· जमदग्निमुनिमारयो: नपत्रगनिविहिछनरे
षधरिमन: परसरामसुजारयो: बरबयरवाधेनियमनार्घ्यो· छत्रि
कुलबलछेदयो: रुधिरननहायो· निगमगायो· द्विजनमहिनिकल
दयो: कृतपितरअरपनरुधिरतर्पन· रहेसरसरितान्तरे: इकवीसवे
राअमरतेल· कुसमजयनरषाकरे· उष्टविसेषीद्विजनदेषी· नीतिध
रमनजोरहे॥ रहिहैनसांषीसन्मसाषी चलिहिजगविगोरहे॥ इकवी
सबारी· चितबिचारी· मुनिनछाठीमोषके॥ योंकेअलोकिकरावण
दिक· उररहेअविलाषके॥१॥ दूहा॥ सकुवामविक्रमसहत· क
वरपितातवकीन: करिबीनोहिस्वतंत्रअब: इषकुवचनअधीन॥१॥
अमतरहीनवन्रपत्तनि: पेनहीथिरताआर: अबदसरथअवधेसके
सदारहेसुषदार॥२॥ सोकरिराणकुंआजते: याहिनपावेओर: निम
रहोन्रपअहनियत· रामकवरकुलमोर॥३॥ नरकन्तेददासिनत
हा· गाइसुनाईगारि: रीझेराजाराजरिष: रहेविबेकबिचारि॥४॥
करीअगरनरहरसुकबि· रामरिझावनकाज: दीनीहसिहसिन्रग
तिद्विद: सूरबेससिरताज॥५॥ छंद बेअषरी॥ जालगवाषिनपथ
जुवतीजन: देषनसुषदुलहन्रपदरसन: सुनिसुनिसोंधगवाषिन
सुंदरि· हसतपरसपरकरतालीकरि: बरनि बिलोकनिदुलहनिव
निबनि: सकुचततकगोरिरससुनिसुनि· तोजनमनवछिंत्र
नस्तरि· कोरआचमनषरिकोकरिकरि· आयेबीरा बिविधिबनं
ये: सोमृगमदघनसारसुहाये· सोधातेलअनेकसु

तार चिरचे समधी बनि : कुंकुमसे रंजनी रअनेकन : गहि गहि नवनत सि
अनगन : करि पूजा अर्चा सब क्रमक्रम : पुहचाये जनवासे प्रीतम : बि
विधि बिसाल अनेक बनाई : सोरंजजुत सुषसेज सुहारी : सबे रूप
सुषसज्या सोये : सीतल पंषा पवनसंजोये : नृपति बिदेह परम सुषपा
ये : अपर दिवस जनवासे आये : पूजि बसिष्ट अवररिषपावन : अ
पनबसन दये मनभावन : दिये अनेक जथाक्रम दीनें : करि मनु
हरि प्रसन सुकीनें ॥ ९ ॥ कामदुधा सी दुगधदा : चारि लष्ट
ईधेन : रतन सपरिकर बसन सुत : संजुत बछ सुषेन ॥ १ ॥ आनंद
नये असे षडर : सिथ लये सब काज : डेरो बिसवामित्र के आयेमै
थिलराज ॥ २ ॥ पूजा अरचादान पुन : सब बिधि सहृत सनेह :
बहु बिनती कीनें बिदा : बिसवामित्र बिदेह ॥ ३ ॥ कोसिकदसर
थनृपति कहु : मिलि गनरी समनाट : उतर पर बतक हँचले : दि
दय ध्यान रघुरारि ॥ ४ ॥ पधराये तब अवधिपति : मंदिर जनक कृ
पाल ॥ ५ ॥ आय अहीप : चारयों पुत्र सु अग्र चलि : औरी पा हि प्रतिदीप ॥ ५ ॥ आयअहे
बिदेहके : समसुत बंधसमाज : राजसरीर चना रुचिर : रीझके
सिधराज ॥ ६ ॥ बेगसत्ता बिदेह बनि : अरु सजा रघुबंस : दि
असंष्याकर जे : पूरन त्रगट प्रसंस ॥ ७ ॥ छंदबेताल ॥ पर्जक
हेमसुरतनमनिमय जरित रंग अनेक जे - सुतरंगरंग अनेकस
जा - रीऊपरबसत्र निरजे ॥ कौसेयदोरिन कसे कूदसु बिबिध
अतिसोभावनी : फबि रहे जरित जरा रकूँदा : मध्य सरसुकतामनी
तिन बेगिरायवसीया संजुत : सबिधि पुनि दुलह सबे : रहोहोत
नेछावरि अंसषित सजन सुषदेषत सबे : अनेक दिव्य जुरतन
अगनित गंधबसत्र सुकोमनो ॥ मन इछजे जे बसत मंगल : नि
बिमल कारि जजि हि बने : परचारिका नित सनिकट बरतनि : नि
यत मनु अनुगामनी : सतचारि बसन बिन भनसि सजि : सुंद
री हित स्वामिनी ॥ इकलछि पतनी आनअर्पति : बिमल बुधि बिस
तार : अपार अहकृत चित चातुरि प्रीतिजुकत प्रचार : पुनि अ
श्वको रिजु प्रभु परायन : दान दीने दास : सब काज साधक साथ
संतत : सावधान सहास : गज अयत करणी जूथ संजुत : कनक
मय किंकिनि कसी : मद मत गुंजत मधुपमाला : अवनत रस
रसबसी ॥ बनि अयत अस्व सुषेत्र संजव : जरित जीन जराट

नै: अनेकसाज बिराज अस्तुत· जिन हि तिमा रुतिलजै: सुनसुष
रसहस्त पचीसतिरिन· साजु संजुत सोचनैः जिन बाजि जब्र जुगव्र
षतजोते· बलीकि किनि सो बनैं: सतसहस सुरनी सुरसुर निसी
दिव्यबरनदुगयदा· सहबछ धेरा कनकसाजित· से बिसुन्दर
तनसदा· चवडोल सिबका सुषसुषासन डोलिकादि सुदेस: अ
नेक आकृतजाति अनगन· पुरुषजुकतप्रवेस: बिधिप्रबदिय
जुकनकबासन· गेरगेर निलेरये: सबसमृध देषि बिसेबिस
ता· नृपतुरगअबिरजनये· प्रतिदेससंतवकरतप्रबली· अगगि
रउनमान· सुगफेनउजलझरलमदजल· मत्तछरित अमानः न
रिसकदसकरी नारबाहक· बृषतबामी बकुबनै।। सबसोज
संजुत बिहतसाजे· आनिथलथलआपनैं· कौगनैमहषीकर
रिकुललो· जितेकी उजैत: पदचारपदहीय प्रबलकपट· आ
षेर निपुन अनंत: पुनिकरी सु जिब सिष्टसुजा· बामदेव सबो
म: बसत्रादि भूषन बिहतबानी: कृतसमानसकाम: पहर
रदसरथनृपतिपावन· प्रमप्रीति हिपांपरे· मनुहारिकरिक
रिअमितमहिमां· रूपमनआनंदनरे: रघुबंसआदि अनेकरा
जा· बिमलमध्यबरातकै: सनमानबसन बिसेषसोरल· जि
हिसुन्वितसुहातजे· मिलिस्तचारनसियमागध· दयेबछितद
न· करिनगतिअतिमनुहारिकीनी· सबहि बिधिसनमान।।द
हा।।सकलबराती संगकै: लघुदीरघजेलोग: पहरायेपाटंबर नि
जुतआदरजिहिजोग।।१।। द्रब्यअनेकनभाइजे: सोसनमान
सनेह: जनु बिभूति त्रयलोककी: दीनीजनकबिदेह।।२।। अथन
रदमनक प्रति प्रबोध पुराप्र संग।। दहा।। बेगेषरिषिउ
नितहा: औररहसिजुऐक: संजुतप्रेमअसिष्टसों· कहतबिदेहबि
बेक।।१।। छंद पधरी।। इकसमयआइनारदरिषेस: हमकरी बिबि
धिपूजाबिसेस: बीनासनादहितजुकरहाथ: गावत अनंत कृत
चरितगाथ: सबसारतयेजनुसानकूल: मोहिकलोगेरपिमुनि
मंत्रमूल: कारनरूपहरिदेवकाज: रावनबधषोवनसकुलरा
ज: मायातनमांनुषधरिमुरारि: बिबुधहितरामप्रगटहिबिच

रि: दसरथसुतरघुबंसहिंदयाल: चवबधउपजिबेचरषयाल:
प्रगरिहैंजोगमायपुनीत: तवग्रेहसुलछननामसीत: हरित्री
यालछिप्राचीनहेत: तिहिबिरिहैंराघवजससमेत: मुनिकेहेमहि
परब्रहमसेव: तवतब्रस्त्रीयालवसुतानाम।। दोहा।। एकसमय
हममषत्रबनि: करिलागुलसुधकीन: ताकेसीताग्रयवे: पुत्री
प्रगटिपुबीन।। १।। तातेसीतानामतिहि: पायेलोकप्रकास: चे
दाननमृगलोचनैं: बिमलसुलछनबास।। २।। निसचयममप
रागनी: तबहिसमरपीताहि: करिपोषीसाकनिका· हेनजुक
तचितचाहि।। ३।। छंदपधरी।। मुनिकेहेमहिउपदेसमंत्र: नैदेवी
इछामिलेतंत्र: फलतयेमनोरथसफलकाम: राजतएकासनथी
याराम: कोसिकप्रसादसबसरेकाज: जनमहमकृतारथनयोग्र
ज।। कुलदेवप्रजानिमनग्ररा म रानि वासप्रवेस।। दोहा।। स
मयसुमाघिसबधसुन: रामग्रारहनिवास· करनजथाबिधिम
फलन: बिद्याहीनसबिलास।। १।। छंदपधरी।। रहतानंदमोहित
गुन्नार: कुलदेविदेवपूजाकरार: पुनिकरेफलतबेदनिपुनीत: पुन
कारनसबबिधिरामसीत: फलसोगसपूरनसबैकीन: द्विजसत
नेदकहेदानदीन: नोछावरिकरिकरिजनकनारि: छबिनिराषि
यतजलवारिवारि: पुनिपुलिउरलावतिपुत्रिकोनि· सुनदेतगुस
प्रेमसानि: गुरसासमुसरसेवासनेह: दिनकरऊनउत्तरफेरिदि
फ· गुरसषीबचनबसरहिसप्रान: दीजेसबहिनकहमानदान
पतिव्रतसहतग्रनुसरऊप्रेम· नितरहऊबचनग्राधीननेम· भि
लिबारबारसिरसूघिमार: ग्रासीसदेतछतीयनलगाइ।। दोहा।।
चूरीसेंदुरमांगचिर: सदासुहागनिहोऊ· लोनपरऊतिहिनैनति
न· जोताकेछलछोऊ।। १।। देइग्रसीसग्रनेकयह: ग्रफनवछाव
रिवारि· बदतिदेषिबिछुरनबिषम: नासिरजऊबिथितारि।।
।। २।। बिछुरतसीताप्रेमबस: बिकलसकलरनिवास: दारुन
तिहिछिनकीदसा: कहिकोसकेप्रकास।। ३।। रामगमनसुनि
नारिनर: नयेमनबिकलमलीन: तरफरातजिततिततकत
जोजलहीनैमीन।। ४।। जनमदलिद्रीकलपतरु: पतितउ
थपदपाइ: दीरयरोगीग्रमृतज्यो: सुषहीलहतसुनाइ

सौंहमदरसनरामकै। पाथेपुनिप्रकास॰ करतसकलममजीयकर
ऊ॰ निसमसीयसरत निवास॰ अस्वारो। दिनछक्रिग्रमित॰ उलहेर
निग्राह॰ पुरजनजुवतीप्रेमपर॰ लेतबिलोकिबिलाइ॰।। छंदपध
री।।रिषकरे बिदासबजनकराज॰ सबत्तातितोषिसंजुतसमाज
जाचक निदानलहिजथाजोग॰ पुनिबट नजयतिकीरतिप्रये
ग॰ निरघोषनगरननब जिनिसांन॰ पुरसुमनबरषि हरषतस
मांन॰ बिधिजुक्तबिबुधदुंदुभिबजाइ॰ पुरचलेग्रमरआनंदपाइ॰ नृप
दुंदुभिबजेनीसाननाद॰ बटिबिसबदितजयजयतिबाद॰ सुरलोकच
लेग्रानंदपाइ॰ सुजलदेसकलठेससमाज॰ चबकोल चर्दीलहनीच
रि॰ बोहनिसकलदासीबिचारि॰ नयेरथारूढ दसरथनरेस॰ सु
तआपआपरथ चढिसुदेस॰ पुरजथाजोगगुरबंधुजान॰ सबसुतदस
रथ्रपनेसमांन॰ तुवगगनकुलाहल नयोत्तरि॰ प्रतिसबदरहेदिसि
दिसपूरि॰ हयहेषारवगजगरजघोर॰ सुनिपरैग्रनिनिरघातसोर॰
रन तो निचले दसरथग्रनेग॰ मिलिपवनरेनमुदितपतंग॰ सीलह
ज नृपतिकुसकेतसाथ॰ हितचलतपयादेजोरिहाथ॰ मिलिग्रमि
तनेहहितजुगमहीप॰ पुंहचाइजनकबकुरेसथीप॰ रसरलोग्र
मिलचलिग्रवधिराइ॰ बाजित्रजैतमंगलबजाइ॥ दोहा॥ निसचय
नहादसरथनृपति बसिहैंपथप्रयांन॰ नहातहांसबसमृधसुष
पठ्येजनकप्रमांन॥१॥ समयसाथिग्रानंदसौं॰ नृपचलेसुतन
ह॰ पावनमिथुलपुरकुते॰ रहजोजनत्रयग्राराराग्रथ नाग व
ग्रगमन॥ छंदपधरी॥ कबिरूबाच॥ पृथीसचालउलक
निपात॰ बिदिसानिदिसाबटिबिषमबात॰ उठिपांसुनसमबरष
ग्रकास॰ग्रनमितहोतसबग्रनयास॰ उठिदरसदिवसग्रासग्रंधार
उतपातहोहिदारनअपार बटिबिषमधूमसंकुलबिसाल॰ प्रतिकू
लपछिकुंजतकराल॰ दिनमनिसुमहापरिबेषदेषि॰ पद्दीग्रसेमि
दिसिगगनपेषि॰ मातंगग्रंगगतिमदहिमुकि॰ नएसाधनावगए
दानसुकि॰ मृगमालसुनतनिसचकग्रसेस॰ परिक्रमनकरेदहन
प्रवेस॥ नृप निबाचा॥ ग्रनमित्तदेषिसबग्रवनिईस॰ सनमुष
बसिष्टपूछेरिषीस॰ यहकहाजानिनहोपरतग्राज॰ उतपतिकछु
कारनग्रकाज॰ नयहोतचितग्रतिग्रमंतनीत॰ उपजेग्ररिष्टकछुग्रवे
ग्रचीत॥ बसिष्टोवाच॥ बोलेबसिष्टतबबिहंसबानि॰ ग्रनमित
नयेइहिसमयग्रानि॰ मृगनयेजुदाहनसुनदमूल॰ सबमंगलस्र

चक्रसोनकूल ।। कबिरुवाच ।। येकहूतमात्रअवनीअसेष · साकपग
ईध सिनिमंतसेष : मिलिचलेसमुषमाकृतसमूह : जुतरेनऌगतपर
बतनिजूह : अवछिनकरीरजचमूअंनि : जननिकरतदृपिको
उकिहिअंनि ।। जामदग्निसरूप ।। कैलासमानकोपाधिकार
बेकृतबेषनकुटीबिकार : अपतात्रिपुंडउतफुलनास : उपवीतदंडकुस
सावकास : मौजाजिनमेषलतनमलीन : काषायबसनकेपीनके
न : पदतलीकृतिबरजितउपान : सुभ्रनसरीरपरबतसमान : कर
बामचापदृढनकुगर : धृतबानदृष्टितनीरधार : उरसिलामनकु
घनघरितघार : बपुबिसषपरसुधरणतसुनार : परज्वलितचेत
तपतेजपूर : समेरथअनुअहमापसूर : मुषचारिबेदपारिककअ
मोह : छबिमनऊमलयपावकसछोह ।। कबित ।। जिहिहैहयकु
लकेतमारि · अरजनमहिलिनीय : अषिलसोनअनवार : उदिकत
देवनिदिनीय : इहिप्रकारइकवीसबार : बसुमतिनिरबीरा · रोषज
ल्जगिरतंजाल : नरअवनिअधीरा : पितुबयरलेरिपुहतिप्रबल
कुंडरुधिरतरपनकरन : मृगगनमहीपमृगराजमनु निकरआइपर
सीधरन ।। १ ।। जरजूरचुबेनअजेय : इषुकंकपत्रचल : दृष्टिन
यतनीर · बसमलोछनबछि सिथल : असाग्नितहरिचर्म अहम
लाअवलिंबित : करकुगरकोदंड · पेषिलसुकरमजुत · पितबेस
बिहतउपवीतपन · मातबेसआयुधमहत · अहरतबेषलोचन
अरुन कोपबचनआयेकहत ।। २ ।। घटितसस्रत्रयनघाट समरउ
रपीरउपलसम · कगिनधारधाराकुगर · तिहिकरततिःषक्रम अ
हमचर्यआजनम · ब्रहमबिद्याधृतधारीय : जयजनमाइआघल
बिषमतुवचक्रबिहारीय : जमदग्नि बयरअंतरज्वलित : लतकु
ठारउधतकरग : बनगजमहीपमृगीयाबिसन · मिलेकालनगव
नमग ।। ३ ।। बामदेवद्विजआदिदे · सबमुनिवरनिसमाज : बि
धिबंदनकीनेबिहत · जामदग्निरिषराज ।। परसरामउ ।। क
परकेपकृतानकत : जिहिधनुतगनतबेस : ताकेदतनिमधत
र : पापीचहतप्रबेस ।। षेव्याकिहित्रबकधनुष बामदेवमुनि
राव : केछितितनिछत्रीकरो : कैतिहिबेगबताउ ।। २ ।। बामदेवउ
कगिनसरासनसंनुको · तोरयोरामकुमार · मषजयपराप्रोजनक
पन : सीताबरीसुदार ।। जोमदग्निबाच ।। बामदेवमुनिसोबि
हसि · फिरिपूछेद्विजराम : जिहिंतोमाहेसधनु : सोधोकेसोर

सुध
नीलदे
श्री ति
नमुत
पहेह

मा।बामदेव बाचा।छंद पधरी।। सरथेककसेचो ताडिकानसभ
मा।। त्रीयहतिको बिक्रम कीनतास।। बामदेव बाचा।। सेनंसुव
रीचसंग अतिबलीदुष्टरालसअनेग: मा:चोसुबाऊमसकास
मारीचउठायेबाचुवान: मघरहाकीनीअसुरमारि: कौसिकरि
दक्कारि: परदरजपुनतपरसतसपाप: गतिउरधअहल्यालहीआप:
चापत्तंगकौसलकुमार: सोईसिमचंदसबिदितसेसारा।पर स
।।कबित।। जुधनुनराबतजरायार: श्रमहेतदंडहै: दानवरा
देतदेव छोहेनसकेछै: मितिसहेसछत्रीयमहीप: रकसाथउ
य: नहिनमुक्किति हिंअबनि: गयेबलत्वजगुमाईय: करिरहे
तुवचक्रके सनबिक्रमसुनसजयो: पिनाकउनकालमहिमानवब
न्पबालधनुनेजयो।।१।। दूहा।। मांनिअहिंसाधरममें: श्री
यातजीमहीप: नवछित्रिनिपायेअनय: अगरेपापअथीप।। क
बित।। करतसत्रुषयकाल: कोउजछोंहे।किहिकारन: बालक
च्यअबधम: तहबलहीनबीनतन: जुतिसोईअवसरपाह करत
बलच्यहिक्रमक्रम: जैसेकनिकबान्हि: बदतदावानलबैष
म। अनुसरूधरमहिंनाअबिल: नसुथाकरेनछित्रसब: धिकर
याजुकीजेसत्रुसों: पहोपरीषोसत्यअब।।१।। कबिरुबाचा।दूहा।।
तवरथतेंदसरथउतरि: उतरिमहानयमांनि: कीनेअग्रबसिष्टक
हे। आरायेतहांआंनि।।१।। त्राहित्राहिअबयेसतब: हाथजोरिक
हियेऊ: मोहिपुत्रनिकीपरपुरुष: देवदहनादेऊ।।२।। आयेराम
सबेयरहा: बैरनकरेबिसेष: रोषानलअनुजरतसो: दारुनरू
पसुरेषि।।३।। नृपतिअतिकोपहिलिरें: ऐसीदईअसीस: होअ
पराधककरके: समरअजयचदिसीस।।४।। रामकुवारबिलोकि
नहा: कीयदिजरामबिचार: सनुसरासनमदनमनु: तेसे
बयरबिकार।।५।। अरगवलाचा।। कबित।। नरनहिंजोरोष
नार: पितुबयरप्रकासों: नलिहोंअरिहतेल: तेषातिहिंअयह
नित्रासों लछिमोठलछमनहिं: मृगिनरिबानपमुकउ।। श्र
नकुंउनरिसमर: श्रीयातरपननहीचुकउ: करकसकुगरमु
श्रीरामकर: त्रिनसमानकरितोरिहों: इहिसमयनवअब
।सकी सोकसमुदहिंबोरिहों।।।१।। लछमनबाचा।दूहा।।
आपबरूपनआपनो: किंनराषऊरिषरा

होकुबच : कारहांत्तयोअकाज ॥११॥ तुमजुकहोनछित्रमदिब
सुधाकीयबऊबार : तिनमहनृपदसरथतनय : कोउहोराम
कुमार ॥ छंद पधरी ॥ द्विजरामबचनसुनिसुनिसदप्रछ
हबोले हसिकेलषनआप : निसबालकेलिधनुहीनवीन
करअेविरामबऊषेकरीन : छनकस्योनाहितुमरसोछोह :
मनधनुषरहिकछुअधिकमोह ॥११॥ द्विजबाच ॥ वतकह
करतअतिनृपतिबाल : कोप्योकृतातसूरौनकाल ॥१॥ ल
छमनबाच ॥ छंदबेताल ॥ यहकरमनीतिबिरोधअबिह
त : हमतुमहिजुधहोर : हरधनुषटूटयो छुवतही : वहक
करैअबकोर : जिनकेअनुग्रहकेमनोरथ : सबकरतसं
सार : तिनसोजाबिग्रहयहैअबिहत : अजसहोरअपार ॥
करबहिलीनेअछित जिनके : करतबऊकल्यान : तनसम
रसछितकीयेतिनसु : नयबिरोधनिदान : पदउदिकजिनकेनित
पीनै : करमनासनसोक : करतसत्रतिनसोसामहैकर : लोकलोक
अलोक ॥ द्विजदेवतिनसोदासजावहि : परमकरुनाप्रीति : जयद
हनोकैतगतिजानऊ : अन्यथाअनजीति ॥ भार्गवबाच ॥ सन
ससत्रजुततुमसूरसंतव : सबलसेनासंग : मरनकेत्तयसत्रसनमु
ष : आपरारतअंग : छितिचक्रकरीयतबकेछत्रीय : समरपंकितसूर
किऊत्तातिकोरिनजतनकीनेमीचरहिनमूर ॥ लछमनबाचगुर
होहअंगीकारकबऊन : करतबकेकहार : जगप्रगटअपुनअपुनजो
मारिअअजमार : जिनकस्योतुमअवचक्ररनजय : येकबिसतबार :
किहिआत्तिचलिहैरावरेकुर : कगासुनिकुगर ॥ परसराम ॥
छितिछत्रियाकेगरभछेदे : कवहेद्विजराम : अबजरगतरनैबाल
जेते : सबहतोसंग्राम ॥ नरनबाच ॥ किहिआतिबोलतहोबकु
ल : प्रगटजनमहिपाट : बिसतारतामसबिषमबेऊत : जेषसतिक
नीरः तुमआपनेमुषकहतमुनिमें : हयोहैयराज : जससुनऊता
कोजीयतजुगजुग : करमरतबिनुकाज : श्रीकंठषंडऊजुगमयर
षत : उठतअनलअमान : मतकरऊबिषबकबादहमसो : नहि
नअोयनिदान ॥ परसराम ॥ यहकलोनीकोतरततें : सिया
तसियसुनाउ : अपनैतनतेजुअमरष : अनलबेगउगउ : बंचि

हेजु कीों कृति हिंग्रग निते: जीयत नावी जेग: तब मुछि होरनरो
मसों गुरवा पन्नग प्रयोग ॥ कुन लीया करि ऊषंठन तेई किरग: न
वय नुजि हिलत नेग: कहो रन हिलगे कैहा: सुनर बापुरे संग:
सुनर बापुर संग: हीसग्रा प्पावसग्रये: दंठ पात्र जो रीकरे: द्री
बावि यिबे दबताये: दुल हग्ररु बाल त्रव यि दिन: दीपत रिपनी
हिन कठे: कहनेत जिराम कुवार के करते रिंगठन करो ॥ १ ॥
सत्र यंन वच। रहा न बरि पुघन बोले तमकि: सरकोरं ठसंनारि: मुनि
वो ननयर है जनम: बोलऊ नेक बिचारि ॥ १ ॥ कहन निछत्री तुमकरी: ब
सुधावार हीवार: सोछांठे त्रवबेरले: करिये सजु कुगरा ॥ २ ॥ त्रय वं
धुनि तवरोषजुत: करे धनु षरंकार: राम बिप्र रहु ककसे: नेन नि
सेन निवारि ॥ ३ ॥ नर्ग व बाच्चा ॥ कबित ॥ सुनि रघुबीर समुरसील
नरदि घ्यंबसतव: बेला लछमन सुधा बानि: कृत षगतर कासब:
रकुरि बिकार जु त्रमन: सरित मिलि सुन रसने हीय: लह रिपु निवि
बरोष: रतनगुन जुत ग्रनुरहीय: तवबं धुति मंगल छुनेतर: जरि
जरि जे है लोकजम: मरजाद कोंप बाउ वजु मम: कस्यो चहत ग्रबले
पक्रम ॥ श्रीरां मसानुनय ॥ छंद पधरी ॥ करजोरि राम तब प्रनित
कीन: मन देवर थाकरीयत मलीन: पारपओं टरे ग्रवधि पार: बात
हिकाक हीये बिधि बनार: जीर नपि नाकर टरे ग्रेजांन: नहीं टरत कि
ऊ नावी निदान: बिधि ग्रंकन च्चूकत कि ऊ विधान: प्रभु जानत निगम
गम पुरान: ट ग्रे निज रैके हंठ नास: बसर्ता वी सिवधनु नो विनास:
नर्ग ववाच्यो ॥ २ ॥ मुनि नगु बंस प्रसिध महं: परसराम यह नाम
उमऊ कहा वत राम तो: सजि मोसे संग्राम ॥ १ ॥ कबित ॥ रेक कुसथ
निसंक: ग्रवनग्र जऊन हीं सुनयो: जिहि छित्रा यम पित्र छेदि: हेहय
रन हवयो: नाग्र मरष सागर तरंग: निसतारव धुनय: बिषमा वथ
त्रयसम स्त्र प्रतिरोध करे हय: तिहि बिसग्रो नग्रो मिषलिस: रत्नि
रतरसा सरस: ग्ररित रस मूरुद्द वाग्रनल: प्र बल घोर धारा परस ॥
॥ १ ॥ जिहि ग्ररजन दस सत ग्रसाधि: नुज दंठ नयकर: रैवा तीरस
वाह: रुद्र स हवा मकेलि पर: तराद्र स केथ मरथ: ग्रानि जुध दंस
गुट्यो: धनुष गुन निबंधयो: कोप करनल मुह कुट्यो: हेहयाधीस
सोर्ईषेत हनि पिता घात ग्रमरष प्रबल: कृत परव परवत ईधरकर:
बेरकि तिगावत बिमल ॥ २ ॥ बिषम सतत्रय बार: महि किनी कर्दम

मय: न्रपति मांसबसपंक: सलिल मिलि श्रोण सरितनय: बरनितासेवे
धब्ब· दानिबाल व्रधाबयि: नियत निसनिरदई· सत्रुकुलनासधरम·
सिथि: तुजमूलसिषस्तुवपालनव· बिबिधिधातसनादवर: जम
दगनिभुवनसोईरूसजय· धाराधोरकुमारधर ।। श्रीरामजनाम्रतुम
जुस्वसतिहमससत्र· अन्नयअहनिसाअभ्यासहि· बिमलबेदरस
बीर· प्रकृतिअनयासप्रकासहि: हसलाजि नतनकवच· कसतनु
महमऊसकारन· पेषिलन हतबिपह· अगटसिरदंडप्रचारन· नवगु
नप्रसिथउपवीतनित· बिषमएकगुनचापबल· संग्रामकरनद्विज
दीनसों· कोउनकरइक्ष्वाककुल ।।परसराम उ।। रेक्षत्रीधमबि
प्रजानि· मोहिन्दिलतनोरे· कजेसोद्विजदीन: श्रवनसुनिलेमतमे
रे· समरकुंठऊतनुकसरोष· संमधाचतुरंगीय: बादरिअवकुमार
मजयधनुबानसुसंगीय· हथीसअदलसंतुरूपसु· सदाहेमक
नोसुन्नर· संग्रामजगपदीछतसऊ· परसरामबालनअगरा।१।।तवकु
लकोमूलकमहीप· रांजारघुबंसीय: तिहिसतुम्हितुगईय· पारसुर
नपरससेसीय: छत्रीबधहनलयो· हमजुपितुबयरप्रमानीय: क
गहेसेग्राम· छेत्रजाचतजुधजानीय· सोगयोत्तागिजुवितिनसरत
नेईतिरनिनत्रानतरू· बिथस्योनोम नारीकवच· मोनितदिनसंसार
म हा।।रा।।न हा।।गुरुनुति हारोगाधिसुत: ममकुंमारनयमानि: तबब
ओपत्रीयततजि· आपनयो द्विजआनि।२।श्रीरामजनाम्राकवित।।
पुहपहारसप्रकास· कंठकिनपरऊकुमारा· तनभूषनमनिमयअ
तुलि· उरधरसरधारा· चित्रसालबसनचिता· चरतनहीहितबिम
नचित· बिमलअंगसोरंतबिलेप· ऊतनुककुपरमहित· सिरव
दऊलोकअपलोकसम· कोउबसरकसतरकहीय: सबनारन
गतिद्विजदीनसों· स्तरविबसीनिरबहीय।१।।छंदउधोर।।पर
सराम।। रेरामरविकुलबाल: घरपोसीयघरघाल: समबिनय
मोहिसुनाइ· तकहतबातबनाइ: धनुजोजिजीरनजान: मनब
ढोगरबअमान: नदीसेकमेरीकीन: चितजूतनाथनचीन: अपर
धउपज्योआर: सोईदरेनोहिसुनाइ· बीयदैकुमारहिबाऊ: जस
सहतपुनिघरजाऊ।।श्रीरामजीउवाच·धनुषटूटनहार: बस
जोगमिलिसंसार: बऊकालगतिबलवान: नरसेमुकिदेवनि
दान: रहाहोनहारसहोइ: कहाकरैताकहैकोइ: अहिकुलसि

नात्रिनअंग· नवकुलसितत्रसनेग: अबगुनीआवऊकोर: सिवधनु
षसंधयसोर॥ दुहा॥टरिहैनहीनवतब्रतः कोटिनकरऊउपार·
रहनहारसोईपैरहैः जोनहरसोईजोर॥१॥नार्गबवाच॥दुष्टछि
त्रकुलसोरया· कालकरैप्रकार: नवसोईफलतेगवै हैताकहथि
कार॥२॥जोउवस्यौछलछदमकिऊ· सबकोहोतसंघार: करौनास
सोईसोयिकैं अहृयधरमअनुसार॥३॥ छंदपधरी॥ सुनिरामपु
त्रसहबंधुसाथ: हठिसजऊबानकोदेहैहाथ· सरछोडतऊअबप्रा
नछेद: बंधबालनसऊकिनलोकबेद: मुकऊरुष्पारहाथनिसम
त: पगचापसाजिकैंमठऊषेत॥ राम आन्दयुनेदबानछोडऊनयो
न: सनमुषहिसऊपुरुपनिसमान: करिरोषकेंवावऊकुगर·ह
मअहैनोहितुमसोंहथ्यार दूट्योपिनाकपरसतहिपोनि· जीरन
धुनदूनमयमेनजानि· लघुदोषकरतदिजअधिकदाप: आचार
नीतितुमपढ़आप· हमबिप्रजानिजोरतजुहाथ· मनबाचनवावहि
अअमाथ· रानवदयेंतभ्रनगरदेव: सिरनावेंकाऊनकरहिसेव:
करषगपचारहिरनहिकोरः हगिलागिलरहिकिनकालकोरः स
किहेदिजकेंसुरसीअससः रमजमऊनत्रासहिहसवंस॥ नार्गवु
निरबीरकरैमैतुवतिकेत: हगिलागिलागिपितबयरहेत· जिहिदूर
तुमहिबिद्याअजान· निहचैसुनिताऊकेनिदान: कोसिकजेतेरे
गुरकहार सोबांतनकेबांचेसुनार अनबधिबानममगिनऊरेह
दिजसुरतिनिपुसकबालदेह· अरुनारिदीनरोगीअनाथ· हथीयु
रुरिजेरैंजुहाथ: तबालककहासहिहैंसुतप: अमरममबानन
यत्नजेआप: रेवालछाडिबातनिबनउ· जीयलेकटारकरअहेजु
उ॥ दुहा॥करकाटेविनुरेकवर· निहचैछांकेनाहि· बातैगोरअप
नवस मनविनैमनमाहि॥१॥श्रीरामबाच॥ ब्रहमतेजजबहि
बढ्ये: जामदगनिजीयजानि जोनवनबसुनादेरै· देस्योरामनि·
दान॥२॥कबित॥कस्योनेगकोदेऊ दाहतवउरमैदिन्नौ· त्रिनत्र
मानतकयो· कछुनतेरोनयकिन्नौ: देवदेतमरासमनदेवअ
बठलआये: मैतईकीनेबिमद· सबैसुबअहसिधाये: अजऊय
हगदोरनअजिर· बिषमकरोसंग्रामबर· श्रीरामकहेदिज
रामसों सजऊघोरकुगरसर॥१॥महिमंडलगमगऊ· बिस

रवि ग्रिअष्टिबिनासकु लोकत्रय किंनचलकु सप्तमिलिसिंधुस
मासकु तजकुनोमिस्तुवनार दरकुदिग्गजगिरडोलकु अंधकारदि
सिबिदिस बढकुमोनीनयबोलकु कगडोलहीसत्रासनत्रलिंग
नरपमुकिधसिजाकुतुव बैकलपछोकिहेरयियेविहत सावधान
जमदग्निसुव ॥कुमलीयोकबिरुवाच॥ आकंपीयअगजगत्र
वनि हतलीनोसंग्राम दहरवत्रयलोकऊब रनरोषेदोउरा
म रनरोषेदोऊराम असुरसुरत्रासउपजीय रकमनुषरंक
र रकपरसाकरसजीय रकपीतपटकसीय रकजरजटसथ
पीय बातप्रलयबिथरीय अवनिअगजगआकंपीय॥१॥उपजि
परीबिपरीतियह महिसुतनरत्नयमानि अनबिततयाहीसम
य बिमलत्तरीनतबानि बिमलत्तरीनतबानि ब्रह्मकरिबिनय
उचारीय निषलअष्टिममनास बारिअरणवजुबिचारीय नकुरि
रेषतुवत्तेग सुकरतुमअआयुधसजीय महीनारमुकिहे यहेबि
११ परीतउपजीय॥२॥कबिरुवाच॥दोहा॥महारुद्रयेहीसमय श्री
निकस्योउपदेस बिधिरचनायहबिनसिहैं बिग्रहतजकुबिसेस
॥१॥देकजेतिसुवर्द्दतुम नासतहोनवतत आपनमांकबिरो
धयह अनुचितकरमअनंत॥१॥छंदपधरी॥द्विजरामसुनकुधर
माधिकार रघुरामसदाबरजितबिकार तुमआदिमध्यअवसा
नएक आकाररचतकारनअनेक उवहैंनामएकेदयाल थि
तिथरमहेतबपेचरपयाल आयुरबलषूट्यौ धनुषअंत टूट्यौ
सोईअवसरपारसंत रघुरामनियतनिरदोषनिस अबिकार
अंगपूरनप्रकृति अनबिद्यअमलतुमहोअनंत आगमकुनि
गमनहीआदिअंत बिनुबयरनेहबरजितबिकार नवनतरे
ततवहरनभार आपनयोचीन्हकुसमयआज करियेबिचार
अबदेवकाज तजियेबिरोधनहीसमयतास समत्तावसहतुम
सवकास॥कबित॥दोहा॥रोषपरलद्विजरामके रहेछोहउर
छार अनिलसत्तुउपदेसज्यों बादलगयेबिलार॥१॥दुऊरामउ
पदेसतें जुथनिवारिसुजान कहिजयरघुद्विजरामकृत हरिसे
अंतरध्यान॥२॥छंदपधरी॥परसराम॥ पूरबवृतांतअप
नोप्रकास सोपरसरामकीनोसहास सुनिरामरसोकुध्यानसा

थि ग्राँपे रछित्रछांडी उपाधि : तुमकरे नेग हरयनु षतानि : मसेव
दसुनो भैक्रोधमां नि : थहै वसरासनकरऊसान ग्रपनो वल
तेज दिषउ ग्रज ॥ दसरथउ ॥ से सुनत ग्रारदसरथ नरेस : न
यजुकनक लो सेलोर्गवेस : रिषबेसउ प जि तुमपरसराम द्विज
क्रोधसात दतलये ताम : कसिप हिर उरबी ग्रसेष बेर ग्रपनैम
लीनो बिसेष : ग्राक्रतबिरोध ग्रतिक्रोधग्रंग : ग्रनुजानतसबने
गमप्रसंग : रहिबालप्रतीग्या कौनग्रर्थ : सुरराजहितुम प्रछन
समर्थ ॥ नार्ज वा ॥ कीनेन चित्त दसरथ कहाउ : राम सो कस्त
सातिक सुभाउ दैधनु षरतन सुनि राम देव उपराजि बिस्वक
रमा ग्रजेव : ग्रमर निमिलि संतुहिय ऐक बिसु हिदीय सजे जु
त बिबेक : नगवंत धनु षरनि ग्रनंत : गुरु पुत्र रिचीक हिसास
नत : जमदगनि हि दीनो पिता जानि रनलयोम हलतमोदमो
नि : ऊ जापकरत ग्रनत्र जार : हैहयाधीसर हिसमय ग्रार : तिहिं
कामधु याल गिपाप कीन : लसिसाध बिग्रव गउ लीन : सहसउ
जनलयो लेग्र हसु गर : यहसुनत लयो कर पी ग्रार : हनिकस्यो
गुथमें सुरवि हत : सुलमारयो हैहयराजषेत : पुनि मे हलसमरसे
बिजयपार : ग्रहिलयो ग्रपनी कामगार बाके सुत वऊ स्यो लगे
ग्रानि : मुनि ह्लो जमदगनि बैर मानि लैगये दुष्ट व धनु षयेन : सं
ग्राम बिना पाये सुषेन : मो हिलयो दुःषदारुन ग्रमेय तवगयो च
कसीर थसु तेय बिलुलित कस्यो मैंतप बिसेष : रंदो निरमन साथ
न ग्रसेष : ग्रषिले सचित ग्रपक्रग्रनंत : ममसरमजानिब्रदीयम
हंत : जि हि हैत दम्यो ग्रातम द्विजेस : बिधिसबे सिथको है बिसेस :
ममग्र सतेजत वमाऊग्रानि : करि रैग्रवेस पूरन प्रमानि : मिलिजु थ
हैहयाधीसमारि : प्रथीन छित्र करि हैं ग्रवारि : दैद्विजनबेरक बी
सदान मंत्र निसयो गजुतउ दिकमान : तरिफुधि रकुं उतरपनसुने
व : करि हैतु मदारुनकरमदेव तवउपजे तुमक हसात ग्राव दे
प्रथी कसिप हिपूजि पाउ : जुतसाध नावत पकरऊ जार : सबकाज
सफलको हे सुनार : ऐत्रेताजु गरामावतार : नवदरसन करैहैंडउ
दार : उहाले ऊ ग्रपनो तेज ग्रंस : पुनि साधन बछे हो प्रसंस ॥
छंद उधोर ॥ देमो । हिबिछितदान : हरिनये ग्रंतर ध्यान : ग्रनुका

परमेश्वरपार : सबसाधकाजसुनार : पलहयौ हेहयषेत : लईसुरनिचाप
समेत : वेर्ईबिसुतुमअवतार : नचन्द्रमिटारननार : यहबिसुचापअज
व : दिगबिजतलीजेदेव ॥ कबिरुवाच ॥ हरिलयोरामसुहाथ : सबचापते
जहिसाथ : द्विजरामपरिनवदीन : कोदंकरसुजुतकीन : करनातनो
निकराल : कहिपरसधरहिकृपाल : अनमोयसरमनआहि : कहि
बिप्रछेदोकाहि : धुरधरमरामसधीर : अयबिप्रउचितनबीर : यह
नीतिजानिअषेद : द्विजरामगतिकृतछेद : सुनिचिरजीवितपार : र
हिहेतन्हगुपतिआर ॥ नार्ग ववाच ॥ छंदपधरी ॥ स्वयंबिस्नुरामतुम
बेदसाषि : नवकजसकतनहीब रितनाषि : हेजनमवारतुवहरन
हेत : सबतारसर्बसन्नासमेत : भममोक्ष्कुतोतवतेजमूल : सोईलियो
आजतुमसानकूल : मोहिनयोसबेअवसफलकाम : बिसमयरहि
जतेब्रह्मराम : तुमदेवप्रकृतिपारगपुनीत : बिधबिस्वगोचरबि
नुबिनीत : उत्पति १ सथितिरतनक्रमसरनास : समता ४ बलरच्छीय ५
२ हानिपनास ६ : जगभायांतवषरनावजानि : येईसबेनासमनवत्र
यान : बिस्नुतुमसदाबरंजितबिकार : उतपन्निआदिग्रेतनअधार
नलबिमलजथामलफेनजाल : बिसतार धूमअनलहिबिसाल :
आधारतुमहिमायाअमान : सबकाजअजितसंग्पासुजान : माया
रततोलोलोकमानि : जगदीसनतोलोतुमहिजानि : अबिवारसिथ
उतपतिऐष : बेरोयिबिद्यबिद्याबिसेष : देहादिअबिद्याकृतउरास
तिहिमिलिप्रतिबिंबतस्रोनतास : चितसकतिजीवसंगमसुदार
सोईजीवननायहनिगमसार : मनप्रानदेहअपनेमानि : अनबुधि
बदतअभिमानआनि : तिहिआपकरमतुगनाकहार : सुषदुषपाव
तोलोसुनार : नहीआतमकहसंश्रितबिनास : बुधिवेगानलहिलषे
नास : हरसंगचितअबबेकहार : संसारीजीवहिकेसोर : जहचित
नजबसमजोग : बसतासचितचेतहिबियोग : उपजेजहतजहसंग
आनि : जलअनलसंजुगयहनियतजानि : तबसाधसंगजोलोनत
हि : उतपन्निसुषतोलोनआहि : संसारदुःषजोलोबसाथ : ननिव
रतेतोलोनरअनाथ : सतसंगपानउपजेबिसास : तबछनछनम
यातजेतास : उपजेकुसंगदुरबुधिआर : सोईतवप्रसादनासेसु
नार : प्रगटैतवप्ररनपानप्रेम : निहचेसुमुकतिपावेसनेम : तस
मातरहततवजगतितास : सतकोटिकलपबेदनिबिसास : जीवे

तथापिनहीमुकतिजोग:पावेनसुषकेनकुप्रयोग: तवचरनन्नगतितोते
बिचारि:मुहिजनमजनमहीजेमुरारि:जेरहतअबिद्यासेगजोग:लील
तवगावतरतरलोग:नवसिंधुतिरतते उसुनाउ:पुनिसुकुलजात
केसोकहाउ:जगनाथनमसतेजगनिवास:कारुननमसतेसव
कास:नमसतेसगतित्रावनअतीत:श्रीरमनमसतेनाथसीत:
इछाकबेसबनकेजतोन:हनुवेसगहनदाहनकसान:करत
रसुरनिसुरहेतकारि:महिमाअमेयजयमोहहारि:जयबिजय
सीलसागरसुरेस:जयदीनबंधुसोतासुदेस:जयबिजनअंग
केटिकअनंग:जयरामलतनतावनअनंग:जयआदिमध्यअ
वसानऐक:इछाबिथारमायाअनेक:जयमहारुद्रमानसमर
ल:पितधरनकरनबेचरषयाल:मुषरसनिऐकमहिमाअमोन
ऊकितककफुकरुनानिदान:बसरोसकछुबोलोकुबानि-छमि
जेदयालमोहिदीनजांनि:मेंकरेपुनिजगजयतिकाज:तववानप्र
वेसकुअषिलराज ॥श्रीरामचन्द्राचारू हातयेत्र सनुरघुबीरताम
करिकुतबप्रनचितकासु॥ नार्ग ब बा चु॥ द्विजरामकलेदेव
षिदेव:ग्रतिकम्योअनुयहजोगजेव:नितसाथसंयउपजेसने
म:परब्रहमजुतवपदपदमप्रेम:प्रतिदिनसतोत्रयहकरेजाप:
आचरेजुकृतसपवित्रआप:बिग्यानत्रगतिबाटेबिसेष:परनि
मतुमहिसमरनसुपेषि:॥ इतिपरसरामकृतसतोत्र सम्
रनाहा॥रामअषिलनवरीसअब:मांगवयहेमुरारि:पानि
जोरिद्विजपरसधर: बचनकहेसबिचारि॥१॥सानुजरामसल
पसुत:सीतासहतसहास:बेदसहारककरऊबिहतु:बिसु
चितममबास॥२॥श्रीरामबाच॥ तबरघुबीरप्रसनतहो:तथ्य
असतुकहितास:जोकछुमनअभिलाषद्विज:पूरनहोऊप्रक
स॥३॥ जबजुतनेनजुरामजुग:तवकरुनारसलीन:बारबारअ
तिप्रीतिबस:निजआलेगनदीन॥४॥ करेपरसधरपरिक्रमन:तां
किनातिसुतनाषि-चलेमहेन्द्राचलअचल:हृदयरामछबिर
षि॥५॥बाजेगगननिसानवर:गंनगंधरबसगान:पुहपवृष्टि
कीयरामपर:सुरसुरराजसमान॥६॥ मुनिजुसियचारनमहत
रेषिचरितरघुदेव:करिप्रयानसवसथानकहे:जयजसकहे
तअजेव॥७॥कसेपरसरघुरामके:बिस्व

करी कितिनरहरसुकवि : हरनरहत प्रमाद ।१।। इति श्री रामचंद्र
परसराम संवाद संपूरनां ।। कवि रूवाच ।। कवित्त ।। दीयपरि
नव द्विजराम : बिक्रम अन्नृतकीय : श्रीनारायन धनुष तेज सु तेह
लमात्र लीय : सुरसिंधनि सुषदयो : जनरूपन राषि जगपजय : म
हमहीप मथि मान : जगतत्रय लोकग्रतय जय : पुर घात बात बदि
गगनषिति : अंसुमान तिहि अंतरीय : घनसे निसान घुमरत सघ
न : राम अवधिम थसें चरीय ।।१।। दूहा ।। सुनत बेलापें गौंसुध अ चौ
वधि निकट दल आइ : रतनिअगनित दान लहि : सुष अगम नसु
नाइ ।।१।। पार बरमंदिर अगर : बझुछाये बाजार : छिरकि सुगंध ति
पेथ सब : उग्गि अमेदअपार ।।२।। सात दिवस मग संक्रमीय : दल
बल लीये बिसेस : पुत्र बंधु जुत अवधिपुर : आये अवधि नरेस ।।
।।३।। ध्वज पताको ग्रह धवल : कनक कलस सु तकाज : द्वरद्वर
तोरन उदित : बिसद सुथं तबिराज ।।४।। कलस आरती साजकर
बनि बनि जुवती बृंद : मंगल गानउछाहमन : आगम राम अनं
द ।।५।। छंद पधरी ।। निज अश्व आरूढ सर थनरेस : पुत्र निसबा
म कीनो प्रवेस : सुत सजस बे बिसतार सार : द्विज मिले जथा
क्रम राजद्वार : कुलदेवि पूजि आचार कीन : द्विज गुरव सिष्ट बि
धि दान दीन : मिलि सुतन मात आनंद मूल : सब नास से संसय
बिरह सूल : नीसान नगर घर घर निनाद : बरबामि लिमा रूलजल
दबाद : बिसतार होत मंगल बिधान : पाये मनु बिछुरे दरस प्रान : आव
सऊंच चढि जुवति जाल : तन दाम निउ तिपट जलद माल : सब थेल
ह्मगरे सुगंध : अलि निकर भ्रमत सोरंत निबंध : बहुरंग रंग झूलत ग्र
बीर : नव मास मनहुं बादर सनीर : सुष थे रामबेदेहि संग : अतिहि
त बिलास ओर ति अनंग : बेकुंठ बिसु मनु श्रीय बिलास : तेई तेह
जो नर सजोग तास : मिलि बंधु चारि जीय एक मूल : सब दिन सौर
य वसान कूल : नितक्रत नियम जुत सावधान : नहीं टरत नीतिम
रग निदान : पितुलास देषि हरष अपार : आपेर धरम की उदार
नि मगावत हे जिहि लोकनाथ : सानंद रहसिर मनीन साथ : श्री
राम सीया बामंग संग : अवलोकि अमर आनंद अंग : निस श्रीय
निगम हित निरबिकार : बिसतरनि रावधि बिस्तव बार : नेर

...धरमै
कुमार
मकरत
...बिहार

सनियतकरुनानिदांन· मायनुसारकारनसमान: सोईआदिदेहमांनु
षसंसार· अषिलेसकरत लीलअपार॥कवित॥ बालकेलिरघुवीर· कु
रमविक्रमअद्भुतकीय: तारिवानताडिका· सुतुजसंग्रामसुसंधीय: मष
रष्षेकोसिकमुनीस·।सिलतेत्रीयकिनीय: धनुषतजिसीयवरीय·
छीहन्ह्युपतिगतिछंनीय: पुरअवधिआरफूरनपुरुष· नवअनेकसु
षनुगरीय: काकुसथवंसउद्योतकर· कितिसुकविनरहरकरीय·
रहा॥कहेचरितरघुवीरके: बालकांडसुनवेष· निघनहरनमंगलक
रन: हरनन्योअसेष॥१॥ इतिश्रीपौरुषेयअनामाश्रीरामायणे
महामुक्तिमार्गे श्रीअवतारचरित्रे श्रीरामोजनम बालकां
ड सम्पूरण श्रीरामोजयति॥ अथअजोध्याकांडलिषंते॥
मुनिनारदआगमनं॥ दुहा॥ एकसमयमंदिरअजिर· श्री
यालहतश्रीराम: सिंघासनसुंदरसुघर: मनुवैगेरतिकाम॥१॥म
निजयवरीलितचमर· सीतापानिसुचाल· बिमलविलोकतविधु
बदन: वारिजनयनबिसाल॥२॥ ससिनतउजलफटिकतन· वी
नांकरवरवानि: तिहिअवसरविधिलोकतें· नारदउतरेआनि·
॥३॥ छंदपधरी॥ दरसनहमानउठिरामदेव: अषिलेसअासनदु
षअजेव: कीनेंप्रसीननहननमसकार· करजोरिकेलोहसरण
कुमार· करिअरघपूजिविधिवतअनेक· विधुवदनबचनबोले
विवेक॥श्रीरामोवाच॥नवदरसनदुरलभजगतदेव· हमसेसं
सारनिपुनकुलेव· मनरहतसदाविषीयानिमोह· पुरराजस्व
स्थानेरसाह· ममउदितपुरातनतयेअनीत: तुमदीनोदर
सनजगपुनीत: कृतकृत्यएहमसकलकाज: मुनिकहुआगम
नहेतआज॥नारदोवाच॥ रासरथनगतविछलदयाल· कामोहतु
महिदरसीत्रिकाल: करिकृपारामतुममोहकारि· सुनवचनकहे
लोकनुसारि: जाजगतआदिभूतअजेय: सामायातवग्रहणीसमे
य: तवजोगहोतउतपतिनास: ब्रह्मादिसुजामायाबिलास: साम
यातवआश्रयसंसार: सात्विकरजतामसत्रिगुनसंग: सितअरुनअ
सितआनासअंग: त्रयेलोकग्रहस्थितस्वास्वतंत्र· महियेहतहि
नवसजंत्रमंत्र· तेरामविस्नुश्रीयश्रीयावाम· नवरामनवाजनु
कीनाम: विधिरामब्रह्मीसीयाविसेषि: रविरामप्रभामेयलीषि
षि: ससिरामरोहनीसीयासंग: ... नगःतु

मङ्गलसीयास्वाहाअकार : सेवतसु नारद तिषरतसार : यमजरफिरि
मतुमरेवरेवु : सेजमनीसीताकरतसेव : नेरतिरामतुमजगतनाथ : स
रवथानामसीसीयासाथ : बरनतुमरामलोचनविसाल : नारगवीजु
नकीतिलकभाल : अनितनुमसरवगलिअगअंग : सदृगतिसुषरवे
हेहिसंग : वेअवनरामसेश्यामवीर : रुपदासरवसीतासरीर : तुम
रुद्रनषिलनवरूतनास : सीतारुद्राणीजुतसहास : सवपुरुषनाम
सोईतवसरूप : जोषितहेहमायासरुप : निहचैत्रिलोकलवमय
निदान : इहनासनकिंचिनहेतआंन : गतमायात्वसंगउदितग
न : मरवतहोतएकेत्रमांन : कारनजुहेतजुयित्रहकार : मिलिप्रान
पंचईंधीसंचार : इनहोतअगरसोईदेहआहि : तवजनममरनसु
दुःषताहि : इनतेजबनिछुटगानआप : पुनिब्रह्मवहैकछुन
हिबियाप : सबसहजजीवइनहीनिसंग : अकेयगयाहीवहअनं
ग : तुमकरिप्रतिष्ठसजीवजोति : हेतबसतुमहिमहलीनहोति
तसमातसरबकारनतुमेव : दुषसुःषनसेजबचीनिदेव : अमलो
तरजुजोतुजगनाद : छुनरहतछिद्रगगपानछार : उपजेमवोयछो
हेसनीति : अमटेजुयहेनाहीनतीति : अगपनेहेतदेषतअनेक
उरचषप्रकासनवतुमहीऐक : दुःषसुःषविनागीयहेदेह : निर
धारजीवसोनहीसनेह : यहमोहिअनुग्रहकरउआज : भगवं
तहोउतरनगतिसाज : तुवनाभिकंजउतपननाथ : सुतकंजतये
ब्रह्मासनाथ : ममजनकसुपेब्रह्मामहंत : अबमोहिपेत्रजांत
उअनंत : आनंदसलिलचलिद्रिगनिओर : चाहतमुषमुनिजोस
सिचकोर : पुनिकहीकरिनारदप्रकास : प्रठयोरुब्रह्मअनुहि
पास : रावनबधकारनतुनमराम : तुमलयोप्रतंग्याजुकाम
म : जुवराजपिताकरिहैंअजेव : दिनकेहैराज्यासकतिदेव : पु
निहतिहैंकौरावनसपाप : अपिलेसप्रतंग्याकरीआप : बरद्यो
मोहितुवहरनभार : करियेप्रमानदसरथकुमार । श्रीराम
वाचा । नारदसोंरघुबरकहिनिदान : मेकरीप्रतंग्यासोप्रमा
न : कछुकालआहिअवरोधकाज : देहैसुषदेवनिदेवराज :
दसचारिबरषतपहितबिसेस : पुनिकरिहदंडकबनप्रवेस
मेथलीमाजनारदमुनेस : आसुरअमूलकरिहुअसेसाक

बित्त ॥ सोई मोनि बचन नारद सहास : पद वंदि चले सुरपुर प्रकास ॥ दोहा ॥
करि प्रबोध रघुवीर कहं : बिधि के बचन बिधान : हरखवंत हरि गुन गुन
त : नारद गए स्वसथान ॥ १ ॥ इति श्री रामप्रति नारद प्रबोध ॥ अथ
श्री रामजु ॥ राज तिलकउ छव कवित्त ॥ दोहा ॥ केकय देस नरेस
के : मंत्री बुधि निवास : भरत कुमारहि लैन कौं : आये अवधि प्रकास ॥ १ ॥
पित आग्या लै प्रेम पर : भरत सत्रुघन संग : मातुलिय ह गिरवज्र नग
आये मुदित अनंग ॥ २ ॥ सेवत ऐक अनेक सुष : बिलसे राम बिलास
गेत्त वत्त सुवोटेरे : आनि मिले अनयास ॥ ३ ॥ सिंघासन थितस
कस मय : राज तज अवधि नरेस : मुकर मांझ देषत अमल : सिर रूपे
लषित केस ॥ ४ ॥ बरख अयुत न्रप ता बिलसि : अवधि निकरत
रआर : उचित बुधि जुत पन यहै : जाबी है तसु भार ॥ ५ ॥ तैसी होउ
पजे सुमति : संग उ दिम व टि सोर : तैसो मिले सरार तहं : जैसी हो
नी होर ॥ ६ ॥ छंद उधोर ॥ इक समय दसरथ राइ : अति नगति
गुरग्रह आर : ऐकंत बैठि अनंग : पुनि कि हत ये हम संग ॥ राजो व
च ॥ द्विज सुन ऊर कुरदेव : नवम मनु अंत रस्तेव : सुष बितवराज
असेष : सब नुगति हम सबिसेष : कीय अमर समर सहार : प्रभु
तासकीरति पार : बिधु बदन दान विधान : सब करो द्विजतन मांन
अब आहि रह्यो ऐक : अभिलाष फल हि अनेक : जुवराज पद्द दे राम :
हम करहि कछु बिश्राम : हम तिलक निज कर देहि : रहि जनम को
फल लेहि ॥ बसिष्ट बाच ॥ पुनि कीय बसिष्ट प्रमान : मति धर्म
देव सु मान : यह सब निके अभिलाष : नव सुनत हम जननाष : सोई
कहत तुम अवधेस : निरधार करउ नरेस : यह दै बिचित्र मितछाह : सद
लै लिलोचन लाह : धरि छत्र राम सधीर : बनि तिलक रघुकुल बीर ॥ क
बित्त ॥ मन मंत्र कीन प्रमान : न्रप ऐ हआर निदान : नहां बोलि मंत्र सु
मंत : तिहि कि है सब मन तंत : अब करउ उदिम ऐउ : जुबराज रामहि
देउ : सब करउ राज सु सिध : परमान बेद प्रसिध ॥ कबित्त ॥ सोई करे
मंत्र सुजांन : बिसतार बिहित विधान : संभार बेद प्रसिध : सब होन ल
गे सिध ॥ कबित्त छंद पधरी ॥ सुन के भाषो उ सस्सुंदरीय : कनक
काज रचि श्रंगार कीय : जल तीरथ प्रस्ति उचित जानि : इक सहस
कनक घट धरे आनि : त्रय सिंघ चरम सिषन समेत : हिमदंड छत्र
सुभ चमर सेत : रितु काउ चित फल पत्र मूल : संभार सिंघ सुरस ॥

ल। गजचतुरदंतभूषितउतंग। गुंजतकपोलिमदगल
छनवन विसाल: स्वरनमयसाजमनिमुकतमाल: सबदृह
फलजुकतसाज: बिधिबिधिअनेकमंगलबिराज: अतिग्रेहमाल
नप्रमान: बिसतारबिबिधबांधबितान: ग्रहकलसपताकोध
तंग: बनिद्वारद्वारतोरनबिहंग: देवालयपूजाबलिजुदीन: कं
जुकतनगरसुप्रसनकीन: किंनरमिलिगंधरवगानकार: निर
कीबारमुष्याबिहार: अनेकजातिबाजित्रआनि। बकुमिलेबजं
बिमलबानि: गजहयरथपयदलमिलिआगान: निरयोषब
लबाजनिसाल: कैनगरमहोछवअहयेह: सुनतिलकराम
रसनसनेह: अहअहप्रतिजुवतीकरतगान: निरयोषबजुल
राजतनिसान: मनिरतनदिप्रमुकतानिमाल: स्वरनमयबिबि
यिरूपनरसाल। दिजबरबसिष्टगुरबामदेव: अनेकसिमगु
निगनअजेव॥ दो॥ बेरउकतिअनषेषबिधि: सर्बसिध
संनार: आनिकरेएकंत्रतब: राजनराजदवार॥१॥ राजोबाच
कलोनरेसबसिष्टकह: सोसनमानसनेह: रामतिलकजु
वराजको: दिब्यमहूरतदेह॥२॥ बसिष्टोबाच॥ प्रातबितीतदेम
हर: करतमहूरतकाज: कहोबसिष्टबिचारकरि: रामतिल
कजुवराज॥ राजोबाच॥ दसरथनृपआग्यादई: गुरगेह
पुरजाइ: कोसल्यासोंसबकहउ: मंगलबिधिसमजाइ॥४॥ क
बिरु॥ रामचंद्रसीतासहत: जहाबिराजितजानि: नवबसिष्ट
हरसनतहां: अनिवारतदीयआनि॥५॥ सीतारामसुजानसं
ग। आपुनसनमुषआइ: करुनाजुतदंडोतकरि: पुनिधायेउ
रूपा॥६॥ श्रीरामबाच॥ सिंघासनदैस्वरनमय। गुरहिरामगु
नग्राम: करअंजुलिजुगजोरिकहि: धन्यआजममधाम॥७॥
बसिष्टोबाच॥ सबबिधिमांनिबसिष्टसुष: जगकरताजीयजा
न: लोकधरमउपदेसलगि: अनुसोईकहतप्रमानि॥८॥ छंद
बेगला॥ परमातमाजुमपुरुषपूरन। स्वयंसिधसरूप: साध
हितसुरकाजमाधव। नयेरघुकुलरूप: तुमअमितमायाम
नुजतनधरि। देवदीनदयाल: लोकेसबथाहितजनमलीनो॥ ब
लसमूलबयाल। यहमंत्रहेअतिगूढआपुन। दयो बिधिबरदान।

अन्नत्रनहीउदधीटिबीअब·नाथनिगमनिदाने:उनिसुनऊरघुकु
लतिलकषूरन·पुरुषरामप्रबीन·नृपपरोहितदरिबनिसचल्ल
मोतिकरमस्तलीन·मैसुन्योआगेब्रह्मकेमुष·बेदबिदितबिचार
इक्ष्वाककैकुलरामअपुन लेहिगेअवतार·तानिमतअंगीकारकृतमे·
पुरोहितपदपार प्रसुनयेमेरेकाजपूरन·सबैआजसुन्यार·अखिलेस
इच्छाएकअब·उरमोउपजतअज्ञान·नवमहामायामोहनीमम नहि
नआपिनिदान॥श्रीरामबाच॥ ये होनहै हैदैवरच्छा·रिषकरहु
निरधार मृत्यान आपेतुमहिमम पुनिसदासुयसेसारा।बसिष्ट
बाच॥पितुदेहिगेजुवराजपदतब प्रातअवसरपार·सुतजोगबी
तेमध्यसंध्या·सुधलगनसुनार·पृथीसकरियेष्ट थकसज्या·सयन
रतउपवास तहारहुसंजमनियमजुतहुम ब्रह्मचर्यबिलास॥न
हा॥कहिअबोधरघुबीरकहं गुरुअनहुरआइ·रानीकौसल्याहितें
सबवृत्तांतसुनाइ॥१॥कुलदेव निपूजाकरति कौसल्यासुनकार रा
नहोमसनमानद्विज:जथावेसबिबहार॥२॥इन्द्रादिक अरुहारा
महोहिजुवराज·बनैकेसेंबनजैबो· बिनुबनवासबिसेष·हरन
सीतकोकैबो· जौनहरनसीयहोर·आततारीक्योंरावन·बिनु
दोषबधबिप्र·पुरुषकरिहैनहीपावन:बधबिनदुष्टदसबदन
के·सुरकारिजकैसेसरे· सुरकहतदेवी सुरसतिसुनऊ अवनि
तारकोउतरै॥१॥नहा॥ रहिअबसरइन्द्रादिकन:सोचबढ्योउर
सोर·पावहिरामजुराजपद हरनसीतकोहोर॥१॥अबतातेनि
रधारयह· करियेकछुछलकाज:जाहिरामबनवाससज्ञि:राम
तिलकजुवराज॥२॥ महामूबकामंथारा:कैकेईकीधार:ताके
उरअपातनकु:सरसैरहीसमाय॥३॥मैंष राउ॥आवतकुबज
राजग्रह:सोजानगरनिहारि:पूछोउछवकोंतयह·मंगलयह
ग्रहद्वारि॥४॥सो कृहु॥ जाकहं पूछोजिहिकेलै:रामतिलकजु
वराज·सोकहैमरूरतसुषद:दीयबिहानयुरराज॥५॥उपज्यो
दासीदाहउर:मनुसुनिआगमभीव:ज्योंकपिलगैकुठरा:नाच
नलागीनीचाइ॥छप्पय॥ नारीसुभावयहजगनिदान·उन
करमनहिसहिसकत आन सुनिरामतिलकउपज्योसंताप·
आगिबिनुजरतिमंथराआप:कोपतननलोचनअरुनकीन
तकुरीकुटीलचबरोधवीन· देहिरूपकेकईयहआर·बैरोध

सतपु
सती
वतर·

बचे।ि
(१७५जुव

बिसनबूरी बलाइ: निंद्राबस तहां रानी निहारि पापनी रूसनं की वेपुक
रि॥ मंथरोवाच॥ इहि समय नीद अवे किम आंन तोसी नमूरकेउ त्र
य ओंन॥ कैकइ॥ सो सुनत उगी रोनी सषेद: मैं नीतन रीझू छत सब
दा॥ मंथरा॥ यह बात सुनी मैं अति अनूत: श्रीयराज दयो तव सो तिषु
सुनंत त: सुनत लगन प्रात मंगल समाज: रघु राम सु पावें अवधि राज॥ कवि रु
५ मंथरा कले मनक्रम समेत: कीय हरष में रस्त यक वचन हेत: कर जोरि
दासीहषे राम बहु करत कां नि: जननी ते मेक अधिक जांनि॥ मंथरा॥ तब
इहारयेन कैकैकै लेमंथरा ताहि: अब समय पीछे बुधि नाल आहि: नृपओह
जनमत दपि अरपांन: पानि अह नृपति दसरथ प्रमान: पति ऐक प्रे
य पति ऐक प्रांन: पति अमर लता प्रासक तआंन: तुम रूप गरब न
ही जांनिता हि: अम अआप मनहु अंत आहि: सुष दे तत मति लीलें
समीप: पलओट मित्रकाके हथीप: तुव पुत्र पठे मातुल निकेत
तव सौति पुत्र कहं राज देत॥ ६॥ राम चंद्र लछमन बंधु: ऐक
सहज भत चित: पावहि राम जु राजपद: लछमन मंगल नित॥
९६ १॥ दासन तावन जिहीं रतः नात दिस निकारि: कछु सपरध
नोकरी: तते ताहि बेमारि॥ २॥ जायेजननीऐकके: जूठि भरत जु
गजंत: अचिर जकामातउनय: बिग्रह नारब दंत॥ ३॥ ऐक हीक
सिप तें उपजि: देस दनुजन रदेव: अवर मात यर बेधर हि: अज कुल
रत अजेव॥ ४॥ नाते प्रीति न को उगनत: अवनि लोक उतपात
ऐक भरत उपजत अवर: राज बैयन सिरात॥ ५॥ दासी के हेतु
सहदुष: तुम को सत्य अहे: बिनता कद्रू की कथा: सुनि लें निसं
देह॥ ६॥ मथ्थरोक बिनता कद्रू पूर्व प्रसंग॥ ६॥ सु
नहु कथा इक सुंदरी: सौतिन की सविसेष: मुषपीयूष उर बिष
म बिष: बिग्रह बाद बिसेष॥ १॥ उपजी इक मात उदर: कद्रू
बिनता नाम: दक्ष प्रजापति की सुता: रिषि कस्यप की बाम॥ २॥
इक समय आनंद अति: जब प्रसन पीय जान: निज मन बंछित
जांमती: दुहु मांगे बरदान॥ ३॥ कद्रू बाच॥ कद्रू मांगे जो रिक
र: आकृत बिषम अनूत: सहस निसंषा अति सु बिष: पंनग
हो हि मम पूत॥ बिनतो बाच॥ बिनता बर मांगे बहुरि: न
देहु पुत्र मम दोइ: नागादिक तव पूत तिन: करें न सम्मकोइ

र॰॥ कसिपे वाच॥ स्येबचन बरदानदुव॰ कसिपप्रेमप्रकास: औसें
ही कै है अब सि: वामांकर कु बिस्वास॥१॥ तहांनवी बसगरत्नथित: तर्व
उ त्तयज नाम: कसिपजुवतिन सोक तेः करियोजतनसकांम॥२॥
अवधिसपूरनगरभरे: हित बछित सब होर: अरु बिनेदनआपतें: क
रकुत्न लि जिनकोर॥८॥ मथरे॥ कसिपत्रीयतिप्रबोधकरि: आप
गयेउद्यान: तहांसाधनकृतउग्रतप: बेदनिबिहत बिधान॥९॥ छंद
पधरी॥ रहाकद्रुजु तउछवअनेक: अरु प्रसूतनयेसहस्रएक: ते
प्रसन बऊरि बिनतासुनार: अरु द्वैउपजेउ दरआर: अरु तासुधरम
तक्र तआति प्रतिरहे बधजुवतीप्रमानि: सतपंच बरष बितेसुन
र: रहासरपअपबल निकसिआर॥ कद्रू वाच॥ कहके बछित
नयेकाम पायेजुपुत्र बऊतुजेगनाम: रहाउपजिसोच बिनता अ
नंत कि बावरमि व्यास्तयो कंत॥ बिनतो॥ सुतसोतिदेखि बऊ
बदीसूल मे पायेएकन पुत्र मूल॥ मथरे॥ कामनंपुत्र नहीं वि
लबकीन: इक अरुफोरि मनतेमलीन अधअंगर हतउरयअंग
सगरे ति हि अरुनअरनपंग॥ अरुन उ॥ दुषनयेआपअरधांगदे
षि: बिनताहिअरुनबोलेबिसेषि: अनुअवधिफोरिअरुजुआज
कृतआपकाजमेरेअकाजं: चितजरतनिकोनअपराधचीन्ह: कि हि
हेतमोहितेंपेगकीन्ह: असहेनअहदासीहोउआपः परिचरवऊ
सहिहौर हीपाप: पंचसतबरषदासतपार: सुत द्वितीयमोछिक
रिहेसहार॥ बरषसतपंचमानातबिधानं: इहिअरुनप्रतीछाकरिसि
मानं: यहद्वितीयअरुजिनकरउन्नेद: बिनुअवधिबितीतेबिरु
धबेद: अरनकरिजननिउपदेसएह: संक्रमेअरकमेंरुलसने
ह॥ मथरा॥३॥ दूहा॥ महापयोनिधिमथनमिलि: कीयसुरअ
सुरसमानं: रतनचतुरदसकाढि तहां: कीनेंपुहवि प्रमांन॥१॥ अ
स्वनिकसिउच्चेश्रवा: ससिआन्नातनसेत: अमितनेजविक्रमअतुल:
सुनगुनलछनसमेत॥२॥ कसिपरिषकीउत्तयत्रीय: इकसमयस
पसंग: बिसदगवाधिबिलासबस: वेगीये हउतेग॥४॥ छंदपधरी॥
कद्रु॥ बूझ्योकरिकद्रूछलबिधानं: बिनताउच्चेश्रवाकवनवा
न॥ बिनता॥ उतारफेरि बिनताहथ्योएह: सरबांगसेतहयक
सदेह॥ कद्रू बाच॥ पनबाधिकसोकद्रूसपाप: हेअमरवीचअ
रुवातआप: जोकरेयाहियसतकोर: ॰ ॰ ॰ १९८

हयतनयो कद्रुजो देवे हेत : करि ऊंचो हिं दासी मम निकेत ।। मं घरु ।। कं
सपपयरमपएंदु ऊनि कीय : नगनी सपति अरुतथा त्रीय ।। कद्रु बा
च ।। सुतबो लि लछ्छ सेन्यान साप : यह कारन कद्रुक लो साप : दासीत
बोधि पन बचन दीन : कीउ यह बिनता हम जु कीन : उचै श्रवा हय
स्वेत आहि : तुम अंजन बरन सु करहु ताहि : अनकरे पुत्र छलकाज
ऐह : रुषे रूह दासी सो तिय एह : करि है न काज यह पुत्र कोइ : मु घुस
रपद हम हजरै सोर : करि है जन मेजय सरप सत्र : ते नासहि पैहै दु
गध तत्र ।। बिधि बाक्य ।। यह सुन्यो जबे बिधि सरप आप : आयेक सि
प अरुत वे आप : समझाइ कलो ताह समाधान : मत होहु त्रीय
सोक अधमान : जग अहि तन्य हिं अहि दुष्टजंत : तस इह धर्मेय न
हि निपरंत : जिहि हेत छीन षल होत जाहि : मानि बो श्रेय सोइ
बिस्व माहि : बिष हार मंत्र बिद्या बिधान : पितु दये कसिपहि
करि प्रमान : समझाइ पुत्र कसिप सहेत : तब गये ब्रह्म अपने
निकेत ।। मंथरो ।। कद्रु बिनता दुहु कृत निदान : पनय हवाले
करि है प्रमान : थेर ही सोइ निज अहग्यार : पन बाधि सुत बिनता
गपार : उरसरपत्र सत उपज्यो असेष : सब करत तये चिंता बि
सेष : यह समझि गये बिलमुष असेस : कीयासि बेपुछ रोम
नि प्रवेस : अगरे ऊंचे श्रवा आन रूप : बे बरन सिता सित तले
बिरूप : इत कद्रु बिनता उतय आइ : पेष्यो हय न बसुत सोक
पाइ : पन जीतो कद्रु कपट पाप : अरु बिनता हारयो बचन आप
बिन तब । कीनो प्रमान बिनता अकोप : लाछन है सो पुनि
बचन लोप : पन कर्यो सा पिसुर सोई प्रमान : मिथ्यान होइ
अय त्रास मानि ।। मंथरो ।। हगिदु : पसहत सब सो तिय हद
स त्वकर म बिनता सुदेह : परि नव जु सह तिअति दृत बिच
रि : मुष केरि न बोलत मान मारि : दासीत दुष दारुन दुस
ह ।। सत पंच बरष बीते सुनाइ : उत पन गरुड को सम
य आइ : अवधि बसत ये पूरन जु आग : नवत भये तब लक
रै प्रकास : महकारि महाबल अप्रमान : प्रगटे सु गरुड दृ
थी प्रमान : अगनि सम तेज ति हि देह आप : सो किरतम

त्रैलोकताप : सबदेवचराचरके सषेद : दहनपहंगयेअगातहो ॥ सुर
बाच ॥ सुरकहेअनलसोंनयसमेत : तुमबिस्व हिजारतकवनहेत : अ
पनजुनीतिजानतअषंड : अपराधबिनादेवोनदंड ॥ अग्नि उ ॥ उतरत
बदीनोंअगनियेह : नहीकारनमेरोनिसंदेह : बिनतासुतउपजोग
रुडबीर : सोमहातेजअनमितसरीर : तिहितेजबढ्यो यहबिस्वताप
आराधकरहुतिहिप्रसनआप : सुरआरसबेजहांगरुडसाथ : अति
कारतेजदेषोअगाध ॥ सुर बाच ॥ सुरतहांअस्तुतिकीनीप्रसंस
ऊचधरमहेंतनुमंजहमबेस ॥ मथर ॥ सुरलोकगयेसुरकाज
साधि : रहतापसमितिनयोमिटिउपाधि : सुनसांतरूपकरि
लघुसरीर : बिनतायहजायोगरुडबीर ॥ गरुड ॥ मिलिहेतु
कतपूछीजुमात : यहदसाकवनतुमदुःषदात ॥ बिनता ॥ वृत्तां
तकहोबिनताबिचारि : कलईदासिपनबचनहारि : कद्रुमिलि
पुत्रनिकपटकीन : हयरोमपेछिकतबरनहीन ॥ गरुडबाचत
बसुनीबातकहिगरुडताहि : अपराधीमेरेसर्पआहि ॥ मथर ॥
मनगरुडसरपअपराधमानि : उपजोतिहिकारनबेरआनि : तब
तेबिनतासुतकेसताप : उरगनितेनिंदनकरतआप : दिनपुत्रन
सत्तयपारहेदे : सुतसोकतर्किकद्रुसषेद : अगरगोबिचारियअस
न : अति दुसहजारेबसनअंत : गतिसरपगेधमूसीथसंत : चप
नासतजेअरुत्तषेगेत : अहोपेगिरटरोवृनअगपान : महिलाज्योत
सकरसोकमान : उरिमबलनाहिनभुरतआर : परबोधसाभरू
सोउपार ॥ कद्रु बाच ॥ कद्रुबिनतासोंप्रानितकीन : पितमात
येकउतपतिप्रवीन : तबहूनप्रानबद्धनसप्रीति : अपानजुकतमें
कृतअनीति : दासीनतोहिदीनीकुदार : ऊनईदोषनजिनसुनाह : दास
तजुबतोहिकरोंमूर मंत्ररकजपेमानऊसमूर ॥ बिनता ॥ कद्रुकेव
चनबिस्वासकीन : पतिनानवपूछीबिधिनवीन : कहिकद्रुकारनक
वनकाज : दासनमिरेमनदुषसमाज ॥ कद्रु बाच ॥ मथिसिंधुसुरासु
रलीयप्रमान : वहअमृतकुनमोहिदेउआनि ॥ बिनता ॥ सोफेरि
कहोबिनतासुनाह : बुझतवहकेहांरसोबतार ॥ कद्रु बाच ॥ तव
लोदधिवरहेसवरलोक : सबबसतनरा प्रानीअसोक : बिनता
महरतनिषादबीर : तिनकहिंकहंहहत सिंधुतीर : एकोतगरवह
रहगाहि : तातेनहीजानतअवरताहि : अमृतघटथसोतिहिगेर

आनि: मनइंद्रतहानिरनीतमानि ॥ बिनताबाचा ॥ इहिकारनबिनत
अेआर: सबकलेपुत्रगरुड़हिसुनाइ ॥ मंथरे ॥ सोसुनतत्तये
सुषगरुड़संत: अनलमनुपवनचढिबढिअनंत: इकनिमषमात्र
तेहगरुड़आर: सबषोजिनिष्यादनिगयोपार: षायेनिष्यादजद
पिनिसेष: नहीबिगतछुधातदपिबिसेष: तपकरतजहांकसिपअ
जाप: रहिसमयआरतेहगरुड़आप: पदपूजिपिताकीयनमसक
र: पहचानिपूछियहबिवहार ॥ कबित्त ॥ कारनपिताहिसबअगर
कीन: बिनताबिपतिहासतदीना ॥ कसिप ॥ पितुकसोसुनतकार
नत्रासिध: लेजाहुसुधाकृतकरहुसिधा ॥ गरुड़ ॥ कहाछुधार
तअमितआज: सामरथनहिनिकछुकरनकाज ॥ कसिप ॥ रिषकहे
रहारकसररसाल: बनलताग्रहनअतितरतमाल: मदमलधुरद
इकमहप्रमान: सरवरतिहिआयेजलसनान: इसजोजनदीर
घतासदह: बादसलोलाबोनिसदह: जलपेषिकरतकीड़ासजो
र: आंदोलसलिललोचउआर: तहांइतकमगरइकमहाकार
जलदेलसबदताकेजगाइ: बपुजुचोत्रयजोजनबिथार: कछ
पचद्विगुनबरतुलाकार: सगुइहइरबबेरअनुसार: अद्याबधिरुतब
लअपार: सोकाहुजारत्तहानसकाज: रसनासस्वादकरिपहार
जा ॥ मंथरे ॥ यहसुनतहरषषगराजहोइ: सरआरलरततहादेषि
सोर: करनषरअग्रत्वयहनकीन: लेतयोकमगगजगगनलीन
कारुनाकृतकिहुसरितकूल: सुरबृछहुतेतहांअतिसथूल: सं
पातपछिमारुतसचाल: बेनबृछगिरतकपतबिहाल ॥ मतोबृह
गरबजुतबृछइककहिगहीर: बनत्रासदेतकतमहाबीर: बृछतै
हिसतनजोजनबिथार: साषाअनेकपल्लवबिथार: ममसाषबे
गिआनंदमोन: दिनकछुकंतहकरियेनिदान ॥ मंथरा ॥ इक
साषअथेमुषलेबआप: रिषबालषिल्यतहांतपततापः साषाअ
नहेसुतब्रह्मसंत: अगुष्ठमात्रतनतपअनंत: संषाअगासीस
हससोर: हमसाधनजोगबिदेहोइ: तिहिसाषबेगिषगराजतत्र
सोपरीटूटिलुमतपत्र: तिहिलारचचयहिउलास: अतिबेग
गरुड़मारगआकास: बिसरगिरगंधमादनबिषात: तपकर
ततहाकसिपसतात: कीयपितादेषिगहिनमसकार: अबि
लोकिगरुड़बिक्रमअपार: पितुकसोसुनत... कुसलपूछी

त· इहि सापाले बितहैं अनीत· रिषबाल षिल जे उर धरेत हैं। तु बितनये सा
षा सहेत· रहते हैं जो जन बल हरके· हिन वंतअ दिकिं दरअनेक· यहं सोष
राष ऊउ हाआज· सुषबाल बिलपाव हि सिमज॥ मंथ र७॥ लेगये नह
छ न मात्र लाग· सापास धीरकिं दरस लाग: गिरअंग बेरि हि मगरुनम
न· मातंगक मत्तु गतअमान: तिहि नयो त्रिमज बकैंनतयः उठि चलो
गगन पथ बलअमेय: संपातपंषु सुनिअमरथाम: त्रय लोक नयो आकं
पताम· ऊवअक समातउ नपातहेत· सुरत्रास पस्यो सुरपतिसमेत·
रिव बाचा चतुरंग चमू कछु नांहि चीन्ह· कोउ सत्रुन दीसत कोपकी
न· कहा अर्सतावउत पातआज: देवगुर पूछित वदेवराज॥ वृहस
पतिः गुरकं लोछ हसपतिजो गपान· महिनये जनम हैं गरुनमो
न कीयउ हमअमृत हरनकाज· तिहि बंध्यो तेउ उतपत आज: सं
पातपंषतसबातसंग: व्रहमेरु डोलि थिरचरबिहंग· सुरराजसुने
अनरइप्रे हैं: रुषबंध्यो क्रोधनसमातदेह॥ मंथरो बाचा पट्येजु
इन्द्रचतुरंग पूर: सनाथ बधसुरसमर सूर· सुरआइन हासबसाव
धान· बिसतारअमृ तरहानिधान· सोरहेरो किपंथसमर सूरः पा
वेनपवन बिचगवन ब्यूह· अप्रमान देहर हि समय आइ: संक्रमेग
रुडअपने सुभार· सुरसेनगरुडरो केसक्रुध· जजुलनयेब ऊक
लजुध· सपातपंषरज चढिअकास· आछन नये सुर बिगतआस·
दिगमूढनये दिगअंधदेव· आवेन दिष्ट षगपतिअजेव· नषचं
चपंषघ्रनप्रहार· संग्राम होतसुरगन संघार: आकंपनये अति
इन्द्रलोक· गयेअमरत्ता गिअपआपओक· सुरनये बिकलतनसत्रु हि
र: धराजात निरंतर रुधिरधार· सरिताजु चली अतिओन संग तिहि मह
रोजअबिरलतरंग· सुरनये पराजय समरसिंध: पायो षगेस तहां जयप्र
सिध· थितनयो आरतवअमृतथान: तहां चक्रअयमय नपां
न· सो देषि गरुड कृतलघु सरीर बिचिपस्यो कुटि तिहि चक्रबीर· रहित्र
मतचक्रबाहरिसंचार धरितिष बिबिधि त्रय घोरधार तहां मध्य
सरपदे दैषितास: मुषबिंघ तनचपबिषअगनिवास: दारुनदिजि
आगअनिमेषवान· बिषअवतनैंन दाहक बिधान: सो दिष्टमात्र ज
रतसंसार· आकृतअनिष्ट चितबेगचार आयानपंषकृत गरुड
आर: सहवेगअनलर जउ ठिसुनार: आछनने त्रअ हिनये औ·

नि: स्वछेन कछुतम गगनसोति: जोबेनतेयजनदिष्ट नाहः तहांअमृत
कुंभलेगोउगह: लेचल्योगगनमारगसलील: छुनसियहोतसाधनसुसी
ल मिलिबिस्नुगरुडकहंगगनमाग: अतिबेगदेषिबिक्रमअथागा श्री
बिस्नु।। बिस्नुकहियनबैनतेय। अतिहृष्ट मांगिबरजगजेयपुन्य
रु ड।। गरुडबरलबेमांग्योअनंग: सेवापतिराषकुनायसंग।। बि
स्नु।। पुनिमांगिगरुडकहिहरिसप्रेम: निरधारचितवंछितसनेम।। ग
रुड।। मांग्योसगरुडअजानदमान: प्रभुकरहुअमरबिनुअमृतपा
न।। श्रीबिस्नु।। तहांतथाअस्तुहरिकै सोआप: ममध्वजाबसहु
तुमबलअमाप: सोमानिसाधुमनकेससमेत: करतारनयतेबग
रुडकेत।। गरुड।। अतिहरषबैनकहिगरुडयेह: लछमीपतिकछु
बरतुमहुलेहु।। श्रीबिस्नु।। बरलयोबिस्नुयहजगबिराज: रथहै
हुह्मारेबिहंगराज।। मंथ से।। पारसपरलथबरजगपुनीत: न
येबिस्नुगरुडबाहनअनीत।। गरुड।। अपुनहरिबाहनतयो। अरु
हरिध्वजानिवास: सुनसेवकअग्रेस्वरी: हरिकीनोसप्रहास।।१।।
छंदपधरी।। उडिचल्योगरुडलहिबरअनंत: सोपवनसपरधाकर
तसंत: इहांइन्द्रनिपुहच्योउदार: पनंगारिवज्रकीनोप्रहार।। गरु
ड।। नवबज्रइन्द्रलघुकुसमतूल: मोहिलग्योबिथानहीउपजिसूल:
नहृपिदधीचअरुबज्रलेहि: कछुदेउमानमनजाहिमोहि।। मंथ
रे।। इकपंषबंचअहिलइउपारि: दीयमानइन्द्रकहदइडारि: तिहि
कहिसपंषत्रयलोकनाम: निकस्योसुपरनतबगरुडनाम: इहां
पच्योषिसानोइन्द्रआप: तारहमंत्रकीयसहितताप।। इन्द्रोवाच।।
मिलिसघातयेहमतुमसमान: मुहिकहहुआपनोबलप्रमान।। ग
रुड।। आतमबलबिक्रमबुधिअनंत: सरबथाप्रकासतनहिनसं
त: कहिहुनथापिकिचितदुकोर: होप्रछतजोतुममित्रहोर: न
गेलचराचरबिसदबास: इकपारकरषिउरोअकास: तोसेन्य
नेकमिलिइन्द्रमाहि: जुतलोकपलेबितनयेजाहि।। इन्द्र।। आर
हिकेलअनंतबिक्रमबिसेस: सतवेसबेतुमकहषगेस: निहचे
करिकरिसुनियपरमप्रीति: अगरहमकहतहैबिस्वप्रीति: तुम
तेनहीपीवनअमृतनास: पुनिदेहोकहूकहप्रकास: प्यारहै
सुतेपुत्रनिपीयूष: कहूजिहउपजेसरपकूष: दुष्टबेअमरके

हेतुसाथि॰ अहितो अनेक करि हेतु पाथि: देव नि थ हत ते अमृत रहे: लो
क त्रय रह्यौ परम लै जाउ॥ गरुड उ॥ वासव हि गरुड सुतक हि बिवेक: अ
मृत लगि हम हि है काज एक॰ मम संग इन्द्र म हि आप॰ अपातरू
प तुम चल जु आप॰ करि काज सिध धरि जु रहंत॰ तुम सुधा कुंभ
लै जाउ संत॰ करि जु अब ना हि न पी ज कोर: हरि जउ अमृत लै अ
मय हो जु॥ मंथरी॥ यह इन्द्र मंत्र कीनो प्रमान: आये तु संग क
रि रूप आन॰ अमृत घर ह्यो माता हि आनि: पनक स्योग गरुड तु
ये कृत प्रमानि॰ अमृत घर अहे क इन्द्र से प॰ बिनता गरुड
आन्यो विसेष॥ बिनता॥ दासत छुट्यो हम गरुड दोषि: सो इंभ
हि किह देव साथि॥ कद्रू बाच॥ अपराध छम कुम मब हन्यो जु: हे
रानरीयां तुम निसंदेह: सुत अहे जु अपने सहोस: तुम न्यो तु
कत पन बंधतास॥ मथरा॥ इहां अमृत पान करंनाग आरः सु
न बचन गरुड बोले सुतार॥ गरुड बाच॥ सुत जु मात स्ना
नास कलः अमृत रतन पय आहि: सत सु मंजन दान करि॰ आं
नि पियउ पुनिया हि॥१॥ मंथरा॥ कुस ऊपर कलस: सुध
धरे सु बसं गः नाग सम्हु सु बिमल नदः आये मंजन अंग॥२॥
गरुड सि आरे आपय ह: सो बिबुध पनमात: नाक तउ ते सुरेस
त हां॰ त बसुजीस बघात॥३॥ इन्द्रलोक ले गे अमृत॰ कीय बास
बसुर काज॰ सुजस लयो त्रय लोक सो: सुष लयो अमर सभ
ज॥४॥ करि करि मंजन नाग कुल॰ अह आये सु बजोग: नहां न पा
यो अमृत घर: पूरन लये प्रयोग॥५॥ कही कथा यह मंथरा: सौति
न की सब बिषाद: होत सुरासुर ये हहर: बिग्रह बिषम बिबाद॥६॥
इति कद्रू बिनता प्र संग॥ श्रीराम बन वास ते तन का बि
स॥ कबित्त॥ दिनकर किरनि मलीन॰ दिवस त्रसमय उदद
न के कुल हल करत॰ धरनि त्रास नज बुधन॰ फेर सब दिसे
कार॰ बिषम बहि बार गबार नि उलका देतं प्रचंड॰ पतन बरषा रत
धारन॰ तंब तम्हु मिकं पत सनय: प्रलय काल परमानयो: उत
पात हेत आगम सुन॰ हाते गहे सन जानये॥७॥ कबि कबत्त॥
रहा॥ कुबजे कानैं मंजजे॰ कुटिल कुजाति कुचाल: त्रीया विसेष जु
दासि का॰ इनके ऐई हाल॥८॥ आगे पाछे से लेन हि॰ कर

अनरथउपार॰ इनकेबचनबिलासमहि: जगतप्रलयकेजारा॥१॥छंदप
धरी॥चितगिराइहासुरकाजचीन्ह॰ केकेयकंदृथपरवेसकीन: त
नकालत्रीयामतिफिरीतास: मंथराबचनकीनेंबिसास॥केकेई॥
कहिजननिकरेंअबकवनकाज: अबलेंबबुधिममदेउआज॰
मंथरा॥ मंथराबोलिबकपटमूल॰ कुलदेविहेरुतवसांन
कूल॥१॥ कबिरुवाच॥ दूहा॥ केकेईकंन्यासमय: बचनंनदछुतिकि
न॰ दृधसाधतिहिरोभवस: दुषदआपतबदीन॥१॥बालेबुधित्र
नीतिबस: पारकसंगप्रकास॰ मनआपहिसबलोकमहि: केहै
नवउपहास॥२॥केकेईदिजआपको: नावजोगमुनार:मिलीस
हारकमथरा: अवसरबनोसुआरा॥३॥पायोदावजुआपनें॰
कुबजापापप्रकास: उपदेस्योस्वामिनअहित॰ बियहनृपतिबि
नास॥४॥मंथरा॥पतिनवसोतिप्रतापकरि: तिहिजीवनधिक
र: अहंकारसेंआपनें॰ मतिबोभंगलचार॥५॥दयेकुनेबरदान
है॰ नृपतेहिसहतसनेह: तेथातीराषेतदिन॰ हूंकरिआजसु
लेहु॥६॥बरषचतुरदसएकबर: बसहिरामबनवास: भरतहि
तीयबरमांऊनुव: पावहिराजप्रकास॥७॥कुबज्या॥केकेईहिप्र
बोधकरि: कुबजागईनिकेत: असंतावनाअरथअब॰ केहैंताबि
हेत॥८॥कबित॥ दयावंतअतिधीर॰ अखिलगुनजुतआचार
य: नीतिधरमकरिनिपुन॰ बेदबिद्यासबिचारीय: सत्यबिबेक
सुसील॰ सरलसुनबाकसुसंगीय॰ उचबंसउतपन॰ बिमलम
तिबिजतबिग्रगीय: अतिदुष्टपरायनपापपन॰ संगतासजे
अनुसरे: दिनरातितिनाहिदुरबुधिदे॰ कमहिआपजेसोकरे॥ र
तिरामतिलकबिघनोपदेसनो॥दूहा॥मलिनबसनतनस्वा
समुष: कुटिलत्रिरेषकपाल: दूषनतोरेसयनजुव॰ लोचन
चदेलिलार॥१॥उरधरीमनृपकंपतन: टरतनयनजलधार
मिलिआगमबेधव्यमनु: केबिधिरचनहार॥२॥ तहकुबज
उपदेसतें: बनीसबेबिपरीत॰ रामगमनराजामरन: सोकभरत
दुषसीत॥३॥याकेयहयेरीसमय॰ नृपआगमअवयेस॰ सनमु
षनारईसुंदरी: प्रबजधामप्रवेस॥४॥ राजोवाच॥राजापूछीस

हचरी प्यारी कहा प्रवीन॥ दासी॥ क्रोधागार प्रवेस कीय: दासी उ
तर दीन॥ राजोवाच॥ छंद पधरी॥ क्यों गई बिद्र त्यागि तिनि के ता द स
हम जान्यो नाहिं निदेव हेत: सुनियेन रेस तप हित्तिधारि: सब कार
न सो कहिहैं सुनारि:॥ कबि रुवाच॥ छंद बेताल॥ न्रप देषि सुनैन
वन निसचे त हाबरी उर त्रास: बिथि जुकत नारी समुष बामा: स
रज्यो स बिलास: पाऊं नो सनै ग्रेह को जो: पैगि पुनि पिछतास: चि
त बिकल चकु या चकित चितवत: बुधि बितर्क बदाह: तय उदयि
था लत सेजु ता मनि ग्रेह महद सर थगये: बिपरीत बेष बिले
कि बिनता: नीत जुतावि समय लये॥ कबित्त॥ नत रिदेषी सुनी
चित कुबचन अगोचर: असंतल गन चित देव दानव करि उत्र
नग सुरासुर नरनि ग्रंथ कारून हगाई: बिद्या बिसनब सेष ज्र
हम बिरदनि नबताई: अस्यासन गनन बआपपर: पुसतक पाग
न पढि हैं: बनिता जु बातन रहर सुकबि हेल मात्रा ढिक ढहैं:
॥१॥ छंद पधरी॥ तब निकर बैठिकै कोसल नरेस: बिनता हित्तय
पूछत बिसेस॥ राजोवाच॥ तुव सयन कौन कारन जु नाम: त
व मैंन बेदम महोत ताम: तव अहित कीनति हि कुपो काल: ब
व मैन बेदम महोत ताम: जो बंध
धद रूप रइहै बिहाल: करि हुँ अबध्य सो बध्य काज: जो बंध
जोग सो मुकत आज: देहुं समृध दारिद्र दीन: छिन ही प्रभुत कि
कुकरूं छीन: रबि चक्र अधस थिजु न मिराज: बसबरत ीमेरे अ
बिल आज: प्राची॥ नुसि युसो बीर पेषि: तोर गअवतीलो बि
सेषि: बंगांग मगध कैसल जुकासि: पुनि द्रम्ब देस अोरो प्रक
सि: मांग हु सुदेस जो चित्र माहिं: तव सपथ नियत करि हूं न
नाहिं:॥ कैकई पति सबद सुनत बोली प्रसंस: तुम बचन स
र रघुराज बंस: बरदान दये तुम दै बिसेस: मैं मासन तराषे न
रेस: सो दिहुं अबै प्रीय के ध्याल: तुम राम सपथ जो कर हु पाल॥
राजोवाच॥ प्यारी सु मांगिली जे प्रकास: सुत दिवस आज देष
स हास: जन षेष तिलक रघुराम आज: सब मिले आनि मंगल
समाज॥१॥ दूहा॥ जो मन रुचा मांननी: कहो प्रगट तजि कानि
मोहि सपथ है राम कै जो न करूं यह जानि॥२॥ इह बिधि बच
ह देवये: साषी न्रत सुनाइ: जो तू कहिहै सो

मन्त्राइ ॥ कैकई बिचा छंद पधरी ॥ कहेके बतुरहसब संबासरु
कौल्मसेवहितदास · मुनिबेवधातिरहितगनमांहि · जरज्रखोबिबन
रम्जाहि · रछजे आवहि अवधियेअत · सेवहिनुरछ बनहिसेत · ह
जेव्रतरतनरिजइहेऊ · संपदानमिदलखतलेऊ · जनबाजिपुत्य
श्रतिबेगजाति · रहिसिमयनरतकहेरहोआति · संचारयहेसुनति
लकसज · अतबेखमअरतसजअगजे ॥ कवि कल चा ॥ ६ ॥ बव
नलोबिषबानसे · धरईकद्यदरार · मानऊपरबतबज्रहत · अप
गिश्रसंतरा ॥ गाघा ॥ महबछछिनहत · वऊसबापत्रबिधार ·
दथीसगवतिपतत · बांमबेबबातबिहते ॥१॥ नर ॥ मायति
रनछिमोहमो · बिबसहेतमृगईह · सोगतिहसरथकोवई · देव
नमुसेनलिहा ॥१॥ हसतिकुंतमोनघरलिते · सिधीकरतिसकाम
केलेजेकारेननृपतिको · बबनअरमछिदबोम ॥२॥ सपहेरबो
बीसमुघ · पोगोनदप्रकास · बिषयरदहलेनकरिबिदुस · नगरन
बवतिनसा ॥ छंद पद्धरी ॥ अनजातिकिरतोयुसअ्राति · वगिबो
पतिहगजोछिदमतांति · कैकई जातितिहियातकोन · नहींजानि
तिरयिपमोहतीन · नगनितत्रीयहवबसपतिबिनास · जाबीब
तिष्टसुतिसनृतिनास ॥ नर ॥ नृपहिगईबिभावरी · चाहो
जलअचेत · सन्यालसीमृतकसे · उरथउसासनिलेत ॥१॥ जब
हिरजसुरछजगी · बिकसल्पलपिबाम · पुतकिपसीनाकेय
तन · ररतरामहीराम ॥२॥ राजे बाच ॥ यह सबसंपतिराजसु
ष · धराअवधिधनधान · मैनरनहिदीनेसुदत · मतपरवहि
नरेस ॥३॥ तैमसराबेप्रानतव · मेरेतोमहम्रान · सत्सिवइनोअ
बसोकरऊ · जिहिसबकोकल्यान ॥४॥ पुत्रबकोजुवराजपद · प्रा
वतबेदप्रमान · कतोयातिकरतऊ · बिनतानीतिबिधान ॥५॥ ज
रतहिसंपतिराजजुब · रामहिराषऊयेह · तुवमनबेछितसख
तुनि · अबकरियेमतयेऊ ॥६॥ रामनरंछतराजकी · उदासीनति
तआहि · सोनहीमायामोहबस · कैकवकादततताहि ॥७॥ कैकई व
पहलैकरिकैबचनपन · मरतउगरीमोहि · अबजुकेहलनदपओर
सी · हमादेकेतोहि ॥८॥ उहबेधनबिषबहन · रसनाछेदनदे
न · ससत्रघातजलअनलसंग · तजिऊपानतुरंत ॥९॥ देनकरे
बरदानद्वै · रामसपथकृतरार · पननि ...

नरकसुनाइ।।१७।। राजाकरनीरावरी: हमजानैंअबहि: नहरूपगरे
नरतग्रह: राजराम कहेतें।।१८।। छंद पधरी।। इहिगेरउपजि
बहुमहिदेव: नयछांडिकहऊथोंचित्तनेव: कैमोहिबिसाहिह
रमांऊ: वेदाननरतकेंनरबांऊ: आगेदयीचसिवबाचदीन: सोक
रीसत्तनहींनाहिंकीन: मर्मछिदबचनसुनिरहेमोन: अनुत्रीय
नरेपरदेतलोन।। राजा बिलाप।। कवि रु।। दोहा।। करीयतहे
कछुकछुनयो: मनसोचतमहिपाल: जोगसमयकेसिधजो
कलिगयोबितनबिकाल।।१।। जैसेंगरुवाकेघरत: नरहिभविन
नतिरि: त्यूलेनृपसुबुधिबल: हाहाकतहीयहेरि।।२।। उपजिअ
निष्टअनेंदथल: कुरतन बचन बिथांन: ओबन बिजुरीकेंपरे: थकि
नविहंगमथांन।।३।। छिन हीचेतअचेतछिन: सोचतमोचतस्वास
ओंबेलीथरियारकी: कृतिरतिरतबिकास।।४।। इहिबिधिबिल
पतनेरसो: उधरेदेवदुवार: संबाहिकजालरिसबद: अगरअ
नेकप्रकार।।५।। प्रतिदिनअरकप्रकासतें: ओबैनवबिनह
र: सुनहजथाक्रमक्रमसबै: राजनराजदुवार।।६।। बंदीजनबोल
हिबिरद: त्रबकबेससुजांन: अपनेंअपनेंकुलकरम: सावधा
नसनमांन।।७।। बालकद्वधजुतरुनवय: नगरबासिनरनारि:
रामतिलकजुतरूपरस: चाहतचितबिचारि।।८।। निद्रालईन
भैंकनिसि: पुरजनप्रेमप्रकास: कबेंउदितह्वैहेंअर्क: करपूजे
उरआस: सुषहिनिहारीसंरवरी: दिनकरदरसनदीन: सुरष
जानित्यक्रतसब: लोकजथाक्रमकीन।।१०।। सरबसंतासु
सिधतहां: बिहरतबसिछबंतार: नबेसुमनउछाहजुत: अव
निईसंग्रहआर।।११।। इहांसुमंतआदेसतें: सुतबाजेनीसांन:
मानऊधुमरतयनसघन: पावसरितपरबांन।।१२।। चारनसिधजु
चतुरचित: ओपतसत्ताउदार: कितिप्रकासतबिरदकहि: कु
लबंदिनजयकार।।१३।। राजनन्दनबसनरंग: बिक्रमबिनय
बिसेस: रघुकुलमंडनबीररन: आयेबंधुअनेक।।१४।। बिबि
धिसुनरहचतुरंगबनि: राजतराजदुवार: हयहेषारवगजग
रज: बदीएकहीबार।।१५।। इहांकेकईउरत्रमित: बाढ्योबिषम
बिभार: सुनिनिरघातनिसांनसुन: अरु बंदिनजयबाद।।

कैकईबाचा छंद पधरी ॥ कैकेय पठय दासी कुमार · जय सबद निवारि कुम
रजा ॥ कबि का ॥ आदेस स्वामनी सु निग्रसंत · गई द्वार दासी तुरंत · ब
जोति साम मंगल बिधान · जन नरे चकित कछु असु न जान · अबचित
अगर पुर बात एह · हैपरी बीज जनु अंतेह · मन सोच करत मंत्री सुमंत
संचर केकई भवन संत · जुव परे नृपति देषे कुमार · उरनये त्रास उर
मंत्रि आर · तम स्यो सुमंत यह मंत्र सार · केकई कस्यो कछु अह बिक
र · रघुराज तिलक जुवराज रीति · आछे प कीन आदरि अनीति · करिज
थाधरम जत्मन मसकार · जीवेर बधै जय बार बार · प्रभु दसा देषि तिहि
छनप्रधान · परि बिसमय ब्याकुल नये प्रान · नही बूझि सकत रहि सक
तनाहि · मंत्री नये सोच तवित माहि · मान निल हथिन रयति सुमंत · र
हि समय बोलि केकई अत ॥ केकई बाचा ॥ राजा निसि बिलपत राम रा
म · जुग जुग सम बीते चारि जाम · कारन दुष हम कुन लिषो कोर · र
जनी सह बिर्हई रोहरे रे · नृपजन न कहो कछु दुष निदान · ह गिराम
राम कहि कीय बिहान · राम हिले आवहु मंत्रि राज · कैकछु आज
उपजे अकाज · महिपाल दसा देषत सुमंत · तुम राम आनि मिलवहु
तुरंत ॥ कबि का ॥ सो सुनत महा मंत्री सुजान · संक मो कव रघु स
बधान · वृत ब्रह्मचर्य जुत राम बीर · तिह सदन आर मंत्री सधीर · उ
गिराम करे आदर अपार · बदन करि मंत्रि सु बार बार ॥ सुमंत्र बा
परधान राम सो कहि सप्रेम · नृप दरसन कहु चलिये सनेम · ब
पुराम बिबिधि भूषन बनार · सुत सस्त्र दरस दीने सुनार · मिलि
सनाम त्रि छत्रीय कुमार · आरोह बिरद रघुबर उदार · सब चरेज
थाक्रम जान साज · रथरूढ सुआगे मंत्रि राज · सब हिन कह आ
दर समाधान · रघुबीर कर नपुर जन प्रमान ॥ लोक बाचा ॥ सबि
ष्याद देषि मंत्री सुमंत · सो नये बिमन जन साधसंत · सोचत मन मे
चतउरय स्वास · उपजे अनिष्ट कछु अनायास · बाजत निसान ए
कहीबार · बिनु होर है कोयो बिचार · ग्रसि सोक लोक सब गये हो
ह · दुषसिंधु परे उपजे संदेह ॥ कबि का ॥ दिनकर दिनेस कुल
राजद्वार · रहराम आनि उतरे उदार · पारषद सब निकी नेप्रमान
सनमान करे रघुराम साम · केकई अहद सरथ्य कुमार · रघुबीर
चले संगम त्रि सारा ॥ श्रीराम बाचा ॥ नयव कित नये अहद स
देषि · बिपरीत ताव तउ थस बिसेषि · सब हले बिगत दास सम

ज॰ सनमुषनहीआवतप्रेमसाज॰ आवतिमैंआगेदिवसओर॰ ग
दीसत्रासससबगेरगेर॰ मंदिरजिंहिदसरथमहीप॰ सुषपाइर
मआयेसमीप॥कबित्त॥ जुवपरेदेषिदसरथजुवाल॰ केकईनि
करकसाकराल॰ दुषमगनपितादसरथहिदेषि॰ बिपरीतनईकि
छुचितबिसेषि॰ क्रोधानललोचनअरुनकीन मातातहादेषीम
नमलीन॰ कीनैंपितमातहिनमसकार॰ बेकलपहोतचितबारबा
र॰ लषिरामरहेदसरथलजाइ॰ उरसोकयसितनहीबचनआइ॰
नरनाथअंथैंमुषअवतनैन॰ नहीजातबोलिचितअतिकुचैन॥
निस्वाससरारिअवनींनिहारि॰ मुषमौनरहेन्रपमानमारि॥ श्रीरा
मबाचा॥रघुरामबोलितबधरमरीति॰ यहकहाअजजननीअनी
ति॰ अपराधकहाहमतेंजुआज॰ जिहिबोलेनहीराजाधिराज॥
केकईबाचा॥दोहा॥ रामबचनतुमसोंअहित॰ अवलोकतनके
र॰ तातेन्रपतिसंकोचतिहि॰ अवनिमौनरहेसोर॥१॥ केकेईसुं
रामकहि॰ कारनंकवनसंकोच॰ कैआपवसपुत्रअब॰ अगस्त
लीवपेच॥२॥केकई॥ सुनऊरामकारनसकुच॰ सबेकऊसं
मझार॰ राजबचनपनराषिये॰ बुधिबिकलबिहार॥३॥दयेमै
हिबरदानदै॰ आगेअवधिनरेस॰ मैंयातीरामेतदिन॰ सोमागेस
बिसेस॥४॥दंडकबनमहचतुरदस॰ बरषबसहुतुमजाइ॰ अ
बबरदानजुएकयह॰ मोकहदीनोंराइ॥५॥ दूजेबरमहहिदि
वस॰ भरतहोहिनवनृप॰ पाइअगरजुवराजपद॰ बिलसहिअ
वधिअनूप॥६॥ याजेकरिबोपुत्रअब॰ पितकोबचनप्रमान॰
लसोजनमरघुराजकुल॰ तुमहोनीतिनिधान॥७॥छंदपधरी॥
पितजीयतअबिलआग्याअधीन॰ सोईपुत्रपुत्रकहीयतप्रबीन॰
बयदिवसअसंभ्रमअनदेय॰ लाषनिजिवारजगसुजसलेय॰ दै
गयाछैत्रपितुपिंडदान॰ पुत्रतातबहिधवेप्रमान॥कबित॥दूह
बिनताकेयेसुनिबचन॰ उरपरजरिअवधेस॰ जतनजतनमु
रछाजगी॰ उपजोसोकअसेस॥१॥ श्रीयापिसाचीसीअतछि॰
बेगीसहतबिकार॰ भ्रकुटिविरेषानचितजुव॰ लोचनचंद
लिलार॥२॥ जोपैरामउदेगजग॰ अरुबिधवापनआप॰ मां
नऊमीचमहीपकै॰ पलपलगनतसपाप॥३॥ बांमाअरसा

सीबिषम। निरषीअवधिनरेस: नावीस बितअनुसनय: मनगव
तसविसेस॥४॥ हत रघउ॥ अलपलानपानकअतुल :मबैअ निर
तुनर: एकनि हाक केअरथ : गहिकितकारनगम॥५॥ मेरोजीवनम
नवी: निह्वैजोन जानाहि: कालकारनदैवकन : अवैरामबनजाहि:
॥६॥ केकई ला च॥ हयेमोहिविरहानहै। रामसपथकहिराह: मन
मिथ्याकीनि परत: सुरनरनर कहुनाह॥७॥ कहि कर च उप
धरी॥ योकहिउनगोहिविसनआनि: पापनीदयेरघुनाथपानि:स
रमोनिलये मुनिपटप्रसेस: वरवीररानरघुराजवेस: येआदिम
ध्यअवसानएक: इनकेचरित्रमायाअनेक: तुबहु: पनलापतन
गतिसाधि: अखिलेसअनंतवरजितउपाधि: सुषराजतेगजो
गजुतमान: अनुपनअनी हनमिाअमान: उपराजिराधिनवक
रहिअंत: रछोनखोगनपतअनंत: येसवयंजो तिनासतनुजन
तवस्रतमोऽअनेकन स: लबिकालनकहु अवतारलीन: महिले
रहरनमारनमलीन: सानंदसुतलहिदेवनरेस: नहीवयसराजमहा
नरेस: देवीअनीतिनपत्रीयादाथ: रामहितयापिकछुनहिनराघ
राजो वाच सुतसुनजकहेकोसलनरेस: विधिवैहरतउहि
मविसेस: मोहिराधउकारनगमनोहि: हविलै जराजकछु दोषने
गवचनकहीयकपरनोनि उपज्योअनिष्टकारमोहिओनि
रामवाच॥ देहा॥ कष्टनपहिहैकेकई: बनौसबैविपरीत:
बैदविहनरघुवीरतह: बोलेवचनविनीत॥६॥ छंद चैन॥
हतउबितयहदिवसेसके: कुलअवधिनाहिनरेस: पृथीसत
केवचनपन: प्रेमगटनिरयप्रवेस॥ कालेस। करिविविधिन
तपितहिविंदन: रामराजीवनैन॥ उठिचलेजननीयेहकौ अति
चित्रबादनचैन॥ गुर वधू वाच छंद पधरी॥ अनरघअनी
तिजनवसुनीएह: गुरवधूआस्केकरीये ह: तेकरतनरउपदे
सताहि: अवनीससुतानप्रगटआहि: मनगनतिरामनरतहि
ज: तिहियोजोगतुमदेतराज: नपनीतितुमजानतिनिदा
न: पितुराजलहैअग्रजप्रमान: कतनीतिविपरजयतुमति

संकः अनिथातर पिनही नालअंक: यह होइन रतते नहिन अज:
रामहि निकारि अरु लेहि राज: सीता न तजे रघुनाथ संग: यह सार
रेष जान कु अनंग: जो राज छाडि बन राम जाहि: निहचै तो दसरथ
जीय हि नाहि: उपजे अलान तुम कहं अनेक: याते अलोक कर
रहै एक: नरत हि जुवरानो राज भार: अरु रहहिं राम तव कावि
गार: रामहि नहि लषन चक्छु राज: कत करत लागि हम कुल अका
ज: नरत कहं देउ जुवराज नाम: मत थप कुजि हि नि बन जाहि
राम ॥१॥ह०॥ हम तजि रोष ऊबो है अहि: रामचंद तजि रोष
मंगलचार उछाह मन: सब कुल हो हि संतोष ॥ कबित्व बत्व ॥ कि के
ई गुरत्रीय नकौ: कसौ न कीनौ कान: करमी ठत थिक थिक कहत: अ
हनिगई सग्यान ॥ ॥२॥ छंद बेताल ॥ सुत राम कहं जुवराज पद सु
न: निकर लगन निहारि: कृत उचित कौसल सुता कुल गत करत मंग
लकारि: कुल देव देवी अरचना करि: कौसल्या तिहि काल: द्विज दनु
बिहत बिधान बेदिक: बिबिधि तेष बिसाल ॥ छंद पधरी ॥ इहि
समय राम जननी अवास: आधारि चित आनंद प्रकास: कीय कौ
सल्या कहं नमसकार: अबा असीस दीनी अपार ॥ कौसल्या उ
है लगन समय कब तिलक होइ: सुत कहउ समंगल बचन सोइ: पु
त्र सबकर ऊउछव प्रयोग: जिहि होइ समय आनंद जोग ॥ राम उ
जननी कहं दंडकबन हि जात: पितु आग्या दीनी समय प्रात ॥ कौस
ल्या बच्चा जु नस हेतु मंहि तिहि कृदय साल: कै परउ बज्र तिन सि
र अकाल: का कहत बचन अनहित कुमार: सुनि बहत हीये दुसह
दुसार: कहियै बन दंडक कवन काम: राजा जि हि पगवत तुम हिं रा
म: कैकई मात कछु कपट कीन: है न पति ताहि बरदान दीन: सो इ
म हि दंडकारन्य बास: इहि काल अवधि छांड हि अवास: नरत कहं
दयो जुवराज नाम: आबैठ ले समै पतातनूप ॥ मातउ ॥ कै हो कुन
रत जुवराज काज: अह पर ऊउप सिर अवधि गाज: बन संग हमहि
लै चलो बीर: इहा रहि न जात अति मन अधीर: बिनु तुम कारेष हि बा
र बार: तुम पुत्र अंध लकुरी अधार: हम देष हि सुत बिनु स्त निग्रेह:
निहचै उर फूटहि निसदेह: बनि रहेन इहार हि बौ बिहाल: बन संग
हमहि लै चलो लाला ॥ राम बाक्य मस संग न चलि बौ उचित मात
पति जीय त छाडि बिस्च हि बिभ्रातसू क ॥ बित ॥ बाम न रू थु बि

सेष·विसनदुरबचन बिरागी: बत्तरोगी जड़ अंद·अंधअंग हीनअनागी·
कलह कारकृतघात·चोरनिरधनीजुवारी·वेसकपापी बिलज·बेस
अहितकृतबिनचारी· मृतकनतजेहोरसहगमन·अंतअथोगतउधरे:
स्मासिअगुनअनेकजुत·पतिहननारीपरहरे।।१।। दहा।। पतिअनेसे
पतिब्रता·नाहि नतजति निदान:जीवतजीवे प्रीतिजुत:मानेप्रान
समान।। छंद पधरी।। यह राजजनन नितु मरी अथीन:नहीनीतित
जतसुतमोहलीन:साचोसुयेकअरतासनेह: तिहि संगदहतत्रीय
अगनिदेह·पतिबिनाकछुनपरिवारप्रीति: निरधारकहतयोंनिगम
नीति:पतिदेवनामपतनीसनेम:नितउचितासससेवासनेम·सब
नारसफलकरतारसेव:दिनउचितकरममानतनुदेव·पतिसेवस
दापतनीपुनीत:गतिपावतगावतसमृतगीत:जोहंदपतिसेवा
बिसेष·सबलोकनरीपूजतअसेष·दुषदेवकेतजोबिनउदोष·
सुषमानिसुलीजेउरसंतोष:नहीतनतनारिखलपतिसनेह:तिहि संगदहन
चहिचितादेह:जोजीयेकरोचितदेवजोग·पतिवृतनुसाधेयहप्रयोग·
ताजिमानगानवेनवबिधान:पोषतहलसेजुतकष्टप्रान।तजिषेलते
लसज्यातेतूल·मोनहिसुगंधउछबनमूल·जलसीतलपानिनउस
होन:पडवारलुहिवि बरजितउपान:सुषमधुरउक्मभोजनतमेल:चा
हेनचितनवरंगषेल·मनवाचकरमधरमहिप्रजाद·परिवारदसा
सूनाप्रसाद:उपवासबरतबिनबीन।।लजाअषेसुतवचनलीन
रहिनीतिदमतरहीयअसेष:वेधर्यधरमपालेबिसेष:वसअवस
जीयेतोलोबिदेह·हतजेजोगअसासदेह।।१।। मातावाच।। सुतसु
नऊबचनमेरोसुजान:सुरसाषिपितामातासमान:दसमासउदरध
रिजाचिदेव:सुतजनमिबर्दसकरतसेव·हेअधिकपितातेमातहे
त·सवनारनारचमनकसससमेत:जोपिताबचनराषकुमसतं:न
हीमातबचनतजिबोनिदान:कातजितबातुलवृधकाल·अन
साचबचनरनकेजुआल:हविलेकुराजनिसकेहार:करियेबिच
ररहिथलनकेर:हितबंधुसदानपरमिहेत:लोकउअलोकले
राजलेत:जोनीतिछाडिबोलेअन्याउ:कीजेनकोनताकोकह
उ:नवबेदधरमहेयहसहेत:पित्रराजहिपावेबडोपूत।।श्री
रामवाच।। कुलकलंकचंदअरुअजसअग·नवपिताबचन
सुतकरतेग:रविवेसमातयहनोहिरीत:अबलोनतरीअसी

अनीति: केकईकसोछलबचनकाज: अनजानिनृपतिबरदयेआ
ज: मातानरदेत्रबनअमान: सुषदुषकरमफललहैनिदान: इहि
मेरसोचकरिबेनआज: कुरियेबिचारअबअग्रकाज: बिपदाब
सहैअबधेसबीर: सुधिलेहुजाहुउनकेसरीर: निरधारचारिदस
बरषनेम: पितिबचनसिधमिलहैसप्रेम: मनसोचकंत्रेहुकरिये
नमार: अबअवधिअंतमिलिहैसुआर॥ रहौजलऊपनंमंगल
जलन: लगिपितबचनप्रमान: अबावधिअनीतिअब: अंगीकारनअ
नौं॥ कवित॥ कोसल्यारघुबीरकर: बंयेरहाजेत्र: जाहिनम्पे
बियनजग: अलथलत्रमतसुतेआ॥ कौसल्या॥ अबातसेषद
नीअसीस: सबहोहुसिधजयचढुसीस: बामनजलरहुक
थलबराह: मधुकैटभमरदनपंथमाह: बनअदितिबमनरासिंघ
बीर: सबकालकरहिरक्षासधीर: ठाकनीभूतप्रेतनिकराह: हरि
होहुसदासनमुषसहाइ: दिगबिदगउरधअधमध्यदेस:
बसेगकेसबप्रबेस सुरअसनसबेरिषबरसमाज: कृतसिधसबेहु
हिसफलकाज: त्रयदेवसिधगंधरबताम ... १०५४२८
निद्रबसजागतस्वपनमाहि: मनबाचकरमत्रातामुरारि॥ कबि
तबरामआरसीतानिकेत: दिनजथाधरमउपदेसदेत॥ श्रीरामबाच॥
तुमप्रीयारहहुममजननिपास: बिपदानिबटावहुयेकबास: त
बलोकरिसेवायेकतंत: आवहिंहमजोलेंअवधिअंत: जानेतजन
ककेअहेजाह: बेषमबियोगजातेबिहाइ॥ श्रीसीताबाच॥ सीत
तबबोलीसावधान: बिसतारधरमपतिब्रतबिधान: मातहिकसे
तबधरममूल: सोसबेसुनोमैसानकूल: रहिहुनअहूसंगछांडि
राम: मनबाचनजेहूजनकधाम: पतिसंगनछाडौंतजौंप्रान: नि
रधारयहैमेरैनिदान॥ श्रीरामबाच॥ सरकरकुसकंटकजुतसु
नार: पदत्रानबिनापथगमनपार: बनजंतबिबिधिबलजाल
भ्माल: राहसायेरसूपाकराल: मनुजामिषभोजनमनमलीन
निर्दईपापकरतानवीन: बनसिंधअम्बाघसरनाबराह: अतिरे
छालमहिषाअथाह: आरनकरीमदमत्तअंग: पुनिमनुजनि
जनछीप्रसंग: कंदरनदंसमचकुणकुजीव: सुषधामतहाव
सिबोसदीव: परिधानपत्रत्रिनतल्पपार: जुवतयनसहज

सातिकसुनार : हठिकुकअमलफलनहोर · संदेहलानअनलान·
सोर · मिलिपावसलहिबेसीसमेह : दाहकेतुसारतिरिसुसमिरहेह : त
पिबोतहाश्रीघमद्रुसहलोप : बसिबोसनेमबनदुषबियप · गजग
मनिरहकुतसमातमेह : देषिहेबेगिममनिसंदेह ।। सीता बाच ।
रहा ।। जथ्यालानसंतोषजीय : बनबसिकुरघुबीर : सबैकलेस
बिनासमम : सुषमोनिकुसरीर ।।१।। ज्योतिषविद्यानिपुनद्विज ·
कोउसैसनबकाल · मोकहेदेषिबिचारिमन : बोल्योबचनबिसाल ।
।।२।। सुनिबालेनरलारसंग : तोहिकैहेबनबास · ग्रहररैहैबनग्रन
था · सोकरिबोबिस्वास ।।३।। ग्रलिबनोसोरकेोलयहह · बिधिस
चतमोहार : स्वामिलयेबिनुमोहिसंग : बनैनअनेबिचार ।।४।।
केवछेरकेपासरूम · घोजिइलाहलपाउ · तातेचलिकुसंगतव :
कैजमलोकहिजाउ ।।५।। श्रीराम बाच ।। छंद प ध री ।। वल्लन
नीयपुनिसुगयबेस · रनकेउरंतहरवेहेअसेस : पतिजानकलोस
१०५ यचलकुगाप : बनदु : षदुसहसबहेनबियाप ।। श्रीसीताउ ।।
पुनिकसीसीयालनिप्राननाथ : सबकाजसमंगलपतिहसाथ ·
कबिरुबाच ।। अथ राम लछमन संबाद ।। रहसुमित्राश्रेग्यारे
सेषहिसबोधकीनोसुनार ।। श्रीरामबाच ।। कुमरहऊयेहलछमनसु
नेत्र · मानऊयहमेरोमूलमंत्र : नरतजोकरऊकछुदूषनताउ · सुग
जननिसंगअत्रजाउ · पतिसेवजतनकरिबेप्रमान : मम बिरह
पितहिअसहमान ।। लछमन बाच ।। यहसुनतसेषकोपेकराल :
जारेत्रिलोकजनुरोषज्वाल · उनमत्तआतिचितनृपतिआज · केक
ईबचनबसहतअकाज : तिहिरोकिमारित्रारनहिसत्रात : प्रभु
देषऊबिक्रमनुंमप्रात : अनषेकबिघनतवकस्योआहि : तिह
हेतहतेसकुटंबताहि : राजाधिराजतवतिलकराज : अबकरि
बोमोकहजतनआज ।। कबिरुबाच ।। तिबचनरामसुनिलषन
बीर : सोईकिरलारबोलेसधीर ।। श्रीरामबाच ।। सोमित्रसुनऊर
घुसारहल : मैजाननतवबिक्रमसमूल · नहीसमयसेषदेष
ऊसकाज : रहिहोरग्यटकिरहिबोनआज : देषीयतबिस्वय
हराज्यदेह : उदिमतोजोपेसतयेह · यतोगआहिबारिदबिता

न: सबिलासतडितलेषासमान: अयुअंगअग निअयतपतअंग
नवपरतबुंदजलहोतनंग: अहिगलसथोपिओ नेकआप: तउ
दंसउपेछाजुतसंताप: सोलोकनेगततपरतिलाज: सोईनेगअ
सितनियतअज: तनकष्टकरतरहाकरसतंत्र: तेईनेगअर
थअहनिसिस्वतंत्र: सोतिनदेहतेपुरुषजेग: नवरहकौनक
रिहेसनेग: पितमातत्रातसुतदारसंग: अनेकबंधसबंधअंग
अपजेनवकुमिलतजार: नदिदारुनिकरबारिहबिहार: अ
यवपलनियतछायासमान: योबनहिनीरतहरीसुजान: सुपत्र
यामनरुनिसिस्वपनरूप: अलूपाअुतदुफिअहमितअरूप: गय
नगरसंक्षितगुमान: नयबिषमसंकुलरोगनयान: अतिक
सहतआनमअगूद: ममतानहीछोरततदपिमूद: आदितगताग
तअहनिअंत: आयुरबलछीजतजातअंत: नरजनमबिलोकतज
रानास: तदपिनहीमानतमूढतास: सोईराविहेवहदिवसते
र: हतकालबेगदेषेनकोइ: छंनहीछेनआयुषहोतछीन: नरआम
नजलज्योनवीन: रोगोयसमनजोरिसार: प्रतिदिनसरीरअह
न उपार: ब्राओवअअवरतनिबिसेष: आतमहिजरातजतअसे
ष: साकिलीमृतुसोसावधान: निसिदिवससमयचाहतनिदान:
उतपनदेहयहअहनाव: रविचक्रतपत्रराजारुराव: यहमानतहे
निज्ञयअरूप: संपासुनसमबिरनाहिरूप: तगमासअसपि
नसरक्षरेत: संजोगमूलमलजलसहेत: सबिकारसदापरिणामसं
ग: आपनेताहिक्योकिहेअंग: बहुकालसथितनदपिबिनास: स
बिदितअंतवहअगलिआस: सेदेहपाइतुमक्रोधसंग: नव
हतनचाहतअनंग: अजिमानदेहजोकरतआप: सनदोषता
उपजतसंताप: जिहिबुधिदेहआपनोजानि: मनवाचअबि
मांनि: ममरेहनाहिजिहिबुधिमानि: जगतासुबिद्य
नि: अनविद्यासंजिनहेतआहि: तुमबिद्यानिवरतक
हि: तातेनिमबिद्याउतनतंत: अन्यासलअरथमुकतीमरत
यथिक्रआनमबेरकारि: निरधारतासक्रोधहिनिवारि:
...तिको बिघनहेत: सोतजरुसेबमनबचसमेत: जा

नाथमनुजादिजीव : उपदातपितमातासदीव : अनतापसरबकहंको
मूल : संसारकोयबंधनसमूल : तिनकोधरमनासकनिदान :
ईकोधतजकृतातिसुजान : जमरूपकोधसाध्यातजानि : पुनित्रिसन
बैतरनीप्रमानि : संतोषसुनंदनबनसुभाव : तिहीमसांतिसुतकाम
गाव : समसातिगादितुमतनजकृसोर : किऊकालसत्रुउपजेनके
र : मनप्रानदेहबुधिविषयमेल : बुध्यादिबिलछनहोतहेल : अबि
कारनिराकृतजोतिआप : आतमसुयअंतककप्रव्याप : जबलोंनजो
नितनतिनजानि : अंतकदुषतेलोदतआनि : तसमातसदातुमगणा
नवंत : आतमहितिनजानकृअनंत : क्षुध्यादिबिहसयितसर्वबीर
सुषबेदरहनबरनकृसधीर : कृतीयतपुराकृतअषिलभाव : सुष
दुःषयेवअपनेसुभाव : परिकृप्रवाहजोकार्यकीन : नहीलिमर
होतिनतेअलीन ॥ ६२ ॥ बाहरिसबकरवततुम : जदपिवहुत
बिसेष : अंतरसुधसुभावजो : करमनलिप्रसेष ॥ १ ॥ यह
कदभावजुआपनो : सातिककसेसुनार : अनिअंतरराषकु
१०६ अषित : सोतुमसबसुषपार ॥ २ ॥ जतिनवदुषजालकी : बाधाक
बकुनहोर : बारिजपत्रवबारिज्यों : करमनछीपैकोर ॥ ३ ॥ लछ
मनरामप्रनामकरि : नयननंदतनीर : बोलेबचनबिनीतकृ
सेवकसदासधीर ॥ ४ ॥ मेरेअंतरगतभ्रमित : संसयकृतोसमू
ल : दीनानाथदयालतुम : सोसबहस्योसमूल ॥ ५ ॥ तुमजान
तममस्वामिहित : सेवकबालसनेह : केचलिकृरघुरामसंग : कै
हगिहोकेंदेह ॥ ६ ॥ इतिश्रीरांमलछमनहिप्रबोध ॥ मातापति
आग्या काबि त ॥ रामचंद्रसीयलषनसंग : आयेमातनिकेत : हों
आग्यामांगनउचित : हरषगमनबनहेत ॥ १ ॥ श्रीरामबाचामात
प्रतीछकरकृमम : आगमअवधिअधीन : कबकृबिरहकलेसकरि
मनमतकरकृमलीन ॥ २ ॥ जेअनुबरतीकरमपथ : नहीयेकत
निवास : जैसेपोतप्रवाहपरि : सरितासलिलप्रकास ॥ ३ ॥ मातच
तुरदसबरषबन : मुहिजेहैछनमान : मंदिरदरीनिवासपथ
सजानभूमिसमाना ॥ ४ ॥ कौसल्याबाचा ॥ छंदपधरी ॥ धरिधीर
मेथतीरहकृयाम : बनगमनउचिततुमकोनबाम : पुनिसतु

करै दृगजलप्रवाह: जोन कौ अलप बय बन निजाह ।। सीता उ
बवन कहि सीया सासु हि बिसेस: पति संग कि गे जम पुर प्रवेस:
कबित्त बेदन कृत राय ब बार बार: मिलि मात उर हिलाये कुमार:
उन मौनि लम परी नि अंसीस: पुत चले सीय जुत नार सीस ।। दोहा ।।
त्रीया बसिष्ट अरुंधती: बिधि बत पूजि बिचारि: अपने सीता आन
रन: न कहि दये उतारि ।।१।। अलंकार रघुबीर अंग: जे ब कृमु त्ति ब
नार: राम दये गुर राज कहं: परम प्रेम परिपाहि ।।२।। छंद पधरी ।।
महिपाल उग्रे मन मुष मलीन: कैकई अहि तैंग मन कीन: जग ह
रि मन कु सरब सजु वार: मुनि भेष न हान पविब समार: आजन
म वृती व्रत जंग अंग: सरप जो बिकल मनि रहत संग: सस्त्र कि
म हाथ नी स सेव: पर हरे जेग जोगी स पेख: जनु साहु दृषि बूके
जि हाज: रन मूमि तज सेस्र र राज: धन गये कृपन जे सै अधीर: बि
घि न रीय हे अबंधे सबीर: रहि द्दसा नृपति अह स न्ना आनि: बा
रघि दुष कृत बिकल बानि: कहु लछन हि न अवलं बकोर:
रघुनाथ बिरह दुष उमतरोर: रहि समय राम आये सधीर: बं
नगम न दृं ठकार सबीर: कृत राम पिता कहं नमसकार: बंदित
पद दुं मत बार बार: पुनि सीता लछमन लग पार: उर कंपनय
न जल नरे आर: उर लाय पुत्र बेग रि अंक: राजा नि विपार मन ऊर
क: मुष बचनन आवृत मन मलीन: दुष सागर कृत नय दीन
श्री राम ब न वीसग मन ।। रघुबंस तिलक लबि समय राम: उ
ग्सिलै छांकि धन धरा धाम ।।१।। दोहा ।। औपर दे सीपाऊ नो: राघव
नर हार: परजा गत संपति प्रसुत: छांडि चले रघुराय ।।१।। छंद प
धरी। पुर जारप स्यो नृप जू मि माहि: हीय फटे मन कुसु थिर हीन
हि: हार तबो निर निवास होर: कहु दूतन हि न अवलंब कोर:
पुरजन उदास रोदत पुकारि: नेरा सन ये सब पुरुष नारि: दारु
न जरु जंगम समय देषि: बस बिरह बिषम बिलपत बिसेषि
बग मृग रुदन सुरली स सोक: न जिआ स बिकल अपना
पओक: गज सन्नय सब रूयु उ भित हेष: बिलपात बार बा
र हिबिसेष: जे बाल केलि हित चित्र जंत: तिन तजे असन ग

नगुनितुरंत: निरथाररसायहपसुनिहारि: हीयलगीफरननरनारि
हारि ।। ६७।। बसनअंननतजिलीनछ्तन: बनरूकहिनिवास: सबे
बिबर्जितबिलसुष: बेनवरामबिलास ।।१।। कछत्वचापल्लवब
सन: निसबयकृतपरिधाम: सोभो जिनतोजनसलिल: मुनि
पदई लीयराम ।।२।। तहरवरनिवासज्यू: नगरलोकनेरास: बिछु
रतदहनदुषबिषम: रामगमनबनवास ।।३।। राजोबाच ।। मंतिसु
मंतअनंतमति: बोलेनृपतिबिचारि: रथलेजरीयेरामकहं: बिन
यसहतबेगरि ।।४।। बनदिषारबोराइयमन: करिउपदेसकुमार:
किऊपकारेरघुबीरकहं: अनऊबुधितदारा ।।५।। कूलतसोकसमुद्र
महं: अवलंबननहीआन: भरतमिलावऊराममुहि: प्रेमनिधानि
प्रधान ।।६।। बकुरैरामननिथमबस: छेपुरुषारतहेत: सीत
हिंआनऊफेरितुम: किऊमपंचनिकेत ।।७।। कवित ।। रनबिज
ईसुनरराजरथ: आगेकीनेआंनि: मंतिसुमंतअनंतमति: नृपआ
ग्यासिरमानि ।।८।। जाहरिनगरसुमंतनब: रामहिंरथबेगरि: ल
रबेघुलषमनसहित: संगसीयासकुमारि ।।९।। करिकरिबिदन
अवधिकहं: सबगुरजनसनमानि: रामचलेआरूढरथ: बिज
यनिमितप्रमानि ।।१०।। छंद पधरी ।। सबचलेतहापुरलोकसंग: अ
तिदुषतरूनजेबालअंग: बसबिरहमहाकाननबिहाल: बसिहैं
समीपजहबनबिसाल: अवधितैऐकजोजनअगार: नयेजोनअग्रसतम
ततहांसुनार: तिहिकरेरामबिस्रामराति: जनुदीनमहामनुनिधि
हिजात: १२रूवानथेसबअंगसपास: समिजैजाहिंष्नोंधरिसत्र
स: बुधिरबीयहेरघुरामबीर: तमयेनिसीथजागेसधीर: रथ
हाकिअवधिसनमुषहिराम: तबकहिसुमंतसबसरेकाम: प्रज
जोनिरमग्रहदिसप्रवेस: उग्गिचलेचितआनेंदगअसेस: दिसिद
रूनफेरिरथरामदेव: अतिसजवहांकिगवनेअजेव: तबआरस
रिततमसाहितीर: बसिनिसातहांदिगबिजतबीर: रथचक्र
चिन्हनहीपाररामः महियावतपुरजनगेमगम: अनलबधअजे
ध्यालेकआर: बिनुरामसबेउद्दिमबिहार: अतिबिकललोकज
यआनिआनि: जमसदनप्रायनिजसदनजानि: नरनारियेरद
रसननिहारि: नगतरुरएकनिरकनयारि: परिजनपेसावंभ

रिमसान: जनस्वजनमनऊजमन्तनजान: दिनअदिनरातिमनु
कालराति: बिपरीतदसापुरजनबिहाति।।पुर जनजा।।रहौ
नरीकिरातनिकेकरई उसहदसादवदीन: दसऊदिसमथ्यवितु
वित: मनुमृगछनछनछीनें।। कबित्त।। छंदपधरी।। अव
धिजनमिलेऐकत्रआर: सबकरतयहेचिंतासुतार।। लोकबा
चा।।परचाररामसीतापुनीत: सहलछमनसहिहेतापसीत: बिनु
रामरहाबसिबोनबीर: अवलोकिअचधिचितअतिअधीर: कै
कईवचनछलकरिकाज: रघुबंसवृथबुधिफिरीराज: राछसी
नरीकेकईरीरानि।। जिहसरवबिनासकबुधिबानि: बनिरा
मदु:पसीताबियोग: पतिकष्टसहाबरिअप्रयोग: बलवान
बिधाताअकबारि: इमजनकोउनसमथआहि: मनसोजले
कव्याकुलमहेत: तिहिअसदुषनहीलहतअंत।। कबिराजब
धुछितजानिमुनिबामदेव: इनमथआनिबेअजेव।। बामदे
वबाचा।।इहिमेरसोचकरिबोनआज: कारनदुरतअतिदेवकु
ज: बिधिजुकतकहतयोबामदेव: नवीनलिषकेउलतिनते
व: करियेनरामजानकीकाज: यहसोचउचितनहीसमयआज
येआदिपुरुषअब्ययअनंत: जानकीत्रीयालछमीजयंत: परपुरु
षआदिमायाप्रसिध: पुनियतनिगमागमस्वयंसिध: सेलछम
नअसिसेषावतार: नवक्रतधरतजेअवनिभार: येईरामनयेब्रम्ह
अनूप: रजजुकतबिस्वजावनसरूप: आबिष्णुसत्वगुनबिभुअपे:
तिईसंश्रितपालकहरनताप: तमजुकतरुद्रयेईआपकार: संसारक
रतछनमहसंघार: येईलियेमीनअवतारऐक: बेबसतमनुबर नत
बिबेक: कृतसेषरज्जुवनावक्र।: लेबांधिअगजलप्रलयलीन:
समुद्रसुरासुरमथनसंग: सोलीनजयोमंदिरसअंग: आधारपृष्टिक
मगवतार: कृतदेवकाजबरजितविकार: जबगईरसातलरसाजा
नि: अवतरेआदिबाराहआनि रदअग्रअतुलितकर्दमसरूप: उधार
इनहिकीनोंअनूप: प्रहलादबालदुषदसोपार: दारुनसरूपनर
हरिषार: कंटकत्रिलोकदितिजातक्रूर: अतिरोषनषरतिहि
फारिउर: सुनराजजनदेष्योसबेद: बरजाचिअदितितहाबिद
नबेद: येईजयेतहाबामनविसेष: बलिबांधिअवनिलीनी
असेष: हेहयाधीसजुवजारहेत: पनिमात्यो जारगवतापि

षेत: सोई लियेराम रघुराजबंस: पौलस्ति हत क्रष्थी प्रसंस: नर
राघ मर नरावन निदान: बरदयो ब्रह्म मय हमेतवाते: आगे जुरा
ज दसरथ अजेव: दारुन तप साग्राराधि देव: तुम होउ पुत्र मेरे स्वतंत्र
भे सोभ्यो बरय हम्हल मंत्र: थेई बिष्नु राम अवतरे आप: बध रावन
हित तप दुष बिथाप: सुष बेष सेष सीता समेत: बनजात हरन दु
व त्तार हेत: सीता सुग्रा हिम थाग्र लीन: इहि भाजन सरावन अनी
ति: नृपतिवा केकई क्रत निदान: इहाहे तकछु जान ज्ञान: गत
हिंसन्मारनार दसग्यान: पुनि राम मंत्र कीने प्रमान: हिंदब
वन राम नारद हि दीन: क हनुवरन बनगमन कीन: करियेन
सो व रघुबीर काज: सुन मंत्र सुनऊ साधु समाज: निरधार मोति
साधु निदान: यह मंत्र यह कहि बान ग्यान: काहि मनुज राम राम
ते कोर: अपमस्तु लीनति हिन हिन होर: इहि गेर मुकति कारन
न ग्यान: बिनु राम राम बे फल बिधान: करि माया मानुष रूप की
न: दिनजानि बिड बन लोक दीन॥ ९॥ जन हेतु जगत नि अ
नय: रावन बध निरधार: आश्रित मानुष रूप अव: राम हरन दु
व त्तार॥ १॥ तातें तिहि रघुराम क्रत: साधु न होउ ससोक: बाम
देव उपदेस दे: आपगय निज ओक॥ २॥ सब जन साथ सम
ज सुनि: उनमाने अषिलेस: उपरीसे मय ग्रंथि उर: सुमिरत रा
मनरेस॥ ३॥ सीताराम रहस्य ह: हितजुत हीय थित होर:
नव सोई पावे दिव्य गति: कलुषन दरसे कोइ॥ ४॥ अब रघुबीर च
रित्रये: आगे तये अनेक: सिव प्रनीत नर हरस्तु कबि: बरने सह
त बिबेक॥ ५॥ इति बा म दे वोप दे स॥ पुर जन प्रति छंद प
धरी कबित॥ तब आइ राम तम साहिलीर: बसि निसा तहा रन बि
जनबीर: पुनि श्रृंगबेर आये पुनीत: सम मंत्री य सानुज सरूत सी
त: देवीबन सरवर सुनग देषि: मग पेम्कि रवे दनाबिसेषि: सि
सिपावृछछाया निवास: क्रत राम चंद्र तहा सावकास: तहा आ
इ राम सुरसरित तीर: बंदन क्रत अरचन समर बीर: तब करे
गंग पावन तरंग: अघनासन मंजन अंग अंग: बिष्यात जु निगम
गम बतार: सुरसरि प्रनाव सेष हि सुनाइ: कोसलकुमार बिश्रा
म काज: सिसिपा वृछ आये समाज॥ कबित॥ रघुबीर सष

षडुषडुषअैतजेसुष सहतजेतसुजार अहिनिसानाहिनपरतअं
तर बिधिबिधानबनाइ सुषमअदुषदुषमअसुषथित यहपरस
परअंक पंकमहजेतजथापावन अगरजलमहपंक नरहोतजह
कस्वपनअंतर नरपतीकिनहोइ केरंकहोतसुरेसकिंबा करतब
छितकोइ कररहतहोनिनलानकछुजब जाणिचकुधोचाहि जगसे
ईसपंचमुबितवजीवन अकलमायाआहि तसमतधीरजततबेता
बिहतबुधिबिसाल इहजेबअनिष्टउपजे कालरूअनकाल बसह
रषकेनबिषादकेबस बिहतनिसबिचार मर्यातिसरबसं तावन
यह सारसमझिअसार मिलितजबहनिषादलिछुमन बिमलबो
धबिचार कुलरीतिबसकुरकरनिकीनी पुरअगातपुकार ॥ नह ॥
जम्पोहोतबिहानजब जाणेरामसुजान करेजुबासुरकरमकुल मि
लिसबहिनसनमान ॥ १ ॥ श्रीरामबाच ॥ मंत्रिसुमंतहिरामसुष क
हतजुनीतिप्रकार राजजतननरतहिअनुत जथाउचितआचार
नगरनीतिपालनप्रजा वृथनिमानबिसेष राजश्रीपरिष्माकरउ
अहप्रतिवृथअसेष ॥ कबि रु ॥ कीनेबिदसुमंतकह मिलिस
प्रेमसनमान रोदतबिलपतबेगिरथ पुरदिसिचलेप्रथान ॥ २ ॥
कीर प्रसंग ॥ छंद हेअपरी ॥ इहरघुबीरसरितततआये बो
हतनावकुकीरबुलाये आनतनाहिनावइहिओरा करियरराम
अग्रकरजोरा ॥ कीर उ ॥ बोलेकीरतहमदुबानी जगतप्रसि
धहमकुपुनिजानी रामचरनरजपरसपुनीता उरीसिलागइ
गगनअतीता द्विजसरापत्रीयपाहनदेही सोरजपरसतमिलि
सनेही उपललेतोलकछुअधिकाई गनीयतकागमोऊगरुवा
ई चेहितिजोममनावउडारी बामपुत्रमरहिबिललारी
पुनिकुदीननावकहपाऊ जनकुरबकिहिआसजिवाऊ अै
रनवृसमलकुअन्यासी बितवाबिपतिनदीतरबासी मुहिब
रुधनुषतोनिसरमारऊ पोतचदऊजोचरनपषारऊ जोगंत
ब्यअवसितुमबहितर पदरजधारअगेछोममपट ॥ कबि रु ॥
दीनबचनसुनिकिवराकेरे हसिहसिरामसीयातनहेरे मनम
नरामलषनमुसकावहि निकटरहेतेउजेदनपावहि दीनजबैर
घुपतिसोदेषा दीनबंधुनिजबिरदबिसेषा ॥ श्रीरामबाच ॥ तबबो
लेहसिमुरमथुमारन करउमलाहउचितजोकारन जिहिनतव

तीरीउ किजाई: इहांउ चितसोक रियेत्ताई॥ कबित॥ परमपवित्रजु सुरसरि
पानी: इहकरेतीनरिचरिआंनी॥ मिलिमिलिपंकजचरनमुरारे: परतिअ
गेछिअगेछिपपारे: जबेनिसेषनरैरजजांनी: इहांनिकरनेकातवआंनी
बिबुधनिकिवरलाभपबषानें: सुमनबुरषिकरुनारससानें: इंन्हजुचरन
कमलउरधारे: तेईपरृपामरकीरपधारे: जेइन्हहिनिरंतरजोये: धरिक
रकिवरामिलिमिलिधोये: अवनिचक्रजिहित्रथक्रमआंन्यो: मेल्लोव
लिमसतकमनमांन्यो: नागराजसिरवहत निरंतर: रामचरनतेईकिर
ममुकतकर: निकसतजिनतेगंगतरंगा: पावनजलत्रयलोकप्रसंग
इतिसंवादकीररघुपतिकै: कलुषबिनासदाननिजगतिकै॥२६॥
कसोरहसिनरहरसुकबि: करुनांहासिप्रकास: साधसुनतमनउल्ल
सत: बिमलनगतिबिस्वास॥२७॥ इति श्रीरामकीर॥ संवाद॥ क
बिरुवाचा॥ छंदपधरी॥ आरोहरामनोकाउदार: प्रभुनयेतहांसुर
सरितपार: निजसषारहगुहबिदादीन: आगपाअथीनउतरनकी
न: नृपफिस्योतरंगुहसजलनेंन: उरनहीसमातबिछुरनअचैन: सी
तासुमअचलिअग्रसेष: बरहिरामतापससुबेष: मगचलतराम
इकमृगजुमारि: तिहिआंनिसरोवरतटउतारि: करतहांमहासाष
बिथार: इहांवसेतबैंरघुबरउदार: मृगआमिषकोभोजनसुधार: बहु
मतीतलपपल्लवबनाइ: निजसयनकीनकरुनानिदान: थप्पिपल
बनरहेसावधान॥ अथनारद्वाजआश्रमआगमनं॥ छंदबेताल
प्रभुनयेआनिप्रीयागग्राम: जहांतीरथराज: करिन्हांननितबिधांन
भेगमबनबिलोकिबिराज: पुनिजोप्रीयागप्रभावभूरन: बिमलनेद
बताइ: सोईप्रीयाबंधुसुनाइपावन: रीझिकेरघुराइ: इहांनारद्वा
जरिषिसआश्रम: आगमनअबिलेस: परिक्रमनकरिरघुनाथपुनि
पुनि: अरुप्रणांमअसेस: रसप्रेममगनरिषीसरामहि: लीनतब
उरलाइ: इहांअमितब्रह्मानंदउपज्यो: जयोसातिकभाव: कृतअ
र्घप्रजाउचितअर्चन: बारबारबिलोकि: आनंदसागरहृदयउम
ग्यो: रिषसुजाननरोकि: बेगरिआसनकुसलबूझत: सहजसानुजसी
य: अमृतसमयफलमूलअदनुत: द्विजसुरामहिदीन: कहितरव्रा
जअनेकभांतिनि: बिनयजगतिबदाइ: कृतजनमभजनमआसेषत
पके: अगरफलहमपाइ: चितहरषअनुतकृतधरमचर्चा: बसिनिस
रघुवीर: उठिचलेप्रातरिषेसआये: संगसमाजसधीर॥ कविता॥

ब्रह्मादिकन बिसेष· सुगमदुरगम उपदेसन· मोछिधरमको माग· बिहूतजे
बेद बिसेसन· जीव चराचर जिनहि· पूछि परपंथ दिपावत· जथाकरमफ
ल भोग· साथ निज लोक सिधावत· आचिजनचये नव हूतयह· कहिन
जातकारन अकथ· तेई रामपुराकृत पुरुष ज्यों· पूछत बन गिरनमिप
थ ॥१॥ ह॥ भरद्वाज सों राम तहो· पूछे पंथ प्रयांन· इहारिष उपदेष्ट
नये· अनुसोई कर प्रमांन ॥२॥ भरद्वाज के बंदि पद· अनुतव आग्या
पाइ· चित्रकूट सनमुष सुचित· कीन गमन रघुराइ ॥३॥ छंद उ॥ ४॥ र
बिसुता उतरे राम· किधु देह धरि रतिकाम· जिहि निरषि मगन रनारि·
नये बिबस काज बिसारि ॥ बन बा॥ बा॥ अवलोकि लछन अंग
पुनि कहत नीति प्रसंग· इन छत्र जोग अनंग· अरु चिन्ह नृपता अंग·
बनि देह लछन बतीस· सब सिंथ छत्र अनुसीस· जटजूट तिहि सिर जो
र· हम परम बिसमय होर· बपु जोगजसन बिलास· तरु त्वचा अ
इतताम· सुषजेज बिबिधि बिलास· तजिगे रतिहि मृगछाल· ब
हन मतंग बिनीत· पद चार यह बिपरीत· पद सिय पीन प्रमान· तिन
अमत रहत उपान· देव अपलछन देषि· सुनराज पात्र बिसेषि· सामुद्रि
क जोति बसंग· ये ई सर्ब मथ्या अंग· कैंइ दवि जोग अकाज· यह नये
निसचय आज ॥ छंद बेताल ॥ निहचै सु मात पिता निठूर· नीति
बरजित नेह· ये पुत्र जिन बनबास पठये· सहज भोन सदेह· मृदु अं
ग बयसु किसोर मूरति· चरन चरबन चीर· अति घोर हृदय कठो
र उनके· बज्र हूते बीर· हम हूजदेषत फटत हीय· बिपरीत उस
हबात· बिनु दोष अइसे बाल बिछुरन· मात उरहि समात ॥ को॥
रू ॥ ह॥ मारग जिहि जिहि ग्राम महि· निसचय तेन रनारि·
सबे कृतारथ होत सुष· नरहर प्रभुहि निहारि ॥१॥ पावन करत
अपावननि· जे जड़ जंगम जीव· पाउ धारे रघुनाथ प्रभु· सुषद चित्रगि
रसींव ॥ ॥ अथ बालमीक आश्रम आगमन ॥ का॥ रू ॥ ह॥ चि
त्रकूट महिमा अमित· बालमीक बिश्राम· मुनि समाज निगम निनिपु
न· करम निरत निकाम ॥ ॥ बिबिधि सिंय मृग आहरत· बसत
बिचत्र बिहंग· मत पुजंग जनम धुप· तहा निरझरत तरंग ॥ ॥ तरुन
प्रफुलित फलित तरु· पत्र हरित नित पार· सीतसमंद सुगंध सुष·
सेवत जंत सुनार ॥३॥ बालमीक मुनि इंदबर· रहत तहा रिषरा
ज· बरजित बयर बिरोध बन· सेवत जंत समाज ॥४॥ आलिंग
...हां आये सानुज तहं बालमीक बिश्राम ...

करुनाउदधि: रिषबरसानुजराम· असुचीन्हेअषिलेमये·व्याप
क बिस्वसरूपधाम॥२॥ पूजाअरचाप्रेमपर :कुसलप्रसनमनकी·
न· बैगरेआसन बिबिधि :दिमअसनफलदीन:॥रामउ।कर
रत हाकैरजोरिकहि:बालमीकसोंबात :पितआग्याबनवासप
न:जथान्याहमजात॥३॥कालछेपकछुदिनकरहि: रिषबरस
कहिराम·उपदेसऊतातेहा:बाससथल बिश्राम॥४॥कबित॥
रिष बाच॥जलथलअनिलअकास:दुरगगिरदेसबिदेसनि·दी
पगहनदिगबिदिग·सिंधुसरसरितबिसेसनि·स्वरगमृतुपाताल·
नियतत्रयलोकनिवासी:ब्रह्मआदिपरजंतलू स्वयंमेवबि
लासीयु:समसांतसरबब्यापकसुषद·अषिलईसअसरनस
रन·जानौंअनावतुम्हरेजंही·कऊतजोतहाथहकरन॥५॥दो
हा सरबबिस्वब्यापकसगुन :निरगुनऊनिरधार: कहिऊतद
पिथानकेउ:साधारनबुधिसार॥६॥छंद उधेर॥ समदिष्टसां
तसुभाव: अरुद्रयइमअभाव:सुषदुषरहतसमान:तवु
मंत्रपागप्रमान: निसप्रेहनिरभैरास· रकुसरनतकअभ्यास·
षलताअहंपदषोर:कतिरागद्वेषनकोर: अयउपलकलगनि
यकः बिधिअबिधितेरबिबेक: इयजरपिअरइयपार:नहीहर
षसोकसुभार:सुषदु:षजानीयसंग: यहकरमफलअनसंग॥सु
षआनआपसमान: इत्यादिसायअकाम· रहिबेजुतिहिउरराम
करियेनिवासकृपाल: प्रभुरनहिउरप्रतिपाल॥२८हा॥ नामजु
महिमानामकी: केतिककहुँकृपाल:रामनयोकब्रह मरिष
जिहिछुटेअयजाल॥१॥अबताकोसुनियेअषिल: कारनसी
ताकंत: सोतबनामप्रभावतें: सबेकहतमुहिसंत॥२॥अथबाल
मीकपूर्बप्रसंग॥ बालमीकबाच॥कबित॥ दुरगमगि
रउद्यान·निबसतहाबसतभयंकर: परहिंसकबिप्रापहार·प
पीअदयापर: पुरपगनजारतप्रसिध·लाषलाषनिपसुला
वत:ल्हरतदेससलाल·धारिदिसऊदिसधावत: [illegible]सूत्सब दुर
सबनदाहदव·उभरन्तपन्छिकाऊकरत·गिरकंदरेसबतबनग
हन:करमघोरनिरदयकरत॥१॥छंद पधरी॥प्रभुपुराकिरात
नेबरतिपार:हमबिप्ररहेतिहिगरतार: ऊबत्रोकिरातनिसं

गहेउ : मम जनम मात्र कहि बिप्र कोउ : उपजे किरात कुसंग आनि
सम करम बेस बुधि बल समान : मिलि करहि सबे हम चोरकरम : धनु
बान ग्रहि सहित निठुर धर्म : बध करहि जीवन रनित बिकार : मगरा
कि निसा दिन मनुज मार : पित मात वृध त्री अरु पुत्र पास : सब करहि ए
क मम कृत तिग्रास : जनन बध करतो कि मे पंथ मार : इहि समय सप्तरि
ष इह आइ : मुनि नास तत तप बल अप्रमान : सो ज्वलित तेज दिनक
र समान : मैं तबे आनि रोके महंत : तन बसन छीनि लीने तुरंत ॥
सप्त रिष बाच ॥ मोहि पूछि न हति धरा तम रम : कहि हेत द्विज
धमय हग्रकर्म ॥ बालमीक बाच ॥ मैं कह्यो फेरि तब रोकि रीस
मम कुटंब मो हि ग्रास मित मुनीस : सो मह दुःख पित मम कुल सम
ज : धन नय अति क्रम कल ग्रज : क्रर हन्त उन हि पोषन अधीन
कानन गिर निस निवास कीन ॥ सप्त रिष ॥ मम मूल मंत्र तव क
हि मुनेस : बिधि कुटंब जा र पूछहु बिसेस : बिध्ये बिनाग स
बलेत बीर : सो करहि कोउ मम करम सीर : तुम जो लाग्रे होवि
८१ वरबात : तो लोहम गदेकं उन जात ॥ बालमीक ॥ यह सुनत
मात्र ल्येह आर : सब कुटंब नय पूछत नक्कार : हति प्रन तुल
बन निठुर हो र : सम नाग मात सब दिन मसोर : प्रति दिवस चर
न मम सीस पाप : इहि लेह कहु बिना ग्रग्रपा : मिलि सब हि न
उतर दयो मोहि : ले पाप करम सब लग हि तो हि ॥ कुटंब दुष
सु : धन धात आनि देत : हम फल हि बिनाग उ इह हेत ॥ बालमी
क उ ॥ यह सुनत त्रास उपज्यो अमान : मम नय पेप्रान कंपारमा
न : बैराग मो हि उपज्यो बिसेष : धिकार करत आप हि असेष
निरबेद नाव उपज्यो बिनीत : पुनि आइ जहा रिषि पुनीत : धनु
बान तोरि कीनो अधीन : क्रम जोग बक्रत मैत्र कृत कीन : नैराम
नि रय अरण व असेष : बहि किरम देव कूत बिसेष : बद सुमेरि
पर षेत बानि : मुनि दयो अन य मुहि दीन मानि : इ उव तचरन
मोहि पस्यो देषि : बाचो पदेस दीनी बिसेषि ॥ रिष बाच ॥ आले
खि पर सपर रिष निआप : परत हृ द्विजाय मम महापाप : अयक
रत दपिय हसर न आइ : सतसंग है नकरि बोस हाइ : उपदेस
मो छिमार गत्र नीत : बिप्र तो हि सब बिधि करि है बिनीत : सो

[illegible]
[illegible]
नितक [illegible]
जपकु [illegible]
जपुरुतत [illegible]
नियस [illegible]
पिग्र [illegible]
नसीत [illegible]
[illegible]
नि: [illegible]
यतस [illegible]
कात: [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अतिमत्त भ्रमत आमोद आस: तरलता बिपुल संकुलत माल: सुनकु
जमनकु संकेत साल: अति अमित तहा सीयराम आर: बन बन बिहार रहे
उ बिहार: अवलोकि फटिक सय सिला ऐक: अति रंग चित्र सोरंज अने
क: ब्यामोह चित्त रघु हथ पात: बहि सीत मंद सोगंध बात: कुंजत बि
हंग बन बन अनेक: बिसतार सुष स्वांनी बिवेक: गिरचारु जंत आल
त अगांन: बिधि बिधि बिहरत कौ जो बिधांन: सनाद सुषद निरझर नि
नीर: सुनत सलिल चारु अन अन सरीर: पल्लव अंकूर बिन मृदुल पार:
सुषतल परचित तिहि सिल सुहार: सीयराम तह बेठे सधीर: बिल
सति रति मानहु मदन बीर: नव सलिल मर्दि मन सितन बीन: करि
तिलक राम निज लाल कीन: दुबजो रिमीयाप्रीय लाल देस: सम बिबि
तिलक प्रगट्यो सुदेस: रचना अनंत कृत तिलक राम: बनदेव बिहसि
त्रिनतो रितामा॥ रहा॥ बासुर ऐक बिलास बन: सीताराम सुजांन: थि
त बेठे ऐकांत थल: बिबसमनोज बिधांन॥१॥ नाम जयंत सुरेस सुत
बारस रूप बिहार: तिहि दृष्टी सीता तहां: बाढ्यौ चित बिकार॥२॥ छंद प
११२ धरी॥ सो दुष्ट जीव अपने सुमार: अवलोकि त सीतहि निकट आर:
बिहंग आय मग्न मन बार बार: अवलोकित हार युबर उदार: अक
रनरीसीका अस त्र आप: तिहि हेतराम सो भयो संताप: पापिष्ट पतनि
कसे पलाइ: ज्वाला कराल सर पुष्टि जाइ: उठि चढ्यो जदपि बासब
अकास: त्रिन अस तंत्र न छोडत संगतास: त्रै लोक फिर्यो करि त्राहि
त्राहि: त्राता न त्यो कोउ तहा ताहि: समरिषद यो उपदेस तास: सु
नि राम सरन जरीय प्रकास: बारस सो त्र मित्र मित्रो बिहाल: क
रवरन ग्रहे रघुबर कृपाल॥ श्री रा म ब ब्बा च ॥ न हीहोत व्रथा मंत्र
उ निदांन: बचे हो न अग्र अनमो सुबांन: आकर पिसीक माया अ
नेक: अघौघ कर्यो बध कौरि ऐक: द्रिग हीन त्यो जब काक दीन
करुनांनिधान सो प्रनित कीन॥ काक सबाच॥ ऐक आछि कर्यो
उं तउ असाध: पतित न जन करि है निरपराध॥ रा म उ बा च ॥
ताहि कि सो ह सिरामन तब जा पहा यम पाप: बटि है दृस गुन दि
ष्ट बल: चिनर हि सकि त चाप॥ अ थ मंत्र सु म न्त्र जो
[illegible] आ ग म न क बि त ब्बा च॥ रथ ले फिर्यो सुमंत तब: र
हरु दय अति दीना॥ सो महि छौ लिगु जात हु: न बिधनां करा कै

न॥१॥ नृपति निषाद बिषाद बस: मंत्रि हिं देषि मलीन: कहतु षट बि
सुरन कथा: आरत दीन अधीन॥२॥ मंत्री चले निषाद मिलि: बन
छांडे रघुबीर: सुमिसु मिरु दन सुमंत को: अगजग होत अधीर॥३॥
लके उनाहि न चलत हय: अवधि समुष अकुलात: फिरि फिरि नाग
नरथ हिले: हेरि हेरि हिहिनात॥४॥ मंत्रि सुमंत ससोक मन: राम
हिं फिरे षनारि: आये भाली रथ अवधि: बरषत लोचन बारि॥५॥
समाचार रघुनाथ के: बूझत लोक बिहाल: मंत्रि न आवत बोल मु
ष: कर करि हनत कपाल॥६॥ पर लषेरि मुषमन मलिन: कीनौं
पुर हि प्रवेस: राज दुआर रथ तें उतरि: आएँ जहँ अवधेस॥ दसर
थउ॥ नृपति बिलोकि सुमंत तहँ: अथ मुष दुष हि मलीन: कहँ
छांडे सीता कवरि: मेरे जीव नि प्रांन॥५॥ कहा कहौं मैं पतिन कहँ
राम लषन सीय बैन: सुपेसुन बकुठीय जित हि: लै आये जीय लै
न॥६॥ गाथा॥ दुजन बिनव बिनास: सजन सुषसमय आगमं संत
तं: कहियो पथिक प्रमानं: पुनि पुनि सौं सो पिसंदेसं॥१॥ दूहा॥ बकु
त जिवयो बिधि: यह कहत दुषन कज: समर्थ तिलक सन्यास तें: रा
म जाहि तजि राज॥२॥ मंत्री बाचा॥ बार बार बंदन करे रघुबर
तुम हि नरेस: मम हित करु कलेस मत: दीनों यह संदेस॥३॥
कुल आचार जु नीति क्रम: करि पितु बचन प्रमान: दरसन करि
पद बंदिहौं: अवधि बिती तें आनि॥४॥ सीता लछमन तुम हि लों
बंदन करे बिसेष: पितु दरसन पावन परम: देहैं बिधना लेष॥५॥
राम लषन जटजूट सिर: बांधे बर पय आनि: तन पहरे तरु पत्र त्वच
बेष महा मुनि बानि॥६॥ आगे बेर तें गवन कीय: अरु रथ दीनौ फे
रि: मात पिता हि बंदन बिबिध: हित सों कीय हरि हेरि॥ सोरठा
दसा राम सीय दृग बि: जल बेचर जल थल जथा: बिसमय परे बिस
षि: कुंजन बिकल कराल रव॥७॥ नृप बाचा॥ दूहा॥ मैं मृगया
निसि श्रवन मुनि: बान निहंसो अप्पान: ताके अय जु मात पित: ति
हिं उषजरे बिष्यात॥१॥ तन बसचित प्रवेस कीय: उन दीनों मो हि
श्राप: पुत्र सोक ज्यों मरत हम: यों नृप मरि हो आप॥२॥ सो यह
आयो वह समय: करम बिपाक प्रकास: जो बिधि अंकलि ताट

पटःमिथ्याहोंहिनिताम॥३॥ छंदपधरी॥ कबि रुवा च॥ यहसमय
सोकसागरमझारि: नृपत्तयेमगननहितनसंभारि॥ राजाउवाच॥ रोव
नपुकारकरिरामराम: हापुत्रकहांतुमधरमधाम: मोहिभरतसो
निकिनदरसदेहु: संसारआजदुर्योसनेहु: हालषनपुत्रममवच
नलीन: कृतछांडिमोहियोगमनकीन: हारामरामतवविरहदं
ग: केकेईसंतवउपजिअंत॥ कवि रु॥ करिरामरामदसरथपुकार
प्रानतजितयेसुपसिंधुपार:॥ रुहा॥ अस्वमेधयायककुगति: या
गतिधरमविधान: अहमरिअफहिंनृपतिसो: पाईगतिपरमान॥ छं
दपधरी॥ पुरसुनोनृपतिसुरपुरप्रयान: हाहंतसबकहंतेतुवत
यान: हाहारवतवरनिवासेहार: केकइीयिककहिसवेकोर: पति
मरनरामबनवासपार: बोरपभरतजाकेमझार: वससोकचर
चरत्तयेबिहाल: कोवरनिसकैवहदुसहकाल: गुरबंधुसचिवव
समिलिसगान: बसमसयमंत्रकीनेबिधान: जाणकातेलमहन्
पतिदेह: स्वसथानराषिदूर्ढसनेह: कुलनिबुलाइउरपत्रदीन: पु
रजाङुभरतमतुलप्रवीन: जुतजाजुधाजितनगरहंत: जोभईसु
नहकहबीअत्यंत: भरतनिसस्वपनदेषतभयान: अनचितअसग
नरूपआन॥ भरतस्वपनदर्सन॥ बिसतारसघासोस्वपनबात
परिहृदयत्राससोकहतप्रात: अवलोकिसुकसागरअनीर: ससिभू
मिपतनदेष्योसधीर: घनतिमरसयनभितिनगररुध: पतिमु
कतकेसछितजलप्रबुध: पतिअदिसिघरतेपतनपेषि: बिचवि
सदकुंजगोमयबिसेषि: पुनिकरततिलांजुलतेलपान: पेहसत
बारबारहितमान: आहारतिलोदनअनायास: तनलिप्ततेलअ
वगाहतास: पाषाणपीठबैठकप्रमान: निजबसनकृष्णकृतपरि
धान: पिंगलाकृष्णप्रमदासप्रीति: राजासोंप्रहसतिजथारीति
धावंतत्रीयतिईसजवधाप: अनुलेपनमालाअरुनआप: रासभर
थजोतेरोहरूप: जमदिसासमुषआयोनजूप: पुनिषरारोहके
उनरसपाप: अतिआतुरदछगमनआप: ततकालचित्तधूम
यतास: अवलोकिजातसोअनायास: रहिंजातिस्वपनअदभु
तअलोक: सोदेषिनिसाचितअतिससोक: अहमपितृपालवारि
मअंत: देषेजुस्वपनदारुनदुरंत: तिहिकारनअंतरमहात्रास: उप

गेअनिष्टकछुअनयास: पत्रीवसिष्टआपानुपार: अतिवेगनरूनपठ
हतआए।। इतीवाचा।। बोलेवसिष्टगुरस्वलकुवीर: उचितलेत्त
रतसनुजसथीर।। कबिता।। अतिवेगअजोध्यानगरआए: सब
होतहाअनमितसुनाए: सोनाहतदीसतश्रीसमाज: आकारनगर
जेसेअराज: नहीबोलतवेदिनबिरदबानि: जितितितहिसोचज
नमुसेजानि: राजग्रेहनाहिनराजरीति: गजबाजिसुनतमंगल
निगीति: नृपमंदिरआयेसमयनाहि: मनजानिपितारनिवासम
हि: इहिसमयमातग्रहलरतआए: सामुहेंआनिकेकयसुताए:
अतिहरषपुत्रवेगरिअंक: नीयरारकुसलपूछतनिसंक।।नरता।
रानीकिहिमंदिरआजराए: सुधिलेकुपगयदासीसुनाए।।केक
ई।।सुषउतरदीनोफेरिमाए: सुरलोकपितातजसजुतसिधाए।।न
रता।।उपजोअनरथकहिकेनियेकु।।केकई।।दुषपुत्रपितात
वतजोहेकु।।नरता।।सोपुत्रकोनकारनसुनाए।।केकई।।इहकनि
बासरामहिदिवाए।।नरता।।किहिथेंअकाजयहदुष्टकीना।।के
कई।।देनपतिमोहिबरदानदीन।।नरता।।बरलयेसुतेथेकिहिवि
धान।।केकई।। नृपतावितेषतुमकहनिदान: रघुनाथजाहिव
नछोकिराज: सोतिलकतुमहिसिरछत्रसाज।।नरता।।पापनीक
हातेवातपारि: मारयोनरेसअबमोहिमारि: ममकाजराजमांगे
जुमात: तिहिलग्योपाथहेंफलमस्योतात: बनवासरामलछमन
बियोग: अवधेसगतनोअप्रयोग: कारनजिहिकीनोकुलअकाज
राजश्रीकोरितुवसीसराज: रामहिनिकारिमोहिदेनराज: ग्रहहर
बुधितेहिकवनआज: पापनीजुदरउपजोसपाप: अपलोकपात्र
कनयेआप।।१।।दोहा।। मूलकाटितरपत्रते: सींचेचित्रकुच
लि: मीनजिवावनहेतज्यों: फोडतसरवरपालि।।१।। पुरीअज
मीनजिवावनहेतज्यों...

बसन मलीन सुषीन बपु कौसल्या तिहि काल: महा कलप तरु तें मनहुँ:
बिछुरी लता बिसाल ।। छंद हेम परी।। देषि भरत मन रतन तांकीनैं: लए
उगाइ लाइ उर लीनें: भरत सुधमन कम बच मोरे: गलत गलानि अ
रुक जोंओरे: मन बिस्वास देत सरतारी: सकत न सनमुष दिष्टिप
सारी।।। भरता।। अंबा मोसम पतित न कोई: हित जिहि रतें अनर्थ
जु होई: पित परलोक राम बन बासा। सो सुनि अजहुँ जीयत मन आ
सा: यह मति बिधि हिं छुहुँकि हि दीनी। कैकेई सुतान बंध्या कीनी: ज
ननी तरी जो नियह जाके: तो सिर परहुँ पाप यतनाके: काज उदर
कन्याबिक्रेता: चाहत सुकृति सुधनुन चेता: हतजो बधक अरु
घति गुरके: सुत पित घातक तिरकासुरके: गो द्विजहुँ तनु कच र
नअहारा: इस्त्री अरु बालक मारन हारा: स्वामि द्रोह बिस्वास जु
घाती: हतहि बिनास करन रवदाती: गोकुल हारक बछ बिछो
ही: देवपितामाता गुरद्रोही: गुरतलपक जो परत्रिय गामी: सत
यी कनक कलि कनक कामी: क्रिषिकार न सर फारन कोऊ: जन
वंचक पथ घातक जोऊ: द्विज जो क्रीयान्ह छिक्र षिकरमी: द्यो
रपति अहं अपर गोधरमी: छिति जाति रिन नीत अछेहीं: होत बि
कल देषत छत तोही: इसादिक अयअस हअसेषा: बिस्वप
र हुम मसीस बिसेषा: जो मोहि जान नरीय ह माता: देव हे
हुँ तो दुष फल दाता: जननी यह सम तेहि जाको: तेहुँ न हे हुँ पराजय
ताको: कीय अनरथ जो यह कैकेई: तो मम सोक देव बहि देई।। क
बि रवाचा।। हह।। पतिघातनि सुत द्वेषनी: देस बस दुष दाइ: य
है कुबुधि न के कई मातान वन सम भाइ।।१।। जानि भरत निरदो
षजीय: कौसल्या हित कीन: लोचन पूछे अस्रु जल: नियत अंक
भरि लीन।।२।। सुय साथ सुत जानुम: बरजित अयर बिकार:
पुत्र करहुँ जिन सपथ पन: सब जानत संसार।।३।। कूलत सो
कसमुद्र महु: अवलंबन तुम आइ: सीता लछमन राम सग:
सब मनु मिले सुताइ।।४।। तिहि छिन दारुन दुष दुसह उर अं
तर गहि आइ: कठिन दुसार निवास की: बिधि न बरन नि जाइ:
कौसल्या।। कहि कौसल्या भरत कहँ: अब जिन हो हुँ अधी
र: समय बिचारि जु अनुसरे: सो री पुरुष स धीर।।५।। काल्हि

दोसनहीजीये : नागिफलतसतनार : कालकरमअतिकगनी :
यासोकछुनबसाए ॥१॥ जीयनमरननरनाथको । धनकछुउ
मताहि : जलतेबिछुरतपंकज्यों : उरमभफटैनआहि ॥२॥ सफ
रीप्रेमसराहीये । हिनिबहतइकहेत : छीनहीबिछुरीनीरतें :
तरफितरफिजीयदेत ॥३॥ कबिरुबाच ॥ करमदसासुतनरतके
कोसलमातिहिकाल : कुचपयकरुनाहेतकरि : श्रवनलगेमि
रिसाल ॥४॥ नरीबितीतबिनावरी : सबहिनिकलपसमान : क
रिनकमलरनिवासके : बिलपततयेबिहान ॥५॥ आरबसि
ष्टआरुयती : बचनउचारिबिनीत : समाधानसबकोकस्यौ
पावनवेदअनीत ॥६॥ नवबाहरिआयेतरत : मनदुषबदनम
लीन : मोकोरिनअपराधजुत : होतछनहिछनहीन ॥७॥
गुरबोधबअरुमंत्रिगुर : मुनिकुमहाजनलोक : उतिमअति
नजनअषिल : आयेसनासमोक ॥८॥ छंद पधरी ॥ अन्हवा
इनपतिजलगंगअंग : सबकरेलेपसोरंतजुसंग : मोबेदरी
तिसाजेबिमांन : पधरारनपतिनामहसमान : रेकंधपुत्रना
तपुनीत : बिसतारबानिहरिहरिबिनीत : हाहंतसबदनन
नगरहोइ : रबउठीसदुषजरुजीवरोइ : लेआयेसरयूतटसष
र : कृतसोजसबेबिधउचितबेद : श्रीषंडअगरमंदिरसजाइ
बसत्रादिबिबिधिसोसनबनाइ : पुनिकृतबिमांनतिहिअप्र
वेस : बिधिजुकतदयोकृतनुकबिसेस : करुनारतदाहदसर
थहिकीन : पुनिउचितकरमदिजबचअधीन : बपुन्हाइसरि
तसयूबिप्रात : तहांदईतिलंजुलिउदकितात : लबिसमयू
रुदतसबनगरलोक : सबआइराजमंदिरससोक ॥ इतिद
सरथपरलोकप्राप्त ॥ कबिरुबाच ॥ छंदपधरी ॥ मृतककृतज
थाबिधिकरिसनेम : परलोकसयेपितुजुक्तप्रेम : गोलछि
सबिधिजुतभूमिग्राम : सुषसेजबसनभूषनसमान : गज
बाजिअनेधनऊंचगेह : सबनाइदिजनअर्चासनेह : अछे
रससोजनजगअन्हाइ : सूतकनिवरतलोसुतसुनाइ : न
नमेंजनउजलबसनअंग : सबनगरजथाबिधिलोकसंग :

दीनेबसिष्टगुरबामदेव : अनेकदानद्रजाअमेव ॥ इहिसमयनरलसनु
जसधीर : बेगेसुसनारघुबंसबीर : गुरमंत्रिमहाजनमिलिसगान : पुनि
बरनचारिपुरजनप्रमान ॥ कवित ॥ कहिबसिष्टगुरकथा : बिहितमतबेद
बिबिधिबर : सुनकुनरतसंसार · प्रबलबिधिअंकसुसिरपर · हांनिला
भ हितअहित · मरनकुजीयनसमंगल : बिषमपराजयबिजय · अव
निअपजसजसउजल · नवतबसुपेतवतुगवत · जोर्इजोईउपुजेज्ञा
निजहं · व्रमछांडिसमयबरतकुत्तरत : करिबोसोचनपुरुषकहं :
धुरसहारसंग्राम · बिषमनिसिदिवसजुबिलो · निषलअसुरकीयन
स · सुरेद्रसरथरनजिस्यो · निगमबिहितनिसेष · दानपूरनद्विजदिनो
अवधिअंतनजिराम · रजनिकुंदककिनों : नहीदस्योबचनपननि
रबहेो · पृथीसुजसपरमानथ्यो : तिहिंधर्मदेहतजिरामहित · जी
यनमरनकुजोनयो ॥ छंदपधरी ॥ तिहिकाजसोचकरियेनको

सिधसा
म सब
नसदस
षनरस

इ · होनीसुदेवइछासहोई ॥ छंदद्वेअषरी ॥ गुर उ ॥ गुरबसिष्ट
अरुबामदेवगुर · अतिबिलोकिनरतहिदुषआतुर · जथासमयउ
पदेसजनावत : सानुजभरतहिनीतिसुनावत : किहिलगिकरियेस
चअकारन : धरयोसुबिनसिरहिनरकधारन : ज्योंनरतजतबसन
नेजीरन · ततछनलेधारतपदनेतन : त्योंहीजीयछांडिजीरनत
न · अषिलसरीरतजतहेंअनअन · अभयजीवसुधनिसअनम
र · जनमनासबर्जितहेंअरजर · पितअथवासुतपंचतपावत · वृथा
मूदउरसोकबढावत : बिधिकृतअष्टअनेकबिहार्ई : नियतकोउ
टिभ्रमनसाही · सागरकूसरसरितसुषाही : निषलद्रव्यसोपे
धिरनाही : ज्योंजलबिंदपत्रपरजानकु : प्रतिमांसोंछनतनगप्र
मानकु · आयुचपलजलबेलाज्योंही : ताते प्रत्ययकेसोताही : कोउ
चलेचलाउकोई · सबहिनकोवहमारगसोई : जलसमीरबस
होततरंगज्यों · उपजतनासहोतसंसैतयों · धरउधीरतजिसो
कधुरंधुर · अतयदेकुसबहीजनआतुर ॥ दोहा ॥ बचनलागि
रघुनाथबन · सानुजचलेससीत : नेमबचनदसरथनृपति · छा
डेप्रांनप्रतीत ॥ १ ॥ यहतुमसमरुकुनरतअब · सबहीनातिसु
जान · जोकछुपितुआपपापगट : करिबोपुत्रप्रमांन ॥ २ ॥ दंडक
बनरामहिदयो · तुमहिंअजोध्याराज · सोउनकुतुमकुसम
झि · करिबोउचितसुकाज ॥ कवित ॥ नतिबसिष्टसुनित

रत: लोकहितराजसुलिजय· पितबचनपरवांन· कालग्रतिजा
निसुकिजय: नृपसुरलोकनिवास· कगिनपनपूरनकरयो: रा
मबिषमबनवास· सबिधिमुनिकृतअनुसरयो: तुमसाथनीति
जानतसगुन: बिकललोकअवलंबबिनु· अबकरऊराजअएपाउ
चित दैंहितिलकसुजसोथिहिनु ।। छंद पधरी ।। अनउचितउचि
तआपाअथीन: पितुबचनमानिसुतसोईप्रवीन· पितुबचनका
जद्विजपरसधारं· सहसोदरजननीकृतसंघार· जाच्यौसुतनजो
बनजजाति· सुतदयोबिस्वबादीविख्याति· उपजोनउनऊकेउ
अजसअंक नृपवाच्चनरतपालऊतिसंक· पितदेहराजसोईल
हेसुत· समतयहबेदपुरानसंत ।। कैप ल्याउ ।। इहांकौसल्यादि
कमातआर: सोकहतिसमयकारतसुनार· अवधेसस्वरगबनं
रामआप: बससोकभरततुमबिरहव्याप: करिहैकोरहाल
मिलोक: सुतकरऊकाजमनतजऊसोक· अवलंबनसबको
तुमहीआज: रहाअबकीजेबैगिराज: पितआएपाकरऊप्रमा
नपूत· यहनीतिधरमजसहैअनंत ।। सोरठा ।। कबित्त ।।
बिषमसुनतयहबात: अश्रुसलिलसींचीअवनि: उपअंकुरउपजात
नमंजुतउलहेभरतके ।। नरता ।। कंपहृदयजलनैन: तहारोमउन
रतन: बिकलभरतकहिबैन· काजनमेकेहरामकछु ।।२।। ऊंअधम
लअकाज: उपज्योकेकेउदर: चाहतऊसुषसाज: दुष्टमोहिअवरा
जदे ।।३।। यहमोतेनहीहोइ: राजदेऊरघुरामको: मैसिरमोनीसोर
कौऊजसअपजसकहै ।।४।। रामलषनबनवास· मातबिधवापि
तमरन: हमहितिलकजगहास: नलीवनाईबातबिधि ।।५।। छंद
पधरी ।। रघुबीररामराजाधिराज: उनकीयहसंपतिसुषसमा
ज: अबतोमुहिसकिउपारऐक: तजिओरबातयहयहोटेक: गुर
देवबलऊलेसबनिसंग: अहिबांहरामआनऊअनंग: जननीगु
रमंत्रीबंधुजार· आनियेरामजिहितिहिउपार: यहमंत्रसबनिअ
वलंबआर: नयोसोकसिंधुबूडतसहार ।। कबित्त ।। कीनोंप्रमा
नयहमंत्रकाज: सबउगेथापिसजनसमाज ।। नरता ।। हरहा ।।
कलोभरतगुरमंत्रिकहे: पुनयहकरऊप्रमान: सबमंगलया
महसमझि: करियेप्रातपयांन ।।१।। कबित्त ।। मानिभरतऊ

तमंत्रमन: पूरनप्रेम प्रतीत: सो निसि चकई चक्र ज्यौ : लोक निबि
षम बितीत ॥१॥ होत बिहान प्रयान हित: राम दरस चित चाउ: अं
बुज ज्यौ दिनकर उदय: उरझ्यानंद अगाउ ॥१॥ छंद बेताल ॥ भ
रत चित्रकूट गमनं ॥ सुष साज सरब अरुंधती संग: बनि ब
सिष्ट बिमान: पुनि बामदेव सबांम पूजित: अगट रथ परवांन
चवडोल सिवका सुषसुषासन: अअरानि आरोह: बाहन करनी
बिबिध बाहन: सकल दास सरोह: सब बीर ज्यौ बिबसांन बसी
य: सचिव सुनर समाज: कृत जथाक्रम आरोह कीनें: सु नगब
हन साज: पुरलोक जान बनाइ पूरन: जथा मन सुषजोग: क
रि हरष रघुबर दरस कारन: अगट प्रेम प्रयोग: गज बाजि सुर
थ पदाति अगनित: चतुचमू चतुरंग: पुनि गगन चुंबित धज
पताका: अति सुरंग उतंग: नीसांन गहर निनाद निरंतर: अ
वनि मध्य अकास: अगट सुर ब्रह्मंड पूरित: अति दिगंत प्रका
स: थरजात थसित गमगत नुवथर: कमठ कोल कंप: सु
र सिध छूरि समाधि तिहि छिन: संक्रमत दल संप: मिलि अ
नल षुररज पूरि मंडल: गगन चढि आकास: तम अंस रवि
क बिछोहति हि छिन: थरनि कंपत तास: परचारि तरतस ब
ध पावन कृत गमन सुन्त काल: सम सांत बेष बिसेष स्ते
ना मध्य गत मुनि माल ॥ सो रठा ॥ अमित रितु गज
जूथ ज्यौ: सर बर जात सकांम: बिकल त्रिषातुर प्रेम बस
रूप दरस हित राम ॥१॥ कबित्त ॥ सेना प्रमान ॥ मिलि स
हस्र दस मुदित: मत्त मातंग महाबल: सुरथ बीर बर सहस
साठि: षितिपाल साल षल: येक लाष अति सजव: अस्व जे
धा आरोहित: मिलि पयदल धानुष समूह: अनंत गअ
संषित: धसमसति धरनि गिरि अगट हि: कमठ कोल अ
कंप कीय: सेना सुन्नरत चतुरंग सजि: सनमुष चित्र गिरि सं
चरीय ॥१॥ दूहा ॥ अगमे रसीमा सघन: बन सरसरित बि
साल: घुरति निसान दिसान घन: मिलि निहाउ गिर माल
॥ छंद पधरी ॥ नीसान घोष सुनि निषाद: बनराअ

केलेवदि विष्याद ॥ गुहवाच ॥ सेनाअनेकबोधवसकोति मह
बारघाटस्थकुसमेलि: रघुनाथकाजगुहिकोपिराज: रहिषे
तनरत प्रेमगुधआज: असमथरामजोनतअपान: सोरवेलो
जातरतबलसमान: मोहिप्रथमरामकिंकरहिमारि: बनय
रततोयसिहैंबिचारि ॥ कबित्त ॥ भूमिकाजनवभूत बंधु
सुवपिताबिरोधत: भूमिकाजनवभूत सतसछोतेहितसोध
व: भूमिकाजनवभूप: करमनिरवसबकरही: भूमिकाज
नवभूप आपथापी अनुसरही: रतभूमिराजसेपेतरत
कष्टबिनाहीकरचढ्यो: हीयहेरिअकंटककरनहित: बिष
मवैरबिग्रहचढ्यो ॥१॥ दोहा ॥ पगयेनतनिभारस्याति सोथ
लेनसबिसेष: कारनआगमभरतको: आनकुजारअसेष
॥१॥ कबित्त ॥ बिषमपंथपदत्रानबिनु: चरनचारचितचा
र: आवतमुनिवरवृंदमह: भरतअग्रसतसार ॥२॥ सति
कबिबबिलोकिमुनि: यावनआयेथार: सेनाकारनस्वामि
सों: अखिलनिवेद्योआर ॥३॥ छंदपद्धरी ॥ निसवयहत्यछो
ठेतबनिष्याद: पुनिचलेपारबरजितप्रमाद: करजोरिअ
रघुहदरसकीन: परिदंडनारबंदनप्रबीन: अतिप्रेमभ
रतलीनोउगाइ: लखिरामसषामिलिकंठलाइ: अतिप
जिमोहमुकहिनग्रत: सानुजमनुनेरामसंत पुनिपूछिकु
सलपथचलेपाइ: सीयसमलषनसुखिलहिसुनाइ ॥ गुह
बाच ॥ प्रभुदासजानिकरियेप्रवेस: सदनममहोइपावन
नरेस ॥ भरत ॥ पुनिभरतकसोगुहसोंप्रकास: बिनुरा
मनआवहिनगरवास: रघुबीरसषातुमअद्रिराज: अ
वचतकुसंगमउचितआज ॥ कबित्त ॥ जिहिंतातिस
हनुजनरतजात: कीनोप्रमानसोरघपति किरात: बि
षमपथजथाक्रमकीयप्रमान: गिरबित्रनिकटआये
सपान: रहिनिसाजानुकीहिसुपनआर: सबिसेषअ
तरामहिसुनाइ ॥ सीताबाच ॥ अनेकसेनमिलितरत
आइ: बेकृतसरीरदुषदीनबिहार: तनषीनमलिन

सबमातसंग। तिहिरूपग्यानअरुग्यानरंग॥कबित्त॥यहसुन्योस
पनजबग्रवनिरंद्र: चषग्रश्रुधारचलिरामचंद्र: सोईसुपन
रामसेषहितुनार: ग्रवचिंतग्रनेकछुग्रसुनग्रार: यहकहि
स्तीतरघुबरग्रन्हार: पुनिपुजिजथाबिधिरूपार: उतरदि
सिसनमुषबैठिग्राप: बरबीररामबिसमयबियाप। ननपूरि
धरानीसानंनद: बसुमतीजेलिमुनिगनबिषाद॥किरात
बाच॥दूहा॥ सेनसंगचतुरंगसजि: तरतसहितलघुत्रात: ग्रा
येइहिबनग्रापनें: कालककेलेकिरात॥१॥श्रीरामबाच॥ ग्रा
हिग्रचानकग्रागमन: इहांभरतकेग्राजे: कहेलषनकारनक
वन: सोचतुरंगसमाज॥२॥लछमनकोप॥ सत्रुसेषनाहिनै:
सुषद: निगमनीतिनिरधार: याहीतेंग्रवनीसउर: बादतबैरबि
कार॥३॥देसएकमहस्वामिद्वै: होतजहांकिऊहेत: बिग्रहबि
षमबिनासकें: निसचयतहांनिकेत॥कबित्त॥षंनिमरेर
९ नषेत: उसहचतुरंगबिशारू: मरितग्रोगसमूरि: बीरकेतुक
बिसतारू: सानुजभरतसधीर: बीरजमलोकहिबासे: के
कईउरपुत्रसोक: ज्वरप्रबलप्रकासें: कुलतिलकछत्रग्र
जसुवनको: रामसीसलेधारिऊ: कारुनरूपग्रवधेसकरि
सियपीतिबेगगरिऊ॥१॥दूहा॥ प्रभुतुभजानतधरमपर: ग्रा
पुनजेसेग्रोर: पावैमनुजबिभूतिपुनि: रिकंनरहतजीयमेर
॥१॥पारीनृपतांग्रवधिपुर: सबपरयागसाथ: ग्रायेग्रवसर
जानिग्रब: करनग्रकंटकराज॥२॥बनहिग्रकेलेतुमबसत
सगनसेनसहाउ: ग्रसहनकोलछनयहै: देतसमयपरद
उा॥३॥छंदहीयग्रषरी॥कौनराजमदस्वलह्योकुचाल: बऊरार
जबिनसेबुधिबाल: सोभपाइपदगुरत्रीयगामी: नऊषजे
तिद्विजतेंग्रयनामी: बेनबिप्रकीयबेत्रप्रहार: सहसब
ऊजमद्गनिसंघार: षलसुरसंगोतमघरषेथे: रंभ्रनये
पुनिपाछेऊरेथे॥कबिरुवाच॥कबित्त॥जटामुकटसि
रसूर: बसनतरुत्वचाबिराजित: कंधग्रजिनकरदंड: रेन
रंजितनराजित: सातेजवंग्रनुसार: बयरबिपरीतबिब

श्रजीय। रामबेषत्र्यावरीय: संगमुनिवरगुरसजीय करिवितचरनरघुनाथ
के। याहीसमयजुत्र्यागमन॥१॥ रामद्रिष्टिपथभरत जयेजबदेकेनाई
मगनसांतरसमांऊ साथमुनिवृंदसुषाई: चितप्रेमबढिरामचंद्र धरत्र्य
तुरधाए प्रनितदंडज्योंपरे भरतलेकंठलगाए: तहसजलनैनरामभ्र
तन कोउनउरत्र्यंतरकरत अनबिधप्रीतिरसरीतियह: भ्रातरामभ
रतभरत॥छंदपधरी॥ मिलिसत्रुहनसुषत्र्यमाप उरलाइलयेर
घुबीरत्र्याप: सबबंधुसीयात्र्यपनेसुनाइ: आनंदबढ्यो अतिमिलत
त्र्याइ: सुत्रुदसबंदिगुरतियसनारि: मिलिबेगिरामपरिषदसंभारि
बसिष्ठ ३॥ बोलेबसिष्टगुरबिमलबानि: मातासकआइमोदमानि
कबि रु॥ पाउधारिरामतिहिंगपुनीत: समबंधुसकलत्र्यरुसीयासी
त: आयेसहरषराघवउदार: बंदनकतजननिहबारबार: मिलि
मुदितजथाक्रमसबेमाइ: बेगिरित्र्यकलेलेबलाइ॥ श्रीरामबोलचापि
लकुसललरामपूछीकृपाल करुनारससगरश्रीतिहिंकाल॥कबिरु॥
रजाइसरथपरलोकप्रान॥ रहिसकिनजननिसबउगरेइ: ह
हपुकाररबनिषमहोइ: मिलिनयननीरमनुबरषिमेह: दुषसोक
मगरजनुधरेदेह: धोयेसुधरायरत्र्यसुधार: अतिसबदहोतकंदर
पुकार: करिसकिनधीरतरनारिकोइ: रनिवासु: सजरुजबरोइ
सुरनारिरुदतिसरदनतिसत्रास: तरजुथरत्र्यापिनसोकतास: गुर
त्रीयात्र्यरुधतित्र्यतिसंपान: सबहिनकोकीनोसमाधान॥ अरु धति
राजलोकहिप्रबोध॥ हरिइछाकबउनदृथाहोइ: कीनेउपाइहिं
नकोइ: मायाजुप्रबलदेवीत्र्यमान: सिरबहतसुरासुरनरसमान
काटैमगमसंतकउपरकोइ: हरिहेतबलीसोकोउनहोइ॥ कबिरु॥
प्रछालिउदिकत्र्याननपुनीत: नवसासुत्र्यकतरिलरीसीत: सबि
मादरामगुरबंधुसंग: नहान्हकरतरलगंगातरंग: सबिसेषरामस
बबिधिसुजांन: दीयपितहितिलंजुलिउदिकदांन: त्र्यबिलेसराम
गुरमतउदार: करिकीयजथाबिधिकुलाचार: सनुबेगिसाधप
रिषदसमांन: नितहोतधरमचर्चानिदांन: बासुरकछुरहिबिथ
इहाबीति: पुरलोकदरसरघुनाथप्रीति॥ श्रीरामबाचाइहांबच
नरामगुरसोंउचारि: द्विजलोकहोतग्रहबिनुदुषारि: सतमातन
रतकरियेप्रवेस: इलबलसमांनपुरत्र्यवधिदेस॥ कबिरुबाच॥
इकदिवसभरतसुतसनात्र्याइ: गुरसभासहलसांजुनसुन

र: मुनिवरगुरमंत्रीसुतरमांति: मुनिवरनचारिपुरजनप्रमांनि॥ दू हा॥
रहोसबनिमिलियोकहैो: अबकछुकरऊउपाइ: देषिजथाबिधिसुन
दिवस: राजतिलकरघुराइ॥१॥न र त बा चा॥ कबित॥ अलपकाज
नवनूरि· नहिनब्ययकरतबिचषन: येहैनीतिउपदेस· गहतसुरअ
सुरसिधगन: हरिकाज जिहितिहिगुनाई· बसुअलपबिथारहैः पु
रुषवेहैपंडितप्रमांन· योनिगमउचारहि· अ·नवेषतिलकरघुब
रअब· करिलेचलियेअवधिकहैः करिहैनिवासहमनगरतकाहि· म
हद्देककारनमह॥१॥ दूहा॥ अरथगयेसरबसरहैः मंत्रयहैजुप्रमान:
बसिहैहैमुनिवेषबन: रामबसहिरजधांनि॥२॥ कबित॥ नरतस
तनुजनगतिपर: देअगेमुनिरहैः मिलिसंकलपबिकलपमन:
आयेजहारघुराइ॥ कबित॥ करअंजुलिजुतनरत: रामसोंप्र
नपतिकीनीय: अवनिचक्रनुमरीस· अषिलस्रीयतुमहिअथी
नीय· करहितिलकअनपेक: छत्रसिंघासनसजहि: मातहोहिम
नमुदित· बिस्वजयउडुनिबजहि· रजाधिराजरविबंसरवि· बि
कसहिलोकजुकंजबन: करियेप्रयानअबअवधिकहः घरघरमं
गलहोहियन॥१॥ छंद पधरी॥ जननीममजाचोकपरजेग: प
तनहिनसमझियहअयअप्रयोग: होनीसरनेनहीअंतहोइ: ति
हिलागिकहअबकरेकोइ: रहानुवकरियेबेगिराज: यहछत्र
धरमहैउचितआज॥ श्रीराम बा चा॥ पुनिकरतरामनरतहिप्र
बोध: पितुबचनलोपबेदहिबिरोध: सुतपिताबचनकरिनगत
स: निरधारताहिनरकहिनिवास: पितबचनत्तरतकरिबेप्रमांन
इहिंगेरनकारनउचितआन॥ नरत॥ तुमनीतिधरमजानत
नरेस: बिधिजुकतनरतउचरयौबिसेस: उनमतनातिचितत्री
याजीत: आपनअतिहिकिमुकअनीत: अकेयबचनरनकेअक
ज: सोईकहतनीतिपंडितसमाज: उपजेअनरथरनबचनअंत
सबपूछऊमुनिवरसाधसंत॥ राम उ॥ अपराधनमातापिताए
ह: सबनावीकारननिसंदेह: बरषदसचारिदंडकनिवास: पि
तबचनसत्यकरिऊप्रकास: पितबचनभंगजोकरतपूत: अ
नससनबयककहियेअनूत: पितघातपापदरथीप्रमांन: इ
हिगेरफेरकिहिबोनआंन॥ कबित॥ तबगयेनरतउगिं

गतीर : सजिदरजासनबेगेसथीर : पनकसौदेहसागनग्रमान : नि
रधारनगतिरघुबरनिदान : मुनिनियमनरतकृतयहबिसेस : सुर
काजनेगजानेसुरेस : सुरराजसहिततबसुरसमाज : कहिहेतग
गसोदेवकाज : सुरसुरीदेहधरितरासकाम : मनमुदितआइजरा
अनुजराम ॥ कबिताग ग ा ३॥ येनरूपकीयधरनि : असुरअय
नरआकेता : ब्रहमबिसुसोबिवरि : तासदुषकहेदुरंता : बरअमे
घनहाबिहत : ब्रहमकेहदयोबिसंनर : दसरथनपकेपुत्र : नियत
केकेआकतनर : करिऊंअमलरावनसकुल : ताहिनपेबोघेजतब
अषिलेसबिसुदीनोअतय अवनिहेऊनिरनीतअब ॥ छंदपधरी ॥
रहिहेतबिसुअवतरेआर : संघरेअसुरदेवनिसदार : निरलेपनिर
जननिराकार : अवतारलयोकारनउदार : नहीबोधवकालकेनि
दान : आरंनग्रानकछुकरेआन : केकईआजबनवासकीन : निर
धारकछूरंछानवीन : येजातबनहिसुरकाजआज : रावनकोकरिहे
नासराज : आपाजुदेहिरयुपतिअनंत : सोईकरऊनरतहच्छोनिस
त ॥ २१॥ करिबिनासपीलमतिको : देवकाजकरिदेव : अवधिबि
तीतेअवधिपति : औहेअवधिअजेव ॥ १॥ कबि रा ॥ कीयप्रबोधम
हाकनी सबनरनहिसमुझाइ : महिमजथासरूपमिति : सुषस
सथांनसिधाइ ॥ २॥ मुनिप्रबोधसुरसरितेको : नरतउवेसतजा
इ : आयेआश्रमआपने : बिसमयहरहिबिहाइ ॥ ३॥ राजाजनक
आगमन ॥ सोरठा ॥ ताहीअवसरदूत : आयेजनकनरेसके :
तहासुनिचरितअभूत : रामजोगदसरथमरन ॥ १॥ दूतदसाय
हदेषि : पुनिआयेमिथुलपुरी : बिनईबातबिसेष : सबहीरा
जाजनकसो ॥ २॥ बढ्योबिषादबिदेह : सुनिसुनिसोबातेदुस
ह : सोसकुरंबसनेह : राजआयेचित्रगिर ॥ छंदबेताल ॥ रघु
नाथसतुजजनकराजा : मुदितमनसाजनमिले : सुरलोकदस
रथगमनसुनिसुनि : बिषमदुषनयेआकुले : रनिबासउनयउ
दासरसगत : मिलिसमथअनुसार : रिषत्रीयकौसिलनेकरा
निनि : कीयप्रबोधप्रकार : कुलराजराजसमाजमिलिकछु : का
लछेपनकीन : चित्रकूटकीसुधरमचर्चा : निसहोदिनबीन : ह
कबि रुबाचा ॥ रानीमैथलिराजकी : बहुरूकबिल्हत

तहिकरतिप्रबोधसो: जथासमय बिधिबात ।। सीताजननी प्रति ।। छंद
पधरी ।। पितदतरामबनवासपाइ: बसनीतिचलेतिलकहिबिहाइ: दुषत
हामहादुसहदुरंत: अनचितकष्टउपजहिअनंत: आरुनजंतदारुनअ
साधि: उतपातकरहिबनचउपाधि: मनुजासनराछसतनअमान
नुवबसतदुष्टबनबनन्नयान: बयबालरामलीलाबिलास: तातेनउ
चितुमसंगतास: हउछोडिपुत्रिकारहऊयेह: सबकरऊसासुसेवा
सनेहु: रघुनाथबिरहअरुसोतिरेस: बसिअहबराबऊककछुबिसेस
हसंमतहैतवपितसमान: करियेमममसिराकबरिकान ।। सीतादसा ।।
अथबदनबिमननहीकुरतबैन: नीरदसमानजलधारनैन: स्वरन
गकंपरोमांचसंग: उपज्योसीयसात्विकभावअंग: बेबरनदेहप्रसे
दबारि: हीयबिकलसीयहिजननीनिहारि: सोदसादेषिसीतासत्रा
स: बिपरीतहोइकछुजोबिस्वास: निरधारजनेताकीयनिदान: पु
निकऊरहनदीतजैप्रान: पतिप्रेमरसेमातानताव: दुषमगनसीयाउ
दिसनाव: उरताइजननिलीनीउगर: चषपोंछिबातओरैचलाइ
कविऊबाच ।। दूहा ।। नृपतिबिदेहनिष्पादपति: गुरबासिष्टसुग
नः मुनिसमाजमहिमाअमित: नेगमनीतिनिधान ।। १ ।। मंत्रिसुमंत
हिसुतरमालि: बीरनरेसबिसेस: एकसमयएकत्रकै: देतभरतउ
पदेस ।। २ ।। छंद पधरी ।। बसिष्टोबाच ।। गुरकह्योभरतसोंग्यदप्र
न: सिषसमयमानिबरतऊसुजान: रावनबधकारनजातरांम
करियेनबिघनरहाहिबेकाम: तातेअबआयहुतजऊतात: मिलि
रामचलऊलेअहमात: तुमसदासाधसंमतसधीर: बिधिकहहि
रामसोकरहिबीर: गुरपितावंधुजेगोसप्रांन: नहीबचनलोप
करियेनिदान ।। कविऊ ।। मनसोचिंतरतगुरबचनमानि: उर
रामचरनदेषेजुआनि ।। दूहा ।। हाथजोरिबोलेभरत: सुनऊ
ग्यानकुलग्यान: महाबाहुरघुबीरमुहि: प्रभुआग्यासप्रमान ।।
श्रीरामबाच ।। पितुदीनीआग्याअगर: हितवाअनहितहोइ: सो
हमतुमकरियेसफल: कुलहिकलंकनकोइ ।। २ ।। कबित ।।
तहांप्रनामकरिभरत रामसोंकह्योजोरिकर: प्रभुआग्यासप्रमान
सबैममर्मानिलईसिर: परमपुजिपादुका: देवमोकंअबदिजय
केकेईसुतजुतकलंक पुनिपावनकैजय: सोपैप्रमानत्रैलोकसि

र॰राघवरंछारावरी: करुनानिधानदईभरतकहं: प्रेमसहतनि
जपावरी॥१॥ दृहा॥ कवि रुवाच॥ महापादुकारतनमय: ल
ईभरतउरलाइ: पूजिसुराषीसीसपर॰ सोसुषउरनसमाइ:
नरताहिबिअवधिगतप्रथमदिन: नावकुअवधिनरेस: करुना
निधितेभरतको: सुनिहेंअगनिप्रवेस:॥अथ श्रीराम भरतोपदे
सनं॥ पृथीपालकयेकनृप: सुनियेभरतसधीर॰ मानपानक
रियेकमुष॰पोषतसकलसरीर:॥३॥ जैसेंबनहिबसंतरित॰स
बकीकरतसंभार: तरबल्लीनिनपोषितिहि: फूलतफलतअपा
र॥४॥ सोहीतुमककरियोभरत: पुरपरहासपुनीत: जानतहोर
घुबंसको: राजनीतिसबरीति॥५॥ अबनिसंभारकुअवधिलों:
तुमसबभांतिसयांन: करियेरहालोककी: पावहिसुषबकुभां
नां॥६॥ लोकबेदअरुकाललषि: जोबरतेभुवपाल॰ ताकेबुधि
प्रतापबल॰ जातबिलयषलजाल॥७॥ कबि रु॥ चेटिभरतप्र
भुसंभुधन: बिदाकरैरघुबीर॰ कंपकूरयअतितनपुलक: सा
तिकभावसरीर:॥ कबि.॥ बिछुरतबीरबिदेह: प्रेमजुतनयपर
सपर: पुनिपुनिदंडप्रनाम: नियतकरतभरतनिरंतर: लयेराम
भलाइ॰ हरतलोचनजलधारा॰ देवसिधंयहप्रीतिदेषि: आनंद
अपारा: करिचलेभरतताहांपरिक्रमन: संसयमिटयोसधीरको॰
क्रमक्रमबिलोकनफिरकरत॰ कमलबदनरघुबीरको॥ माता
३॥ मांगनआगयालाते॰ रामसीयलषनसिधारे॰ बारबारलेले
बलाइ॰ गोदनिबेगरे॰ अवलोकतनहीदृगअघात॰ उरलेटितप्रे
कनि॰ मानहुबिछुरीकुअमाद: निधिपारीरंकनि॰ जुरिचितवहिं
चंदचकोरलों॰ रहिंरकटकपलरोकिहैं॰ करतारहेहिअैसीकब
हिं॰ फिरिबिधुबदनबिलोकिहैं॥११२॥ दृहा॥ आग्यामांगीरामदे
हो॰ अबादईअसीस: सबेसहारकहेकुसुर: गुरगोबिदगिरीस॰
केकईबाचाकेकेईतवरामकहं॰ बचनकहेसबिनीत॰ मयाव
समेतिलयो॰ पापछमहुसपुनीत॥१॥ नरपसुनाचतहिसन
व॰ परतिसुकाहिप्रबीन: येजोपागकबसअषिल: जनमाया
आधीन॥२॥ केकेईसूरामकहि: मातनअमरषमोहि: पुनिदै
वीमायाप्रबल॰ हेतनअपेतोहि॥४॥कबि रु॥ रामचलेम
ताहिमिलि: सीतालछमनसंग: उपजेसातिकभा ्हा उन

यदिसानिअनंग॥१॥सोरठा॥ बामदेवजाबालि, पुनिबसिष्टकौ
सिकप्रमुष: पूजेचरनपषालि, रामबिदाकीनेसुरिष॥१॥करिमनु
हारिअनेक: रामबिबिधबंदनबिहत, बचनपीयूषबिबेक: की
नीबिदाबिदेहकी॥२॥ मंत्रीसुनरमहीप: प्रीतमसषानिष्पाद
पति: सबसनमांनसमीप: पुनिजेबासीअवधिपुर॥३॥लयुदी
रथपुरलोक: सेवकरामसुजानके: सोमनमलिनससोक: बिछु
रतनयेब्याकुलबिरहा॥४॥निरजरबजेनिसांन: उसहचलेच
तुरंगदल: नगरप्रयानप्रयांन: सुनीयतनहरुजोसबद॥५॥
समसंतोषसुनार: नरतपसीजेषजो: सेनअयसतनार
बिबमचलेजुबियोगबस॥६॥ दूहा॥ चलेजथाक्रमनंग
चित: मुषतनबसनमलीन: सर्बसषायेजातसब: देवबि
मुषज्योंदीन॥१॥ बासुरचारिबितीतबस: अवधिसीमदल
आइ: नदीन्हानहिनियमजुत: संकमिनरतसुनार॥२॥पाटनि
वेसतपवरी: पूजतनरतसप्रेम: करतजथाक्रमनगतिकर:
सेवानिसिसनेम॥३॥ पुरुषप्रमानसुषनिपुहवि, सजादर
नसंवारि, सोवततामहनरतसुष: मोहबिषयमनमारि
॥४॥माता गुरमंत्रीबिमन: पत्रनकरेप्रवेस: जीवनकउगहर
तज्यों: सिरमनिबिछुरीसेस॥५॥ समझिनिबाहतसत्रुघन: तु
वरदाजुवपाल: राजकाजमंत्रीजुमिति: सबसाधतरितुसा
ल॥६॥ रीतिनरतकृतप्रेमरस: कहेसुनेनरकोइ: रामजग
तिताकेहृदय, हेतसुनिसचलहोइ॥७॥बसतबीरगिरचित्र
बन: हरषदिनहिदिनहोति: रामलषनसीयसुनलषन: जो
जीयमनमिलिजोति॥८॥ कबित॥ नरनिबसअवतंस, प्र
गटअवतारअवधिपुर: छांडितिलकजुवराज: सज्योबनवा
सकाजसुर: पिताबचनपरवांन, कस्योकृतउग्रजुकीनें: ब
रषचतुरदसजतीबेष: लीलाछ्वतलीनें: कीउअनन्तनरह
रसुकबि, रामचित्रपर्बतकरीय, /बिसतारनीतिअरुधरम,
बिधि, बिमलकितिजगबिथरीय॥१॥इतिचतुरबीसतमीअ
जोध्याकांडनामबारहटनरहरदासेनबिरचितोअजोध्याकां
डसंपूरन॥ ॥सुभमस्तु॥

२८

॥८॥ तानै नियति। जे नर ह्वै युतन जिरि बननो जिगहै ते
नबालो गुनाथ॥ ॥अरविन्दातगे राघव बन विहु
बिचरे बिबिधै कुसनि सुदर सुषकारे कौतुन नैदनैवदे॥१॥
कहिते॥ सघन सालतरुनवनु कुल विनत बिहुत पीत अंकु न पथ
उपत्रा जो निवाहु ऋषि कृपि विमंगरर विमल कनक तेबत
सात जटज्ट बिराजित जन जीव जो तिनन मुदि गति वि ॥२॥ २
घवसी नवि इ नक का नपत पनर हर सुक वि केसमानि रवि
तलिका॥ मुनि तन बा॥ एक दिवस रघुराम मुनि रिमिए ३
मितिवा पुत्त कहत सवैजो लि करत हिज दोमुधुरा करस
न कुसेवलि कुजलन पवनधि रपरि बिबिधि होसत
मताध करना गजा वनित करि रहार ह तुष्ट रा वनच्युत
षरतास मानि वक सत निहि वक त नतस वथे तरुन घिरनवि
न हिततजनयत॥ जह पत हिरि का ल तजन पुरानग्र
हाउव रेणमूजन तनघिर उष्ठलीनत हानरत मकरक
रयरस कारवत पिक न सवनकर बनान सतलतान विसत
जनक छी लिलेवते अल्पा हनी रपद न तल्ग नाद जीवन कल
हा तजव कतन तसे इनत्युबीरकई न तिरा हितु किकहात
सतकविकतवा॥ रिमसम जल हुवा नराहि हड्डुक कात विर
कृत विमल हरकहे कबन ज तीवु लैज दकरे॥ अदे गन
गोन नन॥ चित्रकूट तेरामुनि वति जनि तपोवनवासै सेत
सिरी महत तनवृति तिदेसी बतकुनार॥ कोनिते मसनान
कम तनधरम धुरधीर नाविदयन विहुत बिल विनय ही
कुरतनी र॥३॥ छिप धरी॥ कुनतो या पहुत बसी वचन रते
वनार सुमित कति तुवार सोहसित पतीजरा जगत नग
से लजरजरिक्रोग कपन कर जवत क बिनत कार वयलु
लतेजपवि वृतपार सीता हिवगारउरलरी तित उपदेश कैसी
यकत अनते अनुसूया दी जैगरूप अविकारवन जोत
लसतग सविरीप नानन गसवकारा बदमात विहत
तनवबिहार अतिथि बिबिधि कीनेत्रनिक बनवासबि

तनेजन बिबेक: कछुकालरांमइहाबासकीन:पुन्चिलतमा
गिस्ताम्पाप्रबीन:॥ कबिरुबाच॥ दन॥ अत्रिबिलोकतरामछ
बि:नेकग्रयातननैन: करुनोग्रनुग्रसतुतिकरत: बिबिधस
मजुतबैन॥ छंद अरधनाराज॥ अत्रिउबाच॥ सतोत्र॥ नमा
मिदिब्यदेवतं:कृपालसीलसंभतं: बदनग्रोपबासयं: प्रनाकं
रंप्रकासयं: बिराजितंबिरुथयं॥ अलकंस्तंगजूथयं॥ सदिप्युनं
नसोहये॥ तिबारिजंबमोहये॥ सबंकनेरइस्पामयं॥ जुकामसकं
कामयं॥ रदंछदंसुरंगये॥ सुबज्रबिंबसंगये॥ प्रसनमुष
पंकजं॥ सहासबासनासजं॥ त्रिरेषकंबुग्रीवयं॥ सुसरबस
नसीवये॥ नुजाग्रजानयंनजं॥ जुपांनिरस्तपंकजं॥ उरमणउ
हासयं॥ सप्रेमभावभासयं॥ जुनाभिसेभसजुरी॥ समथ्पदेस
केसरी॥ नितंबभारभारयं॥ बिमोहनंबिभारयं॥ पदंअनेजु
पंजरं॥ सरण्पदंसुरासुरं॥ सदेवसंससीसयं॥ जुदीपमा
निरीसये॥ सुरसुरीनिवासयं॥ समूलपापनासयं॥ श्रीयासुचं
२१. दनसजं॥ पलोरपांनिपंकजं॥ चरित्रकृतचारिनं॥ बनंघनंबि
हारिनं॥ सप्रेमचंद्रसेषरं॥ ग्रम्पनक्षेप्रतंउरं॥ अराधमा
नजेयजं॥ सपूजिपादपंकजं॥ सरीरस्यामसुंदरं॥ पयोदनील
निरस्तरं॥ बिलासबनबासनं॥ प्रभाछटाप्रकासनं॥ जटामुकट
धारिनं॥ बनेबनेबिहारिनं॥ सचापबामपांणिये॥ बिसेषस
बिबानये॥ कटितटेनिषंगयं॥ सत्रोपमांग्रनंगयं॥ त्रिबिक्रमं
त्रिलोकदं॥ त्रिकालबंदितपदं॥ नवेसचापभंजनं॥ बिदेहबंसरं
जनं॥ सुरेसुरेससेवितं॥ जरातकेग्रजेवतं॥ रछाकबंसत्रे
पमं॥ सुरासुरनकेसमं॥ हरेअनंतबिग्रहं॥ नमामिग्रपद
पहं॥ सरण्पदंसुषाकरं॥ अमोघसिधिग्राकरं॥ ससेषसकत
सोननं॥ सुरारिबृंदछेदनं॥ लमेवपादपंकजं॥ नमामिदेव
सानुजं॥ सदासपुन्पसंगमं॥ निदाननुधिनैगमं॥ भजतिन्हत
भावनं॥ अपावनंसपावनं॥ रसेजुरूपरायवं॥ अनीततेग्रथ
रणवं॥ हितंजुरामगावही॥ सपुन्यलोकपावही॥ प्रसीदराम
मेप्रभो॥ जुबिस्वभावनंबिभो॥ दिनेसबंसभासको॥ भवाय

कारनासकं॥सुरदुहू बिनासनं॥अनाथनाथनासनं॥कलिकसु
यकारकं॥अकालमृत्युहारकं॥नवेसनाथचजनं॥सुसंतसाध
सजनं॥नमामिदेवनायकं॥ सजेअमोघसायकं॥ प्रसीदजान
कीपते॥सुसेषसंगसेविते॥ नमो नमो नराधिपं॥प्रसनकत्व
पपारपं॥असीरसिंधुजापती॥नयापहारस्रूपती॥कुजोनिकृष्ट
कापनं॥थिरंससाथथापनं॥नमेवदुष्टतर्जनं॥अमोघपुनिअ
र्जनं॥त्वमेवतापतापदं॥अथरमनासअपदं॥नमामिनित्तनि
सचलं॥अनादिसियअमलं॥नमामिकरमकारणं॥रसाविनाराह
रणं॥नमामिलोकनायकं॥सचापपानिसायकं॥नमामिविस्व
नासकं॥नमामिदुष्टनासकं॥नमामिदीनवछलं॥कृपानिधानके
वलं॥नमामिमूलमायकं॥दुत्र नमोषदायकं॥नमामिलितलूप
ती॥महानुनावमेयती॥सतोत्रअत्रिनाषितं॥सुष्टिथवेदसाषि
तं॥निकामपागनितयं॥बिसुधविनकृतयं॥नवैतिनगतिनज
नं॥सजरथलोकसाजनं॥ कविरुवाच॥दूहा॥किनिकहू
नरहरसुकवि: करमनासगतिकाज: जथासकतिकृतजानि
है· रामगरीबनिवाज॥१॥ मेअसकथतासेषरन:रामसरन
साधार: मोकृतघातकपतितकहं थहैजुएकअधार॥२॥
अथ आयबधनं॥दूहा॥कविरु॥ चलेरंकारनकहं॥
सानुजरामससीत:जोजनसारथरकजहां:निरभोबाघिअनी
ता॥१॥छंदपधरी॥सपथमांक आधनाभासपाप दैषेरकराक
समहाहापु:बिपरीतरूपचषअरूनबांन:विसतारअगनिक
निकाबिधांन: जिह्वाकरालमुषअनलज्वाल:दंतसदिग्घ
दंताकुदाल:बेरूपआग्रचरमाबुसांन:उवलारसरवतदी
नयान:स्रुतिकारदुष्टमतिअगअंग:अथमभयत्रिसूलत्रामत
उतंग:सूलयअष्टसिंघनिसधीर:सवमनुजसूलपेष्येस
रीर:निसचंरनिसंकभृतघोरनाद:अबमुधासकंपथिरचरवि
षाद: आसुरकहिरेतुमकोनआहि:जतिबेषप्रगटसंगतरणि
जाहि: बनितानुसंगयहतपबिरोध:पपीकिहिकीनोतवु
प्रबोध॥कविरु॥ आकरषिसीयहिलेगोअकास:नहा

जाइदुष्टबोलौअत्रास: कौननममआयेतुमसकौन: नरत्तरुकनी
सचरसुन्यौहैन: तपसाधमनागकुकेसत्रास: त्रीयलईछौनिन
हीहैंउतास: सोसुनतमात्रलछमनसमूल: सरमारिकस्यो।सतव
रस्स्त: सररामअसुरबेध्योसरीर: न्रवगिस्योबमतमुषरुधिर
नीर।।श्रीरामबाचा।।इ(।)।ताकहेपूछेरामतब: रेतूकोनिरला
ज: कृतयनप्रेस्योकालकौ: काहेमस्योअकाज।१।।कबि रुवाच।।
छंद पधरी।।यहसुनतबदनरघुबरबिलोकि: रादूसतहांबु
ल्योतिसहिरोकि।।अथ अ।इकसमयसुषहिबिलसतसधीर:
बेअबनसत्ताम्मिलिजदुबीर: गंधरबसकिंनरगानकार: अप
छराअछबिसोअपार: गधरबकुतोकुंकरतगान: तिहिसमय
बिबिधिसुररागतान: रजातहांनाटकसज्योरंग: अनेकनावछबि
अंगअंग: तिहिरूपदेखिममचलेचेत: कुवदसाअंननतवतम्म
हेत: कृतलषिकुबेरचितनेबिकार: बेषमआपदीयतिहीबा
र।।कुबेरा।।जातुष्टहोहिराक्षसदुसाधि: अनरथअनीतिक
रकउपाधि: परहिंससरबनतहांसपाप: प्रतिकूलधनददीनौ
सराप।।अथ अ।कैदीनकरोमैंनोरिहाथ: करबआपमुक
तकैसनाथ।।कुबेरा।।रघुबंससहोइरामावतार: बसकार
नकरिहैबनबिहार: बंधनबिमुक्तहतरामबान: पुनिज
हजोनिलहिहोसमान।।अथ अ।दिगपतिकुबेरममघु
रेदेह: सुतत्रीयाबंधुमिरिगोसनेह: सतक्रूदानामजननीत्र
साथ: बसिउदरतासकूनयोअथ: यहकारनजोनिपिसाच
पाइ: अदाबधिइहिबन: नस्योआर।।गाथा।।स्वयंबिस्नुर
मासीता: सेषलछमनसजुता: संषचक्रवताराय: सेवितनर
नसानुजा।१।।छंद पधरी।।करजोरिअसुरतबप्रनितकीन: प्र
तुदेवब्रह्ममरहकप्रबीन: करिदेहमनुजतुमधरमकाज
बनबिहरतहो।पितुबचनआज: तुवनारउतारनचलेज
न: राघवमैंचीन्हेजनीरूप: आरमणअरथयहकीयाबि
चार: तगवंतहरननुमरूमितार: हतप्रानतयोअबदेव
हाथ: निजपदमैंपायोदयानाथ।।कबिरु।।दरसनत्र

थीनन मतु थ्रौ देह: आकास बोनित बनरी येह ।। देवि नावा दुष
देवदोषी उसाधि: अखिलेस हस्ते टरि नित उपाधि ।। दूहा ।। आर
म्लग्र नर्थ्यहु रम हिमाल अजेव: सेंमतु मास्थायेकसर:
उ लिबाजे देव ।।१।। अथ सरभंग आश्रमागमन ।। कवित्त
पावन ते जोजन अरथ: आऐ जब रघुराइ: तहां आश्रम सरभ
गको: देष्यो अति सुषदाइ ।। छंद पधरी ।। सरभंग आरसन
सुषसकाम: राजीवनयन कृतदरस राम: पनकरि नगति प्रजात
कार: आसन बनन्नो जनदीयअसार: सरभंग देरि रघुबीर संग
पुनि कहत नये पूरब प्रसंग ।१। सरभंग उ। आगे मो बोधि मुषसु
नीयेह: देवाधिदेव धरि मनुज देह: त्रेता मह हौ रामावतार: च
हु कानन दंडक बन बिहार: अथ बधि नैऋत दरस आस: को
नन थह सेथो सावकास: तप तुरूहरानये जुगबितीत: प्रभु
नयो आन दरस न पुनीत: सब नये सफल साधनस मूल: क
मलानन देषो सानकूल: गहराउ छन कय हरम्पर्गउ: जोलो
दयाल तव लोक जाउ: अघा बधि मनत पसिधऐउ: दिए पुन
समर षेतु भहि देव: सनुज बिलोकि बामागसीत: अखिलेस
उकत ह्वै रूअमीत: सर पुंज मांऊ सो बैगि सिध: सीय राम रू
पउर धरि प्रसिध: जोग बल प्रगटि तन अनल ज्वाल: तिहिं न
पीन्त सनमुनि तात काल: उरवादल स्याम ललन दयाल: ब
नि लोचन कमला लारत बिसाल: जर जूर मुकर बन वीरवास:
कटितट निषंग कसि सावकास: जुतबाम पानि धनुजुक तजेव:
दहन कर त्रामित बिसष देव: धर रूप धारि अंतर अकाम: धरि
दिव्य देह गो दिव्य धाम: सरभंग जस्यो जोगी सनेम: प्रतु जोति
मिल्यो सो सहत प्रेम ।। कवित्त रूप घनाक्षरी ।। स्वेत छत्र हय स्वेत
सों: सनमुष आस्तुरे सः रथारोह सरभंग गो: बरषत पुहुप
बिसेष ।।२।। अथ मुनि बृंद समागम ।। श्रीरामराहस बध
प्रतंग्य ।। कवित्त ।। दूहा ।। सरभंगाश्रमतें गमन: कीनो रा
मसकाज: दंडकवनवासी मिले: सबै रिषीससमाज ।।१।। बि
हरत राम सवाम बन: पेषे मनुज कपाल: सेतवरन नगहीन हो
सघन: क्रूराक्रूत कंकाल ।।२।। श्रीरामोवाच ।। छंद पधरी ।।

हैं असथि पुंजयेक वनहेत : सविसेष कहऊं छिनकमसमेत : किहि
हेतकवनयेकवनकाज : सो कहऊ हे लतु मतिअसमाज ।। द्विजवा(च)।।
करजो रिद्विजनन लवक हिसत्रास : रिषअग्र सथिपुंज इथीत्रक
स : राछस निसिषेति नग्रससिथरा जि : सोज तजेउ बरेसा जिन
जि ।। १ ।। कवित्त ।। सो मुनिसु लिरघुबीरसब : उस्टाचारु
रत : तास देषि द्विजदीनको : अविरज लए अनंत ।।१।। श्रीरामे।।
इराकस्योपनदेस लय : निगनिराम विसेष : इक्कबनराछ
सदुसह : सबहतिऊं निसेष ।।२।। अथ पंचा सरोवर आग
मन ।। कवित्त ।। चा ।। छं ।। सरलेगा श्रमते चले : वनगत
आनि विसेषि : मनुज सीता लषन हां : दिप्प सरोवर देषि
।।१।। अतिप्रसन्न जो जलभयुत : सरवर सुषद सुदार : जलत्र
थाहकु त्रीयजलज : मन मधुप गुंजार ।।२।। महाप्रजाद्दसछ्वि
लिलि : अरु फिलत चकुऊं ओर : बसत विविधि बिहंगवर : न
चत मन मयोर ।।३।। तब कीनो विश्राम तहां : पथश्रमित सुष
पाइ : सुनि इंगन्नपरसबद : रीऊर हे रघुराइ ।।४।। श्रीरामे
वाच ।। महासघनउ घ्रानसह : कछु नूपर झंकार : कहतराम
सोधीक हां : बिसमय चित बिचार ।।७।। रिषबाच ।। छंदपधरी ।।
रिष कहे सुनऊं कोसलनरेस : इहां मंद किरनि नाम मुनेस : ति
हितप्यो इहांबसिउग्रतप : इकअयुतवरषसहि कष्टआप : सो
सुन्यो इन्द्र मुनितप विसेष : इन्द्रासनके पलटेो असेष : अपछरा
आइतप थलअग्र पात : वन फूलि बिबिधि चलि त्रिबिधि बात : नो
मनिकरा छिकरि हावभाव : सरमारिकरे मनमथ सहाउ : साय
कअनेगुनिकसे दुसार : बसताप सनो मनमथ बिकार : सुरर
जकाज सुररमनि संग : नो मंद किरनि मुनिधरम नंग : ते रहत
इहां मुनि श्राप त्रास : मुनिकर मनिस्पनारक प्रकास ।।८।। पं
च अपछरा ते अगार : रहत समीप रिवेस : सुरनूपर झंकार सुन
सुनियत अवधि नरेस ।।१।। अथ सुतीछन आश्रमआगम
न ।। कवित्त ।। बिसद सरोवर सघनबन : बसे कछुक रघुबी
र : तापसब षसबरे छुतब : चले धर मधुर धीर ।।१।। रिषअग्र
सतिको सिष्य इक : तासु सुतीछन नाम : ताके वन आश्रम बि

बे॰ आयेश्रीराम॥ छंद दोधक॥ क्रमआतिथ्यसुतीछनकीने
नवपत्रबदरनआसनदीनें॰ कंदमूलफलस्वादसुहाये॰ बनते
जनरीनैंमनभाये॰ बिधिवतजगतिसुतीछनकीनी॰ रामकृप
लमोनिसबलीनी॰ २ होकछुकदिनरहिरघुराई॰ कीनेगमनमु
दितदोउभाई॰ संगसुतीछनचलेरिषीसा॰ कछुदिनगंवनेमगहि
महीसा॥ अथअगस्तिआश्रमआगम॥ मुनिअगस्तिकेआ
श्रमआए॰ जाइसुतीछनगुरहिसुनाए॰ मुनिअगस्तितबसुन
तुभआए॰ देषिरामनयनजलछाए॰ मिलेपरसपरसुषमनमा
ने॰ अतिहितरामसुआश्रमआने॰ कीनीपूजाबिबिधप्रकारा
जोकछुबेदबिहितबिवहारा॰ बनतेजनफलमूलअमृतव
र॰ प्रभुहिसमरपनकरेजगतिपर॰ बिधिबिधिकहतसतोत्र
बनाई॰ जबप्रसन्नहोतदोउभाई॥ श्रीराम॥ बोलेहसिमु
दितदोऊभाई॰ मुनिअगस्तिसोबातचलाई॰ त्रिकालग्यतुम
समहितस्वामी॰ निश्चलकरमनिसहितबृतनामी॰ जाकारन
हमहैबनआए॰ सोतुमसबजानतरिषराये॰ तुमसोकछु
रावनताते॰ बिसतरजुनकहियेकाबातें॰ बिहतमंत्रसोईकह
ऊबिसेषा॰ सुरद्रोहीतिहिकरोअसेषा॥७॥ अगस्तिउतव
अगस्तिमुनिबातचलाई॰ पुराप्रसंगसुनऊरघुराई॰ आधि
लअनादिबिष्णुतुमआगे॰ षीरसमुद्रसयनकरिजागे॰ बिधि
तुमसोंन्रपनीतिबषानी॰ तुमअनंतकरुनाउरआनी॰ दये
अनयतुमन्रमिहिदेवा॰ अबनिसाचरहरनअजेवा॰ पुनि
तुमबिधिहिदयोबरपावन॰ नासकरोराछसकुलरावन॰
त्रतुबृतलीनोसुन्मोपुलंदर॰ घनउछवदेवनिकीयुघरघर॰ जा
मोइन्द्ररहेप्रभुआवन॰ मुहिसौपेआयुधमनभावन॰ सोअ
बलेसुरकाजसवारऊ॰ महादुष्टरावनषलमारऊ॰ यहनिष
गअक्षयसमसारक॰ इन्द्रचापयहतुमहीलाइक॰ षड्गसति
बरतनमयसुंदर॰ कवचअतेदिमानरताकर॥ कबित्त॥ दि
आयुधकुंनजमुनिदीनें॰ रामलषनबंदनकरिलीने॥ अग
सति ३॥ दत॥ पुनिअगस्तिरघुबीरपति॰ कहोमंत्रऐकंत॰
इककारनमुनियेअसुर॰ सीदतहैजिहिसंत॥११॥ आतापीना

मांअसुर। बातापीलयुत्रात: मायारचतअनेकमिलि: ओजियोजिमु
निघात॥४॥ रादसतेअजरूपकरि: मुनिनोजनक्तेमूल: पेटिफारि
सोनिकसिपुनि: सबहीषातसमूल॥५॥ कबिरुवाच॥ छंदपधरी॥
कुंभजयहरामहिअगटकीन। निरदईनिसाचरक्रतनवीन: आतापी
तापसवेषआइ: नेजनहितन्योसोमुनिसुताइ: बनितहंआतापी
छागवेष: बिधिजुकलमांसरांधेविसेष। बसकपररम्पतपथ
लबनाइ: बऊस्योंअगसतिलीनोंबुलाइ: कुंभजसोंआमिषजुग
तकीन: बातापीदारुनहाकरीन: बोले[illegible]आतापीउदरबीच॥
मुनिलिष्योनिसाचरं: मुनिवरजगरानलतपअमाप। उदरगतनस
मन्नोअसुरआप: सोदुष्टकरमसुनिरामदेव: कीनेंअसेअआसुरअ
जेव। इहिन्नांतिअजेअआपतिअनंत: हल्लनबातापीकस्योअंत॥
श्रीरामउवाच॥ दूहा॥ सानुजरामअगसतिसों: पूछेमंत्रप्रकास: सु
परबतावऊसोमेरसो: निसवलकरहिनिवास॥१॥ छंददेअष
दी॥ अगसतिबाच॥ कुंभजमंत्ररामसोंकीनें: दयेहनसोंआयुधदी
नें। पंचबटीजुगजोजनपावन: निकटगोतमीतटमनभावन: का
लछेपनातहांबसिकीजे। हूतसमानदेवनिसुषदीजे॥ कबिरु
वाच॥ दूहा॥ आग्यामांगिअगसतिपंह: अनुजनबचलेप्रकास।
अमरदेवअनेंसअति: ढुंढुभिबजेअकास॥१॥ कछुदिनपछ
जुमासकछु: अयनबरषकछुबास: ऐकादसबीतेबरष: प्र
चरतिबननिप्रकास॥२॥ पावनकस्योप्रवेसअनु। महादंडकब
नमांऊ। तहांबसेनिसंकतब। सानुजआगमसांऊ॥३॥ अथ
श्रीधजटायुमिलन॥ कबिरुवाच॥ सोरठा॥ कीनोंप्रातप्रया
न: तिहिथलतेरघुबीरतब: सीतानाथसुजान: बिबिधिबिलोक
तसघनबन॥१॥ गाथा॥ ज्योंजीवेसरुजीवं मिलिजुगमअनाग
चलिमाया। रामलषनबेदेही: तिहिछबिजातगहनबनतापस
॥दूहा॥ दहांबिलोक्योग्रीधइक: दारुनदीरघदेह: कहोरामसों
मित्रकहं: हैकोउरासयेह॥१॥ परबतऊपरपंषसो: बपुदे
ष्योबिसतार: सानुजरामसंभारितहां: करेधनुषटंकार॥
॥२॥ छंदपधरी॥ ज्याघातदुसहसुनिकेंजटायु: यहजांन्योंपूर
ननयेआयु॥ जटायु॥ नहीराक्षसमैंराजाधिराज: अक्ता

रसफलनोदरसत्राज॰ विसतारबिस्वब्रह्मा बिष्यातः जोनऊ
मरीचमुनिब्रह्मजात॰ तिह्नियोपुत्रकसिपप्रजाप॰ उपराजिच
राचरजाहिंआप॰ बिनतातरीताके धरमबांम॰ निजपुत्रअरुणन
येगरुड़नाम॰ अरनकेतयेहमपुत्रआंनि॰ जगबिदितअधदेवली
जोनि॰ अतितरुनपंषजबअंगआर॰ सीषतउडांन हमकुलसुना
र॰ परनातउदितरेबापतंग॰ संपातिबडोकंअनुजसंग॰ उन
मांनिमांसहमअसनआस॰ अतिदरपगयेउडिकैंअकास॰ रवि
किरनितापहमजरतराम॰ संपातिनयोऊपरसनाम॰ संपा
तिगिरयोकऊलबिनसोर॰ हमत्रातातबहि बिजोगहार॰ जी
रनजरायुमुहिनामजानि॰ अनुराबिलेऊसिरधरऊपानि॥
कबि रुवाच॥ सोधीधसघादसरथनरेस॰ बेचातहरदरसाषगे
स॰ तवदयोअनयरघुबीरतास॰ बनरहऊग्रीधइहानिकटबा
स॥ अथपंचबटीआगमन॥ दूहा॥ बिहरतआयेपंचबट॰
बनबनश्रीरघुबीर॰ कांममन ऊंचेदेहकरि॰ संगरतिप्रीयास
धीर॥१॥ पंचबटीतटगोतमी॰ आयेरामअनीत॰ अनुसास
नकारनअनुज॰ पतनीसंगपुनीत॥२॥ गंगाउतरतटसघन॰
मिलितरलतातमाल॰ बुधिबंतलछमनबिमल॰ सुनगरची
त्रिनसाल॥३॥ परनकुटीसुंदरसुषद॰ दिब्यबनारीदार॰ सीता
रामसुजांनतहां॰ बसेमुदितमनहार॥४॥ इकसमयअबिले
सहहां॰ सोदरलछमनसंग॰ करतसुचरचाधरमकी॰ आपुनमांऊअ
नंग॥५॥ कबित॥ इहाबितेत्रयमास॰ बसतसुषपंचबटीबन॰
इकसमयऐकांत॰ रामसीतासमलषमन॰ बिस्वनिरूपणब्रह्मजी
व॰ बिग्यांनग्यांनबर॰ बिसदबिस्नुमायाबिलास॰ पुनिभगतिमुक
तिपर॰ बिद्याअबिद्याप्रतिमांबिबिधि॰ सोसुनिममजीयहोइसुष॰
सोमित्रकह्योरघुनाथसों॰ अगरबतावऊपरपुरुष॥१॥ जोरजी
ईकह्योअजेव॰ प्रसनसोमित्रप्रबीनों॰ सोइसोइउतरसमाधांन॰ करुणा
निधिकीनों॰ कहेलषनबंदनअनेक॰ उरग्यांनउपजीय॰ बिह्नबिधां
नबिसेष॰ स्यांमसेवारतिसजीय॰ मनहरिअग्यांनअनिमांनमति॰ उ
चितरहसिजुबुझयो॥ हसतांमलज्योंजीयहितआहित॰ सबेतलतहां
सुझयो॥२॥ अथ श्रीनारदप नहि नाई मुनि॰ आप प्रसंग॥ क

।पि संबोच॥ दोहा॥ इकसमययेकौतथल: बेगेश्रीरघुराम: बामअंगसी
तबनी· मांनकुवनिरतिकाम॥१॥ त्रिकालग्परघुनाथतहां· जानि
नवष्यप्रस्ताव: कारननारदश्रापकौ· सीतहिकहतसु नाव॥२॥
छंदपधरी॥ इथीसुत्रमतनारदरिषीप: इकदिवसआइहिमगिरस
मीप· सुनहे बिहरीतहांअतिबिसाल: तरलताबिपुलसंकुलतम
ल: सुरसुरीनिकटतरमुनिसंग: तरलताकुसमगुंजारभ्रंग: मनमा
नितहांनारदमहंत: तिहिंमेंरबैगितपकतुरंत: समन्चितउचितआ
सनसुसाधि· धरिब्रह्मध्यानलागीसमाधि: नज्ञानप्पासन्नयछुधा
नास: तपउग्रनयोश्रनदेहत्रास: मुनिनारदतपसातवबिसेस: सि
घासनमेलनलगिसुरेस· मुनिसाधतजोतपसाश्रमाप: इंद्रपदलेह
मतछीनिआप: संकलपबिकलपासुनासीर: उपजेचिततातेंअति
अधीर· मनमथबोलितबदयोमान: उछकसोरइअपनोकिरो
न: संक्रम्योमदनतिनराजसंग· तमचितकरनमुनिध्यानभंग: सजिच
ल्योसेनमनमथसधीर: बिष्यातबिजतत्रैलोकबीर· संगहिबसं
त लीनेससार अतिदरपमदनहिमवंतआइ: बनफूलिबिबिधिपल्ल
वबिथार: गुंजारमधुपपरिभ्रमतपुकार: बहिसीतमंदसोगधबात: ब
सुकामजंतजलथलबिख्यात: सुररमनिरचितनाटकसगांन: बि
सतारबिबिधिबाजितबिधांन: कामरूपपंचअनेककीन: मनक्त
योनहिंनारदमलीन: कछुलग्योनाहिंबलमकरकेत: सोरलो
हारिपरिगहसमेत: मुनित्रासमहानयमदनमानि: आधीननयो
रिषचरनआनि: करिबिनयसुनारदबिदाकीन: हगछोडिकाम
गयोगरवहीन· वृतनयोजबैपुरनबिसेस: सिथपाइउगेनार
हरिबेस: कृतसुजससुन्योआपनोकान: मनमथननयोजिहि
नेगमांन: सिवसनाबैगिसुरगनसमाज: जहांआयेनारदरिषिन
राज: अहमितिअतिबाढीजितअनंग· पुनिकहतनयेसोइंद्रस
ग: आपनीकितिमुषकहीआप· ।बिसमोहरिषाहिमेरवबियाप·
श्रीसिव बाच॥ सिवकहेनारदहिजुतसनेह· अतिगरसुनक
ममंत्रयेह: सबबिधिसमर्थतुमजोगसिथ· पूरनप्रस्तावत्रयपु
रप्रसिथ: इहिंजातिनकहिबोकउआंन: समदिष्टसदातुमहोस
यांन: करियेदुरावजोकहैकोइ· हरिसोनकउयहप्रगटहोइ: बि
सुजोसुनैयहकउबात: तबश्रीयतिहारोनहिनतात॥ कबित
॥दोहा॥ मदनदहनउपदेसमन: नारदमासोनाहि: ।बिधिकृत

श्रंकगुनानबिधि: जथाजितनऊनताहि॥१॥ श्रटनकरतनारदश्रव
नि: शुकरबीनसनाद: हरिगुनगावतहरषजुत:॥ बर्जितिबिषयबि
ष्याद॥२॥ आयेईछाआपनी: सुषहीनारदसंत: जहाबिराजितबिस
जित। श्रीयासहलश्रंकित॥ श्रीभगवानो॥ करिबंदनरिषराजकहं: प्र
जावरनपषारि: दीनेबकुतेदिनहरस: मुनिसोंकसेमुरारि॥ छंद
पधरी॥ बैगरिपरसपरकतबात: बिसेसरनारदसोंबिष्यात॥ ना
रद॥ सुषपासकहतनारदसुनाद: जबबेरेहमहिमवंतजाइ: तिहि
गेरतप्पेलेउग्रतप: आरंभकरिअयोमदनआप। तिहिदुष्टकरेबहु
तेचरित्र। मिलिमुनिसहायरितुराजमित्र: अनेककरीतिहिफलउपा
धि: ममछुटीनहितदपिसमाधि: नहीचुक्योध्यानमेरोनिदान
सिसिगयोनयोमनमथबिसान॥ कबित्त॥ ऐसोकोजननीज
मोग्राहि: जगअहंकारब्यापैनजाहि: कृतमदनचरितनारद
प्रकास: त्रंबकबकुवरजेकुनेतास। अतिअहमितिछायोचित
अपान। मुनिनारदबऊरेमोदमानि। जगदीसततबेमायाअजीत।
नवतमहेतप्रेरीअजीत॥ दहा॥ मायारूपीनगरतिहि। मा
यारमोरसाल। जोजनसतबिसतारजिहि: बागतडागबिसा
ल॥१॥ सबसंमृध्यसंजुतसुभग: नगरबसतनरनारि: करमप
रायनधरमधुर: मैनबरनरहिचारि॥२॥ सबसुषभाजननग
रसुभ: सोहरिपुरहिसमान: नीतिनिपुनतिहिपुरनृपति: रा
जासीलनिधान॥३॥ नृपतिहिकंन्यासीलनिधि: बहुलछमी
अवतार: ताहिनिभाहेअवरकोउ। ऐकबिनाकरतार॥४॥ छं
दछेअरी॥ इहिपुरतबनारदमुनिआये: भ्रमतस्वइछाभूमि
गुहाये: सबपुरेसुसमबिनवबिलोकी: तहामनुसोनाव
सतत्रिलोकी। अवनिपग्रहनारदमुनिआये: सीलनिधानन्र
पतिउगिधाये: रिषिहिजथाबिधिपूजेराजा: सबबिधिकरे
प्रणामसमाजा: इहांऐकांतबैगिन्रपनारद: बातेकरतसुबुधि
बिसारद: न्रपकंन्यासुसीलनिधिनामा: बिस्वमोहणीबिसुकी
बामा: न्रपपुत्रीतहांनिकरबुलाई: दुहितालेनारदहिदिषाई
राजासीलनिधिबाचा॥ तुमत्रिकालदरसीरिषराया: देषकुया
लछनकरिदया॥ कबित्त॥ ताकीकररेषामुनिदेषी: बिकलन
यो॥ द्विजरूपबिसेषी। जेगुनसीलकबरिकेजानें। नारदतेनृप
सोंनबषानें॥ राजोबाच॥ सीलनिधानकसोतबराजा। हम

महहिसुतास्वयंबरसाज॥नारदउवाच॥नारदकहेसुरपननिहारी
रचेउस्वयंबरबेगकुमारी॥कबिरुवाच॥पुनिनारदगेश्रापापाछी
रलेसीलनिधिछबिहिलुनाई: बाजितनृपतिद्वारघनबाजे:की
यश्रारंनस्वयंबरकाजे: न्योतिन्योत्रिभुवनरूपबुलाये: छत्राबना
ईमंडपछाये: बिबिधिबितानमंचबिसतारे: जथाजोगिसनार
संवारे: न्त्रमतरिषीसबिकलचितनारी: मनमेंबसिरहीराज
कुमारी॥नारदउवाच॥नयोबिवसमुनिचिंतान्नारी: किहि
बिधिपाऊराजकुमारी: दिनथोरेतपकरतदुरंतर: बनेनजत
नयहोकहिमुनिबर: श्रोरउपायसुगमइकश्राही: तातेश्रबेब
नाऊताही: जाचोरूपबिस्नुकोजाई: रूपसुताजिहिबरेलुभा
ई: कालबिषमरहकककरुनामय: सदानयेश्रातुरकहंश्रतिस
यः॥कबिरु॥ यहबिचारिहरिरूपधारिउर: श्रटबीबिकरन्नमत
मुनिश्रातुर: बिरतिबिसारिबिकलनयेमुनिवर: संचरेश्रंगश्रंग
मनमथसर: चितश्रतिहीश्रातुररिझचीन्हा: दीनदयालदरसत
बदीन्हा: नारदन्नमतमिलेनारायन: परमपुरुषजेजगतपराय
न॥नारद॥नारदहरिसोंकीननिहोरा: ममप्रभुकरउकाज
इकमोरा॥श्री हरि॥ कहिहरितबेकहोमुनिकारन: महाम
नोरथजोईधारयोमन॥नारद उ॥सीलनिधानन्रपतिकीकंना
नामसीलनिधिरूपसधंन्या: ताकोपितास्वयंबरमांड्यो: मेंवह
नगरनिकरहैछांड्यो: देवरूपश्रपनोमोहिदीजे: कारनकाज
सफलसबकीजे: रमारूपवहरूपरसाला: मेरेहीउरमेलेहै
बरमाला: नामनिछांडिसबेत्रिभुवनन्रपति: मोहीबरेयहेउप
जेमति॥श्रीनगवानो॥ हसिबोलेहरिश्रारतिहरिऊ: त
वहितहोइसुपेसबंकरिऊ॥कबिरुवाच॥ धरनीधरनयेश्रं
तरध्यानां: मुनिनारदसोंहीनिसचेमाना॥श्रीनगवानो॥श्ररथी
दोषनदेखेताही: श्रागेकछुनवनश्रजुश्राही: बिस्नुसुमायाप्रब
लबिचारी: होइनइछामनबाहमारी: श्रस्योरोगजेकुपथिमगावे॥
बेदनिदेखातनिबोरावे: मुनिनेमूढनष्टवसमाया: छदमछ
डिमोहिकरबीछाया॥कबिरु॥ कृपानिधानकोतकीकेसव:
नयनंजननतारनसागरनव: न्रपतिस्वयंबररचिरतलीनें:

जथप्रकारसुक्रमजुलकीने: अखिलनरेसअवनिकेआये: बिह
नजेगमंचनिबैगये॰ धरनीधरमानुषतनधारी: महामंचतह
बैठिदुखारी: देवसमीपतबैमुनिनारद: बैगे हरषतबुधिबिस
रद: बिकसहिकूलहिंछबिहिंबदवहिं॰ बिछुसुदेविमनहिंसुस
कावहिं: उकसिउकसिदेषततिहिआगम: नामनिबसीसुमन
छयोत्रम: इहसीलनिधिकंमांआर्ई: क्षिमंरूपतनवसन
बनाई! रूपअलोकिकंकरवरमाला: बकबिलोकनिनयन
बिसाला॰ कंन्यासोनारदअवलोकी॰ रिषकीमनसारहैनरे
की॰ उकसिउकसिबैगहिंअंसोही! मुनिकेअतिअहमितिमं
नमांही: उपजोरूपगरंवनारदअति: परमसरूपदयोमोहि
श्रीपति: रिबकेनिसचंयरूपरसाला॰ बरिहैसबनिछांकिमे
हिबाला: महामनोरथमुनिमनमोही॰ चितैचितैकंनालल
चांही: कपिआकृतमुखनारदकीनो॰ देवरूपअतिनिंदतदी
नों: कीसबदनमुनिजानितकोर्ई: सुतारूपतिकीदेषतसोर्ई: नार
दकेजबबालनिलख्यो: बैनठरसउरमहविसतास्यो॰ नारदबदि
रबदननिहारी: करिगलानिमुसकानिकुमारी: इतउतहेरिबिसु
दिसिआर्ई: अंगपुतिकतसातिकरसछार्ई: दीनदयालबिसुज
बदेवे: प्रेमनिधानप्रानसमपेवे: जगकरताहरताजीयजाने॰
पतिप्राचीनकवरिपहचाने: बदनबिलोकतनयनबिसाल
बिसुकंठमेलीबरमाला: जयजयजयेस्वयंबरजोसो॰ बि
धिसुतकोअनितापजुबोसो: बिसुबिजयनयोमंगलवाजे॰
सीतनिधानरूपतिकृतसाजे: जथावेदबिधिब्याहुबिचारी॰ क
स्योपांनिग्रहराजकुमारी: हरपग्येगनकेतकमनमहि: तेद्विज
रूपधरेदेषततहि: उदुगननिअदसुतयहदेषा॰ बिधिसुतमर
करबदननिसेषा॰ प्रभुकोब्याहुजयेजबपूरन: गगननिसा
नहरविदीयसुरगन: बिदासमंगलकृतबरबरनी: करीन्त्रिप
तिनिगमागमकरनी: नारदनयेनिरासखिसाने॰ मनअमरख
अतिहीमुरझाने: हृदयअधीरनयेरिखराई: गांगिऊनेमनुान
हेगमाई: बिकलनयेधावतरिषबनबन॰ उरअपानबढोत्र

महिसुतास्वयंबरसाज॥ नारद उवाच॥ नीरदकहीसुगंधनिहारी स्वरूस्वयंबरबेगकुमारी॥ कबि रुवाच॥ पुनिनारदगेआपपाङ्गी र लोसीलनिधिछबिहिलुनाई: बाजितनृपतिद्वारघनबाजेः की यआरंतस्वयंबरकाजेः सोतिसो त्रिभुवनृपबुलायेः छनाबना ईमरूपछाये, बिबिधबितानमंचबिसतारे: जथाजोगिसंनार सवारेः अमतरिषीसबिकलचितनारीः मनमेंबसिरहीराज कुमारी॥ नारद उवाच॥ नयेबिवसमुनिचिंतानारीः किहि बिधिपाऊराजकुमारीः दिनथोरेतपकरतदुरतरः बनेनजत नयहोकहिमुनिबरः औरउपारसुगमइकआहीः ताते अबेब नोऊताहीः जाचोरूपबिष्णुकोजाईः रूपसुताजिहिबरेलुना ईः कालबिषमरहककरुनामयः सदानेयेआतुरकहेअतिस यः॥ कबिरु॥ यहबिचारिहरिरूपधारिउरः अटबीबिकरअमत मुनिआतुरः बिरतिबिसारिबिकलनयेमुनिवरः सचरेअंगअंग मनमथसरः चितअतिहीआतुररिबचीन्हाः दीनदयालदरसत बदीन्हाः नारदअमतमिलेनारायनः परमपुरुषजेजगतपरायन॥ नारद॥ नारदहरिसोंकीननिहोराः ममप्रभुकरहुकाज इकमोरा॥ श्री हरि॥ कहिहरितबेकहोमुनिकारनः महाम नोरथजोईधारयोमन॥ नारद उ॥ सीलनिधानन्रपतिकीकन्या नामसीलनिधिरूपसधन्याः ताकोपितास्वयंबरमाग्यौः भैंवह नगरनिकरहैंछाग्यौः देवरूपअपनोमोहिदीजेः कारनकाज सफलसबकीजेः रमारूपवहरूपरसालाः मेरेहीउरमेल्हे बरमालाः नामनिछाकिसबेनुवन्रपतिः मोहीबरेयहेउप जेमति॥ श्रीभगवानो॥ हसिबोलेहरिआरतिहरिकुंःत वहितहोइसुपेसबंकरिहुं॥ कबिरुवाच॥ धरनीधरनयेअं तरध्यानाः मुनिनारदसोंदीनिसचैमाना॥ श्रीभगवानो॥ अरथी दोषनदेषेताहीः आगेकछुनवनम्रजुआहीः बिष्णुसुमायाप्रब लबिचारीः होइनइछामहामारीः असोरोगजोकुपाथिमगावे॥ बेदनिदेबातनिबोरावेः मुनिनेमूटजवबसमाया: छदमछ रिमोहिकरबीछाया॥ कबिरु॥ कृपानिधानकोतकीकेसव नयजनतारनसागरनवः न्रपतिस्वयंबररचिरतलीने:

जथाप्रकारसुक्रमजुतकीने: अखिलनरेसअवनिकेआये: वि
तजोगमंचनिबैगये। धरनीधरमानुषतनधारी: महामंचतह
बैठिमुरारी: देवसमीपतबैमुनिनारद: बैठे हरषतनु धिबिस
रद: बिकसाहिफूलहियबिहिबदवहिं। बिस्नुसुरे बिमनहिमुस
कावहिं: उकसिउकसिदेषततिहिआगम: नामनिबसीसुमन
छायोत्रम: इहसीलनिधिकंन्याआई: बिचमंरुपतनबसन
बनाई: रूपअनोखिकरबरमाला: बकबिलोकनिनयन
बिसाला। कंन्यासोनारदअवलोकी: रिषकीमनसारहेनरे
की। उकसिउकसिबैगहिअरसोही: मुनिकेअतिअहमितिम
नमांही: उपजोरूपगरबनारदअति: परमसरूपदयोमोहि
श्रीपति: रिषकेनिसचयरूपरसाला: बरिहैसबनिछाडिमे
हिबाला: महामनोरथमुनिमनमांही: चितैचितैकंन्यालल
चाहीं: कपिआक्रतमुषनारदकीने। देवरूपअतिनिंदतरी
नो: कीसबदनमुनिजानिनकोई: सुतानृपतिकीदेषतसोई: नार
दकोंनबबालनिहास्यौ: बैनछरसउरमहबिसतास्यो: नारदबार
रबदननिहारी: करिगलानिमुसकानिकुमारी: इतउतहेरिबिस्नु
दिसिआई: अंगपुलिकतसातिकरसछाई: दीनदयालबिस्नुज
बदेषे: प्रेमनिधानप्रानसमपेषे: जगकरताहरताजीयजाने:
पतिप्राचीनकवरिपहचाने: बदनबिलोकतनयनबिसाला
बिस्नुकंठमेलीबरमाला: जयजयजयेस्वयंबरजीत्यो: बि
धिसुतकोअभिलाषजुबीत्यो: बिस्नुबिजयजयोमंगलबाजे:
सीलनिधानन्रपतिक्रतसाजे: जथाबेदबिधिब्याहबिचारी: क
स्योपांनिग्रहराजकुमारी: हरपगयेगनकौतकमनमंह: तेद्विज
रूपधरेदेषततंह: उडुगननिअस्तुतयहदेषा: बिधिसुतमर
करबदनबिसेषा: प्रभुकोब्याहजयेजबपूरन: गगननिसां
नहरषिदीयसुरगन: बिदासमंगलक्रतबरबरनी: करीन्रिप
तिनिगमागमकरनी: नारदजयेनिरासखिसांने: मनभ्रमरष
अतिहीमुरझाने: ह्रदयअधीरजयेरिषराई: गारिग्रहनेमनुनिधि
हैगमाई: निकलजयेधावतरिषबनबन: उरअगपानबदोअ

वचनगंन : हरगन फिरत संग हरषांने : जेहि जरूप नारद जांनें : अ
गरजलाश्रय रहा मुनि पायो : आचारी संध्या हित आयो : गन वाहु
आरनि कटय हगन निउचारी : कहा नदी जो राजकुमारी : यस्मृति
ताजि रूप रसाला : मेल्ही निरगुन उर बर माला : नृप अरु जन अद
पिकु घिनाही : स्टन यह सम झी मन माही : सुनगन आपनो बदनउ
साई : जो किनीर निरष ऊ थी जोई : कछि रू छ चा : नवगन युक
हित तछ न लागे : नारद छबि हि निहारन लागे : उ षनु तरि अजव
जल मह देष्यो : बांदर को मुष आप विसेष्यो : विकृत आनन जब की
स बिलो क्यो : रोषवंत्यो उर रहत न रो क्यो : वन वन कोलत नारद
रिषवर : धरि उर ध्यान सरूप धरनि धर : प्रभु आरति बंधु प्रतिपा
लक : अखिल अविद्या मूलउ पालक : हरि नारद कहं उ षित निह
रे : प्रीया सील निधि जुत पाउ धारे : दंपति देव जबै मुनि देषे : बदो
अमित उर रोष विसेषे : विकल दसा हि लोगवत रिषबर : अति र
जरत क्रोधानल अंतर : परम पुरुष तिहि मुनि पहचाने : महरो
ष उफन मन माने ॥ नारद ॥ बोले रहांनारद विषबांनी : तगरी
यहे सदा तुम गांनी : बलि वृत निबलोत उगहि बांध्यो : सा वेऊ
सों कपट हित सांध्यो : मथत समुद्र निधारी माया : रहकि सु
रासुर साच दिषाया : नगत सेतु सब दनुज नुलाये : प्रांन त्रम
इ विषास बपाये : करनी कपट सुर निसं कीनी : लंछमी अरु सम
निआप हिलीनी : जो बिंदरू बऊ कितक गुनगांऊं : प्रभु चरित्र
नि अंतन पांऊं : महाप्रबल यह रावरी माया : नहीं मुहि बची बि
गोयन चाया : रहकि रहकि पुनि पंथ दिषावत : प्रभु कहिये
याम हक हापावत : परम स्वतंत्र न ही को उसिर पर : नावत मन
सोई करत बिस्वंनार : आपनि रंकुस करत उ पाये : सो तुम अबलोक
ऊन साथे : बिस्व रूप्यो तुम को उन बांचा : सो पर पाक ले हऊ अब सांचा :
जो बपु धरि मम काजा बिगारा : आपल हऊ सोई नर अवतारा : बिनत
कारन मोहि बिगोयो : रह्यो निरास महा दुष रोयो : तुम तिहिं बिनत
विरह बिसेषी : दुसह आप नुगत हू दुष देषी : करी कृपा मोहि कपि मु
ष कीनों : तिथि मांगत जो पाथर दीनों : ते ई कपि है हि सहाइ तिहारी
नि ह्वैत व पाव हु तुम नारी ॥ कबिरु ॥ हरि तिन माया हरकी र

सिकें बिसनवावतिजोअपबसिकें माधवप्रेरीकृतीजमाया: सोइनि
वारिनारदसमझाया: नारदमनसंभ्रमहोछायो: बिसमयमिश्रोकले
सबिहायो: पारनासतमअर्कप्रकासे: नारदउरसंभ्रमसोनासे: ना
रददेषेफेरिनिहारी: नहींतहांकमलाराजकुमारी: नारदमनतहां
नयेमलीनो: नयउपजेओकरुनारसभीनो॥ना दं ३॥ जगतरीस
प्रणितारतिभंजन ग्यानतिथानअपावहिगंजन॥ कबि रु॥ नार
द हरिचरननि सिरनायो: दीनभयोनिजदोषदिषायो॥ना दं ३॥
महअपराधछमकुसोमेरे: रिसबसकहिदुरबादघनेरे: पापमिट
वकुसोप्रभुपावन: नयउपदेसकअनयनसावन॥ कबि रु॥ बिभु
नारदहिहितपरबोधे: संतुतजनअतिओतरसोधे॥ श्री हरि उ॥
नृपाबचनतुमसत्वकेमानें: जोअपहांसअबिलअपमानें: नवउप
देसतुमहिनहीभायो: अगरयहैकरनीफलपायो: नजकुसंस्त्र
नामसत्वकेरे: तबअपराधमिटिहिगेतेरे: हरियोकहिनयअंतर
ध्यानहिं: नारदगयेकरतगुनगानहिं॥ श्री रा मो उ॥ नारदश्राप
दयोनारायन: अगरससोसोरघुकुलपरायन॥ कबित॥ सुनिसी
तयहहेत: आपनारदमुनिदीनो: कारनकरनसमर्थ: हरिअंगी
कृतकीनो: तातेअबमनुजअवतार: हमलयोनीतिहित: सोतुगईह
जनम: असहहिहैबियोगरत: सोईसमयबमोअबचितयह: अप्रय
गउनमानिये: निरधारकरउनारदबचन: जगअमोघयेजानिये
॥१॥ हितउपाययहकरउ: अनलमहराषउआतम: वहतवपीहस्त्र
हि: सुषहितहांबसउप्रीतिसम: याघारूपसरीर: रहउममसंगनिर
तर करिहैं हमसुरकाज: पुनितुममिलउप्रेमपर: सीयकीनोंमत्र
प्रमानसोई: निजबपुअनलहिआश्रयो: सुरराजरच्योजीयसोव
सुर: भुवनत्रैयजयजयभयो॥२॥ रू॥ कोजानेंनरहरसुकबि: प्र
भुचरित्रअनपार: कारनकरनसमर्थहरि: कृपासिंधुकरतार॥१॥
सत्वत्रिअवयेसके: समुझिनलषनसुजान: अबजनवरनतेंअग
मः नरहरप्रभुनिदान॥ कबि रु॥ अथस्रूपनषाप्रसंग॥ कबित॥
पंचबटीबनराम: बसतनिसंकबीरबर: बिसदधराधरदष्ठि: निग
रफलफूलनिरंतर: नदिनिरझरभरनीर: प्रानबनचरसुषपावत:
नहांमयूरतछिबत: सिंघवकुघासबरावत: मितिकुंजपुंजगुंज
तमधुप: सुषदबिहंगमरवसरस: बनबननिहारबछितबिहरत
बिततकालबिलासबस॥१॥ रू॥ सीतासहजसुगायतें:

तनयेदिगंत : महिमांबनसोरसतमिटी : बिसमयुतयोबसंत ॥१॥ रावन
नगनीरासी : सूपनषा तिहिनांम : बनबनसूपत्रनेकबनि : करत
बिहारसकाम ॥२॥ इक दिसा सोग्रासुरी : अटवीदंडकआइ : सोतलग्र
इनुतबातबस : सोतिहितिघोसुतारा ॥३॥ जैसै लाव तिरतिका : प
रतीयबचनबिलास : सूर्पनषा हिल्यारीसरस : मोहीसीयासुबास
॥४॥ पाप निकीनेंगघपथ : पंचबटीपरवेस : चरन चिन्हरघुबीरके
देषेचिन्हसुदेस ॥५॥ ब्रजांकुसध्वजसो बिमल : राजितपदमसुरेष
चरनचिन्हअवलोकित : बढिग्रभिलाषबिसेष ॥६॥ अतिसोला
उफनातिअंग : बेषबिचत्रबनाइ : थितबैगैएकंतथल : अवलो
केरघुराइ ॥७॥ भ्रातपितामातुलकुसुत : दिग्रसूपनरदेषि : त्री
याअनेगअतावतें : ब्याकुलहोतबिसेष ॥८॥ छंद बेतालासा
निकटआइनिहारिसुंदरि : रांमराजीवनैंन : करिहावभावकटा
छिकमतहांबोलिरसमयबैंन ॥ सूपनषोवाच ॥ अबिबाहित
मोहिजानिअदभुत : अमितसोभाअंग : कतवसरनजायेकोमपी
उत : अनयरेकुअनंग ॥ श्रीरामोवाच ॥ कहिहेतअजकुकुमा
रिकामैंतुम : मरमपूछेराम : अतिअंगअंगअनंगउद्भव : नई
सजग्याचांम ॥ सूपनषोउ ॥ ममसहसबरत्रैलोकमध्यनु : न
हिनकोउवनिहारि : स्वरूपनवरीसुंदरीकत : रहीयाहिकुमारि ॥
सुरलोकबिजईभ्रातमेरो : सीसदसभुजबीस : रविचक्रआनंग्र
षकरावन : सबैमांनतसीस : नरकुंभकाईजिहिबिभीषन : सुरनि
देतसंताप : अरुमेघनादकुमारउधत : इन्द्रजेताआप : हमहिस
रूपसंगसुंदर : कतउचितकरतार : तजिमोहितुमकुप्रेमभाव
न : सबैसुषसंसार : तुमकौनहोइहांकौनकारन : भ्रमतसबै
अनीत : प्रतिअंगलछनराजप्रतिमां : बेषयहेबिपरीत ॥रा
॥ तबरामहसितिहिदयोउतर : मोहिजांनिसबांम : बृतएक
पतनीअरकबंसी : रामहैममनांम : सुधरमपतनीनांमसीता
जनकनंदनिजांनि : भ्रातमनीग्रानकजुबलवंत : निरतसेवनिदि
न : दुषदुसहदारुनहृदयदाहक : सोतिकोसबिषाद : सहिन
हिनसकिहैसालसुंदरि : पुनिऊहोइप्रमाद : अवधेसकेसुत
पितआग्या : रहिबिषमबनआइ : द्विजदीनरक्षाकरतकौत
त : दुष्टमारतदारु : लघुभ्रातहैममसंगलछमन : महाबीरअ

ाम:तिहिजाइअबतुमनजऊतासंग:करऊपूरनकाम॥११॥
कविरु॥ तिहिजाइलछमननिकटतनछन·करैप्रेमप्रकार:क
रेबेकद्रिष्टकयाछिकीनें·मनबिकलबसमार॥ लउ मनालबि
चित्रहसितिहिकेलछमन:स्वामिवेहमदास:प्रभुहितजिकिन
लेऊप्रभुता·संगममउपहास:सुषषानपाननसयनसज्या·सम
यनहीअवकास:बसिबेनकऊनस्वतंत्रबसिबो·दुषनाजनदास·
नहीपराधीनहिसुषनिरंतर:मिलननदंकमान:नगतिनहिबि
नचारनाजन·जसनलोनीजान:बिसनीनथनतपासिधमधप
नियतगुनअतिमान·आकासहुहिमैदुगथआसा·नहिनपू
रिनिदान·सोभजऊप्रभुतुमरामसुंदर:सबहितागिसमान॥
रतउतनलोलऊबितअपनो·नानकुलतजिनान॥११॥छंदपधरी॥
पुन्किआईउष्टारामपास:उफनातिसिसठारमउसास॥रूप नध
॥मोहिकहस्त्रमावतवृथामृद:गुनगपानप्रकासतहसंतगद
छंद बेताल॥ तिहिलिओनरयेमोहिकिकत:बिबिधि·तर्क
बनाइ:इनसंगहेजेजुवतिअस्तुत:याहिलेलषाइ:हमछां
डिमेरीकलोकरिहें:अंतनरुनिअनाव:दुषरोइमतिहेकेते
उसह·बनेयहपेदावा॥कबिरु॥करिरूपदारुनदुष्टकामनि:
अरुनलोचनआकुली:मुषफारिदसनकरालदमकत:चकित
सीतादिसिचली·तिहिदेषिसीतानीततब:पतिपछिआरपुनी
त·डिगसेवसाणगअनुजकहदे:मुषहसेमषमीत·सरतिअ
लेकरसिआसग्रहि·काटिनासाकान:देलषनमूठनिकारि
दीनी·नजतरूपनयान:गिरगुहाजेसेधातगेरुकि·स्रवतिन
रुरसंग·रहितातिरुधिरप्रवाहअबिरल·अरुनताप्रतिअंग
नह॥ नासाश्रवननसारके:प्रगटकरमफलपाइ:आक्रंद
तिचावतअधर·पापनिगईपलाइ॥११॥ कबिता॥षरदूषन
षलत्रिसर·रहतथानेजहाराहस:सुनटसूरतिनसंग:दुग
मनरसहसचतुरदस:बिप्रामिषनोजनबिरूपबसिनिक
टदंडवन·बिक्रताननजनपदबिनास·प्रतिमजुअपावन
नहागईसूपनषरीतबहि:रुदतकरतिबिकरालरुष:परज

पस्यो दुष्टउरत्रास पर। मह हनुमान कपि रिपुमुष॥१॥ घरा दिवा द्र
उरत्न धनमुष्टिक षम। उरवाट्यो दुष्ट्य भाइ। करके कहियेकालकेहि। सोनम
वेगसुनाइ॥ [illegible] न [illegible]॥ बनदंडकमहपंचवट। वसतउन्नयमुनिवा
ल। ताहि निरंकुस पाइ अति। हमाहि करये काल॥२॥ यिकपोरुषतुवरे
त्रयम। कुलाहसपिकार। वीरकहावतवीरमुनि। हाम धरत हथीयु
[illegible] के [illegible] सोमुनि परत धनत्रिसर। दुष्टनयेउरदार। कोपे
कालकरालमनु। नरईसनाह सनाह [illegible] छंद॥ मनयम्रायुध
साजि। गिरहंघनसेगाजि। यरिलेकुमारकुयार। जिनकाजिकेष
लजाइ। रघुसाजिअपनेरंग। अतिक्रोधचलिअनंग। संकमोराद
ससेत। मिलिपेहनन्तमनुमेन। त्रैलोकचटिपुरछेह। कुवञ्चकाल
किसदेह। नगनीसुपापहिलीन। कुवअयनासाहीन। सोअसुन्दरू
पकुताइ। अनमिकसवलितिन्याइ। तिसवारमानत नाहि। जिनरजु
बांधजाहि। मुदियोररवनीतान। जुधरानतिसन्चयजानि। कसिजपतुक
रनजाय। उहारमुखरविक्राप। वनचारमधाविनाग। जोदंडचाटिकर
ग। वहाकसीयकटितवीर। सरत्रमनपानिसधीर। श्रीरामैलचसु
निलखनरहससेन। नवतिकरगारमुषेन। लेजाकुसीतहिलात
सनअलिझोरविसाल। वनिता हिरहावीर। नवबारकाकुसधीर
रहाकाहिगनुजअनंग। रहेरामरूपिरनरंग। हतधनुषधुनटंकार
तवरूलिबारमलार। रनरनोनहारभुराइ। अनेकरादिसमाइमिलि
मलोअतिसंग्राम। रसबीरकीलेनराम। हहिओररायवएक। उत
निरतअलअनेक। परिसतक्रअसत्रप्रहार। घनमारअसुरसंघार। र
घुनाघसरहतबीर। संयामगिरतसधीर। चढिहतचरितविकार। परिलेक
उलटअपार। हेअजतनपातित। उविरनमुंडअनंत। सरसकतितीनरस
न। मिलितपलदहसमूल। परिरामसीसप्रहार। मुषसवदमारहीमार
कुपरतउवतकबंध। अतिनिरतसरतनदंध। कछुकालहीउकीनमुनि
रोमरामप्रवीन। जोईदुष्टमायाजाल। करिकिरतसपकराल। सोस्कील
नासमुधार। वटिरोषरनरघुवीर। जोउदयसानिअनंत। तमनासहेत
तुरंत। सररामअनलसमूल। तिहिजरतरादसतूल। असजलदजो
वसबात। चढिगगनतयनविलात। सरतिसरदूषनषेत। सबगिरसे
तसमेत। नवेनासअसुरअनंग। जोमनमदीपकसंग। अत्रावतीय
हिकेत। तहयीधयानकतमंत। थलिमोरिचिगउजार। सिसुमेतमन
कुसुमार। कहिरामरामजुकोर। हरिमरेमुकतिसहोर। रनजीति
नदेराम। सुरपुहपबरविसंयाम। सुषसयोविबुधसमाज। रनदेषि

कोसलराज: अयगेगनदुंदुभिबाजि - सुरनिरषि सिंदनसाजि: रहिति
सपलचरहोइ: सबकहतजयजयसोइ: पलप्रजोगनिपत्र जेईवि
पतगावततत्र: पुनिरूतप्रेतपिसाच: नचचारमछितनाच: कहिजय
तिरघुकुलकेत - सुरराजसुरनिसमेत: हालपनप्रमुदितत्रार: सी
यमिलेसंगसुनाइ: अतिहरषसीताश्रोनि: परसेनुपतिछितपानि -
धरमिरीपीडाधार: सुषउपजिरामसुनाइ ॥ २२ ॥ कहतविजय
जसरामकौ: गयेविबुधनिजगेह: सोपनयहराक्नमरन: समस्यो
निसदेह ॥ १ ॥ नरहरप्रभुक्रीडानिरषि - सुरमुनियेसहास - आपुन
गढेरनत्रजिर: नपिलसत्रुकीयनास ॥ १ ॥ कवित्त ॥ षरदूषनषलत्रि
सर - सुक्रंरसंग्रामसंघारीय: सहस्त्रचतुरदसत्रसुर - संगमिलिषेत
जुमारीय: सुरसुरेससानंद: धरनिबजेनिसानयन: जेत्रागम
स्त्रुतबच: विघमसुबचारविनासन: संग्रामेविजयनरहरसुकवि
बिसदकिविजगबिथरीय: अस्तुतचरितपोरुषअतुल: कोपसम
रक्रीडाकरीय ॥ १ ॥ अथ सीता हरन प्रसंग ॥ कवित्त ॥ [illegible]
जसरूपअनंगलिक - सेभ्रुतनासाहीन - आरीरावनपहरही: निर
लजवेषनवीन ॥ १ ॥ सुतबंधवमंत्रीसुजन: वेगेसचावनार: [illegible]
सिरकोदीनोहरस: [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] विलोकि
कै: [illegible] मलीन: रावना [illegible] कौनयह
[illegible] ॥ ३ ॥ विमुकुबेरकजमबरन: [illegible]
नासविसेषकृत - [illegible] ॥ [illegible]
राकसी: जरतरोषनिरलज: [illegible]
सगज ॥ ४ ॥ रावना [illegible]
पल्लेक [illegible]
[illegible]
[illegible]
सपर: वेषकीयेमुनिबान ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

केउरेव॥ रावन॥ कोराम हतिकिहि हेत॥ बरनिसरदूषनपे आसूपन
जत॥ अवधेसपुत्रउदार॥ बनबननिकरतबिहार॥ आसुन्यदेरूकअ
इ॥ सोबसतअनयसुनार॥ रघुबंसअग्रजराम॥ मिलिअनुजलछम
ननाम॥ सुंदरीसीतासंग॥ अतिरूपरतिजितअंग॥ मैत्रीयात्रिनवन
मांहि॥ तिरछीजुताअस्पनोहि॥ तवकाजलावननाहि॥ ऊगईतहां
चितचाहि॥ अतिदीरघबदनत्रान॥ कीयनासनासाकान॥ सबकह
अुहिमुरसाल॥ हैजीयततिहियेहाल॥ नईबिपतिमीमन्त्रान॥
सोईदु॥ षउरनसमात॥॥ कबिरुवाच॥ यहसुनतपरजरिअंग॥ दस
बदनजोबनदेग॥ केउठ्यरसुकीयमांन॥ बिलसिचपिअहिअनजानि॥
जोसाहहूठिजिहाज॥ रनअजयओंकटराज॥ मनसोचसोदसम
थ॥ हीयहनतमीडतहाथ॥ रावन॥ गुरुबांधिमंदिरमांऊ॥ सत
पत्योहोतहीसांऊ॥ नहाबदेसोनअतीव॥ यहकालगतिगुरुदेव॥ अ
तिबलीरहसआप॥ तिहिसहिनसकोउताप॥ ममत्रातसेनमम
न॥ नरसिसुनिहतिनिसंल॥ रहितोतिअजयअजेव॥ द्विजरूपयेके
उदेव॥ बिधिबिसुसोबरजाव॥ सोईहोतदिवीयतसाव॥ रघुबंसन
अवतार॥ यहनयेरामउदार॥ सोराममारिसंग्राम॥ बेकुंठनिजधा
म॥ कबित॥ यहबिचारिपोलस्ति रामचीन्हे परमेसर॥ अबिलले
कआधार॥ सरबआधीनसुरासुर॥ तिहिबिरोधअनुसरत॥ ताहिसा
रूपरेतगति॥ साधतनपदुषसहत॥ तदपिफलबेगिनपावत॥ सोयेबि
चारितिहिरामसों॥ बिग्रहबयरबदारऊं॥ रघुबीरबानमरिसमुषर
न परमजोतिपदपारहों॥१॥ छंद पधरी॥ कबिरुवाच॥ बिलप
त्ताहिदुसहबिहांन॥ जुगमानतईरजनीसुजांन॥ पुनिप्रातउग्रारा
वनसपाप॥ अतिरोषअंगपरजलतआप॥ रथसाजिचढ्योरावनदि
सार॥ आनिहैमनऊमीचहिमनार॥ जहातपनऊतेमारीचतापं॥ पं
षासरगोरावनसपाप॥ मारीच॥ ऐकाकीआगमकहाआन॥ कार
नप्रकासकरियेसकाज॥ मतुलिसोकीनोबेगिमित्र॥ नहाकहेसुखसु
पनपीतंत्र॥ रावनवाच॥ मोमोअबककरऊसहाइमोहि॥ ताकेब
नेहेरोसबेतोहि॥ मारीच॥ मारीचकहोफिरिनेममान॥ प्रभु
कहोसुपेआग्यप्रमान॥ रावन॥ अबसोबिचारकरियेउपार॥ ब
सहोइसत्रुजिहिबलबिहार॥ बरपंचबसतहैजतीबाल॥ बिनत
संगहेलोचनबिसाल॥ बहलावाहिहरिजिहितिहिंउपाट॥ दुषबिरह

होरमरिहैबिस्तर॥कबित्त॥मारीच॥ पुनिकहिमुनिमारीच:सु
नकुसिधांतरसानन: रामनमानऊमनुज-करनअवतरेसकारन
सीयमत्रीयासेत्नव-आदिमायाउतपनीय- अनुजसेषअंसावतार
निरधारसुमनीय- इनसोनबयरबिग्रहउचित-अमरईसबिक्क
मअतुल-अनुसरऊसंधितजिरोषउर-करहिअनंदपुलसतिकु
ल॥छंदपधरी॥करियेनमंत्रसोपुनिलंकेस:कुलनासबिस्वहि
सीबिसेस-रघुनाथबानरीपकउरंत:मतहेऊसलनतिहिपरिकुमं
त:यहंषिलबंसकाकेअमूल-उनतुमहिजोगमोअनलतकूल-उप
देसकवनतोहिकस्योएह-उपदातयातजहांउपजिदेह:कौसि
कमषरछिअकरनकाज:रघुनाथलिपगएअवधिराज-यरकाकपद
रघुरामधीर:बीरासनबेगेमहाबीर:संप्राविनुरादसमेनसंग:ह
मउत्तयत्रातआयेअनेग:ऋतुनेगउपद्रवआनिकीन-मतश्रोन
रेनबरषामलीन-मारचोसुबाहुसेनासमेत:षेबजिनिसानजयपार
षेत:बिनुफलबिसषतहामोहिमारि-दीनोसतजोजनअंतडारि-
सरबत्ररामदेषूसुतार:उरहोतकंपसुधिजबहिआर:नयत्रिसत
रहतकुचितनंग:अघावघितबतेबिकलअंग:सपनऊरामदेष
तसुतार-नयतीतहोतमतुमृतकतार:तिनतनहीतबतेलहतेनेन-
अतिहिभ्रासंआतमअचेन-ऐकांतरलोरहिहिगरआर:पैनिकसत
ऊकेउसमयपार:पुनिसुनऊऐकपूरबप्रसंग:सेसुनोऊतोहम
रिषनिसंग:आगिकऊहरिसोंब्रह्मएह-सुनजाविलयोबरअति
सनेह॥ब्रह्मोवाच॥सुनकेसुमनुजावतार:नगवंतहरउ
यहन्नमिनार:अबधेसअंसअवतरऊईस:सकुटंबहतऊषट
वारिसीस॥मारीचबाच॥एईनऐबिसुरामावतार-नगवानहर
रनत्रवन्नमिनार:बधकरेताउकाबालबिस-मषरछिआकीयके
सिकमुनेस:पनजनकनिबाहोनंजिचाप:अरूकस्योबिमदरिषि
जरामआप:परनृपनबिसराहनेबेत:तिहिगेरनमानऊमनुजहे
त॥रावन॥पुनिकह्योलाहिरावनसपाप:रकसुनऊरहसिमारीच
आप:परंपुरुषजदपिराघवप्रकास:बरदयोबिधिहिमकृतबिन
स-मोहिमारनमानुषनयेमुरारि:कारनबनदंडबिहारकारि॥रूहा॥
यातेसीताहरनअब:करिऊंजथाप्रकार:तिहिकृतहमसोंउनहि
नब:नहिहैबयरबिकार॥१॥ मेरोजेपेरनमरन-उनकेहाथअ

जेव: ततोपारहोपरमपद: जोगतिदुरलभदेव॥२॥ राम हिमारोरनअजिर

के ज्ञेपेहरहोइ: सीतातेपाऊसुगम: कहुसंदेहनकोइ॥ मारीचाछं

द पधरी॥ प्रभुरामघरकुतमानहुअबोध: रामसोंछोजिबिप्रहबिरोध:

यहउदिमतजितकेसग्राप: पुनिजकहअहेदुखदुसहताप॥ रावनाक

हितबेनाहरिधनसकोध: पापिष्टकरतहमकहप्रबोध: हितउपदेस

नयेतुमकहमोहि: ताकोफलदेहैंहसबेमोहि: पुत्रहिंजोजननीहृदत

पार: उरपाबततेहूंजुवादिसार: सोमोहिंहरावतबिबरिबात: बस

कत्योबिलजिहिसबिभात: गुरजयोहमहितकथतपोन: संसार

बीरकोउमुहिसमान: मुहितरतेरीबसीमीच: उतरजोदेहैफेरिनीच॥

मारीचबाच॥ कबित॥ गहाविंतीयमारीच: उनयबिधिमनउपजीय:

लिपलिलाटबिधिअंक: जातबिधिहुसुनमजीय: मिलिरावनकर

मरन: नियतगोनरक निवासीय: हसतरामहतहोइ: बिमलबेकुं

बिलासीय: कीनोबिचारनिरधारकरि: लोतजनमयहलेषयें॥

करउचितसरनरघुनाथके: सायकतिगबिसेषयें॥१॥ हारिरहु

गोरावनकरमरन: जाउगोकोसलराज: तातेराघवकरउचित:

मरिबोमंगलकाज॥१॥ छंदबेताल॥ मारीचमुनिदेमुदितमन:

रघुबीरसनुजउरधरे: जरजूरसिरकरितरतिबंग: सचापकरध

निअनुसर: संधानधनुकरिनिसतसायक: ममउरसिप्रभुमारि

है: सुरबरषिहुमनसुहरषिसुरपति: अमरजयतिउचारिहै॥

पुनिहिअरथचलिविमरदार: प्रगटज्ञानहपाइहों: देवीसुरासुर

मुनिनदुरलभ: सुघहिजोतिसमाइहों: मारीचमरनउकुरि

नेरथ: चल्योचितबिचारिके: दससीसग्रपामोहिदीजे: क

रोसोईनिरधारिके॥ रावनाकरिमंत्रमिलिमारीचकंटक: पं

चबटीपरवेस: मृगहेमुमोमहेममयतुम: सजहुरूपसुदेस

कबि रु॥ मारीचरबिअंरहतमाया: स्वरनमृगसेनाव: महत्रं

गधुरबनिनीलमनिमय: नेत्ररतनबनाव: पुनिकनकप्र

तअंजिनकोमल: रूपबिरसुरंग: अनेकछबिअरहतअछ

ति: अषिलअंगनिअंग॥ छंदउधोर॥ हरानिकअश्रम

षपतिहिउचारि॥ सीताबाचा॥ प्रीयलघायहजुपवित्र: चि

तलगैमिममृग चित्र॰ यहमारिआनऊआनः सुषआजिनसअसाजा॥कवि
त॥ प्रभुप्रीयाबचनप्रमानः उरतबैठदिमआनि॥लछमनबाच कवित॥ऋषि
लप्रछिउतपन॰आदिबिधिकनपापायोःनहीदेषेनहीसुन्यौ॰यक्षुकेच
नमृगआयोःसुनऊरामराजेसःअसुरमायाउपराजतःकपटबेषबऊकरत
समयलषिकारजसाजतःउचर्यौलषनसिधांतयहःप्रभुब्यापकनवन्त
तपर॰बैनासकालनवतअवस॰बुधिहोतबिपरीतबरा॥१॥आयहतज
ऊअनंत॰रामयहमृगकैउरादासःकारनकनककुरंग॰बन्योसुंदरम
याबसःनारिनिमतकछुआंन॰पुरुषकछुआंनउपासतःजातिनकाज
अकाज॰ऐकहरहीअभ्यासतःबिश्वेसबिश्वब्यापकबिषम॰आसुर
दुष्टसमथआरिःइहिगरबीअबधेसअब॰करियेकाजबिचारकरि॥
श्रीरामबचा॥दहा॥लछमनऊजानतसकलःकरिबोतउसुरकाज॰
जोईकोईहोईपै॰याहिनछांडौंआज॥१॥इहिकानूनराछसअथम॰
बसतदुष्टसबिकारःसावधानरहियोसमझिःबेदेहीरषवार॥२॥
तवबुधिबलबिक्रमबिदित॰बरतऊसमयबिचारिःकिऊकारन
येकाकनी॰नहीछांडऊबननारि॥ छंदपधरी॥कबित॥कटिप
टलपेटिजटजूटकेप॰आरकतनैनऊकुटीसप्रेपिःकरसजधनुष
टंकारकीनःनिसचारबधककरबानलीनःमृगरीजचलनिचलि
मृगहिमार॰संधानबानसुरकाजसार॥१॥कबित॥रामसोचमुनि
त्रासमोच॰हनुमंतबिजयजसःमयतनयाबैधव्य॰समरदुरधर
नरराछसःनरुपरुपलचरंन॰महीश्रोनीनरमजन॰अरुजटायु
उधरन॰अचलदेवोंचतउग्रन॰सुग्रीवबिभीषनराजसुष॰मृगस
रूपमारीचमर॰संधानइतेनरहरसुकबि॰सुकररामसंधानसर॥
॥१॥छंदपधरी॥पत्रिासचल्यौतहमृगपलार॰परबतहिलांघि
प्रभुतहापार॰उझिारनिकटदुरसेजुहर॰मृगकैअसुरमाया
समूर॰कीनौप्रभुकौतुककछुककाल॰तरओटह्न्योमृगतालका
ल॥ कबित॥कनकरतनमयकांति॰कपटमृगदेहसंकारन॰
सघतत्रिनसंक्रमत॰निषलदिगबिदिगनिहारन॰धसतकबऊ
अधधरनि॰धराधरकऊचढिधावत॰बारबारग्रीवाबिलंग॰तन
अंगघुजावत॰सिरपरीकालछायासमय॰सुपेषूतियअनुसर
नं॰मारीचनीचमायंजुमृग॰मिसोआंनिनि॰ ॥२॥

असुरआयुजीवनिजरथु मंदोदरिमंञन : त्रिकुटगाढवारिथहिवाद असुरी
अहवातन अहनिबंधतमचरनिअव दसकमलकलेवर : देवत्रासमारी
चहेह तवनीतन्हमित्तर सुरराजतापनरहरसुकबि पलषेचरखल
पुरिहैं रघुनाथधनुषगुनमुगिते : येसरछुरछुरिहैं॥३॥ लंकदाहसमु
इसेत मयसुतासोकमन : बिघनबालिनारदबिलास संपातिपंष
तंन दुरगरोधजोधनिबिरोध बिछुरनिबेदेही क पिउछाहरावनहि
राह सनाहसुदेही आसुरसमहसीकंपउर जमिनारनयत्तगिहैं
राह सनाहसुदेही आसुरसमूहसीकंपउर जमिनारनयत्तगिहैं
करराम बिसषमारीचके येउरलगेलगिहे॥३॥ बिधिहरमुनिवरबि
बुधः तपकुजिहिजोतिनपावत : इत्रीयकरिनिअअनेक बंपुकष्टब
दावत मुनिराइसमारीच : बिषमजिहिबैरबढायो : तदपिदईवग
तिआगम देहधरिदरसदिषायो ; माऐवमुकतिपाईपुपद : जातउत्र
नपसाधिजह हरराम बानमृगकपटछे : मिल्योअसुरसोईराममन
हो॥४॥ छंदपधरी॥ खरबीरराममतस्तोबिराम : मुषकलोमरतमृग
रामराम : सुररामपुकार्योअसुरसोइ : हालछनत्रातसहारहोइ :
सोबचनदुसहजबसुन्योसीत : तयचकितत्योमनमहाभीत
सीतउगाइहो॥ लेसरधनुधावकुलबन : अग्रजसंकटआहि : उ
बार्योआरतबचन : तुमकुसुन्योबताहि॥ लछनबचातुमजा
नतरघुबरप्रकृति : जदपिप्रानकुजात : औसोबचनजुदीनपह
मुषलेकहेनमात॥१॥ राछसमायाबकुरचत : बानीबिबिधब
नाइ : नहिनसुरासुरत्रयभुवन : जोहिमरेरघुराइ॥२॥ राछसक
लयहमरत : आतुरबचनउचार : कोपराम ब्रह्मनको : नासहे
इनिरधार॥३॥ कुबचननाषेजानकी : जोनहीकहिबेजोग अ
नमूदेलछमनसुनत : उपज्योदुषअपयोग॥४॥ लछमनजाह
चैंरीदुरबादती : यहपैकहेनकोइ : अकलंकहिलावतकलंक स
बफललहिहैसोइ॥५॥ दुरमनलछमनअतिदुषित : सायकच
पसतार : कीनीरषारामकी : दुरगमसालादार॥६॥ कतरषायह
धनुषकी : कगिनउलंघेकोइ : सुरअसुरनवनतसोई : इतीन
समपेहे॥७॥ कबि रुद्रीवरनरामकृतविनवन : सेवतचितसु
जांन : हाबलिष्टनवतमता : कहानसुनिबोकांन लषिदेवी
मायालषन : प्रभुइछापरवांन : आतुरचलेबिचारिउर इही

उरमिग्रांन ।१। कवित।।कीय नाटकसुररमनि·देवदुंदुभिग्रका
मजेतउचार:पुहुपबरषाजुत्रकासीय:ग्रमरलोकग्रानंद ग्र
जनग्रागम·मृगजमस्योमारीच:बधरउपजेग्रतिबेषम:हां
ग्राइसोमित्रहो·रामचरनबंदनकरे:मृगीयासुनिथलेबी
सुनग्राश्रममगसंचरे।।१।।दुहा।।तकेतहोलके सतह:प्रजी
मांन:ग्रारगयोग्रनसंकजो:स्तनेमोरिरस्वांन।।१।।कवित।।स
पारस्नकेस·रहारावनवलग्रायो:तजोबेषसंन्यास·देहाव
उरायो:देवदत्तकीयसबद·ग्रोनित्रिनसातग्रंगन·सीयारे
त्र्प्रतिथसाथ·बिधिजुतकृतबंदन:बिश्रामकरऊकछुछंनहि
ल·महतरोवरलछुमुनि·ग्रारहेबीरग्रवहीउनय·जैतुम
सेषपुनि।।१।।रोवनसीतासंवाद।।इराग्रछैापुलसति·कवनतुम
हाग्रकेली·देऊकबनयहदुगम·संगसेवकनसहेली·किहिपुत्री
यकाहि·बेसकोनामबषानऊ:ग्रंगग्रंगछबिउदित·जुवतिसम
तीयनजांनऊ:चलन्वितदेषितिहिसीयचकित:लगीदैनबनफ
विमल:ग्रंतरिबरेषय·ग्रनउचित:जतीयहेनहिग्रसनजल।।१।।
मधुरन्रपतिग्रवधेस·पुत्रजेभेरायवपति·पितानकन्दपत्रसिंधमे
हिसीयानामसति·नरबिजितसंग्राम·लषनदेवरसुनलषन:पित
दसरथग्रागपाग्रवेस:कीनेरहिकानन:मृगकनककरनग्राबेरमि
लि·गिरबिचत्ररोउन्नातगत:यहनथोसमयग्रावनग्रवे·हेबिलं
मकऊबिजयब्रित।।१।।कबित।।दुहा।।धरबिराजिगचरनधरि
रिषातर हररोपि:हरिपहलहिगटोरलो·लोकवेसमतलोपि।।१।।क
बित।।मानिग्रहग्रमथरम:चितवेदहिबिचारीय:जतीबेषतिहिजों
नि·पानिफलदैनपसारीय:बाहरिरेषाबऊ·बिमलकीनेबेदेही
ग्राकरघोकरग्रेचि·उष्ट लीनीसुरद्रोही·दरसाइबीसभुजसीस
दस·केरकग्रपनोरूपकीय:रेग्रधमकैानतग्राहिरहे·कपटीहिपू
छोजांनकीय।।१।।रावन।।ग्रहमपनातीजगबिजेत·राक्षसकेरो
बन·सुकरबीसदससीस·सुरऊसुरराजसतावन:तुवकाजेग्रहकन
क·कस्योरवनाग्रन्तकीय·तपीबेषउषतजऊ·जनमफललेऊजो
नकीय·पावऊनकेरितुमरामपति:जेतनकरऊबऊपांनतजि·जो
मनीनरमनुहरऊनवन·नेगबिलासऊमोहिजि।।२।।सीताउ।।
रिवराकदसबदन·बिहतसुनिथोममबोलहि:सीयचिततवल्ल
बिषमबात·कहऊउरगनठोलहि:सियरामतुमसबग्रगाल·सम·
यदसुनिसग:कोवलिहजगकहो·हमहितोजुकरहितत्रि

नतलसद्रसआकारतुव ज्वालाबाननपरजरऊं आवरतकोपआहव
उदधि पापीजानतकतपरऊं ॥३॥ सीतावाचा ॥ दोहा ॥ त्रिगकतेरेतनदस
आलिद्पितअधं । बिहतनससकहिसियबलि रेकटकदसकंध ॥१॥
रावन ॥ जानऊंअथसुजानकी सूरपलछमनराम अनरहाएकाकनी
बनतडाकीबाम ॥ कबित ॥ छंद बेताल ॥ जनकरबिलछिगरबिब
ल राकुजोसलसिरेष अकुलातिअतिबलकरनिअपनो बिवससीप
तुबिसेषि मनमथनमानिहितकिऊमनु परीसंबरपानि पावेकक
रसधाकपावन अदिसबसनरीआवि मिलिमनऊधूमसमूह
मऊपतु अनलज्वालाआहि पत्रबित्रतनुत्रिकाभतु मरुतवककति
माहि ऐकादसीव्रतमगनिबस तुभत्यिवबेद्चेलार सुतजीवजोति
अदिष्टसोगकि अबसजातउदार आरूढरथइहि दसाअनुचित सीय
रवनसाथ नवतमसूचितप्रबलनावी हेतकाऊहाथ सीताहिह
रिलेचल्योदससिर ऊवजगतहाकार सुरराजजानेंासुरनिसाचे न
मितनस्येतार ॥ सीताउजगदेकबीरसधीरहा रघुनाथदेवदयाल
तकेसबसअसमथअबला करऊंअनाथकपाल हाहरनआरति
करनकारन दीनरक्षकदेव तुमसरनपनयबिजयसबकहं जग
तत्रेवअजेव हारामआरतबंधुअद्भुत अंगबिजितअनंग रघुरा
जकुलकीलाजलछमन आजतोहिप्रसंग ॥ दोहा ॥ रामबलिष्टन
रानसम मोहिसकलजगमाहि जानऊंअहीअनाथज्यों नाथसु
नतकिधुनाहि ॥१॥ तबधायेखगराजतजि जानिदुषितगजराज मे
रीबेराकोलतयो रामगरीबनिवाज ॥२॥ छंद बेताल ॥ कबिरुवाचा
सुनिदीनबानीकहतसीता रामरामपुकारि अतिबलीग्रीधजटायु
आयो समयधरमसंभारि अवलोकितनपथजातआतुर रहारे
कैयोआनि पुनिकरतनीतिप्रबोधपहली पतितकहंपहचानि ॥ क
बिताज टायु ॥ ब्रह्मबंसअवतरन ह्वनमसतकपूजनह
र उसहसकतिमापारदऊ संचारइक्सर करहितोलिकेलास
ससिवकंउकगलिकरयो हेलषेलकृतहासि धराधरधरनीधर
यो इहिकरमनहिनलाजतअबुध सोईरावनतूनिसचरन की
यकपरबेषरघुराजकी हेतकवनमहिलाहरन ॥१॥ रावन ॥
बचननीतिकहिकहिबिहग करतप्रबोधप्रकास तबसमऊं
जबदेउतुहि सगजममंदिरवास ॥ छंद बेताल ॥ रिसजुकता

कहंकहौरावन·रेअधमनतवार : तुहिजोनिपंडितदंडवनको· किहिर
योअधिकार॥ जटायुबाच॥ रनतिहरेपरदारनसकर: हनिअहसंचार
ममसहहिगोसबदसकुमुकनि· प्रबलतुंडनख हार : पलरुधिरदेकेनरूप
रन· सिवाअथअगाल: हमतुमहिकोहैयेतरहिहर·करिनगुधकराल
कबिरु। रथतोरिबलपथरो किरावन·कलहबिरथीकीन :·उरबादक
हिकहिअदयदाहक· उसहुपरिनवदीन·रथकेतहयकृतचक्कचूरन·
चंचपंषचपेट : दससीसकेहनिमुकरदसकु : नदीग्रीधहिलेट : संग्रामसं
गमग्रीधदससिर·नयोपरबनतयोंत : सोदेखिपौरुषसुरसुरेसुर पुह
पबरषिअमान·सहिसारमारअहारसनुष·आपकृतउधार : दहासम
रषेतजटायुसोयो· बीरसेजबिहार : कछुसाससेषजुरहेसुनकृत· दस
आसदयाल· महिगिरयोग्रीधपहारमोनकु· बिगतपंषबिसाल : ह
थेसदसरथप्रीतिपूरन·जनमकीनजटायु : पदीसपायोसुजसप्र
रन : अनंगपूरनआयु॥१॥ कबित॥ तेरियजारथछत्र येतलितिरथीयप
सोषग :·नयेबिरथपलबिकल : गहिगुसीयचलेगगनमग· दहांनिकसे
रिषमूक·उपररावनआमाई। बसततहसुग्रीव : संगकपिपंचसहरी
सीतासत्रासआकासते अपनेनूपरउतरीय! मतिमानरबानरअदिपर : द
बितहालिहिलारिदीय॥१॥ दहा॥ तेईनूपरउतरीय·तबलीनेहनुम
त·सोपेराषेजतनसों : स्वामिकाजहितसंत॥१॥सीताकेनूपरबसन : ह
नुमंतचदेजुहाथ : आगमनेसुग्रीवके : श्रीयत्नीयकेतबसाथ॥जान
कीलंकाप्रवेस।लेनतमारगमैथली·आयोलंकनिलाज : ताहीछिनते
निकुरमेह :·घरघरसोकसमाज॥कबित॥सीयाहरीदससीस·कर
मत्रतिउछकमायो· परीलंकआतंक·बीजकुलनासकबायो· सीयअ
विसितनहीसदन·बिवसराषिअसोकबन : तरसिंसपतरुतरल·मिल
नतनरहीमारिमन :·त्रिजटादिकरिदजुराहसी तेरावनरहककरी
य·सिधीसमूहबसन्योंसनय करमजोगकपिलपरीय॥१॥दहा॥
सुताबिभीषनकीसुना·निसचरित्रिजटानाम : पूरबपुनिप्रनावते·
बिसुनगनवहैबांमा॥१॥छंदबेताल॥ दहाब्रहमप्रेरतिआरुअपुन:स
करेविसहार : निसिअरधसमयनिसाचरीसब·परीसोवितपरःपु
निसीयहिमरमप्रकासिअपनो : कह्योअनयप्रबोध· घृतपांनविप्र
करारसूरन·सबेदीनोंसोध· तोहिनहीब्यापेछुधात्रिषा·पुनिकेप
रिमांन·अपातआसुरआसुरनिते· सक्रगोनिसथान॥कबित॥
अंतहपुरआसन·बिमलबिसनरअसोकबन उसहदसाकुसदी

न:तहछ्रथंबदनमतिंनतन: लषतअधरउसास: आसप्रीयदरसनआतु
र: रामराममुषरटति नयनजलधारनिरंतर: ससिकलाबिकलतस्त्रीयन
संग: सुरलीसिंयनित्तयसहति: निसचरनिमध्यरहिल्पनित: रामप्रीया
घेरीरहत ॥श्रीरामपरलसालआरमनाछंदबेताल॥ मृगकनक
लेरहोरामलछमन: उनयआश्रमआइ: तुमरूपसीतापरनसालहि मे
नपारसुत्ताश॥श्रीरामबाचा॥मनसमुषनारीप्रीयालछमन: सदाजो
सबिलास: यहआपनोंकियुंनहिनआश्रम: परेन्हतिप्रकास॥कवि
तो॥ वहिअंतरयहविमल: नाहिनपरपतिनिहारीय: दिष्टनहिनआव
नसुदेस: मिथलेसकुमारीय: वहनकिधुंआपनी: परनसालाबनपाव
न: हमनकिधुंपैहोहि: सबलषलअसुरसंतावन: कहिवीरलषनकार
नकवन: कछुअनिष्टकिधुंदुष्टकीय: हरिप्रानतजनचाहततनहिं स
हिनहिजातबियोगसीय॥१॥ लतिदेबिचित्रिनसाल: जगतपतित्रास
उपजीय: कछुनाहिजानकी: सदनलरुतहितसजीय: रहांअनिष्ट
कछुआज: मोहिमहरातनहिमन: येकाकनीअसमथ: तुमकछुविनि
नाछांडीबन: कैसीताधरिराकसनि: कैहरिलेगयेदुष्टबल: करियबि
चारहामनकछु: वीरलषनतुमहावल॥१॥ लछमनबाच॥ छंदक
रिबिधित्रबिअराकसी: बैरलैउतवबाम: देषकुबिक्रमदासकै: राज
सिरोमनिराम॥१॥श्रीरामबाचा॥छंदपधरी॥ कीनोनहीतुमकछुउचि
तकाम: बनमाअकेलीतजीबाम॥ लछमनउ॥ तहांलछमनउत
रदीयसत्रास: प्रभुबांनिपुकाल्योमृगप्रकास: सोसुनतलईसीतास
षेद: नाबीअनिष्टजानानलेद॥सीताउ॥ धरियनुषलषनधावकु
सधीर: रघुबीरबानिकिनसुनतबीर: मैकलोरामसुरनहिनमात: तम
चारमरतकिंकरीयात: मुहिकोलोरहांदुरबादमार: जोकछुकेरिग
रिजीलजाइ: बंधनबिरोधकीबीजबाम: राजाधिराजसरबज्ञराम
श्रीरामबाच॥ श्री म च बिनुउचितकरीतुमयहैबात: त्रीयमतप्रमा
नकछुनहिनतात: किंहेतकहेत्रीयबचनकोर: सबगंबिचारकियें
बसोर: आकरषिगयेकोउदुष्टआज: कैंकरीनहतैपैअकाज॥श्रीरा
मबाचा॥लछमनप्रतिछंदनं॥ सोकमगनअनुजहिसमुझि: रहसि
मंत्रकीयराम: पुराप्रसंगजुआपनो: उपदेस्यौबरनाम॥१॥ तुमकजा
नतलषनतिहिं: कीनेंगूढप्रकार: कस्योजुगोपनसीयको: बिबु
धकाजबिसतार॥छंदपधरी॥सुनिलछमनतोसोकछुसोर:
अबतोंमैराष्योगूढगोर: कनककुटीपंचबरबासकीन: दिनतिहिं

...नसोवहिहीन॰ तवपीरहैपावकप्रमान॰ दिनकछुकरहु
दान॰ सुरकाज सिधहमकरहिसीत॰ पुनिमिलउग्रानि हमसो
मैथलीदेहिनिजग्रगनिमांह॰ हमसेवाकजैरकुछाहि॥ कवि
यमायारूपीरहीसंग॰ ग्रनलमहराबिग्रापनेग्रंग॥ श्रीरामो
ग्रहमपनातीउ हत्याप॰ पुनिरावनमारेमहापाप॰ श्रीयहरन॰
ग्रबग्रततार॰ संग्रामउचितरहिबिधिसुनार॰ ग्रपराधबिन
नयाहि॰ तातेग्रपराधीकस्योताहि॰ करिबोनसोचरहासीया॰
रावनकोषोकबंसराज॰ बरदयोजुमैब्रहमाहिबिसेषि॰ सोपै
नकरिबोग्रसेष॰ बससोकबैगिकरिहैबिलाप॰ पुनिहतिहैं पु
ग्रसुरपाप॰ उग्रिचलकुबीरचितकुनग्रान॰ जानकीषोजकरियै
जान॰ सुवचकग्रमतकुपाइच्छेद॰ छिति हैरोहसबेसछेद॰
जिबोमोहितातेमनुजताव॰ दुषसोकबिरहलोकनिदिषाव॰ नरव
खरवाहरिनिदान॰ उनहीकरिमरिहैयहग्रपान॥ ६६॥ श्रीरामबाच
नि॰ कहुहेतमृगकनककेो॥१॥ कबिरुवाच॥ छंदपधरी॥ सबनावर
मजदपिसधीर॰ बिलपातकरनतउमहाबीर॰ बसुसोचनयेसनुज
सुनार॰ तुवनेगजासजगप्रलयनार॰॥ श्रीरामबाच॥ कबित
ग्रहि॰ ससक॰ नेगी॰ कुरंग॰ सुक॰ बिंब॰ बज्र॰ कन॰ पिककपोतग्रीफ
लमनाल॰ सरसीतरंगतेन॰ सिंघकरी कररेन॰ कंजनारंगमनं
गह॰ पुरनिमलयनिस्वास॰ रुकमचंपकतनरंगह॰ यहिस्तेग्रंसउ
तमजुगन॰ मिलिसमगनग्रतिछबिमलीय॰ यहजानतलछमनग्र
नरन॰ हरीसननि मिलिमैथलीय॥१॥ गगनग्रकउगयो॰ लषनत
रछायालिजाय॰ ग्ररककथानिसिग्रसंनाव॰ मनुचंदपुनिजय॰ चंद
उदितयहयहां॰ कवनलछनतुमलेषो॰ नवसंतापतजयो॰ देषम
गबाहनदेषो॰ हाहाबिदेहतनया बिमल॰ चंदबदनिमृगलोचने॰
दे मिहैकबैयेदीनछि॰ ममग्रंतरदुषमोचने॥॥२॥ ग्रंगगिरनितक
सिषर॰ लषनदावानलगीय॰ कग्निज्वालमालकराल॰ ग्रनि
ारतग्रगीय॰ देवउदयद्विजराज॰ तजतकतयुमग्रसंतव॰
रतिधरनिप्रतिबिंब॰ रसोतगिग्रेकनुराघव॰ सुषधामबाम
रनीसुता॰ गुननिधानकिहिकितगई॰ इहिगेरनग्रावतिग्नि
ग्रब॰ नामनिममनलिनतंई॥॥३॥ छंदपधरी॥ ह

हाबैदेहीपरम हेत : मुहि दुषित देषि किन रसदेत : निसिनाथ बदनि ह
कमलनैनि : बिश्राम जीव कोकिला बैनि : रद बज्र बिंब रद छद सुरंग : कं
ठी कपोत लोचन कुरंग : भुज जुगल प्रेम पासु सुनाइ : कर कमल पत्र को
मल कहाइ : कर पल्लव चंपक कली कीन : नष जोति होति उपमान वी
न : उरजात पीन इल कुंभ ओप : जीय सफर अलक बन सी सजोप : ना
भी सरसुंदर ना निहारि : कीनी त्रिरेष बिश्रम मकारि : मृगराज छीन
कटि मुष्टमाप : अति गुरु नितंब नरम्भ सह ओप : जुग षंभ कदलि मद
दुगन्न जाति : गुनि राज हंस गज गति प्रभाति : अरबरन कनक चंपक
बिमोह : अति सोल अंग अंग निअरोह : गुन रूप सील हृत चितगुं
न : गुन लछन त्रीय के उन हिसमान : मम प्रानगरी त्रैत्रीय पुनीत :
गुन हृदय स आनि किन देत सीत : रट लगी ऐक हा हा जु राम : बिस्वास
बीज कहां गरी बाम : इहि भांति करत बन बन बिलाप : अति दुषित
फिरत षोजत जु आप : जल थल नभ चारी जिते जीव : द्रुम लता त्रिन
अपूछत दइव : अगजग जड़ चेतन आहि जेत : नग वृक्ष तिन अपूछ
त अमंत : मम सीया बताव धरम बाम : निय रार त्र मन चित लले
नाम : अति बिषरी जो बिरही अपान : अनुकरत मनुज लीला प्रमान : बि
धि सबिधि समरूप वत लषन बीर : अति बिरहत द पिरघुबर अधीर :॥ कबित॥
ब्रह्मादिक सुर असुर - बिस्व बर बीर महाबल : परिदई बी माया प्रचंड ब
स रोदत बिहबल : जो अक्षेय अनजेय : अमित अन बिद्य अनामय : अ
मअरूप अनादि : अषिल ईस्वर अज अभय : उतपति पोषन नास क अव
नि : तेजपुंज स्वामी त्रिदिसि : सोई मानुष लीला अनुसरत : बन बन रुद
त बियोग बस ॥१॥ अथ अथ जटायु स म र सम्भ स षिद र सन
छंद पधरी ॥ बन षोज करत रहा राम बीर : सानुज सषेद आयेस धी
र : रथ चक्र पताका धुजा राम : सह छत्र नगन देषे संग्राम ॥ श्री रा
म उवाच ॥ अवलोकि कै सो रघुराम येह : सौमित्र मो हि रहो कछु सदे
ह : जो उते जानुकी ही हरे जात : ता षल कहं उपजी बीच घात : को
ऊ मिल्यो ता हि राकस सकुच : जानुकी काज दुऊ न यो जुध : सक ग्र
सुर उनय कीनो संग्राम : महि गिरी सो जय हंगो म गोम ॥ कबित ॥
बन गहन बिचारत जात बीर : संग्राम ग्रीध सो यो सधीर : सो देषि
देह परबत समान : अति कार बली पौरुष अमान ॥ श्री रामे ॥

मुनिन्त्रातयहजिहि हरीसीत : अतिजुयअमितसोयेअनीत : करिग्रीध
रूपयहअसुरकोइ : सीताहिमारि पुनिरंलेसेरु । कविरुा रघुनाथव
चनमुनिग्रीधराज : आनदकस्यो फिंयंनअजे : रहनिकथ्जबेरघु
नाथआए : सोपेजटायुजानेसुतार : लीनोउगरउरलाइलीन : क
रिकृपाअथकृतकृतकीन ॥१॥ श्रीरामो वाच ॥ तवउसहदसातिहि
कहेहु हेत : षगराजकेनसोनिरषेत ॥ ग्रीध वाच ॥ रावन हरिलेगे
सीय हिराम : मुहिजयेउ ष्टतासोसंग्राम : करिमहजुधमे बिरथ
कीन : रुगिस्योजयेज बपंषहीन : नजमारगदहनदिसिनिह
रि : मैथलीगयेलैमोहिमारि : तुमआदि ब्रह्मअवतारआर
कारनोरुतथमिनुजकार : प्रनुदयोदरसमोहिचलतप्रान :
तिजजोतिलीनकेहरु निदान ॥ जटायुसरूति ॥ छंद बेतलाअ
नगनितगुनअप्रमेयआदिजु : हेतथितजुगनासनं : नितरमान
यनकटाछि निरबिधि : सुषअसेष बिलासनं : दुषदेवमुनितव
नतदारुन : नियत बिबिध बिनासनं : परब्रहमरामनमामिपूर
न : पुरुषजोतिप्रनासनं : ममबरदसरकोदंडमंडित : पानिजो
नुप्रलंबये : समसिंधकरितनीरसजित : बिहतनारनितंबये :
रबिकोटिप्रनाप्रकासराघव : दानबछितदायकं : नररूपराम
नमामिनिरजित : नियतसतरतिनायकं : भवसिंधुतारकपो
तप्रनुपद : दुषबिपनदावानलं : रबिसुतातनछबिस्यामराजि
त : गिरअउरगतमंगलं : पतिदनुजकोटिसहस्रपापी : बिषम
समरबिनासनं : दुतिजलदहनमामिराम : बिनातिबिदुतब
सनं : परदारपरधनबिमुषपावन : अपरगुनउदधारनं : परब्रि
तवजूति बिलोकिपूरन : मनसिथिरतथारनं : प्रनुप्रगटपर
हितनिरतिप्रतिमा : पतितपावनसुरपते : रघुबंसतिलकनमा
मिरामजु : गरुडअग्रजममगते : दनुजेन्द्रसेवतचरनमोषद : नि
यतवतरघुनायकं ॥ मुषरूचिरहास्यबिकासमंबुज : दिगसुथ
रसदायकं : नवमुलननिस्पनिकामनाजन : नेदबेदगुनाषित
ननस्पामरामनमामिसंतत : सुषदसुरमुनिसाषित : बिधि
बिसुरुद्रपुनीतबियह : नेदप्रतिमानासये : तुमत्रिगुनमय

अनुसरतआनम: पुरुषप्रकृतिप्रकासये: तुमद्विवपतिजलपात्रद
इक· सोपिसेषकसंमते: तुमगुरकृतगुरगरुड़गांमी: तंनमामिप
तीपते· सिवऋदयसुषदनिवाससंतत: स्यांमघनतनसुंदरं: तुज
वारिआयुधचारित्रजित· मुषप्रसनमनोहरं: अन बिद्यअगुनअ
रूपअदभुत: सगुनमेरकसावरे· सुषधामरामनमामिस्वामी· प
मपुनितपावरे: दससीसके तुजबीसषंडन· कीनगमनसकेपये·
अजानतुजतनमनुजआकृत· रनबिजयपनरोपये: धरनीउधार
बिहारबारिधि· जपतनित्यमुनिगनजपं: दुषहरनदीननिअंतयद
इक: तंनमामित्रिलोकपं: जिहिजोतिनिगमकृतअगमजानत: अ
तएकअषंडये: जपिअहमरुअगुणदिजोगी· षोजकृतनवषंडये।।
चितमनआवतनिगअगोचर· रहेहारिरिषेस्वरा: सोईदेहधरिमे
कहंदिषाई· तंनमामिनरेस्वरा।। षलजतअीकुजोनिषेचर· आनहिंस
३५ अपावनं: पुनिरहतताकतनहततपर· अमतदयाअतावनं· पल
पिसतअसनतथानप्रतिमा· पुरापुनिप्रकासनं। अवधेसरामदयाप
दरसन: दरीअंतकत्रासनं। कारुन्यरूपअकामनाकेह: करनकारन
केसवे: संसारकरउधारस्वामी· रूपदसरथसतवे: जोदुलतजोग
ग्र प्र गतनिजपकु· सतनिनिगमनिसाधिथें।। सतकोरिरतिपतिअमि
त रांम तसोला· संतबिश्रनबिनासनं: बिश्रामममेकअनेकबिग्रह· प्रेम
षी नवप्रकासनं: यहस्तुमोरामसतोत्रसानुज· प्रसनह्वैसीतापते
वरदयोअीयहिचित्रबंछित· प्रभुसुरासुरपूजिते।। श्रीरांमजू चा।
ममलोकनिरमलपरमपदतुम· पारहोसपुनीत: नवसिंधुतिरु
षगेसनिरतय: गारहेजगगीत· पढिलिषेवानित्यपागपूरन· करे
हलगुनकोर: ममपराथनसोइमुकतिमंह· सारूपपावेसोर
कबितरूबाचा। यहसतोत्रजरायुबिरचित· मुकतिमारगमेक
पुनिकलोकबिनरहरपराकृत· उपजिनगतिअनेक: करजोरि
जाचेत्यांकरी· ममसबलषलअघसाल: गतिदेहुदीनहिआपने
गनि· देवदीनदयाल।। श्रीरांमजू चा।। कबित।। तुमजेहोसुरलो
क: सुनऋषगपरमसयाने। उहांदसरथअवधेस· प्रीतिजुतनु
महिपिछाने: सीताहरनप्रसंग· सबाजिनरूलिप्रकासऊ।
करिबोमोहिसुरकाज· साथतुमचितसमासऊ: अवचरितजु

काजऐतेअरेहु :आकासबासरिषैनकोरु: संपेषैबातुलहोस्सोरु
कतधनकुदानिकंन्नाकुकंत :अरपैसबंसतिहिछेलैअंत :म्हाजदी
निकोमहामित्र·चाहेअनाथरीकैचरित्र· दूजेजुतुमहितिहिलोकदे
इ·अतरउदासबहिचरितऐइ:निरगुनअनाथलीजेननाम :किनाहि
नजाकेगेरगंम :जाकेनमातकोउपितजान ·तिनषेजकरतमुनिसु
निनिदान ·उघ्यानबासरसंततअवस: ताइसकिक्रकाल्अइस· उ
मऊथांकरिहोकेलताहि· वेविषयरहतनिरन्तेगाहि· निस्तेहसदाउ
मसोनिरास ·तुमकरतस्तोउष हेततास :निरगुनवरूपईयतकऊनाहि
मुनिरहतषोजितुवःचक्रमाहि; तवकाजजतनमेकीयअनेक· आनी
मेतुहितुअबलहिएक· अजऊनसोतेरेषोजआइ· सोनहीसकतिकाव
रसुनाइ ·निसतनरायमबुधिनाहि· हितनाहिनतोसोचितमांहि :नि
कामरामनिरगतसनेह ·उहिकोजेग्राग्रहकहारऐह :कंग्राहिकोमकि
करसहित: तिहिरहतसदाउहिमांऊचेत :मनतजऊविकलपनतनऊ
मोहि :तातेमनवेछितरेउतोहि ॥ दूहा ॥ गंधरबीजहीनरी·सुरकंन
सुरगान :करिऊतवपरचारिका : मानऊबचनप्रमान॥१॥सुनिसुनि
रावनबचनसीय·बोलीत्रिनदैबीच :मंदिरसूनेमुहिहरी ·रेनिसचा
रीनीच॥२॥ कबित॥ सीताउ॥ बिनुप्रकासरविबिंब·तमनउ
वचक्रहिटरही :बिनुप्रकासरविबिंब·नहिनस्वलउधरही :बिनुप्रक
सरविबिंब·मानबखानगउमिलि· बिनुप्रकासरविबिंब·उधरिकंज
नउउहिअलि तवबचनरचनदसकंधरे·ममनचितउच्छयअमल· ष
द्योतिजेतिलकेसबल·कऊनपरफुलहिकमल॥१॥ रेअंगालसस
स्वान :सिंघबलिचहतअधमसठ : हंससीससिरेठ·हरनबिरके
ठकरतहठ· धरनीतलधनरेष·जतनकिऊलंघनजाकी :रनसंगम
सरथार·तिषक्रोसहिहोताकी· अपराधीतुअवधेसको·रेबराकनिस
चरनिलज·समूलनासहेहैसकुल: अबनबचऊतेसअज॥३॥
छंदपधरी॥ हरिलायोमोकहसूनिगेह :अनउचितचोरकृतकस्चो
येह :रेराकसपरत्रीयापहार·गनतनहिअधमधिकारगारि·याके
फलहैअबनिकटआइ: घटलस्योपापपूरनअधाइ :मूढतरामतुमम
नुजमानि·जमलोकचलाऊनयेजानि: सरपजरवाजलबधसेत·क
रिषंथउदधिरघुबेसकेत :सामुद्रसोषिकिंबाअसेष :बरबीररामअ
गमबिसेष :असुराधमसातुजरामआइ·सोबंसनासकरिहेंसुनाइ

बलउलटिलैकलैउदधिबोरि : जैहैं मुहिलैकैं समरि जोरि : उभिजाहिं दुष
रहातें अपोल : निजरोषमनासक्है है निदोन ।। कबिरु ।। छन्द ।। समादि
कउपचारसब : करिथाकी लकैस : काढ़ो षगउ धारलहा : लग्यौग
हनकरकेसा ।१।। देषिसमयमदोदरी : आनितराअकुलाइ : जोग
उपजवजानिकैं : पकरिरही पीयपाइ ।।२।। मंदोदरी उ ।। दगधत
ईयहुबिरहदव : आपिनमं हजीयआइ : दै हैं आपकिअतिदुसह
कैं मरिहैं अकुलाइ ।।३।। प्रगटसुरासुरपुत्रिका : नागीपंनगीनारि
गंधरबीजुहीजुयह : अषिलपीय तजलवारि ।।४।। कबित बिर
हनिबिषयबिरत : बिहतनी यऐकपातिब्रत : दीपसिषासीदेह
रहींक्वैषीनरामरत : रोषानलउ गिरोमेरोम : हग्निपरजरिमरिहै :
प्रलयकालसीप्रगटि : कोपिकुलनासहिकरिहै : प्रीयछोलिष्प
लयाकैअनीय : करअहिप्रणतअनेककीय : अरताहिप्रबोध
धरिअंसतुज : मिलिगवनीमंदोदरीय ।।१।। छंदद्वैअपरी ।। कबि
रु ।। सीताबिषमयबचनसुनाये : नयोषिसानोमननहीनाये
रावन ।। सबहिराकसनिकसोसुनाई : तहमासदोअवधिब
ताई : सरनउपाइकरउसमझावउ : ज्योमानैतिहिल्यातिमनाव
उ : तरजनवामनुहारिउताई : कहिअनुहातीतथासुहाई : सम
झिअवधिभैदीनीसीता : नजैमोहिनहीजपेअनीता : कछुदिन
अवधिप्रतीछाकरिहूं : टेकआपनीतिनहीटरिहूं : मान्योनहीब
चनजोमेरो : कहूंनहतोसीताकेरो ।। कबिरु ।। यौंकहिदससि
रमंदिरआयो : दलौंहृदयसीयबचनदुषायो ।। ब्रूधारा कसी
री चा । स्कराहसिसीताहिं उपदेसा : बिबिधिबनावतिबचन
बिसेसा : सफलकरउजोबनतनसोना : लंकापतितवरसहिं
लोना : छीजतजोबनज्योंघनछांही : नीरकरंजुलिगतथिरनाहीं
उसहबचनलगेबैदेही : तबहियेफिरितरतेही ।। सीता बाच ।। जे
कोउछिनपैमोहिजिवावउ : निलजबचननहीफेरिसुनावउ : देव
हस्वनहीस्वानहिदीजे : कबहुयहअनिलाषनकीजे : करउविष्टू
उतनुकलेहोमन : मालतुलसिचंदनसमरपन : द्विजअनषजे
नषेस्वदेहीं : बिमुषरामतोहीरानैदेही : ठगिसुमेरजोब्रह्मलोके
ले : बलबसजोबिष्टबिमिथ्याबोले : हितजुतसियपासजोचरह

जौ अधरम सीता अनुसरही । पृथिमि गंग अवाह पुनीता ः सील धरन
तो छाडै सीता ः अथ नरईतु मस समय विचारऊ ः यह अनरथ कौ मु
ख हित चारऊ ॥ कवित्त ॥ कीनैं सयन जाइ दससकंधर ः मनि म
य पालिक हि मम मय मंदिर । दारुन स्वपन दसानन देष्यौ ः वानर
आयो लंक विसेष्यौ ः कपि तिहि महा उपद्रव कीनो । दुसह रावन
हि परितव दीनो ः सीत हि लै राकस सम उठावति ः दारुन रुंत दिषा
रउरावति ः कोउ बोलति बचन कराला ः हसति नाउ देषी वित्रे
हाला ः दुसह लो त्वन अरुन दिषावति ः गरजि तके उकरकस
सुरगावति ः काहि पउग जम राह नयनिक ः आवति मन रूप चऊ
दिसि अंतक ः करि करि विविध अनेक रूप । षषनि हसत निज
नष स्वरूप । त्रिजटा नाम बिनीषन पुत्री ः बिष्नु भगत बहु परम बि
चत्री ः रहति जानकी निकट निरंतर ः दिन निसि दुष बंट वत उसु तर
त्रिजटाउ ॥ बोली त्रिजटा बचन विसेषा । दारुन स्वपन निसा मैं दे
षा ः मम बच सुनऊ राकसी माता ः तुम हि अंत यह होइहै त्राता । अनु
ज सहत आरुन्यौ रावति ः रहि गट राम बिलोके आवत ः सामित्र
क आरोपित सीता । यह मैं देषी परम अनीता ः रगथा लंका जारि
षी ः बध रावन को सकल विसेषी ः रावन गैला चिंग दिगंबर ः बिह
रत गोमय न दुत बिसतर ः चल दल पल्लव माल चिंचल ः तिलहि
चौबत मुष्टा करतल ः दस सिर मुलित मुरु फूटे हिग ः महिषारूढ च
ले दहन मग ः पुरी बिनीषन लंका पाई ः सनुज रघुबर नय सह
ई ः अनसंष्याक पि सेना आई ः दस दिसि फिरि रघुनाथ दुहाई ः त्रि
जटा स्वपन सुन तउ रत्रासी ः सोरर ही निसचरी उदासी ः मुष निस
स नयन जल मोचत ः सीया सत्ती तमन हि मन सोचत ः पुनि केउ
मरन उपास्न पावति ः तातै बुधि बितर्क बढावति ः विषन हनु कि
वाउ रबंधन ः सस्त्र घात जल अनल सजोजन ः ॥ सीता बाचा हिसि
सि पाम मओर निहारो ः हे परके हित जन मति हारो ः कागम हि
अगनि कहावत ः वेदनु लोक सुसत बतावत ः आगि कारि दीजै
हि अवसर ः कहत निहोरि निहोरि करि ॥ कवित्त ॥ दोहा ॥
हनूमंत बुधिवंत तहां । हितजुत समय निहारि ः अवसर जानि जु
आपनैं ः दीनी मुद्रीका डारि ॥१॥ कर धरि सी त मुद्रिका । आतुर ल
रीउ गाइ ः अनुयहे कैसी आग नि पीय । सीय री लगति सनाइ ॥

॥२॥ छंद छेंग्र बरी॥ धनक निहारि संन्ना रिजु देषी: अहमनिमयमुद्रि
काअवरेषी। राम नाम अंकित अति सुंदर। धरि उर छाती कोपत धरधर
स्वरन रतनमय बिहलसवारी। राम सदा कर पल्लव धारी: यह रहि
गेर हेत कि हिआई: सोचति अति मति संभ्रम छाई। द्रिष्ट उरय तव
त रूतन देष्यो: बांनर वेग गोठार बिसेष्यो: रहां जांनकी अति अकु:
लांनी: बानर देषि बिषम कहि बांनी: ऐक पि क्ह्यो आयो तं रावन
पापी पाप अकासि अपावन।।कबिरुवाच॥ यह सुनि उतरि व्रि
छि तें आयो: करे प्रनाम जनम फल पायो। राम स्नेह मारुति
बानर: उपज्यो साध जनीके उर॥ सीता वाच॥ कपि सो नृप
ति मित्र ताके सी: असें नावनां बात अनैसी॥ हनू वाच॥ मुहि
अपनो किंकर जान कुमन: करु जन निसुनिये जो कारन: क
पि राजा है बालि किकंधा: अनुज सुग्रीव हुतो अनसंधा: देस
निकालि सुग्रीव हि दीनों: क्ह्यो चित बित्र बल हीनों: यह गि
रम्रक सरन तकआयो: पै कारन जु तआश्रम पायो: ब्रह्म आदि
रघुबंस बषान्यो: जगत प्रसिध पुरान प्रमान्यो: रघुबंसी नो द
सरथ राजा: बिमल छत्र पुर अवधि बिराजा: बचन कपट त्री
य नृपति बिनासा। सानुज राम तये बनवासा: यहां रावन उप
जी मति ऐही: बसत पंचबट हरी बिदेही: अवधे सुरगिरम्रक
हि आये। तपस बेष बिरहत न छाये: इहां सुग्रीव सरन जब आ
यो: लेकर यहि अनुकंठ लगायो: तहां तें ईरविसुत हि मिताई
उदय र युबरक हिलाई: सरन बिजय पंजर रूतस्वामी:
चराचर अंतरजामी: नियह बालि परम पद दीनों: कपिसु
हि राजा कीनों: प्रबल कीस चहु ओर पगये: धरि सिरब
चन दिगंत निधाये: अंगद हैया दिस कह आये: द्वादस सुभट
संग समुदाये॥ दूहा॥ नाग्प उदय मेरे नये। मातपुरा कुतमू
ल: उरतन्त पाये तव दरस: सब संसय मिटि सूल॥१॥ सीता उ
रत्यादिक प्रत्यय दये: सीय मनें बिस्वास। आव हनू चिरजीव
अब: देव सिरोमनि दास॥१॥ सीता सुद री प्र ति॥ मनस
कलप बिकलप मति: बिक्रम प्रछति बात सानुकूल दसरथ

सुवनकीः कहिमुद्रैकुसलात ॥१॥ मूकत्ताव है धातुमयः जरूमु
द्रा निरजीव: क्रमयह लछन बिरहकोः प्रकृति रत बिनु पीय ॥२॥
हनुमंत बोल तिनौ हियह: कछु अनिष्टे आहि: ताते होत अधीर चित
दुसह उपजत दाह ॥३॥ हनू ॥ कहि पूछत तिनु मनुद्रिका: होतमो नि
रहि हेत: नाम बिपरजय आपनो: तिहि उतर नहीं देत ॥४॥ करप
ल्लव मुद्रा कगिन: जो ही तव संजोग: सो यह कर आवत सुगम: जननी तु
महि विजोग ॥५॥ मुंदरी कंचन रतनमय: सो पै गढी सुनार: बिरची क
रकंकन बिरह: पुनि रपि जनम प्रकार ॥६॥ छंद चौपई ॥ तह
हनुमंत हि कहत जु सीता: नई रावन के बचन सनीता: निगुरत्तए
मोप्र ति रघुराई: नाग जोग पसुनि हनुमत नाई: कबकुंन केरस्ते
प्रजुकीना: देषो जब दुषित के उदीना: दुषप्रहलाद हि थंभ बि-
दारा: तहा लये नरहरि अवतारा: प्रानकष्ट गजराज हि पाये: आ
तुर गरुड़ छोडि तब आये: सुर निस हार रहा सितन साथौ: इंद्र
चारु बलि राजा बाध्यौ: परम सचित कुरजब पाथौ: वृंदारूह कि
सरूप बनायौ: बेद बिगत जब चित बिचारी: मीनरूप तहा न
ये मुरारी: रतन निकासन सुरनि बिचार्यौ: धरि गिरपृष्ठ कम
ठ तन धार्यौ: रसा असेष हरी जब निसचर: करुनासिंधु तब
हीन्ह ये सूकर: हयग्रीवा पुनि निगम हराये: तेऊ मारि विधि
हि पुहचाये: कोटि कलप की बिरद कहानी: ऐसी किन कग
नो सुधि आनी: उन हि अगम नहीं कछु अनकर: बेद पुरानक्र
हत यो बिसतर: कहुं आदि षमे रेसु निहनुमत: जानत ही ऊंघ
त हे आगत: तन मम दसा छिपी नहीं तोते: मुष करि कछु कहि
आतन मोते: तब जे कुंते प्रान तनत्राता: ते इस्र बहोत दुसह दुष
दाता ॥ कसवैयो ॥ कंटक कपूर लये को न कल्यानक सं-
हारस आहि लये अधियार लये आरसो: नाहर से रूपर पहारसे
पहर लये सेज समसान लये रूषन सुनार सो: आक सो तबो
र सिरं बारसी सुबास सबे चीर लये केव विसो अंजन अंग
रसो: बिपति दुसह ऐसी कपि अब धैस बिन प्रान लयो पा
कुने से प्रेम तो प्रहार सो ॥१॥ सषी को न बसका कुपुनी

...सुनरमंत्रीयहै [illegible] उतिलरहतहै [illegible]
उनतरईजतनिषिग्रे [illegible] उनत [illegible] के [illegible] हरिउतिके
तलपटउपटकराल [illegible] तिवात [illegible] विहात [illegible] करिहरा
स नहजरीजनतीन [illegible] बतीकिजित [illegible] तल्केकरु
केका [illegible] हत [illegible] पत [illegible] उपतनपत
कैको नारीकौननारि निर मित्रकातनिवि [illegible] मारेव
बसन बिसारेबीर धनग्रंथियारे [illegible] बने निये [illegible]
उरबद्धगजनकिरतयबिकेल [illegible] करतो [illegible] तिये
श्रेबाले [illegible] बिलतलहे [illegible] तेवघातिये॥
पत्वातिधे॥ [illegible] कोउमरेनहि के [illegible] कोउ
करमीहैबठकेहै [illegible] ताकालहै [illegible] सेकटे कोउ
लोग बनरबितोकेव [illegible] कोकितल [illegible]
बियिकीत्रिषिके [illegible] करबरम [illegible] रहितहेमाने
पेरेओलगेसवके [illegible] सतले [illegible] मो
घातलहै॥ [illegible] गनअतुलके [illegible] इति
हतहैमागमग्रहै [illegible] निदेषी क
उरारआरती [illegible] बहे [illegible] अवत
[illegible] यह [illegible] कोनथात [illegible]
[illegible] हरोरके [illegible] जाल [illegible]
[illegible] तजानजानको [illegible] राजधाति
[illegible] बातकबिहोहैबिलल [illegible] कलिक
[illegible] गतकरालजान [illegible] किवो [illegible]
[illegible] रहतउपातजातथ [illegible]
[illegible] कोसरीकितहौसीपूनी [illegible]
[illegible] पटकपरही [illegible]
[illegible] बोनग्रानफैतो [illegible] वातालागि
[illegible] तामेकबतागिहै [illegible] फेरे [illegible]
[illegible] टिलरिकाजराजेपिकोत [illegible]
[illegible] केकबतेय [illegible] प्रलयहै [illegible]

हो॥१३॥ मंदिर कुलवै तनो सो जज रिऊंगे मांऊं वसन वचा ये सबै देह वी
चेवा रिये नरतकैयत्न बचे नागि नाम नी नसमन्तई मात कुसर
वतवे पुत्रजा रिमारिये नाई लघुकाद्रो जहा दीरघके नासन्ये
नागिगऐ मां मो नागि नेयेनस नारिये॥ सुनीकं नदे षीग्रेसी आज
कौ तुस हनुमागि बांविबैतन कऊक हो कहा थो बिचारियो॥१४॥ नये
कहा हो इगी कहसथौ के भजा नें नाथ्या चित मैं बिनास के प्रकारसु
नियतु है ये ककपि आयो तिहि गढ़ै जराये गढ़ो स्वामी ताके आपके
अंगमसु नियतु है गदम दग्र हज रे परिजा सबके परे धन गऐ लागी व
इसी सधु नियतु है॥ कादी अध ऊरा दीके हैं पाराति सिवारानि की हेत
वयेषेत जे सेध्या नतु नियतु है॥१५॥ रति वा न बाल॥ नातिना तिआ
जनुम सब दी सय नैतरे काल्हि काल बर जौ न कुल के कुमार कु
रूप चारि तोर के पुष्पा के नए फल षाए वेच लता लछन है कीस
बनचार को बापुरे बानर को बिहसि हंसिलायो वाधिः कहा क
ऊया हि रइजे तार ऊतार को रोररो इहाथ मीकि कहत मदो वरी
नी छोह है करति छाती दे षेलका छार को॥१६॥ रानी अकुलानी ह
हा बानीक है रो इरोर राम जूके आये कहे हमै को ऊरा पि है ऐक की
समायो अब आगम कहत और सुनियत पदम अगर रूकी सापि
है सो तो न बिलोक्यो कऊ लंका के जरत सग आनी हमसो घिसे
घिअजो अनिला षि है तब तौ कहत है सब सबिवसु नयसूरःसी
चीके करे तें अबे के ऊ मन माषि है॥ कवित्त ॥ लंक
त्रिकूट गढ़ कुंड सोज समधा सोरई प्रलयकाल पावक ज्वा
लमाला सी जोई करि राकस सा कुलि भ्रंगफल तिल जव अघ ल
वाल घि सुवा बिसाल होत स्वाहा कोलाहल हर्यौ प्रासि घरौ ताप्र
बल रहौ ऊगा मारुति अनय कीय चंदन पावन नसमको जस
दीन्ह तर हनुमंत जय॥१॥ करिक ऊलह गढ़ लंक तसतद रबीले
गरन अहे कनक थित मध्य नाग पि घले धृत पूरन जातुधान
पकवान तले तिहि तारत तछन ज्वाला पके तिजोरि प्रबल
पवक श्रीय पाऊन पवमान परो सा प्रेम पन प्रगटे सो रन दाह
पुरः हनुमान धम जिवनार हव सहसनो जिमाय त्रिप्रसुर॥
॥२॥ उठे गुलाल अबीर धूम ज्वाला रंग धारीय रंग उछलि
लघु दिघ चली च ऊया पिचकारीय आहि आहि हो हो जु होर

हाहारवहासीय· निरलजकैपतिप्रीथा· विकलधावतपुरबासीय·
आगमबसंतरावनअदिन· पुरीहोलिकापरजरीय: केसरीनंद
जीस्योअकल· कपिजुफाग खीजकरीय॥११॥ बढीय कंकदिनबं
क· लंकआतंकजुलगीय· प्रलयकालसीप्रगट· लगीअनकाल
हिजगीय· परिअपारपतनपुकार· तयतीतजुनारीय· यहैज
सुनउपनीयत· नैरितिहिनिहारीय· परि बेषकेट प्राकारपुर·
केउअनदाहनउबरीय: कारनअनिशदसकंधको: कलबदन
लंकाकरीय॥१२॥ आहिआहिकेउआत· सबदयहजहातहसु
निये: मातनातसिसुमुकि· गऐकऊबनयनगुनिये: सोचिसी
चिंदससीस· करनिधरनीधरिकुरीय: दिनमलीनकैदीन छो
यजीयआसाछुटीय· कृतअतुलकाजसुरराजको· दाहदसान
नउरदयो: कपिबलप्रतापरघुनाथके· भुवनभुवनजयज
यभयो॥१३॥ कबित्त॥ कस्योकोपलंकेस· प्रबलबोलेतहापु
वस· कृतअकालमिलिजलदमाल· दारुनघनदादस: बा
रिदबिनैबिसेषि· दयाकरिआगपादीजे: कलोदसाननजरत
•लंक· कछुउदिमकीजै: गजसूंडिमुसलधारागरजि घो
रियोरिबरख्योसघन: बिपरीतज्वालबाढतबिषम: मनऊ
भयोघृतसोंमिलन॥१४॥ बरषिबरषिघनबारि· मेघमाला
औहरीय· सोनअनलजलसाधि· बिसेजलधरबलखुटी
य· चऊऔरजलज्वलत: बढिसहसगुनबादल· भवअल
तयहतई· हरिकुजलदसुदादल: गुननीरहद्रबलगरबगो
कहाआनिकीनोंकहत· सोईनिये बिसानेमेघसब: चलेता
गिफिरिफिरिचिहरत॥ मेघ बाच॥ मिलिजुकहीयघनमाल·
उसहपावसयहदेख्यो· रविबाडवअहिमुषअसाधि· प्रलया
नलपेख्यो· हानकछुआपनो· नियतबलचलतदसान
न· सोईसुनिसुनिसुनर· मंत्रिमुरझानिमनहिमन: सब
कहतनाथपोलसतिसुनि: कारननहिनकसानकहे अ
नुसारबुधिउनमानियत· अदयरुद्रबिकारयह॥ कबि
रु॥ हरा॥ दससिरदसहीरुद्रहित: करेहोमलंकेस· मा
रुतिऐकादसमसिव: कीनोकोपबिसेस॥१५॥ जुकति
नपकतिभेदको· करिबेकिऊप्रकार· लंकादईजराए

कपिः कीनें अंत बिकार॥१७॥ तपन लग्यो हनुमान तन लंकाज
री समूलः बास बिनी षन को बच्यो सेरा वन उर सूल॥२॥
क्रुध्यो हनुमंत लंक ते अगनि बुझाई आनि मंजन कर्यो समुद्र
महः अवधेस रउर ऽ आनि॥३॥ जहां फिरि कूद्यो उदधि तें नल
मारग हनुमंतः आनि कर्यो बहुर्यो उमार्गः सीता दरसन
संत॥१८॥ सीता बाच॥ अजर अमर रन जय अषिलः हे ऊस
दा हनुमानः परम नगन तु मरामत्रीयु सीता कहे सुजान
॥२५॥ छंद पधरी॥ ऊंसे कउ दधि बूड़ति सुनाइः अवलंब
नयो तू पुत्र आइः यो छांडि जात तुम हू जग्या हिः गहरात वि
तन ही कउ गेहिः मिलि कहं जरत यरमा निमेहः देषिहौं व
लेमम दसा हेः छतिय जु फट तिग्रति बिरह छोहः मन चकि
तन यन जल जरस मोहः दस कंध मास सदै अवधि दीनः लैथि
दिवस षान मो हि बृत जुलीनः पुनि आस कहा कि रिहे कपा
लः सो ईस्ति षेमो हिज बसुर निसालः॥मारुति॥ मत करो सोच जी
य जन निमूलः सब हरिहे राघव बिरह सूलः सह नांन मात मुहि
ऊ सारः है तेजि हि राम बिस्वास है र॥१॥ कबिरू॥ मनि ग्रंथित क
वरी गो पिमानः सो लई छोरि सीता सुजान मनि दीनी ले हनुमंत ह
थ सो सीस बंदि लीनी सनाथ॥ सीता उ॥ सुनि प्रतय इक देन्
सुनाइः पुनि कहेो राम ये कोंत पाइ॥१॥ कबित्त॥ चित्रकूट परव
त बिचित्र महिमा प्रसिध महि मिलि बेगे दंपति महीप नहा फ
टिक सिला तलः इंद्र कुमार जयंत काक ह्वैकै स्यो उ इक्रम
तु कीय सीका अध काण कीय अतुल पराक्रमः तिहि समय
करे मन सिल तिलक नाल ना तग्रति निरयोः सो कहि बो मारु
ति राम सो दे बिगट प्रसय दीयो॥१॥ मारुति॥ छंद पधरी॥ उ
षदा रुन अबलों सहे दे हः अंब कछुक दिवस नव तम्य हे
अगनि तरल बानर नालग्याइः बारिनिधि सेत बांधे बनाइ
निसचर संघारि दल लंक जानि अब दरसन राघव देहि आ
निः मतमान ऊ कछु मन सोच माइः सब नांति राम करिहे सहा
इ॥ कबित्त॥ सीय पार कत साधि दाहलंके सउराह दी
यः बन बिदारि मिलि अहमारि सुरकारिज सधीयः राम

श्रीयासंदेस॰ कहेलैचलेसकारन॰ करिबंदनपरिक्रमन॰ नियतसी
यसोकनिवारन॰ आगमनगमनलंघतउदधि॰ तयेजुबिक्रमअ
तुलतुव॰ सुरराज हरषनररसुकबि॰ हनू किंत्रियलोकउदवः
॥१८॥ पारप्रतीछासीतापहः चूडामनिचितचैनः काजस्वामि
कोसिधकरिः उचक्योकपिनअंग्रेन ॥१॥ छंद पधरी ॥ कपिमह
गरजकीनोप्रकासः तिहिगरजआवनिसचरिसत्रासः सुनन्द
मिलतातसनिकरअंग॰ आकासफुतेउतसोअनंग॰ रकअद्रि
तीसजोजनउतंग॰ तटसिंधुबिकरअतितरलअंग॰ तबचढ़ेकूदि
हनुमंततासः पनकरेउदध्यकंपनप्रकासः सोलईफ्रमारु
तिअसेष॰ अद्रिवहन्ह्मिथसिगोबिसेषः कपिगगनकिलकि
लासबदकीनः तिहिवेसुसुनेअंगदनवीन ॥ १८ ॥ इकसीन
सरमाआपनेः सखिसमाजग्रहिसंग॰ करिनरामसीयबिर
हकोः पुनिसोईवलोप्रसंग ॥१॥ रामरामसीतारटति॰ धरति
निरंतरध्यानः अवलोकीकिउआसुरीः परेजुसंक्रमप्रान ॥
॥३॥ राकसीवाच ॥ छं॥ सरमासोंकहितिहिसषीः यहपैवन्योअजो
ग॰ कारनकीरातंगको॰ पुनिधोकवनप्रयोगः ॥ कवित॥ राम
राममुषरटति॰ नियतउरध्याननिरंतरः नवनवबिजोकीटन्हें
गनहीरतसुरऊनर॰ रामहोरजोरमनिः बिरहसंकटपरिप
रवस॰ सोहिनजाइयहपरमसाल॰ हीयअतुलतपरहसः स
रमासोपूछोतिहिसषीः अबबिचारकरियेरहा॰ जिहिक
रनउऊयाहोतजुधः तबकेसीबनिहैतहा ॥ सरमोवाच ॥
महासरमाहसिताहि॰ आपउतरदीयअैसो ः लेजुकसोसबत
न॰ जगतमहसुनियतजैसोः सीताजोरामहिसनारि॰ हिवध्यां
नधरतहीयः जपतरामजानुकी॰ जतनबऊकरतमिलनजी
यः जोक्वैहैनारीनाहहग॰ नारिनाहक्वैहौनियतः इहिगेरस
बीनहीसोचअब॰ रसबनिहैबिपरीतरत ॥१७॥ दूहा ॥ सर
मासषीसमाजसुष॰ समयबिलाससमेतः तरक बितरकब
डारवितः हसिहसिउतरदेत ॥ अंग हादिमारुतिपुनरा
गमन ॥ छंद पधरी ॥ आनंदकपिनिउपजेअनंतः जान्योजु
हनूआयेजयंत॰ सबतयेमहाहरषतसुनाद॰ इहिबीचमि

लै हनुमंतग्रार: लैलेसबनेटकैंगलार: अफुलेमनुनेतनजनम
पाइ॥ अंगदा॥ ब्रूडतजिहाजज्यौंआनिबीर: अवलंबदयौ हम
हिंश्रथीर: मनतलफतमनजौबिकलमीन: निरषोषमिलेतुम
यननवीन॥ कबिरु॥ उम्बिलेसबैरघुवंदअ्रौर: चितमोदमन
ऊथावतचकोर:॥ अंगदादिबाच॥ मिलिसबहिनपूछेहनुमंत·
बिधिजुकतककुकारनश्रंत॥ मारुति॥ जानकीदरसकी
यनिकटजाइ: अवलोकिदसाननइहाअ्रइ:॥ कबिरु॥ सुग्री
वसुबदरसितसुगांम: नियराइतबैमधुबनसुनांम॥ कपिरु
वाच॥ मिलिचलियैअंगदधसहिमाहि: अतिलगीपुधाबनफ
लनिषोहि॥ अंगदा॥ जुवराजदईआग्यासुजानि: करियेफलन
हानछांडिकांनि॥ कबिरुबाच॥ कीयफलअहारमधुपान
कीन: निसेषस्वादलैलैनवीन· रहाअ्रायेबनरछकअपार·
मुष्टीप्रहारतिनलहेमार॥ दूहा॥ कपिराजासुग्रीवको: मा
मोदधिमुषनांम: सोमधुबनरछकसदा· कीनेंप्रभुहितकांम:
॥१॥ बागबिगास्यौबानरनि: मधुद्रोणकासमेत· सोदधिमुष
सुग्रीवसों· हैबिनयेसबहेत॥२॥ सुनतबातकपिराजसोईवा
दौउरबिसवास: निसचयपाईजांनकी: तेपायेफलतास॥३॥ क
बिरुवाच॥ सबकपिआयेतिहिसमय: अंगदअयसुअ्रौर: बिमलअ
बरषनगिरबिषय: राजतरघुकुलमौर॥४॥ कबिरु॥ कपिसबदंड
प्रनांमकरि: कहोजथाक्रमकाज: प्रभुतवअतुलप्रतापतें· सिधन
येसुषसाज॥५॥ अंगदउवाच॥ जिनबनरामप्रभावतव· कछुन
दुकरदेव· सबकहिहैमारुतिसमुझि: तुतनवजितकेव॥६॥ वं
हितरलेगईमुद्रिका· मनिलाईइहिंअ्रौर: रामप्रतापकसीयसत
फलेमनोरथमोर॥७॥ दरसमातकीनेतुलन· हैअसोकवन
माहि: तहांबिलोकीषीनतन: जुगबरछनछनजाहि॥ छंदप
धरी॥ पुनिप्रभुहिहनुएकांतपाइ· सबकहतभये बिधिजुतसुना
इ· सीयदुत्रदईमनिसवधांन· पुनिदयेउनयप्रसयप्रमांन॥
चित्रकूटतिलकमनसिलसचीन· वांइसतहांकीनेंचषबिही
न: सीयकहेबचनसुनियेसुनाइ· राजाधिराजरघुवंसराधासी
ताबाच॥ अतिबिरहसिंधुबूडतिअनाथ: हितदऊनाथअव
लंबहाथ॥ दूहा॥ ज्यास्योप्रहलादहुम· प्रगटसुवेदपुरां
न॥ अवधिबितीतेमासदे: पुनिकोकरैप्रमांन:॥ लछमन

बा सीतासदेसउचरनं।। छंदपधरी।। लछमनरघुकुलकी
तोहिलाज: अनउचितबचनसुधिकरिनआज॰ पतिसासुजननि
सुनिनहीप्रबोध॰ बसप्रेमकरेमैनयबिरोध॰ त्रीयजनमनिकसि
बनवासबीर: परिपाकसहतलेईबिरहपीर: उरषोजततऊनैनकु
मतिआप: तोसहितबिरहदुसहसताप:।। श्रीरामबाचा।। सोर
ठा।। हैंजीवततिकुहेत: जनकसुताहनुमंतजो: कहियेयहसंके
त॰ देषीतुमजेसीदसा।।१।। हनूमतसीतादसाबर्ननं।। छंदप
धरी।। इकबेनीचिंतामलिनचीर॰ सबनावसहतपरितवस
रीर: परिबेषराकसीआसपास: तिनबीचरहतसीतासत्रास:
देषीनजातिदुषसहतदेह: सुषमरतनदंतमोसोसनेह: जैसी
अवलोकीमातजाइ: ऊबचनकहतनाहिनबनाइ: अबसेषरहे
कछुप्रानआइ: स्वामीत्रिलोककरियेसहाइ: जेहोनदेवयहसमयजान
पुनिसुनिहोसीतातजेप्रान।। सवैया।। मेरीतोदुसहदसादेषीतु
महहनूमान-जबतेबिछोहानयोसांवरेसनेहीको॰ नैनपेनफूटिग
येप्रानऊनछूटिगयेदुषयेतेसहतनरोसोकेसोदेहीको॰ जलतेबि
छुरिपलमांऊमरिजावेमीन: तातेलोकबेदगावेधन्यपनतेहीको॰
संकरकेसाथीसदादीनकेदयालदेव: बानसोलग्योहेमोहिबि
चनबिदेहीको।।१।। दूहा।। जोलोसीतानयनजल: सागरमिलि
हिनआइ: प्रभुतोलोयासिंधुपर: बाधऊसेतबनाइ।।१।। प्रभुत
वनामजुपाहरू: ध्यानकपाटधराहि: प्रानसुजंत्रितनेत्रपल:
निकनपावतनाहि।।२।। छंदपधरी।। मोहिचलतसीयाअतिदीन
मान: दृगिबहतनीरयोंकहिनिदान: मनरामचरनअनुराग
मोहि: तोबिसरिकिचनाहितकहुतोहि॰ मारुतियहअवगुनए
कमोर: कीयनाहिगमनजीयतोकठोर॰ छतीयानफरीबिछु
रतसछोह: मनव्यथाअबेसबजानिमोह: सबजानततुमसी
तासनेह: अबकहाकहालगिकथाएह: कछुछिप्योनहीतुम
तेकृपाल: दिनदसाजुसीयबरनतदयाल॰ जगनाथजगजित न
सरबजान॰ छिनजातसीयहिजुगजुगसमान: प्रभुसीतातनम
नकष्टपार: जगदीससुमीपहकहिनजार: ऐसोअनरथमेदे
षिआप: प्रभुदयोधीरतवबलप्रताप: ममदृष्टिमात्रसुनि
येजुमार: सबकारामकरियेसंहार: अनसोयत्नयेगत

दिवसयेह: सीलयीरामसानुजसदेह: आरहेरामलषमनंग्र
नेग: साषामृगेससुग्रीवसंग: अंगदअसंकजुवराजआर: सोसदा
रामसेवकसहाइ: अनपारजथपजथपअनीत: सबआयेदेषकुमात
सीत। बांनरसमूहासिरसेतबंध: करि हैसनासबरवारिकंध: सब
उश्रसकलरावनसंघारि: मिलि हैंकृपालतबजनुमुरारि: बिधिबि
धि अनेकदीनेंबिसास: इकसीयहिरहीतवदरसआस॥कबित॥
कपिराजसहितअंगदकुमार: सबबेगिसजाजथपसुदार॥जाम
वंतआतवकसोरामसोंजामवंत: प्रभुतबप्रतापमहिमाअनंत:
कीनोंतथापि हनुमंतकाज: देवनिजेदुरगमदेवराज: सीयदेषिपु
रीलंकाप्रजारि: मिलिमनिरलाननअसमारि: कृतकरेजुमारुति
उधकाम: रसनाइककेतककलराम॥ सुग्रवउवाच॥ प्रभुके
मेरोआपुनें: सुरसुरपतिसुषसाज: कहिहुकेठरहारामसों
कृतमारुतिहितकाम॥१॥ सतजोजनसागरसलिल: कूदि
गयेनिसंक: आयेसीतासोंथले: कस्योदाहगढलंक॥२॥
कीनोदरसनजानकी: दीनीलंकजराइ: मास्योअछकुमारहन
पुनिदेषेप्रभुपाइ॥३॥हनूवाच॥छंद पधरी॥ मोतेंनभयो
कछुमहाराज: हनतबप्रतापसबसिधकाज: बानरकोप्र
भुयहबलबिष्यात: जोसाषहुतेसतिसाषजात: जारीजुलं
कअघनारजोंन: अरुहनोंअछंबालकअगांन: बिनसोंजु
बागजहांवजाहिं: यामरुममबिक्रमकछुनआहिं। निश्चलै
मोहितहांमेघनाद: पुनिछूट्योजीयनप्रभुकेप्रसाद:॥श्रीरा
मउवाच॥छंद दोधरी॥देवनिकहुं करअतिदारुन: काजहनूसो
कस्योसकारन: सतजोजनहुसतजोसागर: जलअगाधथलन
हुबसतबर: नयोसुगोपदमनजलीरलर: कूदिगयेलंकागढ
कांगुर: बीरमहाबलबुधिबिसेषी: दुरगमगेरजानुकीदेषी
सुनिसुग्रीवकहतसतनाही: हनुमतनेंकरनहमनाहीं: हनू
वाच॥तुमपरपुरुषरघापरपूरन: अपनेंकरतकृतारथजाउ
न१॥ कबित॥ छंद पधरी॥ पदसीसलाइमारुतिप्रबीन: कछ
नोंजुतहंलअनामकीन॥श्रीरामउवाच॥ मिलिकेंवठारहक
लोराम: मारुतितुमकीनेंसबेकाम॥ ॥मारुति कहेत

पाथेनिधिनहीपीयो: प्रबलनहीलंकपलटीय: आनंनदसअवधेस
अग्र॰ कंटकसिरकटीय: संगदासिमयसुता॰ रहासीतानहीआनी
य: सुनऊदेवदेवेस॰ मुहिनपोरुषपरमानीय॰ करजोरिवर
नबरनकरो: सोकृतकिकरअनुसरीय: अषिलेसजुलावत
मोहिउर॰ कवनसुमेबिक्रमकरीय॥१॥छंदपधरी॥बेगुरिनि
करकरअहिबिष्यात: बरबीररामकपिपूछिबात॥श्रीराम
वाचा॥केसोगरदेष्यो विकटबंक: लछनप्रकारहनुकहऊलं
क:॥ मारुतिवाच॥ कनकमयकोटिमंदिरसकंक: तहाबसत
उग्रकंटकअसंक॰ सुतबंधसचिवसुतरनिसमाज: सुषसमृध
चितबंछितसुसाज: थितद्वारचारितहाबिकटद्वार: पुनिसं
युतबज्राकृतकपार॰ अरगलासुलसंकलअपार: राकसत
हारहाकद्वारद्वार: अगन्नासस्त्रधनुरधारीअनेक: अनग
नितकंगुरनिएकेएक: संष्यासहस्रराकससनध: पसचि
मद्वाररहकप्रसिध॰ मदमतगजनिचढिचोरमार: दिन
रात्रिफिरतजोधाद्वार: उतरद्वारअस्वाअरोह: सहसनि
सकुधसनाथसोह॰ पूरबदवारपयदलप्रचंड: दसकोटि
नुरधरदुसहदंड: इकवीससहसरथतरअपार: दारुनसदु
दछिनद्वार॰ परिमातहासतजोजनप्रमान: नरनीरगह
रसागरनयान: आवरितसीमसागरअगाध: सबजंतब
सततामहअसाध: अतिकायनक्रचक्रअनेक: अपआप
तिमिगलग्राहएके: मनुआहिसाधसबतवप्रताप: अषि
लेसकरऊअबगमनआप॥श्रीरामवाचा॥ सानुजप्रभु
बोलेसानकूल: सुषसाधसबैह्वैहैंसमूल: कपिराजक
रऊअबगमनकाज: जुतरोषकह्योमहाराज: सीता
हिदेषिआयोसधीर: बससोचबिलंबकरियेनबीर॥१॥
जूथपोवाचा॥ यहसुनतजूथजूथपअनंग: गिरमानदेह
ज्ञापनबिहंग: चितबढेअषअतिजुथचाहि: हमचढलेहि
गढलंकदाहि॥श्रीरा मग मनोदित॥ जटजूटकरेसा
नुजसधीर: बनपटलपेटिकटितटानिबीर: गहिमध्यता
गबांधेनिषंग: आकरषिबानधनुमनुअनंग॥ नयेरोषउ

तारनतुमिलार:सकुरंबकरनरावनसंघार: हरितिहेरामश्रानलव
ऊ: श्रतिबढ्योचितश्राह्वउछाह॥ श्रीरामवाच॥ छंदउधोर। श्रवयहे
मझूरतश्रार: पंचागसुनसुनार: श्ररुविजयदसमीयेह: सबसिथ
निसंदेह॥ कवित॥ सुकलपष्टरितुमास: मासश्रस्वनिदसन
यन: सुनकारकपंचागसुध: मिलिसकुनजथामिन: सुविसुध
बसाखाम्रोस: श्रंगदश्रतुलितबल: श्रषिलरीछबानरश्रनग:
दससीससीसहल: श्राकंपश्रवनिनरहरसुकवि: नियतनाग
पतिफननमीय: दिगबिजयबिजयदसमीदिवस: सेनलंक
दिससंक्रमीय॥१॥ समरचलनकपिसेन: तजतमिलिपंथ
सरितसरं: पथसुपानतिरझरनिवान: नयेसुकपकनगर: र
हिनपंकसुरखन: गवनसमबिबमनतुमिलय: बातस्वरनस
बिलास: सोईरैनगगनगय: बिसमयजचक्कचकीयविछु
रि: नहाश्रवरोधदिगितनम: सुरहरहरषनरहरसुकवि: क्र
तरघुनाथप्रयानक्रम॥२॥ नागराजफननमीय: कमिनलगि
कमगपिठिकह: दसनटेकमुषटुसह: तिष्यपरित्रिकपबिलह
कोलरहतनरकरकि: संपमरकटनटसंगम: धरनंगौनप
रिजानधान: श्रवधेसुरश्रागम: दिगपालकोलदिगदंतक
र: रहिनचकितसंमासरव: श्राकंपकुलाचलननश्रव
नि: कहिजयजयजयनरहरसुकबि॥३॥ सवैया॥ पदहतउ
त्तगगनमगरेनथथी पूरियनसिंधुसरसरितप्रमानहैं: दूर
उरनिचतरुनिकेमहाजूथ: मूलसलनरहैमहीहोतजुमेदा
नहैं: फाटतपहारकपिचरनप्रहारपार: ठिगेब्रहमंडनार
श्रसहश्रमानहैं: मचश्रोभवकिजात: श्रवनीकेश्रंगमूल:
पृथीपतिरामजूकेप्रबलप्रयानहैं॥४॥ छंदउधोर। संक्र
म्योसेनश्रसंष: कपिमनहुपरबतपंष: बनिश्रग्रथिवि
रूथ: जुगपारसजूथपजूथ: गजगवयमेंदगवाषि: दुनि
द्विबिदितारजुदाषि: नीलनीलसबलसुषेन: संगजामवं
तसुसेन: दसहरिजूथपञोर: सबश्रगेगरहीगैर: हरिदृ
ष्टिपरबतहाथ: सबचलेसेनसमाथ: संक्रम्योबिजरीसे
न: रहिगगनपूरितरेन: करिश्रतरितरिबचक्र: बनिदिवस
करकबक्क हलहलतिधरनरहेर:

उ किरेनछे दिसिग्र थ॥धरगगनघन मिलि धंध॥पातालसातसके
पं॥संचारकपिदलसंप॥ठगमगत धर गिरडोल॥लगित्रासक
मगीकोल॥सरसुकिरेन सपूरि॥नयनीरकर्दमन्हूरि॥मिलिन
लेमर्कटमाल॥आकासपंथउ छाल॥अंतरीषसो नागंग॥अ
नेकरंगउतंग॥बपुबरनबरन बिसाल॥जनुउनयजलधर
जाल॥जुध हेतमरकटजूह॥मिलिपंषप्रहिसमूह॥नरतुटि
उरचबिलास॥बनगहनघनजुबिनास॥कपिसेन बहतस
कोप॥पाथोदिमनुहदलोप॥षितिउगीनतचढिये ह॥ऊवचक्
चक्किसदेह॥ञुकारऊंपहिबीर॥मिलिगगनगतजुसमीर॥ब
ढिबीररसतुजबाह॥अतिकुधजुधउछाह॥कोउकहतढाहहिं
लंक॥कोउउदधिबोलिअसंक॥कोउकहेआहिदसकंध॥बिछुरहिं
नवग्रहबंध॥मंदोदरीअहिम्तल॥दसकंधअत्रदकूल॥बसकर
ऊबदनबिलो कि॥कपिमध्यराषकुरो कि॥सुतबंधुसहतस
धार॥निःसेषकरिनिसचार॥उदमादबढिजुधअंग॥यों चलेद
लअनन्नंग॥कबित॥बीरप्रेतबेताल॰ न्हतबिं नरपिसाचन्ह्व
ठवरूपनिसंकनीय॰ हरषजबिनजुगनिऊव॥प्रचरिबिल्हय
धीप्रसिध॰ पंषीपलचारीय॥सिवाआदि ब्रकगनअंगाल॰नष
जंतनिहारीय॥संग्रामआसग्राहरसुष॰ धावतकोतुकमनध
रीय॥संभ्रानतासनरहरसुकबि॰ सेनपिठिमिलिसंचरीय॥
॥त्रिभंगी॥ नहीनससत्रसनाह॰ बसनबनधनुषबानध
रा॥नहिनबाजरथनाग॰चमूचतुरंगचरनचरा॥नहिनरज
रचना तिहांन॰ जरबानजुगमजन॥बनि बिन्हतिअवधूत॰
तदषिनृपलछुनगुमतन॥प्रा तमे मातदेषेघुसष॰कपिस
मूह बिबिगिरकुहरा॥आबिजपरसपरकहतयह॰ बिहसि
बिहसिरमनीसबरा॥१॥अंबा॥ जयकारिजलंकाअजेय
पाथोदितरनपदा॥सब सत्रुदससीस॰ महातुजबीसजुउ
रमदा॥देवआपसानुजउबाह॰ कुलराकसषयकरा॥पुनिस
हारहहा मिलेआइ॰ बनचारीबानरा॥संसारसुपोसषस
घिसब॰ परिकरनो हिअमानथी॥कतसिघहेतनरहरसु

कवि- पूरन फलप ह्वांनिये॥३॥ कुलराकसनयपरीय। ऊमर
आनेंदउपजीय॥ संकलंकलंकेस- विकलजीयआस विबजि
या॥ भजतनयत्र्यहिवातआस उरत्रुटिउदासीय॥ घर बिलास
घरघरनिघेर- बिनतपुरबासीया॥ आगमअनंगअवधेसको
बिरतबावजग बिथरीय॥ कपिजाल प्रबलदलरामके- आनि
सिंधुतरउतरीय॥४॥ दूहा॥ ॥कबित॥ परिमितअष्टादस
पदम॥ कपिदलजालअसंक॥ तेसबआये सिंधुतर॥ लेंन हार
गढलंक॥१॥ देखिगयेसोईनृतदिग॥ रावनकेदलराम॥ सुपेवा
ततंकासुनी॥ मांनऊबज्रबिरांम॥२॥ छंदपधरी॥ घरघर
पुरलंकाथहेघेरा॥ बससेत्वसबे संध्यासवेरा॥ दिनराविदुस
हनिंद्रानतेंन॥ बिसमयगतकाऊनभुरतबेंन॥ यहदसाव
रीजबलंकआय॥ जुवतीसत्रासरनिवासजाय॥ सत्रीवाच॥
मंदोदरिआगेकहतिमूल॥ सुनिहतबातउरउग्रसूल॥ आ
गमनरामउरपरिउछाव॥ सुनिहोतअसुरत्रीयगरभस्रवे॥
दहआयेहनुमतनठऐक॥ बहिकरेकरमदुसहअनेक॥
बिपरीतकालबरततबिहाल॥ बिललातवृधजनतरुनि॥
बाल॥ करिसंधिरामसोंदेऊसीत॥ तुजपकरिकहैपति
सोंअनीत॥ परराजीतुमआपुनप्रबीन॥ यहमंत्रआजतुम
हीअधीन॥ मंदोदरीउ॥ मंदोदरिदैतबचनमांन॥ सबकरी
बिदाकरिसावधांन॥ रहिसमयदसाननग्रेहआय॥ तनमु
षमिलिमंदोदरिसुनाय॥ थितनयेजुदंपतिमध्यांन॥ बि
सतारमंत्रहितचितबिधांन॥ मंदोदरी॥ नृपनीतिर्कतसु
नियेनिदांन॥ नयलोकहोतअंतरनयांन॥ आगमनरा
मउतपतिअलाव॥ रजनीचरग्रहनीगिरतगाव॥ उरतजऊ
रोषअरुकहऊयेह॥ दुमररेरामकहसीयादेऊ॥ पुनिषूत
बंयपूछऊप्रधांन॥ परलोकवृधजेबुधिप्रमांन॥ कुलकंज
बिपनतवराहकारि॥ यहआइसीयाउतरवयारि॥ दीनें
बिनुसीताअवरदाउ॥ बिधिस्वरूपनहीअपनोबचाउ

आवैन रामसा मुखारा॥ चितते लोकरिये यह विचारा॥ रावन॥ त
ब बोल्यो रावन की थैं टेक॥ अहंकार अगरत्रे लोक ऐक॥ अबलायह
जातिमुत्तावअंक॥ सुष ही महलच तरुरससंक॥ अंतक बसमर्क रि
करंक आय॥ आसुर सबषे हैं तिन अधारा॥ छंद छेअघरी॥ कंपतती
नत्तवनममतयकरि॥ सोच करें क्यों ताकी सुंदरि॥ यहसुनि के
हैं लोक उदासी॥ हैं अन हितसो करि हैं हासी॥ मंदोदरी॥ दुहा॥
दिष्ट ऊती तवरूप रता॥ पुनिआपुन बलवंत॥ नोरिसरासनसे
सुके॥ सीताबरी नकंत॥१॥ चौ॥ जिलायै रामत्रीया॥ साजिक
पटमुनि बेस॥ बरीमीचकी बेलिसी॥ लंकमांझ लंकेस॥२॥ बालि
बली परदेश भजि हि॥ रन मास्यो करि रोष॥ क्यों बेचि हो तुमसो क
हो॥ जिहिसिर अपनो दोष॥३॥ तिनकी धनु रेषातनका॥ लां
घीगर्ननराज उनसों रनसागर अगम॥ क्यों लांघ उगे आज
॥४॥ तिहि तो स्यो को दूरहरा॥ मान सुरासुर मोरि॥ सोक हते
रोलेक गढ॥ सकहि न छनमहतो रि॥५॥ छंद छेअघरी॥ जगत ईस
ता आपहि जानत॥ अतिहि गुमान न हितउर आनत॥ बातन सु
नत कंत अहमिति बल॥ किरि अधार षे हो ताके फल॥ मन अति
मंदोदरि मुरझानी॥ बिधि बिपरीत बात सब बानी॥ अतिहि गि
रब गुत बाहिर आये॥ बेगि सिंघासन छत्र बनाये॥ रहत
सचिव सुत बंधव आये॥ निज निज नाव बेगि सिरनाये॥ छं
द पधरी॥ तहां कुंभकरन आये अतीत॥ बंदन करु रावन क
हं बिनीत॥ अप जस मीप बेगे सु आर॥ सब सुनी कत बातें
सुतार॥ कुंभकर्नउ॥ नृपनीति कहन लगे निदान॥ सुनि थे
प्रभु क्रेहेन सावधान॥ आरंभ कस्यो तुम करम येह॥ हैं नास
हेत सो निसंदेह॥ देवत तुम राम हि मनुष देह॥ अब्य य अनं
त भगवंत ये ह॥ सीता है लिछमी आदि सो स॥ हरिमहा प्रीया
नारी न हो स॥ हैं राक समूल बिनास हेत॥ मीन हि स्यो बन सीप
ल समेत॥ तुम सबे नीति बिद्या निधान॥ रहि समय कहा के
उक हैं आन॥ दुहा॥ तुम आपन समझत सकल कहीक
रतन हीकान परत्रीय हरि आनी प्रथम। जा दिन मीचन

जौनि॥१॥ जिहि बरतु मजीतो जगत॥ सुतौ बितीतै आंज॥ अब
तौ ता को सोचक हा॥ आनि बनी जब राज॥२॥ जिहि कटै चौ
दह रतन॥ षीर समुद्र मथाय॥ सो इहि छुद्र समुद्र कह॥ सकै न से
तबंधाय॥३॥ रावन॥ काची निद्रा तुम हिं कि हि॥ अधम अंगए अ
जा॥ ऊधस तावत है अधिक॥ सयन करउं सुष साज॥४॥ कह
मनुष कपि धौं कवन॥ जानु कुबेर षराज॥ करि करि तिन कौ
उतकरष॥ कुंभकरन वत आज॥५॥ न हन्त हम नै गत॥ नर बा
नर थं हिम॥ बधे रसरी काल की॥ ये घर बैठे आय॥६॥ कबित
देषौ रावन कौ अदिन॥ हित उपदेस न होय॥ जिहि ऐसी न व
तम्यत॥ कहा करै अब को॥७॥ छंद दोधक॥ याही समय बि
भीषन आये॥ बेगे जहां प्रभु आइस पाये॥ इंद्रजीत बानर
इंद्रजीत बोलौ अधिकारी॥ नर बानर नहीं दिष्टि हमारी॥ राम म
नुष सो न छम हमारो॥ बानर रीछ कितेक बिचारो॥ स्वामि दे
ऊ आग पाल केसर॥ करहिं अवनि तो अन रअ बानर॥ रावन उ
रस सिर रहा अनुसासन दीनौ॥ निज मंत्री तुम सबैन चीनौ॥ क
रिबो आज सुसब मिलि कहियो॥ रोष मा निन हो चुप करि रहि
यो॥ कारिज के आगम जो कीजे॥ मंत्र बहउ तम मानीजे॥ पर सौ
रत बमंत्र प्रकासो॥ न बसो पे मत मध्य मनासो॥ बीते काज उ
मंत्र बिचारो॥ वहै अधम मत जगत उचारो॥ आज मंत्र करिये सो
हित मा॥ तत जांन स्वामी हित हो तुम॥ पुलह सुत॥ तुम हि राम
नय के सो रावन॥ सुर सुर राज हि सा जिस तावन॥ जीति कु
बेर जथा तुम जान्यो॥ अरु षसो रिभु ह पकर थ आन्यो॥ जम उ
मजये दुस हु षदीनौ॥ काल दंड कै लयन ही कीनौ॥ को उ तुम सों
वल बरन न कीनौ॥ उ षपू शिव तुम ता कू दीनौ॥ मंगरअ सुरमय
क वरि प्रबीनी॥ देव तुम हिं मंदोदरि दीनी॥ महासुरासुर जे महि
नंदला॥ बरतत तव आग्या वस तजि बल॥ संतुअ रम तुम सर
सहये॥ अवर देव किहि गणनां आये॥ नरंम ह कुंभकरन तव भ्रा
ता॥ देवराज देव निउ षदात॥ इंद्रजीत जेगे सुत अति बलवा रेव
राज बा ध्यो जिहि हतिदल॥ मांन म रि बासव मद मोरयो॥

छीयेचरनतवतवसोरह्योस्ये॥ बिभीषन बाच॥ दो॰॥ बिभीषनल
क्ष्योअमंगल॥ बोलतसत्तमृदुकरिकरिबल॥ नाणिद्सानन बिप
रितताती॥ सबहीकहतहैंगुरुसुहाती॥ सचिवबेदगुरकहेसु
हाई॥ नीतिदेहनृपधरमनसाई॥ दो॰॥ बिभीषनजुगकरजोरे॥
मतिअनुसारकहूंकछुमोरे॥ प्रभुकोजोअनुसासनपाऊं॥ स्वा
मिहेतउपदेससुनाऊं॥ दो॰॥ सरदनिसाज्यौंसुकल॥ चे
थिचंदचितचेत॥ तासमपरत्रीयसुषपुरुष॥ हेरतनहीकिऊ
हेत॥१॥ कामक्रोधमदलोभसत॥ हैंज्युंनर्कसमहेत॥ सुषजस
चाहततजतसो॥ मनक्रमबचनसमेत॥२॥ अष्टिउपाजक
पोषसुष॥ हैंनासऊंजिहिहाथ॥ तासौंबयरबिरोधबिधि॥
नीतिकुसलनहीनाथ॥३॥ सीयानत्रीयसंतावन॥ रामन
नरस्तुवपाल॥ प्रभुप्रतिमात्रममतपरऊ॥ हैंकलऊकोक
ल॥४॥ रावन ऊ॥ तोय्येकोहैंकहऊंतुम॥ करिनिरणयनि
रधार॥ पंचहूतकीप्रवरतिसी॥ सबदेषतसंसार॥५॥ बिभी
षन॥ छं॰ पा॰॥ परब्रह्मरामसंगलषनसेष॥ सुग्रीवअर्कअंगद
सुरेस॥ नलबिस्वकरमअरुअनलनील॥ सतबलीवर्णअजअ
जसुसील॥ मिलिमयंदद्विबिदअस्वनिकुमार॥ मारुतसोईस
रुतिअरुमार॥ गजसरतगंधमादनगवाष॥ सोपेंकृतांत
सुरकहतसाष॥ रस्यादिसबेअमरावतार॥ नवरूतनये
जुवहरनतार॥ दो॰॥ गोद्विजबेदसहारबपु॥ निसचय
कृपानिधान॥ रमिउतारननारस्तव॥ नयेमनुजनगवा
न॥१॥ सुमतिकुमतिदोउएकसंग॥ बसतसबनिकेचि
त॥ तिनहीकेफलत्तागवत॥ निगमकहतयोनित्त॥२॥ जह
सुमतितहासंपदा॥ कुमतिजहाबिपरीति कालनिसासीअ
सुरकी॥ स्पोमबसीमनसीत॥३॥ समयनिहारिबिसारिरिसअ
जुउरधरऊकृपाल॥ सरनाईपंजरबिजया॥ हैंअतिदीनदयाल
॥४॥ संधिकरऊरघुनाथसों॥ अरुबैदेहीदेऊ॥ जुगतऊल
कासुषअनया॥ हैंतजनमफललेऊ॥५॥ रिषपुलसतिय

हमंत्र करि॥ सिषपग्यो सब ठाय॥ कारन तिहि मो सौ कसो। से
मे तुम हि सुनाय॥ ८॥ मालवान॥ मालिवान यह सुनि समुझि पु
निकहि मन सुषपाय। कहत विभीषन सो करऊ॥ सहसु श्रेय
उपाय॥ २॥ मालिवान नये हथ बया। है अति हित हमारा सत्रु
पर बोलत जु सगरे ऊ निकासि द्वार॥ ४॥ कवित्त॥ जब के प्रे
हस सिर दुष्ट॥ अति अनिष्ट गनि ये हा। मालिवान सुनि सकु विम
ना गये न बैठ गिये हा॥ ५॥ रावन॥ कुलनंदन रिपु उत करयो। मोहि
सुनावत मूढ़। कौंने ये मंत्री करो। ग्यान प्रबोधक गूढ़॥ ६॥ छंद पधरी
अहि जिन हसुरासुर जये आप॥ ना कोन रव्वान रकहा ताप॥ ये मूढ़
रावत हम हि दास। उर सबके उपजी नीति आस॥ ७ लमुक हि दर सि
दाम निग्रगपान॥ पुनि ओस बुद पाव सप्रमान॥ उलीती कोचवटत
गुम रओवु॥ वाय हि ज्योत्रास दिग्गजेबु॥ तारथक हल युग्र हि
कहत त्रास॥ नाचत ज्यों मेकु कत्र हि बिनास॥ छंद है अषरी॥
कहत पिपीलिकन यज्यों कुंजर। ओति हि आग्नु दिषावत अति
डरार ज्यों मनिधर अवरषै। दीन संन्यासी सम हम देषै। ग
हि सेतो षजि हि राज गुमायो। उदधि पार कपि दलले आयो। जग
सुनावकातर हेजा को। तरुरुहा दिषावत ताको। नयजे
गारविप्र सो नाजो॥ सरा अंनाथ हि मैत्री साजे। जाके नाहि न
गेरगिकावीं: मृदकहा मकोत्तयमतो। आतुर धोलीनी सरन
ई: सोपे सुयो सुग्रीव सहाई॥ बिनी षन्ना चा॥ कुंभकरन यन
नारनको ईजनिग्रहसतं महोदर जोई॥ कुंभ निकुंभ महग्र
तिकाय॥ महाप्रचंड अजत अतिमाय॥ सेन मुपरमेवनरन
सोई। किंकु प्रकारन रहि है कोई॥ संगा बेगि यस बे सयते
मारतकालन गाल हि मोने। जौलों लंक नकपि दल लायें टेर
बीरन ही के रहि हाथ। गिरत न मान न ता लकपि गाढे। जौलों वी
रन हा रे गढे। अंगद हनु नजो लौं आवहि। चढ के गुर निसि
लाचलवहि। बिनता सिष्यान अवत बानर। घनहाहारव
हारनघर घर। राम अमोघ बान अनियारे। जौलौं तब व हु
हि न बिहारे। जौलौं त्थो न हि नगर घेरो। मान कुप्रभु
मत मेरो। अंदघि लौं घिजौं लौं अवधे सर। करऊ सु

लौलंकेसर॥ दोहा॥ दुधारा अति तेज द्रिढ बज्रोपम सुत्रबान : सो
महि सीता देऊ फिरि : ज्यौलौं लगै न बान॥४॥ है कुल कीरति नास
हर : सो तजियै लंकेस : सीताराम समर पै सुष : बैन वत्तज ऊबि
सेस॥ छंद दोअषरी रावन॥ सधि बतावत मो कहत सठ : है ज
ग जयो सबै मैं अपहर : अहंकार मेरो जग ऊपर : मानुष सरन
जाउं क्यौं डर मर : बिनु पूछे हो नीति बिभीषन : उपदेष्टा हमको
नये आपन : मित्रता न पै सत्रु हमारे : रहत समीप होत नहीं न्या
रे : जाति जाति कौ बैरी जानहु : प्रसन बिना सक बुधि प्रमानहु
हारु हिप पलंगत जब चकु दिस : तीरत बेपुरु बत पै बीत स॥
कबित्त॥ छंद पधरी॥ सब कही बिभीषन नीति सानि : मन कटक
बात नये कर्म्मानि॥ रावना॥ पुनि बोल्यौ रावन रोष पार : सठ हम
हि प्रबोधक नये सुचार : पोष्यो मैं दै दै कवल पाप : औरस सोई
सत्रु कौ नयो आप : रे लाग्यौ हिय आवैन लाज : अरि कौ बढावै जो
करत आज : रहि जगत सुरासुर कवन आहि : जु धनुज बल
मैं जीत्यौ न जाहि : तपसी नि औरबेल तसु स्वतंत्र : मो कहै उपदे
सत मूल मंत्र : कुलक कलंक तूं जपंडित कहाइ : सो नीति जा
इ तपासि निसिषाइ : लघु भ्रात जानि बांचत लबार : करि स
त्रु पद बोलत कुचार॥ बिभीषन उवाच॥ सठ उदर जो जगे पित
समान : प्रभु कहो सरब था सो ई प्रमान॥ कबित्त॥ सुनि त
द पि बिभीषन बचन सूल : मसतक लेटे क्यौ चरन मूल :
पारुप रत कटक सपाप : इह हयो बिभीषन लात आप
पापिष्ट कस्यो सिर पर प्रहार : जो बिकल देह ह्लो संभार
दोहा॥ जहा कछु मुरछा जगी : ऊ ग्रोत बग्रकुलार : हितउप
देस तलात हत : नयो कुसंग प्रचारा॥१॥ रावना॥ छंद दोअ
षरी॥ धिक तोहि रे राकस कुलाधम : जानत हिमतको
सोज म : रिसकै रिकै सोतात्ति बरावन : इहो दिषावत बदन अप
वन॥ बिभीषन उवाच॥ काल त्रिदोष ग्रस्यो दसकंधर : औषध लग
त न बोधन ऊपर॥ बिभीषन श्रीराम चरन चितवन॥ दो
हा॥ चरन कमल कृत चितवन : पैस बछा हि बिकलप सरनर
मजैं सुष द : मन कीनो संकलप॥ ॥ बिभीषन उवाच॥

रहा बोली रावन अनुज : अनुमो हि कीय [illegible] : दस सिर सीतहि
नुहीयै : नहीं कल्यान निदान ॥३॥ पुन [illegible] बंधु सब : [illegible]
मो हि निर्देह्यु [illegible] रघुहति जे कहत · [illegible] ॥४॥ कहि
रा [illegible] आयो अ इस्रापनै : [illegible] विभीषन मंत : मंत्री रावन
के नुमुषि : लीनै बोलि तुरंत ॥५॥ गये विभीषन [illegible]
उपह सागर पार : [illegible] आकार ·
॥४॥ लोक वाच ॥ [illegible]
सीस : जो पूरन विधि [illegible]
त्रात कृते · मंत्री [illegible]
निदान ॥६॥ [illegible]
ऊ रावन के अदिन [illegible]
[illegible]

यतिजयंतिरघुबंसउजागर: जयतिजयतिप्रभुनवकलंककारन: ईससु
कविनरहरउधारन: देवबिभीषनकहंसुषदाइक: लैबैग रिजथापि
तलाइक॥ इतिसतुति॥ बिभीषन बाच॥ हमराकस तामसम
यदेही: सुपनेकननयेधरमसनेही: आदिजनमतेलसआरा। ऐ
सायबाबेअबलौनहीसाधौ: सबदिननरलैकुसंगतिसंगा: पैनक
सोकेकुसाथप्रसंगा: हमसमअधमनकेउजगमाहीं: जिनकहं
पापकरतनबजोरी: पापालमबसरूधिरपलासी: हिंसाप्रानसा
घसोहासी: सबैअकरमअविद्यासाथी: अबलौंनीतिनहिनआ
राथी: ऐसोकनसरनप्रभुआयो: लैकरअहितउकंगलगायौ:
यहतौलखमहिमाअधिकारी: आदिअंतरघुकुलिचलिआई: जगत
अनाथनहीकोउजाके: तुमप्रभुतयेसहारकताके: नगतिहीनरा
वनकोनाई: सरनहेतनाउजेयसहाई॥ कवित॥ बिनयादीनत
सुनियरवांनी: रहौरघुनाथरघ्याउरआंनी: कहिलंकेसतिलक
सिरकीनो: उरलनरानोबिभीषनदीनो: लंलमहरीयलंकेसबिभी
षन: प्रभुरघुबंसयप्रभहिमापन॥ दूहा॥ रावनकोदसीसदस: क
रकतिहोमजुकीन: सोलंकादससरपसुतन देवसरनहितदीन
॥१॥ बिधिकृतकीनोतपबिषम: मसतकज्वलनजलाइ: रावन
बरबसहसुदस: पुनिलंकागढपाइ॥२॥ कवित॥ बरबसहसदस
तपबिसेष कीनोदसकंधर: करनिकाटिसिरहोम: करेदसबार
आपकर: देवब्रह्मतबअैदयाल: दरसनतिहिदिनो: करिसं
नारकरुनांअपार: लंकेसुरकिनों: सोईधन्यरामपोरुषसुकर
हत्छिनरकहिसरनहित: बलिकितिनुलंकबिभीषनहिं अन
लिनीदिन उचित॥१॥ जदिनपंछपरद्वार: पटपरिथानतुचातर:
सयनअवनिसेचरीय: अजिनकासनताऊपर मिलिभोजनफल
मूल-नसमकोगरागसुनतीय: जुतकिरीटजटजूट मृगजुवर
सनामिलतीयु: ऊतउधयहैनरहरसुकबि: रामचंद्रदिगविज
तरन: हितरीझिसुदानबिभीषनहि: देवलंकदिनीयतदिन॥
॥दूहा॥ इम बिभीषनआपनो: कस्योरामदेलंक: ताकेनासे
अदिनतन: उधरेलालसुअंक॥१॥ श्रीराम बाच॥ धरिअग
जगहिबसंधरा: गगनअरकउडराज: थिरजगजेंलौंमम कथा
रिथबिभीषनराज॥१॥ कृपासिंधुयहबचनकहि: अ

रुकरगहि अपनाइ जो निरुपित अति दीनजन : सो राखौ सरनाइ
॥कबित्त॥ बाचा॥ छंदु थोरा॥ इहि समय श्री रघुराइ : सब बोलि
मंत्रि सुनाइ ॥श्रीराम॥ बिधि पूछिति हि रघुबीर : तुम सब बु
धि सधीर : कपिरान उहि मकाज : इहाँ उचित कहिये आज : अ
ति अमत नीर अगाध : बहु निधि पंथ हि बाध : अहि कमगम
करअमान : जलग्राह तंत्री यजान : रुषस्र सिकून्त यजोर
रत्नादि नाहिन ओर : दल अबल पंथ न दीस : सोलय हि सि
धु कपीस ॥ सुग्रीव बाचा॥ दीयकी सपति उपदेस : सरअन
लतव अवधेस : मुकरु लसि धुमेंडारि : जल सोषि बलजी
यजारि ॥ बिभीषन बाच॥ तुकरहु एक उपाइ : सगसिंधु क
हुँ समझाइ तव आदि कुलगुरु ऐहै : द्विज जानि सिंधु दे कु
लछमन उ॥ मतयहे लघन नमानि : हमजा बिनाहि न जानि
श्रीराम बाचा॥ इह अनुज कहुँ समझाइ : अवधेस जलतट
आइ ॥कबित्त॥ करदेर आसन कीन : प्रभु बेगि नाप्रबी
न ॥दोहा॥ तजी बिभीषन लंक तब : पाछे नल पग गइ : तिन सब
लीनै सोध तहाँ : उलटि लंक फिरि आइ ॥१॥ रावन बाचा तिन
कहँ पूछत लंकपति : आतके सब भेद : गयो उहाँ तु जित
कगद : दुष्ट कुल उछेद ॥२॥ दूत॥ करे दूत कपि करकके स
माचार समझाइ : तिन सब लीनै सोध तहाँ उलटि लंक फि
रि आइ ॥३॥ उनके मरकट सैन महँ : थ्रह मैं सुन्यो असेस : तह
बिभीषन आनतव : कहियत है लंकेस ॥४॥ रावन॥ हसि बोले
रावन रहो : बात सुनीस बिखाद : उहा जाइ निरलज वाहि : पा
यो बुधि प्रसाद ॥५॥ करतम्गोली नालकपि : कहि ताकहुँ लं
केस : जो कोउ होरी राउ करि : सब नर हसत नरेस ॥६॥ क
हिबेके लंकेस है : काज न सरिहै कोउ : कहि कहि रजा घूध
कहै : हासी जग मह होइ ॥७॥ कहो उलंघन उदधि के : खित
तकहा बिचार : बिधि करत जु नाबने : इह ताके उपचार
॥८॥ आयो कपि जु निसी पुर हों : करम चोर करि कूर : उनके म
रकट कटक रक महँ : सुपेक हावत सूर ॥९॥ मासों अत्र दसु
बालबय : तरु तोरे जइतास : ताको मारुति जानत हाँ : पेरु
बकस्यो प्रकास ॥१०॥ दोहा॥ पूछि मंत्र तव आतपहँ : आप
(

उदधितक्रार : मंग्रसु जाचत पायपरि : बैरे कौनकसा॥९॥ रावन
नीचे॥ करमसेना सीरामको : पेरुप बलरूमपार : पायोथलतो
सिंधुपर : आरुमचलात हुआर॥७॥ कविरुवाच॥ बासुर
तीनजु बितगये : रामकरतमनुहारि : जानि समुद्रहि दीनदि
जे : रहे बिचारि बिचारि॥८॥ जगप्रसिध जड़ताव जलः न हीमो
नतमनुहारि : उमिलछमन अनुकुल रहे तहाँ : सबको दंकसंता
रि॥९॥ उरपरित्रास समुद्रगति : जानि बिकल जलजीव : अंत
रहिगि अवलोकि उर : देवे राम दई ग्रीव॥१०॥ छंद तोमरा॥ रहउ
दधि दिजधरि देह : निजराम भगति सनेह : अनेक रतन उदा
र : धितकरे कनक सुधार : उपहार दीय अनेक : बिधि जुक
त बिहित बिबेक : अरुकरी ग्रणपति येतु : हसकं अस्तय मुहिदे
वः इहि हित करि अग्यान : कछु तुम्हौं नाहिन कोन : अनउचि
त करम अनेस : अनछमहु रामनरेस : अब करहु एक उपा
य : सुषलेघफुनी रघुनाथ : नलनीलघु रवि असनेस : ये बिस
करमा अंस : सोर चहि जिल पर सेत : मिलिजि थपज यसमेत
॥१२॥ कपितिन रिषसे ये करी : धु निंग्रे सो बरपार : पा
थर करि होकर परस : सोई जल तिरहि जुमार॥१॥ पेषिय
है नाबी जगर : आगे हीतिषि आप : करुनानिधि कारन कर
न : अनुसब रावन ताप॥२॥ अरु इण कहत जु आपने : मु
निये अवधि नरेस : मेरे उतरत रबसल : करत अनीति अ
सेस॥३॥ हे तुम कलप जु थलउ हो : अबिलंब सत आती
र : तिनहि चिलाव हु राम तव : तेज अनल मय तीर॥४॥ क
बिरु॥ अनल बान आकर षि रहो : मो बो राम मुरारि : उ
तरत रबासी अधम : ते सब आये जारि॥५॥ करजुप
राक्रम राम को : सागर देषि असेष : सुरकारिज की सि
ध सब : बनी सुनियत बिसेष॥६॥ सिंधु बाच॥ राम सु
जस रामन मरन : पुरी बिती षन पार : लंका रहन सीय मि
लन : अवधि निकट अनुआर॥७॥ जलनिधि करे प्रवेस
जल : देराम हि उपदेस : कारन सागर सेत को : निसचय
करे नरेस॥८॥ अथ श्री रामेश्वर स्थापनो॥ रामेसुर

सिवथापना: रहाकरी रघुराइ: सेतमूलसुनासिंधुतर: बेरसु
नीतबनाइ॥१॥ पूजाअरचाप्रेमपन: सबविधिकरेसुनाइ: श्री
रामेसुररामको। सोईजयेसहाइ॥२॥ श्रीराम॥ सेतबंधरामे
सको: करिहेदरसनकोइ: जोद्विजघातकपातकी: रहाहत
कलमषहीइ॥३॥ करिदरसनरामेसको: गरुसमुद्रअन्ह
र-पुनिजेहेबारानसी: जुतसंकलपसुनाइ॥४॥ लावेगंगानी
रफिरि: सिवसिरधारादेइ: मेल्हेसेषसमुद्रमह: लासुज
नमफललेइ॥५॥ ताकहंगतिप्रापतहा देवीनिसंदेह: श्री
रघुनाथसुरासुरनि: उपदेसेमतयेह॥६॥ ममसेवकहरसे
बिमुष: हरजनममसनेह: सोमिसहस्रनिवरषसो: सुसह
नरकजनिदेह॥ कबि रा उमगेजूथपजूथरहो अगणमा
गीग्रार: करियेबधनसेतको: लंकादेहिबिदारा॥१॥ कबि
रा॥ रहाजरघुकुलराइको: पूरनकरिसपाइ: सेतबंधक
रनसंकल: उद्दिमकीनेउआइ॥२॥ छंदबेताला॥ श्रीरा
मोवाच॥ कपिबोलितहानलनीलहितिकरि: देवयहआगप
दई: नलबुधिकरिकरिसेतसजऊ: महाद्विपरषूतमई: ज
लसीसप्रबलपषानजोरऊ: अखिलगिरउतगये: कपिक
रऊतुजबलमिलिजुडीऊ: आपआपअनगये॥१॥ कबि
रा॥ मिलिनीलनलबलअतुलमरकट: सेतसागरसजये॥
कलोलजलबढिअमनतयकरि: गहरचऊघागजये: कपि
नालअधरउछालककरिकरि: केलिजोकउककरे: धरिपां
निपानिअमानरूधर: धारनलआगेधरे: बलसुनरामिलि
येसेतबाधन: अतुलपोरुषअगये: पथगगेनरूअहमक
प्ररित: समरसरघुसंगये: मिलिप्रबलरामप्रतापमहिमा:
तरिउपलतिहिताल: नलउपरपुरवलिपत्रजैसे: लसतप
रवतमाल: जेसतिलबोरतसिलासंगी: सहजजातिसुन
व: तेतिरतआपनअवरतारत: प्रगटरामप्रताव॥ दूहा॥
कपिकेगिरउपजीविक: सोजानतसंसार: कपितेमूलतक ... य
रकरबि: यातेतिरतअपार॥१॥
हनुनीतिउपदेस: नातेगिरलागेतिरन:

उदधितटआइ॰ पंथसुजाचतपाइपरि॰ बैठेकोन्हसार॥१॥ रोलन
वाच॥ करमसंन्यासीरामको॰ पौरुषबलहमपार॰ पास्योथरनों
सिंधुपर॰ अरुमचलातहंआर॥७॥ कलिकवाच॥ बासुर
तीनजुबितगये॰ रामकरतमनुहारि॰ जानिसमुद्रहिदीनदि
ज॰ रहेबिचारिबिचारि॥२॥ जगप्रसिधजरनावजल॰ नहिमो
नतमनुहारि॰ उल्लंघमनअकुलाइतहां॰ सरकोदंडसंन्धा
रि॥३॥ उरपरित्रासससमुद्रअति॰ जानिबिकलजलजीव॰ औ
रदिगअवलोकिउर॰ देषेरामदईव॥४॥ छंद॥ तौराइहउ
दधिद्विजधरिदेह॰ निजरामनगतिसनेह॰ अनेकरतनउद
र॰ धितकेरकनकसुथार॰ उपहारदीयअनेक॰ बिधिजुक
तबिहतबिबेक॰ अस्तुकरीजगपतियेव॰ दसकंधनयमुहिदे
व॰ इहितकरिअपान॰ कतुलुम्योनाहिनकोन॰ अनउवि
तकरमअनेस॰ ममछमकुरामनरेस॰ अबकरहुएकउपा
इ॰ सुषलंघहुनीरसुनाइ॰ नलनीलपुहविप्रसंस॰ येबिसे
करमाअंस॰ सोरचहिजलपरसेत॰ मिलिजूथजूथसमेत
॥२॥ कपितिनरिषसिवकरी॰ पुनिअसेबरपार॰ पा
थरकरिहोकरपरस॰ सोईजलतिरहिसुनार॥१॥ पेषिय
हैनावीप्रगट॰ आगेहीलिषिआप॰ करुनानिधिकारनकर
न॰ प्रनुसबरामप्रताप॥२॥ अरुउषककहतजुआपनोंमु
नियेअवधिनरेस॰ मेरेउतरतटबसत॰ करतअनीतिअ
सेस॥३॥ हेंउमकलपजुथलउहां॰ अपिलबसतआती
र॰ तिनहिचलावहुरामतव॰ तेजअनलमयतीर॥४॥ क
हिरु॥ अनलबानआकरषिरहो॰ मोष्योराममुरारि॰ उ
तरतटवासीअधम॰ जोसबआयेजारि॥५॥ करजुप
रातमरामको॰ सागरदेषिअसेष॰ सुरकारिजकीसि
धसब॰ बनीसुनियतबिसेष॥६॥ सिंधुबाच॥ रामसु
जसरामनमरन॰ पुरीबिलीषनपार॰ लंकारटनसीयमि
लन॰ अवधिनिकटअनुआइ॥७॥ जलनिधिकरेप्रवेस
जल॰ दैरामहिउपदेस॰ कारनसागरसेतको॰ निसचय
करेनरेस॥८॥ अथ श्रीरामेश्वरस थापनो॥ रामेसुर

सुनवांनरबारिधिबाशिगुन· रहांसंदेहनग्रांनिये· कारनप्रतापरघुना
थको· सोत्रयपुरनिग्रमांनिये·॥ रहा॥ करकपारन्तयोसेतके· यह
ननिकहीग्रार: सनुजसषासुमित्रसब:उतरेरायवरार॥१॥त
गमिलनकोरसिं धुतर· ग्राएबिजईवार: परिग्रातकजुलंकपुर
प्रतिग्रहपरीपुकार॥२॥त्तवै था॥ प्रनुताबिनीघनकी कीरतिक
पीसकीसी· ग्रंगदकी सिधिसुकगतिसतनारकी· मारुतिकी बि
जैदोणाचलकी बिचलताई· देवनिकीरसाद्देवराजसुनदारकी· कु
नकी बिनेदइंद्रजीतकी बिनासकारी· त्रिजटाकीरछा सुपसीयाके
सारकी: कालकी सीपाती सबराकसकी सानस्नाती· रावनकी सं
चग्राईसेनारांधोरारकी· ॥श्रीरां मवाचा॥रहा॥कोसलेसक
पिनालेकर: ग्रागुदइउदार: कंटककरछितबारिका: बनचरक
रऊबिहार॥१॥कबित॥ ग्रारसलहिग्रवयेसको: जथ्थजथ
बनजार: षानमधुरफलग्रतिहरषि: हठिहठिहग्राहलार·
छंदउधोरा॥ मसिरीछमरकरथारि: ग्रसुरेसबननिउजारि·
कऊलहतरसकक्रोर: गहितजतनाहिबिगोर: तिहिग्रवननास
कारि· पुनिकूंचमूंछउपारि: मुषकहतजबजयरांम· करितग
तताहिग्रकांम: तेत्राजिबनरषवार· दसकंधग्रास्स्वार: प्रतिह
रलैपुकार: जहांऊतोरावनरार: कृतनासनासाकांन: बन
पालदषिबिबान॥ रांवनासगपूछितिहिलंकेस: कीयबदन
किहिदहिबेस॥मालीउा॥ कहितबेमालाकार: कृतकरमक
पिनिबिकार· प्रनुसिंधुबंधीयपांज: मिलिकीसचालसमाज
दहिग्रोरसयबग्रारः सुषसिंधुलांघिसुतार: दीयलंकहीयहिं
मिलांन: मिलिकपिनिदलग्रमांनं॥कबिरुवाचा॥बदिसोच
सुनिसुनिबात: ग्रसुरेसथेउतपात: संगयेउगिरनिवास: बससे
चमोचनस्वास: ग्रतिक्रोधजवयलग्रार· चीयलिग्रोपतिहिवित
रा॥मंदोदरीउाकबित॥ मूंदेदरिमननमलिन· मंत्रहितकरत
पतिहिमिलि· ग्रनहितबकताएजु· नाएबससन्तउपनिलि· ब्रह
मरुद्रबरबिहन· जाहिंतुमसबजुग्रजीतो· ग्रवधिपारबंसत्रग्रनिस
ग्राजसाईसबेग्रतीसो· हितग्राहितनजांनतहरिहीय· येकगर
बसेवतग्रतुल· सोछांडिसिघिकरिरामसैं· करियेग्रनयपुलस
निकुल॥१॥त्रीयसुग्यांनमयसता· राजहितिनीतिउचारिय· दपि
ग्रदिनदसबदन· नयोउरसोचजुनारीय· कहतिबचनहितकांन
सोनमांनतलंकेसुर· घरचीकटज्ञोसघन· । .२८ ·१

न्मिकरषतप्रकास ॥ सुकबाच ॥ छंद द्वैग्र परी कहि सुकहत
सुनहु लंकेसर: तुम अतिगरबगुरहुलेगुर: तजियेक्रोधबि
रोधकषाये। अतिबलरामसिंधुलंघिआये। पंजरबिजयरा
मसरनाई: दयाप्रकृतिनिगमागमगाई। कुलपुलस्तिकीरह
कीजे देवफेरिसीताकिनदीजे। नईजुपेनारिअवनार: सो
सबछमिहैरामगुसाईं॥ कबित्त॥ सीतादेहुसुमोजबहीस
ठ: हम्योसुकहिबनातमहाहठ॥ रावनामतफेरिबदनदि
षावहिमोही: कृतयनपापदेउफलतोही॥ कबित्त॥ यहसु
करुतआपयहआये: अतिहिरावनकालहिछाये। अषित
सुतरसुतमंत्रीआये: निसचरसत्ताबेगिसिरनाये॥ रावना
सिंधुलांगिहै बालसन्यासी: सोआयमोहिआवतहसी: बन
वरकरकेलीयेअतकबस: सुनेतुमहुआयेहैमेंनस: कारन
कहोरहासोरकीजे: छलबलजिहिदुजनदलछीजे॥ सत्रसद॥
रहासनासबबचनउचारे: मानसबानरनहहमारे: जतीकटकके
बलहमजाने: येकपिनालकालगहिआने: कहहुलंकेसतुमहिन
यकाको: जगतसबेबसबरतीजाको॥ प्र हसत उ॥ रहाप्रह
सतनृपनीतिसुनाई: सबाकहतसबकुरसुहाई: उरधिकृहि
रककपिरहाआयो: जिहिबुधिबलगढलंकजरायो: रनकीषु
ध्यागईकहावादिन: बाधोकिंनहनुमततताहीछिन: जगराग
निसबकीअबजागी: लेहुषाहुनरकपिहवलागी॥ २०४॥ रक
कपिवेउतपातउगए: अबहेपरमआगदसआए: संधिकर
हुअबदीजेसीता: परममंत्रयहनीतिप्रणीता: जपेपारत्रीय
फेरिनजाई: बियहकरहुनिसानबजाई॥ कबित्त॥ सोप्र
हसयजबबचनसुनायो: अतिहीरोषरावनउरआयो। रा
वनवाच॥ प्रहसतनीतिकहायहपाई: गुरपरसादबिद्यागरु
वाई॥ कबित्त॥ संधिनामफिरमोहिसुनैहै: तुनिप्रहसत
बिद्याफलपैहै: कुंभेप्र हसतअनषउरआनी: मानतमाहि
बचनअतिमानी॥ प्र हसत उ॥ काननसुनतबचनहितके
रक: आनिपरीसिरछायाअंतक॥ कबित्त॥ छंद पधरी॥ म
हबुधआरहामालिवान: निसचारनीतिबिद्यानिधान: रा
वनकोनानोबृधबेस: रहिसमयकरपरिषदप्रवेस: अति

हेत सुबेगे सत्नांग्रानि : मनमो ऊरदसानन मोहमोनि ॥ मालवां
नग ॥ बिधिसु कत बोलि रहा मालिवान : कछुक लो बचन जे रिऊ
कान : पुरलेक नयो सीत प्रवेस : बिपरीत सगुन नवते बिसेस
करत जे आगनि द्विज होम काज : जागत सो ना हिन महाराज : अ
वरित धूम सकुल असेष : कुलिंग बन्हि वरजित बिसेष : मिलि व
सत अस्व साला निमांक : सत जूथनु जंगम दिवस सोक : परिज
ल पिपीलक हवन पात्र : गत बीरसु रत्नि न रीषीन गात्र : सुरगत म
तंग हय हेम मुक्ति : करतबर नि नरोमा सुकुक्ति : सलावर हत
नि सिअ वन साल : कुलकाक अर सुन कूजत कराल : रीसत बिमान
आकास देस : पुनि अग्रयअर्थ कुलक रि प्रवेस : सनाथ सिवा रुयसि थ
संग : अति असुत थानि थित कें उतेग : जंबूक कूर कम्मारि जाल : कुं
जत त्रिकूट द्वार निकराल : रोथरी बुंदम्रवत अकास : नयक कारज
थगर हतु कुलास : सुरलिंग सचल स्वेद सुनार : प्रतिनर सनग
रम्स तिजु पार : कालिका सेत दंत निकुनार : अतिअ रयो हसो हस
लिआर : दीरघ सथूल सिर बपुन साजि : बपुरोम कूम पिंगुल बि
राजि : येकाल पुरुष रहि रूप आर : दिनराति जाति निनय दिषा
र : मुषिका नकुल मरगो प्रसूत : अतिजु धहेत कर कस अग्र हत
अपसगुन होत इस्मा दि आर : तिहिनि मतसाति करियेसहार : या
निमित्ति साति हेय है ऐक : जातु कीदेऊ कुलर है टेक : चतुराश्रम
आये हैं अचित : ताको सब साधऊ समय तेत : छैबान प्रसथव
पुत्र धवेस : निसतार करत अपनो नरेस : सुत देऊ राज सिर छत्र
साज : करिये अपनो उधार काज : श्रीयस हत आप करि अयसीत
अवधेस सरन आये अनीत : हैये है मे त्रकुल वृधहेत तुम चउ
रूप सब बिधि सचेत : मन कचे सुकरिये महाराज : अनुसार
बुधि हम कहत आज : सुनि बचनु ऐहप रजरिल केस : उरकोय
बढ्यो अतिअ हतेस ॥ राव न बाच्यो ॥ मतऐक विली षन तुम ऊ
मानि : निरधार आज यह हम जु जानि : वहराये तुम ऊजे होवत्र
न : मन मा मो सरनागत म हेत : हम जानी राम हि मिलन आहि
मम बास बसत चित उहा चाहि : बिनु बुधि तुम ऊ जो नऐ ह
ध : पन चोथे बरतत है प्रसिध : बाचि होन मीवत किऊ बिचा
र : सरने ऊमरि है अनीसार : सुनि ~ नकज ..

ल: मनमालिवानपरजस्यौमूल:॥ मालिवान उ॥ करिजतनदृथ
सीन्हकुजकोइ: हरिबैठेतनहीफलफूलहोर: अतिगरबतुमहिबनि
अदिनआइ: छकिराजमदहिंमंबुधिछाइ॥ कबिरुवाच॥ मनम
लिनतबैठरिमालिवान: अहगयेसोचजुतअतिसम्मान॥ इति
मालिवानरावननहिप्रबोध॥ श्रीरामदूतअंगदरावनभेटनं॥
छंददोधकबरी॥ कबिरुवाच॥ प्रभुबैठेबेलाद्रिसिषरपर: मानु
षसहितकपीसलंकेसर: जामवंतअतिनीतिसुजाना: सबबैठे
बेगेस्वसथाना॥ श्रीरामउवाच॥ रहसिमंत्रपूछौरघुराजा: क
रियेअबेजुधकोकाजा॥ जामवंत उ॥ जामवंततबकहिकरजो
री: ममप्रभुसुनऊप्रनितइकमोरी: तुमसरबप्रलोकत्रयस्वा
मी: जगतचराचरअंतरजामी: तुमतेमतिनिदुरीकोउदेवा: सु
रनरनागकरतजिहिसेवा: कलोचहतकछुतदपिकृपाला: स
मदरसीतुमदीनदयाला: थितचितयाकेअहमितिथाती: पा
पीदससिरब्रह्मपनाती: याहिकालकीछायाआरी: सत्त
कहतसबकुरसुहाई: याकेनयनगरबमदछाये: असऊन
जानतराघवआये: पापीनिजकृतनासहिपेहैं: जगतबिद
रजमसादनजेहैं॥ दूहा॥ मरकटतालकअंगमिलि: आये
दलअनपार: याकोमारनकाअगम: सबैकहतसंसार॥१॥
छंददोधकबरी॥ रामसदागोद्विजरखवारे: स्वामिचलतनी
तिअनुसारे: प्रभुइकबारबसीठपठावऊ: सगरावनबऊस्यौ
समझावऊ: मेरेमततौयाहिनमारहि: सीतादेयतौबैरबि
सारहि: द्वैद्विजबसदुष्टकुलहोही: आपकरमकरिहैपय
ओही: प्रभुअंगदहिबसीठपठावहि: सरबनीतिवाकेहस
मझावहि: ततबोधअंगदबऊनीती: सोकहिहैअसहाति
सुहाती॥ श्रीरामउवाच॥ कबित॥ अतिउरमदकिबाअ
ग्यानकछुअदिनजुआगम: सुनिअहसीतासती: कृ
तहरनचोरक्रम: सोछामऊदससीस: कऊअंगदयह
कारन: नीतिरीतिमनसरससमृद्ध रिससऊमहारन
छिदिकेमदसऊरतउछलत: बतसुतनातीकालबस:
संपतिसमाजगहछाकिसुष: अतिकपुरजेहोअवसा॥

छंद हेमंत परी॥ चलेसु आगपासीस चनाई: रावि सहत ...

प्रतापसंबा सिमनकारा अंगद चलियहबचनउन्मार। ...

कीनै: आंइसबसमनतिनगति अधीनै॥ कवि ...

हापे थकि कि: अंगद हनूमंत नेग: कीउ तामि लि ...

बक्रु सेगा॥१॥ छंद हेमंत परी॥ कटक सुत धनमु ...

मसावत मनजाके: चोषबानतिहि बचनउ ...

नारे: बातही बातें बिरोध बथापे: अति ...

गढ़ कहे तिहिलात उगर्ड: अलप वे ...

सोधर निपन्ना स्यौ: राम ततरा बन ...

लायेः अति अनसेकलोम्मनठ ...

बलेजा हियेरे दिसि चस्यौ: ...

सीर्पेराक्स॥ अत ...

द रावनऐं कहै। इते कह्यो तेग्रा ह।।१।।कबित।। हनु मारे मदंध रसकंध
रसापर केते रावन सबै हते हमसुने परम पापिष्ट अपावन धरयो हे ह्य
धीस प्रथम तिहिं क्रित फल पायो बलि सासिनु वं बांधि निलज है क
व लन चायो नायो जु त्रिलीय मम पालनै मोहि सुलज्जा कहत मन
उन माऊ कि धों उपजे अवर कहिये ये कह क कवन।।३।।छंद पधरी
कबिरुवाच।। यह सुनत अवर सब गये बिलाइ ये करी सो रावन रह
ग्राइ बेगे सु परामुष दयेपीठि अंग दउर अजरी मनु अगीठि सिल
ह नीलात फिरि गरी सोइ हसि बोलो रावन समुष होइ।। रावन।।
कि हि पठयो कपि कवन काज हहिंगा हरयो वन नयो अजा।। अं
गदउवाच।। मोहिं पठयो तोपे रतराम जिसके बीर अंगद सु नाम म
मपितातोहि जानत भाति ताते तिहिं आयो छांडि कानि।। कबिरु।।
का।।रु अंगद आ पुन आर रह्यो सनमुष बेगि सथीर राम प्रताप
अनीत उर बोल्यो कहत बरबीर।। रावन उवाच।। जो बोल्यो घनन
दसुध अरु दीय पूंछ जराइ वह कपि तिहारे अथम के अवर के
कुमार।। अंगद।। गनि गनि देसो सब लंक गढ मास्यो अक्षकुमार
हनुमंत सो मिथ्या कहौ रैदस कंध गवार।।१।।हे है रत अति बेग व
पत्री बाह समान सो मम दल सत रावना नाहि न बीर निदान।।२।।
न उवाच।।छंद देअ पदी।।रामको नाहक।। जिहि हर धनु तोस्यो
महामान रघुपति को मेस्यो।। अंगद।।कबित।। परुन कीयह
र धनुष बालि संग्राम बिनासीय समतालसरहक बिधंसे
ई पु निकर बासीय अति प्रबल गिर आनि बारिनिधि सेत बंध
यो सुष उतरि कपिसेन रघुनन्दन तट आयो उरधरि प्रत
पबल ते जयह कबहू न बियह की जीये सुष संधि करउ रघु
नाथसों देवि सीय फिरि दीजीये।।रावन।।कृत बिनास
धनुका ग बालि मास्यो सो ई बानर नीर रकहत सात ताल
जरजो निसुतो तर सेत बंध मिलि कपि समूह करा बिक्र
म कीनो कर हि तोलि कैलास लेष कंदुक ज्यों लीनो सिव दे
सगन स सिसुर सरित सिवा सेष बन जंतसम आकरषो केतु
ककाजवह मेजानत बल बाहु मम।। छंद छे अषरी।।जीरनस
तु पिनाकन जानो नयो कहा जो ताकहं तोस्यो बालन पर
सधरन के सो बल मारि निछत्र न कस्यो सुबमंकत रीन जाति

मजिमहग्रंथ॥ अंगद उवाच॥ यहसंदेसअवधेसको। सुनिदसकंध
संतारि : गयेसरनत्रिनदंतयहि : नहीमारिहैमुरारि॥ छंदपधरी॥
पालसतिउयकुलजनमपार : सिवकरीउग्रप्रजासुचार : बिधिरूप
पारतुम बरबिसेष : अवनीसअसुरसुरजयअसेष : संततिहित
साधतरतिसमाज : संततिउआजिनृपजोगसाज : जीयअरथधर
मकोमनोजाल : तवमोषऐकसाधतनुवाल : उपदेसकरतहित
सुनक्रुआज : रघुबीरआरराजाधिराज : बेरोधिछाडिकुलहितबि
चारि : सीताहिप्रियकरिबिधिसंतारि : मंदोदरिजुतअपराधमानि
गहुसरनजाकुजुगजोरिपानि : त्रिनगहउदंतकेचनिकुगरि : हर
छोडिचरनधरिमानहारि॥ रावन॥ रेबनचरबोलतकवनबो
नि : जगजेतारावनसुहिनजानि : जनमतवबालिअरथजो
ति : मारतनलिगयेकिनरेअगपानि : जिहिहतेबालिसरसम
रसाजि : आयेबसीठितिहिकरनआजि : गहिहतकरमकलिपं
नगर : मुषमोहिदिषावतकहामूढ॥ अंगद उवाच॥ छंददोअ
परी॥ आंषिकानहैबीससहितउर : आंधोबधिरतदिपरअसुर : सि
वबिरंचिबंछितजिहिसेवा : रामजुदीनउधारनदेवा॥ रावन॥
छंदपधरी॥ कपिनतुंदबोलतकराल : सहतकुनीतिबसस
बरसाल॥ अंगद उवाच॥ तवसीलसहनतानगतजाति : बि
थरीकितिसोईबानिबानि : कोटिनगनीकेनाककोन : मुषदेषि
नीतिहितुपनमान॥ रावन उवाच॥ आसेनातवअसोकासम
थ संग्राममतिरेजोमुरसाथ : उवरामबिरहजीयतेजहीन : मनल
छमननेतिहिदुषमतीन : सुग्रीवतुमकुनि रवलसुतार : आश्रये
तम्यासीसरनआर : ममत्रातबिभीषनजनममूढ : जिहिअतै
त्राससरनआगूढ : तनजरायसितअतिजामवंत : सोउतयोरी
तवलजरगसेत : नलनीलसिलपकरमहिसयान : जुधमरमसु
किछुवेनजान : रहेआयेकपिहनुमंतएक : ताकीहममानवक
करेक : तिअलोकुतेसोमेघनाद : नहीबरनदिषावतितिहि
भ्याद॥ अंगद॥ ऐकतेएककपिबलीआहि : दोरहितव
हलंककदाहि : सुनिसठनराममानुषसरीर : नहीगंगसरित
सलिलनीर : पसुकामधेनतरुकल्पबृष : पंषीनगरुडपा

नीपीयूष : मनिनाहिनउपलग्राहिसेषमानि : निसचरनलोकबेकुवजा
नि ॥ रा॰ व ना ॥ दृहा ॥ हरिबिधिप्रजे आरबरु : सुकर कटिमें सीस
होमकरेलैअनलमह : सुनि मेरो बलकीस ॥१॥ सेलउगयोले
रसहित : मेकरथरिकैलास : देकपिजबतजगतसब : मसपोस
बहिमकास ॥२॥ अंगद बो॰ कबि ॥ मुखदसीसबरूप : कारि
नहीसुरकहवत : दिष्टहेलअतिदीपक : पतंगलटपरकउपावत :
नारबहेतगरहना : कहाअतिब्लीकहायो : मदिचीरिमांगतजु
योय : स्निबतिकठरयो : छोडिछेदिसिरकीयहबन : अरुकेल
सजुउधरीय : इनमांऊसुतेदसकंधअब : कवनबीरलछनकर
या ॥१॥ दृहा ॥ रिवजानितुहिरीबकिज : परयुबसीगमोहि : अह
मपनातीमतिबिकल : नातहेतनंतीहि ॥१॥ चौपइसलिहि
समरबदि : नहीमारतमृगराज : बिनुसमताबिग्रहकथा : जा
नियहेजीयलाज ॥२॥ अंगद उवाच ॥ नहीउगिगदोबालिसुतअ
रुयहबचनउचारि : सभामांऊतबकोऊसबल : सकेचरननमम
टारि ॥३॥ जैपेमेलऊंबैरते : मेरोपदगहिमूल : तबसीताहरके
मे : हमतुमनहीसमतूल ॥४॥ कबि ॥ यहसुनसुनिउमगेअ
सुर : ऐकऐकलगिआर : टरैतनहीपगगेरते : ब्रेवतनाखिस
रा ॥५॥ हाराबनअतिहीअनष्ठि : उमिगदमकुमार : नरिसक
टकबीसतुअ : पकरेअंगदपारा ॥६॥ यरिमरकटपटकोधरति : नि
कसेप्रानिदान : अपनेबलदसकधरह : मनकीनेंउनमान ॥७॥ क
बित ॥ अंगद उवाच ॥ तुमबिसेषिपोलसतिबस : उपजेअधिकारी
य : ब्रहमरुदपूजाबिधान : सबनाहसुधारीय : चरनपरतमनर
मबद : अपराधनआनन : हेतजगतिबसहोत : अगटचितनावसमां
नत : दिगहूजारधुनाथपद : नहोअकर्मअतजुकिहे : तवासिर
परआयोकालसोई : मनपदग्रहेनमुक्तिहै ॥१॥ कबि रुवाचा दृहा ॥
परयोकिसानोलंकपति : थिरब्रेगेफिरिथान : करमजुअंगदछल
कयो : मनसमतयोमलान ॥१॥ सोगदोबिबिराकसनि : अतिब
लअंगदआप : पाथेजयजीसेजुपन : पूरनरामप्रताप ॥२॥ अंग
दा ॥ ममहितबचननकरंतमन : देकुबुधीलंकेस : कटकचकजु
कालकें : सिरपरंत्रमोबिसेस ॥३॥ कबित्त ॥ स्तनिपरनसालम

वेष·कृततसकरकरयो: जगतमातजानकी· हरीअनहितअनुसरयो
पहजिहिबलआगयो· सुतेकुलनदलबलसजऊ: नरीसुतेअबनरी-
तेषअहंकारनतजऊ ·मासोनवचनमेरामुगध·अबकोसरनउबारिहै
आयोजुसेतबंधीयउदधि · हुओरामतोहिमारिहै ।। रावन।। हाक
टिकाटिअपनेकरति: कहतवोहिसुनिकीस: मेलेऊतसुककुंमम
मंगलफलसेसीस।।१।। अबलोकेमेआपने: पावकजरतकपाल
तहाबिधातकेलिषत: नयेअगरपटलाल।।२।। मैंतेरअदारम
लिका: बाचेमरमविधान: तामहहैमेरो नियत: नरकरमरननि
दान।।३।। करमअंकजेब्रह्मके: अंतनमिथ्याहोर: सुरअसुर
मंजनसमथ: कोटिजतनऊनकोर।।४।। सोपेऊजानतसबै: लो
हसमरचहिलेउ: हेऊजकछुनयतव्यता· अबतोसीथानदेउ
कबित्त।। कालसेवममकरत: हैजुरवितपतसीतहित: हरिहि
तेदिगदेवबिहलपदरजनितबंदित: चंद्रहासममषड्ग· देषिसु
रनारिनागनर: अवतगरलअनसमय· नियततहाकेबराकेन
र· देषऊसतजनयतापसअजर· दीनजंतकपिमेलिहल: सुनिमें
हितपतगढलंकसिर· पत्रायमआयेसुषल।।१।। साषामृगद
लसाजि· अरिजुलंकागढआये: उदधिसेतबंधये· आनिगिर
नीरतिराये· अबनसंधियहउचित· नीतिअंगदतुमजानन।।
हमेरोत्रयलोक· बिदितसुरअसुरबषानत: सिरपंचदहनन
येसिवहि· सोनआनदिसिनाहऊ· चितयहैरामसरथारचढ
ऊउरथपरपारहै।।२।। कुंडलीया।। उतरप्रतिउतरअधिकउ
सहबालिसुतदेत: ऊवरावनतहामानहत: हीयपरजरिरहिहि
त· हीयपरजरिरहिहित· सबलसेकछुनबसाई: मानिताहिन
नमात्र· करतअंगदअधिकाई· ढुष्टसनोनितीयउरत· तिरसाग
रउत्तर·कपिअंगदरत्नाकर·असहउतरप्रतिउत्तर।। हाव
चनबानउरबिधयो: मनसगनयोबिसान· पतिषोरकपिप
चमह· हाकोप्पोअपान।।१।। छंद उर्धोर।। सुनिबचननजबउ
रसुल: मनतापअसुरसमूल· रिसकेलेसकसराइ: जिन
काजिबानरजाइ: गहिलेऊसबअपमान: कपिसुनोजब

यहकोन३।कवित॥ बिसरिबालिसुतबीरं सरञ्चवसानसंनारीयः इ
हाञगदञनन्नंग महीस्वहथ्यंनिमारीयः धराधसकिधुजईय पस्योमुख
नल्लंकापतिः कनकरतनमथमुकट गिरेबिथुरेदेवीगतिः सोमुकट इ
कलेवालिसुतः कटकञेरधरिमुकथे पुरलंकञसुरञातंकपरि नु
वनरामजयजयनयेे॥१॥ नन्नमारगञवितनि हरि ञाविजउप
जीय उल्कपातंकेञसनि समथविनुरोरजुसजीय महातेजमय
मुकट कूदि हनु भतञाकरभ्ये। रामअयरभये हेरिकपिदलबल
हरष्ये सोईदेभिमुकटदसरथसुवनः सीसबिनीषनसमधरीयं
सकबंधबिजयपंजरसरन कबिनरहरजयजयकरीय॥२॥जयति
रामजगदीस ञनयपंजरसरनाई जयतिरामजगदीस नषिलभु
वनारनसाईय जयतिरामजगदीस दुगमहरधनुधरिभंञ्यो जय
तिरामजगदीस बालिसरएकबिहंञ्यो नयरामदीनबंधवबिरद
ञतुप्रतापत्रिभवनअनय बनिवरनसरननरहरसुकबि जयजय
जयरघुनाथजय॥३॥कबित्त॥ चा॥ दृहा॥ मारिनंतगहबेनमहऔ
निस्तयमृगराजं उगिगदेखे नातञति जयपायेजुवराज॥१॥
कटकसी हलिहनुतकपिः दीनोयहउपदेसः पनमतछोलहञिपनें
करिसमहरलंकेस॥२॥ञसुरकहयेञाजलोंः सुरसुरसकोः
सालः सरनंणंथेजञिकिरिसः कबऊबचेनंकाल॥३॥सलमंत्र
यहमानिमनं मिलिसनमुघरनराम ञानिबनीठछाहउरः स
जिरावनसंग्रोंम॥४॥हमनोहिमारनकोंहरे पभुकोदेषीपारः
ञवतोमंगलसोंमरनः रनमहरावनराय॥५॥तबचलिअगदलेम
त परेञानिप्रभुपारः तवप्रतपरघुकुलतिलकः सुधरीसवेस
नारा॥६॥अंगदवाचा॥कबित्त॥ लिंताकूपगहीरः सोकअरहरस
दुसतरः बिषमसबरहाराव सोवसंकोबधुरंधुरः नयनजचय
रिकासहिघः सुगनरत्नठरतजलः नासाबंसभनालः अंसुधारा
चलिञबिरलः करियेहयेहनहरसुकबिः अमअनेकपरिनच
सहलः रघुबीरधीरनवरिपुरमनिः बाडिरजकं नविबहत॥१॥
नाहिनरागरसरंगः हासरसबिलासकहलः नहिसुषसञगार
केलिमंगलकोलहलः सरवीरसनाह सारआयुधनसंवारत
रामबयरदिनरातिः ञवरतहविबलत्वीरन मगराजत्रासम
गजरथमनुः जीयमञासछुरतजथाः कुलराकसवासलंकके

वेष·कृतत सकरकरयो·जगतमातजानकी·हरि
यहजिहिबलआगयो·सुतेकुलदलबलसजऊ
नेषत्र हकारनतजऊ·मानोनबचनमेरामुण
आयोजुसेनबंधीयउदधि·हगेरामतोहि
रिकाअपनेकरलिःकहततोहिसुनिको
मंगलफलसेसीस॥१॥अवलोकेमेआ
त हाबिधाताकेलिषतःनयेप्रगरपु
लिकाःबाचेमरमबिधानःतामहै
दांना॥२॥करमग्रंकजेब्रह्मके
मंजनसमथःकोटिजतनऊनके
हसमरचहिलेउःहेऊजकहु
कबिता॥कालसेवममक
तेदिगदेवबिहतपदरज
रनाग्निनागमरःअवत
र·दैषऊसउतयतण
हितपतगदलेकसि
लसाजि·अरिजुल
नीरतिराये·अक
हमेरोत्रयलोक
योसिवहिं·सो
ऊउरथपदपु
सहबालिसु
त·हीयप
नमात्र·क
रहुहर·
चनबो
चमह
रह
तो

बसीसत्रमावत:तडितातरकिननकुछबिछवत:रायवलंकाओ
रनिहारि:वारावनयरहोतअपारे:कल्योउदियतिहिसमयनिसा
कर:कुमदनिबिकसिचकोरनिहितकर:देषिबिसेषछत्रघनो
बर:बित्रतत्रीयकुकलतडितावर।।श्रीरामा। रामकसोदेषकु
लकेसर:दामबिदमकलंकपरकेबर: मनाहिबिभीषनआवतमो
रे:उनयेघनपतिहेधोओरे।। बिभीषनः।। बोलेलंकबिलोकि
बिभीषन:मेघनहिनयहरघुकुलमंडन:सजिबितानबडरं
गसवारे:वारावनयरहोतअपारे:घुमंरतनहिनमृदंगसबरघं
न:गगनभूरिअतिधुनिबनकगन:नाथदमकदामनियहनाहि
मंदोदरिकुंडलचमकाही:रतनकिरीटचमकअबपुरावन:नहि
चपलात्रयतापनसावन।।कबित्त।।बिलयतानिमोभेजबरघु
बर:सोहबिमुकटकरहिआयेसर:तहाकऊनदेष्योधनुत
न्यो:बिजकौतुककपिसेननजान्यो:धाएसिरलेमुकटपरेधर:मन
असगुनलषिपैगेमंदिर:पकरिहाथतबहीपटरानी:सआलेबे
गरिसयानी।।मदोदरीउ।। मानकुबचनकहतिमंदोदरि:असगुन
होतनिकटआयेअरि।।रावन।। दहा।।रावनकहिमदोदरी:सिर
कटिरेसुनसठ:मुनिलेधरिकुसीसपर:मुकटनकअसगुनमूर।।
छंदपधरी।। सबकहतनीतित्रीयगनसमास:उरजासअष्टल
दहनिवास:साहसअनृत:चपलतासंग:अतिमायाभयअवि
बेकअंग:अनसोचअदयमिलिअनाचार:बिनतास्वभावअष्ट
बिकार;प्यारीहमकीनेयहप्रमान:धरिचितनबचनतवत्तयनि
धान:सबअमरसत्रुजेमोहिसुनार:सोसबकेलिठकेसुतारगा
दहा।।सीतामहमायासती:रामब्रह्महीयहेरि:निस्वैहैमेरे
मरन:तोपैदेउनकेरि।।१।।मंदोदरीउ।। कंतजुछायाकालकी
निसंदेहयरनास:तातेमानतनाहितुम:वृथाप्रबोधप्रकास।।
रहसिसमयमदोदरी:रातिकहतुषरोर:अंगदकैकीएकतुम
कहीनमानीकोर।।२।।देसुतमारेबानरनि:पतिकहेउपजीय
त:अहंकारपीयरवरो:मोहिनियोफलदान।।३।।छंद दंडकरी।।
अंतकंतलवलगिअवतारा:नयोरामसारनतुवनारा:श्रीयसु
नियेतिनकीप्रभुताई:छोडीतोलिरबमदछाई:अमरअबिल
जिनकेहैंअवयव:देवसहदुष्टदानवदव।।बिराटरूप।।

कहत काल आगम कथा॥ इति दूतांगद प्रसंग॥ कवित्त॥ दूत॥
सिषर त्रिकूटाचल बिमय रावनगढ आनि देषत बेल बल दिसदि
म हारे बेमनमानि॥१॥ परवत बेला आगपर उतगढ रघुराम दूत
न आमत बनेदिट बिसबास न कर बामे॥२॥ एक दिसा दिनकरउ
दित एक हि लंक अवास प्रति आना दुख बाद परि सममिलि नयो
प्रकास॥३॥ तहा बिलोकत लंक तन सानुज राम सचेत कालित
सोना नगर की द्रिग निमहा सुषदेत॥४॥ छंद पधरी॥ प्रतिद्वार द्वार
तोरन सचेरु कुलि अरे हरे बनि धजा देरु कनकमय कलस नगजटित
कीन निसबट तअमित सोनानवीन प्राकार अहहि मनमय प्रमान थि
कउर्ध बिराजित सम थान धुरनकि हि कि बिय हमु धिपार बरनै गुल
कसो ना बनार थंबे तहा रावन उर थथान निसकराम देषे निदान
श्रीराम बाच॥ दस मसत कमुकट किरीट देषि सो पूछि बिभीषन करै
बिसेषि॥ बिभीषन बाच॥ रावन यह गढ असुरराज सिर छत्र से
त चामर बलाइ यह सुनत राम आज्ञा न बाउ आकरषि धनुष सरउ
नउठाइ कोमंडक रेकुंडलाकार मोष्यो जुबान निसचार मार दस
मुकर मूल काटे निदान सोलरयो बान बज्रहि समान॥ छंद छेअ
षरी॥ लजित मन तिहि छन लंकेसर परे छत्र नजि गे अंतहपुर बे
लाचल ऊपर प्रभु पावन बसे निसा त्रय तापन सावन लछमन प
श्वव रन कसाये बिहग अजिन सजा जु बनाये सीस कपीस अंक
अवधेसर मारुति चांपति चरन मनोहर बामपानि कोमंड बिराजि
त सर अमोघ दछन कर साजित निकट निषंग सन्म दिसि सोहत
महि कृतसय नत गत मन मोहत सावधान लछमन बीरासन
बैठे मित्र कपीस बिभीषन॥ रावन प्रबारे बर्नौ॥ सोचति
निसा न रीझहि अवसर लंका सिषर मनोहर मंदिर बनि बै
ठे ता ऊपर रावन नाम निमंदोदरि मन भावन राजित छत्र
बितान मनोहर धुरजनु घन घमंडित जलधर हाहा किंनर गं
धरब जु आये बिबिधि नाटक संगीत बनाये बाजित बिबिधि
हसुर बाजे गगन मनहु प्रति धुनि मिलि गाजे नाचत अंदर
करत कोलाहल होत निसान गानको लाहल करत कमुकट कि
रीट कनकमय मंदोदरि कुंडल नग हिमनमय मनहरी ऊज

हिऐउप्रतुकरउसोम · बिसनारबैरबिग्रहबढाइ · कैअंतरेउच
हिबेतआर · सबदेषेमैबानरसमूह · जुधहरषकरतबरबीरजूह ·
कैलेकसमुषचालतलंगूल · सोसिंघनादगरजतसमूल · सुग्रीव
सेनपतिजितसंग्राम : निसरहतनिरंतरनिकटराम : यहनीलअगनि
नंदननिसंक : नलप्रबलसेतकर्तानियंक · आछौरषेछउनमेगअं
नि : जुवराजयहैअंगदसुजानि : हनुमंतहेलजिहिलंकजारि : मिलि
अदकवररनबेलमारि : यहपनससरसअरुसरससूर : यहद्विवि
दमयंदपेरुषसपूर : कपिकहनपारकोकविकहार : संभ्रानसे
नअतिबलीआर : बिस्वेसरामबिस्वहिबिनास : जगजननिजा
नकीसीयाजास : तिनसोबिरोधनहीउचिततोहि : हगरूगगनि
मतनासहोहि : संसारअथिरयहनासंग · नवनतअंतछनसोम
संग · पंचनूतप्रबरनिदेहहिप्रमानि · अलिलतनतपचीसअनि · मल
मासअतिथपुसगंधमूल : अहमेवपाअनिजोअमूल : तेजोगन
रअनेकसंग । सोईदेहलहजउतपतिसंग : पुनिकरतअहमहत्यादिप
प : तिहिहेतअविद्यासगआप · पोलसतिनसतुभजननमपार : अ
धिकारनसोलंकेसआर : ॥ हाहाप्रहेकारनविनुथियह : रामन
जरघुराइ : दुरलभपावउपरमपद : सुरपुरबाससुनाइ ॥ छंद
देअबरी ॥ सुककेबचनसुनतहितसाने : उरअतिक्रोधदसान
नआने ॥ रा व न ॥ अनंगअतिप्रमदेतअनाने · गुरुज्योमोहिप्र
बोधनलागे : दीआदंजजगतरुसोजत · नाकहिसिंघदेतनलाग
न · कहतअधमअजगतनीतिकथ : सोलनहीसुनिबैकहलमर
थ : पुनिजोकहेनीतिफलपावहि · दुहुइंदनमतकेरिदिधावहि
सुकबाच ॥ प्रभुभेसबसेवाफलपाये · थोकहिसुककेपतघर
आये ॥ सुक पूर्व जनम प्रसंग ॥ कबित ॥ अगेकुतोब्रह्मरि
षसुकयह : सोसेवनसुषबनबनितासह : अगनिहोत्रदेआदिज
उत्तम : करतोहोमउचितजोद्विजकम : बजरदहराकसइकबेषम
रहासोबसतनिकटसुषआश्रम : पापीअसुरद्रोहद्विजतनपर
निसिदिनताकतघातनिरंतर : रहआगसितिरिषसुककेआये :
पूजिसबिधिआश्रमपधराए · सुकनोजनहितम्योतिरिषीस्व
र : आपनगयोतबेग्रहनीतर : करिअगसतिकोरूपसुआसुर : क

लौ सुक हि बिनती सुनि द्विजबर ॥ बज्रदंष्ट्र उवाच ॥ छांग मिष तौ जनम
मरे छौ : कछुक काल न्यै करत उपेछौ ॥ कबित्त ॥ सुक अपकार हेत
वहि राकस : तहां सुक त्रीया रूप कीनौं तस : जाति जाति तौ जननमन
नाये : मनुषा मिष तिन मध्य बनाये : यह के रिपा क असुर अस आयौ
बोलन रही अगस्ति बुलायौ : बकुंतन गति अहि भई बेगरे : पुनि ले
अग्र धरे पनवारे : ले सुक आप परोसन लागे : परम बिचत्र अनरस
पागे : नर आमिष ताम हौं लै नाये : अग सत छि दृष्टि मुनि आये ॥ मु
नि अगस्त्य उवाच ॥ ये अमेध नर मास सजन लागे : आनि धरे तो जन मम आगे
पापी मुहि परस्यो जु अपावन : सुक तुम होहु मनुज मास सासन ॥
सुक उवाच ॥ देव मांस न भष आपु दीनौ : बिसरे सो यह बुधि नवीनौ : कि
हि अपराध आप रस्यो स्वामी : जगत पूजि तुम अंतरजामी : दयो अ
प कि हि कारन देवा : मैं संतत आइ करी सब सेवा ॥ कबित्त ॥ जो गथ्यौं
न करत बरिष जानौं : मन अपराध न सुक को मानौं : सुक अदोष
मुनि मन अनुसरयौ : कछु बिकार किंऊ दुष्ट जु करयौ ॥ अगस
ति उवाच ॥ द्विज अग्य तै आप मैं दीनौं : हित अबिचार अनौचित की
नौ : मेरो बचन अमोघ बिचारऊ : निहचै सोई न वृत अनु निहारऊ ॥
रोष्दे हराइ सक्यो अरि है : करम सहार दसानन करि है : राम जबै
मानुष तन धरि हैं : कारन बध रावन को करि हैं : त्रेता जुग राय वतं अ
वतारा : तौ लौं रहु सद रुद्र तुम्हारा : रहा रघुबीर लंक गढ आवहि :
सेन रीछ बानर सम दावहि : तब सुक तुराम पै जैहो : हैत बचन कु
टक समझे हो : बात नीति करि अनष बढे है : दुष्ट तबै तु हि उधरंदे
है : हुवि पुनि राम सरन तुम जैहो : प्रभु पद परसि आप पद पैहौ :
कबित्त ॥ आगे ज्यौ तौ तव अंजु अंसो : ताते मिल्यो सुक हि अब
तैसो : रहा सुक अनष राम पह आये : सब अपनो वृतांत सुन
ये ॥ दोहा ॥ करि बंदन रघुनाथ कहँ : परम प्रेम परिपार : क्रम मजु
त कीने परिक्रमन : सुषन चित्र समार ॥१॥ पुनि सुक पायो आप
पद : धरम देह द्विज धारि : अधम उधारन अघ हरन : ऐसे राम मु
रारि ॥२॥ हैं अनाथ के नाथ हरि : पतित दीन सो प्रीति : अषिल च
राचर अगतिगति : नरहर प्रभु की रीति ॥ इति सुक उधरन ॥
अथ लंका बिरोधन ॥ सुग्रीव वाचा ॥ कबित्त ॥ जो रिपा निक

पिराज·स्वामिसोंबिनयेंऐसो। नवप्रतापरघुतिलक·कहरावन
गढकेसोः सहतबंधुसुतत्रीया·रजुअंधीयगलरावनः गढउथ
लिषलगरबगालि·पारलिपदपावनः आजानबाहुअवधेसअव
रनजयरहालीजीये·कपिनालकरतउछवकलहु·देवसुअ
पादीजीये ।। श्रीरामबाक्य।। हसिबोलिअवधेस·रामधरमहि
रषवारेः तुमकारनकपिअमर·असअवनीअवतारेः यहउपज्यो
बरब्रहमबंसः पापिष्टअपावनः जानियहेजुवराज·सगलिपग
योसमझावनः तिहितियेअबे निरदोषतुम·कपिपतिसोंनकी
जीये·करिअनीचारिषलकटकहिः दुष्टकरमफलदीजीये।।
कबित्त।। जयतिजयतिसुरसरन·अषिलदलबलउचारेः
उरेबीरअनंतसु कुलतिलकसंषयकारे·रामरूपउरधरीय·त्रि
कुटगिरबक्रनिहारीयः चितहुलासआयासलाग·सुरबेरसं
हारीयः संक्रमिसेननरहरलुकनि·कोलाहलजुथहरषकरि
आनंदअमरपतिउपजीय·पुरहिलंकआतंकपरि।। छंदहेंअ
षरी।। उरगमलेकाचारिद्वाराः बज्रकपाटसलबिसताराः च
रचिमहूबजुगेरचलाये·अतिबलसाजिद्वारचहुआये·दहन
द्वारआरलगिअंगदः पायोजिजुवराजबिजयपदः द्वारपूर्बदि
सिनीलप्रबलदलः करसंचालबरनरनगनबलः पछिमदिसि
हनुमंतबिजयपतः रामनगतषयकरराकसरनः आपरामल
छमनदिसिउतरः नरांतसंहारबिनासकनुवत्तरः सबदिसिन
येकपीससहारकः कपिसमूहमध्यलीनोनारकः ।सिलपर
बततरनिकरसुहायेः आयुधबानरजालउगयेः कूदहिगग
नकरहिकोलाहलः उसहसीससहिथितमरकटदलः देतबिर्व
घनचोकीदसदिसः राषतप्लगिकपिनिकीराकसः घनदलन
योलंकगढघेरोः कालआहराकसकुलकेरो।। दूहा।। दहारव
नकृतकोपअतिः सजिआयुधसनाथः दुरगमद्वारनिचारिदि
सिः आयेअसुरअसाथ।।१।। छंदहेंअषरी।। अंहेहसतपूर्बदि
सिआयेः जंत्रबिबिधिघनद्वारसजायेः दहनद्वारेआस्म
सिआयेः इंद्रजीतपछिमदिसिआये
होदरः बीरबिषमदलरोकेबानरः इंद्रजीतपछिमदिसिआयेः
बिकटकपाटनिद्वारसजायेः उतरद्वारदसाननआयेः सनि

तोसुकहिबिनतीसुनिद्विजबर॥ बज्र दंड ३। छागमिषतोजनम
मंईछो:कछुककालतयेकरतउपेछो॥ कबित्त॥ सुकअपकारहेत
वहिराकस:तहासुकत्रीयारूपकीनोंतस:ताहिताहितोजनमन
ताथे:मनुषामिषतिनमछबनाये: यहकेरिपाकअसुरथहआये
बोलेनरहोंअगसतिबुलाथे: बकुतनगतिअहमहबैगरे:पुनिले
अयधरिपनवारि:लेसुकआपपरोसनलागे:परमबिचत्रअनरस
पागे:नरआमिषतामहलेनाये: अगस्तछिद्रिष्टिमुनिआये॥गु
निअगस्त३॥ येअमेधनरमासअतागे:आनिधरेतोजनममआगे
पापीमुहिपरसोजुअपावन:सुकतुमहोहुमनुजमासासन॥
सुक ३। देवमांसलषआपाहीनी:बिसरेसोयहबुधिनबीनी:कि
अपराधआपर्योस्वामी:जगतपूजितुमअंतरजामी:दयोश्र
पकिहिकारनदेवा:मैंसतवारकरीसबसेवा॥ कबित्त॥ जोगध्या
नकरितबरिषजांन्यो:मनअपराधनसुककोमान्यो:सुकअदोष
मुनिमनअनुसरयो:कछुबिकारकिहुदुष्टजकरयो:अगस
तिबाच॥ द्विजअपतआपमैंदीनों:कृतअबिचारअनोचितकी
नों:मेरोबचनअमोघबिचारहु:निहचैसोईत्तवृतअनुहारहु॥
रोंदेहरासुसकोधरिहो:करमसहारदसाननकरिहो:रामजबे
मानुषतनधरिहैं:कारनबधरावनकोकरिहैं:त्रेताजुगरायवत्र
वतारा:तोलोंरहिसदेहतुम्हारा:रहारघुबीरलंकगढआवहिं
सेनरीछबानरसमदावहिं:तबसुकतूतरामपेजैहो:हेतबचनकु
टकसमझैहो:बातनीतिकरिअनषबढैहै:दुष्टतबेतुहिअतरदे
है:हरिपुनिरामसरनतुमजैहो:प्रभुपदपरसिआपपदपैहो:
कबित्त॥ आगेहुतोत्तवअनुजैसो:तातेमिल्योसुकहिअब
तैसो:रहासुकअनषिरामपहआये:सबअपनोवृतांतसुनं
ये॥ दोहा॥ करिबंदनरघुनाथकहै:परमप्रेमपरिपार:कमजु
तकीनैपरिक्रमन:सुषनचित्तसमार॥१॥ पुनिसुकपायोआप
पद:धरमदेहद्विजधारि:अधमउधारनअधहरन:ऐसेरामम
रारि॥२॥ ऐसेनाथकेनाथहरि:पतितदीनसोंप्रीति:अषिलच
राचरअगतिगति:नरहरप्रभुकीरीति॥३॥ इतिसुकउधरन॥
अथलंकाबिरोधन॥ सुग्रीवबाच॥ कबित्त॥ जोरिपानिक

पिराज स्वामिसोंबिनयोऐसो। सबप्रतापरघुतिलक कहारवन
गढकेसो-सहृतबंधुसुतत्रीया·रजुबंधीयगलरावन:गढउथ
लिषलगरबगालि पारलिपिदपावन·आजानबाकुअवधेसअव
रनजयदहालीजीये:कपिसालकरतउछवकलह·देवसुअ
ग्पादीजीये ॥श्रीरामबाचा॥ हंसिबोलिअवधेस-रामधरमहि
रषवारे·तुमकारनकपिअमर·अंसअवनीअवतारे-यहउपजे
बरब्रहमबंस·पापिष्टअपावन:जानियहेजुवराज·सगहिपग
धोसमझावन:तिहितयेअबेनिरदोषतुम·कपिपतिसोवनकी
जीये·करिअनीचारिछलकूटकहि·दुस्करमफलदीजीये॥
कबित॥ जयतिजयतिसुरसरन·अखिलदलबचनउचारे·
उठेबीरअनतंग कुलतिलकसंषयकारे·रामरूपउरधरीय·त्रि
कुटगिरवंकनिहारीय:चित्रकुलासआयासलाग-सुरबेरस
नारीय;संक्रमोखेननरहसुकबि·कोलाहलजुधहरषकरि
आनंदअमुरपतिउपजीय·पुरहिलंकआतेकपरि॥छंदछै
परी॥उरंगमलंकाचारिवारा:बज्रकपाटसलबिसतारा:च
रिचमूचकुओरचलाये·अतिबलसाजिद्वारचकुआये·दहन
द्वारआरलग्निअंगद-पायोजिजुवराजबिजयपद-द्वारपूर्वदि
सिनीलप्रबलदल:करसंचालबरनदनअनचल-पछिमदिसि
हनुमंतबिजयपन·रामनगतभयकररकसरन-आपरामल
छमनहितिउतर·संगतसहाइबिनासकेतुबतर·सबदिसिन
येकपीससहारक:कपिसमूहमधलीनोनारक:।सिलपर
बत्ततरनिकरसुहाये·आयुधबानरजालउगये:कूदहिगग
नकरहिकोलाहल·उसहसीससहियतमरकटदल·दैतबिच
धनचौकीदसदिस-राषतपूगिकपिनिकीराकस:घनदलन
येलंकगढघेरो·कालआहराकसकुलकेरो॥दोहा॥दहारव
नकूतकोपअति:सजिआयुधसनाथ:दुरगमद्वारनिचारिदि
सि·आयेअसुरअसाथ॥१॥छंदछैपरी॥अहंमहसतपूर्वदि
सिआयो·जंत्रबिबिधिघनद्वारसजायो:दहनद्वारेआरम
होदर:बीरबिषमदलरोकेबानर:इंद्रजीतपछिमदिसिआयो
बिकटकपाटनिद्वारसजायो·उतरद्वारदसाननआयो·सगि

किरीटदसमुकटसुहाये:बिरूपाक्षसोमधूम्रहौसक:करतसहा
रसबनिनरांतक:कंटकदुरगसुरहतकीनें:द्वारद्वारजिहिंआरह
सदीनें:आयुधसकलसाजिबलआये:सोईसोईजोहिंअस्त्र
समुहाये॥ छंदपधरी॥ करतरीपासअंकुसकटार:जमदंड
षगषंगदुधारा:सकतीसुसांगिछुरिकात्रिसूल:मुद्गरागद
गासंमूल:धनुबानबिबिधितोमरसधीर:बसानिंभपालपरि
घाजुबीर:परसाकुगररचुगमारपानि:घनघातप्रबलपटिस
प्रमानि:हलमुसलगहकरपत्रहाथ:महाकालचक्रबीछूस
माथ:करगहेसूलत्ताकुदाल:जेकपटजुधआयुधनिजाल:
अरुदेसकालप्रहरनअनेक:इत्यादिगनेकोएकएक: बाह
नहयबारनरथबिसाल:बरकरनासिंघचित्रकनिब्याल
तहांबृषभमहिष-बृक-चटि-कुबीत:अनेकजंतबाहक
अनीत:बाजतनिसानचहुंघाबिसाल:भेरीमृदंगरवसुर
निसाल:गोमुषप्रनवआनकअगान:दुंदुभीसबपटहानि
दान॥दोहा॥ कागचरममयतत्रिका:पुनिजेधातप्रकार:
इत्यादिकबाजित्रअवर:बसकिहिंगनतबिचार॥१॥सम
हरबाजतबीरसुर:सुनिसुनिसबदरसाल:सोंसोंउमहति
चित्तअति:चटराकसकपिनाल॥२॥छंददेअषरीराचना॥
चोपटमारिजातहुबनचर:भाजुजहांपावहुतुमषेचर:स
जिदलगहहुबालसंन्यासी:होरबंसछित्रिनमहंहासी:पू
छकारिछोरहिंगेकपिपति:पकरिबिनीबनकरिहेंगटप
ति॥ कबिरुवाच॥छंदपधरी॥ इससीसबचनराकस
दुबाह:रसरोसलगेकपिदलहिराह:रसबीरउनयदलपे
जरोप:कपिलरतनिसाचरसमरकोप:पटकाहिंगहिरा
कसकपिनिपोषि:मारहिंउछारिदिसिरामदेषि:दलम
रकटकोरहोचितकोलि:पहमदिसिटूटेनाहिंनपोलि॥
अथ हनुमत अंगद गद मध्यजुध॥ छंदभुजंगीउ
ऊओररघुनाथरानानदुहाई:करेमाररलेकारलंकालराई:
जनेबानरारीछनिसचारनागे:लरेरामकेनीछअसमाने

लागे· नके मूरछटे धरासूं उधावे: परे एक औरे महा मुकति पावे· चलेज
अंगे बूरकं गरजेते: बंचावे तहां कूदि कपिजाल तेते· इहां कूदि हनुमंत ग
रमो उमायो· परयो इंद्रजित ढेष्ट धरि रोष धायो· जुरे पवनको पूत
लंके सजायो: नये परबस संग्राम जो मन नायो· महावीर जूझे सिलासार
जोपे· चटेरो बरे उबरी चित चोषे॥ छंद पधरी॥ सिलमारि गोरि रथह
यसधीर· बासव जित जोतहा बिरथ बीर· स्वारथी अवर रथ लीय मह
जार: इंद्रजित तास अरोहआर· हनुमंत सु मास्यो लात हीय: जरजरित
देह गोलूलि जीय: मुरछागत आमो मेघनाद दससीस दे पिउ पज्यो
बिचार· बिचलेक जुरत हनुमंत बीर· सुनि आयो तहां अंगद सधीर·
सुत बालि मिल्यो मारुतिहि संग· अतिबली उजय बानर अनंग: जु
साभिबीर कपि निरत दोर· हा हंत सब इगद मोज होर: पीट छिर
मसत करो रूपांनि: धावहि स्वजीत अति जातुधांनि: परित्रास करहि
बालकपलाहि: हा मात तात कहि सरन जाहि: बीरोद थिलें कमेष
हिषेल· मदराचल मंरक रक्षुनय मेल: ऐ ईवि देकूदि रावन अवास·
नहाथ गिरिराये कलस नास: दाहे जुअ एइध जद्रेनदाहि· फेर होलं
कमहत्रा त्रिहि· मारुति अरु अंगद बल अमान: अतिहरष करे रघु
नाथ आन: अवधेस जयति जय जनप अनंग: जयपरयो सुनत राव
नहिं जंग· जुध मारि कपि नि बकूरं जातुधान: नुवंनिरत असत मित
नयो ज्योन: आवास थैलीने उभारि: सो ईकरे समर आयुध सं
नारि: सजि रूप गगनमग कपि सधीर: बिचि आये अपने साथ बी
र· जागे जब मुरछा जबर इंद्रजीत: अतिहरष नयो रावन अनीत· जु
निरुद्ध निसाचर निसापाइ: सबहिनको बाढ्यो बल सुताइ॥ अथ
अतिकाय अकंपन जुध॥ दोहा॥ इहां अकंपन उर उमगि अतिअ
नीत अतिकाइ: आगे नये सेनापती: सोगवने सिरनाइ॥१॥ छंद चौ
अबरी॥ अब अतिकाइ अकंपन आये· ग्लेजुध अरु मंगल गाए
तिन आसुर माया बिसतारी: अरुघन मिली रयन अंधियारी: औ
न दृष्टि कैनी अतिराकस: दारुन तम अस स्यो दसहू दिसि: अंध
नये कपि बस अंधियारे: रूठ तना हिन कहा सेनारे· न्ये निरुदि
मम रकट साला: रुधिर मेरी मिलि जलद निजाला· जामो रघु
पति अंतरजामी· संकर हरन सुरनि के स्वामी: अनुन हाकरन संह
इपगए· अंगद हनूमान कपि आए: आगनि बानर रघुनाथ चलाये·
अंधकार तिहि निपलन सायो: इहां निसाचर मायो नासी· पाव

कजोतिदिगंतप्रकासी: दुसहहाकहनुमंतजुदीनी ·गिरेगरजनअसुरी
जयलीनी: राकसआयुधसरसंचारत ·मरकटतिहिपरबततरमारत
धाइलेजुगहिगहिबानरषल· करतनिसाचरसमरकोलाहल: जये
कलहकपिराकसजारी: चौपट निरेपचारिपचारी: रहासुनटअति
कारअकंपन ·धाइलजयेअधाइधाइघन ·परेजुगइलकपुहचाये·
येधाइलरावनपहआए ·पतिहितमरेअसुरजसपाए ·उबरेसुपेडु
रगमहआये: रनबिनहारसुनेजबरावन: प्रजरतहीयोसरोष
अपावन: सुतनरीयामंत्रीनरसाजन ·निरनयपूछनजयोरसान
न॥रांवन॥ करिबोकाजअबेसोईकहियै ·सबलआपपरिलव
कोसहियै· दुसहबचनसुनियतहैदिनदिन: रोसचढैराकसछीज
तरन ॥मालवांन उ॥ दूहा॥मालिवानअतिहितमन· बोलोबच
नबिचारि: समताबिनुसंग्रामसजि· हो अंतपैहारि॥१॥हिरंण
छिरैआदिहव ·असुरसूरअवनीस ·अगनितमारेरामरहि: सुने
तुमजुदससीस॥२॥लीनोंतिहितवअवतलगि ·अबमनुषअव
तार· हगिलाग्योहैदेवहित· नमिउतारनभार॥ कबिरु॥बच
नलग्योबिषबानसो ·मालिवानकोमूढ ·उतरदीनोंफेरियह:
दहादससीसअरूढ॥ रांवनमालवांन प्रति॥ जमकुतोहि
जलोजरव: सोनहीकरमसंचार: इहिकारनजीवतअजू ·बचनकी
तिबिसतार॥मालवांन बाच॥ इहागयोतबग्रेहउठि: मालिवान
दुषमानि: देषजुगेरावनदुसह ·अबजुबनीहैआनि॥१७॥इंद्रजी
त जुध॥छंद पधरी॥ इहबोलोरावनसुतअजीत ·जगलसोबि
रदजिहिइंद्रजीत ·करियेनसोचलंकेसकोइ ·दलकीसकहानर
जतीदोइ: आकासदाहिपृथ्वीउथालि · करिहुंअबानरीआधिक
लि· योकरतमंत्रपितसुतअजीत ·अगओप्रजातउद्योतपंग· दृ
पतिकेआयोसकोप ·अतिबदीबदनघननादओप ·इहिदिसा
लोबज्ररोष: मरकटकरपरबतकसोमोष ·तिहिदिसोबज्ररथ
धजाटूटि· छोहबलगयेघननादछूटि· राकसप्रजग्रंथयबान
रोपि: संपातिकीसउरबनेसोपि॥ तरुदियमारिसंपातिता
स· सोगिरयोषेतगोन्नलिस्वास ·अतिकाइअसुरआयुधउग
र· सोजुल्योआनिसमहरसुजाइ: बनचरबिनीतअरुरनबी

र· थरिहृछभारिकटेसधीर· सरस्योमहोदरकपिसुषेन: तननयोसुबि
हबलेबिध्यातेन: गस्योसुषेनपरबतुरंत: हूओरथउ बिलागेउरंत
मकराषिअसुरसरजालमेलि· छतजामवंतमहासमरकेलि· संग
हीसिलाइकपुरसबीस: सरजालबिनासेउगरिसीस· जुधहन्ने
बिसमरहाबिरूजीह: उरफोरिसतनलीकपिअबीह· लीलाउष
लिंडुमसरलीन: हीबीलिरूआसुरगयोहीन· संग्रामधूम्रा
कसअसंक· कपिकुंनमिलेरसरोसकंक: परिअगनितसरपा
थरप्रहार· जुरिगिरेसमरहोउजुझार: तहद्वैबीतकंनवबान्ना
नि: आहिबगवाषिउरलगेआनि· बानरतिहिमास्योतालवृछ: प
रबतप्रमाननतनपरिप्रतछ: सरसुकिअसुरसारनसरोष· सेल
स्योरिपुनउरपानसोष: वृछ हतेकस्योतिहिअसुरबीर· संग्रामकं
पनगरज्योसधीर: रामेनसुतत्रिसराजारूढ· अक्रिकेपअसुरना
येअगूढ: हनतोभरकीनोसरनहेल· बेचरतिहिमास्योहछबे
ल: समकुरेनेरातकपनससार: हरिकरेउजनिसरतरप्रहार: अ
रिसमरअकंपनकुसुदआनि: परिमारउनयमुष्टिसपानि: धू
म्राहकेसरीमिलेधार: हहिबानमारिविहिगिरउगार: सुकअसुर
कीनोसराजाल· तिहिबलीबेगिरूतोरिताल: आसुरनरातक
सोजुरेआइ: कपितपनसरनितिहिबेधिताइ: नलहयोसुथाप
टनिसखार: धरगिस्योबमतसृष्यरुधिरधार: नागांतकअसुर
रननिहारि: मरकटमयंदसोलयोमारि· दुसाधिनिसाचरसारस
ल: कपिद्विबिदमिलेसंग्रामकूल· राकसनिकुंनबानरसुनील
समसकतिजुरेसमहरसुसील: सजिकेप्रहसतआयोसधीर: गजउ
तेगरजिमरकरसधीर: हहिओरसुरातकअसुरआइ: दलरामजुरी
मुषलगेहार: जंबालिबीरहनुमंतजुध· करथापहनेसोंमुहअसुरकुध
उतबीरपाछिनिसवरअतेग: सोमित्रहयोरनबानसंग: संतापनअरुथ
नक्रोधसर: संक्रोधन·कृतघन·सकसमूर: चढिबेतअसुरयेपुष्टच
रि· मुहचरेलयेसोरामभारि: परबततरआयुधधारपूरि: संग्रामअ
संध्यागिरेसर: रथटुरेटुरेआतमसबेध: कलहरहिउनयऊमेक
बेध· पलक्षोनपंककरदमेअपार: धरचलीसरितमिलिरुधिरधार
पलचारत्रिसआहारपाइ: सबत्येनपीपंपीसुताइ: जोगनीरकंत
रिपत्रजाल: करिपानकेजेयजयंकपाल: गाकनीनयानकरईग
क· हरनारदकेउकबीरहाक। अथमेघनादजुधनागपास

बंधनं ॥ दोहा ॥ मेघनादअतिक्रोधमन : सजिआयो संग्राम : मारिपछ
रतमरकटनि : रनहिपचारतराम ॥१॥ षेचरगढ़ेषेतमह : तिसगरजत
हवहोर : चितवतजा दिसि कुटिलचष : कपिनसहारतकोरु ॥२॥ अ
तिसरोषहनुमंतरहों : आयोअजितत्नार : सोभास्यो घननादसि
र : नागफेरहीनसंजार ॥३॥ छंद धरी ॥ तिहिचोट टुट्योरथहय
समेत : षलजयो बिरथतजिगयोषेत : इहाइन्द्रजीतवटिंगोअकास
नवहीअ द्रिष्टनयोदुष्टतास : आवेनद्रिष्टमायाअगाध : वहअसुरस
बनिमारेअसाध : करसस्त्रअस्त्रबाहिअनेक : अवधेसजुकारत
ऐकऐक : उरबादकहेनहीलगेदाव : इहाकेदुष्टषलबुधिउपाउ
बिसतारअसुरमाया बिकार : अतिनरीक्षोनबरषाअगार : मल
स्त्रअस्त्रिथकचउपलमार : नई वृष्टिपासुपूर्याअपार : इहिसम
यमिल्योनजअंधकार : पसर्योदिगंततमलहिनपार : तिहिनये
नालकपिअतिसनीत : सवकहतत्राहित्राणेससीत : तेजमयबु
नरघुनाथतानि : जाजुलसमोघ्योसमयजानि : तममायानई
बिनासतास : पृथीप्रसियज्योरविप्रकास : बिधिस्येप्रसनक्रैरि
पुबिनास : परलैद्रसकंधहिनागपास : श्रीरामचंद्रलछमनस
मेत : षलनयेबांधिअहिपासषेत : ब्रह्मास्त्रनावरघुनाथवीर :
सोपासनहिनकाटेसधीर : रनगिरेजुमुरछितअवधिराव : मनु
कस्योरहामंजुषमनाव : दुषनयेसनयकपिनालदेषि : षे
चरनिहरषबाढ्योसेषि : दससिरपहआयोमेघनाद : वृतांतसु
नायोसुरबिषाद ॥ दोहा ॥ पापिष्टकसोतबसमयप
र : जानकीहिदिषावकुकंतजार ॥ कबित्त ॥ रथारूढ़तब
राकसनि कीनीजनककुमारि : रामदिषायेरनअजिर : पोढे
पारपसारि ॥१॥ सीता बाक्य ॥ कबित्त ॥ मनहिदेषिमेथलीर
हाअतिसोकउपजीय : कालचालयहकठिन : मनुजसुरजार
नमजीय : पारसतरपतेप्रगट : नामजिनकोनिसतारत : नवस
गरकूलसनीत : धरिबाहउधारत : जुवप्रबलअहिनवतम
ता : कवनताहिअपबसकरन : सोईरामबंधेअहिपाससो : रजत
सोयेसेजरन ॥१॥ जानिसमयजानुकी : नियतसुरकाजनिहारी
य : परमअगतअतिबलप्रचंड : इहागरुड़संभारीय : गरुडमानअ
गमन : जबहिपंषारवबजीय : भुवंगपासगयेतजि : बिषमम

यासुबितजीय: रघुनाथउगे सानुजरनहि सुरनिपुहपबरखेसम
य: हीयपस्योदाह्यहसुनतही· नयोतहारावनसनय॥ छंद दो
ग्रधरी॥कबित्त॥ बनग्रसोकग्रानीबेदेही· सुमिरतहाहारामस
नेही॥ धूम्राक्ष्अकंपनजुध॥ इतधूम्राक्षग्रकंपनग्राये
रहिदिसिग्रंगदमारुतिधाये· नयोसंग्रामपरसपरभारी· नरं
तेई निरंसंनारिसंनारी· परेखेतधूम्राक्षग्रकंपन: रोषसोकप
रिजरिउरावन॥ दू०॥ ग्रनकंपनधूम्राक्षहरन: परेग्रकिजसप
र· रइंद्रजीतरावनरह्यो: सोचनचितसमार॥१॥ इतरावनग्रति
हीग्रनखि: बीरसनाजुंननार: सुतग्राताभंग्रीसुनर: ग्रगनितबे
गेग्रार॥ छंदद्वैग्रधरी॥ महोदर मंत्रीनीतिप्रबोध॥ इहिबि
धिमंत्रिमहोदरग्रायो: जिहिप्रधानपदनृपनपायो॥ रावन॥
समयपारबोलोनृकेसर: मोनिसाधितुमरहेमहोदर: हित
वकतातुमसदाहमारे: सवेकाजबलबुधिसुधारे· कहियेरहंव
चितजोकारन: रिपलागेराकसछीजतरन॥ महोदरउवाचकर
जोरेकहतमहोदर: प्रभुतुमचतुरसुबुधिनीतिपर: पेहितग्रहि
तनाहिपहचानत: जानतकरतकिपुग्रनजानत: समझिहमऊ
तातेचुपसाधी: ग्राजपूछियतमंत्रउपाधी: जोहितकहतसुग्र
नहितजानत: मनमहंताहिदुष्टकरिमानत: ग्राजपूछितुम
तिहिकहग्रायो: बिहितप्रबोधउसुकबतायो: सुनियेनाथ
कछुग्रबसोई: ह्वतजिसुनकछिनकथिरहोई॥ दू०॥ नृपति
चारिप्रकारसुवः मंत्रीचारिप्रमान: मंत्रजुचारिप्रकारमिलि: ग्र
गरसुलोकपुरान॥१७॥ ग्रथनृपति॥ छंदउधोर॥ नृपसुन
उचारिनिदान: जेप्रसिधनीतिप्रमान· महिलियोबेनमहीस
तिहिग्रापमानीयहीस: पहयहेलोकजुपार: परलोकनियत
नसार॥१८॥ दुवनृपतितोहरिचंद: ग्रतिबलीग्रवनीयरइंद: व
हिसत्यसाध्योएक: कृतकरेउधग्रनेक: सोउभयलोकसंध
र: साएवजीतिसमार॥१९॥ तृतीयराजबिदेह: उपरहा
सहितपदेह: परलोकतिहिसुखपार: सबनएदेवसहार·
इक्ष्वाकुकुलनृपग्रंकु· कोउनयोराजत्रिसंकु: इहिलोक
करिग्रनर्थ· वहिलोकसरिनहीग्रर्थ: सोउभयलोकनस

रे गो धरम कि त्रिगभार ॥ अथ मंत्री दूहा ॥ एकमंत्री निजस्वारथी: एकप्रभुस्वारथप्रीति : एकदेउ साधक अरथ: एकदेउ हत कअनी
ति ॥ छंद उधोर ॥ एकऊनो मंत्रि असाय: बऊ करे प्रभु हित बाध: ति
हि नाम सुरथ सुतंत्र : मन आप प्रभु मिल मंत्र : दूये निबल सुन्दर नि
कारि : सब हल्यो राज संभारि : प्रभुकाज द्वितीय प्रमान: निजका
ज नास निदान: हरसहि लोचन हानि : ज्यों सुक्र बलि हित जानि ॥
॥ कपि त्रितीय हनुमंत कीन : प्रभु आप काज प्रवीन : कृतदूरस सु
न रघुदेव: सुग्रीव लायो सेव ॥ त वु पुत्र मंत्री यंतेष - कृतउनयअ
हित असेष: सम तुम हि निजकुलनास: प्रभु करत बुधि प्रकास
॥ दूहा ॥ हेत्वारि मंत्री कहे : जथाकरम गुन जोग: अब सु निये
देकानये : प्रभु नृप मंत्र प्रयोग ॥ अथ मंत्र ॥ विषदाडिम कन
सो बिहत : गुरसे निबु गनार: कबिन मंत्र यचारिक हि
न निसमझार ॥ छंद उधोर ॥ बिषस्वाद गुन दुसाधि:
उतपति ब्याधि : अतिस्वाद करक सअंत : दाडिमी बीज
॥ सुषस्वाद गुन मिलि संग : प्रीय मंत्र गुर जु प्रसंग ॥ ३
दगुन हित गार : समनिंबु मंत्र सु नारा ॥ ४ ॥ दूहा ॥ राजा
मत : कहे जथा मति जान : देबनक छुतु मते दुस्यो - निर
निदान ॥ १ ॥ राव नवा चा ॥ कबित ॥ राजा मंत्री मंत्र :
सुनी महोदर : तदपि मनो रथ मन हि निय तुअ हर हत
राम मारि रन षेत - इन्द्र आसन ते रास्यो : करि बास सब पुरब
रज ऊ मूल उषारी : जब सुनी प्रतंग्या इन्द्र जित : य ह की
ठर : सनाथ बध सजि सार सब : पुनि आयो रन षेत पर
कै अषरी इन्द्र जीत जुध अस्र तमारुति लावे कपि जीये ॥
दमारुति कपि आगम : कुमद नील नल सरत कोय क्रम
द्विमयंद तार केसरि तिहा : जामवंत दधिमुख आऐज हा :
पजूथ जु आये : सिलतरु गिर सजि त्रिरत सवाये : सम
जुध असुरस न्हारत : मोर मार उचरत अरु मारत : बि
नये राकस बानर : श्रोन पंक कर्दम मचि सम हर : घाइन जुध
उछाह न्रिरत घन : रोष सीया जारत राकसरन : अस चतुरथ म
र हेरन आसुर : उपजि सोच अति इन्द्रजीत उर : तिहि राकसमा

ष्प विसतारी: मेघनाद गो गगन मंझारी। नन सोई नये अदिष्ट नि-
साचर: अहमसस त्रति हिमारे बानर: कपि निमारि राकस गो लंका।
सो सुनि मिटी पितागर संका। इहा कपि षेत गिरे अवलोके: सानुज रघु
वर त्ये ससोके॥ श्रीरामबाच॥ छंद पधरी॥ रिपनाचलषीर समु
द्रतीर: तहां अमृत औषधी बसत बीर: अबयेस दई आग्या अनंत: सो
आनि तुम हनुमंत संत॥ कबिरुबा। हनुमंत औषधी आनि हाथ: स
ब मृतक जिवाये सुनर साथ: पुनि तहां ले आये ग्रमान: मारुति सो
औषध छन कमोन॥ दहा॥ जे कपि अमृत जोग ते: मरे ते गे संग्राम
सिंघनाद गरजत सबे: मुष नाघत जयराम॥१॥ पयो सुविसमय
लंकपति: बोल्यो वित विराम: जे अब मारे इंद्रजित: सो गढ में संग्रामा।
रावन॥ जपत मंत्र संजीवनी: सुक्र नउन हि संहार: मरकट जीये सु
रन मरे: यह धोके न उपार॥ कवि रुबाच॥ दहा॥ इंद्रजीत गढ मे
रहा: मेल्लो सहत समाज: सजि आयो संग्राम सिर: रावन राकस
राज॥१॥ छंद उधोर॥ प्रहसत जुध॥ इहि ओर राम अनंग: सजि ता
लकपि दल संग: आसुर प्रहसत असंक: कपि नील मिलि समकंक:
रन नील मुष्टी मारि: मारयो प्रहसत पछारि॥ रावन जुध गमन॥ इहि
गिरत मन अकुलाइ: अति कोप रावन आइ: रन चढ्यो राकसराज: स
म पुत्र बंधु समाज॥ श्रीरामबाच॥ सजि आप राम नरेस: सम पुछित हे
लंकेस: ये कोन कोन जु आर: ते देहु बीर बताइ॥२॥ दहा॥ केह कसु
त रन तबंधके: गुन बल विंन गनाइ: कहत विभीषन विधि विवरि:
सुनत राम रघुराइ॥१॥ छंद उधोर॥ रथ धुम्राक्ष धुम्राक्ष निकेत: नृप
सल रोष संकेत: तिहि अति कुबेर सताइ: अतिकाय हरन आइ: रथ
कनक ध्वज मिलि मोर: जय अमर समर संजोर: सोई स्वामि कार्तिकि
साल: कर धरे सकति कराल: यह महोदर रघुधीर: वनि दृढ केहर को
बीर: कतर घहि अरक प्रकास: अहि केतन जय जास: यह देवअंत
कुह: प्रतिअंग प्राप सपुष्ट: तन दिय हंस निकेत: कर वग धित षल
षेत: सो समर पंकित सूर: कुल असुर कर संकूर: वस जिहि सु
राखुर बाम: त्रिसंछी निसक संग्राम: वर सुवन यह मंकराषि: से
सार पोरुष साषि॥ अथ रावन जुध गमन॥ वनि स्वर निकि
कि निबाजि: रथ जुकत नराम निराजि: सिर छत्र माल ससोहा॥

अति दुष्ट गरब अरोह : त्रयलोक कंटक त्रास : हरि करम जगत उदास ·
य लक्ष्या हि रावन आप : त्रैलोक अगर प्रताप : जुधक पिन राकस जो
र · अतित्तार परिदुकुओर · अपआप सन मुष आर : घन घार घघु
अघार : सिर टूटे कटि अन संधि : फरि ऊव रओत्रा फंधि · मरकट निग
रत रमार : सोनयो असुर संघार : रन जुरे रावन राम · मनु उऊ निज
य संग्राम : निसचार सर संधान · हीयमुष्टि हय हनुमान · मुरझार मुष्ट
मार · लक्ष्या लंकेस संभार : पुनि चेत नाउर ई प्रान : उगिल गो षेल अस
मान ।। सोरठा ।। सर मुक्यो अवधेस : काटे मुकट किरीट कर : लयो
ल जित लंकेस : षिसि पैगो गढ़ मांझ पल ।। २९ ।। कबित ।। रावन नाई
हा रावन यह आइ : पुत्र सो मंत्र प्रकासीयं : राकस रन संघरे · सबल ग
दे सिंघासीय ।। मेघनाद उवाच ।। बर बुल्यो बिरदैल : इन्द्रजेता रउ मगि
उर : मातरी छ मरकट नि · समर निसेष करो सुर · कटि येन सो चल
के सअब · कहि निज पै ऐती करो : रथी प्रसिध पौरुष प्रबल · अग
र नाम सम पर हरो ।। कबित ।। मेघनाद जुध ।। दोहरा ।। आग
मन ।। पिता चरन बंदन सप्रेम : कर जोरि जोरि कीय · इन्द्रजीत उ गि
वल्यो : सबल दल राकस सजीय · । सिघ केत जेता सुरेस : पौरुष
पद पायो · महार थी साहस अमान · अन संकित आयो · सोकसो
बिभीषन राम सो : सावधान रहीयो समर : परमीस परम पूरन पुरु
ष · सज ऊनाथ को दंड सर ।। इन्द्रजीत बाच ।। छंद पधरी ।। करस
सत्र समर पंडित सक्रुध · जानु लम करत जथा कपर जुध : क्रौ दिष्ट
कब ऊअन दिष्ट हार : कृत बरित करे दषे न कोइ ।। जामवंत उ ।।
ताक इन्द्र बकास्यो जामवंत : उठि चरन हे ऊम मम बद उ दंत ।। मे
घनाद उ ।। निज गरब बोलि तब मेघनाद · बिनु समता सो के
सो बिबाद : तो हिज रग जानि छाड़त कु जीव · दुष जरा जुमा स्यो है
दईव : अ बजपे जुध जाचो अजान : पग मांडि तो उठि कर कृपा
न ।। कबित ।। तक असुर को पिबालो त्रिसूल : मिलि रीछ गे बि
लीनो समूल : ताही त्रिसूल फिरि ह्यो तास · पग पकरि स्योम प
र क्यो प्रकास · मुरछा गत राकस षेत माहि · हो बर प्रताब तिहि
म स्यो नाहि · काल तर मुरछा गरीक सूर · सो ऊगो निरत संग्रा
म सूर ।। कबित ।। दुसह बिभीषन गदापानि · घननाद जुद्ध

सो॰ जद पि पित्रीय समर जोप । अलबु करि लिसे सो॰ । विषम बीरयर
तनी॰ सकति ग्रभमो घसंजारीय । पर्हुंदेषि लछमन असन । चितय
रम बिचारीय॰ कस्थि अनयथा हिलंकेसकहि । राम अतक्ष क्यों टरे ।
उरलगे बिनी बन सकेतियह । राहसतो निहवै मरे ॥४॥ दूहा ॥ ज्यों
नि बिजीषनकों जतन सरनागत हितधीर । बीरघातनी सकति कै
बिचनये लछमन बीर ॥१॥ कबित ॥ इंद्रजीत बान ॥ नटराकस
मन तग आल नयनी तसुनजत । रनकेमम सारकसतेज लाग
नाचितलजत॰ रन सुरेस इन्तकुंत । विषमवक्रवार बिदारीय । ज
लसुरासुर जुध॰ करम तहात राजयकारीय॰ सुढिहम्रतो पूजेंजु
मन राम मिले जो आररन॰ प्रतिनरप्रसिय समताप्रबल॰ नाहिन
॥१॥ रन बिचारि सेषावतार॰ अरि बीच जु आयो
प्रमान॰ उवसेन दिषायो॰ सोई अमोघ आसुर
ति चलाई॰ लषन बीर उर लगी॰ उसह दुक्रुघाद
दषीय सुर नरनि॰ हाहा त्रय लोक हुव॰ रघु
रस नाई सो यो समर चुव ॥२॥ इहां अचेत सेष
ने हास्यो॰ लागि बली सबले कुलोथि॰ यह बचन
दिग्आदि असुरबल बुधि उपारीय॰ लोथिनर
ति जगये बिसाईय॰ हनुमंत लषन धरि लाइही
ये ॥ अहमंऊ अबिल आपकवि सेन॰ देवलोक
जीत ३॥ दूहा ॥ सकजीत लंकेस सों॰ विजय सुन
लषमन समर॰ तुम सुषमान कुलात ॥१॥ श्रीराम
हा लछमन प्रीय प्रान॰ नयन मन तुजा निरंतर॰
नीत सेवक नटसम हर॰ कवन कवन गुन करम॰
नई॰ सदार लोसुष संग॰ समयसम बिषम सहाई॰
सकल मोहन कऊ न्हरात मन सोमित्रन सोवनयु
बोल कुलषन ॥१॥ प्रगट बिलाप प्रलाप करत नव
लीला अनुसरत॰ दुसह दुष सोक दिषावत॰ अथ
रसोष आकंप॰ महा निस्वास निमोचत॰ सुरज दित संग्राम॰ सनयम
नहीं मन सोचत॰ रोदत बिषाद हाहा रवन॰ नीर धार बरषत नयन॰
बरबीर राम लछमन बिरह बिषम दसा फुरत न बयन ॥२॥ श्रीराम
उ। हा लवे सकान यो॰ हेत मुहि जीवन नाहि॰ कहा करों कित जाउं
प्रान अवलंबन पाही॰ कृत कारन सोई करन॰ आहि सो ईपर

FORM IV 5

A

REGISTERED LETTER RECEIPT—to be given to

Posted at ____

Subord nate to ____

धीनो। बिभीषन वपुरे। कन्ने लंके सुर कीनो। आरंत अंबर कछु नी अवर
थी काल महिमा प्रबल। समर हैं मनोरथ मांझ मन। बालि हरि दस कंध बध
लं॥७॥ कवित्त॥ अरक बिंब अथयो। उयो तम बिमम चक्र नुव। बिछुरि
चक्र चक्र ईय। हेत मुंदित सरोज कुव। पल कु त्रीय पेचार। बारिबन कु
मुद बिकासीय। मिलि पल चरब समासि। हरष जुग नि कंत हासीय। त्र
ति त्रासित नज थप जथ तर। हीय बिषाद सुर राज जुव। रुपिर हैं असुरक
पि बीर रस। तई निसा सै आमनुवु॥ श्रीरामबाक्य॥ जामवंत कपिराज
समय उदि मा चिंत कुसव। इहा जो ईकारन उचित। अखिल मिलि मंत्रक
रु अब। समुष बिभीषन कहैं सुग्रीव। व कुनार सबु कीयं। इस कान्दु
न देह। सकल बिधि तुम कहैं सुजीय। उच्चस्यो बिभीषन तिन हियह।
जानै सेन सचिंत जव। हैं मह बेदिग दल कम ह। आन कुन सपत सत्र
व॥ श्रीरामबाक्य॥ दुहा॥ उचस्यो राम बिभ्रा सत र। सुन कु परम हि
त संत। तुम करि आव हिं बिदिते। महावीर हनुमंत॥२८॥ कबिकवा
च॥ आपा अवधि नरेस की। मानि सीस हनुमान। यस्यो लंकल युद्ध
हधरि। बिहित बुधि बलवान॥२९॥ पायेत सपत सत रहु। सो वत मंदिर मैं
हिं। कोलाहल के सकते। न हिन जगाये जाहिं॥३०॥ सो मारुति मंदिर स
हत। बेदि उगये बीर। आनि धरे उचकार रहो। जहा राम रनधीर॥
छंद पधरी॥ इहि समय बिभीषन निकट आइ। बाहरि बिसासि ली
नै बुलाइ॥ बिभीषन बोद प्रति॥ करियै बिचारि उपचार कोइ। ही
य छाडि कपत्र सत्रधर होइ। पर जागत तुम अधिकार पार। सब जाति
हमारे हितु सुनाह॥ कपत स॥ इहा लस पल स नि निकट अ
इ। बिधि दई बिभीषन कहै बताइ। औषधी चलपर बतदि यदे है। हेपी
र दायेम ह निसंदेह। औषधी सजीवनि गुन अमोघ। व हि अनि निरं
तर उपजि औय। सजीवनि आवे को जसिथ। पर नात तयेबि नुजग
प्रसिध। अब कर कु बिभीषन जतन एकु। कुबर रै राम उपदेस देकु
बिभीषन बाक्य॥ सुबिसेष बिभीषन सुनि सुनाइ। अब ये सुअंग
सो ईक सै आइ। औषधी दिक्ष आवे अनंत। तिहि छुव तलषन उठहि
तुरंत॥ श्रीरामबाक्य॥ दुहा॥ आपा दीनी राम यह। सुन कु बीर सब
कोइ। असमान कं अन उदित। आन कु मूलीको इ॥१॥ इहा ते द्रो
णाचल अवनि। जो जन अंतर जानि। सौ गिलाषदु राम सत्वय प
र बतबन हिम मानि॥२॥ राम बचन सुनि सुभट सब। बोले समय
बिचारि। अपनो अपनो बल उचित। सो ईसी ईकहत सेनारि॥

नल अरि रावि आवत रावन : द्विविद मयंद निसिदेह : नीलकपी स्वर ऐक
निसि : हनुमत आवन हो रा॥२॥ आगम निरगम आपनें : जामवंत पि
रजैन : अंगद विक्रम समर धीर : कोल्पौं तहा बलवंत॥३॥ सब हनि को
बल वेग सुनि : मारुति बल अप्रमान : समय देषि कहि राम सौं : मनुज
प्प सुप्रमान॥४॥ हनू वाच॥ कवित॥ अवनसे चंगवधेस : करहु
समर हनु किंकर सेवि आगम पाताल : अमृत आनों छिन अंतर : नि
सत्ता थनि पीढि : सुधा लछमन मुषमेलौं : नवमत परग्रु तिलक : षो
लत्तुज बलय हवेलौं : दिनन निमुहि अपेवि नुदरस : देस्तन हकि
कल्परौं कहि मारुति तो मदसअरक करनिमीलि चूरन करौं॥ श्रीराम
वाच॥ हनू प्रति छंद पधरी॥ यह सुनत राम कीनों उछाह : जसर
ति जन महनुमान जाहु : सुन काज जो पथ हनुम हीसंत : मूली लेआ
वहु हनूमंत॥ हनू॥ कीनों प्रमान प्रभु वचन काज : जय जय तिर
मराजाधिराज : मिलि वैदहि न पूछ्यो हनूमंत : तिहि मूली कहियें विन
तंत॥ दूसर पद स॥ तब वैदि बिताऐ विन्हास : तिहि पत्र पत्र दीपक
प्रकास॥ कवित॥ दूहा॥ पवनपूत तहां वांधि पन : उत्कलो गगन
मग आप : उर धारयो अवधेसको : भगट सुरूप प्रताप॥१॥ छंद पध
री॥ सो सुन्यो मंत्र दूत नि सुनाइ : धरि दिनत सुलंक गये आइ॥ दूहा॥
दूत निकहि रावन सौं निदान : मूली कहुं पठयो हनूमान॥ कवित॥ ९
दूहा॥ सुन्यो जु रावन दूत सौं मंत्र यहे दुष सूल : कर मीजत अति क्रोध
करि : सहि न परत उर सूल॥२॥ दीऐ कदैसे बल बुधि अति : कालनेमि
तिहि नाम : ताके समय निसी थनि सि : रावन आयो धाम॥४॥ कालने
मि द सकं धक है : उठि हासन मुष आइ : करि वंदन जुग जोरि कर पु
नि पूछे परिपाइ॥४॥ कालनेमि वाच॥ एकाकी प्रभु आगमन : क्यौं
व आरथ निसि कीन्ह : हौं लघु किंकर रावरो : अरु आप आधीन॥
रावन वाच॥ छंद पधरी॥ सुनि कालनेमि मुहि उपजि सोच : पु
नि दैउ न उतर कैरि पोच : हनुमंत जात ओषधी हेत : वानर अनेक
बहुरन विजेत : करिये न विघ्न ओषधी काज : यहु कारिज तुम ही सुरे
आज॥ कवित॥ इंद्रजीत सकती अमोघ : लछमन उर लगीय : जो
अचेत रन भूमि : ताहि गिये प्रानगुसा गीय : महासजीवनि मूल गो
पित नपति द्रोणगिर : अमरन रति अपात : रहत तिहि गिर ति
रंतर : ताहि तजात हनुमंत तहां : करहु विघन बल बुधि करि : अं
वैन प्रथम सोर विउदय : सत्रु काज तो न हि न सरि॥

मि३॥कालनेमिकरजोरि कह्योसुनियेलंकेसर : तुमअपुनअरुइंद्रजी
त सबबीरमंत्रिबर : बिद्यमानहनुमान पुरीलंकापरजारीय : त्रा
हित्राहिसिसुत्रीया भयोकोलाहलभारीय : कवनकृतासबियहकर
न हेलमात्रमोहिमारिहैं : सुरअसुरनागजिहिनाहिसम हर्ति
हिकोनविचारिहौ॥२॥ अगमउदधिकूदपयो : निषलनवथामनिह
च्यो : मारिसमरअक्षयकुमार : बनसुषदबिगास्यो : दुरगलंकद
ह्यो दुसहहुमसंबलिनदेष्यो ब्रह्मपासबसपस्यो बछोतउब
सनबिसेष्यो : हनुमंतरूतजाकोहगी रावनचित्तबिचारीयो : नुज
बलत्रिलोकजाकेअनय बियहतिहिनबधारीयो॥३॥रावन॥
रहो ताहिकह्योलंकेसतब : महाक्रोधउरमेलि : आजहमहितुम
गुरनये करनकालमोंकेलि॥१॥कालनेमिउ॥ उऊ घाअयोमर
नदिन : सोस्योअसुरसंबाहि : याकेकरमरिबोअगति : उहामरन
गतिआहि॥२॥कबिरु॥ कबित॥ कालनेमितिहिकाल बिबिधिम
याबिसतारीय : परबतहेमालयसमीप सुषथानसवारीय : तह
बनारमुनिबेष आपबैठेतपआश्रम : सिषअनेकतिहिसंग क
रतबिबहारकपटक्रम : हनुमंतआनिअग्पाततहं करजोरिबंद
नकरीय : सियहोऊबीरबछितसकल द्विजसरूपआसीसदी
य॥५॥ कालनेमिकपटरूप॥ छलराकसपुछयो कव
नतुमकाजजातकत सूरबीरलछमनसंग्राम हेगिस्योसकतिह
त सालिबिसल्यामूलि आहिद्रोणगिरऊपर अनुन्यासकरउ
दय मोहिलेजेबीमुनिबर : अतिबदीनिबाहनुमंतरहो क
रिबिस्वासलगेकहन : निरुरनिवानकऊजलनिकट : बिप्रब
तवंऊबेगिबना॥३॥कपटी॥ कपटबिप्रराकह्यो कपिजुय
लस्योकमंडल : करियेपाननिसंक : जतनजुतहेसीतलजल :
महाबीरहनुमंत आपफिरिबचनउचारीय : अलपनीरत्रिषअ
धिक बिषमनहीधरतबिचारीय : सोईसुषदबतावऊसरित
सर : करिमंजनजलपानकरि सुनकथासुनहिमुनिराजमुषि
बेगिरहाआवहिबऊरि॥२॥कबिरुवाचदोहा॥ सेगदयोरकक
परसिष : आयोबारिबतार : सरवरतिहिमारुतिधस्यो : पक
स्योमकरीपार॥१॥ तबकटीगहिनीरतें : बारिचरीबलवंत

मारुति दुरजनपत्रऔं: बिजकीनीसंतषेक॥१॥ तिहि पायौ पंचतत
दिब्य लहि पुनि देह: चालत स्वरग बिमान चढि. उचास्यौ मुष पयह॥
॥२॥ मकरी॥ इंद्र लोक की अपछरा: धंन्यामाली नांउ: रिषसरापतें
राकसी: गहरांनी रहि गंउ॥३॥ कीनौ मकरी रूप करि मैं तव बंधक
तंत. अंपपरपायौ आपनौं. तव प्रसाद हनुमंत॥४९॥ कालनेमि है दै
त्यपह: जिहि आश्रम तुम जात. पठयौ लंके सुरपतित: बिघनकाज
बिष्यात॥५०॥ ताकौ कूलि बिसास तुम: नहि करिबौ हनुमांन: याहि मि
रिले औषधी: सनुकृत कारज प्रमांन॥ कबि रु॥ इंद्र लोक गइ अपछ
रा: देषपिक हंउ परदेस आयौ मारुति फेरि रहो: मिलित हां कपरमुने
स॥५२॥ छंद पधरी॥ कपट॥ करि माया बोल्यौ कपटकार: बिआं
मछि नक करि ये बिचार: गुरमंत्र प्रसाद हिंअ पिलग्यान: मो हिं तू त
नव प्रतबरत मांन. कहि ब्रह्म दृष्ट देषत दिगंत. तहाल छमन है अ
ग्रे तुरंत: लाहे सजीवनि मंत्र लेहु: इह ना सो हि तु रजा निदेहु
मारुति यौं कहत मात्र सिर थाप मारि: सबलेहु दहनां गुरसेंना॥
रि॥ कबि रु॥ मार्यौ कपि थापर. कह्यौ भूरु: तबल पेजा रधर अ
सुरत्रेन: मुष बहत रुधिर धारा प्रमांन: पापिष्ट देत तहां त्यज्यौ प्रांन. मु
षक हो नर ल जिहि राम नाम: धरि देह दिब्य गो दिब्य धाम॥ क
बि॥ कालनेमि कौ बंधु. सबल लंकेस सहायक. कालरूप तिहिं
नाम: देस देव निदुष दायक: वह द्रोणा गिरि आर. असुर माया उप
राजीय: तरु बल्ली त्रिन पत्र पत्र. समदीपक साजीय: मिलि तेप्रं
कास तुव चक्कमह. मान कुपं रबत अगनि भय. रवि उदक परम
यार हसि: नाजि तु अंतर ध्यान नय॥ कबि रुवाच॥ छंद पधरी॥
स्वप्नं त्रास्वपन प्रसंग॥ सुषसदन सुमित्रा करति सैन: यह स्व
पन देषि उपज्यौ अचैन: समूल बौ मनुज यस्यौ साप: अकुलाहत्र
सुनलि षि उगी अप: सो सपन प्रात समये सुनाइ: इह कलेजु कें
सुनलि षि उर्गी अप: सो सपन प्रात समये सुनाइ
तस्मा हि आरः: बोलो बसिष्ट गुरतब बिचारि: सो ई स्वपन सुनायौ तं
हि सेनारि: दु स्वपन सांति हित होम दांन: गुरलग्यौ करन बेद कि
बिधांन: इहा बेगि होम थलतें रत आर: सुनकुं ह अनल प्रगट
सुनाइ: समधि मिलि बंदन अगर संग: उचारबेद सापा अनंग
सुनना लिकेर नीरज मृनाल: घनसार कृतं परजव प्रबाल: कु
न तिल उसीरस बहो म काज: बिधि जथा जुकत समदि भसा
ज. हरनाकृति कीनी जब प्रमांन: दीयतें रत दिजन तहां उचित

हान:परबततिहिआयेपवनपूत:अवलोक्योद्रोणाचलअनंतअ
सुरीतहामायाअमान:प्रतिरूरूदीपकपानपान:कपिनयेतहां
बिसमयअनेक:ओषधीवृछवीन्हेनएक:लीनेद्रोणगिरहाथ
मेलि·कंदुकज्योंबालककरतकेलि:उचक्योकपिद्रोणाचलउ
गरः·अंतरिषगगनमगचल्योजाइ:देषिगिरदीपमालादिगंत·
सबन्नयेसुरासुरचकितसंत:इहांनिकासिअजोध्याउपरआइजा
नेजुन्तरतकेउअसुरजाइ:दससीससहाइकउघट्देषि:हारुमुषबिसष
मार्योबिसेषि·मारुतिसुगिर्योकहिरामराम:तहांन्योंअचेतसुधिन
हिनताम:रघुनाथनामजबसुन्योबीर·अतिनयेभरतअंतरअधी
र:अकुलाइभरतबदोरिआर·उरलाइलयोमरकरउगार:मूरछा
जबजागीहनुमंत:बिधिजुकतकहिकारनबतंत॥भरता॥अपातघा
तलोहिततरीअज:कपिकरियेअबेसुसिधकाज:ममबानचढ़उगि
रलेमहंत:बिनुतरनिउदयपुरुचेतुरंत॥हनुम॥ पुनिकसोहँ
तुरघुबरप्रताप:मुहिबिसषबिघ्यानाहिनबियाप॥कबिकारहा
बहिभरतकेचरनबीर:सोउठ्योपरबतलेसधीर॥कबिता॥द्रोण
गिरतरपत्रपत्र·सारंगसजोईय·दुष्टअसुरमायादुरंत·कछुची
न्हिनकोईय·उदयादिसिजनुअर्क·उदयअतिजोतिप्रकासीय:
त्रेमनुद्वीयनंगप्रगट·सरकंजप्रकासीय·केगयोपुत्तातयह
वीचही·स्वामिकाजनहसयथ्यो·हनुमंतपरीलजाहीये·नबतन
लागनतकयो॥१४॥ तहांअनंतअवधेस·जीयमारुतिनयजानी
य·मायाअसुरअमान·पातअनन्नयोप्रमानीय·अरकउदयज्यो
अषिल·निवडितमपुंजनसावत:ज्योंमारुतिमिलिजलदजाल
षनमहिबिषरावत·नगवंतसुअंतरनावत्रम·नगतचितनय
नेजयो·तहांसहनुसहुपदासको·भुवनभुवनजयजयनयो
॥१॥छंदपधरी॥इहांमनुषनावरघुनाथआप·बिसतरबिषादरोइत
बिलाप·यासमयअरधनिसिनईअतीत·नगवंततदपिमनअतिस
नीत:येकरतबीरहनुमंतआर:सोयस्योंअअपरबतसुनार:इहांके
परदीपतेगयेबिलाइ:ओषधअधीनसोईरहिआर:आलिंगनकीनो
रामआनि:पनपोरूषमारुतिक्रतप्रमानि:करिजतनबेदिउपचार
कीय:सोछुवतमात्रमूलीसजीय·सोवतसेउगिलछमनसधीरः
पुमारिमारिमुषबदतबीर·लहिप्रानमनहुउरलषनलाइ:रिसहू
बनधीरघुबंसराइ:इहिसमयसबजेदुउनिअकास·सुरकाजनयो
जान्योप्रकास:तिहिपस्योविरदसकेयत्रास:निहचेसुजानिनिज

कुलबिनास : लैनसपतस [illegible]
कहा॥ हनूमंत गिरद्रोणतहां : सजीवनी [illegible]
गये ऊँआप निकित॥४॥ प्रातसमथनरहर [illegible]
र : सानुजगटे बिचसमर : देवे रामउदार॥२॥ [illegible]
बानरवीरबिरूथ : तियनागर [illegible]
३ कबित॥ कालनेमिपयुक [illegible]
हनुमंत : द्रोणपरवत उपारी [illegible]
सीय लषनंकालवेचयो [illegible]
आदरस : होत [illegible]
प्रतापरघुनाथको॥४॥ [illegible]
हत्या॥ केलाफल [illegible]
रावलबिषय : [illegible]
स्न : देषि [illegible]
॥३॥ बीरयातनी [illegible]
बिपरित होत बिधीनां [illegible]
ननत हाके तो [illegible]
नियमसुध्य॥ कबित [illegible]
तोमन्त्रासिगर [illegible]
मास्यो [illegible]
तुमतये [illegible]
सहरथतनो॥ [illegible]
रावनहिसुनाए॥ [illegible]
कारपवार : बिबिध [illegible]
[illegible]

चर: सनमुषजु जिगिस्यौ रिपुसंकर: हन्यौ जीयजु ह सतम हा नर: ब
ग्रमुष्टिरनमस्यौ बिसेष्यौ: दुवदलअतुलपराक्रमदेष्यौ: प्रहसतपे
रुषजगलप्रमोन्यौ: असुरअचेतलेकमहल्यौ न्यौ: प्रहसतगिरतद
चितलेकपति: उतवेगधुनतहनतकरिरिसअति: रहरावनचतु
रंगचलाये: बाजेअगनितबीरबजए: सुतबंधवमंत्रीन्तरसाजे
बीरअसुरनभूमिगिराने।। श्रीरा मवा चा। प्रभुजातबेबिभीषन
रघुपति: मुष्यिसबेबताउमहामति।। बिभीषन बाचा। नगमनि
जटितकवचकसिनिसचर: क्रतरथजिरिचवरंतीकुंजर: षउ
गपानियहमेघनादषल: बांध्योरंदसमहररहित्तुजबल: पिताअ
अगठेअतिपोरुष: रोमद्रिष्टचितवतअपुनरुष: इकउकवकमय
छत्रसीसदस: अग्रधुजीयहरावनराकस: असुरअसंष्यासमह
रआये: बिबिधिबिन्हतेसबेबताये।। कबिरुवाचा। आजेबीरध
नुषटंकारव: असुरसमूहसुगाजनआहव: बानरीछअलगमह
बल: करतसंग्रामहरषकोलाहल: रहसुग्रीवआरनअंगन।।
रिसउफनातनकास्योरावन: अतिबलकीअसुरमुहआये: अ
द्रितरोवरसारउगाये: गवेगयाबिमयंदनितेनल: बीरचारियेबा
नरअतिबल: रतकपिराजउतेअसुरेसर: बीचआनिगटेत्तए
बनचर: चारिसिलातिनकपितिचलाई: उनयउनयजोजनअ
धिकाई: रनतुंयसरनिमारितेरावन: कारिसिलाकीनीषजकेन
कन: रहाउत्तरिमुष्टिनलआयौ: अतिलबानसोईमारिउल्यौ
उसहसुग्रीवअद्रिकरास्यौ: रावनसोईदसबानबिदास्यौ: रहा
अहिबानचलायेआसुर: अतिसतजलग्योकपिपतिउर: गिरयो
सुग्रीवधारनअंगन: राकसकहिगरज्योजयजयरन: सुन्योजबे
यहसबदपवनसुत: क्रतेअनीअवरेलबहनुमत: रहाअनेग
तु हनुमतआयौ: अतिरिमहबीरअकुलायौ: मेतगिस्यौसुग्री
वहिदेष्यौ: बिसमबेरअलिरोषबिसेष्यौ: रहाधरिबाएकपीस
उगयौ: सतुलगिहनुमानपुहचायौ।। छंद उधौराहगिफिरे
पुनिहनूमंत: दससीसकेचढितः रिसनरेरावनरार: रहानु
जाबीसउमर: मारुतिहिमुष्टमारि: सोगिस्योबहुरिसतारि
करिकोपमारुतिकीस: समजुरेरनदससीस: धरिबयरह
नुमतथोक: हरिहस्योरावनहीक: परिदसउमुषिनअपार: थ
रबहतअनीयारे: तहाकंबुकरावनचेत: हसिउग्रोपोरुष

देत· रहाअगनिरूपजुआइ· नरजुसोनीलसुचारः जलबा
न पंकतिजाल· कृतदसोननतिहिकाल· तिल्लियेनीलअवेत·
षितिपत्योकपिरनपिन· रहासुवरबांनरआइ· अनचेतनीलउगरःरन
देषिरावनराम· करिकोपुहसकाम· धायेसुअघुधयारि· ननतिठ
त्रशरिनिहारि· अवधेसविचितबआर· नयोलछनबीरसुनारः उथ
पर्योपुवनरजोर· अतिबाहनरीदुजोर· करसजतजोईतकेस
बसरोससार विसेस· हरवीरलछमनहोर· सरनिकरछदतसे
रः सारथीरथहयसंग· रहाहयेलषनअनंग· सजिद्वितीयरथद
ससीस· आरूढोआसुरईस· अहिबांनवीरविधांन· उअओरसम
रनिदांन· रनलषनउतलंकेस· बढिबीरदावविसेस· रहिबीच
हनुमतआइः धरिअयकरिथधाइ· कनत्रमनसोईआकास· प्रतिहनो
रथहिप्रकास· दससीसअरदनुतदेषि· बिचगयेलंकविसेष अ
वधेसविजयउदार· कपिजालकृतजयकार ॥ रहा॥ रथदूट्यो द्र
ग्रेजुरन· रावनराक्षसराइ· मुहलेआयेलंकमह· हितसुतत्र
नहतार ॥ अ ह स त व ध ॥ घाइलऊदेअहसतघर· बिषमसुनी
यहबात· निरनयलंकातेनिकसि· बीरनिल्यो विख्यात ॥२॥ गयेप्रह
सतजसुरगति· मिलिसनमुषसंग्राम· जगपायेउजलसुजसः म
रतसंतारेराम ॥२॥ कबित ॥ मल्योप्रहसतसंग्राम· किलिराकसकु
लकिनीय· दलसमूहकमदथे· उपनकहंपिरिनदीनीयः हाहार
वथरथरनिहोर· लंकानयलग्यो· सुनीबातलंकेस· नयेउष
उछवनग्यो· उवरेजुअसुरनिरिननिरिअवर· नयेआनिऐकेत्रउ
वः संग्रामविषमनरमरनसुनि· हरहारनिवासकुवा ॥ रहा॥
करधरपीटतसोककरि· रावनअतिदुषरोरः कृतअपनेपूरबकुम
ति· सबनिबतावतसोर ॥१॥ रावनपूरबकृत प्रकासनं ॥ क
बित ॥ दिवसरक सिवदेव· उतीउगयोदरसहित· परमर
म्यपूरबतप्रसिध· कैलासथानथित· महादेषिसिवगनसम्रह
पूरिबरंगअतिपावन· एकनदीनामांअनूत· आकृतकपिआनन
बोल्योतबनदीगनविहसि· करतमोहिकछुहासिक्रम विधि
दयोसंतुष्टजुतो हिवर· हैतिहिबाहरिरूपहमा ॥१॥ कपिआन
नगनकहलो· रोष्जुतसुनियेरावन· कुलपुलसतिउतपुन मह
जत्रेलोकसतावन· अवरअंगपसुश्रापः बदननरकेहै वानर·
यहेश्राप्तिउतपन्न· दरपतवहतरहैउरधर· अवतरेसु
अमर· वृथानहरसेवकबचन· नवत असनेश्रब है

कसकरउँअनेगारन॥२॥ इकराजाअनरण्य कुलोछत्रीरविबंसी
य बयपूरनतनवृथ अगरतुव किलिपसंसीय : मैंअहमितिबल
मानि : कलहजातेंमांकीनीय तिहिंजरनेंजीरनअबलजीव ल
सिओरजुलिनीय : मुहनरसुपस्यो दीयगेलिमे गरबताहिकुल
कोगयो ऊंहस्योताहिंअनसेकके : रूपमहालजितन्यो :
अनरण्य३॥ अनरण्यमोहिंउचरयो सुनऊधनमद लंकेसुर
महाबीरममबंसमांऊ : निजदेहधरहिंनर : सोतोकहंकुलबल
समेत समहरसंघारहिं : अमरइंद्रकरिअनय अखिलजुवनार
उधारहिं अवतस्योरामरविबंसयह हरिलायोदलजनितहरि
नहींहोइबचनमिथ्यानियत कहेजुछत्रीयकोयकरि॥४॥बरदी
नोमोहिंब्रह्म मैंजुभागमतमानें : नालकीसमयनरह : ऐनगन
तीमहआने धनुषबानसंधान : नीलग्रयुधयेताषे : नरबराक
कोनियत राजमदचितनराषे : यहरामधनुरधारीअनय : बानर
रीछअसंषिबल : करिकोपलंकघेराकर्यो इसदिसिलागेदुसह
दल॥५॥ अरुमोतीनामोबिचत्र इकबालअजानीय बिबरउ
रतपबिहल महासाधनरहिमोनीय मैंताकेतपबलअमान हु
तबंऊनकीनो इहनरोषरहिदेह देविमुहिंश्रापजुदीनो : अवत
रीजोगमायासुयह : सुतानामबिदेहसुत : जगबिदितसुजान
ऊजानकी हरीबंसममनासहित॥६॥ मोहिंबिचनमारीच प्र
थमजेकहेनीतिपर : पुनिबरज्योहितचितप्रमानि : बिभीषनबु
धिबर : नंदीगनअनरण्यनरेस इकबालअजानीय : नहिंनरइर
ननिरधार : अतंकहेसोईहोनीय : अनंगबीरजऊअनय रहे
कछुकअवसेषरन : मैंकरेकरमजेमानिमन : मिलिसंजोगअ
योमरन॥७॥ कुंभकरनबलअकल : अयननिंदअभ्यासीय : येक
छुधाआराधि बिषयलोलुपघरबासीय : अषिलसुरासुरनअ
नूप : कंभाअनुरागीय : अजऊसोवतअनय आनिसिरपरेअ
नागीय : पोरुषप्रसिधकिहिकाजपुनि : दिनपलटेजुनदोष
ये : कहिकुंभजगावऊजतनकरि रविमंडलजसरषीये॥क
बि॥ छंदपधरी॥ यहसुनतअसुरदेरिअपार : पुनिकरेआनि
बऊतेप्रकार : हसतीपदमरदनचरनहोर : सुषसयनतदपि
जागेनसोर : हयकरतअंगमुदगरप्रहार : सोलग्योथुरवनबिं

नुसंनार: निरखयवनभुवाजतस्वासनास' आकाशमनभुगरजतअक
स:॥ सेवककवाच॥ रावनसोंसेवककहेलोराज: कीनेअनेकसमजत
नकाज सेवेअसंक आगेनसोर: हठिरहेवकुतहमकछुनहोर: पुनि
तिनहिकहोरावनप्रकास: श्रीघ्रजतनवदेहेकंछुनास: कुंभ
करनसत्री॥ वचनाकुंभछीलिसेष: अवरेवचनतिनजतनऐष
निद्रावधिपूरननरईनाहि: जागेनतजोकालजाहि: अवसुनकुंभ
रमकहिउपार: जागिहैअवनजेनारजार॥ कवित्त॥ सुनतकि
नरगंध्रवमिलिसमाज: सुरकंनाटककरेसाज: बाजित्रविवि
कसुरविविधिवाजि: अहथहिम्रतिधुनिमिलिगगनगाजि: नृथ
नरागनाटकविधान: गतिनेरतालसंगीतगान: सुनिजग्योअल
पनिद्रासधीर: विलसयमनउपज्योकुंभनीर: आयेतबरावन
पहआसंक: उठिमिलिभ्रातउरलायअंक: आपनेगेरखेगेसुआर
प्ररनप्रमानआहारहिपार॥ कुंभ वाच॥ रहाकुंभकरनबोलो
असाध: बिनुअवधिकस्योनिद्रनुबाध: कारनतंकेसुरकहोक
ज: अनसमयजगायोमोहिराज॥ रावन॥ सुनिकहेतबेरावं
नसक्रोध: बानरनररोकसबबिबिरोध' बनचरनिकस्योमिलि
सेतबंध: सुषहीपलआयेलंघिसिंधु: जातुलहोतबकुवरजुम:
कपिसेनलंकलागेसकुध: सुतबंधुसुनटमंत्रीजुसूर: परिषेतप्र
वलपोरुषसपूर: करिवालसंमासीउजेयकंक: निसचरनिमारिबाटेनि
संक: आसुरअनेगलूटेअनेक: रहमरतनहीकपिनालऐक: जोमरतले
ततकहिजिवार' आनतसजीवनिगिरिउगार॥ कवित्त॥ करिवक्षुजत
नजुजांनकी' ल्यायोहरहोर: रिसबिसारिमोसोंरहसि' मुषहिनवो
लतसोय॥१॥ जोरकीधेतेरोसजरि: मरिजमसादनजार: कहियेकुंभवि
चारकरि: याकहंकवनउपाय॥२॥ रामरामवाकहरटत' जुगतरिछिन
छनजात: ज्योंचातुकघनकुंदचित: बिपतिसहतबिललाति।कुं
नबाच॥ अवरुकक्षुउपाहक: सुनिरावनछलसाज: करिसरूपन
रामको: करहुजथासिधकाज॥४॥ जालंधरकोकपटजुत' विष्णु
थस्योजुबेष: आनिअचानकसमयरक: वृंदछलीविसेष॥५॥ राव
नवाच॥ कवित्त॥ सुनक्षुकुंभमेंसमझि' यहेउदिमअनुसरयो
हेतजुसमयनिहारि' कपरतपसतनकरयो: बिमलवसनतक

लुचा· तरनबनमालसोमलन· जटाजूटकटिकसिनिषंग· धरिपानि
बानधनु· कृतरूपअनूपमरामको। पतनीटस्योन एकपन· परत्रीय
रससकिंबापरस· मेरोचलेनमूलमन·॥१॥ छंदप धरी॥ इहितेतजग
ऐतुम हिंश्राज· करियेबकुंतरिपुनासकाज॥ कुन नीतिमबोधाप्र
छोनमोहितुमप्रथमपोत· हमसोचकीयेंअबकहाहोत· जानकीह
रीउपजेजेजाल· करियेबकहासेबसोकाल· अबकजोपूछतमो
हिंश्राज· सुनिलोकबेदमतमहाराज॥ कवित॥ राजाअरुजुवरा
ज· अगरश्रोहितमंत्रीपर· इनहिकुलछनरते· सुनऊसुतदेलकेसर
कामी· कुटिल· कुसंग· कृपनकृतहतककुबोधी· सोउमहाइकनहि
नसेय जनबेरबिरोधी· पावेनजगतसो· तासुपै· कारनसंपति
नासके· सुरअसुरजदिपनरहरसुकबि· येताजनतउपहासके॥ छं
दवैअ बरी॥ कामी· बाम· मूढ· कुल· द्रोही· क्रोधी· कुपुरुष· हगहि
अरोही· कृतघन· कातर· कलह· कुसंगी· कूर· कुटिल· अलसी· ए
कंगी· देव· दोष· द्विज· दोषअराता· उरक्षचदारुनबचनबिष्याता·
षंट· कूर· षल· निलज· निमोही· बादीदर्ब· कुबादी· द्रोही· प्रकृति
छली· रूगे· जंरपापी· अजसी· लोभी आतमथापी· सरबभषीअब
बेकअसोची· अजसी· अदई· मतिमोपोची· बातुल· बधिर· गंगतन·
बामन· अंगहीनकोटीअनपावन· अंधअबिद्याअधमअमोनी। गप
तिनद्विजबिष्टअग्यानी· इतेअलिष्टनृपजेश्राहीं· तिरसकारसब
करहीताहीं॥ कबिरुबाचा॥ कुमंत्री॥ दूहा॥ मिलेन लोकसरपमुष
बपुरुकिलनबिसेस· मोधनप्रजानराजपह· जहांउमंत्रप्रवेस॥
क त नृपदेइसिरभार· सचिवसोइछाचारीय· काजमनोरथ
करत· बिबिधिकलनाबिचारीय· जोरतकमजारज्ञथ· पलपि
सतमघलपय· जतनजोनिमनमोदमोति· नृपसोवेनिरभय· फिरि
पारअघारकुबुधिफल· महपतिसोचतमनहिमन· अतिदुसहअग
निश्रावाहजो· करतदाहश्रोतहकरनो॥१॥ मधाजतन॥ मदनद
लोनिरमूल· उमोतिहिहेतबामअंग· कालकूटकतकवल· सो
मतकाजलालसंग· प्रलयकालपावकप्रचंड· दिगधस्योजुदारु
न· तालगगगतरंग· सीसजटजूटसकारन· बसकरेसबलतन
यबधके· बिबिधिजतननिजतनबहल· कोतुकीरुद्रतउसतुल

त-राजनीतितलपरहृत॥१॥उपजेरोपेआनि कुसमचु निलेयकाल
क्रम: लघुपोषेचितलाइ सरलतरछेदिकरैसम: निमतउगवेनिय
त: महाकंटककरिमंडल: बिषमसंगकरि बिरलजुतनजुतसमयदे
यजल: कृतउचितजुमालाकारको: निसचयनिंदसाधेनृपति: सुष
अनयराजनरहरसुकवि: पृथीजुगतेपुहविपति॥३॥छंद पधरी॥
नारदयहमोसोंकहि निदान: गहिचरनकहतअंगदसुजान: रामहिम
नमानुषगनऊराइ: सीतनिमानुषीहेतुलाइ: साषामृगनाहिनि
रसमाज: येअमरअंसअवतरेआज: अबऊजेपूछतमोहिऐऊ पु
परेसकलमेथलीदेऊ: सियातयहिलेकेससाथि: अतिकोयजज
ऊररिहैउपाधि: राघवसोंकरियेसंधिराज: अपराधसबैछमिहैं
सुआज: समजात्तसुरासुरकरतसेव: सोईदीनबंधुदेवाधिदेव:
र॥ अरथउपाजितधरमहित: संततिहितरथसाजि: सुतउपजे
तपसाधिकैं: मुकतिहोतमहाराज॥१॥कवि रा॥छंद पधरी॥यहसु
नतजस्योदससीसजोग: धृतमनऊनयोपावकप्रसंग॥रावना॥स
मरथहहबोलोअसाध: बऊतुमहिकरतनिराजुबाध: सुषसेजज
रघररहऊसोइ: क्रियेनकुंनकलपनाकोइ॥२॥हहा॥कहावलीहि
नीतिकी: अनपूछेउपदेस: सुनिबेकोनाहिनसमय: बिग्रहबनी
बिसेस॥१॥कुंनजगाऐजुधकहं: नहिनपदावननीति: सोवनसों
रुचिअधिकसी: पुनिनोजनसोप्रीति॥२॥केतेलरऊउछाहकरि:
मिलिसुषकरऊकथाम: करऊबिनीषनसंगकें: बहगदोहिरोम
॥३॥सोररहऊघरजाइसव: करिअहारअनपार: कोटिकीटमरक
टकहा: मेघनादकीमाया॥४॥मंदोदरीउ॥छंद हेअपरी॥आईमं
दोदरिहिअवसर: करतबिषादमीडिकरसोंकर: रावलिष
नवीकाहोनी: कंतसुनतनहीहितकीकोनी: कुंनकरनसमहि
ऊनकोई: स्वामीकेहिवामानऊसोई: इनहिसुरासुरगरबनसाए
अबहितकाजजगाएआये: कहेसुमोनिबचनप्रीयकीजे: देषि
समयकुलअस्तयसुदीजे: नावीबसजोमरेअसुरस्तर: सुरसत
स्वामीहितसंकर: रामनमानुषमानऊरावन: निगमहेतभुवन
सावन: अबलीयतुमहिकाजअवतारा: सुरतेतीसकोटिबिसता
रा: जयेजालकपिदेहमहाजट: समहरकरतलकगदसंकट:
कवित॥दीनबालप्रहलाद: उसहतिहिपिताकष्टदीय:

पग्राहिठक · द्विरदनयगिरतेंगरीय · जलक्रजलनसंजोग · आनजवजातपु
कार्यो : दीनबंधुनरसिंघदेव : अतितुवितउधार्यो : कीनोंसहाइनरहरसु
कवि : यंतफेरधरथरहरीय : ह्वांफारिहिरनकसिपउदर · कतसरूपअसतु
तकरीय ॥ १७ ॥ जलअगाधतंता निजंत्र · गजग्राहसुग्रहीयो · बरषसहस्र
दसमांझबारि · अनअसनसुरहियो · घरछिज्यो बलघट्यौ · समयतिहिं
दरसंतार्यो · जलअलीनकरसुषिमात्र · प्रभुहरिहिपुकार्यो · बलजाल
सरनपंजरविजय · गहिसमूलषनिगलिहैं · निजदोषबिसरिनरहरसु
कवि · छमिअपराधनछलिहैं ॥ १ ॥ जामदग्निनयजानि · कवनत्रीयबेष
नकीनों · करिनिछत्रकवींसबार · द्विजनसुवमंडलदीनों · तालके
मधिमान · गरबछनमांझगमायौ · बालिबलीबानरबिष्यात · सरइक
नसायो : कोगनेअवनिटारेकष्ट · राकसमारेमोडरन · बंचिहैनलम
डसोरोसबस : निसचयममानडुबचना ॥१॥ प्रथमहरनदीयसी
या · जोगमायासीयजांनडु : अहिपासिनबांधेअनंत · वहपेसुधिअ
नडु · सकतिहयोलछमनसंग्राम · रिसरामसहोदर · अवरदोपहल
दि · प्रगटतुमकरेगरवपर : बिधिवसबिस्वबंहितबिहल · अपुनरा
वनेअवतरे · छतमारनद्विजतारिकरि · कमहिआततार्ईकरे ॥ ह
रीसीयातुमबनहि · नागपासनिसुतनांधे · सोदरमार्यौसांगि · स
बेअपराधजुसाधे · बांमनमांगित्रिपेंडभूमि · बलिसरबसदीनों : सो
पेबांधिपताल : पगयकीनेंआधीनों : अपराधबिनाधरिछ्वैषठर : करतअ
कारिजआंनको · बंचिहैंकोंऐतेदोषबस · नरहरबचननिदांनको ॥१॥
रांवनबाच ॥ दूहा ॥ कुंभकरनदेवरअकल : सुतजेतासुरराज : के
तेरांवनकीत्रीया · इतोकहालरआज ॥ १ ॥ कालनबातबदावको ·
कुंभसुनहुदेकांन : करियेजोपेमनकहै : उबिध्याछांडिनिदांन ॥२॥ गु
रमीगेसरितागहर : तेतउतयसमतूल : चाहतहेहेचोपरी : सोतबिने
नमूल ॥२॥ छंद देअषरी ॥ जोमिलेबिभीषनमलहिजाइ : सोत
जुमडुसाथेसुजाइ : यहसुनतकुंभतनलगीआगि : जाजुलिरोषप्र
तिरोमजागि ॥ कुंभबाच ॥ समप्रेमकुंभबोलैसुनाइ : लंकेसमोहि
मिलिकमलाइ : यहअंतमिलनहेभ्रातआज : रनतीरथतजिकुभांनरा
ज ॥ १ ॥ कवितालजिबिप्रादपोलसति : उचितनहीसोकसमययेहि ·
जीयतकुंभकरनहिअजेय · जगबिकलकरेजिहि · कवनकालदिग
पाल · रामसानुजकपिराजा · कवनकाजयहकोटि · समरजुरिअ
मरसमाजा · मिलिजदपिबिभीषनत्रासितमुह · कवलकलेवरकाल
को · जगजेयकुंभकोपिजवे · सबलबीरसुरसालको ॥ कबिरू

॥२२॥ देखु चलौ परदल ना: कुंभकरन अति क्रोध: कुवहालारष लंक
मह पुनि कोफरे अबोध॥ २१॥ छंद पधरी॥ मिलि कुंभ जात उरल
गि मोह छनतास सब नि उरलग्यो छोह: रसबीर कुंभ निकसो रिसाइ
ऊर्व सब्द लंक मह हाह हाह रनिवास सबै इह उग्रो रोर: हाहंत बो
नियरयर निहोर ऊओज तात अलसात अंग: अनअवधि जग्यो राकस
अभंग: इहा द्दयेस हसदस कल सत्रानि: मरपा न करे मन मे द्दमा
नि मिष्टान चारि सत मन मगार: पलगयो व ऊत मेवा निपार: सत
अष्टम हिष मानव इकीस: अनजेत सुल ब्याजां निरीस अनेक अंन
नीजन अधार: सो भयो कलेऊ सो सुनाइ: पुनि करे पछ्या वरि रुध
रपान: उतपति सवाद कछु आंन ग्यांन हाकरत असुर ऊग्रो ऊकार
आयात उरत पंषी अपार: गिरि गरंग वागे वनार: वितरो प विविध
सोंयाचराइ: तनाय बयगतिअंग सोह मिलिअसुर महो छव सुरगमो है:
इक सहस अस्वप्र तिरंग ओप: रथजुकत पताको ध्रजा रोप: आरूद वी
रति हि कुंभआर: कृत हरष जुथ सबरत कार: आयात बज्र गरजत अन
ग: इहा आइ कुंभ रनमुमिरंग: जुजधरि त्रिसूल इक सहस नार: इक
लहु उरथ आकत उदार: सत धनु षमान चोरो सजोप: औसो त्रिसूल
कर कुंभ ओप: मिलि सघन घरा तन मानमूल: सम विजुलता चमकत
त्रिसूल: आरकत नैनि रलि अधरदंत: विविषेन सुआयो को थवंत
रघुनाथ हि षोजन रनसरीस: नर कुंभकरन अपने नरीस रहिसम
रघुनाथ हि षोजन रनसरीस: नरकुंभकरन अपने नरीस रहिसम
य विभीषन अनुज आइ: सीय आत हिबि सो लग्यो पाइ: नीयरा आपनो क
सो नास तिहिं लयो अनुज उरलाइ तास॥ विभीषन वाच॥ कवित॥ केते
विभीषन कुंभ बीर तुम हे निवास रैनायर तराम सेतबंधन दीय अ
इस भेग हरा वन चरन मूल हित बचन उचार्यो। सता मोंऊ अनदोष
मो हिप द्दलात प्रहार्यो: कांढ्यो पुनि षगउधारकर जातामो हि मारनत
यो: इहि हेत लागि अवधेस को: तब हि सरन मे तकयो॥ कुंभ वाच॥
कारन सुनि तब कुंभ बचन प्रति कह्यो विभीषन: कुल विनास सिरकाल
चक्र रिसत जत रावन: रिषपुलसति के बंस: धंम कुलयो धुरंधुर: कुल
कलंक कर्यो सरनली धो अवधेस र: मो हि कि लोये हनारद मरम भ
हानाय तं असुरमति मन करम बाच जुत मो हि मत: जगत इस पदतज
ऊजनि॥५॥ ऊंजकाल अहयस्यो हिग निरोषानल दाहे: नयो वक्रोध
अंध चिन्ह के उपरत न चाहे: प्रतिमा अपनो अपर जीयहि निरधार
नजानत: विषमद सो विभीयत पेन हित अहित पिछानत:

लेजाऊंनिजसेनमंह: कुलबलरक्षाकीजीये: करिश्वरनसेवअघिले
सकी: जनमसफलकरिलीजीये॥२॥ कबिरुवाच॥ दो०॥ कहतपरदह
नंकुंभकर्ण: ढरतनयनजलधार: रहोबिभीषनआपने: सेनकस्यो
संचार॥२॥ छंदपधरी॥ पुनिआरबिभीषनरामपास: प्रभुहेतब
चनबोल्योप्रकास: दीनकेनाथरघुनाथदेव: यहकुंभकरनआये
अजेव: संग्राममहेंऊंप्रभुसावधान: आसुरअसंकअतिबलअमान:
चोपटजबकुंभकरनहिरामचीन्ह: करचापदियनुषटंकारकीन्ह: हमचढे
रीछबानरहकारि: धरिरामधनुषकरबानधारि: आगेप्रभुजूथप
जूथआइ: सबसिंघनादकीनेसुनाइ: कुंभसोजुरेबानरसकोप:
राकसरनगढेपेजरोप: गिरिवरप्रहारकृतकपिनअंग: फलअरक
मनऊलागतमतंग: इहिभांतिलागिगिरअसुरअंग: सीसीजनुकृरति
सिलासंग: उछिलगतअंगमरकटजुआनि: आहारदेसमनुगजभमा
नि: मिलिदैतकीसतरवरनिमार: परबततनमानऊत्रिनप्रहार: क
पिकछुकमीकिऊरेसकोप: उछिगयेश्वासकोउत्तलओप: पकरेजु
कूंभकपितालपानि: आहारकरेमुखमेलआनि: इहिबीचबीरहनु
मंतआइ: उरहयोकुंभमुष्टीउगाइ: सोजानुभारपरिगओजुध: के
टककेत्रातारसोक्रुध: तिहिमार्योहनुमंतउरत्रिसूल: तननयो
सुमुरछितमृतककूल: जबलग्योलोथिहनूमंतलेन: सबगरजितह
कपितालसेन: नलनीलअंगदकेसरीआइ: सिलचारिचऊमारीसु
नाइ: सोईचारिगिरायेमारिसूल: नरनयेसुमुर्छितप्रानतूल: ही
यपरीत्राससबबिमनहोइ: कपितालकुंभमुहचढिनकोइ: मुरछ
जबजागेहनूमंत: तहामहाबीरऊगेतुरंत: इकलयोदिव्यपरबतउ
गाइ: अतिरोषकुंभसिरहन्योआइ: तिहिघावअस्वरथधजाटूटि: नो
कुंभबिरथछलछोहछूटि: कुंभचषरत्तदेख्योसकोप: रनभूमिबिर
थरिसपेजरोप: संग्राममरनसर्वेसधार: बढिक्रोधजुगदाकुंभबीर:
कबित्त॥ कुंभबिरथअवलोकि: समरसुग्रीवसुसजीय: रिसराकस
कपिराज: जुगमहरिनादनिगजीय: गगउपिसुग्रीव: महापरबत
सिरमार्यो: पकरिपाइनिसचरप्रचंड: सोपुहविपछार्यो: तबतो
अचेतकपिराजतहां: महाबीरजान्योमर्यो: संग्रहलोकोपचाप्योरुस
ह: सबललंकदिसिसंचर्यो॥१॥ तिहिनिहारिहनूमंत: रोसघ
नकूंभरोकिरन: हगिलताउरहयो: घाइतिहिलगोघूमन: तहा

सुग्रीव नयो चेत. निकरनटुसहनिहास्यौ. मुष हीनाककरउनयक्‍न. संग्रहेसेनास्यौ: गोगगनतहोसको बितन: छोहछदमकरिछुट्यौ. कुंनजुन्नातलकेसको: नुवनबुझनकरनयौ ॥११॥ कुंनकरनकेनाककान. दलमध्यगुरारे. कौतुकरेकरताल: हसतकपितालनिहारे. गिस्यौकुंनराकसगलानि. घलमहाभिसायौ श्रंगतंगनोग्रनषि. श्रोपस्रतकफिरिग्रायौ. बिनुश्रवननाकबेरूपवपु. परमंनयानकपिनयौ. संसारग्रसतसोकालसोई. दुसहनालकंपिदृष्यौ ॥१२॥ छंद देश्रषरी ॥ रहाफारिमुषसमुषग्रायौ. षेचरकपिपयोसोईधायौ. नासाश्रवनबिवरतेबनचर. बलकरिनिकसेश्रायेबाहिर ॥ छंद उधोरा ॥ मनिकनकमुकटग्रमुल. सिरधरेपानित्रिसूल. बनिबिनिभिन्नषनदृद. उरउपजिमरनग्रनंद. ग्रतिरोषरनतुवग्रार. नयेत्रासकपिनसुनार. निस्वासउरुतग्रनेक. उरस्वासपेगतऐक. तेनिकसिश्रवननिनास. परिछिन्नकूपप्रकास. घलजितेमरकटघार. सोईनिकसिहसतसुकार. गुरुरथनिडारग्रकास. पुनिपरायहलिप्रकास. सुरमनिकौतुकसंग. ग्ररहृतरसबदिग्रंग. घलकपिनपरकतघेत. कोउगगनगतगहिलेत ॥ छंद देश्रषरी ॥ दुवदलसेपेकौतुकरेषे. बाबीनिकसततीकबिसेषे. कपिदलकुनग्रासबकुकीनो. निसचररेषतरूपनवीनो. कुंनतहांदेषरघुनारक. साधेपानिबिषमधनुसारक. ग्रासुरबेषमबचनउचारत. ग्रायेरामग्रोरवबग्रारत ॥ कुंन बाच ॥ कबिता ॥ नहिनताडिकानारि. मेंनहरधनुषंदारूमय. नहिंनिराम द्विजदीन. मृगनमारीचकनकमय. बालिरूनबनचरवराक. जमतालनजानहु. षरदूषनत्रिसरासुबाहु. पोरूषनप्रमानहु. पाथोदिकनबाध्योउपल. नामसुरासुरसालको. रनकुंनकरनकाघुसथरे. महाकालकाकालको ॥१३॥ मेलिनालमरकटनिबकुलजलसितबधायौ. रूरनकेबसग्रंत. ग्रवजुलंकागदग्रयौ. बनेयहनवतबा. बीरजूरोराकसरन. ताकोमरकटकटक. महाग्रहमेवकस्योमन. नरग्रमरग्रालवानरनिकर. हसिसोईगनिगनिमारिहूं. रनबंधोनोहिरघुरामरे. ग्रबसोईगरबउतारिहूं ॥१४॥ कबि रूबाच ॥ छंद उधोर ॥ रनबीररामनिहारि. नरथस्योसलउचारि. ग्रवलोकिमलजेपोरदू. रूतबयरघारकलिद. रनतो हि बोलतराम. भमसांथ

नजितसंग्राम : त्रयलोककारककत्रास : सुरअसुरगरबबिनास : न
रअमरकंन्यानाग : नवनोगकारसनाग : सुरराजसुरगनसाल :
ऊकुंनकालअकाल : यहसुनतरघुकुलइंद : गजीवतानिगु
बिंद : आकरनषांचिअचक : महबिजयसारकमुक ॥ कबि
त ॥ अरथचंद्रसमउनय : सरजुमुकेअवधेसर : महाबीरसंग्रा
म-कुंनछेद्रदोऊकर : पुनिसोंहाउवपाइकाटिचोरथ्याकी
नो : दुष्टदल्योरघुदेवदेवराजहिसुषदीनों : अतिरोषजरत
लोचनअनल : महान्तयोनककपारिमुष : नवन्तनयसतसो
कालनर : राकसयायोरामरूष ॥ १ ॥ रूप ॥ कुंभहिलाथ
तसरन्किर : अरुफूटतिबहिओर : दामनिजेसेजेलदुरि
निकसिबहोरिबहोरि ॥ १ ॥ रतधारधरनीदरत : बलकेजलजनु
पाल : कजलगिरमनुगेरिका : प्ररहीचलतप्रनाल ॥ २ ॥ कुंनक
रनमुषबानकरि : रामनस्योरनरंग : पूरनकीनोजानिप्रनुषे
चरबदननिषंग ॥ ३ ॥ कबित ॥ सोजांन्योअवधेस : असुरउरवनि
नरआयो : कतकुंठलकोदंड : अरधबिधुबानचलायो : कुंनमु
ठकरयो : दुसहरावनसोदेष्यो : दुरगद्वारकुकयो : बिसषहल
सीसबिसेष्यो : कतजनदसनबनिबनकन : आजतरजतलि
पतुव : काकुसथजयतिनरहरसुकबि : हाहाकारजलंकउ
व ॥ १ ॥ महाबीरहनुमंत : करनिथरिकुंभकलेवर : पस्योषेत
परबतप्रमान : रहिओरलंकगिर : गहिमुक्योमगगगन :
मृतकतनपस्योउदधिमह : देहदिघ्यजलजंत : जालतिहिका
लदृबेतरु : तहांदेषिहनूबिक्रमअतुल : अमरबृंदआनंदअ
ति : संसारनयोजयकारसुर : परिग्रहारउरलंकपति ॥ २ ॥ बी
रबाऊमुनिबेष : रामगदेबिजरीरन : करगबामकोदंड : उ
सहसाइककरदहन : अग्रनागधितअनुज : हसतकपि
सेननिहारत : जानकीसजयजयति : अषिलसुरबृंदउच
रत : सुनहोतगगनबरषासुमन : बाजतसुरदुंदुभिबि
जय : कतनासकुंभनरहरसुकबि : जयजयजयकाकु
सथजय ॥ ३ ॥ छंद बेताल ॥ रंगभूमिगदेराम राघव : अंगअ
मकनसोनय : बनबसनलागेरुधिरबिंद्व : छोहराकसछो
नये : रिसलंकुरिनगतरंगरेषा : करितटेनाथाकसे : को
दंडनामितबामकरगत : रनजुबीरारसरसे : रजलिमसा

रकस बिकररहि· रतम्रानननरोषये: सनुवकचितवत त्रिकुटप्रतिमां पे
रकपिदलपोषये· सुरसिधचारनजपजयजस· परम करुनामय प्रनो
बिभ्रातबीरत्रिलोकिबंदित: बिस्वजितपालक बिभो: इहिसमयत्र
इरिषेसनारद· गगनमगगुनगावते· भगवंतहित भवनतत्तपति·
भुवनत्रयमनभावते ।। अथ ना ईदरिषकृत सतुतिजयरमेतनयत
स्यामसोभा· अरुनंअंबुजलोचने: सरणेनत्रंकितपानिसम्भु· म
हारिपुमदमोचने· जय जगंनाथअनाथबंधू देवदेवसनातने· ना
रायनेनरदेहनरमित· ग्रारनिसचरघातने· जयबिस्वसाषिबिसुध
बुधे· बिस्वमायाबिंचने: जयमायया तनमनुजमहिमां· सुषदुषादि
कसेवने· जयमायया गुनग्रामरति· सरबग्रातमसानिधे· ज
यसरबकारनरहितसबते बिसुसंतुतबिधे· जयस्वयंजोति
स्वतावसिधे: बिक्रम्यापतबिस्वए· उनमीलनेदिगलोकउतपति·
नगतपोषजयेजये: तवमीलने दिगनाससंस्थित: चारिषांनिचरा
चर: मनबचनकरमनिसाधिमाधव ग्यानध्यानअगोचर: जयब्रह्म
मणेजगदेकबीरे· प्रकृतिपुरुषेपावने: अबिक्र बिक्रसरूप अस्तु
त· भुवनत्रयसंभावने· जयग्यानरूपबिकारबरजित· जयतिज
गदाधारने· जयदीनबंधदयालदेवे· बिस्वजितअबिकारणे: बैरो
धिबेदिकबेदबादिन: निरणये नचनिश्चयं: तवप्रसादबिनयह
त्रितीयलोकी· अबुधबुधत्राभित्रयं: जयअषिल मायाजालमह
मां· जयाजलरबिकरहरे: श्रुतिबिबजलभ्रम· त्वयाकलित· आप
अगंमअगोचरं· सनुकथंदस्पआस्यप्रतिमां· होसबिनसतहे
तये· अवतारतवभिलिजोतिअदनुत· त्रिगुनतत्र समेतये· मह
बुधिमननजंतिमाधव· तेतिरंतिनवारणं· सनुसुषहिजल
नरनथापावन· रहतनवअयरोरव: देकामक्रोधहत्रादिदुस
ह· सबलसात्रवसालए· माजारजेसेंत्राष्णुग्रनहित· करतहेस
बकालए· तवनाम सरनेनिस्ततनपर: रहतदिगतवरूपये: प्र
भुप्रेमसुतनवचरनपूजा· श्रुतिकथानवन्नूपये: तवरामसगुन
सरूपसुंदर· ध्यारहेचितधीर: तवनगतजे हेंमुकतिमाधव·
बिनाबारितबीर· तुमरामकृतयएकरम अतुलित· सुरसुरेस
सहार: भुवनारदोरस्तगतितावन· समरकुलनसार: ।। अथ
इंद्रजीत बध आग: मबर ननना ई दोहा ।। इंद्रजी
तकोमरनश्रव: क्रोबोलछमनहाथ· करकबधअवधेसकर·
निसचयजावीनाथ ।।१।। कबित ।। कुलमजारपितुबचन

कज· दृरुकबन्बासीय: कुंभकरनराकसग्रसंक· बरबिसमविनासी
य· सुरसुरेसबैषमनिसेस· दुषहरिजुकीनों: दुसहदाहरनलगिराह:
दससिरउरहीनों: अवधेसग्रमरगावतअतुल: कतमतापअवतारको·
आगमनत्तयोनरहरसुकवि· कमबिनासतुवतारको॥ दूहा॥ कुं
भमरयोगरथरहस्यो· तहापरिआसुरत्रास: दलेसेजिततितभ्रम
त· अरछुटीजीयआस॥४॥ कवित्त॥ रामबानहतकुंभरन: जोतिमि
लेषलजोर: मारिउधारतछनकमंह· ऐसेराघवरोर॥५॥ रामहिकिरि
पदेसरिष· मिलिनारदसुरसाथ· अबिलगयेग्रहआपने· गावतह
रिगुनगाथ॥६॥ रावनउरपरित्रासहरिस· करतबिलापअनेक· कु
रधरपीटतसोककरि: टरतनग्रहमितरेक॥७॥ रावन॥ हाहाकुंभ
अचलयह: सबबिधिसूरसमाथ: तेरीयहलवतब्मता: होरमर
ननरहाथा॥८॥ इन्द्रजीत उ॥ कुंभमरनरावनबिकल· इन्द्रजीतरहो
आइ: सोकसहोदरबधसमर: करउनराकसराय॥५॥ ममजी
वतयननादमहि: सोचनउचितलंकेस: पौरुषदेषउपुत्रको: न
थेबिहानबिसेस॥ कविरुवाच॥ रोसनिरतसुरअसुररन: नयो
असतमितजान: रहेतालकपिसमररुपि: दुगमदिसानदिसान
॥ अथइन्द्रजीत निकुंभिलागृहहोमआरंभ॥ कवित्त॥ कवि
रुवाच॥ त्रिकुटाचलकेमध्य· गूढरकगुहाअगपाता· निजनिकुं
भिलानाम: बिवरजुवगतबिष्याता: रकतपालवासनबिस
ल· लेपनअनुरंजीय: मोनब्रतचषमुद्रि· जथाबिधिआसन
सजीय: कतकुंडबिसदनरहरसुकवि· पोरुषरिसबलबांधि
पन: मिलिबाचकारसमऐकमन· करमहोमलागोकरन॥१॥
रहाबिवररथआनि· सजबबाजीसंजोईय· समत्रअसत्रस
नाह· सकलपरिकरजुतसोईय· लेमेलोरथकुंडमाऊ· प
वकपरजारीय· सुरद्रोहीआसुअसंक· गुरमंत्रउचारीय· अ
ग्या सग्रसुरमायआगम· आगनिधूमननभसंचरीय: सोदेषि
धूमधारासघन· प्रानबिभीषनत्रयपरीय॥ छंदपध्धरी॥ बि
भीषनबाच॥ पुनिरहा बिभीषनबरपगार: यहकवनधूमसु
धिकहउआर: किहिकीनधूमधोकवनकाज: यहलेउनेर
मोहिकहउआर: कततेगहेअतिबेगदोर· पेषेकिउछलकरि
मध्यपोरि· सुधिलही तततगटमाऊसोर: कतहोमइन्द्रजि

तकरमकोइ: यहसुनतहनतहाफेरिआरु: बिधिकहीबिभीषनसोंबनाइ:
निजसुनीबिसंदमेघनाद: बढिमहाबिभीषनउरबिषाद। अतिभीतुबिभी
षनकिहआइ: सबनेंदुबिबरिरामहिसुनाइ॥ बिभीषनवाच॥ रथहोमत
हैषलमहाराज: यहधूमगगनमगउच्चआज: जहाँरदबिबरतहूँज
त: यहकरतहोमअंतरअजीत: अनलमहजपैरथनिकसिआज। आप
नेतोंनिसचयअकाज: आरूढरथहितिहिंबढिअकास: तातेहमहि
द्रिष्टनहीपरेतास: सबहिनबहुदैषेअमरसाल: करिहैसंग्रामका
लरूपकाल। आसुरअद्रिष्टह्वैहैअजीत: मंत्रयहसुनरूअबजगभी
त: हैमरनइंद्रजितलषनहाथ: सोपठयदेरूहमजाहिसाथ: करियै
बबिघनजिहिहोमकाज: रघुबंसतिलकराजाधिराज॥ श्रीरामबाच॥
हमचलहिकलोयोंरामराउ: सुनिबोलिबिभीषनफिरिसुभाउ।
श्री[illegible]बरदयौयाहिब्रह्माबिसेस: सोसुबरूकरूअबन
नरेस: बरषजिहिंबतुरंदसुगमबीर: समछुधासुनिंद्रजयसरी
र। हैअंतजुयाकोतासहाथ: निसचयसोंसुनिषेअबनिनाथ: ज
बतेतुमछोडीअवधिराज: सोमित्रतजेसबसुषसमाज: कृतनियम
असननिद्रानकीन: अद्याबधिरहिसेवअधीन॥ श्रीरामबाच॥ दीनीत
बआग्यारामदेव: तुमआपजाऊलछमनअजेव: रचतहैंदुष्टमाया
डुरंत: मतजाजिजारराकसअमित: सुनिबीरजलनकरिबोसंभा
रि। बरूओरसुजटराषऊबिचारि॥ लहूमनजाकरजोरिलष
नतहाप्रनितकीन। रूअबधिनाथआपअधीन: संकलपकरयो
लछमनसंभारि: मघवाजितराषोंबतमारि: प्रभुयहबचनमान
ऊप्रकास: तेरेबदेवरावेदास: पुनिसबेसिधरघुबरप्रताप।
अतिप्रेमलषनउरलाइआप: परिक्रमनदेयरहालागिपाइ: उ
म्बिलेलषनबलतुजउगाइ: संगदयेसुजटएतेसंभारि: बि
स्वेसरामअतिबलबिचारि: बयपूरनबुधिसुजाभवत: सर्व
रामसरअतिबलीसंत: पुनिदयेबिभीषनसंगपचारि। मांन्योंसु
नेदृढातामुरारि। अंगदअरूकेसरिनिलऊनील: समकपिमयंरघुमू
रूनिसुसील: षलरूजीतअतिबितबेद: बाढ्योबिसेषपुनिअवनिवे
य॥ श्रीरामबाच॥ रहांउचितबिभीषनजतनआज: लछमन
हैयाकीतुमहिलाज॥ कबि रु॥ येसुनरजुलछमनसंगआइ: सोई
होमसथलपायेसुजाइ: जुतमौनमंत्रषलगूढजाप: अतिमानस
मुदितनयंनआप। सतकुंजरुधिरबालिदेतसोर: हितबिजयम

सोतसागरतिनसजीय: द्वैसमासीबालदीन· पुनिबयरउपजीय· मह
कारराकसमहीप· सोकपिनसंघारे· कुंभकरनअरुइंद्रजीत· मानवब
रमारे· अनंतअसंतचकरभयहु· अनुचितकासुनिबोनअब: हरि
बरुबरजीनोईककहतजग· सोईहमभानीआजसब॥४॥ जदिनबीरजन
मयो· धसकिदसदिसधुजीयधर· गहरनदगजयो· गगनझुलीयकंपि
तगिर· सुरासुरनिबियहसंतारि· समहरन्तरसंथ्यो· इंद्रजीतनये
बिजयअंक· बासवरनबंध्यो: दिगपालसालदारुनदुसह: दिगबि
कारत्रिभुवनडरइ· काकहियेमहिमाकालकी· सोईमेघनादनरक
रमरइ॥५॥ बारबारमसतककुमार: लेउराहिलगावत: दरिअपारच
षअसुधार· पुनिथ्याहनपावत· उरथस्वासजीयछुटीयआस· परित्र
सअपावन: हायबिहारहाहपुकार· रोवतररावन: अबइंद्रजीत
तोबिनुअषिल· राकसकुलदुषरोरहै· दिगपालसालटरिदुसह
दिन: सुरसुरेससुषसोरहै॥६॥ कबिरुवाच॥ रनत्रयदिनत्र
यराति· नमितिरिपस्योन्तयकर· जयपायोलछमनअजेय· बिक
मअतुलितबर· करहिचापटंकारकीन: जयसंषबजायो: सुमीत
लकपिनरसमरु: उरहरषउपायो: आकासअषिलप्रमुदितअमर·
रनजयकितिमतउचरीय: दुंदुभीगगनबजीसुघर· रीझिपुहुपबरष
करीय॥१०॥ दुष्टमारिघननाद· सहतकुसलीतरसंगीय: मिलेतबेर
घुपतिहितप्रीति: सोमित्रअंतंगीय: कमलबदनकरजोरि· रामलेकंठ
लगाये: धंनधनलछमनसधीर· इतबचनसुनाए साधतेनतुमक
हसब· बरषचतुरदसबीरबर· अतिबलीअसुरघननादयह· सुके
बीरमारतसमर॥ रावनबिलाप मंदोदरीआगमन॥ छंद पधरी॥ बि
लपातकरतरावनबिहाल: सुतसमरिसमरिउरअमरसाल: धरलु
ठतपरतउठतअधीर: पापिष्टसहतमनमनहिपीर: अतिदुषितम
दोदरिहाअआर: उरमसतकपीटतनहीअघार: परिजनसहरोवति
करिपुकार: बिललातसंतारतिबारबार: हामेघनादिगओरहे
र: कितगयोबतावतनहिनकोर: मिलिकंठलागिकिनपुत्रमोहि
तनसुंदरदेषूकहातेहि: लरिसमरगिरयोअनंतगलाल: सुरराज
सुरनिअभटसाल: आक्रंदकरतिरोवतिअनाथ: कौबिहबलकछु
लागेनहाथ: दुषसागरबूडतिसीनिदान: पवनअवतबनआनम
न॥ रावन॥ रावनसमझावतरोहरोर: नावीबलिष्टकाकरेकोर
नस्वरसरीराथिररहतनाहि: जगजंतउपजिपुनिअतजाहि: जतन

कुकरेनहारिहैजीव। दैसेबलिष्टमायादईव॥ मंदोदरीबाच॥ छंद॥ ऐ
परीनस्वररैहजपैंपीयजानऊ॥ तोनअनीतिइतोहठगनऊ॥ वेषबन
इजतीकेजैसो। अरुबिरुधक्रमकीनोंकैसो॥ जुगतिनसरनैमंदिर
जाई॥ परत्रीयतहांअकेलीपाई॥ इहकबिनांऊतीसोनारी॥ आनीहरि
तुमकपटप्रचारी॥ चोरकरमयहकरीकुचची॥ ऐसोनरपायोबिधि
अची। यहअनीतिपरत्रीयलेआए॥ बोटपीयमनलजुवायुए॥ सोपैन
हपीयतुमसोंराची॥ करीअनीतिपरीसबकाची॥ नागबिषमबिषप
सनिनांथे॥ बंधवअन्तयपरेरननांथे॥ लगितुमहठवैथराधरलेनो॥ बलि
दहेउरकहेकुबेनों॥ सकतिहयोरनभ्रातातातकौं॥ इंद्रजीतयहफलहै
ताकौं॥ पुनितुमलरेपचारिपचारे॥ ससत्रअसत्रगहिमरकरमारे॥
तुमकहंजानिहरनदईसीता॥ नामांअरहकबनहिसनीता॥ मईथ
लिकेकोपानलमांनों॥ जस्योतेजतुमरोसबजांनों॥ अनलोरननही
मारेयाते। तुमहिआततांईकीयताते॥ हैकछुब्रह्मअंसतुममांही॥
सोसबहरिकस्योसहजांही॥ कुलबिधिकारनहातोकीनों॥ तुमहि
आततांईपददीनों॥ जेतुमकरमकरेमनजांनें॥ पापसबेतेरामप्र
मानें॥ सुतोआहिऐऐसेसूर॥ पोरुषनीतिधरमबलपूर॥ कंततोहिप्रप
राधीकीनों॥ नासतिहारेफोवृतलीनों॥ अथआततांईकवित॥
उष्टकरेयहदाह। बिषमबिषदेरबयरबस॥ ससत्रधारसंग्रामरे
षमुहआरबीररस॥ परधनपरधरसमथपार॥ परत्रीयापहारीय॥
उचितप्रानबधरनहि यहजुमतनीतिउचारीय॥ संसारबिदितन
रहरसुकबि॥ पातककरमपिछांनिये॥ अबसुनऊकंतषटपुरुषये
आततारकरिजांनियो॥१॥ दुहा॥ लंकाराजबिभीषनहि॥ सुषक
हिदीनिराम॥ तुमहिहतेबिनुसुनऊसो॥ कैसेसरिहैकाम॥१॥ रांव
नबाच॥ इंद्रजीतकेमरतअब॥ नयेकामसबनाम॥ पूरनकेहैंब
चनपन॥ मुषउचरेजेराम॥२॥ कवित॥ कबित॥ मेघनादरनमस्यो
अमरजयसबउचारीय॥ पस्योलंकआतंक॥ नयोराकसनयनारी
य॥ उरउद्देगदिगदेव॥ असुरकुलनासजुआयो॥ बैरबामबेधब्र
उसहअगमदरसायो॥ जयकारनयोत्रयलोकजस॥ जगतबिछल
जिहिबिरदननि॥ कबिनरहरहातमुकतिके॥ महाराजरघुबंस
मनि॥१॥ इंद्रजीतबध॥ कबित॥ दुहा॥ दैत्रबोधमदोदरि

हि आपसनामहआर: सरस्वतीजेवंधुसुत। इहानरमंत्रिवुलाए॥ रांव
नबाच॥ छंद दैग्रबरी॥ सबनिसुनाइकेलैकेसुर: अबतोआनिपरीसि
रऊपर: भैयहकरीतरोसेमेरे: हेतकहाअबरतउतहेरे: हमअपनेब
लबयरबदाये: उतबेगनारसुपारनआये: दुरजनकोउत्तरअब
देखो: लोहसमोहसमरचदिखेऊ: सबतुमसुतरसमरजयसूरे: प
रदलदलनपराक्रमपूरे: सुरनरमैत्रयलोकसताये: अबलोकस्त्य
जुपेमनआये: रिपुसनमुषजोपेरनरहिहैं: लोकलोकसोईजस
लहिहैं: दुवदलमिलेजुन्त्रितहुलावे: सोपहलाहितिगेसुषपावे॥ अ
नअपनेपोरुषउधारऊ: मिलिसनमुषदुरजनरनमारऊ: पुत्रसे
कउरअजरसआगी: ज्वालारोमरोमप्रतिजागी॥ कबिरु॥ उरिअसे
कवनरावनआये: सीतासिरकाटनसमुहाये: निठुरनिकालिष
गकरलीनें: कमलसीयाछेदनमनकीनें: इहासुपरेसमंत्रीयआ
ये: सुकरअसोहितमंत्रसुनाये॥ सुपारसउ॥ बालाबालअब
यो विचारऊ: महापुरुषतुमत्रीयहिनमारऊ: समरअनेकजयेतु
मदससिर: सेवातनपररहतसुरासुर: तुमनवजगतधनदसेना
ई: अहमबंसपुनिबडीबडाई: तोयहउचितकरमनहीतातें: जगं
अपहासहोइरस्नुजाते॥ कबि रु॥ मंत्रीबचनजबेषलमांन्यों: इहि
करकरषिकेरिअहआंन्यों: इहाएकोनगयोअनिपाई: असीतहाकु
बुधिउपाई: इष्टनिकोतहंआरूपादीनी: निसचरउपजीबुधिनवी
नी॥ रावन॥ मायामईजानकीमेंठऊ: षलकपिदलदेषतसिरषं
डऊ॥ कबि रु॥ सीताअसुरनिकपटसंवारी: मरकटदलदेष
तलेमारी: कपटसीसनवहातोकीनों: देवकटकमहराजदीनों
बिमनभयेसिरदेषतबानर: यहबृतांतसुनायोरघुबर: प्रभुतहं
मांनुषनावभकास्यो: तातेसुरबानरमनत्रास्यो: अबहनुमंतकूदिगद
आये: सीतादेषीकुसलसुनाये॥ मारुति॥ प्रभुयहमायाअसुरस
मानऊ: मिथ्याचरितनकछुभयमानऊ॥ कबिरुवाच॥ हनुमत
बचनसुनेसबहरषे: पापचरित्रदसाननपरषे: पुनियहमंदोदरि
सुनिपाई: इहारावनपहआतुरआई॥ मंदोदरीउ॥ कहाचरित्र
करतयेकंटक: इंद्रजालतेडरेनअंतक: मंदोदरिपतिकहेसमठा
वति: दुषरोवतिअतिमंत्रदिषावति: नरजोकुंभकरनसोनाई

इंद्रजीतसुतबलअधिकाई॰ रनसोईमरेजगतजसरहिहैं॰गदअथि
कारकनकयहगहिहैं॰ प्रभुसीतदेहलेयिप्रमानऊ॰ग्रईछाडिकि
तोजुधठानेऊ॰ आपनखेलकस्योप्रभुत्रैसो॰ कुलहिनासकरिजी
वनकैसो॥मकराक्ष उ॥खरसुततबमकराछिअसुरखल॰ बोल्योर
हासकोपमहाबल॰ सीतादेनकहैकोदससिर॰ प्रभुमोजीयतत्रि
कूटदुरगपर॰ कुंभकरनघननादधरमकृत॰ इतरनजयेधनिवेपति
हित॰उनतरिपेरसयनअस्यासे॰ मुनिसुरधनजेकपटप्रकासे॰क
हासोकतिनकोअवकीजे॰ देवमोहिजुधआग्यादीजे॰रामहिसानु
जमारिमहारन॰ बांधेपकरिसुग्रीवबिभीषन॰ कैतोबासअजोध्याक
रिऊं॰ महाबीरपरदलहिनमरिऊं॥कबित्त॥ करीप्रतंगपार्वेदनकी
नें॰लाइकृतद्यरावनतबतीनें॰ नेरिनिसानबजाइतथानक॰अ
निचढ्योरनखेतअवानक॰ हारूनरूपताहिकपिदेख्यो॰ प्रलअति
बलअंतकसोलेख्यो॥ बिभीषन बाच॥ सुपोबिभीषनप्रभुहिसुन
यो॰ यहमकराछिमहाबलआयो॰ रायवसावथानहोईयेरन॰ राकस
यहैतनीजोरावन॰ खरसुतमान सुरनिकोखंड्यो॰ यहमकराछसमर
पनमंड्यो॰ ताकहैदेबिकटरनमरकट॰ अतिहितयानकरूपअसुरन
ट॰मिटतनकपिसुग्रीवमहाबल॰ बेधचढेरोकेराकसदल॰ इहांअ
गदमारुतिदेउआये॰ सनिन्हथंरतररोषसवाये॰ नयेजुधराकसक
पिनारी॰ बहेजुप्रहरनेबारीबारी॰ इनक्रुरुक्योरहोनहीअसुर॰ आर
सरोषबिभीषनऊपर॰ गुस्योनतीजाकाकोसोजुध॰ उत्तयअनेकअव
हेआयुध॰ समरबिभीषनसूरसंभार्यो॰ इहकमकराछगदासिरमार्यो॰
तदपिनगिर्योप्रहारबीरतस॰ रनलाग्योलषमनगलिराकस॰ लषमन
तिहिजुजकाटनलाग्यो॰ असत्रससत्रनहीनिदतअप्रागे पहलेतिहिजि
हमाबरपायो॰ सम्हरसुरतनजुरतसवायो॰ गहिलैचल्योलषनकरह
लका॰ इहामायातमरओअसका॰ अतरंनचन्तयोअधारो॰ सोअ
पनेपरहिनसंभारो॰ हाहाकारगगनतुवहोई॰ कहुउपारकुरतन
हकोई॰ इहातेजसररामचलायो॰ अंधकारतिहिनिफलनसायो॰
अगअंगकाटेप्रभुआसुर॰ धुकेतहामकराछपरेधर॰ रामजुद्धमकरा
रच्छमार्यो॰ अमरबृंदजयसबदउचार्यो॰ जयदुंदुभिसुरगगन
बजाये॰ अतिआनंदपुहपबरषाए॥कबित्त॥ उद्दम न उ॥
इहालषनकरजोरि॰ उचितहितवचनउचारीय॰ [illegible]दयालदे
घिदेव॰ होसंकरहारीय॰ कहिनपरीजिहिजि [illegible]

मे: नहोतहो चितमात्र· छेदिरिपुदीनछिमये· करुनानिधानकारनक
रन· कोउनसमसरकीजीये· सबबिधिदयालनरहर सुकबि: देवन
गतिफलदीजीये॥१॥ इति मकराछ बध प्रसंग जनीराकसी प्रसंग॥
कबित्त॥ इहानिसारनअजिर: रामनिरषतनिरन्तर· मानिबयर
अनसमय· सजीवलतालकेसर: नामअलंजनिनिसाचारि· अति
कपटअन्यासीय· रचैसुमायारूप: बिबिधिजगजीव बिनासी
य· पगदीसोरावनबोधिपत· रामहिसानुजमारिरन· हितकरउ
मातमेरा यहै: मानुतवउपकारमन॥११॥ पगपानिषेचरीय दे
हदुष्टाअतिदारुन: समरन मिसंक्रमीय: तहंकीयरूपयुग्मतन:
पल्चानीअंगदप्रबुध· करषगउनगीय: धरीअचानकबीरया
ई· मगपतिमनुमगीय: जुवराजचरनगहिगेदनो· पानिनपर
कीभूमिपर: आसुरीगईजमलोकवह सुनीसुषललकेसवर:
॥१२॥ अथ श्रीराम माया मसतक दरसनं॥ सीसरामसोमि
त्र· रचेमायामयराकस: रचितरुचिरतरूप· सहतजरजरनि
तापस: सोनधारगलस्रवत· नेत्रफटे बिकृताननं· बारबारहि
काउबास· रललिमरनेनरन· मुषरत्नवानलवमूछनिलि· असुअ
नतछ बिअनुहरे· अतिरोषदसनपीडितअधर· धरनिसुताआ
गेधरो॥१३॥ छंद पधरी॥ मसतकसोदेषेअकसमात: सीयअस
हसोकनहीउरसमात: परित्रासमनउसिरबज्रपात: वदिस्स
लहृदयनहीफुरतबात: सिरबारबारउरलारसोर: रसरोदम
गनपुनिउगतरोर॥ सीताबाचं॥ जगदेकबीरहाजगनाथ: अ
तिदुषितकृतीकीनीअनाथ: रघुबंसतिलकराजाधिराज· यह
दुसहकोनगतिनरआज· सुनियेपुकारसमसुरसमाज: धरिचि
तमीचदैधरमराज: नहीसह्योजातयहदुषनिदान: पापीनप्रान
कीनोप्रयान॥ कबि रुबाच॥ निहचैतबकीनोमरननेम: प
रिलषअतिदुसहचितपेम॥ ॥देवबाच॥ कबित्त॥ दुसहदसासीयदे
षि· देवअतित्रासउपजीय· यहनसीसअवधेस· सीसदसमायासजी
य· कबिनकालकोकाल· अंततिहिनिकटनआवे: नयकुसिष्टतव
रूप· नियतछनमांझनसावे· मैथलीमानिनिहचैतमन: देवनित
बधीरपददई· यहकपटरतमायाअषिल: नवअकासबानीलई·
सीताबाचारूहा॥ सोसुनिउपज्योसीयके· मायाअसुरअमान· नयो

निरुदिमनयपस्यो नहीकछु चलत निदांन॥१॥ रावन माया राक
सी: सबकरि रहोसमूल: ऐके फुरी नअदिनतें करमनयेप्रति
कूल॥२॥ अथ दूत प्रचारनं॥ कावीपरीजु सबकरी: बिद्याकपय
बिधान: तबरावन रघुनाथपर: पठये दूत समान॥३॥ कबित्त॥
समयपाय लंकेस: रह्यो छलनतनपठयो: देवक दैकमदुष्ट असुर
आतुरसो आयो: गह्यो लीततकाल: कपिनि प्रभु आगे कीनों:
धरमजांनि अवधेस निकटतिहि बोलि सु लीनों: सुरकाज राम न
रहरसुकबि: राकस बंस बिनास रन: सो रहसि हसि हेरत दूत तन
महाबाहु उछाह मन॥१॥ राकसनामसुलोही ताहु: अतिबली बुधि
बर: बिहत दूत आपार: समझि पठयो लंकेसुर: रहियो सकुअव
धेस: जगतपति आनि जु हारे: दयासिंधु देवाधिदेव गहर बेगरे:
सुतबंध बरावन कुसलसों: कहो कवन काजि करन: आगमन
हेत कहियेअखिल: कहो जु तुम हि बिचारि कव॥२॥ दूत बात
बरस सिर के दूत समय उतर अनुसरयो: अपने प्रभुको आप
उचित गौरव उच्चरयो: अहमाग्रह सुरगुरु बिचारि रावन पठआ
ये: जुगकर अंजुलि जोरि: सकल जुत बचन सुनाये: सबकसिप
कोबस कोपकरिनासन कीजे: देषिजथा अपराध दंड दीरघल
घुदीजे: रनुदेवमनुजकहंअनयरे: प्रभुकछुकरिसपरहरीय क
रिसमाधान बिधिजीवकौ: कहिजु बचनआगपा करीय॥३॥ दूहा॥
कारन तुम पहकहन कछु: मोहि पठयो राम: रावन निसप्रजानि
मत: आपगये सिवधामें॥१॥ रामउ आदर करि तिन दूतको: ये
प्रछो रघुराइ: तो कह पठयो काज किहिं: सो थो हमहि सुनाइ:
॥२॥ दूत बाच॥ सावधान चित है सुनऊ: कहो जु कछु लंकेस: जो
पे सब तें कीजीये: निहचै राम नरेस॥१॥ कबित्त॥ रूप नबाजुब
रूप: करी तुम उवितन कीनों: हम सीता तब हरी: तुम हित दाउन
उपदीनों: अंबुधि जल परआनि: सेत परबत तिन साधे: सुत मेरे
संग्राम: नागपास निजु मनाथे: नवरहे नहीं नब तम्रता: अग
टकरम फल पाईये: देधनुष हम हि हिजरामको: सीय ले आप
सिधारीये॥१॥ दूहा॥ संधिकर हु लंकेस सों: यह जो पै अवधे
स: समर सुरासुर को दुसह: करिहै तौ कलेस॥१॥ परसरा

मकोचापतुम: पायोबितुहिप्रयास: ताकेसाटैलेसीया: पुनिप्रहजाकु
प्रकासहू॥३॥ करीबिदातबहुतकी: रामचंद्ररघुराइ: नीतिधरममन
कोनिपुन: सबैकहोसमझाइ॥४॥ श्रीरामउवाच॥ मंदोदरिरावनम
हल: आपहोहिऐकंत: समाचारयेहतसब: कहिबेतहांनचित॥१॥ क
बिरुवाच॥ आयोकेरिबसीठरहो: पुनिरघुनाथसंदेस: ताहीछिनप्रति
हारतिहिं: लैगुदस्योलंकेस॥५॥ रावनअरमंदोदरी: बैठेसदनसुन्द
र: सुनिबेकहंसंदेससो: लीनोहुतबुलाइ॥६॥ हतउवाच॥ मोकहंचल
तसंदेसमुष: आपकहेअवधेस: कहिहौंतुमसोजोरिकर: सोसुनि
येलंकेस॥७॥ तुमअवलोकेरामतहां: सोनिधिसुन्दरसमाज: कैसे
बैठेहैकहौ: कौनकरतहैकाज॥८॥ हत लोही ताह बाज छंदपध
री॥ मृगतुचाकेनकमनिरतनमान: बनिमृदुलबिबिधिबैचित्रब
न: सोहैलषनहुतलठसाह: राजतहपोढेरामराइ: बामंगअसियोज
यधनुषबीर: रंजितदछिनदिसिअद्धयतुनीर: बधकारइन्द्रजितऐसबा
न: आमंतकरइहनबेसजान: जिहिकुंतकरनकेनाककान: नवक
रिरूपकीनेत्रयान: तमजयामुकरतिहिंगोदसीस: अनसकितसो
वतअवनिरीस: जिहिप्रहस्तअकंपनहतेआर: ज्वालानललंकादी
यजराइ: तहांथरेअंकपावनपुनीत: बातसुतपलोटतपदबिनीत:
देवांतनरांतकहतकदेषि: बिस्वेसरामबिहंसतबिसेषि: कछुक
हतबिभीषनबचनकाज: सोईरीझिसुनतहैमहाराज: रहिनोंति
बिलोकेअवधिईस: हतमेंठलचहुघालंकीस: दीनेसंदेसजोरा
मदेव: सोसुनहुसबैकहिहुंसनेव:॥ श्रीराम[illegible]॥ बामनदीयर
रहिस्वरगबास: सोसुरनिबाससबसुषनिवास: पुनिबामनबलि
कहंदीयपताल: सोबिलसतहाबेनवबिसाल: द्विजरामद्विजन
भुवलोकदीन: करमेलिउदिकसकलपकीन: हमदईबिभीषन
लंकहाथ: सोईसेवातपररहतसाथ: लैदीनेएतोतीनलोक: अ
बओररलोनहीकिहुओक: सोदैहिंतुमहिसोसंधिसाज: जिहिंबै
रबैगितुमकरहिराज: सबनीतिआपजानतसकाज: इहिगेरनसंत
वसंधिआज॥ हतो॥ संधिनइहांसनावनो: यहतोकबहुनहोइ: सो
रावनसमझतसकल: कहाकहैअबकोइ॥ इति हत लोही ताह
बाज अथरावनमंदोदरीसंबाद॥ हतो॥ रावनसोंमंदोद
री: इहाकहैअकुलाइ: अवलोकहुओरैनई: तासोंकहाबसा
इ॥१॥ समयहुतोजबसंधिकौ: तबतौकीनीटेक: आयोअंगद

हतरहेः आपनमानीऐक॥२॥ रावन हितुजे रावरे : सबैरहेसमलाइ
तिनकेमंत्रजुनीतिजुत : ऐको चितनआइ॥३॥ कबित॥ उदधिसेतस
जयो: उतरिरहित रिपुआयो: द्वारद्वारदलुसह: रोकिसंग्राम
सजायो: भ्रातपुत्रनरबिरे सुतोकछुकाजनसरयो: धरमस्वामि
उरथस्यो: छतरनउधजुकरयो: कीनेंकुलनासपोलसतिको: अरूषल
सोंचारीपई: कहियेप्रीयकारनसंधिकी: नलीजुअबरंछानई॥ दोनेंद
धिनगनीसदुःष: नासोसुतनासीय: बीरभ्रातमातुलबिसेषि: सुतम
त्रबिनासीय: उरगदाहबारिधिहिबंध: सेनासंघारीय: नयोबिनीप
नजीयतनोहि: लंकाअधिकारीय: येतेअनरथसुनिसुनिअसह
हमकुत्रीयादाहनहीयो: परयोजोअवकहनप्रीय: कवनसंधिउ
छवकीयो॥२॥ दोहा॥ कुंभभ्रातसुतमेघसुर: रनमंरिस्तयेजुराष: आ
पप्रीयबलवानयह: अजहूजीयनअभिलाष॥३॥ कबित॥ समय
बितीतेसंधि: कंतयहमंत्रजुकेसो: लैलेलावतलोंन: जरेऊपरकेों
जैसो: ब्याऊकालजो बिषम: सोकमेंगीतसुनावत: सबैसुरासुरसुनत
पहोकछुचितनआवत: संसारसगरअहंकारसोंई: अपनोआरनिब
हीयो: जलबूड़तगहत तरंगज्यों: हाप्रीयहाथनिबाहीयो॥१॥ किऊक
लअतिकलह: नयोदेवासुरनारीय: नहाबीतेकछुकलप: उसहन
चन्द्रहुमारीय: बलबिधानबितये: नियतहरिहरजयमानो: महासक
तिकोत्रासमानि: उरध्यानजुआनों: रामसोंछलबलरिहोरनहि: सनुत
नुगतकुलंकपति: जोलरीदेबि उरगासुजय: असुरबंसकीयनास
अति॥२॥ सुनिबोलेलंकेस: कंपरभैहंतजुकीनों: परसरामकोचा
प: लेनकहदावसुदीनों: ८ नारायनकेधनुषबान: अपनेकरआ
वत: बासवसंजुतबिष्णु: नियतरनभारिनसावत: तेप्रीयेकाजत
रेपकरि: लक्ष्मीदासीलावतो: तबकादिअमरनिजलोकतें: बैकुं
असुरबसावते॥२॥ कालसेवममकरत: हैजुरबितपतसीतहित
हरिहोतेंदिगपाल: बिहतपदरजनिसबेदित: चंद्रहासषलषग:
उसहसुनिअमरनारिकर: आवतगरलअनसमय: नियततहाके
बराकनर: निरषकुजंबालतपसीनिलज: दीनजंतकपिजोरिद
लः सुनिमोहितपतगदलंकसिर: षत्रायमआयेसुषल॥४॥ छप्पै
मृगेसगजमारि: थापकरीयकुंभथल: लेतकवलरतलिम:
हैजुबिथुरेमुक्ताहल: यहजुरामअभिमान: मेलिबनचरदलमरक
र: मैंजुजबलमेथली: हरीसोममअहंसकर: ससकहतकंगवं

थे सफल जतन करत जिहि हेत ज्यौं : मन मो द कथा न ग्रयां दुष तपस
री छत सीय हि सें ।।१।। अथ रावन गूढ होम दिम प्रसंग ।। कवित्त
रू ।। जो ई जो ई कीनो कपट जुध : निःफल गये निदान : दस सिर वाढे दुस
ह दुष : उदिम फुरे न आंन ।।१।। छंद उधोरा ।। अकुलाइ रावन आप : परित्रा
स उर वढि पाप : गो विकल चित गुर ग्रेह : निसि अर्ध जागति सनेह : सु
के हि जुनाये सीस : व हि दरी स्वसति असीस : पुनि जोरि कर परि पाइ :
सब दुसह दुः षसुनाइ ।।१।। रावन वाच ।। बीय राज छत्री य बाल : बनि
जती वेष विसाल : नर जूर सीस सजोप : कर धनु ष बान सकोप : कटि
कसे सु तूण निषंग : तर पत्र आवृत अंग : लसि उर नितुर सी माल : बपु
जा कंध बिसाल : बनि दिष्य नयन बिचत्र : मनु रत पंकज पत्र : मुष कम
ल सोल अमाप : प्रति अंग दैत प्रताप : आजान बाहु अंग : उपमेय बरजि
त अंग : संग जाल की सस हार : रहा जु थजु थ प आर : सिर जल थि बंधी य
सेत : तेई उतरि सेन समेत : रह्यो लंक घेरी य आनि : प्रति द्वार जु थप मानि
परि विषम कूरु अपार : सब जयो अ सुर संघार : षल सार साहि परिषे
सु त बंध सुन्दर समेत : रन कुंभ मरिज सराषि : सुत इन्द्रजित र विसाषि :
अवरहि चतुरथ मग्रेस : सब बिना सिर अक सवंस : कछु चलत नही वल
कोर : हम माझ य हगति होर : मकिरा अकपि द्रुत माझ : सेर सेर न दि
न साझ ।। २ ।। सुक्र जु तुम से गुर सदय : हम मह ऐसी होत : सुनि
सुनि हसत सुरेस सुर : य हकछु करम उदोत ।।१।। सुक्र वाच ।। सुक्र कु
लाल के ससो : होनी होइ सु होइ : जब बलि इन्द्रव तमता : कहा करे
तिहि को इ ।।१।। नहीं सुरासुर बस नियत : सत अंत कछु संग : अस
न वसन न वना : ना वाकै रस जंग ।।२।। सुक्र वा रिजिसु नि स बे : द
यो मंत्र उपदेस : जाइ करो यह होम जप : बनि है काजु बिसेस ।।३।।
अबिघन जो पै हो मय ह : पूरन होइ प्रमान : तौ तो कौ है है अजय तुम
दस सिर यह है निदान ।। ४ ।। कवि रूपसाह को कवित्त ।। सुक्र मंत्र उपदेस द
हा रावन सुनि आयो : वसु गुर वचन बिस्वास : छोह उर गर वजु छ
यो : मन अपने तिन मात्र : जगत न वन्ततसु जानत : गाव कहूं जर
आषि : पतित प्रभु लन पिछानत : ससज्यो सिंगाल मृगराज सौं : कु
दिन हेत कीऊ करत : कंटक त्यों वलइ हिहेम के : आपना सकृत
अनुसरत ।। ५ ।। गूढ विवर रावन गयो : कपट होम के काज :
आनि करे सब सिध रहे : समय उचित मष साज ।।१।। छंद उधोरा ।।
गत बिवर जो दसग्रीव : सोल गि पयाल हि सीव : ये कांत अजिन

अवास : निजगरतहोम निवास · अनपरसमार जितअंग : आरंभहोमअरु
ग · बिधिबसत्रयोतबनार · रहाथणेगासनआर · उछाहवदिमुनिआप
त्रैलोकप्रगटप्रताप : संकलपकतहूतसाथ · हितउदिकसंग्रहिहाथ :
कृतकुंडबिहतबिसाल : कीयप्रगटअनलकराल : समिधाजथाबिधिस
धि : प्रजालिरहतउपाधि : हतमौनतजीयबीर : रहिदिगनिमूदिसथी
र : बिधिदिअबारहीबार · आकृतिमंत्रउचार : रथमहाव्यनुतराजि
ग्रहसकलपतिकरसाज : समससलत्रअसत्रनिसंग : पुनिचापअसयनि
षग : प्रतिअंगकवचसमाति : रत्नादिभारथआनि · कृतकुंडमेलिमंत्र
रि : रहोउचितमंत्रउचारि : मिलिअनलउर्ध्वधोम : बसबातबदिचदि
ओम : उपजी बिभीषनदेषि : बढोजुसोकबिसेषि ॥ बिभीषनउ
है गढथलयहहोम : धारनुबढिचढिधोम : तबतुरगपठ्येतुरत : यह
तेउसोयअरत ॥ कबिरुवाच ॥ सुषेनतसबकेरमुनि · रहाक
पिदलमलआर : बिबिरिबिभीषनसोसबिधि : बातेकहिबनार ॥ १ ॥
बिभीषन ॥ कहोबिभीषनजोरिकर : रामसुनमहाराज · गोलके
सनिकुलिना : कपटहोमकेकाज ॥ २ ॥ कारजहेरेथहोमकरि : अगनि
कुंडतेओर : मधुपसकवचसोंजसब : ठीकगोरकीगेर ॥ ३ ॥ गमनत
सरथतरगगन : जथायुध्दकोजाइ : बहिरथजोषलआरुहे · अपनीजिष्ट
नआर ॥ ४ ॥ आयुधधनुअस्तगनैं : तेईअह्यनीर : बिसकअमोघ
उकवचबपु : सहजअलेदिसधार ॥ ५ ॥ जोवहनिकसयरथसजय · अ
जयहोइषलआप : हैनसुरासुरसाधियह : पापीत्रिपुरसताप ॥ ६ ॥ अब
प्रभुकरियेमंत्रयह : होमबिघनजिहिहोइ : याकेसबसाधनअफल :
कारजसिधनकोइ ॥ ७ ॥ छंद हेअषरी ॥ श्रीरामउवाच ॥ रामकलोतब
मुनिकपिराजा : करियेहोमबिनासनकाजा : हरिमर्कटनटवली
पठवहि : होमबिध्वंसकरहिफिरिआवहिं ॥ कबिरु ॥ सुषीनएअंगद
हनुमाना · बानरसंगसुभटबलवाना : निकसिचले प्रभुकहेसिरन
ई : स्थिरताषिमूरतिरघुराई · हरकपिलंककोटचढिआऐ : छोडियेर
हगजनिअछाये : बारनछूटेनरहिमतवल : यहधावहिगटनयोके
गाहल · रहाजितेराकसमुहआये : समहरकपिनिसुमारिनसाये
निसोईहोमबिवरनहीपावहि : ढटतफिरिसाकारदिहवहिं · होम
बिवरषोजनकपिहारे · दिसिदिसिंधावतहोतदुषारे · सरमानामरा
सीसुंदरि : ऊतीबिभीषनत्रीयात्रगतिहरि : दि ... १

रकरदेषे : बिकलतनयेतिहित्रीया निसेषे : बिनतानेंननिसेंनबतायो : दुरग
मबिवरद्वाररसायो : दयेकपारबिकरसिलद्वारे : निकरआरसोबीरनि
हारे : बालिपुत्रसोसिलाबिदारी : महाबीरपदतललेमारी : बिवरद्वारज
बधुरसोबिसेष्यो : दसासिरहोमकरततहादेष्यो : दहाकपिहोमबिवरस
हआये : सबेउपद्रवकरतसवाये : चषमुद्रितजुतध्याननिसाचर : बे
गदिढआसनसाधेबर : डरेनरावनडिगेनडोले : बीरपचारततदपिन
बोले : मोगतमरकरजुधमहाबल : षेचरवृतनहीतजतमौनषल : द
हाअंगदयहमंत्रउपायो : आसुरकेअंतहपुरआयो ॥४॥ दोहा ॥ सुरआसुरकि
नरसुता : नागजरुसुवनारि : समयबिचारिजुअनुसरे : प्रतिग्रहदुरीपु
कारि ॥ कबित्त ॥ अंगदअतिबलउमगिआप : अंतहपुरआयो : ऊव
हाहारवअहअह : दुसहदरसायो : नामनितिहिछिनताजिताजि : प्रति
मंदिरषेसी : त्राहित्राहिकरिरूदति : कहेयहतरीजुकेसी : जुवराज
फिरतढटतसजय : महलमहलमंदोदरी : पावेनकहुपदरगनी : अबत
चितचकेपरी ॥५॥ चित्रअहप्रतिमाबिचत्र : बिनतजुबनाई : मयत
नयातिहित्रेहमांऊ : उरकंपतआई : मंदिरतिहिपुतरीनिमांऊ : मिलि
गईमंदोदरि : अंगदषोजतअगअंग : सोलहतनसुंदरि : कपिपुर
जुसंभ्रमचितकछु : हाथनमेलतचकितऊव : द्वैबिमनसुधाक्यो
बोजिहग : नरगहेतबद्वारतुव ॥६॥ सुरकंन्यास्फतहा : दुचितअ
वलोक्योअसार : नैनसेनसंग्यानिदान : तिहिबनाइदईतद : फि
रिपेगेतिहिअहफाहि : अंगदअधिकाई : उरकंपतअनुसार : प्री
पालेकेसुरपाई : करकरबिअौचिकादीसुकपि : जोरमृगीमृगराज :
ज्यो : धकधकीपरीछतियांअधिक : तरनिबिलोकतनीतस्यों ॥७॥
दोहा ॥ ठकठोरतग्रहिगहिऊपरि : बांनरत्रीयाबिहाल : जलजल
नागजमतज्यों : आंदोलतअसराल ॥ कबित्त ॥ अबसत्तईअब
लाअचेत : रहाबाहरिआंनी : छुटिघंटिकागईछूटि : टूटिनीबीसिथलांनी
कटिकंचुकितनअत्ताफेलि : हारावलिटूटीय : मदनपुरीमनुबयरमां
नि : लीनीसिवलुटीय : आंनीकटेरिकचकरषियो : होमकरतरावन
जहां : हाहाबलिछत्तावीअसह : तिहिनसुरासुरबलतहां ॥८॥ सुतब
धवमंत्रीजुसर : ऊऊजगजांन्यो : रिषपुलसतिकेबंस : दथीनयान
सनमांन्यो : पुनिजुबिनाषनअनयपाइ : प्रभुतागदपायो : करषिक
रषिकचकपिन : दुसहदुपत्रीयनदिषायो : हममांऊबिपतियेहो

तहै·मोनमंत्रपीयपदिहो :तिहिबलबिसेषलेकेसतुम·कितकक
लग्रबकदिहो॥२॥अरिकिंकरयस्मार·अबलकृतमुउउयारि·फ
रिफारिपरस्त्रमनफेरि·हरिअंगनिहारे·सकलहारअंगार:तोरिडारे
दिसिदिसितन·तुनीकरतग्रनसुनी·मंत्रतुमजपतमोनमन:जि
हिजीवनहैधिकारजग·जपेकलपसतजीजीये·हीयबदेगोनिठुर
नुसह·कंतपराक्रमकीजीये॥३॥मेरोपुत्रजमेघनाद·सोनहिरहि
ग्रवसर·मोसीताकीमातबीरस्यामदोदरि:तिहिकेचकरगहिके
पिनि·अैविपतिआगेआनी:कंतमोनजपकरत·आबिघोलेनग्र
गानी:सुनग्रहंकारतजागए:होमकरतजिहिजायनहित:करि
नीतिधरमनरहरसुकबि·ग्ररूतातेमरिबोबिल॥४॥करमक
रकरमाउ:ररतहाहामंदोदरि:हमग्रनाथजोग्रही:कहाकरिहो
बहोमकरि:कंतपानिग्रहकरे·ग्रबलतुमग्राहिजुग्रानी:करतै
बानरकरषि·धारलूटतजधोनी·ग्रनतरीतरीहमगाक्यरसो
सचराचरसाषिहै·उपसोकसिंधुहतउगम·हमहिकिहोकोराषि
है॥७॥कबिरूबाच॥छंदअपरी॥बोलीफटीछुटछुटखलि:
बिगलतबसनचषनिअंजनचलि:अश्रुअघंटजुउरथउसासा
उरनासीअहवातनिश्रासा:छुटेकसनतनथकथकछाती:रोम
उत्तारराेषदिगराती:करमरदतबलियाबलिकरकी:तनरोम
चकचुकीतरकी:चकितमृगीसीचउया·चाहति·थंकीबिपतिसि
धुसोथाहति·मगनजैरीदुषसागरमाही:निरषतकछुअवलंब
ननाही:पटरागनिमरकरपरितावति·सोमोसुरकेमोदुषपावत:
नानेकनकरतनमनिभूषन:करीसुनगमुकतावलिकनकनओ
ओकपिकरगहिककोरत·मिलिमिलिसोतिहसतिमुषमोरति·ग्रे
सीदुषदहसाअकुलानी:रावनआगेगदोरानी॥मंदोदरीउ॥तबतुम
कंतकरीबुधितेसी·अबहमगाढतईगतिऐसी:आपमोनव्रतचषनउ
घारत·मरकरहमहिदुसहदुषमारत:कतयहोमकहाप्रीयकरिहो
मोनगुमाहपुनिहितेमरिहो:सबसुतभ्रातनातीजसंघारे:मंत्रीसु
भटमरकरनिमारे·ऐसेपतितुममंत्रउपायो·रिपुलसतिकोव
सनसायो·हमहिपकरियेकपिलेजैहैं·कोजानेताकेसीकैहैं:कि ही
हिकाजैतुमकरतहोमकर्म:हेधक

पुकारि मंदोदरि रानी: इहि मन मांझ गलानि निआनी: परम दुषित मय
सुता पुकारत: यह बृत है तन आं षि उ या रत ॥ ८ ॥ पावत जग्य प्रसाद
नृप: कुल बेतन व अहंकार: सो ते तुम इहि बुधि सों: सबै करे षयकार ॥
कबित्त रूपावली ॥ छंद दैंग्र पनी ॥ देषि त्रीया बिललात दुषारी: तो हनुमंत
क्रोध मन न नारी: बिहत होम सं[illegible]र बिथारे: लै सा कुलि दस कुंदिस ल
रे: बार मोलि कृत कुं झुंडाये: पुनि रावन कछु अनल न पाये: लै
कर अवास मुझहि मास्यो: पुनि थाप र इसमु घ न्यंत्र हास्यो: दुस हल
तन बतर मह दीनी: कपि इला दिआ ने सी कीनी: बिन स्यो होम सुमन
हि बिचास्यो: फेउ दिमन ते रावन हास्यो: काज होम कपि हातो कीनो
पुनि केट कुउ गिपाप न बीनो: जो गनी दनै जाग्यो जैसो: कालकराल
प्रलय को कैसो: लै करग इ दुस हमर कर दिसि: रावन धायो चितम ह
रिस: अंगद मारुति बाहरि आये: धीग दसानन पाछे धाये: कोत करो
म बिधंसन कीनो: निस चर उर बढि दाह नवीनो: कोट कूदि कटक के
संकट: मारग गगन गये तेमरकट: धोबिज ई कपि दल मह आये: ज
ले लेसब हिन मन लाये: राम चरन तिन लो सिर नाये: प्रभु की कृप
परम जय पाये ॥ कबित्त ॥ चै सुनो सुक उपदेस: करम आरंभ न
होम कत: बिवरग दगट बीच: हरि जुत हाबे गि बिजय हित: माह
ति अरु जुवराज: सुग्री अंगद इहां आये: करे उपद्रव तिन अनेक: दुष
दुसह दिषाये: सो ईस्यो समय बरहर सुकबि: उरजयपस्यो त्र
धीर के: कीनो जु होम बिधंस कपि: कत प्रताप रघुबीर को ॥ अ
थ रावन मंदोदरी प्रति ग्यान बोध करनं ॥ दोहा ॥ है उपजत ह्वै क
रम हित: दुष सुष ना व दुरंत: जुग वत है तब न्दूत सब: तिन के फल हितु
रंत ॥ १ ॥ कबित्त ॥ रावन बाच ॥ दैवाधीन दुसाधि: सरब हित अहि
तजु सुदरि: ग्यानि मित तग्य वचित: अषिल सजन असहनअरि: सुष
दुष करम संजोग: इष्ट अनइष्ट अभ्यासत: बेसन वत्त अ बिसेष: प्राग
इचित नाव प्रकासत: सब गति जुये क नर हर सुकबि: लघु दीरघ नह
लेषि है: जो जीयत जेत बकु काल जग: दुसह कहा न देषि है ॥ २ ॥ छंद
दैग्र पनी ॥ करमाधीन अहि तो हित कारन: मान निग्यान प्रकास
कुनिज मन: सोक मूल अग्यान सुजान कु: पुनि तिहि नास करग्यो
न प्रमान कु: उपजत है अग्यान हि अह मिति: मूढ इन हि अपने के
रि मानत: देही देह पुत्र धन दारा: है सब बंध स कुटंब हमारा: हरष

सोकत्तयकोम्रनुमोहा॰ लोभमदादयदारुनद्रोहा: जनमजरारुजम
रनसुजानकु॰ यहत्रग्यानप्रवरतिप्रमानकु॰ देहथीनहतेसबदेष
कु॰ लोचनमयप्रउघारिसुलेषकु: जगतचराचरविनसतजानकु॰
ग्यानीपिकसंजोगप्रमानकु: निसचयप्रानसुतोम्रविनासी: प्ररन
जोतित्रप्रषंकप्रकासी: सुधम्रलेपकसाधुम्रसंगी: म्रानंदरूपम्ररू
पम्रनंगी: चावाचावविवर्जितत्तोमनि॰ हैविनरिकसंजोगवि
जोगनि: वहतनमेतोलोंम्रपनाई: सोविछुरेतेतनगईसगाई॰
वहतोगयेकुतीजिहिम्रहमिति: रानीम्रवकेहिकजेरोवति: एत
वधुसुतपोत्रहमारे: जीवगयेतबतनलेजारे॰ जीयतोकुतोसजाननजा
नो॰ म्रगटनवेदपुरानबषान्यो॰ सोकतजयुयहजानिसयानी: पिंक
विनासनविनसेप्रानी॰ म्रीयेजातकुबाधिवयरपन: रामहिसानुज
हतोमहारन: यहत्रिकुटगढजीयतजुगेरू: म्रीयेप्रसिधजगतज
सपेरू: रामबानउरविधमहारन: रामजोतिमिलिहैकेरावन: जव
रघुनाथमोकुमिलिजाकुं: विधियहकरीयेतुमहिवताकुं: हानज
थाविधिदेषिसुरीजकु: हमम्रग्यासीतहितवमारेकु: तुमसहग
मनिधरमउधारेकु: कावितावढिमोसंगकोमनि: ववदेकिजो
नकुतुमम्रोमनि: सुषसाधेरहिलोकसुमारेक: पुनिपरलोकस
धकुम्ररिपावक॥ मंदोदरीवाच॥ कवित॥ कहोमंदोदरिसुनकु
केत: तुमप्रगटकरतपन॰ नयेनहैक्रोहेननरप॰ कोउरामजई-रन॥
वीस्तुजासहससिरविसाल॰ जरूपिजगजेता: मानकुम्रापनकितक
मात्र॰ सववंससमेता॰ येस्वयंब्रह्मनरहरसुकवि॰ म्रापधरमहि
तम्रवतरे॰ नवनूतत्रिपुरदाहकम्रत्तय॰ हेतयनरहंताहरे॥१०॥
छंद हेम्रपरी॥ प्रथमकलपतनमछप्रकास्यो: वारिप्रलयमेह
संववेनास्यो: पुनित्यकमछम्रसंभाग्रानम: त्रमनग्रत्रिकुंठय
छसयनत्रम: म्रादिवराहत्त्यप्रजुग्योई॰ महीम्रविलरदम्रय
समोई॰ येईइहिनरहरिम्रवतारा: सत्तुहिरनकसिपसंघारा: सुरप
तिहितवावनतनसाध्यो: वलित्रयलोकदयोतउवाध्यो: म्रसुरत्र
येषलछत्रीयम्राकृति॰ छीनिलईइकवीसवारछिति: सोईद्विजरा
मद्विजनिलेदीनी: करकलमेलिसंकलपकीनी: एईरामरघुकु
लम्रवतारा: स्वयंरूपनरहरिम्रवतारा: कतहतनतोहिनरतनकी
नो॰ लोकप्रसिधजतीहततलीनों: तुमजोहरीसीयातीयताकी॰ व
नहीम्रकेलीवसतवराकी: म्रीययहकीनीवुधिम्रपावन: राकस

वंसनासहितरावन॥ रावनबाच॥ परअहमअज्ञा नतरघुपति : सी
तालछमीयहै बचनसति : मेरैयहमतसतिमंदोदरि : मिलिकैराम
रामसरकरंमरि : सनमुषरामबानेउरसहिकै : लोकदुलसपरसप
दलहिकै : अबतोप्रीथैयहैबनिआई : जोपैरहैजाइसोईजाई :
कबि २॥ लंकापतीमरनहूतलीनो : कामनितहामोनमुषकीनो
॥ ३॥ होमगएबिध्वंसहूव : सोदृपतिसमबाद : सुरासुरनिनरह
रसुकबि : बाद्योबयरबिबाद ॥४॥ इतिरावनाकवट [illegible] मथि
लनंम॥ कबि २। दोहा॥ देसबोधमंदोदरिहू रसरिसराकसराइ : ब
हरिआयोबलतसो : बेगसनाबनाइ॥१॥ पुत्रनतीजेसुनरपुनि : जे
पूरषहितपूर : मारतबचेजुमरकरनि : सोमिलिबेगेसूर॥ रावन
जेरनमारेराकसनि : हरिहेरिहगहेर : आनिजिवायेअमृतउन : कपि
तेमरेनकोइ॥२॥ हैसबकहूस्वामिहित : बिषमजुधकरिबीर :
असचतुरथमआपने : सेनारहेसधीर॥४॥ तुमनिसचरबिद्यानि
पुन : कपटजुधबलकाइ : कारननासजुअमरकुल : असेकरऊउ
पाइ॥५॥ कबि २ ज बाच॥ षेचरबंसपचारिषल : रनबरबाधेरान
होइहहाहारवलंकमंह : निहसिदिसोनदिसानं॥६॥ छंदपधरी॥ उत
मजलमंजनकरीयअंग : पुनिकरेमंत्रबिजईप्रसंग : बिधिबरनबरन
बासनबनाइ : चितरुचितबिबिधिसोरंतचटाइ : सनाहकसेप्रतिअं
गसोह : उत्तरीयमंछ नेहनिआरोह : लूटतकसनतनफूलितेष : रस
बीरबिकटनकुटीत्रिरेष : आरकततनयनतनकचउत्तार : सेसाइमन
रुकारनसंघार॥ कबित॥ दसनिषंगकटिकसिसुदेस : दससिरष
लदारुन : नकुटिदसऊतुकन्हंग : सकललोचनअतिसारुन : दस
हसतनिकोदंड : बिषमबिजईटंकारव : धुनितबद्दरधरदुधार : अ
तिसयरनउछव : सजिसमयसिथआयुधसकल : बिषमबयररिस
उरबसीय : हितसमरमरनआनंदऊव : हरिकिटकदहदहसीय
॥१॥ दोहा॥ इष्टमनाएआपने : अरुमातापेआइ : पाइआएपाबंदि
पद : प्रेमअसीसजुपाइ॥१॥ मिलिरावनरनिवासमह : सबहनि
सोंहितसाजि : आयेबाहरिआपरह : बीरऊरूपजबाजि॥२॥ छंदप
धरी॥ मनिमयकिरीटनगमुकरमंड : दससीसछत्रबनिकनक
दंड : रथजधाजुकतधुजदंडरोप : आवरितससत्रसनाहओप :
करबाजिबसनपरजुकतकीन : नगजटितकनककिकनिन

वीन:समरमुषचढ्यौदसकंधसाजि: बनिबीरजुग्गबीरबाजि: जेरीमृ
दंगयनसंघताल·बाह्ली:नर·त्रेबककराल। रनअंगनेरिलिगर
वर: सहनासदोलगीमुषासद: हारुमयधातंमृगअंगवाद: निरधारि
विधिअनसंषिनाद: गति देसषंकसंतवसमान: बाजित्र विविधि
महिमाविधान: इत्यादिगगनगनधुनिअनेक: बाजित्रविधानकरमु
षविवेक·अष्टादसषोहनिमिलेआर: सबसुघरवजंत्रीजेसुनार
आरोहसुरथरावनअलंग: जुवकोलकमग्गअहिराजलंग: डगम
गतदिसाजहमंडोल·त्रयलोकत्रासमांनीअतोल। धंसमसति
धरापरषततनिढाह·अतिवेगपवनथकिजलअथाह:।।छंद उथो
रा।।अनचितअसगुनऐक: हाहोतअसुनअनेक: रविकिरनिमंदज
वार·बहिपवनसमुषविकार· बढिअजयसुरनसवानि: जहाँगि
रतआयुधजानि: नटहोतनयचितलंग: अरुपिसनसिंदनअंग
कुजनकगेरकुलास: बनजंतकाजविनास: भुजअर्थवेगिथथ
पतिअहितस्तोचित्रसिथ: पलचारपंषीयपुंज: गोमायुपरस्कर्पुंज
अनमितहोतअनेक: नउलजननाहिनिरेक।।दूहा।।सबैजंतकुग
तअसुन: करिकरिसबदकुलास: मनुअंतकक्कतमिलि·बा
लहेतबिनास।।१।। जोअपराधीरामको: तिहिसुनसगुननहो
इ: लोकवेदकोधरमलगि: कहतयहैसबकोइ।।२।।छंदपधरी।।
सजिचलोसैनचतुरंगसार: रजउडीगगनमिलिनौअधार: विन
निसाचक्कचक्कीवियोग: सेनारजचढिमारुतिसंजोग· धुरसंप
धनुषटंकारसूर: प्रतिअनीबजेबाजित्रपूर· हयहींसगरजगजन
रहाक: हहरहहैमरुडकनीयमाक: सन्नतयेनादमिलिएकसंग
पूरितअकासमंडलपतंग: घनअलयकारजनुगगनभार·अतिप
रीत्रासजुवओरओर· मिलिसातसिंधुमरयादमुक्ति: मग्मतिन
गहरगएनीरसुक्ति: दिगपालदिरडकगमगतकाल: रहिपवन
गवनगतिअतिअलोल: गजमत्तचलेअतिदिव्यगाजि·बसबान
मनडुवादरविराजि: विरदैतमिलेआसुरदवार: रनदुक्कअग्गु
धरुयनराह·रनचढ्योआनिरावनसरोष: दिगपानमालरतद
वरोष।।कवित्त।। दिवरामतनदिष्ट·रोषरवमारमारनदि
गफरीयदसत्तन·दिव्यतनवरनसुअंजन: अतिप्रचंडमनीय
अनेक·आयुधअलासत: पापनयानकन्नपपलितनमरक
दत्रासत: नक्कतचराचरमानितय: दीपकानअकांरा

बेसनासहितरावन॥ रावनबाच॥ परब्रह्मरूजानतरघुपतिःसी
तालछमीयहेबचनसतिःमेरेयहमतसतिमंदोदरिः मिलिहूराम
रामसरकरंमरिःसनमुषरामबानउरसहिहुःलोकदुलसपरमप
दलहिहुः अबतोप्रीथेयहेबनिआईःजोपेरहेजाइसोईजाईः
कबिरु॥ लंकापतीमरनव्रतलीनोःकामनितहामोनमुषकीनो
रुह॥ होमग्रहबिध्वंसहुवःसोंदृपतिसमबादःसुरासुरनिनरह
रसुकबिःबादोबयरबिबाद॥१॥ इतिरावनाकपरगृहहोमबिध्वं
सनो॥ कबिरु॥ दूहा॥ दिप्रबोधमंदोदरिहरसरिसरांकसराइःबा
हरिआयोबलतसोःबेगेसन्नाबनाइ॥१॥ पुत्रनतीजेसुन्तरपुतिःजे
प्ररषहितपूरःमारतबंचेजुमरकरनिःसोमिलिबेगेस्तूर॥ रावना
जेरनमारेराकसनिःहेरिहेरिहगहोरःआनिजिवायेअम्रतउनःकपि
तेमरेनकोइ॥२॥ हेसबरूरस्वामिहितःबिषमजुधकरिबीरः
असचतुरथमआपनेःसेनारहेसधीर॥४॥ तुमनिसचरबिद्यानि
पुनःकपटजुधबलकाइःकारननामजुअमरकुलःअसेकरऊउ
पाइ॥५॥ कबिरु॥ बा॥ षेचरबेसपचारिषलःरनवरबाध्योरान
होरहाहारवलंकमहःनिहसिदिसानदिसान॥६॥ छंदपधरी॥ उत
मजलमंजनकरीयअंगःपुनिकरेमंत्रबिजइप्रसंगःबिधिबरनबरन
बासनबनाइःचितरुचितबिबिधिसोरंतचढाइःसनाहकसेप्रतिअं
गसोहःउत्तरीयमूंछजोहनिअरोहःतूरंतकसनतनफूलितेषःरस
बीरबिकटब्रकुटीत्रिरेषःआरकतनयनतनकचउन्नारःसंसारमन
हूकारनसंघार॥ कबित्त॥ दसनिषंगकटिकसिसुदेस दससिरष
लहारुनःनकुटिदसहूतुवन्हग सकललोचनअतिसारुनःदस
हसतनिकोदंडःबिषमबिजईटंकारवःधुनितबड्रथरदुयारअ
तिसयरनउछव सजिसमयसिधआयुधसकल बिषमबयररिस
उरबसीयःहितसमरमरनआनंदहुवः हिकिकेटकहदहरहसीय
॥५॥ दूहा॥ इहमनाएआपनेःअरुमातापेहआइःपाईआएबंदि
पदःप्रेमअसीसजुपाइ॥१॥ मिलिरावनरनिवासमहःसबलिन
सोहितसाजिःआयोबाहरिआपरहेःबीरहूरूऊबाजि॥२॥ छंदप
धरी॥ मनिमयकिरीटनगमुकरमंडःदससीसछत्रबनिकनक
दंडःरथजघाजुकतध्वजदंडरोपःआवरितससत्रसनाहओप
करबाजिदूसनषरजुकतकीनःनगजटितकनककिकनिन

वीन:समरमुषचढ्यौदसकंधसाजि·बनिवीरजुगउवीरबाजि:नेरीमृ
दंगघनसंघताल·बाहली:क्रूर·त्रंबककराल·रनअंगनेरिलिगिर
वर·सहनाइदोलगोमुषासद:हारुमयधातमृगअंगवाद:निरधारबि
बिधित्रनसंघिनाद:प्रति देसषंडसंतवप्रमान:बाजित्र बिबिधि
महिमाबिधान:इस्यादिगगनगतधुनिअनेक:बाजित्रबिधानकरमु
षबिबेक·अष्टादसषोहनिमिलेआर:सबमुधरबजंत्रीजेसुनार:
आरोहसुरथरावनअलंग:तुवकोलकमगअहिराजलंग:रुगम
गतदिसाजहमेंरुरोल·त्रयलोकत्रासमांनीअतोल:धंसमसति
धरापरबतनिढाह·अतिबेगपवनथकिजलअथाह:।छंदउथो
रा।अनचितअसगुनऐक:इहोहोतअसुनअनेक·रविकिरनिमंदत्र
बार:बहिपवनसमुषबिकार·बढिअजयसुरनबानि:जहगि
रतआयुधजानि:नटहोतलयचितलंग:अरुषिसनसिंदनअंग
कुजतककेगेरकुतास:बनजंतकाजबिनास:भुजअग्रबेगिअय
पतिअहितस्रचित्रसिथ:पलचारपंषीयपुंज·गोमायुपरदकपुंज
अनमितहोतअनेक·नउतजतनाहिनिटेक।।ह्।।सबजंतकुग
तअसुन:करिकिरिसबदकुतास:मनुअंतककेरतमिलि·बो
लतहेतबिनास।।१।।जोअपराधीरामको·तिहिसुनसगुननहे
इ:लोकबेदकोधरमलगि:कहतयहेसबकोइ।।२।।छंदपधरी।।
सजिचलोसेनचतुरंगसार·रजउगीगगनमिलिनेअपार:बिनु
निसाचक्कचक्कीबियोग:सेनारजचलिमारुतिसंजोग:सुरसंष
धनुषटंकारसूर:प्रतिअनीबजेबाजित्रपूर·हयहीसगरजगजबं
रहाक:रहरुहेरुमरुडकनीयराक:सबसयेनादमिलिऐकसंग
पूरितअकासमंडलपतंग:घनअलयकारजनुगगनघोर·अतिप
रीत्रासतुवओरओर·मिलिसातसिंधुमरयादमुक्ति:सरसरिल
गहरगऐनीरसुक्ति:दिगपालदिरदरुगमगतडोल:रहिपवन
गवनगतिअतिअलोल:गजमत्रचलेअतिदिघ्यगाजि:बसबात
मनहुबादरबिराजि:बिरदेतमिलेअसुरदुबाह:रनदुष्टकपरजु
धरुयनराह·रनचढ्योअनिरावनसरोष:दिगपालसालरतदृ
वदोष।।कबित्त।।देवरामतनदिष्टि·रोषरवमारमाररन·दि
गफटीयदसनन·दिघ्यतनबरनसुअंजन:अतिप्रचंडसजीय
अनेक·आयुधअत्तासत:पापतयानकरूपपेषि तहामरक
टत्रासत:नक्तलचराचरमानितय:हीयकातरआकंपउ

दसबदनअरुनदारुनसह : नरआयोसंग्रामरुव ॥१॥ रावन जु
ध्यान मा॥ सोभ्रूरावनसमरसूर : करकत्रय लोकीय : गिरतसुर
सुरसत्र बिषमरनमोहिबिलोकीय : मैंकेउ कैलास केलिहि
हरजुतकीनो : कहिमानुषर्त कवन : दाहसुरपतिउरदीनो : करि
जुथसहरकरीनकपि : लांघिसिंधुआयोलरन : अबिलाषमरिक
रि ऊअबे : महगरबबादेजुमन ॥२॥ त्रीयामानताडिका : दीनद्विज
रामबिनादत : मृगमतीतमारीच : बधसुतिहिकहाकहाबल :
समतालजरुजोनि : दुहसोमृतगदहलिग : बालीसापामगबर
क हतिगरबजुतिहिलगि : कोजयोबीरतैंजुधकरि : मिथ्याअ
हमितिबहतमना॥३॥ नहा॥ कबित्त॥ रायवगदेबिरथरन : र
धनरथआरोह : देषिबिभीषननेजुचित : हैबडोउरछोह॥ बि
भीषन बाच॥ रावनषेउसचकरथ : सजेसनाहसरीर : कैसेजीत
उगेकलह : बिनाकवचरघुबीर ॥ श्रीरामबाच॥ सुनउसष
हमपहसुरथ : जगजीतहिबिलजाहि : जदपिदससिरबीसभुज
यहकेतिकबलआहि ॥१॥ कबित्त॥ ग्यान प्रबोधन॥ सरतन
धीरजसुचक्र सीलसतध्वजादृढधरि : उरपराहितकृतबल बिबे
क : क्रमजुकतबाजिकरि : छमादयासमतासंजोग : बनिरासि
जुबधीय : बिस्वरीससमरनबिस्वास : सारथरथसंधीय : संतो
षषगदानसुपरस : बिरतिचरमबुधिसकतिबस : संसारबिषयबि
जरीसहज : सुकबिकहैनरहरसुजस ॥४॥ सुनलछन मितिसुत
र : ग्यानबधवगलगजीय : बिस्वबिदित बिग्यान : सदिढकोदंडसु
सजीय : मनथिरताकनीर : नियमसमयनदमसारक : सुरगुर
नित्तपूजासप्रेम : सोईकवचसहारक : अवरनउपाइयासमञ
षिल : हैजुबिभीषनबिजयहित : इहिरथारूढनरहरसुकबि :
निगमहेतहमरहतनित ॥५॥ नहा॥ मानि बिभीषन बचनमम
सि[illegible]बिसास : अबदसकंधरदुष्टयह : निजकृतपैहैनास ॥१॥
छंद बेअषरी॥ इतरावनउतरामआगंजीय : समहरन्वदसेनयनसजीय
असुरसमूहतलकपिआये : स्वामिअग्रअतिरोषसवाये : उऊघांसेन
षराहसाई : अतिबललरनजुबरषनआई : असुरअनीगर्जियराससुआव
हि : दलपतिमनुबकदरसावहि : नपतकुंतदिनकरकरतैसे : जलदबि
तानसुरंगरगजेसे : अनलफिरदलसनमुषआये : दियजुमछयज

हरसाये: नेजा तुरंगमे य नहातानें पवनबीर अनकूल प्रमानें: बिसरि
झाऊ बाजत बाजे जैसे गगन सघन मिलि गाजे: आयुध चमकत करनि
उघारें: बिजलता चमकत बर धारें अति सुरले सुर श्री धञ्चारहि: किधुं
मयूरा मन पुकारहिं: इंद्रधनुष से धनुष जआहव: रोषसघोस होत रके
ख: पवनरोस चढि अतिछबि पावत: धीर सुनत बादर अनुधावत अ
मरचमरीछ निको आवन: सामघट उनई मनु सावन: कपिन रवर
नबरन बनि के से जलद अनेक रंग मिलि जैसे अरक निवारि निकट
दल आये: रोषारोह छोह बल छाये: सघन धार से छुटे असुर सर: रन
हैम ओमन झलग्पो कर: कपि उरलागि निकसि सरके से परवत म
न झुपनग से पैसे: धर है दरत रुधिर घन धारा: झरना अरुन धातसे झ
रा: तेष कपि नि सिर असम रितुटहिं: छरामन झ परवत पर छूटहिं
अगनि बानन सनि कसत अैसे: तूटत निछत्र गगन मगतै से: ताड
के पिरा कस मरुन तिर: असनि परत मानु गिर ऊपर: धार ङकर
रुधिर चले घन: परबत सिखर बत ज्यो पूरन: बहु सुर धाव सुनत य
ड बोलत: झरना मनु पवन झकोलत- बरषत तर पाथर लर बा
नर: कोटिन चरम असुर बाहर कर: हय हैया मान्यो हाकरव: कोतरक
पक्षी रमन ऊछव: बानर रनन बढत अबाहत: नकुयाकुदिलातदे
रत: मुदराक सथ पटकपि मारहि: पुनि अति बल मुष्टी निम हारहिं
पकरि पाय कपि राक सपटकहिं: होय चढि बीर दुहु दिसि हरकहिं
दैहि उछारि बलीगहि नत दिसि: मही पो दिशदहि कोतिक मिस: फ
रहि दररन पनि गहि फेरहिं: मुहबल चदे सुमारि निवेरहिं: रन लो
टहि मरकर के मारे: बिवस नये मानु मतवारे: छतसुष रुधिर भ
र घर छूरे: फबेक ललन मारसे फूरे: करवरि धारन्य थर काटत: बी
रमन झ घरवात निबारत: गरजि चलत बहु गोली गोले: अस्त्र अप
टहियल घुओले: सोनाहित सघम रितु सम हर: नाचत मनु मयूर
धरनिधर: चढ धायधू मरेन चढि न नचति: महा अंधार मन झरज
नी मिलि: दिसि दिसि ते परबत कपि डारत: महप्रमान राकसनि
मारत: कारत पाष छर रब्याकय: ताजि चटे गिर गगन मन झनय:
करर मम ओमास बस के रो: घाएन ओनी च स्पो घने रो: पुरि रुधि
र परिस सत्र प्रहारा: धरनि चली सरिता सत धारा ॥ छंद पधरी ॥
कपि नाल ग्रथ धर कटे कोपि: रन टकनि रतनत पाइरोपि: मरि
परे मुठ कहि मार मार: घर धस हि रुंक कर धरि उधार: फटि बी
झ बर घर फेलि जात: उर ऊत अत्तेगनु गचरन जात: बादरनि

करेनष उदरखाद: पवपानि अंत्रनिकलहि पटाद। केकान श्रोन तनकं
त कुंभ: मोन कूपमाल छुटि उत्तम मुंभ। धरधर निपरे लोरतसधी
र: बीररसरसेउ ग्लिरहि बीर: जालकपि नये जरउत्त यत्नग। ब
लरे षिरुग हितेई टेकि षग। आदबद होत कोउ अधअंग: अतिकोप
नालमरकट अजंग: करवत निकाम मनुषेन कीन: नटनयेनाग
बि बिरोमन तीन: सिरकपिन अबाकुत असुरसार: बीजजनुकर
नपरबत बिहार: कटि अंग होत उलरे कराल: षितिपाल अयमनु
नि उभ्भाल। परपानि सीस बिथुरे तमानि: जुधरंद्र जाल बकुरूप
जानि। कपि सीसनि कटप रिरीछकार: सिर रीछ देह मरकटसु
तार: बि परीत अटि षगधारबानि: अद्भुत चरित जुध नये
आनि: परि बीर षेत प्रतिमा पहार: अंग अंग धाउ आयुध अपार: उतर
हि रुधिर थित पथ अकाल: पलके अनुपरबत दरीषाल: बिपरीत षेत
नयो रत्नवान: अवनी चलि आनी अप्रमान: मिलि रुधिर सुषेन हीन्ह
समाइ: सतधार बहत सरिता सुनाइ: कपि लात मारि उपहि अकु
स: तिनकर हि षग बिबिष तास। धरगिरहि कटे मरकट सधीर:
बीरर सरसेउ गिरहि बीर: निसचार नालक पिजुध निदान: नतो
न तबक्ष्म तय हत्तयान: जयजय तिराम कहि कीस जोध: कहि जय ज
यरावन असुर क्रोध:॥ ८९॥ सहजमिले परिकर सकल: नयेच
राचर नीत: अबबरनत अद्भुत यह: रनसरित बिपरीत॥ छं
द वेअषरी॥ तहाउ नयदल बने बिकट तट: सरिता नरईस हज
रन संकट: रुधिर प्रवाह सलिल चलि राते: मजत बीर बीरर समाते
तिरतक बंधत रंग निमिलित न। जलक्रीडा से करत मृतक जन:
करी सुंड जमकरा किलोलत: दिसि दिसदालक मग सेकोलत: पा
नि कटे अंसी ह बिपावत: धारा जूथ मीन मनु धावत: सित तर चम
र फेन मरसे होत: मिलिकच उरझि सिवाल बिमोहत: गीध कंक च
कवाक हंसगन: जलमानस सेक्रीडत हृकजन: सिलास दिय मध्य प
रिसि धुर: टूटे जिहाज तिरतर थ आतुर: भ्रमनचक्र रथ भ्रमत नयोन
क: बसन तरंग रंग बहुबानक: दाहेगिरत मरत कुंजरदहि: बारिधि
रतिन ऊपरि बहि बहि: अति सबेग तिरि ऊपर आये: छत्र पत्र पुरव
निसे छाये: बिसषसकति तिन निकसि फूटि बउ: सो ईनयेम नुलयु
दीरघ जलसप। बनि चोफाउ बिबिधि दल बिकसे: निरमल कमल
कमलसे निकसे: बाहि गजदाल बिसाल बिराजित: छतरी मन कुस
रित बिच छाजत। बीर उदर फटि अंत्र बहावत: मोन कुयाहि ततमु

कलावत अत्रावलि जंबुकधरि अैचत. वेलमीनवनसीसीषेंचत जेध्याणि
रेसंषधारीजहा। तेईतरिसिव चलेसरितातहा: महासरिताचलिसमरस
गारी· तरेरुधिरगावरसरतारी. दुरुसरितातटघाइलकारे. मनऊगर्ध
जलमरतउतारे: षितपानीपानीपूलन्वरथर: तेईमनुसहसकोज्यस
रितातट: बिहरतजूथजूथबनबासी। प्रउरसेवरत्तरउवदातिरतनबि
लासरासुरसकाकेनि: हट हट हसतबीरकरि हाकनि: जलतम्रनूत
जुकुजतनथानेक: बिकटसरीरग्नेनेसेबानेक: हरषततयेसुवे
लवहसिहसि: धाषत समरबिलोकतधसिधसि: धनुषतरंगतिर
हिउगिते: मृतकबहतजलचरसेजेते: करतथाररतसुनटकर
रे: नमिणिरतनेजातरतारे: मजाफेनसेततिहिमाहि: जनुबसब
ततटनिचलिजाहि: वकुषगमृतगधरनिपरवेसे: जल२०
तरतजेसे: पत्रनरहिजोगनिवेनिहारी: तहामालाहितन्दमिवि
पुरारी: ददतकमलसमरबिविथावत: वेसिवसरितापाहन
पावने: बिहसिपिसाचीबालनचावहि: जनुकपालकरतालव
जांवहि: गहगहसुरवाभगगावति: रासहितरनचरितरिगावति।
श्रेसीनदीरामअवलोकी: तहाबिहसतहेंनाथत्रिलोकी: पलचर
त्रिसतयेनरसुरन: रामहिरेतअसीसमहारन: हतरघुपतिउतर
कसराई: दोउदलरूरनकरतुहाई: नाषतहैंहसिनागेनागे: ल
रतोसरसअवरलागे· नाजेअसुरनिमरकटताजाहि: गहचदिलर
हिसिघसोगाजहि: मारमारकहिआयुधमारत: आपआपअनुजे
तिउचारत: कालरूपकपिमारहिराकस· प्रगटदोहिरावनउरप
रहस: गरजहिबिषमतालकपिगादे: मेलहिबलराकसदलगदे
तिरेनिसाचरमरकटताला: करेपरसपरजुधकराला· राकसस
बेतिरेहितरावन: नयोमहासंग्रामनयावन: अतिबलस्वामिथ
रमउधारहि: बिजईनकपिमालबिहारहि: दहादससीसगेलि
दलआयो· दुसहमनुपरबततरसायो: मनिमयकनककिरीटबि
मोहत: सिरदससेतछत्रअतिसोहत· रथसिरधजापताकारा
जहि: बिबिधिससत्रभुजबीसबिराजहि: सोहतश्रवनकनकन
गकुंडलहि· मिलिचपरोषजरतमनुमंगल: तानतबानधनुष
टकारत: अतिदुसहबिषबचनउचारत: बिबमनौहजादिसिक
रिबिकट: मनमुरगारजातसोईमिरकंट॥ छंद उधारा हरिहर
कपिहनुमान: पुनिआरजुधजमान: दससीससोंअ

दिवीररसबलवंत: वषरअषलहिपचारि: पुनिहीयहिमुष्टिप्रहारि
रथमध्यराकसरार: तिहिगिस्योचोटबिताइ: कछुजबेबीलोकाल
सोउग्रोसुरपतिसाल: तिहिषलहिदेषितुरंत: हसिकहेतबहनु
मंत· कहिमुष्टिममथिकार: लहिजपेचेतलबार: लंकेसमुष्टि
लार: घरन्त्रम्योकपितिहिघार: छंनमात्रउगिसछोह· हनुमंत
रोषारोह: मुहचदेउगिहनुमंत: नजिषेतअसुरतुरंत।।मारुति।।
यहकसोहनुमतआप: पगमांक्रिदुष्टसपाप।।कबिरु।।उरपर
त्रासअसेस: सोईन्नाजिगोलंकेस: चितहन्र धरमबिचार: लगे
नलागेलार।। अथ अंगदबर्णोदिकजुध।।छंद हंसअषरी।।सोच
तअतिदेष्योलंकेसुर: उगेसेनारिचारितबअसुर: अगनिबर्न
अहिरोमांअतिबल: षउगरोमाबीछुकरोमाषल: धनुहिजुहारि
बोधिपोरूषपन: रोषचदेराकसआएरन: येचासोंराकसइतअ
ये: धरिउरक्रोधउतेकपिघाए: बीरबालिसुतमारुतिअतिबल
निकासिसेनतेंसुनटनीलनल: राकसचारिचारिबरबानर: आप
आपजूटेरनअवसर: अमेअन्पअहारेआयुध: जुरेबीरराकस
सनमुषजुध: ससत्रअसत्ररहउततरपापर: नरकोउमिटतन
पर्योसमरन्तर: लिरिअन्गअसुररननारे: सोईषलचास्योकपि
नसंघारे: रनकेगिरतदसाननआयो: छलबलछोहमहामद
छायो: रसतअधरदसऊमुषदारुंन: सोकयसतलोचनअतिस
रुन: रामराममुषकहतलंकेसर: अलयअनतसोदुष्टरोषपर: अ
सुरमनऊबिलोक्योअंतक: धीरजछुटेकपिनउरथकथक।।अ
थ ऐंद्र रथ आगमन।।दोहा।। रथारूढदससीसरन: बिरथ
रामबरबीर: इंद्रतहांअवलोकियह: अंतरलयोअधीर।।१।।
सुरपतिअपनोसारथी: मातुलिलयोबुलाइ: मेरोरथलेजाऊ
महि: रामचंद्रहिरघुराइ।।२।। हरितबरनजोतेहरिष: बेगपव
नजितबाजि: इंद्रधनुषन्याथाअहय: सजितकवचरथसा
जि।।३।।कलाकुलि।। रनबिजईहितदिब्यरथ: इंद्रपगयोआज
कलोजुमतुल्सजोरिकर: रामचंद्रऊमहाराज।।कबिरु।।क
रेजथाक्रमपरिक्रमन: बंदनबिबिधिबिसेस: रामचंदति
हिदिब्यरथ।।निसचयबिजयनरेस।।४।।रामन्त्यआरू

दरथ॰ तपेसेसुरराज: महउपज्यो बिसवासमन: धपेधेसुरसब: सिय
नयेसुरकाज॥२॥ छंद दैग्र परी॥ रथआरूढ रामकहरावन: देखेदुस
हदेवदुषदारुन; नयोसोचरावनउरनारी: तबराकसमाया बिस
तारी: दुसहअसुरअनीमहदेषे॰ अंरामहीरामलषनअवरेषे: दे
वाहिसत्रुसेनमहदेषत॰ बिपरितअरघुतचरित बिसेषत: रुह
केलछमनकीसनलदल॰ बित्रलिषेरहेचितचल; सेषसहत
मरकटदलसोन्चत: मनभ्रमपरेउसाससनिमोचत: योलंकेसुर
रकपरउपाया: एकहीरामनआपीमाया: देखोरामबिवसअ
पनोदल॰ बिसरीसरीननकेबछल: मायानरिकरीछनमां
ही॰ निरषेकपितहाकछवनाही: दससिरकोधनस्योअतिद
रुन: रूप्योकालकेरूपमहारन: इतरघुनाथकोकिरथआये
सजिसारंगबानसमुहाये॥ श्रीरामचंद्रजा। कबि ता। कस्यां
नासताउका॰ सबलषरबिससंघारे॰ रूपनषाश्रुततकछेदि
मायामृगमारे: करिभंजनतिहिरुधिर: कुंनयननदस्सोनघर
कलहनिसकृतकरीय॰ अगटममचापबेगिपर: दससीससब
दआभिषडुलस: सोरीपेचहतअमोघसर: बिंजनअनेकराक
सबिबिधि॰ थालदिश्यरनन्तमिथिर॥ श्रीराम बांमनुजउ॥
मिलेरामरावनसे याम॰ दारुनअतिदुरधर: सुरबिमानअं
कास॰ नासछंनछयोनिरंतर: करतान्योकोदंड॰ रामलंके
सुरमारन: बधिरहनसोबांम॰ बचनतहाकहेसकारन॰
नेजनजुदानशंमथेअनय॰ सहअअबरतीसुकर: अबन
येदृष्टिगतआपने॰ समय बिषमअवलंबसिर॥२॥ दहनन्तु
उजोचो॥ करदहन तबकहो॰ बामकछुतत निचारऊ: अ
नसमझेकरिनअकान: बकबादबधारऊ: ममनुगपद्मवमु
कत तेतोरसुतोलगअहैं॰ सुछितुटिरनमांऊ॰ नियतषलज
लनसेहैं॰ अनुअ वंनलागिपूछतेप्रगट॰ कंटकमसतकबान
करि: एकएकहनोकेधेंअषिल: एकहीबेरा बिषमअरि॥
॥३॥ इतिश्रीरामबांम दहन जुज संवादा। छंदडेअ
परी॥ धायोरावनअगनिबानयरि: काढोरामसुअगनिबां
नकरि: रहदेवतसरअसुरअन्यासो: बिसमदैवसोरामबि

न्यास्यौ: सजेससत्रजोईजोईलिकेसर: सोईसोईषिलकरतअवधेस
र: अवदससीसउपाधिउपाई: सरपाकारबानसमुदाई: स्वर
नचित्रबिषवदनमहासर: पंकतिदुसहपरतरामपर: बिषधरबा
नदसाननबरषत: हसतरामकोतुककरिहरषत: मुषतेबानअ
गनिकनमोचत: सोलागततननाहिनकोचत: बिषमयबिसष
जालरनबरष्यो: पापीकपटदसाननपरष्यो: जिततितनागसमू
हनिहारे: समयरामतिहिगरुडसंभारे: २५॥ सुपरनबानअव
धेसर: धरिगुनमुष्टिदिष्टसारंगधर: करिनचापरघुबरकृतकुं
डल: बाकुअवनलगिलैनिमहाबल: छूटेगरुडबाननलछाये:
अवधिईसचक्रुओरचलाये: गरुडाकारसरनितहागनिगनि
षाये सरपरूपसरषनिषनि: षगपतिबयरलावलगिषाये: नाग
बाननिसेषनसाये: ॥ छंदउधोर॥ रिसभस्योराकसराइ: सरचा
पकरनिसजाइ: देवेसरथयजदंड: बिजिकरेहतिसतषंड: मातुलि
हिसरइकमारि: पुनिअस्वसरनिप्रहारि: उसाधिराकसदेषि: ब
ढिपितरसोकबिसेषि: सुरराजसिधसुसंग: जयोबिबुधगन
मनसंग: जयोबिभीषनदुसुजाइ: कपिराजकेपतकाइ: जुधरा
मरावनजोर: सोजयोकपिदलसोर: दुवबीरजोप्रतिबाद: बढि
बिषमबयरबिष्याद: षलगरजितहषचार: कहिबचनसहत
बिकार॥ रावना॥ नेहहोरिपुहरहोर: कहितलासोसोकोइ: ॥ छंदहे
अबलीरावनकदिगबिजईराजा: कोयेसुरनिकेसबेअकाजा: का
रनिगरसुरनारी: मेबिनताचयलोकनिहारी: नांषतिक
नयसुषहिनसोवत: रातिदिवसदुषस्वासनिरोवत: तैमारेत्रि
सराषरदूषन: आधिकरमकरिबालिबिदूषन: बाधकबधकि
स्यो: बसहोध्यानसुपेनबिचास्यो: दुसहबेरसबहिनकोदेहो
जोपेरामजाजिनहीजेहो: मेबसपरेजलेसमअेक: हगिसबहि
नजमसादनदेक: कपिराजाकीपूंछहिकाटो: आजबिभीषन
सीतामजाच॥ इथीप्रसिधतिहारेपोरुष: मानिगरबसोईकहतअ
नुजाउपारो: कहाजलकपिमारोकिंकर: चंचलजातिबराकबनेचर
पमुष: कुतेफिरतुमदिगबिजईहित: करबालितुममहवेसेक
न: पुनिबलिद्वारगएकरिपोरुष: सुनेतहापायेतुमसबसुष: ताते

बकेप्रग्रारेतेरे शु हतोसोकपिथापरनेरे : निठुरकपिनिगहिनारिनि
गाई : बालसमयतुमकुरिसनाई : याते हमकहुलजाआवत : करहि
कहाजोतुमहीकहवत : तेई तेई रावनबिरदतिहारे : सोतोलोकअगय
हेसारे ।।८९।। अबपुरुषातनआपनो : दससिरबेगदिषाउ : इत
उतबोलनचितयहु : जरखाजिजिनजाउ ।।१।। नाहिनकनिसचर
नियत : बिधिसिवसरनबेचाह : परीआनिजबसीसपर : अबस
नमुषलखिआस ।।२।। रोषेरावनरामरन : बलबोलेबलवंड : धरकि
चराचरधरनिथसि : डिगनलगेब्रह्मंड ।।३।। कबित्त ।। इतहिराम
अवधेस : उतैरावनलंकेसुर : इतहिधरमआधार : उतैषलधर
मधर्मकर : इत द्विजबेदसहाइ : उतै द्विजबेदसदोषी : इतहि पाप
अपहार : उतैकुलपापनिपोषी : इतछत्रीयउतराकसअधम : म
हावीरसंग्राममिलि : समलोपिग्रागमनरहरसुकबि : निरषमनअ
नमनखिलि ।। श्रीराम ।। बीरबाहुरघुबीर : रोसबसबचनउ
चार्यो : यहअसाधअसुरेस बाद सोंबयरबधार्यो : षलयाक
हे चरित्रबेत बो द्विज उमूलउषारो : सोधिसोधिसंसार महाराकस
रनमारो : सुरसाधबिदितनरहरसुकबि : अबजीरनउतराइऊं : द
ससीसमूलमालाउलन : हरहिआजपहराइऊं ।।४।। कबित्त ।। सा
रथिमातुलफिरिसनारि : सुरपतिरथसाज्यौ : धजाबेबिमारुतिस
धीर : गहरेसुरगाज्यौ : कृपाद्रिष्टअनुकरी : बाजिबरबिथाबिन
सीय : सुरसुरसेंदरिसोच : सियबिस्वासप्रकासीय : जानकीत
थककुसथजय : जयतिरामभजिनवनजरी : संग्रामसमयनरह
रसुकबि : यआकासनाषानरी ।।५।। इंद्रधनुषआकरषि : चाहि
करबानचलायौ : कारिसीसलंकेस : अकुटिराममहिकरआयौ
ऐकोतरसतबार : नवजुषलमूंडनसाऐ : अलहयत्तयेअनेकवा
र : आकासहिछाये : सध्यानरातिसूकेदिवस : परीत्रासससत्रन
परे : दिगमूढकहतकपिनालदल : हाहातुमरहकहरो ।।६।। करे
सीसदसकंध : अबिलनत्तमंडलछाये : उडिअसंषिसिरअसुर
उसरषलचरितदिषाये : हाहननन्तमूलगिडुरंत : नसिरहेनय
नक रुधिरअवतरवमारमार : यहहोतअचंबक : अतित्रासप
त्योकपिनालउर : असंभ्वरतिअसुरेसके : कोपिनमनुआऐर
हकुल : कुतसहारलंकेसको ।।७।। छंदपधरी ।। ओओसिरउप

जब असुर जोर : हरिसो सीं काटत हगहि होर : रहि क्रीडा लागे अवधि
रीस : सो ईचरन करे आकास सीस : रहि गाति बढत पल सिर अपार :
बिषीया नित्त जत ज्यों चित बिकार : नव होत नम सत कबु थिरे संग स
बमन कुअ बिद्या दुष्ट संग : कौतुक यह देषत तालकीस : सहस कर
अंतरित नये सीस : अन सहन गगन मिलि अंधकार : बलबद्रो अ
सुर माया बिचार : तिहि मों रुधुर नर धूर बिउदोत : थकि बात बाल
ज्यों कुहर होत : षलपै गिजालन मन न अषेष : तालकपि लहतू तिहि
नाहि नेह : देषैन बीर तिहि दुष्टदेह : सो रहे थकित चित पर सिद्द ह
पापीसु करे सिर पर प्रहार : कपि नये बिवस बस अंधकार : केइक
अदस्प तौ चहि अकास : तहा लि भौ राम कपि दल सत्रास ॥ छंद ६
अपरी ॥ राम कहा लछमन कपिराजा : मार मार कहि म्रूरुस माजा :
धुनिय हा सिर मरक्कट दिसि धावहि : पग निरह हिते कीस पल बेहि :
देव दुचित मरक सत रदेषे : बीरम्नु बिसमय बसीहि बिसेषे : तहा मे
षे सास्क कुल रघुपति : हाते करे म्रूरनन्त हति हति : म्रूक परे तेज
ल नि थिमाही : षौजिषौ जिजल चर सब षांही : कछु ले म्रूरु माल
सिव कीनें : लहि समर सो बी निजु लीनें : निसचर माया कपट बिन
से : प्रगट जोति दिवसे स प्रकासे : दससिर तबै बिनीषन देषे :
बाज षुलत चषल बा बिसेष्षे : धरि कर सकति त्रात पर धाये :
रहा रघुनाथ बीच चलि आये : जा को पन निगमागम जांनें : पंज
र बिजय जु मरन प्रमानें : दुष्ट बिनीषन सनमुष ठारी : असहत्र
मोय सांगि अनियारी : सांगि लगी रघुनाथ उर आई : ओ ठिलई बिन
कीसी नाई : रहा राम कह सुर छाआवत : देव मनुज सो ताव दिषाव
त : को प्यो तहा बिनीषन राकस : प्रगट बिष्पाद बाद उर परहसे : क
हन लग्यो बस क्रोध कराला : बचन बिषम बिषमुष सब्बाला :
बिनीषन उा अरे अनागे अबुध अमारी : चित आई सु अनीति
चलाई : सुर नर नाग जु साध सताये : प्रभु त्रिलोकपति चीन्ह न पा
ये : दुष्ट ब्रह्म हित सीस जु दीनें : कृपा करी तिहि ज्यों हृदय कीनें : सि
र तैका हि हा मकृत साजे : येक ऐक के कोटि पाजे : याही गरब न
ये तुम आंधे : सम जे पेच षबबी सक सांधे : अजहु ताहि न देषत अ
सुर : आंनि कालन आं सिर ऊपर : जो सिव बिधि ऊ प्रभु कहि जि
न्यो : पापी सो तैं नाहि पिछांन्यो : जगत सबै तैं बिधि बरजी सौ : अ

बतोरावनसुपेग्रकीसो॥कबि रू॥ निरतसुजामोजेगेनाईवि
तरिसरो किनगराचलाई॥ रांव ना॥ रहाकारसेवासत्रुकी:कर
तछाडिकुलक्रोध:मुहकीनेफिरिग्रानिमुह: पापीरतग्रबोध॥१॥
कुलरोहीकातरकुबुधि:रूनहीमारततोहि: कोरतजोनथमी
चके:मुषनदिषावउमोहि॥छंद पधरी॥ग्रतिक्रतक्रोधग्रा
तमग्रनीत:करकककुजेनिताममकुचीत:उनिकरतबानवरष
ग्रपार:मरकटग्रहारमुषमारमार:रनरोछसुनरहलकारिराम
मरकटनिसुरोक्योगेमगेम:उपराजिकपरमायाग्रनूत:ततछ
नतोग्रतरध्यानधूत:रहाजयेग्रदिष्टिषतरूपग्रेक:ग्रायेसुदु
ष्टरूपनिग्रनेक:ऐकतेनऐरावनग्रपार:करवीसबीसदसासि
रकुचार॥छंद हेग्रपरी॥रनकपिनालनालतिनरोके:वीरबी
रदिसिदिसनिबिलोके:बिकलकीसदलकछूनबूझे:सबदि
सिरावनरावनसूझे:ग्रहमग्रष्टिमनुगरईबिलाई:यहरावनम
यनवबनिग्राई:नालकीसजितहीतितजात:रावनरूपरोकिगत
गजत:घोररूपराकसकीयघेरा:बिहवलभएग्रमरतिहिबेरा
थरेससत्रषलकोटिनधावहिं:पेककपिकउग्रवकासनपावहि
कपिरू॥ सुरकपिनालसरूपपरीसक:करतग्रसायिऐकहे
करक:पापीतिहिसबदेवपजाऐ:ग्रबतेदुष्टइतेकैग्राये:निस
चरयापरउबरननाही:जुधछाडिगिरकेंदरजाही:नयेनेचकि
तकीसदलनाला:देवग्रहिग्रबरामदयाला:दिनकरकुलमं
डनजनदेषे:बानरनालसजीतबिसेषे:रनबानररयुनाथपचा
रे:ग्रतिबलपोरुषबचनउचारे:जेरघुराजप्रतापहिजानें:सो
निरनयनरनिरतसबाने: हनुमतंग्रंगदनिजेनीलनल:बि
सरिलरतलगिगगनमहाबल:बीरग्रमितरघुबीरबिलोके:
राकसमारिसरबितहरोके:रामबानदुसहग्रनियारे:मायारू
पदसाननमारे:गये बिलाइकपटकेरावन:रह्योऐकउव
नक्रनयोवन:प्रभुसबमायारूपबिनासे:ग्रोरबिउदयति
मलतमनासे:रावनऐकरहोरनरोप्यो:देवसमाजगगन
थरकैप्यो॥रावना॥निरतदेवमेसबेतजाऐ:ग्रबनिरलज
साजिरथग्राऐ:ग्रमरपुगनिरहीयोंलग्रायो:थ

...नधायेण॥ कविक॥ जयकरिअमरगगनरथगाजत :गरुच
टिपीगिदसाननगाजत :अंगदअमरलषेजवआतुर :कृद्योपयअंस
नयेकर :कपिगहिचरनपछास्योकेरक :अवनिगिस्योज्योमास्यो
अतक : रहारावनकहमुरछाआई :प्रगटजैतिअंगदकपिपाई
दसऐकमहवेसोहाहन :हरसन्नारिउभ्रोचषसाहन॥ छंदतु
धीर॥ रनउभेरावनराइ :धरिस्लदसकरधाइ :रथरामचंदतु
रंग :सोहयेस्लनिसंग :सरतीसधनुसंधान :नरनाथमुकिन
हान :संघरेतिनदससीस :बिछेदिसिरकरबीस :सिरतुजाक
रिरकसंग :ऐरीहोतनवूतनअंग :तुजसीसकरितथाते :सो
ईचहेउठिअसमान :दिसिबिदिसगगनदिगंत.नेरिहेहरिअने
त :सिरराहमनुकरकेत :ऊवक्रोधनिग्रहहेत :रविराहबयरबि
राम :रविबेसराजाराम :सोईआदिबेरसनारि :मिलिजूपगग
नमेहारि : नवराहकेतसुनाइ :रहराममधेरंआइ :सरअनलत
वअवधेस :बसक्रोधमुक्तिबिसेस :जिहिजरेमायाजाल :कर
असुरजूथकपाल॥ छंदपधरी॥ दससीसबिभीषनसमर
देषि :बसबयरअसुरथायोबिसेषि :यहबीचबीरहनुमंतआ
इ :रोक्योचढिहाथेलंकराइ :उरदईलातउप्योअकास :तिहि
पकरिपूंछधरपटकितास :छोडेनपूछरावनसछोह :हुवसेतप
रसपरहावक्रोह :कपिलीयेपलहिकूद्योअकास :तहाचलेसोप्र
लेबितअसुरतास :तनदिष्यदसाननकरतनाक :हनुमतक
रीरहबीरहाक :कपिफिस्योगगनहनुमानकूद्य :जाजुलनये
उववाऊजुध :पुनिकरतलातथापटप्रहार :अघातबज्रमुष्टिक
मार :संग्राममहन्नसमरोषसंग :अमुरकपिजूटतजुधअनंग॥
वबीरकरतननक्रोहहाव :निरघातपातबाजहिनिहउ :अतरिष
उधअंहसुतअनंत :कलिलगीकनकगिरमनुकलिंद :तिनदेषि
मरउरपरीत्रास :सोईरथनिललेनाजेअकास :हाकरेदउ
रुतिअनेक :नउगिस्योनरावनगहिटेक :रघुबीरदेषिकोतुक
ाल :सरहन्योदसाननअमरसाल :तिहियारतयोरावनअ
त :षलपरेन्यमिसंग्रामषेत :केटकगतमुरछाउगेकोपि,
राइमरननटपाउरोपि॥ छंद दोधकरी॥ अमरबिमाननिअ
छाये :केटकतिनहिदेषिअकुलाये : दो न निरेजहभि

सोतुमन्तणे: अबसोईममकोतुकअनुरागे: तोसुरराजबदोब
लतोही: मोक्तिपावआवनदैमोही॥कबित्त॥कहियेंबद्रोणग
नमगकेटक: थरकेउरसुरपतिकोधकधक: अगदरूदिक
अवलोके: सबनजेरथहोकिससोके: स्तरहाजुवराजसन
स्यो' पकरिपाइदससीसपछास्यो: देउरलातकूदिगेअनक
उछअचेतनयोतबुरमद: इहांदसाननउग्रोअतुर: अति
हिबिसनोरोषजरतउर: गहरेसुरगरज्योरनगदो: गेरगे
रथेस्योघलगदो: तहांदसधनुषदससऊतुजनतानत: मरकटद
लत्रिनमात्रप्रमानत: महासुभटदसदससरमारे: उसहनि
कसितेअंगउसारे: आयुधबीसऊकरनिअबाऊत: चऊदिसि
निकुटिलजिगचाहत: जोईमुहचटेताहिषलमारे: पकरिलु
लकपिधरनिपछारे: असुरपानिगहिगगनउडावे: धसेहस
रनबजरेधावे' मुसलकपीसपरिघनलमास्यो: पटिसनील
सरोषप्रहास्यो: जामवंतअसितोमरमारुति: परसमुषनकु
तकेसरिहति: सूलंगवाषिहिगदाबिभीषन: मुदगरादिबिद
कुमदनेजातन: तारकुगराविरुपालगज: बिटपगवयजुव
राजसिलासज: दधिमुषचक्रसस्तहनिअंकुस: सेषसकति
हतकस्योजगतजस: बीरकछुककरपत्रबिनासे: इमादिक
सबसस्त्रअस्नासे: श्रीरघुनाथहिमारितीनसर: इहगर
जतमहोदनआसुर: घायलभयोसबनिकपिघेर्यो: मरेन
मास्योफिरेनफेस्यो॥२१॥ कार्टनबलकेकोपकरि' बा
ढिरामसरचाप: सोसोहोतअनेकतह' जोपुरबसमनपाप
॥१॥ उसहतहारघुनाथदल' धाये सुभटसधीर: मरेनकरस
रकरतऊ: बिहसिलरतरनबीर॥२॥ छंद॥ इहासुग्री
वजुअंगदआए' धसिनलनीलहुबिदिबलधाये: हनुमत
आयेऐकदसमहर: बीरअनेकनालनटबानर: महाबृष्टि
परबतसिरमारहि: पुनिदृतनिनषदेहबिदारहि: कूदिज
हिदैलातअचानक: करमेलतगहिबेकहकटक: करनच

तेक पितामह येकर : सो गिरिकीग बिहारत बनचर : चढे सीस नल नी
ल बनेचर : दांत निपातक पाल नहीरु : दससिर कोपक स्यो त हा हासन
कपि नि बिकारि कीरे रनक नकन : नये नाल कपि धारत तारी : न इति
सा सम हरनय कारी : निसात मीनि मनचर मन मानी : जननी सि जुस ह
रुकजानी : इहानि सिसमय रीछपति आयो : स्याम बरन दल लीये स
वायो : धरि मारुति काटत धर धावत : कारे या की द्रिष्ट न आवत : ह
लंगो राकस रन हटकत : पावत ताहि न भिराहि पटकत : जामवंत ज
औरन जोधा : कालसरूप जु आयो क्रोधा : कूदि लात उर मास्यो केरुक
औसो हन्यो बज्र मनु अंतक : रत दसकुमुष सोनी धारा : परबत जे
सै इन्द्र प्रहारा : रथ पस्यो मुरछा गत रावन : पस्यो अचेतन असुर अपा
वन : घेरि रहे राकस सतु धारल : हाहा करत नये सब हाहल : जब राव
न हि अचेतन जान्यो : इहा रथ हाँकि लै क म अन्यो : ॥ इहाँ काटे राय
व सीस कर : पल जीवत तउ बेत : निसि रावन सब सेपकनि : आनि मैषि
अस्व हेत॥१॥ अथ सीता त्रिजटा संबाद॥ त्रिजटा॥ अरथ निसा त्रि
जटा असुरि : इहा सीता पह आर : समर हर की बातें सनय : सो सब क
ही सुनार ॥ सीता उर कारे तासिर भुज सरनि कर : पुनि पुनि होत अ
पार : हा त्रिजटे कहि है कहा : क्योंय हमरे कुचारा॥३॥ राम बान कन
हीं रत : सिरकर कटे असेष : आहि कछु बिपरीत यह : बिधि कृत
जननि बिसेष॥४॥ येते कहु षम हमरे : मोहि जिवावत मात :
देषो बिधि रचना तुस है : धार बचत षल यात॥५॥ छंद घोरा
जिहि कनक मय मृग कीन : दिनु हरु बुधि मुहि दीन : कहि बिच
न कटु कराल : लगि हीये लछमन लाल : मोहि त्रिजग के ली
मात : जो नयो रछक जात : जब करम फल मम भोग : बिधि
दये राम बियोग : उपराजि जिहि कृत एव : सोई देत दुष बिधि
देव : येकरे चरित अनूप : सब नयो तारस रूप॥ त्रिजटा॥
सिधांत मम सुनि सीत : पुत्री स बचन प्रतीत : सठ हृदय तिहि
तव बास : तब राम तुव उरवास : जिहि राम उदर त्रिलोक : बहु
अषिल थिरचर ओक : तिहि हीतनन हीउर ताहि : यह हृदस्ताव
जु आहि : बिनु छेद उर बहु बान : इहि हेत राम सुजान : सर उर
न हनत असत : रघुबीर करि रन रोष : जब मन होसा रुक को

प:अतिअंगरहिबिलपाप:अवधेसकारहिआप:यहमहापीऊपाइ:
सगहोइबिकलसुनाइ:चढिलोहछाकअचेत:पलहोइजबरनुषेत:
निसचारतजितवखान:धुनिहोइपरबसप्रान:जोबिसरिहैतौकहजाइ:
रनमारिहैरघुराइ:नवकरहिअवउरनेह:छनहोइरत्रिउवनछेद:
गुधहननतनहीयहजानि:प्रभुबिस्वपालप्रमानि:यहजोरत्रिजटि
बताइ:नयेसीयहिसातिकुताइ:नईरामबिरहनयानि:सोनि
साकलपसमान:सतिरथहिनिंदतसोइ:हापातकवधोहोइ:बिधि
करमदेषितुरंत:इहासीयाईछीयअंत:॥२६॥कठिनकालबेदे
हिके:मिलिफुरकेअंगबांम:सगुनबिचारतआपसुन:सषीमि
लिहियनस्याम॥१॥कबित॥ छंद पधरी॥ इहांनयोपातनम
चरप्रकार:उडुनिनिसांनबजिद्वारद्वार:सुनिसोरजगोरावनअसाध:
बिपरीतधरमकृतधमबाध:धुनिदेषिकनकमंदिरप्रकार:रिसहननतथ
रनिकरबारबार॥रावनवाचारनषेतछरायोहिराति:धिकारते
हिकातरकुजाति॥कबित॥ रथसाजिबकुरिषललंकराइ:अति
बेगहांकिरनअसिगाइ:दलनालअबलभरकरतुगांम:मेऊलभ
हसानुजदेषिराम:इहांतुइरवीमायातुरंत:निहछुनत्तेअंतरग
तितुरंत:रनकस्योकपरमायाबिधार:पाषंडबंडुसहसकार:
बेतालभूतबेचरनयान:आकृतअनेकतनआनआन:बिनुसं
ष्याजेतपिसाचबीर:स्वरबिषमबचनबेकृतसरीर:करजोगनि
लेबितनरकपाल:बिकरालरुधिरश्रवदिष्यबाल:परिपूरिप
त्रकरिश्रोनपांन:गहगहेकंठबिपरीतगान:तनिमारमारबा
नीकुलास:यहसबदपूरिधरनीअकास:बेचरीधसहिमुषबा
इपांन:परित्रासरीछबांनरपलांन:नटकीसजाहिजिहिदिसा
ताँ:।आगेतहांदेषेजरतआगि:कृतष्टष्टिरूपजोगनिकराल
थासिंघोहिबोलहिकुटाल:रजरष्टकरहिकचरुधिरराष:नयका
रगगनबांनीकुलाष:बिकरालचहिंतकपिनालबीर:ग्रहदेषिन
येअंतरअधीर:पाषंडअनरइकरचेपाप:आकृतअमानहनुमा
नआप:इहिरूपनिसाचरनिकरआइ:लांगूलतपेरामराइ:
२॥मंदराचलमथानहित:जनुआवतअहिराज:सोहतग
टेतिहिसमय:रनमहराघवराज॥१॥कस्योबिचारजुबसक
रि:निग्रहनिस्चरनीच:रामहिअवउचकारन:

गरबीच्च॥ २॥ जाम्बोराघवअसुरजब: मायतन हनुमान। तिल तिलकार
पूंछ तब: बीरहन्योंउरबांन॥॥१॥ पुनिछलमायाअवधिपति: ज्वा
मुषसरजालि: कपटनसायोअसुरको: मारेउष्टसुरारि॥ कबित्ता॥ क
खसिरकटेलंकेस: नहिनतउमरतनिसाचर: बारबारछेदेबिचारि
उपजेअगअग्रासुर: रनहीउरघुनाथ: करतअगजगनयकारी। सुर
सुरेसउरासिय: नयोनहात्रासजुत्तारी: बिषीयाह्किसेवितनिर
बिसन: चहतकामबोंकोमबस: आसुरीकपटमायाअगम: मों
सोंउपजतअगतस॥१॥ छंदछेअषरी॥ सुरनिसचिंतंजगतपतिजा
नें: प्रभुरनषेलनिवरतप्रमानें: जनकीरामप्रतीछाजोई: हसेबि
बीषनसनमुषहोई॥ बिभीषन उ॥ सुनकृमंत्रइकत्रिभुवनस्वामी:
जगतचराचरअंतरजामी: जानिबिभीषनजुगकरजोरे: मरमद
सोंन नसुनिप्रभुमोरे: नाभिकुंडलीअमृतनिरंतर: याकोजीवब
सततांअंतर: अमृतप्रभावनमरतअनागो: लरतकटेसिरअ
बरलांगो: करतबानधारामसतककर: अगअगसबिउपजि
त्योंआसुर: मारऊजीवमरमतोमरिहैं: करकचरितबिबिधिय
हकरिहैं॥ कबित्त॥ निसचरहतनरामपनकीनो: नानाअसगु
नहोहिनवीनों: करहिसबदसवनूतकराला: स्वानबिनाषरस्वा
नअगाला: परबबिनांउपरागप्रमानें: अरकसोमकहैसंकस्रानें:
दीसतराहकेतप्रतिमांहिन: उलकापातगगनतारागन: धरनिकंपदि
गदाहसधूमर: पुनिनिरघातपातपुहमीपर: प्रतिमाचलजलनय
नपमुकाहि: कुथलअकालनबीषगकुकहि: बरषाकेसरुधिरर
जबादर: अतिबिपरीतिमरुतचलिआतुर: महासोकउरकंप
मदोदरि: प्रगटअकारनतनन्नूषनपरि: इनहिंआदिअनमितअ
पारा: बरतनन्नूनत्तबिबिधिबिकारा॥ दे॥ बाच॥ दूहा॥ अब
लोकतअनमितये: अमरसिधअकुलाइ: कहतसुधोकोहैकै
हा: हरघुनाथसहाइ॥१॥ कबित्त॥ कतरघुबरदकुटीकुटिल
तोषबदनचषरत: अवलोकेराकसअषिल: प्रलयकालसा
नत्त॥ छंदछेअषरी॥ इतबानररघुपतिकरआयो: पारसमय
ातुलिपुहचायो: ब्रह्मदत्तसुरपतिहिसकारन: उसहस्वस
ेबिषधरसोदारन: महाप्रमानसरीरगगनमय: तेजअरकप
कमिलिफलतय: मंदरमेरसगोरवमांन्यों: पवनउरदिसि

सजव्रप्रमान्यो। लोकपाल जिहिपवनप्रकासित
असासित: लोकलोकत्रय निबलनसावन: तनजांगुलिअरक
रपावन: सोप्रभु बेदमंत्रविधिसाध्यो: परमप्रसिधदिब्यस
ध्यो॥ २२॥ जातिसरासनमुक्तिहां: अगनिबानअवधेस: नाति
कुंरु निसचारके: सोभ्योअमृतंअसेस॥१॥ सरपावकजासोसु
धा: जीवजसोतिहिजोग: त्रैलोकीकंटकतहां: रावनमस्योअरे
गा॥२॥ छंद हे ग्रै मरी॥ जबहतप्रानदसाननजान्यो: तहारघुना
थवहेसरतान्यो: छोड्यो बानतयानकतिहि छिन: दुष्टरुकरि
कादिदसानन: परमप्रसिधबानजयपावत: असुरबिनासिअ
गफिरिआवत: करासिरकंठअसेप्रभुकंटक: असहरुधावतज्यो
अंतक: धरउरचादिसुकपिनधकोवत: परिकंपरमुरदतसुष
पावत: मूठकरेतउदुष्टनमररे: कंटकचरितअनेकसुकररी
हरुमाउरवहोतयहेरर: मारिमारि धरिधरिनिरमरकर: कह
रामसुग्रीव बिभीषन: अबलप्रचारतफिरतकीयेपन: दुष्टचरित्र
उसहयहदेख्यो: अमरासिधअतिनयअवरेख्यो: ज्पटिकबंधकर
करुकरोलत: ठकेरनतहांदसासनडोलत॥ जोदिकबाच॥ सेव
अमरगनप्रभुहिसुनावत: छितिपतिकहांपिसाचमिलावत: ना
थहमारोत्रासनिवारो: महादुष्टअबतोरनमारो॥ कवित्त॥ स
नयसुरेसजबेप्रभुजान्यो: अरधचंद्रमुषतबसरतान्यो: कुरु
लधनुषरामतहांकीनो: दिब्यबानसावनतनदीनो: मध्यलग्यो
ससिबानमहाबल: षंडउत्रयक्षेपस्योमहाबल: ज्योंनीहाउपरत
बलब्याकुल: तहाधनिधसक्योधरनीतल: डिगतकुलाचलन
नरुगरोलत: बिकलचराचरहांहांबोलत: इहाकपिराजरीछ
पतिआये: प्रभुप्रतापसेवाफलपाये: मस्योलोकपतिनाचतम
कर: नयोहरषअतिबिहसिचालत्तर। धायेकपिबलसीसक
रनिधरि: आरेलेआगनमंदोदरि: पेषित्रीयनितहांबिसमयपा
ये: देवचरितयहबिषमदिषाये॥ कवित्त॥ २३॥ रावनबपु
आनि: प्रजासतअरकप्रकासीय: सोदेषतदिब्यदेव: प्रगटअ
तिदेवप्रजासीय: जोतिरामअंगहजाइ: परमसोईबिगतिपाई।
नावएकइहांतयो: जानिकछुनेदनजाई: अदभूतरूपाकार
नअतुल: तबसोचतनवनूतनहां: संभितबिनासराकनअ
सुर: मेतिलयोप्रभुआपमहां॥ छंद बेग्रमरी॥ देव

उउत्तीरीनी: नज अरषा कुसम निकी कीनी: बिबुध होत जयजय
नवानी: घुरिरही ब्रह्मरूप्रमानी: सुरसंतुष्ट नयेमुनि सिधा: प्र
नुक हिचारनसुजसप्रसिधा: गहगह किंनरगंधरबगावहि: सु
रकन्या नित्य हीसुषपावहि: ॥ छंद ३७॥ इंद्रादिक आतहोक
हत सुरगनसिध: प्रभु सुनरूप नित प्रसिध: यह दुसह बलदु
साधि: प्रतिदिवसरचत उपाधि: दुरमति दुरात्म दुष्ट: पुनिपा
पकरम संपुष्ट: सुरसाधसातिकसिध: प्रभु रूप पात्र प्रसिध:
नवत्रमत हमजुसनीत: तेसंहतदु ष्ट अनचीत: दससीसयरू
दुरबोध: कृतघात कुटिलसक्रोध: द्विजहतक तामस देह: ह
गिलगनपरत्रीयनेह: कंटक त्रिलोककुचेत: संसार द्वेषसहेत:
नवरूतरेषतरूप: सोनथी नवसारूप: मिलिजो तिजोतिसमा
इ: ज्योंदीपदीपहिजाइ ॥ कबित्त ॥ इहिसमयनारदआइ: सोके
हत सुरनिसुनाइ ॥ ना० दा० ॥ यह दैवकरम दुरंत: तुमसोनजा
न्योतंत: सबदेवतुमरूसुजान: निजसुनरूनिगमनिदान: द
ससीसकीनों दोष: रघुनाथसोंच हिरोष: नवबढ्यो बेर बिरोध:
नहीसुन्यो पतितप्रबोध: नयेतथा द्वेषप्रभाव: रहि कृतदयकोस
लराव: तिहिराममयनवरूत: अवलों किबिग्रहहूत: जाग
रतस्वपनसुखाइ: रहिचित्त राघवराइ: बिसेसबयरबिचारि:
मिलिरहोचितमुरारि: रनहतोसोरघुबीर: संगरहे पापसरी
र: अबिनासजोतिअनंत: तननासस्त्रूचतसंत: महजोतिजो
तिसमाइ: निसेषकरमनसाइ॥ कबित्त ॥ पापरतपरदार: पतित
परबित्रपहारीय: नयसनेहकिरूनाय: भरेउरसारंगधारी
य: सोक्षेत्रे तरसुध: पापसतजनमपहारे: साधुयहेसिधात
अचितमतबेरउचारे: सुरसिधसबेनरहरसुकबि: निदंतकर
मनसाइहैं: पुहपकबिमानबरषतपुहप: सुपेपरमपदपाइहैं:
॥१॥ मिलिसजेगमे थलीय: मिसोअवजोगमदोदरि: इकहा
रश्रेगार: इकहारावलिउत्तरि: इकबलयकरबनीय: इक
बलयाबालिकुरीय: इकहिरतिअभिलाष: इकअभिलाष
अरूरीय: नयरस्योरूमित्रिनवनअनय: नारअसुरकुल
कहेनयो: सुरसिधहरषनरहरसुकबि: हम्निरामरावन

हयो॥२॥ सिरजुसंतुकहूं नये अवरसुररहेअनामित: कोटिकोटि
निजकरनि हवनकीनेबिरंचिहित: अगनिकुंडमहआप:जथा
मंगलफलजारे: बरषसहसदसतपबिधान: अतिकष्टअथा
रे: सुरराजअजयनरहरसुकबि: समहरत्रिपुअमोघसर: टयौ
प्रसिथपोलसतिके: कटेसुसिररघुनाथकर॥३॥ नरआकृत
त्रैलोकनाथ: कौसल्यानंदन: वेदप्राणितपितवचन: विषम
सेयोदंडकबंन: सेतबंधिमरकटसमूह: लंकागढलीयं:
सुरनिसोचत्यहबंधमोच: अवनीनरत्नगीय: सुरराजकाजन
रहरसुकबि: भुवनतीनउछवत्तये: देवाधिदेवदससीसके
दससिरदसदिसिबलिदयो॥४॥ जिहिरसचीउसास: सरि
तआकासजुसुकीय: जिहिरहरिदिगदेव: महासुषनिद्रमु
कीय: जिहिरत्रयपुरनरनि रहतसेवाठिगठकीय: जिह
रमुनिगनसुरबिधान चितताली चुकीय: जिहिरनिकं
लिब्रहमेरुठिगि: अमरवृंदमदउतरे: सोईरावनसोवत
समरसुष भूमिसेजमुषरजभरे॥५॥ भयेअमरआनंदअ
मरपुरबजेबधाये: भयेजगपआरंभ भयेबिप्रनिमनभाए:
भयेरघुकुलसोभाग: महीनरटरित्रमभांनो: चोराकसकुलभंग: भया
गदलंकभंगांनो: बिसतारथरमत्वोबेदबिधि: अरुननरहरकविउयर
न: करनयेबानरनरामके रानजैतिरावनमरन॥६॥ परिपुकारसह
अहअपार आतंकलंकपरि: परेसनररराकसभ्रचंड: आतमवलउप
रि परेमतमातंग: परेहयपुंजसपषर: परेतालिनठभूतय: वीरर
नबिजईबानर: पुरतीनचाटत नभीतानपरि: सोकुष्टउरसर्बवरीय:
ककुसथबिजयनरहरसुकबि: पानिरामरावनपरीय॥७॥ सु
वैयाभ अथमसांधउथास्योतेसोहीकवधुतास्यो अमरजेजे
उचास्यो बिजैरघुबरकौ: उदतोनएतीजानो आगेजगदेवाओ
नी: भूजेधरानन्जाउथानी उरथरकौ: आगेनरेस्याआए तन
कपिलेसहाये: वेदनिबतायेज्योनरासोसुजवरको: प्रभुवाहि
भूपेपायो: ताकतऊतौबितायो कत्वहिबितायेफेयरदेवकिव
रको॥८॥ उदृदेनपर क दे दवचः इस्ताणिटक्कानस्त्रा
ऐ: सवनिदसानन मरनसुनये: इत्मनतेसुनिपरानिः

अवनिपरीमुरछितअकुलानी॰ हाहाअहअहतेजुवतीआई: अतिअचे
तनमयसुताउगई: निकरनिकरआईपुरनारी॰ पुनिरोवतिअतिदुषि
तपुकारी: राजलोकआयोतहारोवत: सम्पारनरावनजहासोवत
पतिगतिदेषित्रीयाअकुलावति: सोकसमुद्रहिपारनपावति॰
मंदोदरीउवाच॥ रोवतिकहतिमंदोदरिरानी: बिगलतकेसबि
कलबिलषानी: सिरउरतोरतिमनमनसेच्वति: मुषनिस्वा
सनयनजलमेच्वति: कंतमहाबलयहगतिकैसी: अबलौं
होतनजानीऐसी: अरकनिसाकरतुवतपआगें: लोकबि
लोकिहीनसेलागें: दसदिगपालद्वारतवडोलत: बाहरि
ठेउचनबोलत: सुरगनकरतजथाक्रमसेवा: दीनसत्रास
रहेन्द्रदेवा॰ अमरसमरनहीसनमुषआवत: त्रीयतेहिआप
सुनतपलावत: कालजीतिजिहिअपबसकीनो: दुसहदोह
पलोकनिदीनो: काराग्रहसेवतग्रहकातर: तुवगकमग्न
हीसहतकोलत्तर: धसकतिकंपतअयन्तरथरनी: करीसक
लमदबससोकरनी॰ सोप्रभुतुमधरनीतलसोवत: जाकीछ
पाद्रिष्टजगजोवत: पतिअदृष्टयहनीतिपुकारा: रहानकुल
कोउरोवनहारा: रघुपतिबयरउचितयहरावन: पिठयसी
ततेअपावन: स्वानआगलसिवामिलिसंगहि: ऐसतषातअघात
सुअंगहि: बचननीतिजेकहेबभीषन: षारेलगेतुमहिकुलदूषन
स्वयंब्रहमचवन्नतसपेष्यो॰ देवसुतेमानुषकरिदेष्यौ: त्रीयताके
यहफलतुमपायो॰ गहसमेतकुलमूलगमायो॰ अतिहिगरबयहअ
कोआयो॰ पुनिगदराजबिनीषनपायो॰ सरपतिथिकहीकाजेसीत
बिधबाकरीरतीबरजिनता: बामंगानीचारिबिरानी: राजकरीअप
नीसहरांनी: इनकेन्दुषनबिबिधिउतारे: सीताअंगसिंगारसवारे॰
पीयथ्याईकारफलपायो: रिपुलसतिकोबसनसेयो: धनमह
ततबनमेदिरषेयो: सोतुमसमरन्तमिसुषसोयो: अहमआदिसुर
जिहिसिरनावत: पतितजनततेउगतिपावत॥ दोहा॥ पापउपासे
जनमप्रति: रहाकोकहेगनाइ: सोहरिदीनोपरमपद: ऐसेरायव
रा॥१॥ सुनतसुरासुररामसम: हैदयालकोउनाहि: जेगतिदुर
लभजोगने: मारिदिरीछनमाहि॥२॥ सबतुमकीनीरामसों: सो
जानीसंसार: उनतुमसोऐसीकरी: ऐसेरामउदार॥ मंदोत्र

बलता।कवित्त॥ गढत्रिकूटपरिषापयोदि स्वामीदसकंधर: आ
तकुंभयननादपुत्र बिभेसबिभ्रयर: सुभटबलीराकससमूह आ
ग्याआधीनें: दहित्रिलोकआहिसुरअरेव कतउ:करकीनें:सजीव
नमुषबिद्यासुगम सुकगुरजुसाधतसमै: हाहासुकालमहिमाअ
कल: तवसोईरावननभूलो॥१॥ जिहिकैलाससंभु पालिधरि
कउथप्यौ: जिहिकरकसमरहरनसवैंरु:कुलअमरजुकुप्यौ: जि
हिबिसेषभुजबीस:सरबबसकरेसुरासुर: तयजिहिनामनि
गरस्व:भगरहैंअवततिऊपुर: देषउसतपीमांनुषउन्नुज:जगज
सलीनौंमारिजिहि: बिधिजाकीयहकरनीबिषम तातेदेवनम
मितिहिंाराहरा॥ कहासीताअकलंककुल: बसराकसअपवाद
लसजुकरमबिपाकको: उराअदिष्टप्रसाद॥१॥कबित्त॥जहमि
गीतसंगीत तहमिसुनीयतहाहासुर: जहाबिलाससुषबास
परीयपरिनलंकापुर: जहासुषदमारुतिसुगंध:षसमासजुब
सीय सुनमयूरपिकसबद अगरतहांग्रीधसकासीय:रनम
रतएकलंकेसकै पुरसत्तयाक्कपिषयौ सुभरोरकहतमदोदरी
हानवेसयहकातयौ॥ह्हा॥इहिछिनरावनअथयौ जगतम
रतसयजाहि:अरकंनतपतरसोस्अव:यहकछुपोरुषआहि
कवित॥ छंदद्वैअ सरी॥रावनजहपस्चौरनअंगन:बिकलचित
हाआरबिभीषन:देषीमंदोदरीदुषारी:रोवनहीविरुनातिनिहारि
रहाबिभीषनअनुपहआए:रामबिलोकिनयनसीयराये:रोवतसु
नीमदोदरिरांनी:अवधेसरकरुनाउरआंनी॥श्रीरामबचारावन
भ्रातरामसमझायौ:जेतउपजिसोईअंतनसायौ: निहचैताहि
नकछुनाही: जांनहारसबहूतसुजाही: दाहबिभीषननात
हिदीजैं:कुलअपनैंआचारसुकीजैं: छिनछिनक्रीयाकालहैंछी
जैं: दाहजुकतनलअंजुलिदीजै:कुलअपनैंआचारसुकीजै:छिन
छिनक्रीयाकालहैंछीजै: दाहजुकतजलअंजुलिदीजै जसत्ताजन
लछमनंतुमजावहु: सोकबिकलरांनीसमझावहु॥कबित्त॥द
हाबिभीषनलछमनआये: महासुगंधजुकाष्टमगाये:देलमो
नरमोरनमंदिर: सोरसनेहलसीचिकतसुंदर:रावनअंगअंग
परिमारे दिसिदिसिवीलिचितामहरारें:छीमदोदरिमोजिरा

वऊ॰ छीजत समयन संग छिनाव ऊ॰ सो लछमन नऊ बिधि समझारी॰
अब तो तुम हि लगी रकुरारी॰ सब ही राज लोक समझायो॰ तत्व बोध
जो बेद बतायो॥ मंदोदरी बाच॥ राम हि कसो मंदोदरि रानी॰ उरत
व बिरह बिथा अधिकानी॥ दोहा॥ दुषजुत बचन मंदोदरी॰ राम हि क
ह्यो रिसाइ॰ याक हरे वन हर कोउ॰ राष्यो न ही रघुराइ॥१॥ पुत्र नती
जा त्रालपे॰ रावन कुल म ह कोइ॰ रघुबर ऐ को राषते॰ रहतो जो दुष
रोइ॥२॥ श्रीरां मन वाको उगावऊ कर कछु॰ नही जा मह हरि नाम
सो रावन क हे रोरखो॰ मान ऊ सहत बिराम॥ छंद चौपई॥ कबि
ऊ बाच॥ इहा मंदोदरि मंदिर आई॰ साल नयेन हृदय समाई॥
कपि पीर हि उर सिरत्री या लंकपुर॰ सुनी यत जहां तहा रोदन सुर॰ हाहा ख
न असे बरतेर नराकस॰ बिन ता तिन हि सेनारत दुष बस॰ हाहा ख
न असे बरते रनराकस॰ बिनता तिन हि से नारत दुष बस॰
सुनि सुनि दुष होये॰ जीव कहा जऊ जग मरोये॰ पुनि राव नत न अन
लप्रजारे॰ सो बिधि जथा बिधि अगसि कारे॰ देस काल कुल धरम जु दे
षे॰ बिधि जुत कीनी क्रीया बिसेषे॰ मात पिता न पुत्र संचारे॰ थे क
राज लोक तहि अनुसारे॰ जदि पराजन काल जानत॰ पे कछु दे ह सुन
व प्रमानत॰ नयो बिती षन सोक मगन मन॰ अग्रज भ्रात दुष अति
असहन॰ तहा लछमन बऊ बिधि समझावत॰ ताक हे नीति भर
म दरसावत॥ लछमन उवाच॥ काल कवल है जंतक लेवर॰ हो तम
रत नव नूतम हा नर॰ जल तरंग ज्यो बढत बात बस॰ तो नव न
त बिलात उपजि तस॰ जाके काज सब तुम सोचत॰ मानत दुष नैन
निजल मोचत॰ को यह हो को धो तुम याके॰ जीव सह तु षकार
न जाके॰ आगे अब बऊ स्यो रहा आई॰ इन सो तुम सोक हा सगाई॰
कई बार छाडे तुम इनक हे॰ तुम इन तजे अनेक बार तहे॰ सरित
नाव ज्यो काग सगाई॰ यो सब बंध मिलत सब आई॰ बात बिधू
तक गिन ज्यो रज कन॰ बिचरत नव सजोग बिजोग नि॰ यो हि उ
पजनास संग मअर॰ करम काल बस भ्रमत कलेवर॰ देह देह
सत्ता वित देषो॰ जैसें बीज हि बीज बिसेषो॰ देह बुधि तहा सब
सगाई॰ भ्राम नि पुत्र पिता अरु भाई॰ देह देह स गपन दरसावे
बिन सेत हा कछु न बसावे॰ देह बिना सगयो जब देही॰ तहा स
बंधन के उसन ही॰ समझऊ मिथ्या देह सगाई॰ तब तो प्रानन
तीजन भाई॰ प्रानी लगि सब धरम भांमो॰ सो कित गयो न काऊ

जांमैं :देहबुधिनजिहगहिनगांनऊ :पूरन देहीबुधिप्रमांन·
ऊ।।कबित।। सबबिधिग्यानलषनसमझाये :दहांतबउरेज
लासयआये: दुषतजिस्रातितिनंजुलिदीनी : सीयाबिभीषन-
कुलक्रमकीनी: दहलछमनसंगहिलेआयो: सोकबिभीष
नदु:षनसायो।१।।बिभीषनआबेरिचरनतहाकेलोबिभीषन·
देवदीनकेबिपतिनिकंदन :नाथअनयपंजरसरनाई :सद
दयानिधिनगतिसहाई।।श्रीरांमबाच।। कबित।। बीरलषन
सुग्रीव·बालिअंगदनलनीलहिं जामवंतहनुमंत :समजिनि
लयगुनसीलहिं :दीनबंधुदेवाधिदेव·बाचाप्रतिपालन :सर
नबिजयपंजरसुनाइ :षलमूलउषालन·अवधेसदईआग्य
इनहिं :जाकुंदुरगनपग्रेहजह: कमजुकंतराजदससीसको·ति
लकबिभीषनदेऊंतहां।१।।मोहिउत्विरनहीनगरमांझ·आवन
दहिअवसर :न्रातसभाअरूसुन्नट :सबैतुमदेहथरेसुर :मदे
हरिमंत्रीजुमांनि·सबहीकेसमत :देसकोसदलदुरग·सकलरा
जश्रीसंगत·मोहिमित्योबिभीषनवहिसमय·पेषिकस्योमेलं
कपति·सुनलगनआजनरहरसुकबि: सुपेबचनममहोरस
ति।।२।। लंकआनिलंकेस·दिव्यसिंघासनदीनों· रामअनुजक
पिराज:कपिनमिलितिलकजुकीनों :बेदप्रनीतबिसेष :स
जिअनषेकसकारन :बनिनिसांनमंगलबिधांन·घुमरतमं
नऊघन :परजागतसंपतिराजसुष :तिहिपायेगढलंकतह
अनिलषबिभीषनमिलिअषिल पुनिआयेरघुनाथपंह
श्रीरामबाच।। दूहा।। कह्योरामहनुमंतकहं :जहांसीतातहंजा
इ:कुसलहमारीउनहिंकहि :उनकीहमहिंसुनाइ।।१।।कबि
त।।मारुतिकूदेगगनमग :दहअसोकबनआइ· सीयहिंसु
नाये बिजयसुष :सीयकुसलरघुराइ।।१।। हनूमत उबल
षेयोनिरमूलषनि: नबसास्योसुरन्नार :अबसीतहिअवधे
सउर: दीजक्रूदरसउदार।।२।।सीता श्रीरांम दरसनपुनरा
गमन।। हनूवाच।। छंद दोअखरी।।कहिहनुमंतजुगलजोरे
कर:सुनियेकछुबिनतीअवधेसर :जिहिहितकरमदुरंत

कमदुरंतजुकीनै: लोकप्रगरजयरंनरहतलीनै: जुधन ब्रह्मपनातीजो
यो: षलदलसीसवंसबनिपायो: सोईफलउदयलयोअवस्वामी: जीव
सकलतुमअंतरजामी: सब बिधिसमरथरामसनेही: बंछितचरनद
रसबेदेही।। कबिरुवाचा।। छंद उधोर।। सुनिबचनरामसुजांन: हित
केहेजे हनुमान: सुषउपजिरामसुभाव: नयेतहांसातिकभाव।।
श्रीरामोवाच।। तहांकह्योप्रभु हनुमंत: सीयवेगलावहु संत: जुउरा
जतुमामिलिजाहु: यहकाजआजउछाहु।।कबिरुवाचा।। सजिलंक
पतिदयोसंग: उठिचलेवीरअभंग।। छंद दैंअषरी।। इहांअसोकवं
नमारुतिआये: छिनतिहिनयनरुदनजलछाये: कपिगतिदेषिजो
तुकीकेरी: हीयचढिकंपजातनहीहेरी: बिरहमगनतनबसनमली
ना। दिगजलधारबचनमुषदीनो: बेनीएकअयोमुषबांमा: सोचतस्वा
सबिमोचतस्यांमा: रहतिससोकराकसनियेरी: हरनीमनहुबयकत्री
हेरी: हीयचढिकंपजातनहीहेरी: सरमात्रिजटासाधसुलछन: बोलि
तिनहीयोकसोबिभीषन: मिलिसुषसीयहिकरहुतनमंजन: अंगउ
रंगबसनदिगअंजन: बानकउचितसिंगारबनावहु: चित्ररुचितसे
गंधचढावहु: अतिबहुमुलिबुसनसबअंगनिहु: पारनयरिउरलगति
प्रमांनहु।।कबिरुवाचा।। भूषन बसन बनाये भांमनि: देहधरेमनुग
टीदांमनि: मिलिअरहूंतसोनसकुमारी: निरषितेरित्रिननिसव
रनारी: आहीसमयसुषासनआंनी: तईआरूढरामपटरांनी: त्रिकु
रहारतेनिकसिततछन: पटहिलपेटीसिवकापूरन: असुरत्रीयाके
तुकअनुरागी: लषनिधावतपाछेलागी: करेचमरकर मारुति
धारत: अरुहजयजयजननिउचारत: बेत्रपानिलंकेसबिभीषन
आगेंचलतपयादेआपन: निकटअनिकपिजालनिहारत: निठुर
कंचुकीतिनहिनिवारत: इहांहनुमंतहिरामबुलायो: अंतरभावक
मत्रबतायो।। श्रीरामवाच।। जोहमकहेप्रमांनसुजांनहु: अब
सीताहिचरनचरआंनहु।।कबिरुवाचा।। तवरामममनलिष्योअनीत
सबिकाछोलिचरनचलीसीत: देषतलोकनवदनदुराई: इहां
सीतारघुपतिपहआई: देवलषनकहंआगपारदीनी: काल्बकुल
सालातहकीनी: इहांसोसालप्रजारीआगी: ज्वालअनलजअकु
सहिलागी।। सीतादिव्यसमय।। बेदेहीवाच।। चितहुकरम
ममबचन: स्वपननिंद्राप्रबोधसंग: बिनुरायवरसभाव: अन्य
अवलोकपरसअंग: ततोदहोयहदेह: नगरसुरमुषतुमपावन

करमसाषित्रतमनिकृष्ट · संसयतुनसावन: देषतसुरआसुरकीस
दल· अनगसुतासतउथस्यो: मनमेदृविकासितकमलमुष· अनत
श्वेसनआवस्यो: ।। कवि रुवा चा।। दृहा।। कीनोवंदनपरिकिमन·
अनलहिसीतआप· आननरविद्युदरसउदित: मनबदिहरषआ
माप ।। छंदर्पै अपरी।। प्रगटज्वालमालाजुअजारी· कीयोप्रवेसविदेह·
कुमारी: ऐसीकछुअछाअवधेसर: सोपावतनहीनेदसुरासुर:
हाहाकारलोकत्रयहोई: कहतसुनतसमउतनहकोई· आहिरामन
कृतपुकारत· असहनचरितदेषितयआरत ।। दृहा।। देवअसुरनि
पनरनिदीय: अपथरामप्रकास जानिसमयसोजानकी: बाढ्यो
उरबिसवास ।। कवित।। प्रलयकालसीप्रबल· मनउजगीज्वाला
नल: परबसपरिलोकपबार· लागिवितनावअल: बपुछयामाय
विलास· सीयरूपसुधास्यो· लोकविलोकतसम· लागिज्वालान
लजास्यो: पहलेसीयपावकमहप्रठन· हगिरापीरावनह्यो· कुक
मरामकारनकरन: देविउसहप्रसयदयो ।। सवैया।। निकसी
सुभारविंदअंगअंगसोनाअति· मंगलमैंकीनोमानोपीहर अवेसते
नावीसोनवलकछुकीयेसाहेसोईकरे· सोपेसमोदीपसिंधु नत
सुरेससो: हाहारवतीनलोकफेरलेषसातनाही· उपजोवराव
रकेउरमेअदेससो· रामरूपउरसीताअतिअनीतअतिलगे
नवसनकउपावककोलेससो ।।१।। राक्षसी।। दृहा।। समयबिलो
किनिसाचरी: नरपतिकरतिअनीति· करमीठतिअतिसोचउर: न
रीचकितनयनीति ।।१।। केहतिपरसपरराकसी: पायोसमभ्रमा
न: नहीनहैत्रयलवन: सीतासतीसमान ।।२।। कविरुवाच
कवित।। धरमरूपदिजदेहधारि: वैसानरआयो· सीतपुत्रीसंग
बिहतउरहरषबढायो: पयसागरलछमीप्रवीन: अरपीनारायन
योसीतारघुपतिहिआनि· दीयप्रेमपरायन: करवामसंगरघुनाथ
के· आजिअतिछबिलामनी· नवनीलजलदमिलिनेहनव· दैत
वानसीदामनी ।।१।। सवैया।। नयोहोबिजोगसीताराममनन
नको· नवकैसैं टरैजोकरमरेषनावनी: अनलमेराष्योदेहपा
दीपतिआपगोसीछायाकीनिपंचवटीप्रतिबिंबछावनी· काल
ग्रेहपेगिजारिछायातनछारकीनोंसुधकैनिकसीसोसतीलि
समझावनी· पावकैकेसाथआनिप्यारेकोदरसपायो पिताकेसे

ग्रहतैपधारीपुत्रीपावनी ॥ ग्रथ निबाचा॥कबित॥ इंद्रकबनरथुदेव
यहैग्रेछाउपजाई: साधसतीसीयसमुभि: ग्रछनममग्रेहपगई: कैसे
समरजयकार महाराकसबलमास्यो: केरकपतितकुजोनि ग्रतसोई
दुष्टउधास्यो सबक्तारकरनकारनसमथ देवबिसवसुषदीजीये ग्रे
नकीजोगमायाग्रजय कृपाग्रनुग्रहकीजीये ॥ श्रीरामवाचा॥ ह ॥
ग्राग्यादीनीरामयह: मातुलिदिब्यबिमान: पुलाकसुरराजपह: पुनिक
हिकजसमान॥१॥लेरथसारथफिरिचल्यो: इंद्रलोकतबग्राइ: रामबि
जयरावनमरन: सबकेहिसमझाइ॥२॥मातु लिबाचा॥कामारतबामी
कुटिल: दुष्टबिस्वरतद्रोह: सोरावननिजदोषसब: छनमहगयोसछो
ह॥३॥ सुरद्रोषीहगरबसंग: सदाकुमारगसाथि: नासनयेहसबि
रनिलज: ग्रपनेकरमउपाथि॥४॥छंदहैग्रवरी॥ कबि रुवाचा देव
सबेइंसकधरकेउर: सकेकग्राइनिकटलगिसमहर: सुनिषलमस्यो
बिमानसजाये: इंद्रकुबेरबरनजमग्राये: ब्रह्मरुद्रमुनिसिधस
चारन: साथिक किंनरपितरसकारन: रिबगंधरबरुनागदिगे
सुर: मिलिरस्यादिकग्रषिलचराचर सबैग्राइसुरत्रीयासमांनी
महाहरषसीताहितमांनी: ग्रमरकोटितेतीसजुग्राये: छाजतगग
नबिमांनसजाये हसतपरसपरकरतकुलाहल: षेचरमस्योद
सांननसोषल हेरिग्रानंदबिबुधगनबरषाहि: बारबारनन
पुहपनिबरषहिं: बिबिधिबरनरथबसनबनाए: ग्रागमरि
तुजानकुधनग्राये: सुरकंन्यानंननारकसाजत: बिबिधिबि
धानतानसुरबाजत: बिहसहितालमृदंगबजावहिं गहगहके
गरामगुनगावहिं ॥ब्रह्मस्तुतछंदबेताल॥ तुमग्रादिब्रह्मग्र
नादिग्रदस्तुत: ऐकग्रात्माग्रभासिन: ग्रजग्रकलग्रगुन ग्ररूपग्रन
जित ग्रनगतनग्रबिनासिन कल्यानरूपत्रिलोककरता त्रि
गुनतुमबिस्वंभरे ग्रनुजगतरक्षकनरनपोषन बिस्नुतुमल
छमीबरे: तवनासकारनरौद्रताबन रुद्रतुमहीरायवे: सुरथो
नलीनेछीनइनसब महाबलबलमाधवे सुनसकतिसदा
ग्रमोयस्वामी सुरसहारसदोदयं सग्रामममासोसकुलदस
सिर ग्रसुरईसग्रसाथयं ग्रबदेवहमसवसथानपाये ग्रनु
गसादसुपावनं तुमग्रादिमध्यजुग्रंतकरता जगतिहितत्व

नावनं ॥ इंद्र वाचा॥ छंद भुजंगी॥ नजेरामइंद्रीवरंनीलआजे॥ न
मेअतिरजंतपद्मसनाजं॥ म हपातकंकाननंदाहनामे॥ अयोध
दवसुसथेतरूपरामे॥ नवानावसेनावनंरूपरूपं॥ अकामंअ
गमंअनामंअरूपं॥ नराकारदेहंसुरंउधनासं॥ परातेदपपोध
हंतापकासं॥ कपीसेसमित्रंदयारूपदेवं॥ बिदेहंसुतानोगिना
जंसतेवं॥ स्वयंब्रह्मतूरामवेदेसहायं॥ सीयावामनागेसहजेण
मायं॥ अहंकारमध्यानमतंमहीसं॥ अनाचारचारीवलीबाकुबीसं
तथाकोधदीपानलेनोपतंगं॥ दलोदेवदेबीसुतंदंदसंगं॥ कि
नीरदंनीलसोभातिस्यामं॥ छटापीतबासंकलाकोटिकामं॥ जटाज
टसीसंबपंबन्नबासं॥ त्रिगंअतरतेभुषेवारुहासं॥ करंवामकोदं
डनामंसकामं॥ भुजंदंडनंबानसोसासत्रामं॥ करीसिंघतूनीर
बंधसकोपं॥ उरंसुंदरंतुलसिकामालओपं॥ ब्रह्मा वाचा॥ छंदपध
री॥ तुममोहसघनकेबिखमबात॥ बनसंसयकेपावकबिख्यात॥ अ
मअंधकारकेरविउदार॥ त्रिभीयादिकेजबनभयउधार॥ मनम
अमतंगकेसिंघमान॥ नवबारिधमंदरगिरसमान॥ दूहा॥ नव
देषीनृपतातिलक॥ अवधिपुरीमनुआइ॥ संतुकलेयहरामसौं॥ य
नसुधमसुषदाइ॥१॥ अबनहिचितबिलबयहि॥ राजराजरघु
राज॥ रनजयपायोमारिरिपु॥ करेसिधसुरकाज॥२॥ सुरमुनिच
रनसिधसब॥ जथाभावमतिजास॥ कलहकयतिरघुनायकी॥
कीनीकितिप्रकास॥३॥ कवि रुवाच॥ छंद बेअषरी॥ दूहूनपित
दसरथनृपआये॥ पितआगमनरामसुषपाए॥ करिपरिक्रमन
दंडवतकीनो॥ आपरामनये प्रेमअधीनो॥ लेदसरथसुतकंठल
गाये॥ बिछुरेमनकुप्रानसेपाये॥ रूपबिलोकिनयनजलढरिनरि
अतिआनंदेरोमतनउनरि॥ अनयऔरआनंदउमाये॥ जेसुषसुक
बिकवनकहिजाये॥ बिगतनास्तुवसमयबिचास्यो॥ दूहादसरथ
नृपबचनउचास्यो॥ राजा दस रथ उ॥ सतिवंतीअकलंकतसी
ता॥ पावनपरमप्रसिधपुनीता॥ आदिमधअवसानअरेही॥ बिस
बिख्यातसुधबेदेही॥ रामकृपाद्रिगसीयहिनिहारे॥ उचितधरमहित
चितअनुसारो॥ का॥ वि रु॥ पूजेरामपितासुषपाये॥ दूहादसरथवैकुं
ठसिधाये॥ इंद्रो वाचा॥ इंद्रबचनकरजोरिउचारे॥
देहुमरे॥ सीतं मवाचा॥ रामकहेतं

अहतेपधारीपुत्रीपावनी ॥ अथ निबाचा॥कबित॥ इंद्रकबनरघुदेव
यहैअैछाउपजाई: साधसतीसीयसमुक्षि: मछनममयेहपगई: कैसो
समरजयकार महाराकसबलमास्यो: कैरहूपतितकुजोनि अंतसोई
उइउधास्यो सकलतारकरनकारनसमथ देवबिसवसुषदीजीये जो
नकीजोगमायाअजय कृपाअनुग्रहकीजीये ॥श्रीरामबाचा॥छ्पै॥
आग्यादीनीरामयह: मातुलिदिव्यबिमान: पुल्पककुसुरराजपह: पुनिक
हिकजसमान॥१॥लेरथसारथफिरिचल्यो: इंद्रलोकतबआइ: रामबि
जयरावनमरन: सबैकहेसमझाइ॥२॥मातुलिबाचा॥कामारतबामी
कुटिल: दुष्टबिस्वरतद्रोह: सोरावननिजदोषसग: छनमहगयोसंछो
ह॥३॥ सुरदोषीहगरबसंग: सदाकुमारगसाथि: नासनयोहसस
रनिलज: अपनेंकरमउपाथि॥४॥छंदछैपै॥ कबि रूबाचा॥ देव
सबैदसकंधरकेडर: सकेनआइनिकरलगिसमहर: सुनिषलमस्यो
बिमानसजाये: इंद्रकुबेरबरनजमआये: ब्रह्मरूद्रमुनिसिधस
चारन: साधिक किंनरपितरसकारन: रिषगंधरबरूनागदिगि
सुर: मिलिरम्यादिकअबिलचराचर सबैआइसुरत्रीयासमांनी
महाहरषसीताहितमांनी: अमरकोटितेतीसजुआये: छाजतगग
नबिमांनसजाये हसतपरसपरकरतकुलाहल: षेचरमस्योद
सांननसोषल: होइआनंदबिबुधगनबरषाहिं: बारबारनन
पुहपनिबरषहिं: बिबिधिबरनरथबसनबनाए: आगमरि
तुजानकुघनआये: सुरकंन्यानतनारकसाजत: बिबिधिबि
धानतानसुरबाजत: बिहसहितालमृदंगबजावहि गहगहकं
ठरामगुनगावहि ॥ब्रह्मसतुतिछंदबेताल॥ तुमआदिब्रह्मअ
नादिअरस्तुत: ऐकआनासासिन: अजअकलअगुन-अरूपअन
जित-अनगतनअबिनासिनं कल्यांनरूपत्रिलोककरता ब्रि
सतुमबिस्वंभरे अनुजगतरक्षकजरनपोषन बिक्षुतुमल
छमीबरे: जवनासकारनरोद्रभावन रुद्रतुमहीरायवे: सुरथा
नलीनेछीनइनसब महाबलबलमाथवे सुनसकतिसद
अमायस्वामी सुरसहारसदोदये संग्राममास्योसकुलदस
सिर असुरईसत्रसाथये: अबदेवहमस्वसथानपाये प्रभु
प्रसादसुपावनं: तुमआदिमध्यअरुअंतकलो: जगतिहितव

नावनं ॥ इंद्र वाच ॥ छंद तुनंग ॥ नजेराम इंदीवर नील आभे जन
जे अंत निरंजन पद में सनाते मत्तपात के कानन दाहन नामे अयोध
द्रव सुसथेत स्वरूप रामे तवा नावसे नावन रूप रूपं अकाम अ
गम अनामं अरूपं नराकार देह सुरंगु धनासं परानंद पापं
हं ताप्रकासं कपीसेस मित्रं दया रूप देवं बिदेह सुता नोग नि
जं सत्तेवं स्वयं ब्रह्म तू राम वेद सराया सीयावाम नागेस हजेण
माया अहंकार मद्या तम तम हीसं अनाद्य खरारी वली वाकु वीसं
त्वया क्रोध दीपानले नेप तंगं दलो देव दोषी सुतं दंद संगं क्लि
नीरदं नील स्तो नाति स्यामं छटा पीत वासं कला कोटि कामं जटा
टसीस बर्प बल बासं द्रिग अंतरत भुज चारु हासं कर वाम कोदं
ड नाम सकामं भुजं दक्षिनं बान सोन्ता सत्रामं करी सिंघ तूनीर
बंधस कोपं उरं सुंदरं तुलसिका माल ओपं ॥ रुद्र वाच ॥ छंद पध
री ॥ तुम मोह तम घनके बिषम वात बनसंसय के पावक बिषात अ
म अंधकार के रवि उदार त्रिबिधि दिक जनन भय तुषार मनम
थ मतंग के सिंघ मान नव बारिध मंदर गिर समान ॥ दूहा ॥ तव
दरसौं न्रपता तिलक अवधि पुरी प्रभु आइ संतु कलेय हराम सौं ध
न सुध मसु षदाइ ॥१॥ भुवन त्रि त्रित बिलवय हं राजराज रघु
राज रन जय पायो मारि रिपु करे सिध सुर काज ॥२॥ सुर सुनि ब
रन सिध सब जथा नावम तिजास कल कृत यति रघुनाथ को
कीनो किति प्रकास ॥३॥ कबि रुवाच ॥ छंद चैापई ॥ इह पित
दसरथ न्रप आये पित आगम न राम सुष पाए करि परिक्रम न
दंडवत कीनो आप राम न्रय प्रेम अधीनो [illegible]
गाये बिछुरे मन कु प्रान से पाये रूप बिलोकि नयन [illegible]
अति आनंद रोम तन उनरि नैनय और आनंद उमा [illegible]
बिक वनक हि जाये बिगत नास्तु व समय [illegible]
न्रप बचन उचास्यो ॥ राजा दस रथ उ ॥ मति [illegible]
ता पावन परम प्रसिध पुनीता आदि मध्य अवसा [illegible]
बिष्यात सुध बैदेही राम कृपा द्रिग सीय हिनि हारे [illegible]
रचित अनुसारे ॥ कबि रु ॥ पूजे राम पिता सुष [illegible]
ग सिधाये ॥ इंद्रो वाच ॥ इंद्र बचन [illegible]
देकु मुरारे ॥ श्रीरा मवाच ॥ राम के [illegible]

ये हउ चितमम काज : बिहरय है अब अमृत मगावऊ : जूऊ रन तिनक
पिन जिवावऊ : रद अमृत बरखा अनुसारी : बानर मृतक जीये अबिक
री : जथा सबै सोवत से जागे : लीला राम बरनउ बिलागे ॥ दोहा ॥ सुरस
मृह सुरराज सम : बाजत निजय बिसेस : अपनै अपने लोक यह :
कीनो नगर प्रवेस ॥ १ ॥ छंद छप्पै । राका बिरुदावली । रघुनाथ सुतर
निहारि : रहा कृपा बचन उचारि : अवलोकि लछमन बीर : कपिरा
ज अंगद धीर : अरु जामवंत सुबुध : नल नील हनुव प्रसिध : द
सा दिजूथप जूथ : थित सबै बीर बिरूथ : अरु निकट लंकानाथ : हित
सबअ
गुकतजोरे हाथ ॥ श्रीराम बाच ॥ प्रभु कहो कृपा प्रसंस : सब अं
हनुम सुरअंस : तुम बाऊ बल बिरदैत : मैं लसो जुध जस जेत : रन
हयो रावन रार : लीय लंक बिजय बजार : प्रभु ना बिभीषन पार : त्रय
लोक कि तिप्रकास : तव है ऊ कारन तास ॥ दोहा ॥ जो लौं ससि सूर
लोक कि तिप्रकास : तव हे ऊ कारन तास ॥ दोहा ॥ जो लौं ससि सूर
य जगत : उदित होहि प्रकास : तौ लौं जस कपि ना लको : प्रतित्रय लो
क प्रकास ॥ १ ॥ पौरुष महिमा आपनी : कपि सुनि हो कछु काल : सं
चलि हो मेरे संग मिलि : सुनि बैकुंठ बिसाल ॥ २ ॥ मो सम कीरति कपि
निकी : सुनि कहि है सबिसेष : नव सागर तिरि है जगत : सो अनया
स अस सेष ॥ ३ ॥ श्रीराम बभीषन नहि बरदान ॥ दोहा ॥ प्रभु नर हर रह
के प्रसन बरदयो बिभीषन : मम प्रसाद गर माऊ : महा सुख करऊ
अतयमन : पार प्रगट प्रभुता प्रताप : पुनि पारन परयो : करि अ
पनो राकस कुजोनि : धरि कर उर धरयो : अद्भुत प्रताव महिमा
अतुल : आपा दीनी जीति अरि : जगि राम नाम जो लौं सजय : कलिजु
ग निरंतय राज करि ॥ ५ ॥ दोहा ॥ बिभीषन बाच ॥ कहो बिभीष
न जोरि कर : सुर सुरपति हरि साल : मंजन बिजय सुअंग मम : करि
ये दीनदयाल ॥ १ ॥ श्रीराम बाच ॥ अब तो बिनु पूरन अवधि : सुन
ऊ सस लंकेस : मेरो आवन नगर मह : नाहिन बनत बिसेस ॥ २ ॥ ज
ती धरम पालन जथा : भरत सहानुज भ्रात : अलंकार मंजन बस
न : ता बिनु कछु न सुहात ॥ ३ ॥ करऊ सस्रूषा कपिन की : जथा उचि
त बिधि जानि : रहा बिभीषन आनि अह : सबकी नो सनमान ॥ क
बि रुबाच ॥ कबित्त । मारि राम रावन संग्राम : लंका गढ लिनो : अभु
रबिभीषन सरन आर : तिहि दीन हि दिनो : महाबीर हनुमंत : सु
व सुग्रीव कपीस्वर : अंगद नल अनल : नालपति असुर नयक

र॰ मिलिअनयजूथजू थपसमर॰ हितत्रिलोकजयुसवरूकुव॰ नः
जंतअषिलनयत्तंजयो॰ नयोजैतिरहितारस्तुवा।।२।।समरसिवहि
रससीस :औनन्तरथरनिसमपीय॰ पिसनमासपलचरनि॰ अनि
लंकेकालगुअपीय॰ बीरप्रेतकौतुकबिनाग॰ बे प्रेतनबानति
गोतिजोतिसंजोग : पवनतेगोमिलिप्रानति॰ कृतसरनहेतनर
हरसुकबि॰ दीनबिभीषनलंकदीय॰ करकघरबैनवकुरगकम॰ कौ
पिरामहृहवरकीय।।३।। रकुउनय॰ दस॰ अयत॰ नागहयचर
नचारनर॰ रतेगिरतनुवरकू॰ निरतऊगतकबंधनर : ऊगहि
कोटिकबंध॰ तामबजयरंकारव॰ सुकरबिजयसारंग॰ रोषस
जितरनराघव॰ कृतयहअनंतनर हरसुकबि॰ समरदसाननस
जयो॰ रघुबीरधनुषरंकारवन॰ बारअयोदसबजयो।।४।।ताप
केरकनयरस्यो॰ लोकलोकनिमिलिमंगल॰ कुलरंकसघयक
स्यो॰ बेठमास्योरावनषल॰ महाग्रहनिग्रहमेघ : नयोधिरचरम
नतायो॰ बेदथरमबिथस्यो॰ समयसोरिषनिसुहायो॰ त्रैलोकसे
कनम्पेतहिन : अमरसमरजयउवस्यो॰ साध्योअसाधिलोकेस
वर॰ कृतअनंतरघुपतिकस्यो।।५।। रिपरावनरननरोड॰ महागदल
कदुरगम : परलंकानपाथोधि॰ दुसहसुनिरसादेहदम : तरस
हरकपिजाल॰ ससत्रपेपानिधनषसर॰ बयसुबालबिनता॰
बियोग॰ हैजलफलआहर॰ मान्मोरहापोरुषबेदमत॰ पुनिसे
पतिनप्रमानिये॰ सुरअसुरनरनिनर हरसुकबि॰ नियतकाज
सिधजानिये।।६।। निसाचारकीयनास कपिनकोदंडबानक
र॰ रनअगनरघुनाथ॰ सबिफेरतबिजरीसर : रोषनयनसा
रन॰ बिबिधिछितदहनिकासित॰ औनबिंदवनवसन॰ अन्त
रबिकोटिप्रकासित : कपिजालमध्यमंडलअकल॰ करिगेह
प्रतुबिजयक्रम : करुनानिधाननरहरकहत॰ महाबाहुजुथ
रमम।।७।। इतिश्रीरामचंद्रबिजयरोनननवधवरननं।।
अथ आजे ध्या प्र तिग मन।। कबि उवाच।। दूहा।। औनि बिन
षनअयकीय : पुहपकनामबिमान : तिहिबैठेरघुनाथतहा :
सीतालषनसुजानि।।१।। श्रीरामउवाच।। कहोरामलंकेसकह॰ प्र
रनकृपाप्रचार : आपसनारऊजारउहा॰ राजश्रीयनंनार।।
लीपन ३।। अबधिचलोगोसगअब : सेवाचरनबिसेस॰
नबिरहदयालको : सहितजाहअबधेस।।४।।

पधरी॥ जथाजोग्परथ दिब्यजु दीनो: कपिपतिअंगद आरोहन कीनो·
बिहंतअंनिरथयरयेबिभीषन: महाआरूढ भएजूथपतिन: सुग्र
रथचढेबिभीषनसोहत: हितुबंधुनिकेचितबिमोहत: आपप्र
यानकरेअवधेसर: बाजेगगननिसानगहरबर: बाजेबिबिध
लंकमहबाजे: गोमब्योमसुरतिहिमिलिगाजे: मिलिउतरदिस
चलेबिमानो: कृपानिधानसहलकल्यानो: रामप्रतापरूपउ
रराषे: षेचरअमरनिजयजयभाषे: इहारनभूमिमध्यप्रभुआव
त· तेईतेईसीतहिगेरबतावत॥ श्रीरामबाच॥ राजकुमारिबि
लोकिमहारन· करदमअोनअलिकृतअंगन· मिलिकपिरीछनि
राकसमारे· येतिनकेबपुषंडबिथारे: इहालछमनघननादल
राई: गिरेलषनबलसकतिलगाई: कुंभकरनकोसिरइहाकाट्यो
मारतुरगजिहिपरतहीडाटो: गढलंकायहयहबेलागिर: समह
रमअजुमास्योदससिर: यहमरकटनिनीरनिधिमाप्यो· सेतबां
धिरामेस्वरथाप्यो: इहाबिभीषनसरनेआयो: प्रभुतासहतलंक
गढपायो· यहप्रबरषनअदिकपिआये· इहातेजूथपजूथपच
लाऐ· कपिपतिकोयहनगरकिकंधा· इहाबालिमास्योमदअंधा·
पपासररिषमूकजुपरबत· हमकहआनिमिल्योतहाहनुमत·
इहाभईसुग्रीवमित्राई: उतरीयनूपरइहासुपाई॥ सुग्रीव॥ कहि
कपिराजसुग्रीवजोरिकर· इहाकछुनाहिकिकंधअंतर· रघुप
तिराजउहापाउधारो· होइपावनकुलयहहमारो: कृपानिधा
नअनुग्रहकीजे· देवचरनमेरेसिरदीजे॥ श्रीराम॥ दीनबंधुबो
लेहितदाइक: कपिपतितुमसबहीकृतलाइक· जोपैअवधिबिती
तेजाऊ: प्यारेतरतहिजीयतनपाऊ· मेबनबसितपकरमअकु
स्यो· उनसोईयहबसतअम्यास्यो: अबनबिलंबउचितमोहियाते·
ओतनपंथऊतेउकिजते: कृत्वादिकराकसषयकीनें: रावनमारि
लंकगढलीनें· प्रभुताउरगबिभीषनपायो· जयोसुरकाजजथा
मनभायो: हितंअतिलाषजुपूरिहमारे: तेबलबुधिकपीसतिहा
रे· निकटरहोतेनवरजधानी· पुरीकिकंधासुषदप्रमानी: अब
अहंजारकूरऊसुषअपने: पुनिममकृपानहीतयसुपनें: जूथ
पजूथसबेयहजाऊ· कबकऊसंकनमानऊकाऊ॥ सुग्रीवबा
चो॥ दृहा॥ कपिकपीसइहाजोरिकर: बिनयबचनबिसेस·
अपनेकोगोरवअषिल: आपदेतअवधेस॥११॥ कऊसहार

गुगरुउको :हितमसकोपेहोत: कछुदिनप्रभुसेवाकरी:यहह
मनरुपउदोत॥२॥ कहनानिधियहसवनिके: रछाहेअषिले
स: रामतिलकसुषअवधिपुर: दरसनकरहिसुदेस॥१॥कवि
रुवाचा॥ कपिपतिजूथपजूथकपि: सबेचलेसुषपार: रह
सीतातारासषी: लीनीसंगबुलाइ॥२॥जिहिजिहिगेरनज
गतपति: सुषकृतचरितसुनोर: पुनिसीतहितेइजातपथ:
बिहसतदेतबताय॥३॥श्रीरामवाचा॥ छंदछेअपरी॥ बनक
नातपवेसबिहार्ई: सबरीरहासुरलोकसिधाई: दंडकवन
यहसेवततापस: रहाकबंधहतेषलराकस: रहांजटायुग्र
धउधार्यो: महाजुधरावनजोमार्यो: बेदेहीयहबिमलप
चवट: सबेबसेहमगोरवरितट: यहजुअगसतिसुतीछ
नआश्रम: दिअबसनहमलरेउ श्रम: यहेजुपंचसरोवर
अदभुत: जलरुहफूलेनिरमलजलजुत: रहासरजंगपरम
गतिपाई: आपदेहजरिअगनिउगई: तिसवरमाधनासरताकीनि
देवद्विजनृतिहिअतिदुषदीनो: अनुसोयाअरुअत्रिबसतरहे: हित
उपदेसकरेजिनतुमकहे: चित्रकूटयहबिष्यात: मातमिलीतुर
तग्रीयन्रात: बालमीकआश्रमयहवेदित: हैद्विजप्रभुहमारेत्र
तिहित: तरलतरंगबिमलजमनातट: काटतसकलपापदुषसंक
ट: सीययहत्रिपथगामनीसुरसरि: रहामेजनअयकारकउथरि
कबिरु॥आश्रमनारदराजकेआये: पूछतकुसलपरमसुषपाये:
श्रीरामवाचा॥दोहा॥ देवसिष्यगुरआदिद्विज: पावनमातरुपा
ल: भ्रातभरतसानुजकुसल: कहियेदेससुकाल॥१॥ नरदउज
उ॥ सुनहुरामसबहीकुसल: प्रभुतवकृपाप्रसाद: आजदेन
आगमनतए: देसबेसउदमाद॥२॥नारदजनावननरत: देवहि
कलोनिदान: आजचतुरदसबरषए: पूरनहोतप्रमान॥३॥छं
दछेअषरी॥आजअवधिपूरनअवधेसर: पितनवआगमहोत
धरमपर: यहेबिचारिपरमगतिऐसी: कोजानेधूकहेकेसी
रमरामररमुषचपरीवत: जथास्वातिचातिकमुषजोवत: का
रनकरनबिलंबनकीजे: प्रभुतुमआगमसुनतपतीजे॥नर
तदसा॥ महाबिष्मादरतचिंततमनः ६ ५

निसा दिन आज अवधि पूरन दिन आयो : पै कछु राम संदेस न पा
यो : सोचत मन में चत निस्वासा : आनि रही इक दिन निसि आ
सी : आज कृपा रघुनाथ न आयो : दारुन आगम अंत दिषायो : द्रि
ग सुज भरत पुरे रहा दहन : निसचय भयो विस्वास मनहि मन
कछु धीरज कछु चित अकुलावत : दुबध्या सिंधु पार नहि पावत :
श्री राम वच्छा ॥ कबित्त ॥ यह विचारि अवधेस : बरष दस चारि बिह
ईय : अब यि घोसय आज : व हैं पंचमति थिआईय : सुन कुब
चन हनुमंत : संत अब वेग सिधावहु : मम आगमन भरत हि सु
भूल सुष बात सुनावहु : चल अति ना हिन रहत चित : ह
म पाछे ही आइहैं : सुष कै है तब नर हरसु कवि : हित भ्रात हिउ
रलाइहै ॥१॥ छंद दैसपरी ॥ कवि रुवाच ॥ धीर बीर हनुम
तउ बिधायो : अति सबेग नंदीपुर आये : आनि मिले भरत हि अ
ति आतुर : कहो भरत रघुबर किंकर : आज राम सीय लछम
न आये हैं : दल बल कुसल दरस प्रभु दैहैं ॥ भरत तात मिसर रूप
रत सुत भ्रात : बात स्वपन कि धुसति वियात ॥२॥ कबित्त ॥ राम
भरत सुनि उर लाये : सात्विक भाव नयन जल छाये : भये सरू
प भरत अवलोके : भूमि विवर सम उरूप सत सोके : दरसासन भू
गछाला में फित : चिति बैठे तप सागर न घकित : तन मल पंक तिब
सन तुचा तर : स्वाति भाव मन जूट जटा सिर : अवनि सयन फल
मूल अहारी : सोत उदास धरम ब्रत धारी : काम क्रोध मद मोह न
माया : कीने मुनि व्रत दुरबल काया : अंतर भूमि रहे ऐकासन : ऐ
करा भरत राम उपासन : प्रभु पाँवरी सिंघासन पूजत : केकी जों
घन आगम कूजत : राम राम रट पंथ निहारत : तह कल पस सबुन
छन टारत : सो अअनस्तु राम उपासी : पूरन जोति सरीर प्रका
सी : कृत रघुनाथ जु वन वसि करयो : सो ईस्त रत ये अनुसरयो :
भये अधीर मिलन कहु भाई : बिछुरी मन उपरम निधि पाई :
धरम धुरंधर सानुज धाए : सिर पर चरन पीठि सुषदाए : पारफ
टे आरूर हत उपानी : धाये उर धरि कृपा निधानी : आगे हनूमान जब
फिरि आये : सानुज आवत भरत सुनाये : भरि ही तेज बसन रत
हि देषे : प्रभु सो ईसान समान सपेषे : बारबार कपि पति हि ब

तावत : रतरघुनाथ हांकि रथ आये : धीरनर हो भरत उतथाये : उतरे रथ
ते राम अतीतों : संपासी पाछे ही सीता : कत हित भरत दंडवत कीनें : नाथ
उगाह्लाद उर लीनें : प्रभु ये भरत मनोरथ पूरन : उभय भ्रात उपजे सुष
अनगन ॥दोहा॥ मिलत भरत रघुनाथ मन : उपजे जे सुष आहि : तासु
षके परिपाक तव : तेई जानत ताहि ॥१॥ सोरठा ॥ भ्रातके गुन अमिल पा
न करे सुषांन : है वै गेजे निकर ही : जन श्रोता कहा जांनि ॥२॥ जै सेवा
रि जगंध गुन : ज्ञान तत्त्व मंरसु ज्ञांन : चेक्कर रतनि सभ संग नव : पावत न
हि प्रमान ॥३॥ कहि न सकै नर हर सुकवि : अनुभव बिनु अग्पात : क
हनांपु षउ वभ्रातके : बिछुरे मिलत विष्यात ॥४॥ छंद पधरी ॥ सीय च
रन भरत हहा चारसीस : दीन्ह दईउ चितअ हयअ सीस : पुनि लछम
न लागे भरत पाए : कर करषि हरषि लीय कंठलाए : अभिराम चरन
अहि हासनेम : प्रभुलाइ लये उरस हत प्रेम ॥ भरत उवाच ॥ कहि
भरत धर्म लछमन अनीत : नसराति जन भटैजन भजीत : निजरा
म चरन कीनें निवास : प्रभु करी संग सेवा प्रकास ॥ श्रीरामो बा
च ॥ दोहा ॥ कहि कहि सब के गुन करम : प्रभु सेवा सु अपार : कपिन
मिलावत भरत कहं : रीझि रीझि रघुराइ ॥१॥ छंद दै अरपरी ॥ श्रीराम
बाच ॥ मित्र परम सुग्रीव हमारे : संग रहे सब काज सुधारे : कौ
न नाक रनहीं हांतेक रि : महाषिसानो कुंभ छुट्यो मरि : म हनुव
राज महाबल अंगद : मिल्यो सनाम हदस सिर कै मद : ये हनुमंत
सोध सीय लाये : चिन्ह पाइ हम सेन चलाए : जामवंत ये जो धी
जी रन : विभीषन सिध बुधि बल पूरन : ये नल नील सेत जिन स
ध्यो : बारकरी गिर सागर बांध्यो : जूथप जूथम हाक पिजांन कु
पो हव इन के अमित अमांन कुः ये मम सरन विभीषन आये : तिन रिप
के घर मरम बताए ॥दोहा॥ कृतपी रूप हनुमंत के : करे सिधं सुर काज
भरत कुसल तुम सो भवसि : आनि मिले हम आज ॥१॥ हनुआनी सजी
वनी : लषन जीये रन माहि : नातरि मेरो जीयन तह : बिसचय जानहु ना
हि ॥२॥ छंद दै अपरी ॥ कबि रुवाच ॥ आप समीप भरत वेग पे : चढि
रघुनाथ विमान चलाए : अंग मेर परबत आये सुष : महिमा राम वत
वत सब सुष ॥ श्रीरामो ॥ आगमे रय हपुरम सुषाश्रम : हित निसि व
से जय कीनी हम ॥ कबिरु ॥ इहा निषाद राज गोह आयो : ले रघु
नाथ सुकंठ लगायो : चढि रथ मिलि अति वेग चलावत :

नबिहसतसुषपावत ःअनुक्रमनिकरअजोध्याआए ः दीरघधजाकल
सद्रससाए ॥राम ञ॥ बांभोंकरूकरसाषबताई ः देषरूअवधिपुरीसु
षदाई ः लोकप्रसिधपुनिथललेषरू ः बंदनपुनरागमनबिसेष
रू ॥ दहा॥ कीयआगाहनुमंतकहं ः अवधिप्रवेससुआज ः कोस
ला९मातकुसल ः सानुजसेनसमाज ॥ कबिरुबाच॥ इहाहनु
मंतअजोध्याआये ः सीतारायवकुसलसुनाये ः आगेजननीहे
नबुलाये ः अहयरमंगलउछवगाये ॥ कौसल्याबाच॥ कहउपु
त्रसुनरामकहानी ः कवअैहेंप्राननिकेप्रानी ॥ हनू॥ प्रभुहेवस
तपंचबटपावन ः राकसकरेतहांछलरावन ः इहाहालकपिअ
गनितआये ः सेतबांधिगढलंकलगाये ः दससिरसिरोकेदुस
हदवारा ः पदमअगारहवारनपारा ः दुसहजुधपजरयाबिषम
दल ः षेतरामभास्योरावनषल ः महासंग्रामसकुलरिपुमास्यो
रनदिकजयसबदुउचास्यो ः सानुजसीतानाथसुनाए ः अबपु
रनिकरजननिहेआये ॥ कबिरुबाच॥ सुनतजथाबिधिमंग
लसाजे ः बाजेबिसदअवधिपुरबाजे ः क्रमचोलोलपंथसुषद
रक ः लैलैदयेजथाबिधिलारक ः गुरत्रीचलीअयसुनगावत
रनपाछेमातासमआवत ः गुरमंत्रीअरुसूरसुनरगन ः इहां
चतुरंगचलेदलअनगन ः लोकमहाजनजोहितलारक ः साजि
चलेबाहनसुषदारक ः रूपापात्रबिधिबिधिकृतकारक ः पं
थपंथजनपंतिप्रचारी ः प्रभुहिमिलनपुरजुजापसारी ः बाल
कतरनवृधपुरबासी ः प्रेमसहतचलिरामउपासी ः इहाहनुमं
तरामपहआये ः सुतजननीआगमनसुनाये ः सजबहांकिर
थत्रिभुवनस्वामी ः आयेलोकचितअनुगामी ः जननिबिमान
दिष्टपरिजबही ः तज्योरामपुहपकरथतबही ः धरिअतिबेगध
रामप्रभुधाए ः उरआनंदमातपहआए ः क्रमजुतरामदंडवतकी
नैं ः लाइउरहिजननीतबलीनैं ः अतिप्रीयप्रेमहरषअधिकाई
पूरनमनऊरंकनिधिपाई ः सुरभिबछमिलिमनहुसत्तागी ः
लेतबलाइलोनहितलागी ः आकुलमीनजोनिजलपाए ः दारद
रदुषितसघनदरसए ः महामनोरथरस्तमयूरी ः पानसअ
हैअासापूरी ः इहांनयेदुऊंघांसुषअेसे ः लेकबिनहिनसकत

कहितेसे॰ सानुनिचरनलगीसुनसीता॰ गहिउरलाइलईसुतगीता॰
नरतलषनअरिघनत्रयताई॰ जननि मिलनसुषकहिकिनजाई॰
सबजनकेउर हरषसंचारा॰ बिस्वरीसमिलिऐकहीबारा॰ मोहिनि
मिलेरामसनमांनी॰ जुगतिलोकयहकहुनजांनी॰ अपुनचलेजन
निरथआगे॰ अवनिपयादेउरअनुरागे॰ आपामातरथनिआरोहे॰
समबधवहिनकरसेसोहे॰ ॥ नदीग्राम आगमन॥ नदीग्रामहि
मनरेसुर॰ आएनरतऐहआवयेसर॰ बाजेमंगलद्वारबधाऐ॰ अ
साफलीरामग्रहआऐ॰ पुनिमातायहमांरुपधारी॰ समसीतानारि
सुषकारी॥ नरतवाच॥ छंद पधरी॥ करजोरिनरतलहाप्रनि
तकीन॰ प्रनुबिस्वरूपसबपकप्रबीन॰ चितमधचराचरनावचि
ते॰ तुमतेनअगमंकछुहेअनंत॰ केकईकिरेअनुचितकाज॰ राजपु
हजाचेकपटराज॰ सोराजतिहरोबेदसापि॰ रघुराम बिनाकेसुके
रापि॰ यह राजतुमहिसोहेअनंत॰ तुमहीप्रतिपालकआदिअंत॰ र
हेकतुमतुमहीबिनेराज॰ रघुबंसतिलकराजाधिराज॰ पबरीस्प
पूजाप्रमानि॰ इहारामअचलेधरिआनि॥ श्रीरामबाचा॥ तुमसाध
सदानिरमलसुनाइ॰ लयेरामनरतकहकेवलाइ॰ नबदईराम
आपासुमंत॰ तुमकरहुनरतमंजनसुतंत॰ ऋतनरतजटामो
चनसकाज॰ सानुजसुनमंजनबसनसाज॰ आवरितबसनन
षनेअनेक॰ बनिबिबिधिगंधलेपनबिबेक॰ बिधिजुकतससत्र
असत्रनिबनाइ॰ समअनुजबंदीसोनासुनाइ॰ इहानरतसत्र
घनतगतिश्राज॰ रघुरामजहांरेमहाराज॰ पुनिरामजटामोचनप्र
कार॰ सानुजतनमंजनकृतसुढार॰ इहानईअवधिपूरनप्रमान॰ सं
मासनवछोकेसुजान॰ सोगयसलिलमंजनसवारि॰ तनवसन
धोतअवयसधारि॰ निसकृतग्यपपूजासनेम॰ अनुकरेजथाबि
धिसहतप्रेम॰ अतिमुछिबसनआवरितअंग॰ सरनमयसतबि
रचितसुरंग॰ आपुनसमलछमनबसनआप॰ जुगमदनमनऊ
मिलिप्रेमजोप॰ कनकमनिरतनमयषचितकोल॰ बनिअंगअंग
नषननवीन॰ अंरक्षितसुगंधआमोदअंग॰ जामतसुसबदमि
लिमत्रनंग॰ समरूपसस्त्रअसत्रनिसुधारि॰ चितहतबेविनि
लिबंधवारि॰ इयब हेनप्रथममंजनसुतंत॰ सीयआपासाथे

सीयासंत ॥ दोहा ॥ कौसल्याआगपासकल : मिलिसीयचतुरसमोद : करतहि
तमंजनजानकी : सलिलसुगंधसमोद ॥१॥ आनंदघनवासनसलिल : अं
जितअंगबिभाग : सासुचरनलागीसीय : सतिअतुलसोभाग ॥२॥ स
हजसुबाससरीरकौ : उठततरंगअपार : नामनिपरसधुमतन्त मि : म
ल्लमधुपझंकार ॥३॥ मानकुलछमीसीयमिलन : सजिसोरहसिंगार
सगरबिराजितसासुपह : अद्भुतरूपअपार ॥४॥ सकलसमंग
लसुतदिवस : सुषमिलिदेवसंजोग : कीनेमंत्रीउचितक्रम : पुरहि
प्रवेसप्रयोग ॥५॥ छंदपधरी ॥ इहबजेबिबिधिबाजितबिसाल :
मनुगरजयबनमिलिजलदमाल : आन्योबिमानपुहपकबनार :
आरूढभयेतिहिरामआर : अतिप्रेमतुजाधरित्तरतआप : बेगरि
निकरमनसुषअमाप : सबचढेंजातबाहनसजाइ : सबिसेषब
ढीसोभासुभाइ : सुग्रीवबिभीषनसुनदसंग : आरूढजथाक्रम
रथअभंग : आरोहजननिरथदिब्यआनि : सीतासमेततारासमा
नि ॥ अघअजोध्यागनिग मन ॥ रसबढ्यौचलेचढिअवधिराव
घनपरेगहरनीसानघाव : सतसहसअस्वआरोहसंग : रथअयु
तअयुतमिलिगजमतंग : पुनिबीसलछपयदलप्रमानि : धानुष
सेवकासावधान : चतुरंगचलीसेनासचाल : तिलिपदमअगरहके
सत्ताल : रककोधमात्रअंतरजुआर : पुरअवधिसुनंदीयअपार :
सुतबागबिबिधिबनिसुषदसंग : अवलोकतउद्दीपनअनंग : त
बआइअजोध्यापुरीतीर : बंदनकृतप्रभुनिरागमनबीर ॥ छंदचौ
परी ॥ सगुनत्तऐरघुनाथहिसोई : जाकेमनसुतअछाहोई : पुरपैठत
दहनदिसिपायौ : आननअसनगरूउठिआयौ : आऐकलससु
मुषमिलिअैसे : जुवतिगानमंगलसुतजैसे : छिरकीगलीसुगंध
सुहाई : अतिसोभाजितत्तितअधिकाई : छबिबढिहरपारअवछा
रे : बारबारसोगंधबिथारे : बंदनमालायहयहबांधे : सबेसमं
गलसमयेसाधे : तोरनधजापताकाअंकित : जनअवलोकिहरष
बढिजितनित : उज्जलधवलउतंगअवासनि : प्रतिप्रहर्षहछबि
अतुलप्रकासनि : पुरमहकस्योप्रवेसहिसपति : अथाजोगिसुर
पूजासाजित : द्वारद्वारप्रतिनेरदिषावहि : प्रजुसनमाननगर
जनपावहि : ग्रहग्रहसोंधसोंमचढिगायत : बिनतासुरंगअ
बीरउडावत : प्रहुपबृष्टिराघवरथऊपर : करतपसारिपसा

रिकमलकर: घरघरबजतबधाईअतियन मिलिनारीनरमोद
महामन· छिनतिहिगगनबिमाननिछायि· अमरसमूहअवधिपुर
आये· ओमनगरबाजेबऊबाजत: गहरअसाटसघनसंगाजत·
जिधुधवेरकुसमावलिबरषत: हसतपरसपरसुरत्रीयहरष
त: इहिछबिराजद्वारप्रभुआए· बिनतामंगलसबयाये· बिधि
सुतपूजिद्वारकृतबंदन: कस्योप्रवेसजुअसुरनिकंदन:।।छंद
पधरी।। परंत्र हमराजमंदिरप्रवेस: आनंदजुएत्रयपुरअसेस: क
पिलालउचितनैरस्ूपकीन· निसेष बिलोकतसुषनवीन: अव
धेससज्ञामंदिरहिआउ· बैठेजुरामपरिषदबनाउ-आदरहिजथ
क्रमबैठिआनि! मानरनररीकसनालबानि: मंत्रीसुमंतदेआदि
मोह· सबकरंतराजकारिजससोह: उबिजननीअंतसुपुरपथ
रि: कुलदेवनिपूजहेतकाति।।श्रीरामवाच।। दुहा।। इहांअनंत
सुमंतकहं· आगंपादीनीएऊ: सषासुग्रीवहिआदिसुष:केरा
सबकेहदेऊ।। छंदउधोर।। हैकेवरपरमभयेहे: सबकेजस
हतसनेह:जहाराबीयेकपिराज· सनमानसहतसमाज।।छं
दपधरी।। सुनयेहलरतपरिकरसमेत सौदेऊलकपतिसहत
हेत: उनिजूथपजूथनिजथजोग· पुरराषिकरऊसेवाप्रयोग
छंदउधोरा।कबिरु।। सुग्रीवसहतसमाज: रथरोहराकसराज
प्रभुबिनयआपापार· अतिहरषकैरनिआर-कपिलालनैरतिक
ज· करजोरिकंहिलिसराज· जिहिजथामनसुषजोग· प्रतिअय
नगतिसंजोग: प्रभुत्रातसुनटप्रबीन· हैमानआग्यादीन:लहि
जथाआदरलोक· उचितलेअपनेओक: रहामातयहअवधेस:पुनि
करेभयप्रवेस:।। छंदहेअपरी।।कमजुतजननिहिबंदनकीनें: र
मसप्रेमलाइउरलीनें· मथ्यसमेतनिकरबेसारे: आनिआनिन
बछावरिवारे: आनंदसलिलनयननरिआये: पुत्रमिलेतनमन
सुषपाये: पेयहबुधिकवनकबिपाई: बिहतमिलनसुषदेरब
नाई·।। दूहा।। इहारामग्रहसुषउचित: सानुजकरतबिलास·
सक्रजथासुरलोकसुन· बिनतानसनसुबास।।१।।कलहजुरा
वनरामकौ: ताकीघ्रनकिति· करुनाजुतमनवचक्रमन: न
रजोपदिहैनित्ति।।२।। लिषेसुनेंबाचेनियत· कऊसुनवेको

र। बिजय बिभूति बिसुधमति हरिप्रसाद तिहि होइ ॥३॥ अवर
हि देवउपासना कारन विषया बिसारि तातें नरहर राम कूं सास
उसास संभारि ॥४॥ तैकी नैं नव तव ग्रंथन जो कछु ज्ञान अज्ञा
न कहत बिजय रघुनाथ को द्वै हैं नास निदान ॥ कबित्त ॥ से
षनाग कुंडलि सिराव तन बरति में रतन हो सघन तेल मिलि सि
धु जोति ज्ञानदस दिनेस जहां कौलक मग आधार भाम तुव च
क सुधारीय नयन बात संताव अगर निसि दिवस प्रचारीय
आकास असित कजल अखिल केबी जरत पतंग कुल काकुसथ
राम नरहर सु कहि नव गत प्रदीप क अतुत्त ॥५॥ सवैया ॥ मायामृ
ग मारि मोष्यो बालि सो बली बिदोष्यो सुग्रीव संतोष्यो अंगद
हि अपनाए हैं पारवार मथ्यो सेत बांधि रामेसुर थाप्यो सुक ह
संताप्यो देवतु उनी दिवाये हैं रावन सबंस मार्यो कारी छीनसे
उधार्यो पृथी भारटार्यो तब ऊत सुष पायो है लंक गढ लीनो
दीना बिभीषनें सो पिदीनो अवधेस राम यो अवधिपुर आए है
॥६॥ कबित्त ॥ कबित्त ॥ सबल राम रावन संग्राम चित किंन बिचा
रहि सारद निगम गनेस सेस धरि ध्यान उचारहि कलप को
टि श्रम करहि पार नर पिन ही पावहि सुन हि जथाग्य धनि सुने
र गुनमानु बगावहि मैं कलौ जु कछु अनुसार मति साध सु
कबि पंडित सुनहु करजोरि जोरि नरहर कहति गुर तुम मुहि
सिष करि गिनहु ॥७॥ कलह कि त्रिकाकुसथ कहन मन सा
हस करयो आपस कतिउ न मान अगम कारन अनुसरयो
आकरषन ज्यों उड़ि अकास मसका अन्सास्यो उदधि तिरन
नर कर उगार पुरुषन प्रकास्यो करुना प्रसाद गुरदेव के हित
हि सत मारग लस्यो रघुपति बिलास रन बीर रस है कछु क बिन
रहर कस्यो ॥८॥ इति श्री चतुर बीरत श्रीराम अवतार चरित्र नाम
सार हद नरहरदासेन बिरचितं ॥ इति लंकाकांड संपूरन ॥१
तहुजनचत् ॥ ॥श्रीरामो जयति ॥ अथ
उत्तरकांड बरनन ॥ कबित्त बाच ॥ महा ॥ ॥१॥
अब उत्तर आरंभयो राजतिलक रस रीति पृथीरत्न अरमपन
उरबास निकी प्रीति ॥१॥ कबित्त ॥ महाद्विजन सनमान स

जसिरछत्रधारीय। पारवीररनजयप्रसाद उरहरषवधारीय
लवनासुरवधविहल शत्रुलवकुसउतपने। प्रगट न्यावपसुप
ति करमन्यमेरसुकिनें। कुलराजवरषरंससहसकृत। अपि
लअवधिपुरउथरीय। कीरतिपुनीतिरघुपतिकहन। कविउत
रआरंनकीय।। कवित्त।। दुहा।। सतसुरपतिकेसीसना। वै वे
रामविचित्र। वंधवमरकटनालवनि। राकसमंत्रीमित्र।।१।।
द्विजवंसिष्टगुरआदिदै। वामदेवजाबालि। वालमीकगोतम
विमल। आश्रमप्रतिपालि।।२।। छंद पधरी।। कस्यिअगसति
भृगु अत्रिव्यास। अंगिरा कपिल द्विज दुरवास। मुनि विश्व
मित्र परवत सपेषि। इत्यादिआररिषवरअसेष। उरियेर
मआदरअनंत। सोवेविजयाक्रमपरमसंत।। दुहा।। पारसम
यपरिषदप्रसिध। मुनिआयेसनमान। चारनसिधजुचतुरवि
त। गुनगंधरवसगान।।१।। अथ राम नाम अधिकार पन।। स
त्रघं नवाचा।। दुहा।। सत्रघनपूछिवसिष्टसों। सनामधयसत
र। रामराम यह नामको। कहियेमहतमुनिंद।। वसिष्टव
चा।। यह पितासोंमेंप्रसन। कीनोंहोइककाल। सानिकोउथास्य
र। देकृवताइदयाल।।१।। छंद छपै।। जोग जग्य कीसकति
नजाके। तीरथगमनदानननहीताकें। पुरनिगुरगम्यगाननहीप
ये। नरकंत फिरेकुसंगत्रमायो। बिनुबलउदिमदीनविचारे
तेप्रभुताकोंकोनितारो।। कलबाच्य यहजुगवीतेकलिजु
गमें हैं। तवसववसाधनसिथलसे हैं। करिहैविमसस्कीक
रनी। वारविष्णमनुस्त्रिजातनवरनी।। दुहा।। तवचढिहैकलि
जुगतरन। विनसेवेदविचार। धरमसोहिसवछिनधर। सीद
हिसाधससार।। कवित्त।। त्रिगमपुराननिदान। जवेनिरमू
लनसे हैं। कृत द्विजगोअधिकार। महततीरथमिटिजे हैं। तप
सासंजमनियम। ज्ञानअभ्यासपमुकहि। वरनधरमकुलकृत
विधान चतुराश्रमचुकहि। इत्यादिकरमवसकालके। जगनि
सेषमिटिजाइहैं। कलिकेवलरघुनाथकहि। नामपरमपदपा
इहैं।।१।। जदिनध्यानतपजापं। नियमव्रतदाननसेवो। पित

मतसेवाप्रकार:पुनिभोजनपैबौ: सतसंगतिसेवानसाथ:अथासुनल
छन: भगतिभावपोरुषप्रताव मानेनम्रलमन सांचोविस्वासनरह
रसुकवि तबसबकाजसुधारिहै: करुनानिधानरघुरामको एक
नामउधारिहै॥ छंद ई अघरी कहिहैसुनि होहितचितकोई: है
द्विजवाअतिजकिनहोई: स्हानबरनअबरनबिचारो: पसुपंछीअ
गजगरउचारो: कुंजरकवननेमव्रतकीनो: देवआहयअसोषजुद
नो: कहासरटअजगरकीकरनी: बिदुषपुरानतिनकुगतिबरनी॥
अजामेलकोकरमअराध्यो: सुतहितनाममरतजोसाध्यो: करम
अहल्याअनुचितकीनो: देवताहिताकोपददीनो: गनिकाकहोक
हाजसगायो: निसिकेजागपापबसायो: व्याधकरमकोकोनबड़
ई: प्रभुकेहृतैपरमगतिपाई: कीरकहासाधनथोकीनो: देवक
गेनाजलतरिदीनो: दुष्टकबंधकवनसुधरीनो: करहतकरिग्र
रबजुकीनो: पुनिग्रीधहिकिहितत्वपदायो: लिमरुधिरतिहिप्रभु
उरलायो: कुंभकरनघलमोगतकेवा: दईदेवगतिताकदेवा: के
रकरावनदुष्टत्रिलोकी: बिधिताकीभवकूतिबिलोकी: जगतउ
धारनामसोईजानऊ: बारबारछलछाडिबषानऊ: गहिमनबाचराम
गुनगावे: पतितसुपेपूरनपदपावे॥ दो॥ रामनामपीयूषरस: अ
गरजुबेदपुरान: ताकोनेदसुतगुन: जानतसंतसुजान॥१॥ पा
रमरनकासीपुरीजीवकिऊहूतजोग: हरताकहउपदेसिहे: प्रभु
कोनामप्रयोग॥२॥प्रानीकहिहैहेतपर: मरतरामयहनाम: पापी
महापुनीतपे: मोषलहेहरिधाम॥२॥इतिरामनामअधिकार॥ अथ
दानाधिकारप्रसं॥ श्रीरामबाचा॥ दो॥ नारदराजसीभगतिजु
त: यहपूछीरघुराइ: कहियेपथितदानकी: जैसीबेदबताइ॥१॥
नारदउबाच॥ पापकरैप्रानीपुहवि: जोकछुजानअजान: भूमि
दानगोचर्मगित: पावेनासनिदान॥ कबिता॥ त्रयजवअंगुलइक
मुष्टिअंगुलचवमठीय: षटमुष्टीकरइक समकरदंडअषंनीय:
मुषत्रिंसतदंडमान: गोचरमगिनजय: दसगोचरमप्रमानभू
मिद्विजदीनजुदिजय: तिहिचरममात्रमहिदानतें: होइनबिप
तिबिष्पादबस: सोलहैस्वरगनरहरसुकबि: जगनरहेउजलसु
जस॥१॥दो॥ देवजुषोडसआदिदै: करियतदानअनेक: हैप्रथी
समकोनही: बचनबेदबिबेक॥१॥ दानसकलफलदातहै: षेत्र

पात्रहिनदेखि॰ पैसबतेपूरनपुरुष॰ बसुधादानविसेषि॥३॥ततितुमर
घुकुलतिलकः दानभूमिकोदेऊ॰ लिषेपुरानसुगनलेः अदयपुनि
सुयेऊ॥३॥पा त क दा न॥ आतमपरद्वाअवनिः हरेजुकाहूहेनःता
केपापप्रभावकोः लान्नरकपरिलेत॥४॥अवनीपतिआपाअंनयःप
तिआहकदेतापः कुलनिसानुऊनिकेःपुरुषअनुगतहिपाप॥५॥ह
थीउहिकपलोकके॰ बढतपापविधान॰ ताकेमोचनजलनतहाः नि
गमनिकहेनिदान॥६॥अनलोअतुलअनरथयहः किऊनृपतिनहीक
नः भयाक्षितनातिप्रगट॰ बेरबतारनदीन॥७॥अथ उत मादि कदान
उत्तम॰मध्य॰कनिष्टअरु॰ देवअफलजेदान॰ सोसुनियेअवधेसअव
निरणयकहतनिदान॥८॥ द्विजअहंजोरअचितदिनेः भूजिजथावि
धिपाइ॰ जोकछुदीजेसकतिजुतः उतमदानकहाइ॥९॥ पात्रआनिग्र
हआपनेः समयसहतसनमानः करेजुहितचितचावकरिः देवमध्य
सोदान॥१०॥कीनेजाचेनाकछुः दयोजुपात्रहिदानः ताकहकहत
कनिष्टतवः ग्रंथीनाथप्रमान॥११॥कीनेसेवाकष्टके॰ पात्रदानजो
धरे॰ तातेयहेत्रिलोकपतिः कहतहेअफलकहाइ॥१२॥सातिकराजस
तामसीः नियःत्रय॰विधि॰हैदानः आदिमध्यअवसानलोः पुनिसो
सुनऊप्रमान॥१३॥अ थ त्रि बि धि दा न प्र का र॥ जोरिगोचित्रीयस
सुगतिः पदि विधिमंत्र प्रयोग॰ अपनेकरदीजेउचितः सातिकदानस
जोग॥१४॥कछुजरीजतअन्यकरः मानिपात्रसनमान॰ आलसवायेस्व
यतेः देवसुराजसदान॥१५॥पात्रअनादरहितरहतः हेकछुदीजतजा
हिः धरमसुजसहितहीनविधिः तामसजानऊताहि॥ अधनेईमि
त्तनिस दान॥ कारनकिबानियमकरिः देतमहीपतिदानः निगमक
हतनैमितितेः देवअधिकनित्यदान॥१६॥ पात्रअनादराहितरहत
दानपिछोनिनरेतः जसताकोनहिबढतजगः महिमाधरमसमेत
॥१८॥अ थ अ का म स का म॥ सो र गा॥देवउभयविधिदानः हेव
रततसेसारमहः निगमनिकहेनिदान॰ एकअकामसकामएक
॥१९॥त्यागिधरमकेहेत॰ सम्रसबतात्अकाससेः तेकछुरहतनदे
तः लहतसुपेपरलोकफल॥२॥करिमनइछाकोइ॰ काहूकारनद
नकीयः जगसकामयहजोइः याकोफलबिलसतइहाँ॥३॥ दूहा
॥ कहाँजथाविधिदानकी॰ नारदाजरिषराइ ... म

मतसेवाप्रकार: पुनि भोजनपेबै: सतसंगतिसेवानसाथ: अथ सुन्तल
छुन: जगतिमावेपोरुषप्रताव मानेनम्रलमन सांचोबिस्वासनरह
रसुकवि नबसबकाजसुधारिहैं: करुनानिधानरघुरामकोऐक
नामउधारिहैं ।। छंद ।। ह्ये अघरी कहिहैं सुनिहो हितचितकोई: हैं
द्विजवागअतिजकिनहोई: हानबरनअबरनबिचारी: पसुपंछीअ
गजगउउचारी: कुंजरकवननेमरहतकीनो: देवयाहमअमोघजुदी
नो: कहासरटअजगरकीकरनी: बिदुषपुरानतिनकुगतिबरनी ।।
अनामेलकोकरमअराछो: सुतहितनाममरतजोसाछो: करम
अहल्याअनुचितकीनो: देवताहिताकोपददीनो: गनिकाकेहोक
हाजसगायो: निसिकेजागेपापबसायो: ब्याधकरमकीकोनबक
री: प्रभुकेहनेपरमगतिपाई: कीरकहासाधनथोकीनो: देवक
गेनाजलत्तरिदीनो: दुष्टकबंधकवनसुधदीनो: करहतकरिग्ध
रबजुकीनो: पुनिग्रीधहिकिहितलपटायो: लिमरुधिरतिहिप्रभु
उरलायो: कुंभकरनघलमोगतकेवा: दईदेवगतिताहूदेवा: के
रकरावनदुष्टत्रिलोकी: बिधिताकीनवनहतिबिलोकी: जगतउ
धारनामसोईजानऊ: बारबारछलछांडिबषानऊ: गहिमनबाचराम
गुनगावे: पतितसुपेपूरनपदपावे ।। दोहा ।। रामनामपीयूषरस: अ
गरजुबेदपुरान: ताकोनेदसुनतगुन: जानतसंतसुजान ।। १ ।। प
दमरनकासीपुरी: जीवकिऊकतजोय: हरताकहउपदेसिहैं: प्रभु
कोनामअरोगा ।। २ ।। प्रानी कहिहैं हेतपर: मरनरामयहनाम: पापी
महापुनीतपे: मोफलहेहरिधाम ।। २ ।। इतिरामनाम अधिकार ।। अथ
दानाधिकारप्रसं ।। श्रीरामबाच ।। दोहा ।। नारदराजसोजगतिजु
त: यहपूछीरघुराइ: कहियेपथितदानकी: जेसीबेदबताइ ।। १ ।।
नारदराजबाच ।। पापकरेप्रानीपुहवि: जोकछुजानअजान: सुमि
दानगोचरमगिन: पावेनासनिदान ।। कबित ।। त्रयजवअंगुलइक
मुष्टिअंगुलचवमनीय षटमुष्टीकरहक: सप्तकरदंडअषंनीय
मुषत्रिसतदंडमान: गोचरमगिनजय: दसगोचरमप्रमानम
मिद्विजदीनजुदिजय: तिहिचरममात्रमहिदानते: होइनबिप
तिबिष्मादबस: सोलहेस्वरगनरहरसुकबि: जगनरहेउजलसु
जस ।। १ ।। दोहा ।। देवजुषोडसआदिदै: करियतदानअनेक: है पृथी
समकोनही: बंचतबेदबिबेक ।। १ ।। दानसकलफलदातहै: षेत्र

पात्रदिनदेषि। ऐसवतैपूरनपुरुष: वसुधादानविसेषि॥३॥तातेतुमर
घुकुलतिलक: दानभूमिकोदेऊ: लिषपुरानअनुगतलो: अदयपुनि
सुयेऊ॥३॥ पात्र कदान॥ आतमपरदत्ताअवनि: हरैजुकाहूहेत: ता
केपापप्रभावकों: लाष नरकपरिलेत॥४॥अवनीपतिआगमअनय:प
तिआहकदेतापः कुलतिनसानुउनिके: पुरुषअनुगतहिपाप॥५॥पृ
थीउदिकप्रलोकके: बढतपापबिधान। ताकेमोचनजतनतहां: नि
गमनिकहेनिदान॥६॥अन्नलोअतुलअनरथयह: किऊनृपतिनहीकी
न: प्रायश्चित ताते प्रगट: बेदवतारनदीन॥७॥अथ उत्तमादि कदान
उत्तम·मध्य·कनिष्टअरु: देवअफलजेदान: सोसुनियेअवयेसअव
निरूपकहतनिदान॥८॥ द्विजअंजोरअचितदिन: पूजियथावि
धिपाइ: जोकछुदीजेसकतिजुत: उत्तमदानकहाइ॥९॥पात्रआनिअ
हआपनें: समयसहतसनमान: करैजुहितचितभावकरि: देवमध्य
सोदान॥१०॥कीनैंजाचैमांकछु: दयोजुपात्रहिदान: ताकहंकहत
कनिष्टतव: पृथीनाथप्रमान॥११॥कीनैंसेवाकष्टकै: पात्रदानजे
पाइ: तातेयहैत्रिलोकपति: ह्वतहैंअफलकहाइ॥१२॥सातिकराजस
तामसी: निथ·त्रय·बिधि·हैंदान: आदिमध्यअवसानलों: पुनिसो
सुनऊप्रमान॥१३॥अथ त्रिबिधिदान प्रकार॥ जोरिगात्रीयसु
जुगति: पदि बिधिमंत्रप्रयोग अपनेकरदीजेउचित: सातिकदानस
जोग॥१४॥कछुजदीजतअनकर: मानिपात्रसनमान·आलसवायेस्व
यतें: देवसुराजसदान॥१५॥पात्रअनादरहितरहत: हैकछुदीजतजा
हि: धरमसुजसहितहीनबिधि: तामसजानऊताहि॥ अथनेईमि
तनिसदान॥ कारनकिंबानियमकरि: देतमहीपतिदान: निगमक
हतनैमितितें: देवअधिकनित्यदान॥१७॥ पात्रअनादराहितरहत
दानपिछोनिनदेत: जसताकौनहिबटतजग: महिमाधरमसमेत
॥१८॥अथ अकाम सकाम॥ सोरठा॥ देवउभयबिधिदान: हैव
रततसेसारमह: निगमनिकलोनिदान: एकअकामसकामएक
॥१९॥ त्यागिधरमकेहेत: समरपवताअकाससौ: लेकछुदहानदे
त: लहतसुपैपरलोकफल॥२॥ करिमनइच्छाकोइ: काहूकारनदा
नकीय: जगसकामयहजोइ: याकोफलबिलसतरहौ॥३॥ दूहा॥
...री बिधिदानकी-नारदाज।

तोषत्रति: सुनिश्रीरामसुजाइ ॥ २२ ॥ इति रांम प्र[illegible]रा[illegible]श्री
रा[illegible]रा[illegible]तिलक ॥ कबिरुवाच ॥ दूहा ॥ सुनिबसिष्टदेवगण
मिलि: सुचलछन दिनसाधि: थप्योलगन पंचांगसुध: उतम
रहतउपाधि ॥ १ ॥ द्विजसबहिनआग्यादई: सुनियेलरतस
जांन: रामतिलकअभिषेककौ: परिकरकरहुप्रमांन ॥ २ ॥ मंत्री
राजसुमंतसौं: कह्योभरतसुनकाज: करियेरघुबरतिलकक
म: सकलसमंगलसाज ॥ ३ ॥ भरत: सुग्रीव: सुमंत: सम: मिलि
अंगदहनुमांन: जामवंतजुथपजुथजय: कृतउदिमकल्यांन ॥ ४ ॥
छंद चौपई ॥ इहांकपिनालकपीसपगये: जेबलबुधिउचितउर
आये: सबसरितासागरजलसंगम: समदीपमत्सकामहातम ॥
सरबत्रधिमनिधातजथासुन: देववृछपल्लवफलपुहलन: पत्र
अटारस्तारबनपावन: मिलिपंचांगजथामनभावन: सबतीरथ
केनीरसकारन: आनेतारकनकघटअनगन: औषधमूलीउचि
तअसेषित: दिब्यबुसनजेबिहतबिसेषित: अतिहीरामनगाति
कपिआतुर: बसनषोजिबनबनपतनपुर: उतमबुसनसरब
लेआये: जेबसिष्टगुरमंत्रबताये: जथाअंगनबसिनरांमनिजु
त: आनेसियचरमंत्रयअदनुत: बिधिवतचतुरदंतसितबार
न: गुंजतमत्तकपोलमधुपगन: सुलछनतनबरनसुहाये: बा
जितंगसुराजिबनाये: उमरिकाग्रसमयसितिथिआये: बिहत
बिचत्रसुपीठिबनाऐ: कंन्याषोडसबिप्रकुमारी: स्वरनाभूषन
रतनसिंगारी: प्रतियहथजापताकातोरन: बंदनमालबिचत्रप
त्रबन: कलसकनकग्रहग्रहप्रतिकीनें: नगमनिजटितजुकवच
नवीनें: किंनरगंधरबगांननिरतकर: आनिमिलेमंगलमय
अवसर: बिहतबितांननिसांनसुबाजत: गहरमनऊनांचय
नगाजत: हयगयरथपयदलअनगांनहिं: पूरनमिलिचतुरंग
प्रमांनहिं: सुरमंदिरसबपूजिसजाये: महिमाषेटकदेवमनाऐ
॥ छंद प.द्ध.री ॥ ग्रहग्रहपुरमंगलजुवतिगांन: बाजित्रबिबिध
बांधेबितांन: मूलाग्रसहतकुसपत्रमेलि: तुलसिकपत्रतरु
नरलकेलि: त्रयतीसकोटिइहांअमरआर: छबिअमितबिमां
न निगगनछार: अपछरानृतउछाहअंग: आकासरचेनाटक

अनंग: सब नऐ आनि संचार सिय· प्रभु तिलक समय घरिका प्र
सिय॥ अथ तिलक॥ तहा सुनग हेम साल पुनीत: बैगे बसिष्ट रि
षबर बिनीत॥ करि हरष जथा क्रम तिलक काज· सुन देह धारि सु
रगन समाज॥ दूहा॥ राम तिलक आनंद उर: सुरकपि नर तन सा
जि जहजंगम नव नूतजे: बिधिक भजथा बिराजि॥१॥ छंद पधरी॥
ऊ बरिके पी गिनबे किआर· औषधी सकल जल सो अन्हाइ· सुन मंजन
कीनें राम सीत· परिधान बसन भूषन पुनीत· अपरस हो ममंकलहि
आइ· बिधि जुकत समय भूषन बनाइ· सिंघासन द सरथ नृपति सि
ज· कन क मनि रतन मय तिलक काज: बनि बैगे रघुपति सीया बा
म: का हून रूप रति मन कुकाम: कृत कुंडअग निदीप तिस कज· सि
य समय साजि गुर मुनि समाज॥ छंद बेअषरी॥ रिष बर बेद मंत्र
उचारे· बिबिधि बिधान होम निसतारे: देव जथा क्रम आऊ तिद
नी· कारन उचित जु पूजा कीनी· सांषे स्वार पटे बिधि संजुत· सबे
बसिष्ट गुर ब्रहमा सुत· कस्यो बसिष्ट तिलक सुन कारन· रामचंद्र
मसतक बिज रीरन: मरकत मनि थाल मुकत लागन· मनु जलबि
दपत्र गत पुरवनि: सोर हकन्या सहतसवा सनि: तहा आरती कृ
तत्र हवालेनि: दहां गुर बधू अरुधति आई: करी आरती पूजा पाई·
आरजन निसब त्रेम अधानी· देषि तिलक सु नआसिष दीनी· पुनि
माता सब ओहप धारी: करति गान जुवती सुन कारी· भरत लषन अ
रिघन त्रयनाई: राज तिलक कीनें रघुराई· इष्टदेव के मंदिर आऐ
राज तिलक पाये रघुराये: कुल देबी मंदिर हित कारन: प्रभु कीनें
गुत होम जुकतपन: ससत्र असत्र पूजा तहा साजी: बिधिवत पूनि
तुरथ गज बाजी· दहा प्रभु राजस नाम हआये· बैगे सिंघासनहि
बनाये: तहा सुग्रीव बिभीषन अति हित: जामवंत अंगद समहर
जित: जूथप हनूमान सम जेते· तिलक करे देषत सुष तेते· र
घुबंसी नरपति जे राजा· करे तिलक मिलि मंत्र सकाजा: बरन
चारि प्रभु चरन जु बंदित: आनि तिलक कीनें आनंदित: पर
म आसन दरस प्रभु पाये· औं दरलहि आनंद उपजाए· होत तिल
क ईजादिक हरषे: बिबुध नि बिजय पुहपन बरषे· बसुधा
गगन निसान सु बाजे: गिर कंदर प्रति धुनि मिलि गाजे: बाजे
घर घर नगर बधाये· प्रभु अनघे कम हासु घपाये॥ अथ दो

रहाव
दुनर
बेगे
चक्रने

न।। नियमसबोम पूजि पदगुरगन : ग्रथ महि करे मनोरथ पूरन : नगर
सप्तसत सासन कीने : देवउ दिक्क करि बिप्रनि दीने : सुरत्नी लछ सुभन
सिंगारी : उद्दिक जुकत बिप्रनि अवधारी : असु हिरद रथ मनि आभूषन
ऊरन सत्र परंबर अनगन : अन संष्यात रौप्य कृत अरपन : त्रिसत कोटि
कनक कनुमातन : वृष त्रस हस्र चारि गुन अति बल : हेत हिजन दीने स
जुत हल : तावस हत जो जिहि मन ताए : अतु असिलाष सकल सुष पा
ये : पृथ्वी चक्र जान कुजन पूरन : ताही समय दान कृत करन : सेतछ
त्र सुत कनक दंड करि : सो तित अतिठा लरि मुकता सरि : सत्र घन ल
ये छत्र सोई सोहत : मनु पावस के जलद बिमोहत : बिमल चमर सुग्री
व बिभीषन : धारत दुऊ दिसि महा मोद मन : दरपन ले जुवराज दि
षावत : बिबि मिनु तल छ मन पान षवावत : जामवंत नल नील जथ
क्रम : हनुमतादि सेव जुत संजम : वेत्रपानि दिगपाल बिन्दन : अ
ग्पा नरत करत कृत अनअन ।। छंद ।। आनंद सुर रिषि अपिल : स
मय बिलोकि सुनार : कर जोरि अस्तति कृत : प्रेम मगन सुष पा
र ।१।। अथ ब्रह्म स्तुति कबित ।। तुम ही महा प्रजाद बिस्व कोहि
त बिसतारीय सो पेट रत असेष धरम कारन तन धारीय रजस
त तामस त्रिगुन आप इछा उपजाये : इकते रूप अनेक बरन लछन
जु बनाए अदस्तु अनंत माया अतुल : रामदेव प्रभु रावरी : सुररे
रूलिताम हसकल करुन सो पै बस करी ।।१।। रज गुनते तुम राम
नये बिधि अछि बनाई सततै बिस्नु सरूप बिबिधि कृत पोष
बढाई : ताम स गुन त्रिपुरारि बेष सो फिर तजु बिनासीय : आदि
नम ध्यन अंत : एक तुम ही अबिनासीय : अन बिद्य अनोपम असह
अति : रघुबर छाया रावरी : करनी दुरंत कारन कर : उरधारी सोई
अनुसरी ।।२।। माधव तुम जग मोऊ जगत तुम ही महजानी : चा
रिषा निरकवी सचोक नव ततम मानों : जथा कुंन संत जल संजो
ग : प्रतिबिंब प्रकासत : गगर चंद्र प्रतिमा प्रमान : आन आन
सत : घटन षृ होत महि नीर मिलि : काल काल बिसेष बस सबंध
रहतनर हरसुक बि : सु पै एक आकास स सि ।।३।। तुम ही आदि बर
ह : अषिल अवनी उधारिय : सफर रूप बेद निस हार : षल संष

संघारीय॰ कमठपीठिकाठम्प॰ महामंदिरजन्त्रमायो॰ सुधाकादिमथिपी
रसिंधु॰ अमरनिअचवायो॰ ।नरसिंघफारिथंत्तानिकसि॰ रनहिरनाकु
समारियो॰ वेगरिअंकबालकअवल॰ अरूप्रहलादउधारियो॥२॥वा
मनतनविसतस्यो॰ बांधिबलिदैतविगोयो॰ विप्ररामह्कवीसवार॰ पत्र
कुलघोयो॰ रामतुमहीसंमासरूप॰ रनरावनमास्यो॰ हल्धिरओसरव
उतअसेष॰ थरथरमउथास्यो॰ कृष्नतुमहीब्रजविहरिहो॰ हनि
कंसासरमारिहो॰ कलिअंतकलिकअवतारकरि॰ सबेअसुरसंघ
रिहो॥३॥रु हा॥राममिरतमरजादमहि॰ करतसरूपअनेक॰ सिधि
नयेनरहरसुकवि॰ तुमतेएकहिएक॥१॥अल्लवाचा॥कवितान
गतिअमनजुताव॰ तिलकउधवगुनकृततव॰ सुनेलिषेबांचेस
प्रेम॰ रनबिजईरायव॰ लोकविषेलहिलोक॰ सकलसंतानसु
संपति॰ अयुकित्तिउदिमअमेप्य॰ मनसाविसुधमति॰ अधछेम॰
तनरहरसुकवि॰ अहीजतीकाउगारहै॰ तेइसाधअवारितलभ
तव॰ अनुप्रसादतेपाइहैं॥१॥रुहा॥करुनांनिधिनवगतिकरि॰ प
वतपंथपुनीत॰ तातेउबसागरतिरत॰ नवनवसंतअनीत॥८
तिअल्लसतूति॥अथरंगदिकअमरसकृति॥छंदबेताल॥
जयरामदेवजुदेवरहक॰ अवनिनिरतनअवतर॰ रनमारिदुष्ट
मरंधरावन॰ हेनसुरनुवनरहरे॰ जयनिराकारनिरेहनिरगुन॰
निकरतिनिरंजने॰ जयसकृतिकायसुसकतिसंजुत॰ वरन
नीलयनायने॰ तवमायथावसवहिनिरंतर॰ नागसुरअसुरा
नरा॰ नवनूतनावनवम्नावन॰ चारिवरनचराचरा॰ नत्र
मतनिसिदिनउवत्ताजन॰ करमवसगुनकालके॰ जगदीसदि
ष्टप्रसादजगती॰ जनमुकतनवजालके॰ संसारनासकदुष्ट
सुर॰ नगतदेवीअथनरे॰ रनमोरिहमरपतसुरावन॰ अपि
तपापीउधरे॰ मुनित्रीयापदरजपरसपावन॰ नरपतिननत
वती॰ सिलदेहतजिगोविंदगुनगुनि॰ गई निजपदगावती॥
विधिसतुअमरसुरेसवंदित॰ चरननसचराचरा॰ धजव
जअंकुसपदमअंकित॰ तनमोनिनरसरा॰ [illegible]
सकरकाकर॰ [illegible]

रगनिपाछे· हीसरहतनुपानये:मषन्नागअमरनिरयेमाधव·गंधमार
गुहेमग्रहे: मिलिबिबिधरसबसहवनसुरमुष· रिहृगुहृसदारहे: मष
करेबायग्रसेषदसमुष· नागबरजितहमन्नये· ग्रबपारसोईतक्त
दूरन: मानजुतकरुनामए· सुषहरेजिाहिलंकेसराकस· देवहमत
ग्रेदीन· रनमारिचेरुप्रचेरुरावन: निषलनिरन्तयकीन· तजिग्रासम्र
वरउदासससबते· हेतनबगुनगावही· प्रभुनामन्नगतिग्रतापदूरन·
परमपदसोईपावही॥॥१८॥ प्रभुयहमांगतबाधिपन: न्नयेबिबु
धबरुन्नाग -कीनोदरसनन्नागपकूल। ग्रबचरननिग्रनुराग॥ इति
इंद्रादिदे वस्त ति। ग्रथ रिषसत ति। छंदचेग्रपरी॥ रामनम
मिस्यामतनसुंदर: नीलकमलदलबरनदेहनर: रामनमामिदुष्टद
लदूषन: न्राजितग्रंगग्रंगग्राभूषन: .रामनमामिसिंघासनराजि
त: बामग्रंगजानकीबिराजित॥ छंदपधरी। तुमग्रादिमधग्र
वसानएक· ग्राकाररचनमायाग्रनेक: तुसाधिसुरासुरदुरंत· ग्र
षिलेसरतवमायाग्रनंत: तुमतिहिग्रलिमनमायाउदार· इछासुकरत
लीलाग्रपार: तुमग्रसग्रवनिग्रवतारलेत: हरिसंकरसहतजुदीनहे
त: ग्रनादिकग्रोषदग्रापग्रेस: प्रभुग्रजहेतमायाप्रसेस·उदभिजससि
हरग्रनिलग्राप: मिलिपोषकरमहिमाग्रमाप: नोजनहितपांनीन्र
मिन्नूप: पाचकप्रसिधरुतवहसरूप· जलग्रावकसोषककिरनि
जाल· तवन्नूतहेतदिनकरसुवाल· सरतनप्रन्नाधेरजसुन्नाव: ग्रां
नीजुबहतसोईप्रभुप्रताव· बिधिबिष्णुरुद्रतवतनबिन्नद: सेस
ररचतपालतसछेद: मिलिकालकरमग्रहनिसामान: मिहिरससि
न्नतग्रायुषप्रमान: तुममीनरूपकीनोमहंत· उधारिबेदग्रानेग्र
नेत· यहबेदधरमहेंग्रषिलग्रथीन: महिकस्योप्रगटतनदेवमीन
प्रभुधरमहेतनुमहीप्रमान: ग्राधारउप्राजककोउनग्रांन॥१८
॥ तवमायापेरितग्रगम: नहीजांनतग्रपान: नवतानेन्नूतेन्नू
मत· हैतवन्नतन्नयान॥१॥ दिगपतिसतीकवित॥ दिगर·
छाहिनदेव· हमहिदिगपतिपददीनों: जथानीतिबिबहारजे
ग· क्रतउचितजुकीनों· करमदुष्टनकेसपाप· नबकरतपया
नो· तुवनछांडिदसदिससनीत· नवपरतनग्रानो: काकु
सथरामनरहेहकरि· जगग्रजीतराकसजये: सबररसालनर

बेदरहांछजरपवनि आयोसहतजग्रह:
: हरषविचारजोमध्यहीसे: हितद्विगनीरग्रह:।:
हरसुकवि आजग्रकंटकहमनए ।। अथ बेद सतुति।। कबित्त।।
रह्यौ।।हरि हमहि हरि हेर: दुष्ट बेघासुरदारन। न्रष्टरूपधरधरम ब्रह्म
दिगभूद विचारन: जग्यहोमजपजोग बिप्रविघासविनासी:। द्विजपी
येसूद्रतं होतजितहीतिनहासी। बिब हरचलतन हीवेद विधि रहो
बिरंचिचिंतसोच्चअति कीनीपुकारकारनकरन त्राहित्राहित्रयलो
कपति।।१।।धरमसहाइकधरउधार प्रतिकलप निकीनें: दुष्टिरे
द्विजनदीन देवनिरत्तयपरदीनें: नयेमहातनमीन आपिलगत
निगमउधारे: करमहमकब्यादि बिबुधहितजगतबिथारे क
रुनानिधानविधिवेदके दुसहसूलसंसयहरन: सेवितसहा
इनरहरसुकवि: रामजयतिसीतारमन।।२।।अथ जग्य सतुति ज
हांबाचा।। इनेजुबाहकत्तारहम: रावनकेघरराम: निद्रानेननि
सेननिसि भुवनहीतोजनत्ताम।।१।।सत्तयरहे रहि दुष्टसों: प्रति
छनकंपतप्रान: सोरावनमारयोसकुल नरतनकृपानिधान।।
।।२।।मुकतनयेदुषजालहम: टरेसबेत्तयताप: नयोजहांमंगल
अनय प्रभुरघुनाथप्रताप।।३।। पितरसतुति कबित।। गया
आधकनकुंरु करतजोमनुज उचितकम: अन पिंड तिल उदक
हमकब्यादिलहतहम सुपेअसुरदससीस बाधकीनेंजुकर
मबल: दलकुलजुतरघुदेव घेतमारयोसुमहाषल: हमपितरलो
कसुषपाइहे: कृपात्रिभरघुराइके आनंदपितरगनउचरे कहा
कसुषपाइहे: कृपात्रिभरघुराइके आनंदपितरगनउचरे करु
नाबचनसुनाइके।।१।।गंधरब सतुति। रहा। ऊतेनिपुनसंगी
तहम: गावतनिसगुनग्राम: आनंदामृतपूरिउर: रामतिहा
रेनाम।।१।। दुष्टदसाननडरदुसह: भूलितयेदुषत्ताज: गान
कलासांगीतगति: आईसबसुधिआज।।२।। अगसतुति।।सीस
तपेतुवत्तारसों: पीडितनयेजुप्यास: कतोमहोरगजोरिकर: उस
हटरेदुषदाप।।३।। पृथीसतुति।। सुरनीरूपबसंधरा: करिहि
नप्रनप्रतिकीन: महानारटरिअसुरमृत: देवअनयमहिदीन
।।४।।पसुपहीनवंतनपुनि: जेजडजंगमजंत: कंटकमारयोस
हितकुल रासोदुषदुरंत।।५।।अथ सिव सतुति। छंदत्रो
टक।। जयरामअनादिअनंतरयं: अनबिद्य अपंकअजंअन
यं निरलेपनिरंजननिरंजनयं: अवलोकनतत्रदिगंजनयं

निरनीतनिरामयधरमनिये:वपुनेहसिवेनहरेनबिधे:अघमत्तम
तंगमृगेसमहा:भणितारतिपातकपुंजपहा:नवसागरतारनपोतन
ये:जगतीअघदुष्टसमूहजये:अननीतिनिसासजनीनिरये:महि
जसुताहितअरकमयं:अघपुंजअंधारनिवारनयं:अनषरुसुजोति
सुदीपकयं:अघअरनवहेतसुमेरहरे:इंद्रादिकनावदरीउबरे:
नवनामउपाइनआनतहा:जनत्रासितआमयपापजहा:बनप्रा
पबिनासकृतासबितो:घनपातकघातनबातप्रतो:नवमंगलर
खप्रंजनये:जलधारनिवारनरामजये:बिषीयकृषिउत्तरबात
बहे:दलकूपलसेअखिलाषदहे:रबिकोटिप्रनासुप्रतापरजे:
नगवंतअनंतजुसंतनजे:बिधिकोटिनवंरचनारचनं:जमको
टिबिनासकबेरजनं:बलकोटिप्रनंजनरामबली:थितकोटिसु
रेसबिलासथली:गंनीरथकोटिसमुद्रगनें:ब्रहमंडजुबिग्रहको
टिबने:महिषम्माकोटिकमोहमनं:मिलिसोनाकोटिनवंमदनं:
पदतीरथकोटिसुपापपहा:मिलिसंगतरंगजुगंगमहा:हयमेदसु
रोरवकोटिहरं:कलपतरकोटिनासिधकंरं:गनिकामदकोटिककं
मगवे:चिंतामनिकोटिजुवेदचवे:रघुरामअकामजुरामरसे:बिप
हासंमवेनवचितबसे:रघुबीरसधीरजुनगतिरये:नवसागरपार
सुसाधनये:परसेपदपारसप्रेममये:नवभूतकजोनिसुजोनित
ये:जगपावकपातकरूपदजे:असुरासुरवंदितसंतुअजे:नवहे
ततहाउतपतिनई:मदाकनिमूरतिपुनिमई:श्रुतकुंडलसीसकि
रीटसजे:भुजबामसकामसबामनजे:कमलारतलोचनकार
नयं:मुषबाचसुधासमसतिमयं:पटपीतबिसालसरीरबने:त
डितायनमानऊसोनसनें:करिषग्गबिजेजमदाढकसी:लील
दिसिबामजुचरमलसी:सुननालनुजाजुपचाननसे:कटिसिंघ
अनंगनिषंगकसे:करकंजमहाधनुबानधरे:कृतमानऊकामुक
त्रासकरे:क्रोधानलराकसजूथजरे:हितदेवनमामिनमामिहरे:
हरिबीसभुजादससीसहयो:नवनीतसनीतअनीतनयो:मह
राकसरावनषेतमस्यो:नवरामकृपाभुवनारदस्यो:कृतरेहनरेसदि
नेसकुले:असुरेसअसेसजुमानमिले:प्रथेसनरेसदिनेसप्रना:
नुवनेसबिसेसनरेससना॥ श्रीसिवग्रंथफलाकबिताराम
तिलकउछवरसाल:सुनिपढेसुनावे:पुराकलपकृतपाप:निषलछ

नमारुन सवे: संपति विजयसमेत आयु आरोगि अनंदित- सर्व
देव संतुष्ट वसमे होइ सुवेदित- बंध्या पितु पुत्र पावे विहत: पति सुराग
पद पाए है: सरथा समेत नरहर सुकवि हेत राम गुन गाए हैं॥८॥ अ
थ धरम अरु काम- मोछि वंछ जु करे मन- रहि सिराम सुनि रीझि रसि
कवाचे पारायन- उर विसुध सु विराग- नियम जुत रहै निरंतर जती
हती संजमी- अहीं विषई विराग वर: कृत विजय राम नृपता तिलक
गोमन वाच संतारि हैं। निहचै नरेस नरहर थसुतन- तिहि अवधेस उ
धारि हैं॥२॥ छं०॥ कंतरयु पति अनुषेष को: क्रम सर घ जु तको र-
सुने सुनावे प्रेम सों: हित वंछित फल होइ॥१॥ सो पावे सुष संपदा
आयुरबल जै संग्राप- मरत राम को नाम सुष: सगरे नजन प्रताप-
बिषई विरकत नव बस- राम रूप उर राषि: सा भैरो कं नव सुगम-
सुष पावे सुरसाषि॥२॥ भुत नव नग तिप्र तापतें: कासी वसि निकं
म- सव प्रानन निपर वोधिहो- राम तिहारो नाम॥३॥ सोरठा॥ राम
रामय मंत्र- चतुर अहर नार क अतुल. सो नवत्नत सवतंत्र: अंतक
लै उपदेसि कु॥४॥ छं०॥ करि दरसन नृपता तिलक: सं तुगये केल
स: जिनहि राम रस रूप को- सब विधि उर विसवास॥५॥ कवि ताद
राअवधिपुर आर- निषल त्रय लोक निवासी- देव महोछव तिलक द
षि- अति नगति उपासी: चारन सिध अ सिध- गीत हित विरद जु गए
सुर नि बर षिन त सुमन बिजय नीसान बजाये- पाये निकंटक आप
पद- कमअहअहमंगल करे: कृत बिजय कहत नरहर सुकवि: स
बस सथानक संचरे॥१॥ अथ वीर जय प्रसाद प्राप्त॥ जयते
हगमन॥ श्रीरामवाच॥ छं०॥ कछु दिवस षट मास को: प्रभु
कपि जन की प्रीति- सेवा फल पावत सकल- राजनीति यह रीति॥१॥
राम कहत कपिराज सों- सुनिये सषा सुजान: मेरे कीने काज तुम:
केतिक करों बषान॥२॥ मम हित सुष अह संपदा- सो सब तज सु
आर: कम मन बच सेवा करी- अंगद जुध जयपार॥३॥ सो० छंदप
धरी॥ कबि रुवाच॥ पहरा इस बनि रूपन प्रमान: धरिपोनि सी
सकरूनानिधान: अरपी कुमेर माला सुआनि: प्रभु दई रीझि सुग्री
वपानि॥५॥ छं०॥ अंगद कपि कहं अपने अंग दई अनंत: शि
नव कतां अति वल हगी: सेवक परम सु संत॥१॥ छंदपधरी॥ पुनि
अंगद मसतक दयो पानि: जयवंत जो धअ ति वली जानि: कीने
जविदा कपि सकल कार: जुवराज कि कंधा करउ जार:

सहतअहजोकुबीर‧ सुषसमथभोगबिलसऊसरीर‧ किऊकालक
रऊनयनहिनकोर‧ हमकृपाबसऊनिरसंकहोइ‧ सुनतनाररीमाथे
सनाथ‧ सीयबैरिचली नरनारसाथ॥ दुहा॥ जामवंतदेआदिजे‧
जूथपजूथसुजांनि‧ सबनिदथेभूषनसमठि‧ प्रभुबऊमुलिप्रमा
नि॥१॥ छंदपधरी॥ सनमांनजथाजूथपसजूथ‧ बरबीरचलेबान
रबिरूथ‧ जरजीरनबिजईजामवंत‧ सनमानकऱ्योसोबिदासंत॥
दुहा॥ देवबिभीषनकहदथे‧ आभूषनसबअंग‧ पुनिकीनीमनुहा
रिप्रभु‧ पूरनप्रेमप्रसंग॥१॥ छंदपधरी॥ अवथेसचितेलंकेसओ
र‧ कहिकृपाबचनदसरथकिसोर‧ हितसहतबिभीषनअहजा
ऊ‧ सुषलंकभजऊसंपतिसुभाऊ‧ कुलउचितकरऊकमजुकतकाज
रऊसदलसंजुतत्रिकुटराज‧ मतकरऊसंककेउचितमोह‧ छित
पालऊनवममछत्रछोह‧ करिअनयबिभीषनबिदाकीन‧ देवाधि
देवासिरछत्रदीन‧ नरपतिनिष्पादनिजसषाजांनि‧ पहराइसनभूष
नआपपांनि‧ गृहिराजबालसेवकबिचारि‧ उरलाइउचितबचन
निउचारि‧ आग्पायहदीनीअवधिईस‧ महिथेहजारलुगनऊमहीस
सुषपाइबलऊपुनिहमहिसंग‧ अवककुककालबिलसऊअनंग
कबिरु॥ सबहिनकेकरिकरिसमाथांन‧ प्रभुकरेबिदापूरनप्र
मांन‧ भरतादिकमिलिरघुबीरभ्रात‧ पुहचाइअगरबिनयबिष्या
त॥ दुहा॥ केकंधजुवराजजुत‧ दुहकपिराजाआइ‧ बिजईजू
थपजूथकपि‧ सबअहगथेसुभाइ॥१॥ पारअकंटकराजपुर‧
आइबिभीषनगेह‧ परजागतसंपतिप्रभू‧ बिलसतसहतसने
हा॥२॥ मांगिनछिजआसामुषी‧ प्रभुप्रसादसबपाइ‧ जाकेजीय
बंछितजथा‧ आदरसहतअथाइ॥३॥ रामचितेहनुमंततन‧ पूर
नकृपाप्रचार‧ बरमांगऊबंछितबिहस‧ मारुतिजोमनमांनि॥
॥४॥ देवनिजोप्रभुतांतुलत‧ तीनलोककीलेऊ‧ सबबिधिमारु
तिसंतसुष‧ भुगतऊसहतसनेह॥५॥ मारुतिकहिहनुमंत
सजोरिकर‧ पूरनजहमपुनीत‧ निसदिनरममजीयबसऊ‧ सानु
जसंजुतसीत॥६॥ नेनदरसमुषरामरट‧ हितमुहित्रिभनहोइ‧
यहमेरेअभिलाषउर‧ संततकरियेसोइ॥७॥ रविमंडलजोजे
रिधर‧ रामतिहारेनाम‧ मेरेतनतोलोअमर‧ करऊसपूरनकां

म॥ कबित्त॥ पीयदीनौ सीत हिम्रथम : हितमुकताफलहार : नै
नसैनकृतजानकी : आपारामउदार॥१॥ सीताहरउ तारिसोऽप
हरायो निजपानि : हेतसहत हनुमंतकहु : जनितधरममनु
जानि॥२॥ सीता बाच॥ कहौसीयासुनिपुत्रकपि : अजराहि
सुषजोग : जरामरनबरजितसजय : नवमनबंछितजोग॥३॥
श्रीरामबाच॥ आपादीनीरामयह : तपकरियोहिमवंत : त
केफलजुगतकुअतुल : मनबंछितहनुमंत॥४॥ अथश्रीराम
राज्यप्रताप महिमाबरननं॥ कबिरुबाचा॥ कबित्त॥
सिंघासनदसरथनरेस रघुराम बिराजित : सघनबरनत
नस्याम तडितपटपीतसुछाजित : अजाकोटिदिनकरप्रताप ससि
कोटिसुसीतल मदनकोटिसानामहीप बाढतिप्रतिपलपल राज
धिराजरविबंसरवि : बिस्वरीसममउरबसकु : करजोरिकहतनरह
रसुकबि रूपअनूपमछिगरसकु॥१॥ सुतनसोकसंताप पुत्रपि
तन्नगतिपरायन आलव्याधबेधन जगतत्रयचोरचाटजन अरि
तसोकअनकालअंत नरप्रेतनठाहन : रिपुअनरथनयरहत सक
लकुलचलतसुनाहन चववरनचारिआश्रमअचल : ऐकंधरमव्रत
आचरत : बानीबिचित्रबाचासहत रामराजजनअनुसरत॥२॥
फूलफलतनन्नबाग बिचित्रघटरितहि बिराजित : सुरत्निगुगधव
कुञ्जवत मिघगजवयरनसाजित : सरसरितासंततसनीर. स
रसिजसरसावहिं सदामतमातंग पापफलपापीपावहिं म्रोच
नरकमानुजमाननी बालकगुरसज्यागमन नवनहिंअनय
हालिद्रनय राजरामसीतारमना॥३॥ त्रिविधि रोग कफ वा
त पितसबसहितप्रानसुष : तीनतापनहीतहीं देहनृतिके
विकदुष : समरीतिसंजोग मिलनसलज्ञासुषमूषा चक्रअप
पस्चक अतिहिबरषाअनबर्षा गनिधरमअरथअरुकामगति
सामनसाधसधीरके : सुषवसतलोकबरजितबिसन रूप
राज्यरघुबीरके॥४॥ जरामरनजमजाल नियतसपनेंनयनो
ही संपतिबिद्यासरूप सबोविलसतसदतोही धुजा कंप
चकीविजोग हितकी चितचारी : वयमुगधाअनुनवबिहीन
तोमनिमतिचोरी निरदईपलामीजंतनित : येकसरवनर्ण
अनल सकमारिसारिचोगांनसिर रोपधावयगसी

सबल्लसरिसबलसाज · बिबिधि सरवापीबंधन : कसाधानयहकरनबि
नमसुकतोउरबेधन · आतपत्रदिढ दंड · दाहअगरहिगहिदिजय · वचन
निठुरनबिषम · रुसुनिरलजकिरजय · करियेडरएकअलेषकै · लोभ
धरममनलेगये · बिद्याबिबादवाने बिबुध · रामराजअवरेषये ॥४॥
सहजबातसंत्रमी · रमत होरीदिनगारी · रुनिसदनसंचार · महाछन
कृतमंजारी · स्वरनतेरकहीसुनार · नरछायानिंदित : सहजवक्रगति
सर्प · त्रिषाआतुरचितकचित · बिपरीतअंकमुद्राविहत · बिद्याबिस
नबधारीये · वारनबिसेषअंकुसबहत · हगिजवामहहारीये ॥५॥ स
धनकालरुचिश्रवहि · निषलतुवुअन निरंतर : बहहित्रि बिधिसुष
यात · सगरचवबरनपुनिपर : नृपतिनीतिअनुसरत : सकल बिधिस
नकूलसुर : जथासुरालयकाल : प्रजापतनपुर : पतिव्रतानारिपति
प्रेमपन : येकनारिव्रतपतिअषिल : ककुसथराजनरहरसुकहि
आहिचित्रप्रतिमाअमिल ॥६॥ गमननीचपथनीर · नधुजदालिदर
याबिनु · कामनिकुटिलकराछि · विषमअषलगजबंधन : समद
पनवषेठ · बसीपृथ्वीधनपूरन · पुनिचलेचकुपार अषिलनयेच
जाचिकअरन · करुनानिधानरघुरामको · कृतराजवरननकरे : सु
नमुकतिजाचिनरहरसुकबि · आपकरमकृतउधरे ॥७॥ जयतिरामरा
जेस · महारघुबंसहमेडन · जयतिरामराजेस · षगराकसकुलषंड
न · जयतिरामराजेस · बिजयपंजरसरनाई : जयतिरामराजेस · स
दासुरसाधसहाई · जयरामराजराजेसवर · बसतलोकत्रयवाकु
वल, जयरामसुकबिनरहरसरन : तरनहेतरहिचरनतल ॥८॥ पृथ्वीको
टिपचास · मेरमरजादामंडित · महाउदधिमेषला : सोनिचरअचरअषंडि
त : आनंदितदिगदेव · दसकुदिसिकूणनडोलत : बरषहिपुरुपवस
ष · बिबुधजयजयनत बोलत : नवषंडठडनुवंदेनरहि तपप्रताप
दिनकरतवे · अवधेसराजमहिमाअतुल : एकछत्रमहिजुगवे ॥९॥ स
वैया ॥ इंद्रकेबिलाससुषवास समतानआवे संपदाकुबेरसतस
मनसुनाइकी · कोटिकोटिलासकर · पूरनप्रतापपुंज · पुनिजल
चलेयहमहिमाजुपाइकी : पूरनजगतिकबिनरहरदानपायो चो
पबदीसुजसकहनचितचाइकी : सातदीपसातोसिंधुमध्यबासी
द्वारसेवे औसीरजधानीमानीरामरघुराइकी ॥ ३० ॥ कीयबर्णन
नरहरसुकबि · सकतिजथामतिसंग : सेषसहसमुगजीहसो : आर

नलहतअनंग॥५॥ अथ नर तप्र सन॥श्रीरामपानेप देस नो॥के
बित॥ ऐकसमयऐकांतः रामबैठेरघुराजा ऐकनरतइहिसमय संगते
वकनसमाजा तहमोछिकोतन्न नरतप्रछोमनन्तायो रामऋदयग
तजेरहिसि बिधुजुकतबतायो अधारबिस्वनासकंअघिल मग्रउ
दयरविप्रातके ग्यानोपदेसअगमांमगे जैप्रकासउरत्रातके॥१॥अथ
अमाथलरुन प्रछ तिन रतजी॥ श्रीरामप्रति॥ हा॥साधअ
साधजुसहजही बिधिजुतदेतबताइ नेदयहेप्रछोनरत रामचंद्र
रघुराइ॥१॥अथ साध लछ नरा मबाच॥ केकसतुलिनि
दाकरउ जिनकेसबेसमान उपजे हरघनरोषउर तेप्रांनीमम
प्रान॥२॥संतनिकेलछनसुनउ सीतलसरलसुनाव प्रेमपराय
नतगविपर परहितबचनप्रमान॥३॥छंदइदेअपरी॥कलिकउ
रुषबचननहिनाषहि राम चरनचितनिसचलराषहि परदुष
दुषीसुषीपरसंपति अवराकिलिसुनिविहसहिअतिअति परन
घानहिमुषहिप्रकासत तनमनसुधकुसंगहित्रासत परदारापरध
नपरामुष सबस्कहहिपरमारथकसुष पापहिबरजितधरमपर
यन निसचयऐकनगतिनारायन लानहानिकछुचिततलेषे परब्र
हममयविस्वसंपषे पगवेदेजोधरमप्रबोधे नयरकरेताकनविरो
धे साधसदासबहिनसुषदाई पावहिदुषसुतिबिपतिपराई
सत्रुअजातसाचकेसंगी परउपगारीपुनिप्रसंगी आपतिरेअरु
अवरहितारे ऐसेईमुषतेबचनउचारे जोकोउआरसंगअनुसर
ही कारनाबओपारहिकरही अवगुनकीनेंगुनहिउपाजत लपि
कोउनिलजआपअतिलाजत जसप्रापजीयअतिहिनजांनत अ
नुबिस्वासजुसमप्रमांनत परसुषसुषपरदुषहिदुषारे परअ
पबादमूकपरप्यारे जथालानसंपतिसुषजानें परत्रीयमातस
मानप्रमानें गिनहिसदासमअसतुतिगारी कुरनचंदनजथाकुगरी
मानप्रमानें गिनहिसदासमअसतुतिगारी कुरनचंदनजथाकुगरी

पतिसरपमुष बिषअपार : पेपानजुकरियेहितअहार : सुतबसनछि
रस्त्रीसंजोग : पुनिकरततागरंकनप्रयोग : जारीयनअगरलेअ
गनिज्वाल : तउउपजतसोयातातकाल : षनिपेलि जुरहीयतरी
षर्दंउ : अतिहेतमधुररसतउअषंड : कृतदाहकनकज्वालकरा
ल : तउबदतबानमाहिमोबिसाल : करिबेधनमुकताफलहिके
र : हितकंगानषनतदपिहेर : बफ्रजंतबनोएत्वदि बिसाल : ब
पुर्दकतदपिबासनबिसाल : बिधिजुकतबतायेसमृतबेद : न
बन्ततजुदुष्टदुहन्तेर : इम्यादिबतायेसतुअनंत : श्रीमुषसुन
वअनसंतसंत ॥ ८६ ॥ दुरजनबुरेदुजीहते बिषबाढेपयपान
कुचपरीधरीजलोकजों : पीयेरुधिरप्रबान ॥ ८७ ॥ अथ रामराज
नीतिधर्मबर्नन ॥ संन्यासीस्वान प्रसंग ॥ कबिरुबाच ॥ दुहा ॥
अहमसंन्यासीजातहे मगमहंसोयोस्वान : ताहिप्रहास्योदंउ
तिहिं अनकारनअग्यान ॥ १ ॥ बिकलतयोतिहिचोटबपु : कूक
रकरतपुकार : चरिपरिऊबतक्रमतपे - दुषितआरनृपद्वार ॥
समझिकुजीवनसंचरे : देवनृपतिगुरद्वार : दुषजुतगदोहरि
ते प्रभुसोकरतपुकार ॥ ३ ॥ स्वानबाच ॥ सोवतलोकनचि
तसब : ऐकतरोसेआप : जागतजोअहनिसिसजय : पृथीनाथ
प्रताप ॥ ४ ॥ श्रीरामबाच ॥ दीनस्वानजानेदुषित : लीनोमध्य
बुलाए : आगमकारनआपनो : कहियेस्वानसुनाए ॥ स्वान
बाच ॥ पुरसंन्यासीतनपुष्ट : बिचरततोजनबार : राजरामके
नयरहित : बरजितबयरबिकार ॥ ६ ॥ ऊंसोवतबाजारमह
बसनिद्राअबिचार : कारनबिनुमोकस्यो : पापीदंउप्रहार ॥ ७ ॥
कबिरुबाच ॥ छंद पधरी ॥ प्रभुयहसुनतहीनतपगयो : अ
तुरतपसीकहलेआयो ॥ श्रीराम ॥ तुराबिरकतनहीधरमबि
चास्यो : स्वानबिनाअपराधप्रहास्यो ॥ संन्यासीबाच ॥ सुनि
यहफेरिकहोनिहितापस : बासुरसंध्याऊतोषुध्याबस : याते
अतिऊजातजुआतुर : कीनोसयनपंथमहकूकर : यामसिंय
मेंचितबिचास्यो : पेताकेतयस्वानप्रहास्यो ॥ श्रीरामबाच ॥
संन्यासीतुमअमिलकहीसब : येनप्रमानबातमानेअब : मा
रगसिंयषुध्याअरुतयमन : येतेतापसकहअपलछन : नीति
रामरकयहेसुनाई : राहिबिधितेतापसअन्यारी ॥ बासेष्ट

ती ४१॥ दोहा॥ बसिष्ट बोले गुरबानी: बेद बिदित नृपनीति बषानी: देहि कदं
ड दिज हिनहि दीजे: कूकर कहे सुनो अब कीजे॥ स्वान सद॥ दोहा॥ नी
ति प्रबोधक कष्ट दिज: सो तिन पूछो स्वान: याको दंड जु उचित अ
ब: ऐसो ईक हो प्रमान॥ स्वान बाच॥ तापस कीजे मठपती: हित मेरे
नबहोइ: कूकर यह तिन सो कहे: करो बिचारन को सोइ॥२॥ कबि॰ काक
देपीतपरिधान पट: पुनि गजन्च छिपु ह्वाइ: कीनो मठपति संतु को: सं
न्यासी सुषपाइ॥३॥ गयो सिवालय तापसी: गीत सहत नृत्य गान: तह
करे आनंद जुत: पूजा सहस मान॥४॥ देवालय को द्रिव्य दिज: स
बैषार बिसेष: ताते तिन प्रसाद तिहि: अति सुष बढो असेष॥५॥
काल गिने नद्रिव्य करि: नैनछये धन छाक: तिन प्रमान जाने अग
न: देस बजीय ढाक॥६॥ छंद चौपाई॥ अबिरज परम सचा सहप
यो: बहुरि स्वान सो ई बेगि बुलायो॥ स्वान सद॥ हम हि समझियह
पे कछु नाही: स्वान लोहि मठ तन सह नाही: दिज कह जो मठपति पद
दीनो: निग्रह कि धु अनुग्रह कीनो॥ स्वान उ॰॥ स्वान कहे सुनिये
अब साची: कहि उ आदि अंतन ही काची: द्रिव्य कनेज एक देवालय
अमित तउत गमे षला अतिसय: ऐक बिप्र ताको अधिकारी: बिमल ब
तु रत्नु जद्द व बिहारी: अवनी सुर जब ही को उ आवे: बागे बीरे देव बन
वे: आज पुरुष बीय को रन आई: जटि देवालय उघि घरि जाई: ताव
हीन से पूज प्रकासे: सेवा फल तदपि न हीनासे: मन उपरा जित धन
अन माने: धन पात्र तो जग सब जाने: मेरो पिता परीसा ताको: स
धसु ताव जग तहित जाको: वाके ऐक पाहुनो आयो: निबिधि मग
ति हि पाक बनायो: लीनो मेरो बाप बुलाई: पाक निपुनि कीनो पर
साई: ताके घर को घोल घिता ही: मम पितन षनि असर लिमो
ही: न हार हल करि पितु घर आयो: अति भोस न सुषधायो:
लाउ कर तमो हि गोदी लीनो: रुध नात बेला तरि दीनो: घरा उ
स्रमेरु धन षायो: सो पितु अंगुरी मे लिसिरायो: पिय स्यो घर
त बन घत पपायो: वाको असह धम हआयो: व हपे पी स्न अधि
क अघानो: जो निअनी कनजी सन जानो: ताही पाप स्वानतन प
पो: अब किउ ताग़ि अजो प्रआयो: कछु अपराध रतो नही को
नो: दंड अधिक मे तपसी हि दीनो: अब सो मठ के द्रिव्य अघे है
पुनि कलपांत नियत पद पैहे॥१॥ दोहा॥ अनंमर्ग अनंतो॥

तातेग्यातअगपात : कीजेपरसनअगनिकें : तदपिजरावैगात ॥३॥ कै
अनमेंसकों : करिहैतहनकोर : हतचंद्रायनकरिसबिधि : हे
धतोहीयाश्॥ परसेजोद्विजमरुपतिह : ततोसचैलसनांन : करा
धरम नित नेमकों : पावैसुधि प्रमांन ॥४॥ पत्रपुहपजलफल
ल : दिब्यअनमगदेव : दुसहनरकइकवीसद्विज : सोपरिकरिहै
व ॥५॥ देवमहेससहित्रादिदै : हरैजुकामहेत : तातअधोगतसो
है : महपुरुषनिसमेत ॥६॥ राजासत्यकेत प्रसंग ॥ दोहा ॥ बिक
नृपकीबारता : सुनियेरामसुजांन : अवधिपुरीसोबसतअव
बसकारकेबांना ॥७॥ सत्यकेतनांमानृपति : तोकासीकिउव
ल : सूरप्रतापीधरमधुर : बाचासतिबिसाल ॥१॥ छंद पधरी ॥
द्विजकस्योएकधरमाधिकार : पापीसठदिकबिनापहार : ग
निकानिठुहरंगासंजोग : तवकरैंबिबिधिदासीनितोग : सं
कलपदिब्यमसेअसेष : बिनदयेसुतैबिलसैबिसेष : नृपस
तिकेतदलप्रबलसाजि : बानैतबीरनीसांनबाजि : संग्रामजि
रेहवसबलसेन : मिलिदिवसतोरअधारमेन : तहागिस्योजकि
नृपसत्यकेत : मिलियारसुनरसेनासमेत : संग्रामभस्योतोपु
समथ्य : हरिअहेजदपिजमहूतहथ्य : नृपसत्यकेतसातिकसु
जाइ : जमअग्रकरेजमहूतजाइ : पूछेहूतातआदरप्रमांन : नृप
सत्यकेतकहियेनिदांन ॥ दोहा ॥ जम बाचा ॥ कहियेनृपतिबिचार
करि : अखिलकरमकृतआप : हमहबिलसोगेकहा : पहलेपुनिक
पाप ॥ सत्यकेत बाच ॥ कीनोजममैंनाहिकछु : अपनेजानिअ
धरम : तुमहीकछुजानततो : मोहिबतावऊमर्म ॥१॥ छंद प
धरी ॥ जम बाच ॥ तुमकरेधरमबिप्राधिकार : संकलपदिब्य पूछ
नसार : सोबारदिब्यरंडानिसंग : अतिमत्तचित्तसेयेअनंग : अध
पंथदिब्यतिहितज्योआप : सोपस्योतिहारेमूरुपाप : धनकरम
सुकलपकीन : उपज्योसुपापबिप्राहिअधीन : वहऊतोराजतुम
हीअधार : बसुनीतिक्योनकीनोबिचार : जोकस्योधरमतुमचि
तजांनि : सोईपापपुजउपज्योप्रमानि ॥ दोहा ॥ करिनधरमहै
राजको : दारुनबगडुधार : आलसकीनेतेअखिल : उऊयोबिष
मबिकार ॥१॥ जानेकोकेतेजनम : तजेनरकतिहिरूप : अवधिपु
रीमहबसतअब : पापकेलकेरूप ॥२॥ अथ द्विज पुत्र जीय

तग्रप्रसंग॥ कवि रुद्र वा॥ गाथा॥ क्रतजुगे वर्षकरयं: पुरुषंसत
सहसग्रायपरमानं त्रेताग्रयुतयुरकं: द्वापुरेस हस्त बरषाणि॥१॥
बिहनसबासतवर्ष: कलिजुगग्रायुग्रलपबिधिकरनी: सुषदुष
जीवसमानं: जुगवेकरमतावेणि॥२॥ छंद हैग्रवरी॥ बाननएकग्र
वधिपुरबासी: ग्रषिल धरमषटकरमग्रभ्यासी: बजुतक्रतधर्मे
हग्रतिमाने: पोषनचरनबिसेषग्रमाने: बाननग्ररथग्रायुबीतिजब
ताकेताग्प पुत्र उपज्योतब: ऐकहीपुत्र पिताग्रतिप्यारो: जाकेरेष
तग्रे हउजारो: सोरहसैबरषनिको सुदर: जयोबढै सोतादिन दिन
बर: ऐकदिवस द्विजबालकग्रगन: लीलाबालकरेसुबलछन
घुररनिचलेकरैकिलकारी: मुषदेषे हरषेमहतारी: जोगदेवब
घुकदिनहीजाई: याकहं मीचग्रलपजोग्राई: बालग्रकालमरे
उनबालन: घरकेसिरपीटैरोवेघन: द्विजलेपुत्रघाटपरिलासे
ग्रौनिमृतकनृपद्वारउलासे: राजसनाग्रेगेरघुराई: देवरिषीसुर
तहा सुषदाई: बेदबचनमुनि बिदुष बिचारहि: बिधिजुतनीति
धरमबिसतारहि: ब्रहमादिकसुरसताबनाई: रामसभ्यसो
तितरघुराई: द्विजसोमृतकलीयेनृपद्वारे. पस्योरामहारामपु
कारे॥ बिधिबाच॥ मस्योग्रकाल बालयहमेरो: त्राहित्राहिरघु
नासकतेरो॥ कवि रु॥ ग्रारतिबानिसुनीग्रबथेसर: बोलिल
येतीतरसो द्विजबर॥ द्विज वाच॥ रघुबरगे द्विज नरषवारे
महादुष्टहनकेहितमारे॥ कवि ना॥ बरषसहसदससबिहत पु
रुषग्रायुषपरमानो: त्रेताजुगकेग्रत: चरन चौथेजुगजानो: ब
यसोरहसैबरष: रमतग्रगनकीउरस: कारनकिउग्रकाल
देवलोबालकौलिबस: पितमातकिधुयहबालहू: मनुबिदान
कछुपाइऊ: द्विजकह्योरामसोरोरदुष: हरितोमृतकजराऊ ६
१॥ कवि रुद्र वा॥ दूहा॥ संजुत इंद्रादिकसभा: बेगेरामबिन
त: ग्रौत: मित्र: मंत्री: सुचर: ग्रतिसोचितग्रनचीत॥१॥ श्रीरा
मो॥ कह्योरामजमराजकहि: यहसबजानतग्राप: बालमरे
जिहिनगरमहि: सोधोकेसोपाप॥२॥ करमपितोकेमातकौ:
ग्रातमकृतग्रसराल: कहियेसोनिरधारकरि: बालकमरयो
ग्रकाल॥३॥ कह्योधरमतबजोरिकर: सुनियेग्रवधिनरेस॥

उर जिहि साधत रुद्र तप । सो सिसुघात बिसेस ॥ छंद दोधक ॥ के
तां अंत कलो जो रेकर : यह कारन कहि कुअवधेसर : रुद्रादिक अंत
न तप साधे : धरि अलिलाष देव आराधे । करि मन मांऊ कामना
कोई : हरि उपसाधे तापस होई : करै अधम नर सिला परस कर :
धरम बिरुध करम यहु उरधर : रुद्र करै तपसा तिहि । पातक
कारन यह राम सिसुघातक ॥ दोहा ॥ जहां बिरुधाचरन जग । पु
रतिहि होत संताप । पित माता जीवत अगर । पुत्र मरै किहि
पाप ॥ कबि रुद्र बाच ॥ राम उग्रे श्रोतत सुनि । बिबुध सत्ताबकुरार : अ
त्यारो हित अवधिपति : आप महा बन आरा ॥२॥ आराधत तपसा अ
गम । अनुतहां रुद्र अनुपार : पाद पलें बिन ऊरधपद : सिर नीचे सत
ता रा ॥३॥ मंगल जारे निकर मुष : धूम्रपान निरधार : नासा आनन
नैन मग : येक यहे अहार ॥४॥ कठिन तपसा रुद्र की । यों देषी अवधे
स : तहां पूछे अनुकवन लू : कृत किहि करत कलेस ॥५॥ रुद्र बाच ॥
॥ हेत किलो तिहि रुद्र हनि : साधत तप स्वछंद : देव करत रहीं इं
मन : अति संजुत आनंद ॥६॥ याको मसतं कछे दिरहा : कीनो रा
म कृपाल । ताकहं दीनी परमगति : ऐसी देव दयाल ॥७॥ जीयो त
तछन बाल द्विज : रुद्र मस्यो तपसिय : आनंदे सुर मुनि अषिल ।
अनुलील जु असिय ॥८॥ अथ काकभुसंडि रुद्र को प्रसंग ॥
श्रीराम बाच ॥ कहत राम सुनि येतरत । सायत्रात हित संग : रुद्र
भवानी सों हसि : आगे कही अनंग ॥१॥ अनंगारि संजुत उमा : ये
क दिवस ऐकंत : रामचरित्र बरनन करत : संतु परम हित संत ॥२॥
रुद्र बाच ॥ एक कथा हे रुद्र अति : सेमे कहुं सुनार : काक उपास
क राम को : संतत साथ सुन्नार ॥३॥ कबित्त ॥ बाइस बरष बिख्यात न
थोरक काकभुसंडी : जुग जुगादि जिहि जनम : आयु कलपांत अ
षंडी : रामनाम रटरसनि : नयन छबि राम निहारत : श्रवन राम
जस सुनत : चित हित राम बिचारत : मिलि तये आनंद रघुनाथ
मय : उपजि बाद अद्वैत उर : आनंदमगन बिहरंत अवनि : सग
र गम अगम तीनपुर ॥४॥ दोहा ॥ कारन काकभुसंडको : राम रू
प रस रत : रुद्र भवानी सों रहसि : बिनयो बिषय बिरत्त ॥१॥
भवानी बाच ॥ छंद पधरी ॥ भगवती फेरि पूछो सुवेस : सं
देह रहा मेरे सुरेस : कुकृत कु जीव कुछित कुबास : बिनु बे

रबिहंगबालकबिनास· बिहंगाथमबारसबिदितबेद: षलश्रम
लप्रांनम्रेहीतमेद: रघुबीरपरायनधरमरत: क्यौंहोरुकेहे
कउबाकुचित: रघुनाथकथारतदिवसराति· क्योंनयोक
होबारसकुजाति· कहौलसोरामनामाधिकार: सोजीवन
मुकतिबिहरनसंसार· सबकालनिकटबरतीसमान· स्वामीसोंसेव
सावधान: हरिजनगतगरुड हरिचरनहेत· बिसनरबाहनजगबिजेत·
काकसोंसंगकिहिंनातिकीन: श्रर्थीसछांसिमुनिवरप्रबीन: संत
बननोहिनउचितसोर: हितकाकगरुडकिहिंहेतहोर: श्रनगारि
श्रसंतनकहतयेह: सुनिनाथमोहिउपजोसंदेह॥ रुद्रबाचरुह
संतुनबानीसोंरहसि· उतरदीनोंयेह: सुमोजथामोंजिहिसमय
सबबरजितसंदेह॥१॥ श्रादिश्रंतलोंरहसियह: कहिहोंमीयेस
कोम: सुनरुजमाक्रमदेश्रवन: रूपचरितरघुरामा॥२॥ सतीजुहं
छासुननकी· उपजीनोउरश्रार· धंन्य धंन्यतूधरमधुर: संतुकलो
सुषपार॥३॥ काकनुसंठीगरुडकौ· सुषदमिलनसंबाद: श्रारंभ
सिवकहनयह· पूरनरहितप्रमाद॥४॥ छंद पधरी॥ उमप्रथमदृ
तुत्ररुजनमपार· सुनसतीनांमपायेसुनार: दीनोंतुममोकहं
पितादोन· पुनिनयेमाऊउछवप्रमान· सबनारनसेवासावधान·
संगरहतमोहिमाननिसमान: पितश्रेहजगतुमसोंपपार: सुज
नदेषिसुषनेसुनार: श्रनमोतीपितश्रहगरश्राप· मेंबरजीनदेपि
हम्श्रमाप· मषनयोश्रनादरमनमलीन: देहिकोधानलतुमप्रांनदी
न· पुनिऊतसंगममगनसमाज: करिकोंपजगविध्वंसकाज· श्रति
मलयोमुहिसुनतयेह: दिनरातिदहतबिरहदेह: गहराहनहिं
चितकरूगेर: श्रनचितश्रसंचवनतरीश्रोर: तुमजरीकोंधउपज्यो
संताप· बनबनफुरोलतउंषबिलाप: सरितासरगिरनरष्छसं
ग· श्रतिन्रमीबिरागीश्रंगश्रंग॥ दोहा॥ उतरनागसुमेरकेनील
सेलयहनाम· चारिसिषरतिहिंहेमसय· श्रतिसुंदरश्रभिराम॥१॥ ति
नसिषरनपरचारितर: बटपीपरबिसतार· पाकरिश्रांबसपल्लवित· म
तश्रमरगुंजार॥२॥ तिनसिषरनिकेमध्यतर: सरबरसुषदसमान·
जलश्रगाधविकसेजलज: प्रतिमनिमयसोपांन॥३॥ मीनकमंजे
कौंमकर· बिबिधिप्रकारबिहंग: बनपुहपनिकुंजोरबनि: संग
तगंधसुरंग॥४॥ तरुतरलतश्रहऊजित: सफलसमामयसा
बिधिश्रनेकमहाजंतबसि·

पुर जिहि साधत सुजतप। सो सिसु घात विसेस।। छंद दोधक।।
तां अंत के जो जोरे कर। यह कारन कहि जु अवधेसर। सुरादिक
जत प साधे। धरि अनि लाष देव आराधे। करि मन मांझ को मन
कोई। हरि उपसाधे तापस होई। करे अधमन रसिला परसक
धरम विरुधकरम यह उरधर। सुद्र करे तपसा तिहि। पातक
कारन यह रामा सिसु घात क।। सुहा जहा विरुध आचरन जग
रति हि होत सताप। पित माता जीवत प्रगट। पुत्र मरे कि
पाप।। कवित्त बा चा। राम उग्र श्रोतत सुनि। विबुध सभा न उरार। अ
त्यारो हित अवधिपति। आप महा बन आर।।१।। आराय ततपसा अ
गम। प्रभु तहा सुद्र उपार। पाद पले बित उरध पद। सिर नीचे सत
नारा।।२।। मंगल जारे नि कर मुष। धूम्र पान निरधार। नासा आनन
नैन मग। ये कथ है अहार।।४।। कठिन तपसा सुद्र की। यो देषी अवधे
स। तहा पूछे प्रभु कवन तू। कत कि हि करत कलेस।। ५।। सुद्र ब
।। हे ता कि सो तिहि सुद्र हनि। साधत तप स्वछंद। देव करत है दीद
नन। अति संजुत आनंद।।६।। या को मसन कछे हिर हो। कीनो रा
म कृपाल। ता कहं दीनी परम गति। असी देव दयाल।।७।। जीयो त
नछन बाल द्विज। सुद्र मस्यो तपसिय। आनंदे सुर मुनि अषिल।
प्रभु लीला जु प्रसिय।। ८।। अथ काकभुसुंडि रुद्र को प्रसंग।।
श्रीराम बा चा। कहत राम सुनिये तरत। साय प्रातहित संग। सु
भवानी सो इ हसि। आगे कहीअ नंग।। ९।। अनंगारि संजुत उमा। ये
रुद्र बा चा। ऐक कथा है रुअति। सो मैं कहु सुनार। काक उपास
क दिवस ऐकंत। राम चरित्र बरनन करत। संत परम हित संत।। १०।।
क राम को। संतत साध सुनार।। १।। कबित्त बाइ सब्द्ध विष्यात न
षो इक काकभुसंडी। जुग जुगादि जिहि जनम। आयु कलपा तअ
षंडी। राम नाम रट रसनि। नयन छबि राम निहारत। श्रवन राम
जस सुनत। चित हित राम बिचारत। मिलि तये प्रानर घुनाथ
मय। उपजि बाद अघ तउर। आनंद मगन बिहरंत अवनि। प्रग
रगम गमती नपुर।। २।। दोहा।। कारन काकभुसंडकौ। राम रू
परसरन। सुनत वांनी सो रहसि। बिनयो बिनय बिरत।। १।।
ननी बा चा। छंद पधरी।। भगवती फेरि प्रश्नो सुवेस। स
हे रहा मेरे सुरेस। कुकृत कुजीव कुछित कुजास। बिनु बे

रबिहंसबालकबिनास· बिहंगनाथमबाहरस बिदितबेद: षलअब
लप्रांनअहीसबेद: रघुबीरपरायनधरमरत· क्योंहोसकोहे
कउवाकुचित: रघुनाथकथारतदिवसराति· क्योंनयोक
होबारसकुजाति· कहांलहोरामनांमाधिकार: सोजीवन
मुकतिबिहरनसंसार· सबकालनिकटबरतीसमांन· स्वामीसोंसेव
सावधांन: हरित्तगतगरुड हरिचरनहेत· बिस्वनरबाहनजगबिजेत·
काकसोंसंकिहित्यातिकीन: श्रर्थसंछांमिमुनिवरप्रबीन· संत
मननाहिनउचितसोरः हितकाकगरुडकिहितहोइ: अनगारि
असंतनकहतयेह: सुनिनाथमोहिउपजोसंदेह॥ रुद्रबाचहर
संतुअवानीसोंरहसि: उतरदीनोंयेह: सुनोंजथामोंगिहिसमय:
सबबरजितसंदेह॥१॥ आदिअंतलोंरहसियह: कहिहोंसीसेस
कांम: सुनहुजथाक्रमदेअवन: रूपचरितरघुरामा॥२॥ सतीजुदं
छासुननकी: उपजीतोउरआर: धंनधंनतथेरमधुर: संतुकहो
सुषपार॥३॥ काकभुसंडीगरुडकें: सुषदमिलनसंबाद: आरंसो
सिवकहनयह: पूरनरहितप्रमाद॥४॥ छंदपधरी॥ तुमप्रथमद
त्यअलजनमधारि: सुनसतीनांमपायोसुनारि: दीनेंतुममोकहं
पितादान: पुनितयेअभाऊछउमांन· सबनारनसेवासावधांन·
संगरहतमोहिमानतिसमांन: पितऔहजग्यतुमसोंधपार: सुत
नदेषिसुषतेंसुनार: अनमोतीपितअहगईआप· मैंबरजीतदपि
हगअमाप· मषनयोंअनादरमनमलीन: दृहिक्रोधानलतुमप्रानदी
न· धुनिकुनसंगममगनसमाज: करिकोपजग्यबिध्वंसकाज· अतिदु
षनयोमुहिसुनतयेह: दिनरातिदहतबिरहदेह: गहरांनहीं
चितकहुंगेरः अनचितअसंचबनतरीऔर: तुमजरीकोधउपजे
संताप: बनबनफुलोजततुमविलाप: सरितासरगिरनरवछमस
ग· अतिभ्रम्योबिरागीअंगअंगा॥६॥ उत्तरनागसुमेरकें· नील
सेलयहनांम: चारिसिषरतिहिंहमबय· अतिसुंदरअभिराम॥१॥ ति
नसिषरनपरचारितरु: बटपीपरबिसतार· पाकरिआंबसुपहवित· म
तभ्रमरगुंजार॥२॥ तिनसिषरनिकेमध्यतर: सरवरसुभदसमांन·
जलअगाथविकसेजलज: प्रतिमनिमयसोपांन॥३॥ मीनकमरभ
कीमकर· बिबिधिप्रकारबिहंग: बनपुहपतिचकुंआरवनि: संग
तगंधमुरंग॥४॥ तरुतरलताअरुजितन: सुफलसुधामयस्वाद
बिधिअनेकमहाजंतबसि: बरजितबयरबिबाद॥५॥ रुद्रबाच

॥छंद चौपई॥ काकभुसंडि बसैं तिहि कानन : सरवर गिरिव
सुहावन : मोह मनोजन ही मद माया : छुवे न ताहि काल की छाया :
आये अंतन कलप बितीते : जिहि मग्य कृत अवगुन जीते : तीन कु
ल च ऊंचा छि नितर हर : बास सतगति पासेर घुवर : पीपर छाँहे बे
सि सुष पावै : ध्यान अषंड राम पद ध्यावै : पाकर हेठ जिजप तप प
वन : नियत करत अय पुंजन सावन : मानसी कुंज जा मन मानी : बि
रप आंब तर करे बिष्पानी : बरतत राम कथा बिसतारै : तहाँ जो सु
ने ताहि निसतारै : बास अश्रम आँ बि बिहंगा : प्रतिदिन सुनहि सु
राम प्रसंगा : येक दिवस तिहि सिर आये : प्रगट राम जस सुनि सु
ष पाये : तजा बिहंगम देषि सुहाई : रीझ्यो कथा सुनत रघुराई : पु
नि ऊहे सदेह थरि पावन : बस्यो काल कछु पाप बिहावन : परि षद
ति हिम बसि सुष पाये : ह केलास सिषर फिरि आये ॥ अथ का
कभुसंडि गरुड़ को संगा ॥ बिधि जिहि काकभुसंडि बिहंगम : मि
लि सुषसयो गरुड़ सो संगम : पुन ऊ प्रसंग जथाक्रम सोई : हित
जिहि राम चरन रति होई : नरतन धरे राम रघुराई : देव समय प्र
बल दिषाई : त्रेताजुग मंहनो अवतारा : अषिलेस रघुनाथ उदा
रा : आग्या पित दंडक बन आये : पंचबटी बसि अति सुष पाये : त
हाँ हरी दसकंधर सीता : परम सती अति प्रेम पुनीता : हाँ कपि
पद मंगर ह आये : ले रघुनाथ लंक गद लाये : दारुन जुध म
यो चऊं द्वारे : परि पति उठे बीर संधारे : स्वामि हेत ऊं यो तब रूरे :
परे असुर कपि पोरुष पूरे : याही समय रंद्र जित आयो : सुर निष
चार तिरत सवायो : नाग पास रन संग मनाये : बिहसि राम ल
षमन दोऊ बाँधे : हँसि सीतानत हुगरुड़ हकारे : बिषमुष स
हक्कारि बिडारे : दैत्यो चरित असंतवतु सतर : अचिरज त
यो समातन ही उर : नयो संदेह गरुड़ क हँतारी : बिसमु
य पस्यो बिचारि बिचारी ॥ गरुड़ उवाच ॥ दूहा ॥ नवबंधन ते
राम तजि : नये मुकत तत्व कूत : राम बंधे अहि पास रन : यह
पेष्यो गमअरूत : ॥१७॥ छंद चौपई ॥ येक समय अनवित त
आये : पुनि षगराज सु नारद पाये : मिले गरुड़ नारद मगमा
ही : नयो मिलाप सहज सतता ही : सो संदेह गरुड़ नारद स

बिधिसुतपूछेराजबिहंगम॰बिस्वरामअवतारबिसेषो: देवत
हकछूनहीदेषो॰प्राकृतनरज्योंक्रीलपारै॰रनुवरूछिपरे
गुराई॰मनअवतारहेतकिहिमांनें: सोनारदतुमकहोसयानें
नारदबाच॥तबमुनिपिताबिरबिबताऐ॰ग्यानवंतनिगमगुणम
गये: पूछहुजाइपरमसुषपैहैं: नियतअग्यानसदेहनसेहैं: य
गरुड़बिधिलोकहिआयो॰छोहबढोमनसंभ्रमछायो॰अ
हमलोकसुरसताबनाई: देषीजाइगरुड़सुषदाई: करषगेसअ
नामसकारन: आपापापसबैंगैआसन: कहिरघुनाथप्रतापक
हानी॰गावतप्रेमसहलमुनिग्यानी॥गरुड़उवाच॥कहारामबिलो
कैमांझरन: परेबंधेअहिपास॰कारनकहाअवतारको: सुपेनमे
हिबिसासा॥१॥कलोषगेसबिरंचिकहैं: बिसमयचितबिभ्र
ह॰मेरेमनसंभ्रममिटै॰प्रभुकेकृपाप्रसाद॥२॥बिधिबाचाहरि
बाहनबड़बली: साधपरमहितसुष॰काकुकरमकुबुधि
यह॰उपजैबेदबिरुधा॥३॥कलोबिरंचिषगेसकहैं: अतिसं
भ्रममनयेह॰औसीतोनाहिनउचित: साधनकेसंदेह॥४॥अ
तिबलमायारीस्वरी॰अद्भुतचरितअगाध: बचेनकाकोबि
धम॰जोअसाधजोसाध॥५॥जतीव्रतीमुनिसंजमी: जोगीजप
तअजेव॰सबैनचाऐकरमसंग: छिननररराकेसदेव॥६॥छंद॥दे
अभरीनिहसतहाब्रहमतबबोले॰षगपतिसोमायागुनषे
ले: हहिमोकहबहुबारनचायो: पुनिमैयाकोथाहनपायो: म
बिस्वचराचरहहिनहिबांचे॰नगनकरेकोकोनहनाचे: हथतरनसु
हामोहनीदेवीमाया: छननहीछलतमोतनछाया: मरुषुरुषतुमक्य
हानिबिगोवत: घोसनिसायाकेउबरोवत: रामहिमनुजजानावअ
हमाया: जगतमहाबलतबहित्रमाया: मनभ्रमजोपूछोतुमम
वरषत: दीपकलैदिनकरदिनदेषत: कृतमहिमारघुनाथकेअ
ही: ताकोजतनबताउतोही॥७॥दोहा॥ पचिरहे: सबैसुरासुरसंत॥१॥
उतअगमअनंत: पावतनेदनपचिरहे: बसतउगतअनेकवहि
तरनागसुमेरकि: परबतनीलप्रचंड: बसतउगतअनेकवहि
सुषतहाकोकतुसंड॥२॥ बानिबिहंगाबिहंगकी: समझे
हजसुताइ: उनकोतुमसंदेहयहं: आपुनपूछोजाइ॥

रांम अस्तावजु रूपरस : जगतर है मनतोह : तिनकी महिमा जे दगुन
सिवजानेकैसेाा४॥ रघुबर रूपपीयूषरस, अतिहित जनअषम
गरुवतताकेस्वाद गुन : समऊत काकभुसंड॥५॥ समाधान करि है
सबै : जो तुम पूछउ जाइ : कारन भ्रम रहि है नकछु : सुष हीमिल
तसुभाइ॥६॥ छंद दैअषरी॥ बिनु सत संगन कथा बिहंगम : जाजे
कथा बिना नमह भ्रम : भ्रम जागा बिनु जगतिन जावन : नहि नरां
म अनुराग उपजिमन : बिनु अनुरागन मिटै बिकारा : रहत बिक
रमु कतिभुतिह्वारा : जोग बिराग नग्यांन बिग्यांनो : सबै नांहि इक
नजन समांनो॥७॥ तव ब्रह्मा उपदेस ते सेवक रथ हरिसंत :
आश्रम काकभुसंडि के, आयेग रुडअ विंता॥७॥ सरवर तरगिरनी
लसिर : बेगे सत्ता बनाइ : काकभुसंड अनंत कृत : गुनगावत रघुरा
इ॥८॥ बालक जुवजु वृथवय : सकल बिहंगम संत, काकबचन
सुन राम के, मनकमसुनतमहंत॥९॥ छंद दैअषरी॥ याहीसमय
गरुड़ रहां आये : परिषद बिहंग देषि सुषपाये, बिहसि सतासब उठ
बिहंगम : काकभुसंडि करे अतिथक्रम : आजसलमम षगपति आ
ये : पयोद रसपरम सुषपाये : करि हित अगत स्वागत कीनें : देषि
जथाबिधि आसन दीनें : बाइसबृध गरुड़ षग बोनी : कारन आगम
पूछि कहांनी : बिहसि गरुड़ मृदु बाएक बोले : षगबर अंतर सतावजु
षोले॥गरुड़॥ उपजि संदेह एक मेरे उर : ये ल्यो फिरत लीये मो
हि घरघर : प्रथमें मैं नारद मुनि पांही : नियत संदेह मिटो न तहांनां
ही : तब नारद बिधि पितावतायो : अतिसुष ब्रह्म लोक कुआयो :
कहे तहांमैं मन भ्रम कारन : महा बिचार बिरंचि कीयो मन : गुनित
देषिमो हि आगादीनी : मोहिन ईषग बुधि मलीनी : ऐवरामतुमम
नुपदेष्यो : बिसमय पात कयहै बिसेष्यो॥काक उ॥ रामअस्ताव
सुन कुषगराजा : जाइ कुबुधिसरे मनकाजा॥२॥ रति उपजे
रघुनाथके : चरन कवलबसिचित : भ्रम जाजे उपजे स्नगति : मय
ब्यापिन मित॥१॥ काकभुसंडी रामके : चरित जथाक्रम चीन्ह,
बेद पुरान जुबांच ही, कथा प्रकास सुकीन्ह॥॥ कबिरु॥ कारन र
घुपति जनमको : बालचरित्र बिसेष : तीनलोकलों छत्र नप अनु

लिमराजअसेघ॥७॥कहेउनरनदमकथके: प्रथमसतुतीयप्रकार : हाह
नाथअनाथहम· अबतुमहीआधार॥४॥श्रीभगवानोवाच॥-नाथान
नतवचना: ऐसीनरीऐह: करउरूपसुरलालकपि· ऊधरिऊनर
देह॥५॥कीजेपहक्रमअतनकरि: सबरावनसंघार: कारनसोकत्रिल
कको: नमिउलारहितारहि६॥ छंदपधरी॥ आननमचरितरघुबर
अवध: नवलगेकहनबासरसतुसंग: प्रभुजातमात्रजोजनमकार· को
सल्यादिमोकृतकुमार: बिसतारबाललीलाबिसाल: दीयमातपिता
कहेसुपदयाल: बिद्याबिनोदआरतबीर: सुनससत्रअसत्रधारन
संधीर: रहिसमयेबिसवामित्रआर. संगरामलषनलीनेसहार:
अतिबलाबलाविद्याप्रजेग· सीषेसोईबिसवामित्रसंग: पथजातहु
नीताडकापाप: सोईनईराकसीरिषसराप· वीरासनबेगेजगपवीर: स
प्तदिनकरीरछासधीर: सबअसुरमारजीतेसंग्राम: बयसातबरघर
सुबसराम: आरंतधनुषमषनृपअनेग: सोदेषनबिसवामित्रसं
ग· रसबीरबढेउरहरषराम· सुरकाजचलेबिजईसंग्राम: आश्रम
गोतमहिआनिआप: सोसूनिबिलोक्योरिषसराप: रजचरनऊरि
तिहिसीसराम· धरिदेहदिब्यगईकेतधाम: तबआरराममसुरसरि
ततीर: करिकृपाहकारेनावकीर: सिलदेहअहल्यातजिसकोम:
रजचरनपुरासिउधरीराम: सोचरितदेषिकेवटसुनार: नजिगये
सुलेनीकानगार: उतरिगईसिलापदछुआकास: उतिआरनावहि
मकोनआस कोउनागपउदयकेनयकीर. निकटनरिकेनागरी
तिनीर: रजऊरिपषारेचरनराम: कृतकीरसपूरनतएकोम बे
गरिनबराघबबिनीत: पुनिसरितपारकीनेपुनीत: बिहसातहस
तमगजातबीर: करिकरिचरित्रसुधिबचनकीर: रिषसंगजनक
पुरआरराम: नव धनुषतेजिसीयबरीताम: सीताबिबाहिलछ
मीसरूप: प्रभुतजिहुरासुरगरबरूप: ग्रहचलेरामनीसानगारि
संगपिताअतुलचतुरंगसाजि· रहलोकिपथहिजरामआनि: अनु
मांगतेगकीनोप्रमानि· जुबराजतिलकअसबपजोग: पुनिदसे
रथकृतमंगलप्रयोग· केकईरहछलमंत्रकीन: उपपतिहराम्ब
नवासदीन: रघुनाथचलेउगिछाडिराज: परजागतसंपतिसुपस
साज: संबादरामलछमनसनेह: वतसीयासंगकबरीविदेह· जब
गमनसमयकीनोजुहार: रहमात्रमंत्ररहाउचार: बढिबिरह
नगरबासीबिषाद: मिलिचलेरामसीयकुलअजाद· हाहार

बघरघरनगरहोइ: कारनअनरथनहिजोनिकोइ: सीयरामलषनउगि
चलिसकाज: सुरराजतयोसुरसुषसमाज: पुरसुनीजबेघरघरसुक
र: अबधेसदु:षउपजेअपार: सोमित्रबोलिनृपकहिसकाम: रथजा
ऊबेगलेजाहुराम: सोमित्रआनिरथसमयसंत: आरुहितसीयसु
नुजअनंत: सुतअंगमेरआएसुनाइ: दहानृपतिमादगोहमिल्यो
आइ: सिसिपाइअतिहिसुषहिसांम: रहिगुहिसमेततिहिनिसार
म: जटजूटकरेबटपयसजोग: परपंतआदितपसीप्रयोग: करिकृ
पासुमित्रीबिदाकीन: परचारतरेरथपतजिप्रबीन: प्रभुउतरिगंग
आयेप्रीयाग: नबकूलकरतदरसनसभाग: बलिबालमीकआ
श्रमबिसाल: कीनोतहाफलनेजनकृपाल: पुनिचित्रकूटआगम
पुनीत: बसिकछुकदिवससमलषनसीत: मंत्रीसुमंतफिरिअ
वधिआइ: जरिहृदयसोकनहिबोलिजाइ: प्रभुअग्रअजबेअग्रब्यो
प्रधान: रटिरामरामनृपतजेप्रांन: कृतरामबिरहनृपकसोको
ल: नाहीनमिटेजोअंकतल: अवधेसमरनपुरदुषअसेष: सु
नभरतिजारसुरसंतुसेष: रहाजननिबधुचित्रकूटआर: आन
धेसमरनरामहिसुनाइ: कृमजथाबेदबिधिक्रीयाकीन: द्विजरा
मतिलोदिकपितहिदीन: मिलिमाततरतमंत्रीसुमंत: सबजोरिसु
करकहिसुतरसंत ।। नलीदिकेवाचा ।। अवधेसचलउफिरिये
ह्याज: रघुबंसतिलककरिअवधिराज: जगअवरकोनइहिरजजो
ग: प्रभुकरहुपृथीरछाप्रयोग: कहिरहेसबेमानीनऐक: तहातेजे
नहीरघुनाथटेक: पादुकादईभरतहिपुनीत: बनचलेरामसुरमु
निबिनीत: सिरधारिफिरीप्रभुसुताह: रहाभरतजुनंदीग्रामअ
र: अतिअहआगमनअवधिईस: सुषमिलेमुनीसुरदेअसीस: ब
सतागरहुनबनुनधबिराध: सरतेगजस्योजोजोगसाध: द्विजमि
लेसुतीछनरामदेव: आएअगसतिआश्रमअजेव: राषअगसतिके
देवराज: सरधनुषदयेरामहिसकाज: पुनिकीनोदंडकबनप्रवेस
रहामिलिजटायुपोरुषअसेस: अवधेसपंचवटबसेआर: बिधिजु
कृतपरनसालाबनाइ: द्विजकीयसनाथसबरामदेव: अनेकम
रिआसुरअजेव: इहिसमेइंद्रकोसुतजयंत: सोकाककरूपआयोअ
संत: सरसीकमारिति हितदयसाल: करिअरथअंधकोकेकपाल
पापनीत्रमतपददचिन्हपार: अवलोकेसीतारामआर: सुपनषा

धरीसोसीयहियान:काटेगहिलछमननाककान:षरदूषनराकस
जुरेषेत:सोमारिलयेसेनासमेत॥१॥छंद दे अ षरी॥इहाविरूपसुषन
षाआई:दुष्टछविरावनहिदिषाई:अरुषरदूषनमरनसुनायो:
पतीरावनअतिदुषपायो॥१॥दूहा॥कंटकसुतमारीचके:अरथनि
साचरआए:षरदूषनकोमरनषल:सबेकसोसमझाइ॥१॥मा
यामृगमारीचमृत:बदेविषमविषाद:हरिछायासीताहरी:राव
नबैरविवाद॥२॥छंद देअषरी॥पंषिजटायुपरमपदपायो:निस
चरवधसमूलनसायो:प्रेमजुकतसिवरीगतिपाई:बेदविदि
तजोसमुतवताई:बनबनभ्रमतबिरहसीयरघुवर:सानुजस
दुषआइपंपासर:बरुरिरामनारदसंवाद:मरमेवनायधरमभ्र
जाद:पुनिगिरमूकआगमनरघुपति:मिलिहनुमंतबसीगमह
मत:मारुतिआनिसुग्रीवमिलाए:राममित्रकीनेउरलाए:निस
चयबालिबधनकृतलीनो:देवजथाविधिप्रसयदीनो:हनिब
लिसुग्रीवसषाहित:करअपनेराजतिलककृत:पायोराजकि
कंथाकपिपति:तारासहतसबेसुषसंपति:अबरघुनाथप्रवर
षनआये:छीनिबिरहपरवतसिरछाये:बसितहाबरषासरदवि
हाई:पुनिलषमनकपिलेनपठाये:अवलोकेलषमनकेपउर
कीयआगतस्वागताकपीस्वर:बानरजूथपजूथबुलाये:इहिंप्र
शरदसपरमजुआए:अबसुग्रीवप्रवरषनआए:लेकपिसुनदरा
मपदलाए:सीतापेजनबीरसयाने:पठयेचहुदिगंतप्रमाने
जामवंतजुवराजसमरजस:दछनदिसिपठयेजोधादिसि:इहा
किरुपरवतहनुमतआयो:पेगेविवरनीरतहपायो:सुनिअवना
ररामअवधेसर:जयोसंपातिसपंषीअवसर:इहासंपातिश्री
धसुधिआई:बनअसोकमहसीयाबताई:अबकपिभरसिंधु
तरआये:तहाअपनेबलबुधिबताये:बोलोतबहनुमंतमहा
बल:बेचरकितकमारगवतफल:कपितहांगगनअस
का:लाघिसमंदगएगढलंका:कपिलंकामुहथापटमारी:अ
सकातनयगिरयोमेझारी:आतुरअहअहकिरिअकुलायो:पु
निकपिरावनसोवतपायो:देषेआनिविनीषनमंदिर:मेरेअं
गनतुलछीमंजर:बनअसोकमहसीयाबताई:इहाविनीष
मिलिसुषदाई:आनिअसोकसीयाअवलोकी:सि

महासमेकौ·बनअसोकक पितोरिबिगास्यो·मिलिरनअषेकुमारहि
मास्यो:दससिरकहेउपदेसजु दीनो:कपिलेकागदहाहनकीनो:सि
धुकुदिआयेमारुतिसुत:अगदादिदेअे बलअस्तुत:आयेबीरज
हारघुराई:बेदेहीकीकुसलबताई:सजिमरकटदलसीयासुर
है:अवधेसरसागरतटआए:मिल्यो बिभीषनबहुनमलीनो:क
रासिरदैलंकापतिकीनो:बनचरनिकरबारिनिधिबाध्यो:सेतआं
निपरबतबकुसांध्यो:सेतमूलथपिरामेसुर:जिहिदरसनत्रयताप
मिटेजुर:सेनअगारहपदमनिसंका:लांघिसेतलागेगढलंका:जु
धजेतारबाजिकोजायो:हाबसीगिअंगदआयो:दलकपिल
गेचहुद्वारा:सारमारपरिस्हूरसंघारा:राघूसजबअवसेषरहे
न:बासुरफिर्यो बिलोक्यो रावन:इंद्रजीतरहाआरअचानक
तिरिकीनेसंग्रामभयानक:बहुरिरामअहिपासबधाई:देवनु
लीलामनुजदिषाई:परअचेतसमरसुवपावन:राकसदेषिहि
रषतयेरावन:याहीसमयगरुडसुमआये:मलबिषमुषनिसे
षतबाए:लागीसकतिगिरेनलषमन:प्रानप्रयानकेरपौरुषपं
न:हामारुतिद्रोणगिरलाये:जरीछुवतहीलषनजिवाये:यु
हीसमयजगायेआयौ:समहरकरुतकुंभसवायो:महदुसह
राघवसरमास्यो:हारलंकताकोसिरफास्यो:रोयोदहाममहदुष
रावन:सुरनिसालसुरराजसतावन:लषियननादबिजयकत
लीनो:दुष्टपिताकहथारजदीनो:कपटहोमकंटकसुतकीनो
देवहिते दबिभीषनदीनो:पुनिलषमनरघुनाथपगये:अंग
दहनूबीरसंगआये:मेल्योरथहयजुकतअगनिमह:तिहिपल
गरदजुमंत्रजप्योतह।।कबित।।६।।कीनोरथहोम:बहुरिउप
ओसुमंत्रबल:अगनिकुरहयसुक:जरेनिकसेज्वालानल:ति
नहिदेषिहनुमंतबारिलैअनलबुझायो:बिगस्योहोमबिलोकि
इंद्रजितबाहरिआयो:करिसारमारसिरमरकरनि:कलहम
हारुनकस्यो:करसरप्रहारसौमित्रके:महादुष्टराकसम
स्यो।।१।।छंद दूहे अ परी।।त्रातपुत्रतलीजमहानट:सुरसचिव
जरेनसंकट:हाहपस्योदससिरउरदारन:महासोकसोचत
नहीमन:हाषलमायाकपटउपावे:जोईजोईकरैसुनिफ
जावे:राकसमायारचिरचिरावन:पुनिपुनिपीरेमरअपाव

आनिरायवसोंसमहर:तिरेपचारिपचारित्तयंकर-कछुहि
निरंतरकीनो-दशलोकत्रयसंत्रमदीनो॥सुरबावजूमो
राममिलावत:मोरमहिमहतुषपावत।प्रभुकरतरने
पावन:माथवहमथिरनाहिरहतमन:अवधिनाथतुउ
उतारो:महाराजतुहहिकिंनमारो:अवनिभाररघुनाथउ
चो-मूलउषास्योरावनमास्यो:बिहललोकत्रयवजेबधाये
बिमलसुरत्रीयमिलिगाये-रावनमरनमहोदरिरोवन:
बुधवृंदसुषराजबिभीषन:सीतारामदरससहितसजन:मि
लेसरमाहिंकिकीनोमंजन:कथौबियोगदरससप्रीयकीनो
रुनदिमगगनिबदरीनो:हहसाजिपुहपकरथअयो
चढिरघुनाथबिमानचलायो:अनुक्रमरामअजोध्याआये
बिमलनगरत्रयवजेबधाये:मातभ्रातमिलिघरघरमंगल
जैसेसफरभरतपायोजल:कमनुतजटाबिमोचनकीने
निजतननूपनसजेनवीने:बंधुन्नालकपिसनाबनाई
रामचंद्रबैठेरघुराई:कस्योतिलकअत्तधेमराजक्रम॥
साथसकलमुनिवरगुरसंगम:नीतिधरमनदपकरमानि
रतर:बैठमनीतचलतसीताबर:कीनेमावस्वानादिजके
रै:नीतिधरमरघुनाथनिवेरे:निहलोसुरकरतनपस
धन:बालकजायोतिहिंछिनबाजन:मावपसुपबनिके
कीने:नीतिधरमप्रभुपरमनवीने:पुनिनवधरमचलो
वकुपारन:सबेचलतकुलरीतिसुन्तारन:जनमचरित्र
अनुक्रमजेते:तुमससबसुनेकहेमैतेते:बिवरिरामक
नकवनबषाने:सहसबैदकहिथकेसयाने:जोरनमहहैमत
नजानक:मनअवतारचरित्रनमानक:सुपेप्रकासकरहोपग
सर:ताकेतुमहिंदैहिंप्रतिउतर:काकतुमसकिकहेहुतकारन
मैतुमसोबिनयोबाचामन:नागिउदयममसंत्रमनागे:गरु
उपारनाहसकेलागे:मनकेसबैअगपानमिटाये:नारसमा
प्रबोधबताये:येरघुनाथउअवतारा:जयेमनुजटरनत

वनारा। नियतत्रिलोकनाथतबजानें। पूरनबेदपुरानप्रमानें।
जगतपितामहकेहेनजिनके: कृतकोजानिअनुक्रमतिनके। मे
ममबुधिप्रमानप्रमानें: जगतउधारजितेकछुजानें ॥ महाप
रुषरामप्रतापको: करैसदेहजुकोइ: आगमनिगमनिदानये:
सोपैसाधनहोइ ॥१॥ उपजोमनसंदेहअति: पूरबकरमप्रस
द: मोहितयोतुमसोंमिलन: बिसमयगयेबिषाद ॥२॥ मा
याहासीरामकी: यहतवकृतबिगोइ: सोकाहूबसनाहितरी
रहेसबेरदरोइ ॥३॥ निसाकरेबहुतेषनर: नाचेतैसेनाच: क
नतिहिमायारामकी: सोपैदिवसरूसांच ॥४॥ छंदपधरी ॥
बरनीनजारदेषीबिचारि: कीउब्रह्मादिकमोहकारि: जहा
जहारामबिहरेजथंत: तहातहासंगडोलेतुरंत: जोतीसरूपत
जिकुनजाउ: षिसिपरेभूमिलैलैसुषाउ: इकदिवसबालल
लाउदार: अवधेसककरकीनीअपार: सोबचनभनउरगम
सरीर: सुधिहोतहोतपुलकातसरीर: अद्भुतचरितमायाअ
मान: ममकहउँकछुममबुधिप्रमान: इथीपयेहअंगनपवि
त्र: चवबधूकराहिंसैसवचरित्र: बिसतारबीरबालकबिनो
द: पितमातदेहिबंछितप्रमोद: घनस्यामसुनगसुंदरसरू
प: प्रतिअंगअंगछबिलसोतअनूप: रजीवनैनमृदुचरनराजि
बिबिचिन्हजुकुलसादिकबिराजि ॥ छंदहैअमरी ॥ सासि
दुतिहरितनषरुअतिसोनित: ललितकरनपल्लवअतिलोनि
त: नूपुररनितचारुरवराजे: बिहतबीरकरिसिंघबिराजे: ना
भिगंभीरदुतिरत्नयरेषा: बिबबिमोहकरूपबिसेषा: बाहुप्रलंब
अतुलआयुतउर: सिंघनषरअलतमोहतसुर: अरुनकंजकरत
लछबिअैसे: नषमनोजरथनोदनजैसे: ग्रीवतिरेषबिराजित
गाढी: करिछबिसीवामानहुकाढी: कंधबिसालमनहुबनिके
हरि: अवलोकतसकतमदगजअरि: चिबुकबिंदमेचकछबि
छाई: अंबिललोकसोताजनुआई: अरुनअधरजुगराजतअै
से: सुनगसपक्कबिंबफलजैसे: दोरदोइदंतअरनअधकरय
बचनअमृतमोहतहैबिधिबिध: नासाबिमलकपोलबिरा
जे: स्वासबिलाससुगंधनिसाजे: स्वारदचंदमोहासिप्रकासै

नियतबिलोकितगतनयनासे: कमलदललोचनकुलकांही। मीनम
नऊउछलतजलमाही। जुगलवक्रचंचलभुवजेसे: बालमधुपमा
नऊमिलिबेसे: भालबिसालबनीछबिभारी: राजतस्यामअलकघु
घरारी: तिलकबन्योगोरोचनजेसो। जगजनमनमोहतहेजेसो।
लसतकुटिलभ्रकुटीचलचंचल। पवनचरित्रबिलोकतसतपल। अतु
लितबदनसरदससिभूरन: तेजपुंजद्युतिसमरवितन। नीरदनी
लनवीनबरनतन: कुंचितकेससुदेसस्यामघन। भ्राजतअंगअंग
ससिभूषन। लीलाबालबनीसेलछन: किलकिनहसनिचलनिन
जिचितवनि। बचनबिलासतोतरीबोलनि: नाचतनिजप्रतिबिंब
निहारत: बालकेलिनपअजिरबिहारत: निकटजातकरूपनिहारत
पकरनमोकहहाथपसारत: ऊंचजिचलोधरनमोहिधावहि: प्रथ
पसारहिरूपदिषावहि। आपनहसहिकिकरजबआऊं: पेरोबहिजि
बहरिपलाऊं। आऊजबपरसनपदअंबुज: नाजहिकिरिकिल
कारिमहाभुज। मनुजबालजोचरितमनोहर: करहिराममोसबचिन
वनकर।। दहा।। रघुबरप्रेरितरहिसमय। मायाव्यापीमोहि: ताबी
वसजेसीभई: तेसीकहूबतोहि।।१।। मायाबससबमानेभई। जग
तचराचरजीव। तिहिमायाबसत्रिगुनमय: देहअगुनद्रवि।।२।।
रहेअषंडितग्यानजो: सबहीकेघगराइ: ईस्वरजीवहिभेदतो: के
सेकेकहिजाय।।३।। जेअतिमानीजीवजग: जेमायाबसमानि: सो
मायाबसईसके: नियतकरमगुनषानि।।४।। बिनाभगतिभग
वंतकी: मुकतिहिचाहेकोइ: जेनरपूछबिषानबिनु: जदपिपु
नीहेसी।।५।। जोषोडससिनतऊबहि: सबउडगनमिलिसंग
मोअनेकगिरिदवजराहि: रबिबिनुरजनिनितंग।।६।। मायाव्या
पीमोहिजब: जानीरामसुजान: करतसहायरघुदाससके: भ्रम
नेजनभगवान।।७।। छंद।।२४।। बऊस्योमोहिबिलोक्योरघुव
र: करिकिलकारिपसार्योनिजकर: धरनमोहिऊवरनत्तर
धाये। सुंदरस्यामसरीरसुहाये। मैउडिभाग्योगगनमझारी: रं
मरहोलघुभुजापसारी: ऊजहांजहांउडिनभचढिहास्यो: नाथ
हाथसोतहांनिहास्यो: ऊजबगयोब्रह्मपुरमांही: तउद्वेअं
गुलीबीचतहांही: जोअपनीगतिलोनभगामी: सबआवरन
भेदिऊस्वामी: भ्रमतभ्रमतभयोव्याकुलभारी: हाबलय

औसुनऊउरगारी· जबगतिथकीआपनीजानी· मूदेनेनहरिभेमानी·
रहादेषतअवधिपुरआयो· छोहयो मनसंभ्रमछायो· मोहिबिलोकि
राममुसकायो· उदरमांझमेरेजीयआयो· देष्योउदरमांझब्रहमंड·अ
षिललोकपतिलोकअषंड· सिवबिरंचिसूर्यससिसागर· उरगनस
रितानदीभूधर· नांतिअनेककठाछिनवरूता· अगनितजमसुरमुनि
अवधूत· अगनितकालकरालनागनर· चारिषानिबिधिअछिचर
चर· जोनहीदेषासुनानजानी। बरनमानुनवनूतबषानी· जनमन
बचनअगोचरजोरी· कहिनसकेरचनातिहिकोरी॥ दहा॥ ऐकुए
ककचकूपमह· सतसतबरषबिहाइ· रचनाबिस्वअनेकरंग·तह
अवलोकिअयाउ॥१॥ छंदपधरी॥ प्रतिलोकलोकबिधिभिनपेषि·
दिननाथनिसाकरभिनदेषि· पुनिभिनबिस्नुसिवनिसापाल·बि
करालभिननिसचरबिताल· असुरनरकिंनरऔरऔर· गयेप्र
पंचसबऔरऔर· सबअंडकोसप्रतिनिजसरूप· पुनिअवधिऔर
औरेअनूप· कौसल्यादसरथअवधिराइ· सबदेषेभरतादिक
सुताइ· दहरादेषिमेगेमरगम· रघुबीरनदेषऐकराम· तिमिलोक
लोककोसहतनीत· तहागऐकलपसतऐकबीति· उदरमांझ
सबचरितदेषि· बित्रमपारदेवमायाबिसेषि॥ सोरठा॥ बिह
सिरामबरबीर· ऊनिकस्योमुषद्वारते· प्रभुजानतपरपीर· सरद
करनकारनसमथ॥१॥ छंददोधकरी॥२॥ बिलोकिमोहिमुषभ्र
गे· लीलाबालकरनपुनिलागे· अतुलप्रतापदेषिअधिकाई· सा
तिकउपजिदसाबिसराई· ऊबिहबलछेपस्योधरनिधसि· त्रा
हिआहिकरिकंपमानत्रसि· आतुरराममोहिअवलोक्यो· ऋम
अपनीमायाबलरोक्यो· देवकमलकरममसिरदीनो· लीलाहि
भ्रमसबहरिलीनो· मोहबिगतमोहिकस्योमुरारी· हितदारकसे
चकुषहारी· नियतदेषिप्रभुतारघुनारक· कस्यो हरषमेमन
बचकारक· नयेनेनजलरोमउन्तारा· बिनयकरबऊबारंबा
रा· सहतप्रेममेसबेसुनाऐ· दीनदयालदयादरसाऐ· ह्लप्र
छेप्रभुअयमउधारन· काकनुसहिमागिमनकारन· अनमादि
कसबसिधिअनंतर· सहतनवेनिधिमोषबहुलनसुर· बिरति
ग्यानबिग्यानबिबेका· उरअतिलाषजुहोरअनेका· मागऊंको
कजपेरेछामन· निहचेसबेकरूपतिप्रन ॥ दहा॥ कछु

नुरल न्राम कहे : देन लोकत्रय दान : दीन उधारन हरन दुष : भ्रम
भंजन नगवाना ॥१॥ कलो तुस ऐजो रिकर : ना थर दीन परिनेह : प्र
रन नगति जुग्रा पुनी : देव दया करि देऊ ॥२॥ अव गतिउ चित बि
सुयग्रति : वेद पुरान वषान : जिहि षोजत जोगी जती : नगति देउ
नगवाना ॥३॥ गीरा मबाचा ॥ करुना सुनी तुस रुकी : ऐव मसतक
हि ग्राप : जो दैवी माया दुसह : कोरस तो हिन न्यापा ॥१॥ मायासंत
भक्त मग्रमित : मन क्रम सुमिरत मोहि : देवासुर नर ऊ उपद : कव
ऊन न्यापे तोहि ॥२॥ सुनि बारस सिधांत यह : जो विधि वेद वषा
न : मम माया संन्तव सकल : जीव चराचर जानि ॥ छंद छंद ॥ ग्रप
री ॥ संभ्रित मैं न्त वन्त तस वारे : नष सिष ग्रंग सु न्यारे न्यारे : पुनि
ऊ करन न्तरन ग्र रूपो षन : बोजत दुष सुष तिन के षेन षन : स
व थान निज करम निसारे : पे तिन मो रुम नुज मुहि प्यारे : नव तिन
महं मोहि द्विज है नावत : वेद धरम धरकर मबदावत : तिन रूम
हजो विषय विरागी : ततबादी मुनि संपति त्यागी : तिन महं जेम
म सेवा साचे : ग्रवर ग्रास विसवास न बाचे : तिन महं नगत प्री
यग्रति न्तारी : नीचो होर ग्रान रतधारी : हीन नगति जो बिधि
किं न होई : सब प्रान निसम देषूं सोई : ग्रो पित एक पुत्र बऊ जा
ऐ : प्रथक सील गुन लछन गाए : कोउ तापस कोउ ग्यानी पंडित
कोउ ग्राचारी धरम ग्रसंकित : कोउ सुविस्तर दया परदाता को
उ गुनवंत संत कोउ ग्याता : कोउ धनपात्र दरिद्री कोऊ : हित को
उ ग्रहित दुष्ट किन होऊ : ग्रान प्रकृति गुन लछन गाए : निगम
पुरान जु ग्रगर बताए : जदपि पित कुकरम जाने : जदपि के
ध तिन सकन हि गाने : करे तथा पित्तरन पोषन क्रम : सब पुत्र
नि सो दयाएक सम : पिता कछु जो दिष प्रकासे : नियत तत्तो स
पति सब नासे : जो पित मात नगति हित तत्पर : निहचे सेवक
रे निरंतर : नव सोई पुत्र पिता कहं ताके : ग्रान समान परम
वपावे : पुनि चराचर यह बिधि जोई : ग्रधु
इस ग्रादिक मै सब वेउ पाये : गरगे एगुन
हमि तिमाया : करै नगति मन सा
नारी : जीव चराचर विस्व विहारी :
ग्राने चितन हजी ग्रासा : मति

अंतरकोई॥ दोहा॥ आसनरोसोतजिअवर· नजिमोकहेसतसार : क
कनमपेकालतोहि : संततसाधसुसार॥१॥ सुधावचनप्रभुकेसु
नत : सातिकुलकिसरीर · आंनदनाहिनसमातउर : नयनसप्र
रितनीरा॥२॥ सोसुखजानैमनश्रवन जीहनबरनोजाइ : रामपर
मसुखरूपरस · प्रतिद्रिगलेतअघाइ॥३॥ काकभुसंडआइहि
बिधिमोहिप्रबोधिअति : करिअवधेसकुमार : क्रीडासिसुलागे
करन : नरहरकेनिसतारा॥४॥ करिरूपोसुषनैनभरि : चितयम
नकीओर : लगीभुप्याआंगनलुब्ध : कोसलराइकिसोरा॥५॥ आतुर
जननिबिलोकिइहो : लीनोकंठलगाइ : देविसुतहिकुचदानदे
बकुल्योलेतबलाइ॥ छंदपधरी॥ करिबेषअसुनजिहिसुषदे
काज · रतध्यानरहतनिसनृतराज : निजपुरीनिवासीपुरुषन
रि · रसमगनरहतसनमुषनिहारि : हितरूपनिहारतस्वपनमां
हि : निह्वेसुसुरगसुषगननतनाहि : ऊरलोकालकछुअवधि
मांहि · अवलोकनसुषनहीद्रिगअघाहि : यहचिरतनकोकृति
बोओर : मैसुजकेरघुबंसमोर : प्रभुकेप्रसादबरनगतिप
इ : आनंदमगनकृयेहआर : ब्यापेनमोहिमायाबिखाद : प्र
भुरामकरेकरुनांप्रसाद॥ दोहा॥ तातेअबतेगरुडतुम : संस
यतजकुतर्क : रामनजेत्रमनासिहैं : रजनिउदेज्योंअर्क॥१॥
सोरठा॥ सबनिजमतिअनुसार : प्रभुप्रतापकरुनांप्रगट
कहीजुछांडिबिकार : सोषगेसतुमहेसुनी॥१॥ मैसबनैन
निहारि · गिरमोरामप्रतापगुन : यहजुकहीउरगारि : माया
भ्रमजातेमिटे॥२॥ मैअपनेउनमानि · रामचरितगायोरहसि
जोबिधिबेदनजानि : पैसुरमुनिसांसयपरत॥३॥ आदितुम
हिषगराइ : लीलाउकृतजुदेसलों : पारगगननहीपार : आ
पुहचिगतिआपुनी॥ कबि उवाच॥ दोहा॥ कारनबोयनुस
ठिको · रहासुनोषगराइ · आन्यौरामप्रतापउर : बिसमयबु
धिबिसराइ॥१॥ मायाजनितसंदेहमम : उपज्योहोकछुआ
इ : समरिसमरिअपानसो : पुनिषगेसपिछताइ॥१॥ आदि
ब्रह्ममत्रषिलेसये : रंजानैरामसुजांन : नयेमनुजतनहरन
भुव : नारबिषमनगवांन॥२॥ भ्रमताज्योबाढीनगति : जो
उपदेसनुसंक : रामप्रतापषगेसउर : उपज्योग्यानअपंक

॥छंद पधरी॥ करि काक प्रसंसा हरष कारि: बोल्यो न हरि खेलेषु
नि बिचारि: पूछौ तुसंठि कहं लागि पार: संदेह चित उपज्यो सु तार
तुम साध संत सम मति सुजांन: बिद्या बिबेक पूरन प्रमांन॥ छंद चौ
पयरी॥ संत गिन तुम राम सनेही: हेत कवन यह वार सदेही: पु
नि यह राम चरित्र ग्रपारा: सो कहाल लो जगत निसतारा: प्रभु के
नाल बिलास सु पावन: नि सच यमो हु कुबुधि न सावन: सिव मो
कहंत बचन सुनायो: प्रलय काल हू काल न पायो: महाप्रलय व
ते तव माहीं: निस चय नासत हात न नाहीं: सिव के बचन सुमि
थ्या स्वामी: गिनये कवकुन हि निनगामी: मन कुबुधि मरमे
हन माया: कवकुत वन ही ग्रापे काया: जीव चराचर यह जगग
ऊ: कवनि करम बस काल कलेऊ: मम संदेह होत मन माहीं: हे
त कवन तत ग्रंत गुनाहीं: ग्रापे तुम हि न काल कलेसा: सो कार
न कहि मिटै ग्रंदेसा: यह बल जोग क ग्यान ग्रभ्यासा: नियतक
ल तुम तै जो नासा: जो तुम मुहि पूछी हरि जांनां: निगम प्रनीत सुसु
नऊ निदांनां॥काक बाच॥ जोग दान जप तप भव संजम: बिषय
बिराग सांति इंद्री दम: पूरन प्रेम राम पद पंकज: ग्यान ग्रलेपनी
रज्यो ग्रंबुज॥दूहा॥ राम चरन रत रूप रस: ग्याने चितन ग्यांन
सुष दुष संग निवर्त सब: जीवन मुकति सुजांन॥१॥ छंद चौप
री॥ ग्रैसो यह देह परम सुष मान्यो: जीवन मुकति ग्राप कहं जान्यो: स
मझ्यो साध सब ही मोहि साधन: ऐकै राम भगति ग्राराधन: नीच
ऊ राम भगति जो जानै: बिसवा हि कहि साध बषानै: पार कीरसं
नव सब पेषे: बिमल पटंबर होत बिसेषे: पावन होत तास पार
बर: सुषर सुरंग परिध्यान करत सुर: पार मूल उतपति ग्रपाव
न: गबतन जगत लगे गुन गावन: बिमुष राम ब्रह्मा किन होइ
करे न ताकै बंदन कोई: राम भगत यह तन उरगारी: पावन मो
हि लगत ग्रति प्यारी: ताते कनन तजो यह देही: साध गिनत मोहि रा
म सनेही: नि बिधि जनम ऊ मोहि बिगोयो: राघव बिमुष महद
परेयो: जनम ग्रनेक करम बऊ कीनें: जोग जग प जप दान ऊ
रीनें: जो निकवन जिहि मो फन जायो: यो हि स्तमि स्तमि जनम
गुमयो: दुष सुष सबै करम बस देषे: बिस्व ग्राज लो सुष नू वि
सेषे: मोहि ग्रनेक जनम सुधि मेरे: ताहत हारे १२

रहा॥कथाजुपूरबजनमकी:सोसबकहउँसुनाइ:अबकेसुनियेरे
कवित·रहसिकथाषगराइ॥१॥अथकाकभुसुंडिपूरबजनम
प्रसंग॥कलिजुगतेपहलेकलप:सोअपनेसानार:उजनमेत
बसूद्रयह:अवधिपुरीमहआइ॥२॥छंद॥देखेअपरी।सिवकीतह
करूसेवा:दुष्टन्हावनदीसबदेवा:अतिबाचालउग्रबुधिअ
पुन:दंतकपरमदमनमहाधन:बसोंअवधिपुरजदपिबिसाला
तदपिकुबुधिकुचालकराला:नरकैगिनसाधनसबनासन:पुरु
षनारितहापापपरायन·कलिजुगअसेधरमसबकेरे·गएलुप्त
रिषग्रंथघनेरे·निजमतिकलिमदंतनिनानो:प्रगटकरेबहुग्रंथ
अमानो·चारिबरननहिधरमबिचारहि:बेदबिरूधकरमबिस
तारहि:बेचहिबेदबजारनिबानन:सरबायहिनरपतिप्रजा
सन:आपानिगमनमानेकोई:जगतकरेनावेजिहिजोई:जो
बाचालसुपंडितजानै·महादंततिहितापससमाने:जगबंचकमो
नीरतजोई:कहैसंततासहसबकोई:परधनहारकसुपेसयो
ने:जोईकपटीआचारीजानै:बोलेझूठठोकबहकावै·कलिसे
ईअद्भुतगुनीकहावै·बिनुआचारीसुपेबिरागी:तेईगुनीनिगमपु
थत्यागी:नषजटबालजुकोषबढावे·कलिसोईपरमहंसपदपावे·
करहिजुलेषअभुतनयकारी:नियतजोगरततेईनरनारी:नबी
अतषअप्रेयअतावे:कलिजुगसोअवधूतकहावे:जोतबारबक
नातिहिजानै·महाधनेसबकोसोईमानै·रहतअनेकएकत्रीयरवे·
निसिदिननरमरकरज्योनाचे·द्विजनसूद्रउपदेसदिषावे:बांचे
बेदपुरानबचावे·पूजेसिलाजनेऊपहरे:चाहिकुदानबिप्रको
चहरे:करिकरिबेषअसुनबहकावे:धरमजतीबाहनचढिधा
वे:विधवाबिबिधिसिंगारबनावत:पेसोभागनिबसतनपाव
त·नरपरत्रीयरतपरपतिनारी:आपआपइंछाअधिकारी·
सुनहिनपूतपिताहितसष्पा:देयचंडारद्विजनकहदछा:पि
तामातजोबालपढावहि:सिष्याउदरभरनसमझावहि:ब्र
हमघातनरनारिबिचारहि:हितबिरारबिरधगुरमारहिं:ब
रनधरमजेबेदबषानै:सुनिकलारहूनारकहानै:तैलकउ
पाकोलकिराता:जेइत्यादिकलघुकुलजाता:नासीसंपतिम
गईनारी:जोगीनयेमूडजटधारी:ऐसेमैकलिजुगअव

सोकैंयो॰ रहैनजीवत्रमतअतिरोक्यो॰ भ्रोनसमथकीनेबन
वासीः नासेकछुदिनअैहनिवासीः हसिहसिद्विजसोंचरनपु
जवहिंः आपनेहृनयेअवरनसावहिं॰ बिप्रानिरदारकीया
बिसारे॰ हरिहरिलेतकुदाननहारेः चूकेकलपतधरमचं
लावे॰ औरबिरोधसुपंथबतावेः करहिंबरनसंकरअहंकार
वेमैमथ्यसुनोजनबारा॰ धारहिंकुमतिकुमारगधावहिंध
रमबिरोधरोगदुषपावहिं॥ छंद बेताला॥ बंऊदानदेहैज
नीबिधिबिधिः स्वरनधामसंवाररही॰ बिषीयादिलेपदबिर
तिबिसरी॰ बिसनकामबधाररहीः धनवंततापसग्रहीनिर
धन॰ कुलबधूबिनिकाररहीः अहराषिचेरीकुपथिगामनि
सुनसिंगारसिंगाररहीः सुततबहिलोंपितमातकेवस॰ न
वननामनिवसनए॰ पुनिब्याहिकेत्रीयलेपीयारी॰ यहसु
मरकेउगिगए॰ पितमातभ्रातकुटंबपरहरि॰ सुषनिवासीस
सरे॰ सांच्योसुषारमवारसालनि॰ नयेनिरधनदिनतेरेःन
पसावधानअनीतिनिरनय॰ प्रजादंडप्रचाररही॰ मतनीच
केलेचोरमोषहिं॰ सायमातिसंघाररही॥ द्विजस्त्रमात्रअव
सनतपसी॰ अगरचिन्हसमानिथे॰ मातानतीरथबेदमानहिं
जगअन्यसुज्ञानिये॰ कबिपंडितनसोहितनकारू॰ रीझि
नाहनिसोरही॥ कलिकालधरमबिलोपकीने॰ सुरनिपून
थरसिही॰ परिवारवारउकारहथी॰ मेघधारनमोषही॰ अ
क्रूरग्रासितअवनिआतुर॰ सरसरितजलसोषही॰ बिनुअ
नत्रिनबऊबिपतिव्यापति॰ मनुजपसुतिहिउपमरे॰ मोषि
रतउसहमहामारी॰ सकलप्रानीसंघरे॰ बिहंगसबरततबि
षमबिधिपुनि॰ कपटहगपाषंड॰ मरमोहमारजुदंतअहम
ति॰ व्यापिबऊअहमेंड॰ तहांबदेअबिहितधरमतामस॰
निबुरतामपदंनेः इहिदोषदेवनवरषिअवनी॰ नहिनजा
मतप्रानः बपुरोगपीडितधरमबरजित॰ लोकसुषनाहि
नहैं॰ अभिमानबिषमबिरोधअबिहित॰ समबारीउपस
है॰ सबनयेजातिकुजातिजाविक॰ येकलेनहिआ ॥
करि हीर बा। कीनो दोष कारधः पावलदुप
रहैं।

गतबरनआस्रमधरमधारन ।मिलनतनमनदुरमती: सगुष्टदु
ष्टसदोषनामस: जगतयेजावरजती॥ ॥कबित॥सत्यवृतसत
जुगहि- इतजुत्रेतातपकीनो: द्वापुरअतुलितदान देवदानवन्द
परीनो: जबजे सोजिहिसुनो: सगरतहातेसोपायो: स्वरगमृत
पाताल: सुनजु निगमागमगायो: सथ्था त्रिकाल नर हर सुकबि
संततसाधसंगारिहैं: कलिजुगदुरलरघुनाथको: येकनामउ
धारिहै॥१॥दुहा॥ करैजुकलिजुगमांझकोउ: पुनिमानसिकपा
प: ताकोफलसोपेनहीं: अंतनिपावेआप॥५॥ याजुगकोअधि
कारयह: करहिबिसासजकोइ: रामरामयहमंत्रहि: अंतमुक
ति तिहिहोइ॥२॥ ताकलिजुगमहबरषबहु: इजबसेतिहि
काल: नयेतहुरतष्यनत: भयोबिदेसबिहाल॥३॥ छंदप
धरी॥ जबबसोउजेनीपुरीजाइ: हरिहरसतनमनहुचाइ
पुनिकछूतहांमेबिप्रपाइ: नवजगतिकरोसेवासुनाइ: सिवसेव
क द्विजएकअवरसाध: अतिहितकरैपूजाअराध: परमारथसाधेसह
तप्रेम: नीहैनबिस्नुदेवहिसनेम: सगकपटककरतहासेव: द्विज
सोदयालनवलिष्योतेव: करिपुत्रमोहिअतिदयाकीन: पुनिसु
बपढाइबिद्याप्रबीन: अरुहमंत्रदीनोअनेक: उपदेसबिबिधि
बिधिकरिबिबेक: जपकरोसिवालयनितजाइ: सोदेनहृदयप्र
हमितिसुनाइ: हनीचजातिमनअसितमोह: हरिकरोबिस्नुसो
महाद्रोह: निजसाधदेषिममजरहिनेन: चितबढेद्वेषउपजेअ
चेन: गुरकरैमोहिदिनप्रतिप्रबोध: कुलकेसुभावतउचढेक्रोध: क
पटीकैनीतिहिकहाकाम: रसकामरतनहीतजेराम: एकबारमो
हिगुरलीयबुलाइ: सबनीतिपरमबिधिबिधिसिषाइ॥ गुरव
चा॥सुनिपुत्रकहुएकपरमग्यान: निरधारहुप्रमानिदान: आर
धकहफललहेएह: सुतबढेबिस्नुचरननिसनेह: जेहिबिस्नु
तजहिसिवब्रहमसाध: अरुकरहिजीवथिरचरअराध: जि
हिबिस्नुतजहित्रयपुरबिष्यात: बहुस्योनरपामरकितकबात
॥दुहा॥ हरपूजकहरद्रोहकर: पावैसुषनप्रमान: संबतसाढि
सहस्रलों: नरकहिकीरनिदान॥१॥ हरिसेवासतगुरकही: जा
गीममउरज्वाल: यहअनीतिसुनिअतिअसह: नाप्रेक्रोधकरा
ल॥२॥ कबहुप्रबोधकुजातिकह: हितसिष्यानसुहाइ: बाढे

अहिमुष विषमबिष· कोउपयपानकरा२।।३।।छंद पधरी।।काक
वाच।। पाईकुजाति बिद्याअमांन: इंगवदी मोहिअहमिति अमां
न·अधिकार बिसुजब सुन्मोऐह: लगत तेबाढ्यो मन संदेह: घरि
घरि बिचरो गुरहि घात: बिषलगी मोहि सो सुनत बात· पावेकु
जाति जिहि ते अमांन· दुष्टति हि म्लछ बोवे निदांन: चितमोहिज
हिपरेषी कुचाल: कछुकरिन क्रोध दरसी त्रिकाल: पे धर्मअगति
तेजनमपाद्र: बादेसु आपअग निहिबुझाइ: गुरमोहि सिषावे नि
त्यपांन· सोलगे सुनतमोहि बिषसमांन: इकदिवस सिवालयज
पतजाप: वहि समयतहां गुरआइआप: मैं उठिनकरेआदर अ
जान· अतिही दयाल गुरजीय नआंन· अवलोकि अनादर गुरुअ
नीति: पैसहिनसके सिवधरम नीति· ननबानि नरीत हां सिव
निकेत· सिवनिगमसहाइक धरमसेत:।।सिव बस्वा इहा हेत
वगुरउरकोधन हि· द्विजसोई साधदयाल: अनुचितअतिहिअ
नीतियह: सहिन रुद्रउरसाल।।१।।तातैं ऊं सरापतो हि: मेसो
कलोमहेस: नीति बिरुधनक्रमक्रम: उरबाढ्यो अदेस।।२।।कंरत
तोकहैंइकछु: औहतने अपराध: नहि होइ तेपथ तव· सहिनस
केसुरसाधअत्र।।करैअनादर गुरनिको· अथ वागरवअपांन·
नजैसुरारवनरकतव: पावेसु षनअमांन।।४।। मिलेसुतिरज
गजोनिमह: प्रयतजनमतिहिपाप: पत्योरहे बिनुजनतव· सी
पैअजिगरसाप।।५।।महाबिटपकोटरबिकर: तामहवसिहै
जाइ: रैअधमाधम अतलों· पापी अधगति पाइ।।६।। बाईसब
चग।। ममगुर हाकरि मलिनमन· सुनि सिवदारुन आप: मह
सकंप बिलोकि मुहि: पायो द्विज परिताप।।७।। करि प्रणाम गु
रजोरि कर: सिवसनमुष द्विजसंत: येअनादि अबगति अमि
त: अस्तुत रूप अनंत।।८।।छंद त्रोटक।। गुर प्रणीत।।सिव
सत्कृति।। सिवदेव नमामि सुरेस सुरं· अबिलेस महेस रिपं
असुरं· त्रयमूरति व्यापक एकृतनं: जगदीस सहाइक संतज
नं: निर्गुणतम सतरज तमस: इतध्यान बिग्यान सुजोग रसं
ॐकार उदार सुभार अरे, संसार बिकार हरे सगरे· महिकालहि
काल कपालकरं: धर जोग प्रयोग त्रिसूलधरं· गुनवारनपार
संसारगती: हिमवंतसुता प्रीय प्रांनपती: पहार तुषारसरी

रभ्रता: न्रतेसरमेंलितन्रतसन्ता ।। छंद भुजंगी ।। नसैसीसगंगाजुर
जुरं लागी: जस्योकामतीजेनयनआगिजागी: चलंकुंडलेन्रूलतासी
भन्राले: सुधाआवकंबेननैनं बिसालं: बिरूपंबपंबिसहारंबिका
रं: सहासंनुस्वामीसंसारसधारं: रदंनंछदनंबिंबरातेबिराजे: सु
षंचंद्रहासंरदंबज्रराजे: धृतेनीलकंठंमहारुंडमाले: बलेबाहु
दंडंप्रचंडंबिसालं: उरंआयतंमध्यनागंमृगेसं: पदंपंकजंसाधं
बंदेसुरेसं: धरेस्वेतबिभूतित्रिसूलधारी: बनीअद्धिजावामभा
गेबिहारी: मृगाधीसचरमंसुत्रंदेहमाने: कपरीपरंक्रुसनाजि
नंकोपयानं: प्रसनंबदनंमनीधारमाला: करंकोपरंधारमनुजं
कपाला: प्रचंडंप्रताकोटिभानंप्रकासं: बिरागीबिनोधानउद्या
नबासं: अजंलगअहिफेनमन्नअनंतं: नवेमतबीजंसुजगतीजयं
तं: कलकालक्रूरंसकलातकत्री: हरेंहलनीलात्रयंतापहर्ता: सि
वंसांतरूपंसदासाधसंगं: अकामंसकामंसदाहंअनंगं: कृपासिं
धुसोभाचिदानंदकारी: हितंसाधसंसारसंतापहारी: नतोहंस
दाईसअवधूतअंगं: पिनाकीप्रीयंजोगज्ञानंप्रसंगं: हरेनाथअन
थपापोघहारी: बिग्यानंबिधानंमसानंबिहारी: जराजनमदुषं
बिसेषंबिनासी: निराकारआकारकैलासबासी: नज्ञानोमयं
गंनजोगंनजापं: प्रीयमेसदापादपूजंप्रतापं: प्रभुपुनिपूजा
करूंनित्यप्रेमं: महादानमांगोयहैं कृस्नवेमं ।। दोहा ।। कलासत
न्रमहेसको: नरहरमतिअनुमान: काकभुसंडीगरुडकहें: भूर
बकथ्यापमान ।।१।। द्विजकीदेषीदीनता: प्रभुन्रतेसअपार: पुनि
तहांकीनोंकरिकृपा: नभबानीनिरधार ।।२।। श्रीसिवबाच ।। मांग
उजोकछुमोंझमन: द्विजकृतयोंदयाल: हितप्रनिलाषापूरिउं
कलोन्रेवसकृपाल ।। विप्र बाच ।। प्रभुतवमायामोंकपरि: य
हजुत्रम्योअग्यान: यातेउचितनकोयअब: न्रतेसरभगवान
।।४।। येप्रभुसूद्रकुजातियह: मनमायाभ्रममान: कलोजुयह
अपराधकछु: नियतछमउभगवान ।।५।। श्रीसिवबाच ।। मैंदे
ष्योपरमारथी: बानननतेहिबिसेष: कृतअकमयासूद्रके: सो
मेंषमेंअसेष ।।६।। सोरठा ।। स्वलपकालममश्राप: सोपेहोय
निवरतसब: यहद्विजजानउआप: काजसिधयासूद्रकी ।।

।।छंद पधरी।।जो दयो आप मै दुसह जोनि : नही वृथा होइ यह सत्य
मानि : इक सहस जनम दुष देषि आप : सो पै निवरत पुनि होइ आप
नवन ऐ जु अंतर ध्यान नाव : कहि बिप्र सूद्र सोय हकहाव : ऊ
काल करम प्रेरित कराल : बिंध्याचल मरव सिनयो भाल : जो न
नमल रूव सकरम जोग : पुनित जो दुष सहि अप्रयोग : रहित
तिन जे तन धरि अनेक : बिसरयो न ग्यान पहलो बिवेक : जिहि
जिहि जोनि महव सो जाइ : सुन राम कथा ति उपजे सुनाइ : पुनि त्र
मत जोनि द्विज जनम पाइ : सब जाति दुलभ निगम नि सुनाइ : बड
लें उसंग बालक बुलाइ : सुन करे राम लीला सुनाइ : पुनि समु
झि नई कछु अवधि पाइ : पितमो लिति हा बिद्या पढाइ : बासना गइ
सब चित बिकार : सो ईश राम प्रेम त्रुटव सो सार : ऐसे अगपत के
धो अनेव : सुर धेन छांडि करि षरी सेव : रस राम मगन है दिवस रा
ति : सुष अवर न कछु बिद्या सुहाति · हमि रहे मात पित सबे हारि : बि
धान कछु पाई बिचारि · पित मात जबे पंचत पाइ : यह समय जबे
ग्यान आइ : जिहि जिहि सुथान मुनि लहो जाइ : सुन राम रूप
पूछे सुनाइ : गुर सबे बतावे यह ऐ पान · सरब मय राम आप कहु
जान : निरगुन हि चित मम लगे नाहि : मन रहो अट किछु बिस
गुन माहि : रघु बीर चरित गाऊ रसाल · बन बन हि फिरू परव
त बिसाल।।दृहा।।मेर सिषर बट छाअ बर : लोमस आश्रम अ
ति : रिषद्र रसन कीनेर हसि : पुनि लागे पाइ।।१।।लोमस पू
छे सब निकट ले · कारन आगम काज : कहे तबे मै जोरि कर : सुनि सब
सिध समाज।।२।।जो निपुरातन मुनि जथा : मै बरन्यो स्रुति सार
कल्ह माऊ रघुनाथ को : ऐकन आम आधार।।३।।सगुन बषाने
मै समुझि : मुनिवर निरगुन मानि : रहो छन लोमस के रहो : उर रि
स उपजी आनि।।४।।साधनि के का समय : उपजे क गिन कप
र : मो चेदन के संकजुग : अतिघ सिअगनि उगर।।५।।लोमस
बाच।। याते लोमस के अधिक उग्र क्रोध उर आनि : मै उपदेसो अ
गुन मत · मूरष सुते न मानि।।६।। प्रति उतर उतर अगर : करत म
हि तजि कानि : तब आरस जो न यत्र सत : मन बिस्वास मानि।।७।।तु
तेवा रसहि फुत : करम कर ऊबऊ काल. ल.
ल : चहु दिसि बिहग चेहाल।।८।।काक बाच।। ऽ

आपमो: दारुनदुसहदुरंत: मिटैनसोमानवअमर: जोनावीतगवं
त॥१॥नवलिनयोलंकाकतन: मनकछुकोधनमानि: नवजेसी
नवतन्मन: ऐसीनईजुआनि॥१०॥ छंदः अपरीरिवत्वन
नाहिनषगराया: महाप्रबलरघुपतिकीमाया: दारुनमतिलोम
सकहंदीनी: नाथप्रतीछामेरीलीनी: मोकहंरामदासनिजमानो:
यहमतप्रभुलोमसउरआनो: द्विजतबमोहिसाधअतिदेषा: बि
गतक्रोधबिस्वाससबिसेषा: मोकहफेरिकहेतबलोमस: बि
प्रकोसोसोबिहतदयाबस: करीकृपापरितोषनकीनो: द्विजमो
हिराममंत्रतहांदीनो: बालबिलासध्यानजोरघुबर: पेमोहिक
होरिषीसदयापर: कछुककालमुनिराषेंमोकहं: नारकरां
मचरित्रकहेतह: सुभप्रभावजुबेदनिगाए: सबरघुबरकेमो
हिसुनाए॥ लोमसबाचा गुरउपदेसरामगुनगावहु: सोनअ
साधहिनलिसुनावहु: अकथगतिरामनगतिउरओहैं: नियत
सबेदुरबुधिनसेहैं: हितजुतरामनगतहकोहैं: इछामरनपर
मपदपेहैं: तुवआश्रमजोजनदसताई: सदाकुबुधिनआरसुसा
ई: व्यापिनकबहूतोहिदिनवैका: कालकरमगुनजनित
कलेका: अषिलपुरानअरथअतिहासा: पेहोतुमतेबिनुहि
प्रयासा: रामभजननिस्ततपररैहो: पूरनमनइछाबतिपैं
हो: सुनिसुनिबानिप्रेमरससानी: गगनगिरातबबेदबषानी:
कहेसबैदकहेमुनिकेरे: मनक्रमबचनभगतहेमेरे: बारसत
दपिभ्रममनबैरागी: गतिमतियाकीमोहिलागी: सुनिनभबानि
नयेबिसवासा: अषिलभरीमोहिपूरनआसा: मुनिपदबंदिपर
मसुषपायो: यहमेरोहेआश्रमआयो: बसतरहोमोकलप
बिहाये: सातबीसऊपरसुषदाये: प्रेममगनऊरामपरायन:
मिलिगोजोप्रभुसोजलजलमन: मतिगतिऐकरामहीमेरे: कर
मबालदेषोतिहिकेरे: बिबिधिचरित्रबषानेरघुबर: सुनहि
बिहंगआनिसबसादर: रामअवधितबनरतनधारहिं: बाल
बिनोदबिचत्रबिहारहिं: अवधिपुरीजबतबआऊं: प्रभु
हिबिलोकिपरमसुषपाऊं: धरिसोईबालरूपउरध्याऊं:
अवधिपारआश्रमरहांआऊं: काकदेहपायोतिहिकारन:
मैतुमसोबिनयोबाचामन: पैयहमोहिदेहतिहिप्यारी: राम

चरनरतिअतिउरगारी:जेयहनगतिजुहाहिअग्यानी। ग्याननजहिस
मकरिबिग्यानी। कामग्रावग्रहत्वीतरमगी। करहिंग्राकपयषेज
ग्रनागी:चितजेछाडिनगतिसुषचाहे:हगकरिग्रानधरमग्रवग
हे।तेईसमसंथुनावबिनुतिरही:पारनलहेत्रमनत्रमपरही:
सुनिनुसकिकेबचनषगेस्वर:पुनिबोलेमदुबानिप्रेमपर:
गरुडाहितप्रबोधबारसपतितेरे:मनक्रमकछुनरलोमनमेरे
संसयपेकमोहिपुनिस्वामी:तुमहिजनाऊंग्रंतरजामी:संतकहेसव
ग्यानसमानो। नाहिउपारतरनकछुग्रानो:ग्यानत्नगतिमहकेते
ग्रंतर:निसचयबारसकहोनिरंतर॥कबिस्वाच॥दहाप्रछेक
कुसंकिप्रति:जोकछुगरुडसुजान:ग्यानत्नगतिकेतेरगुन:प्र
नकहेप्रेमान॥१॥अथसप्तप्रश्नगरुडबाइसप्रतिहहाकेसे
गरुडतहजोरिकर:सुनऊतुसकिसुनार:प्रसनसप्तकमजुत
प्रगट:तेमुहिदेऊबताइ॥१॥छंदपधरी॥सुनिप्रथमप्रसनब
इसधीर:संक्षितमहदुरलत्नकोसरीर:दुषकवनकहोदारुन
दुरंत:सुषकवनबषानेजाहिसंत:नवकहोसंतअनसंतके
द:गुनदोषबतावऊबिहतबेद:पुनिकोकहऊअरुकवनप
प:इनकेप्रतावतुमजानिआप:मानसिकरोगकेसोमहंत:
तुमतेनदुरोकछुपरमसंत॥१॥कक॥बिहंगेससुनऊसंष
पबात:तुमप्रसननसातपूछेजुतात:दुरलभ्नसंसारमनुषदेह
हेजासरामचरननिसनेह:जाचेजिहिथिरचरअपिलजीव:दे
जेजिहितपमासमहरवि॥छंदहेप्रबरी॥नवनरजोगनोगको
त्नाजन:अस्वमेधलोधरमउपाजन:सोतनलहिरघुनाथसंत
रे:आपुनउत्नयवसउधारे:मुकतिपात्रहेऐकेमानुष:स
धेस्वरगसहेसुषदुषसुष:हेत्रवरनरसमसरदेही:सहज
साधरघुनाथसनेही:हेदरिद्रसमदुषकोनाही:जिहिसरूप
घसेपतिजाही:उत्नमकोमध्यमकरिमाने:पेनसबाकोउबंध
पिछाने:नगरबसतहीजिहिघरसूनो:आवेअतिथजारक
रिऊनो:लाभसमागमथहेपरमसुष:मनजानेकहिजाइन
हिनमुष:नगतिनजनताहीसंगतारी:प्रेमसहतसोपेनिय
पारी:संतसहजत्नबक्रूतसनेही:दुषसुषहरषसोकनही

आपमतथूसबगुरजनमांनै

दे ही: परसुषदेषिआपसुषपावै: निचिकुलहिनहिगरबजनावै: अ
गनवन्तअहमममयजांनै: परसुषदुषीअत्तागेपामर: सोईअसंतप
रओहनततपर: सनओषलपरवंधनसाधे: अगदुषसाहिपरदुष
आराधे: षलबिनुस्वारथपरउपकारी: तकतरहैजूं मूषमंजारी:
परसंपतिदेषेदुषपावै: निहचैताकोकाजनसावै: आहिसुषआमि
षकवलनआवै: आसेताकेप्रांनगुमावै: निहचैअमरअसंतकु
नांही: हेतैअनओरगलिजांही: इयासंमांनपुनिनहीनजा: अम
नेमसोसुरगुरजा: मनजिहिबैरअजारमांही: अहनिसिनीति
धरमअवगांही: कूलिकुबेदबिरोधनलावै: कमगुतसोईपुनिक
हावे: परनेघासमपापनआंनी: जिहिनरहरिगुरसुगतिनजांनी:
निंदासाधद्विजनजोकरई: धीरजबिनुबासतनथरई: निगम
देवनिंदकजोईनर: रोरवनरकलोगवेदुषत्तर: सामिद्रोहपतिन
घासधे: आपअलूकहोरहिनआंथे: फलबिनुपरअवगुनकरि
कूले: होरबागुलिनरअधमुषकूले: जिनमहयेअवगुनजगजांनै:
पापयहैअतिबेहअमांनै: ॥ अथ मांनसिक रोग ॥ सुनियेमांनसरो
गषगेसर: इओजोतुमसोहिपानपरा ॥ छंद प॰ री ॥ हैंआधिब्या
धिकोमूलमोह: सबजेदसूलछिनउपजिछोह: कफलोनबिवि
धिबसकांमबात: धनक्रोधपितजगजीवयात: नवमिलहिजा
इयेतीनत्रात: उपजेत्रिदोषपुनिसन्नपात: बिषीयादिमनोरथ
कुमतिमूल: तेईसोतिनोतिमिलिसकलसूल: ईरषा बादअ
हमतिउपाधि: येईमिलतआनिअतिअसाधि: दुषबईजर
निपरसुषहिदेषि: करिकोटदुहताषलबिसेषि: कहरूवादुस
अहंकारअंग: मदहंठकपटसबनहरुसंग: बढिलोभजलोद
रउदरब्याधि: तेजरागरवयेअतिअसाधि: अबिबेकअसहजु
रअनउतार: इत्यादिकमनआमयअपार: जगब्याधिमरहिअ
नेकजीव: अनकालदुसहइछादरीव: बपुदेहेबिषममानसिक
ब्याधि: सोप्रानजानिओषधअसाधि ॥ इतिमांनसिकरोग ॥
अथ ओषद ॥ जपनेमधरतपजोगजाप: आचारदानरतजा
निआप- इत्यादिकहैंतेषजअनेक: कहिकितेगिनाऊंएकएक:

निवोरेग
ो नहचे
मरषनो

योगमैकराचितमनसिरोग: नवलहैजीवतवकरमनोग: मानसी
व्याधिदुषसहैमद: नवसोकविरहगनिप्रीतिगूद: अतिदुषदपरान
वअप्रयोग: रघुनाथकृपातैंजाहिरोग: याकोउपारहैयहैएक: अप
नमरहिकरिकरिअनेक: सगजपेअविद्यामिलिकुसंग: अपानउप
जिहोइविवसअंग: पुनिउपजेविषीयकुपथिपार: सोईरोगदुसह
संततसुनार: अवधेसकृपाफिरिकरेआप: सतगरूवैदमिलिहरि
संताप: उपवासयहैतजिविषयआस: सतगरूवचनउपजेविसास
रहिसंजमतेपैजाहिरोग: पेतजेकुपथिईद्रीप्रयोग: रतिचरनसरन
गहिअवधिराइ: मनुस्नगतिसजीवनिमूलिपाइ: अनरोगहोइतव
सकलअंग: अनुरागवटैअतिबलअनंग: बटिबुध्यासुमतिनवनव
तिदान: सुनपाननीरउपजेसनान: दुरबलतानासैउरदुरास: बढ़ि
दपुष्टिउपजैविस्वास: सुषसाधिनजनकरिहरिसनेह: अविकार
वेदमततत्रएह: विनुरामलगतिजाहिनविकार: स्रुतिसाधकहतय
हमंत्रसार: हरिलगतिविनानहिमुकतिहोइ: करिजतनअनिहकि
लनकोइ: जगजीवनगतिविनुगतिनजाइ: अनन्तगसनवमिले
आइ: मिलिउपजेकैंमृगीपीविरोम: वरहोइसुष्टिगतअगहम्मे
स: पुनिबाकुकराचितपुत्रपाइ: अरुमृगत्रिसातेत्रिषाजाइ: फू
लेपनिवलदलविमलफूल: ससिसीसअंगजामेसमूल: रविउदय
तनासैअंधकार: अरुअवैनिसाकरकरअंगार: करिमघनवारि
दूनकाटिकोर: हरिसिकतापीलेतेलहोइ: रसादिअसंतवबने
आइ: पुनिलगतिविनागतिकिउनपाइ: करिदैषरुवरुतेजतन
कोइ: हरिलगतिविनानहीमुकतिहोइ: हरिकेउहिमेरतेतलह
थ: समभेरकरहितुलहिसनाथ: हेसमतवेदसिधांतयह: ह
रिछाडिकरउरघुवरसनेह: हरिआहिअपिलमायाअनीत: मु
सेकुजीवसोपरमप्रीति: कुमरामकथापूछीसुतंत्र: मेकेहसव
मिलिमूलमंत्र: सकुनाथमुनीकेहकुरेसाथ: अरुहरिलगतिअप
नेअराध॥ दोहा॥ जदपिअपावनजीवजग: सुनियेकृपाअग
स: महालगततवदरससमुहि: आजदयोअवधेस॥१॥करमउ
दधिरघुनाथके: अस्तुतअमितअगाध: नेतनेतजाकहनिगम
सदाबतावतसाथ॥२॥कोउसुनेजुयहकथा: पढेलिषेजुनम

ति: सिधमनोरथ होइसब: उरआपेनआनीति॥१॥ करमकथारघुबी
रकी: सुनिश्रुतिसंमतसार: गोपदज्यौंतबसिंधुगनि: प्रगटभयेजन
पार॥२॥ इहतुसंडीआपनो: पूरबजनमप्रसंग: कारनबाइसदे
हको: सबैकह्यौहितसंग॥३॥ सातप्रस्नपूछेसमुझि: बाइस
सोबिहगेस: समाधानतिनकेसबै: कीनोंनासकलेस॥ गरुड
॥ कह्यौषगेसभुसुंडकह: प्रभुतबबोधप्रसाद: मायासंभवदु
षदमम: बिसमयगयेबिषाद॥५॥ मैंअबजानेजनममम:
सोकृतकृतसुनाह: कृतप्रतापरघुनाथके: अषिलबसेउरआ
य॥६॥ प्रभुमायासंभवप्रगट: उरबाढेअग्यान: तेबाइसतवबो
धतें: बिषमबिषादबिलान॥७॥ रामचरननरतिरूपरस: उ
पजेचितअपार: मोहजनितसंदेहमम: बिनसेबिबिधिबिका
र॥८॥ आदिब्रह्मअवधेसथे: पूरनपुरुषप्रमान: मायाजो
गसुमेथली: लषमनसेषसुजान॥९॥ कबित॥ अगुनब्रह
मअवतार: प्रगटरघुनाथप्रमानैं: मनुसकतिमेथली: जो
गमायाजगजानैं: भ्रतरावनषेकस्यो: लागिलंकागढलीनो
सरनबिजयपंजरसुनाह: दुरजनकहंदीनों: सुनिरामचरि
तनरहरसुकबि: नापउदयमेरैंभये: बाइसप्रसादतवअ
तिबिषम: मोहजनितभ्रमतजये॥१॥ कबिरुवाच॥ दोहा॥ अ
अमरसोसुआपनें: बाइसप्रेमबिदेह: संसयमिटप्रबोधसु
नि: गरुडगयेनिजगेह॥११॥ काकभुसंडीगरुडको: साधस
गुनसंबाद: कह्यौसुषदनरहरसुकबि: प्रभुरघुनाथप्रसा
द॥१२॥ इतिश्रीरामचरित्रकाकभुसंडगरुडबाद॥ प्रसंग
संपूरन॥ अथबसिष्टआगमन॥ कबिरुवाच॥ कबि
त॥ येकसमयअवधेस: रामअंतहपुरराजित: भामज
नकजाबाम: भागजुतप्रेमबिराजित: द्विजबसिष्टगुरदेव
इहानतमारगआये: प्रभुप्रनामकरिप्रीति बिहतआस
नबेठये: करिकृपातहांरघुनाथकहि: भगतबिछलजुग
जोरिभुव: गुरराजतिहारेआगमन: हमसुआजकृतकृतभव
॥१॥ बसिष्टउवाच॥ दोहा॥ हेनलगमोहिनिकुअनूप: पोरोहि
तपदप्रीति: तहनकास्योंकुतुरत: तबउपजीमननीति १

पुनि मो कहं लैनो परे: दुष सुष कारन दांन: नृप आग्या मांनी नरी
फुनि टिरसो निदांन॥१॥ तव ब्रह्मा मेरे पिता: आग्या दीनी ये फु
या मह अतुलित फल अषिल: हे सुत निसंदेह॥ अलवत्ता के रैह
रि रघुबंस मह: त्रेता जुग अवतार: रामचंद्र नर देह धरि: नव ह
रि हैं उवतार॥२॥ जप तप संजम जोग जिग: औरवा दिय स्नेग
इन फुन जो फल पाईये: सो या मो फुअ न्नेग॥४॥ पुत्र परोहित प
द प्रगट: लेफु अबे चित लाइ: आगे याते फल अषिल: मो पे कलो
न जाइ॥५॥ जगत पितामह अज अमर: मेरो पित हित मांनि: न
हि मिथ्या ताको बचन: पेयह वेद प्रमांनि॥६॥ तवे पुरो हित पद अंग
र: मेली नो हित मांनि: ताको फल पूरन उरुष: पायो अबे प्रमांनि
॥७॥ जो पे दरसन जोग नें: दुरलभ दुरगम देव: मे सुष ह पायो सुग
म: अवयस रअजेव॥८॥ तव प्रताप महिमा अमित: दिव्य अमनु
ष देषि: सव बिधि परमानंद सुन: बाढत चित बिसेषि॥९॥ प्रभु
यह वर मांगो प्रसिध: पोरो हित पद पाइ: जनम जनम तव चरनग
तिजस: मम उर रहो समाइ॥१०॥ रूप अलो किका वरो: अषिल
ईस अनत्नेग: मेरे लोचन प्रान मन: सदा रहे छबि संग॥११॥ क
लो राम तव जोरि कर: परि वसिष्ट के पाइ: करत मनोरथ तुम गु
कछु: सो सब होऊ सुजाइ॥१२॥ गये बसिष्ट जु गगन मग: पुरी
मन आनंद न माइ:
अमर सुष पाइ: गावत महिमा राम गुन: श्री राम प्रति उपदेस॥ कवि
॥१२ अथ बिधि आगमन॥
त्त॥ सोरठा॥ इक दिवस रघुराइ: संग सकल सोदर सुनर: उ
तम थल न न आइ: सुष संजुत बैठे सबै॥१॥ अवलोकत प्रभु ओर:
सबै निरंतर बदन ससि जैसे चंद चकोर: पलक न लावत प्रेम पर:
वेद धरम रघुबीर: उपदेसत भ्रात नि अषिल: धरिये चित सधीर: नृप
ति जाते रहत नव॥२॥ छंद छै अपरी॥ श्रीरामबाच॥ मेरे मत अनुसर
न मांनें: सो मम बल न साधस यानें॥ कबि रुबाच॥ रहु चतुरानन
मुनि सुर आये: बंदन करि आसन बेगए॥ श्रीरामबाच॥ कहो बिरंचि
आगमन कारन: तुम जगपति जगति बिसतारन॥ बिधिबाच॥ कहे
बिरंचि तहां जोरे कर: राम देव तुम गुर कते गुर: समस्त न्तारस
हार सुरेसुर: अलप वेस पेषान अगोचर: बिधि जुत वेद पुरांन

ति: सिध मनोरथ होइ सब: उर व्यापे न ग्रनीति ॥११॥ करम कथा रघुबी
रकी: सुनि श्रुति सम्मत सार: गोपद ज्यों लंघ सिंधु गनि: सगर नाए जन
पार ॥१२॥ तनु सेऊ ग्रापनो: पूरब जनम प्रसंग: कारन बाहस दे
हको: सबै कह्यो हित संग ॥१३॥ सात प्रसन पूछे सम कछि: बाहस
सो बिहंगेस: समाधान तिन के सबै: कीनो नास कलेस ॥ गरुड
॥ कलोब गे श्रनुसे कह: प्रभु तव बोध प्रसाद: माया संतव दु
सह मम: बिसमय गयो बिखाद ॥५॥ भे ग्र बजाने जन मम मम:
मो कृत कृत सुनाइ: कृत प्रताप रघुनाथ के: ग्रखिल बसे उर ग्रा
य ॥६॥ प्रभु माया संतव सगट: उर बास्ये ग्रपान: ते बाहस तव बे
धते: बिषम बिखाद बिलान ॥७॥ रामचरन रति रूप रस: उ
पजे चित ग्रपार: मोह जनित संदेह मम: बिनसे बिबिध बिका
र ॥८॥ ग्रादि ग्रह मग्र वयेसये: पूरन पुरुष प्रमान: माया जे
ग सुभे थली: लख मन सेष सुजान ॥९॥ कबिता ॥ ग्रगुन ग्रह
म ग्रवतार: सगर रघुनाथ प्रमानै: महासकति मे थली: जो
ग माया जग जानै: तल रावन पे कर्यो: लागि लंका गढ लीनो:
सरन बिभय पंजर सुनाइ: दुरजन कहं दीनो: सुनि रामचरि
त नरहर सुकबि: नाग उदय मेर तये: बाहस प्रसाद तव ग्र
ति बिषम: मोह जनित ग्रम नजये ॥१०॥ कबिरुबाच ॥ दोहा ॥ ग्र
मर स्सो सु ग्रापने: बाहस प्रेम बिदेह: संसय मिट प्रबोध सु
नि: गरुड गये निज गेह ॥११॥ काक सुसेऊ गरुड को: साधस
गुन संबाद: कह्यो सुघद नरहर सुकबि: प्रभु रघुनाथ प्रसा
द ॥१२॥ इति श्री रामचरित्र काक सुसंड गरुड बाद प्रसंग
सम्पूरन ॥ ग्रथ बसिष्ट ग्रागमन ॥ कबिरुबाच ॥ कबि
त ॥ येक समय ग्रवधेस: राम ग्रंतहपुर राजित: जाम ज
नकजा बाम: नाग जुत प्रेम बिराजित: द्विज बसिष्ट गुरदेव
दरसन तमारग ग्राये: प्रभु प्रनाम करि प्रीति बिहत ग्रास
न बैठाये: करि कृपा तहां रघुनाथ कहि: जगत बिदित जुग
जोरि जुत: गुरराज तिहारे ग्रागमन: हम सु ग्राज कृत कृत्य हुव
॥१॥ बसिष्ट उवाच ॥ दोहा ॥ देन लगे मो ज्ञान सुनि तप: पे तोहि
तपद प्रीति: तहां न को स्यो कुं तुरत: तव उपजी मन नीति १

पुनि मोकहं लैनो परे : दुष सुष कारन दोन : नृप आग्या मानी नहीं :
फुनि टिरलो निदांन ॥१॥ तब ब्रह्मा मेरे पिता : आग्या दीनी येह :
या मह अतुलित फल अषिल : है सुत नि संदेह ॥ अलबत्ता कै है ह
रि रघुबंस मह : त्रेता जुग अवतार : रामचंद्र नर देह धरि : तब ह
रि है तुव तारो ॥३॥ जप तप संजम जोग जिग : और बादि यह नेग :
इन कुन जो फल पाईये : सो या मो ऊ अनेग ॥४॥ पुत्र परो हित प
द अगर : ले कुअबे चित लाइ : आगे याते फल अषिल : मो पै कलो
न जाइ ॥५॥ जगत पितामह अज अमर : मेरो पित हित मानि : न
हि मिथ्या ताको बचन : पेय ह्वे दृग मानि ॥६॥ तबे पुरो हित पद अग
र : मैली नो हित मानि : ताको फल पूरन पुरुष : पायो अबे प्रमानि :
॥७॥ जो पै दरसन जोग नें : दुरलभ दुरगम देव : मे सुष ह पायो सुग
म : अवये सरअ जेवा ॥८॥ तव प्रताप महिमा अमित : दिग अमनु
बदे थि : सब बिधि परमानंद सुन : बाढ़त चित बिसेषि ॥९॥ प्रभु
यह बर मांगो प्रसिध : पेरो हित पद पाइ : जनम जनम तव चनग
ति जस : मम उर रहो समाइ ॥१०॥ रूप अलौकिक रावरो : अषिल
ईस अनंग : मेरे लोचन प्रानमन : सदा रहै छबि संग ॥११॥ क
ह्यौ राम तब जोरि कर : परि बसिष्ठ के पाइ : करत मनोरथ तुम जु
कछु : सो सब हो ऊ सुभाइ ॥१२॥ गये बसिष्ठ जु गगन मग : पुरी
अमर सुष पाइ : गावत महिमा राम गुन : मन आनंद न माइ :
॥१२॥ अथ बिधि आगमन ॥ श्री राम प्रति उपदेस ॥ कबि
त्त ॥ सोरठा ॥ इक दिवस रघुराइ : संग सकल सोदर सुनत : उ
तम थल नृप आइ : सुष संजुत बैठे संतप ॥१॥ अवलोकत प्रभु ओर :
सबै निरंतर बदन ससि जैसे चंद चकोर : पलक न लावत प्रेम पर :
बेद धरम रघुबीर : उपदेसत तात निअषिल : धरिये चित सधीर : न्रप
तिजाते रत नव ॥२॥ छंद हंसै अघरी ॥ श्रीरामबाच ॥ मेरे मत अनुसल
नमांनें : सो मम बल जसा धस याने ॥ कबि रुबाच ॥ रह चतुरानन
सुनि सुर आये : बदन करि आसन बैठाए ॥ श्रीरामबाच ॥ कहो बिरंचि
आगमन कारन : तुम जगपति जग तिबिस तारन ॥ बिधिवाच ॥ कह
बिरंचि तहां जोरि कर : राम देव तुम गुर कते गुर : समस्त तत्वा रस
हारे सुरे सुर : अलप बेस पे ग्यान अगोचर : बिधि जुत बेद पुरांन

किसीतहिबीर: सोलग्योरहेसागनसधीर: करिथावरजंगमहाहाकार
रहोतईगगनबानीउद्दार॥ अकासबानी॥ करिबोनहिसाहसलव
नकोर: दरिहोसोमिथ्यानहोर: बिलपातकरतहिरिमहाबीर
सीयचलेछोडिलछमनसधीर: मुरगइगिरीसोधरनिमोहि: निहचे
कछुचेतनरहोनाहि: सीयदुषितरिषिइकमहासप: पुनिकिरीआ
नेसुनार: तहांदेषिअतिहिअबलाअचेत: महासोचतयोमनक्रमसमे
त: इहकेरेपवनपुनिनिकरआर: सीयतईकछुकसंपासुतार अबा
लमीकबाच॥ तुमकवनइहांकिहिहेतआर: सोलयोबिप्रपूछतसुनाम
म: निरधारहेतमैकछुनजानि: इहदसाछोडिगयेइहांआनि: तबव
मिथलेसगरुडबालमीक: इहांआश्रमहैबरजितअलीक॥ कबि
तकरि: पूरनपुन्यप्रकास॥१॥ रिषपतनीसुरिषकसो: यहलछमं
हातईपूरनअवधि: सुतबीतेदसमास: लवकुसनामहिसकुल
प्रगटेपुत्रप्रकास॥३॥ जाएसुतद्वैजानकी: ऐकहिकालअनेग: ज
गतबिदितजुगजोरवा: अरुलछनजुतअंग॥४॥ बालमीककृतज
: बिहतजुबेदबिधान: कहेजथाक्रमलविकुस: पोरुषनी
नाम॥५॥ छंदद्वैअ षरी॥ पुनिमुनिबिद्यासकलपढाये: सस
सत्रजयमंत्रसिषाए: अरुनिजराजधरमअभ्यासे: बालरिष
निसेगबननिबिलासे॥ इति लिव कुस उतपति अथ अलमे
धकबिकृतबाचा॥ सोरठा॥ ऐकदिवसरघुरैद: सुतनमंडपबैठेसता ब
सिष्टादिमुनिबृंद: सोतितबिसवामित्रसम॥१॥ श्रीरामबाच॥
गुनकुबसिष्टसुजांन: कहोरामनुगजोरिकर: सीताप्रीयासमां
न: मैंकीनेसबदानमष॥२॥ अबरंछामनआर: करनजग्यह
यमेदकी: सबबिधिहोउसहार: सुपैकरावहुकरिकृपा॥३॥ ब
सिष्टबाच॥ छंदपधरी॥ उतरबसिष्टतहांदयोऐह: सुनियो
गुबेदमतनिसंदेह: कवियेजुक्रमधरमाधिकार: सोसंगहे

तत्रीयजुतसंसार : त्रीयबिनाजुकरियेधरमतेत : अगहीनसुनि:
फलहोइअेत ॥ श्री रामबाचा ॥ पुनिकहोवचनथेअवधिभूप :
स्वरनमयरचोसीतासरूप : वहवामअंगहमधरहिअनि : सुन
जोरिअेथिपरजुप्रमानि ॥ कबिरुवाच ॥ कीनेप्रमानगुरजग्यकाज :
सबबोलिरामसुनिवरसमाज : कीनेतहाजग्यारंभकाम : सित
बाजिकरनतिहिबामस्याम : ननदिघलछनजुतसकलनाम : भ्र
मेजुजथाबिधिबोधिपट : सुकलाइदयोसंगसुजटपर ॥ दुहा ॥
हयमुक्योअवधेसयह : करिमसतकमषअेक : बहुविधिजो
नपक्केवली : सोपेग्रहोनिसेक ॥१॥ सत्रयनपठएसंगतिहि : हय
रछाकेहेत : पाछेपाछेफिरतपुनि : सेनासबलसमेत ॥ छंद पध
री ॥ तुवत्रमतजहाहयआपतार : यनघुरतटछिनीसानयार
जिहिजिहिसंगरकृतउचितजोग : पाछेसहोतप्ररनप्रयोग : इहिंभो
तित्रमेहयअवनिअेत : महावीनवरषसबमिलेतेत : तहाअसवअ
पनेसहजआइ : सोपेगेमषसालासुनाइ : करिअरचपजाविबिधि
कीन : पुनिरागमहयद्विजदानदीन ॥ दुहा ॥ बालमीकमुनिरहि
समय : मिलिबहुविप्रसमाज : आयेलिवकुसअयले : रामजहरि
षराज ॥१॥ देवजथाविधिपूजिदीय : बालमीकसुतबास : होम
मंत्रजहातहरूरष : पुन्यानंदप्रकास ॥२॥ मुनिवरबालकसंग
मिलि : गावतलवकुसगीत : सरिताबनसरवरसुषद : पुनिज
गरमतपुनीत ॥३॥ कृतचरितरघुनाथके : बालमीकबाषानि :
सुपेपढायेलिवकुसहि : बालबिप्रसुतवानि ॥४॥ करनिबज
वतकिनरी : सबगावतमिलिसंग : सुनतहोतथिरचरथकित : उ
पजतहैंसुषअंग ॥५॥ छंद पधरी ॥ सुनतलोकतिहिंअथिक
गुणवन : भ्रमतसंगबिछुरयोनहितावत : सालाजग्यमांझअवध
सर : बसिष्टादिसबबेगेमुनिवर : रहालिवकुसरिषबालकआ
ये : संगफिरतजेसषासुहाये ॥ बालमीकउवाच ॥ बालमीकत
बतबबिचारयो : यहलिवकुससोंवचनउचारयो : गावहुपुत्र
रामगुनगीता : पावनपरमअसिधपुनीता : येरघुनाथचरितनि
रमाये : सुनतसबनमनपरमसुहाये : जेकछुबालमीकनुनि
गाये : सोपेनोतनगीतसुनाये : मनआनंदित नयनहानु
नि : सुंदरसुषदगीतधुनिसुनिसुनि : पुनिरघु

षपाये॰ सिसुनिअरबपाम सुनाए॰ तेत्रीरवबाजन मिलितेसी
जथागानअमृतस्रुतिजेसी॰ मनअतिरीझिरामसोंषोमुष॰ सुमी
नगीनआजलोयहसुष॰ नियतरीझिअतिदसरथनंदन॰ कही
नरतसोरोरनिकंदन ॥ रामउ ॥ दोहा ॥ अयतस्वरनजुजि
भअब॰ इनहिसमरपेआनि॰ द्विजबालककेयेहदिन॰ होइदरि
द्रकीहानि ॥१॥ द्विजसुतजानिजुदियहीय॰ डारिदयोरननरि
करिनकुरीचचलकुटिल॰ मनकछुरीबिषमरि ॥२॥ लिवकु
सबाचाक सुनकुनरतयादव्यसे॰ हमहिनहीकछुका
ज॰ करिजाचेनालेरकछु॰ रीझिदेकुतिहिराज ॥३॥ हमतोज
विकनाहिने॰ हाथओछिपुनिलेहि॰ दुषितदरिद्रीदीनकों॰ दे
वकृपाकरदेहि ॥४॥ कबित ॥ जाकेकुलिजेसीजुगति॰ हेतस
हतसुहोर॰ लालचप्रानअनलो॰ करिहेअकरनकोर ॥५॥
कबित ॥ बालबचनसुनिसुनिबिबेक॰ नयेअचिरजतारीय॰
बातनकेजुतकरत॰ बिप्रचितहेतबिचारीय॰ चितयबदनंत
बरामचंद्र॰ लविकुसहिबिलोके॰ मोचकोरनिसिचंद्र॰ र
हेइकटकपलरोके॰ दुरुयानिहारितादस्यबदन॰ रीझिरीझि
रघुनाथरुष॰ सुनिकहूंपरसपरमिलिसकल॰ मनकुमुक
रप्रतिबिंबमुष ॥१॥ पतिकीनोपरित्याग॰ सीयानिसिअर
धनिकारीय॰ दम्पतिअवधिअनीति॰ नयोहाहारवतारीय॰
बालमीकअपनेबिचारि॰ आश्रमलेआये॰ पुत्रीनावपुनीत
बिबिधिहितचित्रबढाये॰ तिहिगरभमोषपायेतहा॰ उपजे
द्वेबालकअतुल॰ सुंदरसरूपएईसुपे॰ करहिप्रकासदिनेसकु
ल ॥२॥ कबित ॥ आपबदनअवयेस॰ दसअवलोकिमुकरम
हि॰ अरुलिवकुसकीओर॰ रहेजुतचितेचितेतहि॰ नवनतेद
सताव॰ नाहिकछुइहनिहारयो॰ बालमीकसोंहसिबिसेषि
यहबचनउचार्यो॰ कोयेअनूतउपजेकहो॰ सजुतसह
जसुनावरे॰ अखिलेसप्रबलमायाअजित॰ रामपुत्रयेरावरे
॥ बालमीक ॥ दोहा ॥ बामायरमसपतिब्रता॰ गरनवती
गुनग्राम॰ ताकोकीपरत्यागतु॰ मनछायहरो ॥१॥ मेरअ
श्रमजोजनम॰ सीयागरनसरूप॰ कितरनकेभेजानअ

म·पिता राम ये पूत ॥१॥ जांनो राम सुजांन जब · ये सीता सुत आहि : च
रील जाक छु नीति नय · रहे गये मुष चाहि ॥२॥ वसिष्ट बाच ॥ वसिष्ट
द्विज कहि विमल : मुनिवर विस्वामित्र : राम वमाया रावरी ॥ त
के अमित चरित्र ॥३॥ रहे सुरासुर मोजि हरि · साधि रिषी सुर संत : म
या अति बल मोहनी : या को लहो न अंत ॥४॥ पावन परम पति व
ता ; सीता है सुत साथ · आंन कुम्हि आपने : है जुक तथरि हाथ
॥५॥ परनी राम रूप दमनी : मिलि संग परम कुमार : अति मंगल क
रि आपुने · आदर सह उदार ॥ छंद पधरी ॥ सुनि बचन जथा वि
धि अवनि ईस : सुरगुर के बंदे चरन सीस : प्रभु करे बचन सबके
प्रमांन : जानु कीह तरघु वरसुजांन · सत्रघन बोलि आनंद सधी
र · वानर सुषेन हनुमंत बीर · इनकी प्रभु आग्या दई ये कु · सीय
आने आदर जुत सनेह : सो चले तहां च बकोल साजि : बालमी
कज हां आश्रम विराजि : आरोहित वे च बकोल आप : पति व्रत
सती पावन प्रताप · सो आइ जग्यसाला समीप : पग धारि सभु इस
वरि षीप : करि बालमीक आगे रिषेस : पुनि करे जग्यसाला प्रवे
स : रवि तेज बिस्नु रघुबंसराज : अलिछमी सीया संकलित लाज
निज धाम अंग आनी निहोरि : जुग वसन विमल धुरग्या जोरि
कृत जग्य जथा इयमिर्दकाज : संसार सार सपति समाज : विधि
वेद करे सब मषविधान : पूरन कुति दीनी अप्रमांन : मषत्तये
स्वाग पूरन प्रजार : नीसांन सघन तथेग हरनाद · जय जया सब
स्त्रयलोक जांन : पुनि बजे गगन दुंदुभि प्रमांन : सुरमुनिन स
जेनाटकसमूल : लहि समय हरष सुर वरषि फूल : नचतु वनि
सांन मिलि एकेनाद : पुनि दये राम मुनि मषप्रसाद : विधिजु
कत वसिष्ट पूजा विसेष : अभिलाष करे पूरन असेष · जग्या
धिकार द्विज चारि जांनि · पुनि तिनहि प्रथम पूजा प्रमांनि : गज
अयत ऐकुंग निअयत बाजि : त्रय अयत सुरभि द्विज एक साज
संतुष्ट करे सब द्विज समांन : गनि को न दांन तिन के प्रमांन :
अति विप्र ग्राम जाचक अनेक : विधि जुकत दांन आदर विवेक
मषत्तये संपूरन स्वांग सिध : पुरतीन त्तये बाजित्र सिध · व
निरामराज वैठे विमांन : सूर्ये प्रताप सीता समांन : तरतादि
त्रसम चलि अग्रत्ताग · सुनपत्र चमर दारहि सुनाय : सजि है

हि अमित चतुरंग सेन : मिलि गगन रैन मनु दिव समेन : निरघोष बा
जिन नतु निसान : बहि अवधि पुरी मंगल बिधान : रघुनाथ पथ
रे राज द्वार : आरती कलस बाजित अपार · हित जुत निछावरि हि
होर : कछु वार पार पावैन कोर : मनु रत्न मान अरु पाउ धारि : अने
क पीव हि जल वारि वारि : पुनि लगे राम मज्जन निपार : उरलार
हरष लीनें उगार : क्रम जु कृतजन निसो मिलन कीन : पेलगी स
या सु मुनि प्रवीन : सुत सत नासा जिवे सधीर : बिस्वेस राम रघु
बंस बीर · नर बानर राक्ष समनु जत्ताल : सुत सतना सबै बेगे स
टाल : इन्द्रादि देह धरि मनुज अंग : सब सोभित बेगे सतना संग : अ
स्मोदित कल मुनि वर समाज : विधि क्रम विसेष आश्रम विराज
सब कीकरि पूजा समाधान : सुर नृजि सिय चारन सुजांन : बंदीज
न किंनर गान कार : वाजित्र बिहत नार्द्ध बिपार : रघुराज करत
यों अवधि राज · सुत बंधु सुनर सेना समाज · ॥ अथ लवनासु
र बध प्रसंग ॥ कवित्त ॥ ऐक दिवस अवधेस : सोभित बैठे
नृप सत्ता : मिलि संग विविन मुनेस : पुनि सो आये राम पे है ॥१॥ ग
दे देवद्वार · द्विज कालिंद्री कूल के : हाथ जोरि प्रतिहार : कहे ज
नि रघुनाथ कहें ॥२॥ उठि प्रभु सनमुख आर : कीने बंदन जोरि कर
लीने मधु बुलाय : बैठे रे क्रम जुत विहत ॥३॥ श्रीरामवाच ॥ दो
हा ॥ इहां जु कारन आगमन : द्विज सो ईक हो निदान : अभिलाष
जो ईमां ऊतर : प्रश्न करो प्रमांन ॥१॥ द्विजवाच ॥ छंद पद्धरी ॥
हम बसत बिमल कालिंद्र कूल : सुर साय करत सेवा समूल · तब
राज सुषित को उनां हि देव · तब वृत सुषी सब आपने व ॥ विव न ॥
मधु नाम दैत्य कृत जुग कुचार : अति हो प्रताप तो बल अपार : तिहि
करी संतु सेवा समूल : करि कृपा तो हि दीनो त्रिसूल : सुर असुर
सी सब हपेसूल : सो ईस समत हाके है समूल · आर है फेरि तव ह
थये है : दुरजन हिरांह करि निसंदेह : मधु सो निजु स्यो द्विज परसराम
पुनि तास नाम जिगे संग्राम : निस चरी नाम कुंभीनसीय : तिहि
दैत्य ये है बहुत नात्नीय : सत तउदर तिहि अति प्रसाय : उपजे ल
वारन सुर बल अगाध : सो महा दुष्ट अति बली सूर : सुर असुर बि
प्र हिंसक सम्प्र : अति दुषित तास पीड़त अधीन : देव केसरन वि

जग्रारदीन॥श्रीरामबाच॥बिसेसहईबाचाबिसेष: अबबिप्रअ
नयमांनेंअसेष: मनबचनबिप्रकरियेबिस्वास: निह्चैलवनां
पुरहोइनास: यहिचितधीरद्विजजाऊयेह: अपनेअकरमबय
जोइएह: प्रभुकरेतहकहनोंप्रचार: त्रातनिकोंदीनोंजुपनार
हमदयोद्विजनकोंअनयदांन: पेकरोबीरकोउप्रमांन॥नरत
करजोरिभरतबोलेसकाज: आगायहमोकहंदेऊआज॥सत्र
घनउ॥तहांतमकिनिवेद्यौसत्रुघात: बिबिसखुनोयहल्लतब
त: देवाधिदेवपावरीदीन: करिकृष्णनरनतिहिप्रनिकीन: सुपर
हेलषनबनवाससंग: अतिकरीसेवदुषसहेअंग: मोहिआइस
दीजेयहेराम: करिऊप्रतापतवसियकाम॥श्रीरामबाच॥नग
बेतकहोसुनिबचनतात: तुमकहंहजमंडलदयोतात: निजक
रऊआपमुथरानिदांन: पुनिपुत्रपोत्रबसिहेंप्रमांन: पेकिऊजुग
नरहेतपार: अबतरिऊऊजदुबंसआइ: तिहिमंडलेकलाबत
र: तबतूतसुषदतबहरोंनार: मेरोवहबलनदेसमांनि: जलदेद
हेबीबासजांनि:॥कविरुबाचा॥दीनोंहजमंडलराजदेव: अनंघ
घकस्योत्रातहिंअजेव: निसचयकरिदीनोंदिभवांन: प्रभुदेत
हाति:व्याप्रमांन॥श्रीरामबाच॥सोअसुरनिस्पषजितत्रिसूल
मनिकनकपीतिऊपरसमूल: पुनिजातआपकऊहातनप्रांन ब
नजतबिबिधिचिन्हनबिधांन: तिहिसमयउष्टकोरोकिवार: न
यरहस्तुमहिआयुधसंभार: लषितुमकहंद्वारप्रवेसकाल: करिकोध
जुधकरिहेकराल: तिहिअवसरमारऊअसुरताहि: जतनसारहोमति
लागिजाहि: पुंनिमथुबनपुरीबसाइपूर: नयामजीतिमुहिमेल
ऊसूर:॥कबित्त॥हितकरिप्रबोधप्रभुप्रसनहोर: संगप्रबलसेन
दीनेंसजोर: बतिसहसपंचनरसजवबाजि: तिहिअरथबिमलसिंद
नेबिराजि: मिलिअयेसुरसरसतमतंग: अरुअयततीनपयदल
अनंग: सत्रघनकोंकीनोंसमाधांन: पठयोप्रचारिबलदलप्रमांन
षटह्नदिवससंक्रमीयसेन: रविरुधगगनमगचढीरेन: सेनाग्र
नेगसमरूरसधीर: तहांदीयमिलानरविसुतातीर: लवनासुरक
रिपूजात्रिसूल: मिलिअरजनबेदनमंत्रमूल: पुनिकस्योनिसामुण
बनप्रवेस: इनआनिद्वाररोकेअसेस: पूरेअहारचलत्रिमपार: अ
रेको
लसातगातपुरद्वारआर: सं २०५७ ८९

कोपअंनिजुटेकराल: कछुकालनिस्योसंग्रामक्रुध: जजुलितयोउ
बीरजुध: तबदिव्यबानउरहयोतास: सत्रुघनजेतबजेप्रकास: उठ
रेबिप्रनपेहरषवंत सुष्षबसेतगरिषसाथसंत ।। दोहा ।। मधुबननि
करजुमथुपुरी: रवितनयाकीतीर: बस्योसुपतनअतिबिसद। नि
पजनअनसुषनीर ।।१।। बसेजथाक्रमपुरबिमल: मथुरामंडलमांहि:
चितनसुषलहि बरननचव: निषलरीतिनयनोहि ।।२।। कुललवन
पुरनासकरि: बजेजेतबजार: कीनोदरसनरामको: रहोसत्रुघन
आस ।।३।। अथ कालपुरुषआगम लछमनपरत्याग ।। कबि
त्त ।। दोहा ।। धरमराजद्विजरूपधरि: कालपुरुषकरकाल: पुनि
सेआयोरामपह: बेषसंन्याबिसाल ।।१।। छंदपधरी ।। प्रभुतबैराज
मेहरिपधारि: सोबिप्रबोलिलीनोसंभारि: नरनाथलषनसोकहि
निदान: निजद्वाररहहुतुमसावधान: नरनाथलषनसोकहिनिदे
न: रहियैद्वारआवेजकोइ: कहतेतुमहिनिसंकहोइ ।।सीतांम
।। द्विजताहिरछितबरामदेव: तवआगमकारनकहोतेव: किहि
पठयेहोतुमकवनकाज: अनसंककहोबिरतांतआज ।। कालपुरुषवाच ।।
मुहिकालपुरुषजानहुमुरारि: कारनतवदूतबिनासकारि: प्रभुपास
मोहिब्रह्मापठार: संदेसकहुपुनियेसुनार: बिसेसकरेसिवज
रुपबिनास: तहांबटेनीरलोगेप्रकास: तिहिमध्यकरेतुमसेषसे
न। निजइछारघुबरकमलनैन: तबनाभिकमलतेकमलनाल: ब
टितयोमहाबारिजबिसाल: तहिबारिजतेमोकहुउपार: सोदयो
प्रजापतिपदसुतार: निजमायामेबिसतारकीन: निसचरउपरा
जेदेनवीन: मधुकैटभनामामनमलीन: तबनयेअसुरदोउपाप
नीन: षेचरसोलागेमोहिषान: देवतुमकरीरछानिदान: मधुकैटभ
दोऊउठमारि: मुहिराषिलयोतुमहीमुरारि: असुरनिकेनिकसीमेद
अंग: तबरचीमेदनीतिहिअनंग: असथानिकेपरबतकरिप्रमान: थि
रमोहिप्रजापतिथप्पोथान: हिरनाषिहिरनकसिपसहित: नहु
अजेआसुरदुष्टचेत: सोमारेतुमहीसुरसुहार: राजाधिराजरघुब
रारे: अतिबलीनयोबलिदेमएक: बिसतारधरमबाचाबिबेक
रलोकनयेतिहिजुधसाधि: अरुकरननयेनानाउपाधि: तुमबाधि
हापठयेपताल: सुरलहेलोकटरिदसाल: पुनिनयेउष्टराकसम
प। तिहिरावनसुरकीनेसताप: सुरकाजताहिमारनसनाथ: न
हन्नयेतुमअवधिनाथ: तहांबरषसहसहजपारबिनीत: ब

पीसनारदास्यौपुनीत॰ अवधेसअवधिअबनिकरआइ॰ भगवंतकउ
जोचितचार॰ कछुअजकुट्टथीजेरामकाज॰ रघुनाथकरउनरदेह॰
राज॰ सुरलोकगमनजोमनसुहाइ॰ करियेसुनाथसुरदेवकाइ॰ कहि
कालपुरुषयेबिधिकहाव॰ रीझेहरिबोलेअवधिराव॰ ॥ श्रीरांमाउ
कंलोकालतुममंत्रजांनि॰ मेरेसोईइच्छाहीप्रमांनि॰ रघुनाथकसेरघु
बंसराज॰ हमकरेजथाबिधिदेवकाज॰ अबरह्योमनमहरहायेह॰
सोईबकरोमेरेअतिसनेह॰ सबमनुजजालबानरसमाज॰ करिबो
अबरनकोमुकतिकाज॰ सामीपमुकतिमम्रहेसंग॰ अबयहेकाज
करिऊअनंग॥ कबिरुवाच॥ दुरबासायाहीसमयआइ॰ सोईराजद
रगदीसुनाइ॰ मांऊजबजांनलागेमुनीस॰ सोमित्रकलोपदबसिसी
स॥ लछमन॥ हैराजकाजमहबिप्रहराम॰ गहराबबिप्रछनइहिगा
म॰ कहियेमोहिजोकछुआहिकाज॰ रघुपतिहिनिवेदोंरिषराज॥
दुरबासाउ॥ इहिछिनकैंकरिऊदरसआज॰ कैदेसरापकरिऊअ
काज॰ द्विजकलोजुदारुनबचनदेषि॰ बससोचनयेलछमन
बिसेषि॰ इहांआइरामपहलषनआप॰ दुरबासाआगमकहिसर
प॰ यहसुनतमात्ररघुपतिप्रबीन॰ पुनिकालपुरुषकहंबिदाकीन॰
रांमबाच॥ अवधेसतबैसामुहेआइ॰ पूजेदुरबासाबंदिपाइ॰ रिषक
हेतबपूछेमहाराज॰ कहियेमुनीसआगमनकाज॥ रिषबाचमुहि
सहसबरषउपवासमांनि॰ जगदीसपारनांदेउजांनि॰ इहांबिबि
धिनाविनोजननअणाइ॰ जुगतिसोरामरिषबरजिमाइ॰ अनेकनां
तिदीनीअसीस॰ सोईत्रिपगयेआश्रमरिषीस॥ इतिकालपुरुष
प्रसंग अथलछमनपरित्याग॥ छंदपधरी॥ कबिरुबाच॥ बि
चिसकरेरहेचितबिचार॰ हैबचनभंगपातकअपार॰ दुषसोच
कलितरघुनाथदेषि॰ बिसमयमनलछमनबटिबिसेषि॰ जगदीस
अंतरगतिजांनि॰ पुनिकहेलषनतहांजोरिपांनि॥ लछमनउ॥ करि
येनप्रतग्यासंगकाज॰ अबिलेसऊबधजोगिआज॰ ममआहिकलिय
एकबलकाल॰ पुनिनरीअवधिप्रनकृपाल॰ जोकरहिनाथममहित
कलेस॰ सोनरकपात्रकेसोनरेस॥ श्रीरांमबाच॥ बोलेबसिष्टमं
त्रीसुमंत॰ तहांकहेपुरुषआगमनतंत॥ बसिबाच॥ प्रभुसोंबसि
ष्टकहिजोरिपांनि॰ ऐसीहीनावीबनीआंनि॰ जावीनटरैअनतई
नृप॰ सुतअसुनरचेअनेकरूप॰ प्रभुबधतेदुसहपरित्याग॰ सोक

रिपैलछमनकहसनाग: बिधिबेदकहीजोगुरबिचारि ॰ सोईलईमानि
मनक्रममुरारि बिस्वेसअनन्याकरिबिसेषि: सबधरमनासक्के हैअसेष
बिधिधरमटरहिमानोंबिसास: नरनाथहोंइत्र्यलोकनास: तुमसद
धरमरहुकत्रिलोक: सोकरहुदेवअबतजहुसोक: गुरबचनमानि
रघुबरसज्ञान: निरधारयहैकीनोंनिदान: यहसमयसनाबेगेजद्दार
हितकरेआंनिलछमनजुहार ॥ श्रीरामबाच॥ बससोक लषनसों
कहिबिष्यात तुमजाहुजहांमनरुचैतात॥ कबिरु॥ सोसुनतमा
त्रलछमनसधीर निजग्रेहबंदिपदगयेबीर: दयेबेदबिहितब
हुद्विजनदांन: सुतराजतिलकदलबलसमांन॥ रू॥ लैलछमनबे
राग्यरत तिहिछनसरयूतीर: करिकुसपल्लवतलपकरि: बैठेनि
रनयबीर॥१॥ करुवोस्वासअवरोधकरि: धरमधारनांध्यांन: प्रभु
आग्यालछमनप्रगट: पायोपदनिरबांन॥२॥ इन्द्रादिकसुरसि
धसब रहासामुहेआर: सैदेहीलछमनसुषहिं: दिव्यआसन
बैसार॥३॥ चमरढरतबरषतकुसम सुरगनसंगसनेह: लछम
नआग्यारामलहि आयेस्वरगसदेह॥ अथमाताकोसल्यादिक
बैकुंठगवन॥ कबिरुबाच॥ सोरठा॥ ऐकसमयऐकांत: कौ
रामबिरागबस: करुनांनिधिश्रीकंत: ध्यांनाबसथितधरमधुर
॥१॥ छंद हेअष्टरी॥ इहिछनकोसल्यामहांआरी: ब्रह्मजांनिसुतत
वबिहाई: नमसकारकरिबैगीनिसचल: पुत्रजदपिपोषेपलप
ल: नियतरहांसुतबुधिनिवारी: चीन्हेपूरनब्रह्मबिचारी तबनहीआ
दिमध्यअवसांनां: जगतआदितुममेयहजांनों: पूरनपरमानंदपरा
तम: ऐकतुमहिब्यापकसबआतम: जदपिमनुजदेहमेंजाय: लेले
अंकनिसंकालरुाये अंतअवधिसबनीयरेआई: मोहनमोहतथा
पिमिटाई बांधनउपजिछेदनवबंधन मुकतिहोरजांतक्रमबच
मन: मुकतिगबोयकरहुअबजातें: तुमपरब्रह्मदृष्टहोरजातें
कबिरु॥ मातबचनसुनिअंतरजांमी: समयजांनिबोलेजगस्वांमी
श्रीरामबाच॥ मातमोछिमारगत्र्यमानहु: प्रथमहिकरमजोगपह
चानहु: हजोग्यांनजोगहिदृढ़क: समरुजातीजेत्नगतिसुत्तारक
मारगत्नगतिसुगमहेमाता: सोपित्रिगुनमयबिस्वबिष्याता: सात्वि
करजसतामससंगी: येसाधनतत्नवृतअंगी: हिंसाअरथद
तमितामछर: क्रोधबिरोधकत्नेदजिष्कर: वहपैतामससद्दिष्ठ
कहोवै: ग्रानीकरेत्नगतिफलपावै अंतरत्नेदबुधिआराये सा
धकहोवेत्नगतिहिसाये: राजसत्नगतियहेजुतअहमति: पुनितां

केतेसेफलप्राप्तः रहतकामनोकरिमनबचकय: जेदखुधिबरजि
तजोनिस्तय: सोपेसरबनिमतनारायन: प्रभुहिसमरपेजजन
परायन: रहिबिधिबरतैमुकतिउपावै: क्रमसोईसातिकजगति
कहावै: जिहिमनदृश्यरहैमममांही: होरकनऊपेअंतरनांही: जो
गंगासागरमहजारी: रहैएकक्षेतहोयहरारे ग्यानीसरबब्रह्मम
यपेषै: दयादिष्टसमनावहिंदेषै: सदाकुसंगबिबरजितसोई: हेतम
तिसतसंगतिहोई: बेदमजादससमुषबानी: पुनिमोमांझमिलैसो
प्रानी: तातेपुत्रनाथसुषदाता: ममसूरतिमनराषकुमाता: रामथ
रमसूरतिउरधारी: धन्यास्वरगसदेहसिधारी॥ दहा॥ हैसालोकि
कसूपकुन: मुकतिसजोजिसऐव: बेदबिदितयेचारिबिधि: दु
रलभकहिद्विजदेव॥१॥तीनमुकतियेलांघितव: मिलतधरमम
रजाद: कौसल्यायोथीमुकति: पाईरहतप्रमाद॥२॥जोगजगति
साधीजतन: कैकेईनि: काम: पायोस्वरगसदेहपुनि: मातभवे
धतराम॥३॥साधसमित्रासतसंग: पावनइहीप्रकार: स्वरगसिध
रीदेहसौं: आग्याराम उदार॥४॥रहाउमित्राकैकई: पतिसमीपप
दपाइ: ततनितिहिसेवाकरतते: रहिसंगकौसलराइ॥५॥ कौस
ल्यादिकमातकहि: दीनोंमोछिसंदेस: सफलभयेसाधनसबै:
रामप्रसादसनेह॥६॥अथ सीतामहाप्रसथांन॥ कबित्त॥ सि
रग॥ आपतलषनबियोग: रामअंगनिप्रजरतउरहिं: पैनहि
फुरतप्रयोग: असनबसनबिससेतये॥१॥रहतसोकबसराम: बि
धतउरस्त्राताबिरह: ममलषमनसुषधाम: हाहापुनिमिलिहै
कहौ॥२॥ बिहबलकरतबिलाप: तरफतयाइलसेतबैं: यहप्र
कारप्रभुआप: नावमनुजदाषतजुबन॥३॥श्रीरांमबाच॥ एकदिव
सअवधेस: मंत्रगृहकहिमैथली: प्यारीकरउप्रवेस: आगेउमबे
कृगअव॥४॥यहपेसलोनजार: ब्यापेलषमनकोबिरह: नामनिमे
रैनाए: सलिलगतसंसारसब॥५॥कछुकबितीतकाल: हमपाछे
हीआरहै: स्वरगपयानसुढाल: करिबोहैपुरअवधिको॥६॥ये
कसमयअभिराम: सोभितगुरसिषबरसभा: मिलिबैठेरघुराम
धरनीधरसिरछत्रधरि॥७॥अंतरनावअनंग: जामोपतिकोजा
नकी: अतिहरषतअंगअंग: आनिनहीगहीरह्यो॥८॥सीता
बाच॥ छंदपधरी॥ उनिसूर्यसनमुषजोरिपानि: बिधिबंद

कल्लोसीय बिमल बानि : सुनि मात धरनि मम बचन सार : बिस्वास म
नि दीजे बिहार : कसतीजे पे पति रता साथ : अंतरगत मम रघुबर अ
राथ ॥ कबित्त ॥ यह सुनत सती बाचा अबंत : पृथ्वी दरार षाई प्रचंड
पाताल द्वि विहित चित प्रमानि : बिच बिवर दिव्य आने बिमान : पुनि ध
रि देवि मैथली पानि : आरोपित दिव्यासन हि आनि : नीसान गगन न
न तुव निनाद : संसार अषिल जै जया सद : पाताल बिवर मारग प्रवे
स : बैकुंठ गई सीता बिसेस : सुरपुहप करी बरषा प्रकास : पाये सु
रेस आनंद प्रकास : इहि बिधि सो सीता स्वरग आइ : सो लई बिबुध ब
निता बधाइ ॥ अथ श्री राम चंद्र पुत्र जन्म तीज निज मित्रागकरन
कबिरुवाच ॥ सोरठा ॥ नती दिक रघुरूप : करत तिनहि उपदेस क
म : राम आप अनुरूप : मन क्रम बाचा नृप धरम ॥ १ ॥ दूहा ॥ पुत्रनत
जनक हे दृथी : बरि दरी बिस्वेस : अवनि बसाई सुष सहत : बिधि
जुत बेद बिसेस ॥ १ ॥ नाम जुधाजित भरत को : इहि बिधि मातुलि आर
गयो सहार निमंत लो : प्रभु की आग्या पाइ ॥ २ ॥ इहि गंधरब निसो नथो
भरत हि जुध नथान : तीन कोटि मारे तहाँ : अतिबल सत्रु अमान ॥ ३ ॥
षिति लीनी सब मारि षल : भरथ भरत अनंग : नगर बसाए द्वै नये
तहाँ करि कोर उतंग ॥ ४ ॥ तछसिला पुष्करवती : नगरि दुव धरि ना
म : तछ पुष्कर कव रत हीं : कीनो बास सकाम ॥ ५ ॥ गंधरब निसो
जीति जुध : पुनि आये प्रभु पास : करत सु सेवा राम की : संतत भरत
प्रकास ॥ ६ ॥ पुत्र जु लव कुस आपने : राज धरम रघुराइ : तिन कह
दीनो बाटि तहाँ : देस नगर सुषदाइ ॥ ७ ॥ अपनी रजधानी अषिल
पुरी अजोध्या पाट : दयाजु कत लिव कहँ दये : निज कर तिलक नि
लाट ॥ ८ ॥ कुस कहँ पुरी कुसावती : दुरगम मालव देस : सुषद राज द
ल बल सहत : आप दये अवधेस ॥ ९ ॥ पार राम आग्या प्रगट : आगे ल
षन अनंग : सत्रु हये जीते समर : सेना अतिबल संग ॥ १० ॥ कहे कुते
प्रभु लषन कहँ : उतर दिसा अषंड : मल्लालोक अनेक मिलि : बसत
तहाँ बलवंड ॥ ११ ॥ करो तिनहि निरमूल कुल : सुत बसाइ तिहि देस
आनि मिलहु मोकहँ अनुज : बल्लभ प्रान बिसेस ॥ १२ ॥ लहि उत्तय म
ल्ला लषन : मारे षेत महीप : कारन आग्या राम की : सेना सबल सम
प ॥ १३ ॥ लीय उतर धर सीम लगि : मल्ला कीय निरमूल : उहाँ बसाए
पुर उतय : सत्रुन राषे सूल ॥ १४ ॥ लषमन के सुत सुत लषन : पोरु

रूपसमरप्रवीन • जेगेअंगदआनिवीः चंद्रकेतलघुचीन॥१॥अं
गदपुरदीयअंगदहिः सीनामसधसज्रूपः चंद्रकेतचंद्रावतीःनग
रीदईअनूप॥२॥देससत्रुघनकहंदयोः वृजमंडलविष्यातःपुत्रव
सायेतहांप्रबलः पुरीरहतउतपात॥३॥पावनस्नमिजुमथुपुरी॥
हेतहांवसतसुबाहः सत्रघातकनवजबसीः रनअनेगरिपराह॥४॥
प्रबलसुरतनकरिथ्वीः इहिविधिपुत्रवसाहः कुस्वोअकंटकराज
कुलः ऐकछत्ररघुराजा॥५॥छंदपधरी॥पुनिकरतरहांसिष्याप्रबो
धः सुतउचितनीतजनिनीतिसोधः मिथ्यानवचनवोलहिसदोपः
सवतजहिमूढमैत्रीसमीपः देसुकरफेरिलीजैनदानः नहोतेरिम
त्रसोंहितनिदानः पुनिसातविसनबरजितप्रधानः सनछांडिदुष्टपु
रजनविसासः मंत्रीरूषेदिबयरूपमानिः कबहूनविप्रगुरतनकु
कांनिः आपेटकरमकरिवेअकाजः रिपुनमिसेपनहीउचितराजः
मूरषसोंतजियेमूलमंत्रः सबनीतिमोनजीजनसुतंत्रः बीधिगूढम
त्रकरियेविसेषि-परकरनपरयोविनसेअसेषः अनकारनहमअनु
चितउपाधिः आरंभनिरथकहूतअसाधिः अहनिसागनारहांअप
रः दीजीयेजथाअपराधदंडः नवसावधाननपमंत्रनेरः दुष्टनात
जेपरमरमछेदः द्विजदेवबालधनत्रीयविकारः विषअगनिजानित
जियेविचारिः पीडीयेप्रजानहनिरपराधः सुचिमाननंगकरियेनसा
धः मदक्रोधलोभजरूकांममोहः दुखदानजैनृपचितद्रोहः अनघि
थसुषनतजियेअसंकः करियेनदीनसोंकलहकंकः परत्रीयादिष्ट
गुरत्रीयसमांनिः करियेनुअगम्यागमनकांनिः इंद्रीरिपुनिग्रहक
रिअसेषः विधिधरमसुजससंग्रहविसेषः विसतारकरहुनित
साधबुधिः संबकालप्रकासहुजीवसुधिः मांनियेहितूसिष्या
प्रजादः बरजितकुसंगमिथ्याविबादः पापीनवाकिजिहांप्रमां
नः अनदोषदोषदैजिनग्यानः कल्पकरसीसकरियेनकोइः हि
तवानिकरबरतीसहोइः पुनिदुष्टबुधिबरजितप्रधानः निहचै
नहूतकरियेअग्यान-सेनापतिगढवेउचितसूरः दुबुध्यागतन
जियेसुनदूरः कामीसलोभद्विजअंकृतकारः करियेनताहिध
रमाधिकारः सकलपट्टिप्रसोंसावधानः दीजेसुआपनेहाथदा
नःराजश्रीआपबसकरैराजः बसतासतथेउपजेअकाजः वि
सतारधरमविद्याविबेकः इत्यादिदईसिष्याअनेकः सबनृ
रहोसुतसावधानः निसनीतिधरमसाधहुनिदानः॥६॥

रहि बिधि हित उपदेसये: दीनै सुतनि सुदेस, पृथ्वी रक्षाकरि अबल: नरहरम अहिनि रेस ॥ अथ महाप्रस्थान अजोध्या उधरनं ॥ कबिरुवाच ॥ लछमन के परित्याग तें, सोकाकलित असेष, रघुपति मंत्री मंत्र रिष: बृथ निबोलि बिसेष, ॥ राम बाच ॥ कहे बसिष्ट सुमंत करें: अब थे सरमत ए हें: अब नि राज अन्नष घक रि: नरत हिं टीका दें हु ॥२॥ बोले लषन बिमान चढि, हम हु चालन हार: महाबीर ताबंधु बिनु: सुनि लगत संसार ॥३॥ कबिरु करुना बचन जु राम के, सुनि पुरबासिन सोर: परि परि लेट ते भूमि पर: राम राम कहि रोर, ॥ छंद पधरी ॥ बिसेस बचन सुनि त्तरत बीर: अकुलाइ जये अंतर अधीर: दारुन सु निबारु कन्ये दीन: करजो रितर तत प्रनित कीन ॥ नरतादेवाधि देवदी न निदयाल: सुनि बचन सहमो हि नये साल: रघुनाथ पृथीव ईस राज: करुनानि धान मोहि नहिन काज: तव सपथ सुन हु मम जीवतं: अषिल सचरन छो ड़ौं न अंत: रघुराइ दें हु अब लिवा हि राज: सब सुन रप्रछि मंत्री समाज ॥ बसिष्ट बाच ॥ बोले ब सिष्ट गुर बिहत बानि: प्रभु करउ काज समयो प्रमानि: तव बि रह त्तये कातर सनीत: सुरलोक गमन सब दे षि सीत: तुव गि रत बिकल नाहि न संसार: पुरलोक से कि रोवत पुकारि: ध रि दियाकर हु तिन समाधान: प्रनु अब जु कछु समयो प्रमान श्रीराम बाच ॥ करि दिया लोक बोले कृपाल, बिनवो जु मनोर थ इथ बाल ॥ लोक बाच ॥ यह सुनत लोक बोले असेष: बि स्वेस बिरह दुसह बिसेष, सब बसा हिं दिवस बचरन संग: रंछा यह सब हिनि के अनंग, पुर स्वरग बसहु बामन पुरान, नग दीस सगरा बहु सुजान ॥ कबि रु ॥ अनुराग जानि सब के अनंत: बिस्वास दयो तब दयावंत, करि निसचय रघुबर समय काज: लिव करे तिलक दें अवधिराज: अभिषेक कीये उरम त्रि आइ: सुनछत्र सीस चामर चलाइ ॥ कबित ॥ सहस अगम ज सुरथ, सहस इक रूपप संगीय: सहस साहि हय सजव अषिल अ सिबाह अनंगीय: यह प्रमान सेना अनीत उइ पु त्र निदीनी, समृध संग सब राज, साज निधि बिबिधि नवी नी: पित बिरह समय दारुन दुसह: जुवर दा तत पर नये

करिनमसकाररघुनाथकहि: अहनिरहालिवकुसगये:। कबित्त
सजवरुतअवधेस: रहसत्रघनपैआये: कालपुरुषआगमन: सद
तउरवासमुनाये: प्रभुलछमनपरित्याग: पुनिरामप्रताप: विषम
लोककोविरह: अवधिपतिकोयहआप: सत्रघातबातयेदुसहसु
नि: उयपुत्रनिकहिराजदीय: सुरसाघिखरगरघुनाथसंग: कमप्र
यानतिसचैकरीय॥१॥ दोहा॥ मथुरामंडलकोकस्यो: तिलकरिन
पतिसुबाहु: कीनोंस्वामिकनोजको: सत्रघातससनाह॥२॥ दै
वउतनयपुत्रनिदये: सेनासंपतिसंग: समाधानकरिसबनिकै
आवेअवधिअनंग॥३॥ करिवंदनरघुनाथकहि: सत्रघनकहिसुनाइ: उव
पुत्रनिकहिराजदै पुनिआयेप्रभुपाइ॥४॥ छंदपधरी॥ प्रभुकरोचरन
सेवाप्रमान: नहितजोंसंगकरुनानिदान: दिनलगतिजानिबोलेरघुन
करिबोपयानमध्यानकाल: याहीविचिजूथपजूथआर सबकरव
रनवंदनसुनाइ॥ कबित्त॥ आयेजुविभीषनसकुलआप: पावन
तिरजाकेरामछाप: सुरआइअविलमुनिवरसमाज: रघुनाथव
दिराजाधिराज॥ सुग्रीवउवाच॥ हितकरिकपीसतवजोरिहाथ:
सर्वथानछाडोंचरनसाथ: अंगदहिदयेमैतिलकआप: पुरवासकि
कंथाप्रभुप्रताप॥ श्रीरामउवाच॥ मतकहोविभीषनफेरिमोहि: ह
मकरौंतअबममसपथतोहि: रथीयहजोलोंअवधिपाज: रविकि
रकुविभीषनलंकराज:॥ श्रीरामआग्यादई॥ मतप्रतिसु
धिलायेजवनस्रीयासीत: पदअमरदयोतोकहुंपुनीत: सोवच
नदृथानहीहोइसंत: महिवसफलगतिजुतहनूमंत: जगदीस्क
लोसुजिजामवंत: अवनिपररहोद्वापुराअंत: कालंतरकरनेक
लहकाज: हमतुमसोंऐहैंरीछराज: कृतनावीउपजेहेतकोर
हगहुटेलहासूद्धहोर॥ कबित्त॥ रघुनाथसषागोहआररराज
हगहुटैलहासुद्धहोइ॥ कबित्त॥ रघुनाथसषागोहआइराज
करिसबैसंगकगवनकाज: निरधारकलोयहनृपनिषाद: प्रभु
करुचरनसेवाप्रसाद: दिदबुधिसबनिकीरामदेखि: बिस्वसदईप्र
ग्याविसेषि॥ श्रीरामउवाच॥ अछाअषैकजिहिचितयेह: संगचल
हुमारेनिसंदेह: पुनिअपरदिवसबेलाप्रभात: तहगुरवसिष्ठक
हिकहीबात: हमकाजमहाप्रसथानहेत: मुनिकरहुहोमसबबिधि
समेत॥ कबित्त॥ परिधानबसनधोतपुनीत: आनेसविप्र
अतरअनीत: कुसपानकरेसबविधिसकाज: तंसतेरुसुहेस
समाज: नगरतेंनिकसित्रयलोकनाथ: हस्ति ...
प्रभुअरकको... मासप्रकास: सासिको ...
... संगसंगकमला विसेषि: ...

कसहचरि सुभग संग : अलि मत्त करत गुंजार अंग : गाइत्री अंबा सहित अ
इ : सब देव देह धारे सुनाइ : पुरलोक चले सुतत्री या संग : पुनि बाल वृध
पुरजन प्रसंग : अंतहपुर बासी दासि दास : पुनि चले बरन चारयो प्रका
स : पुर द्वार पुले छांडे प्रसिध : बैकुंठ हेत चलि बालवृध : तव कूत
चले मिलि संग रूप : जड थावर जंगम मनुज रूप : कम कीट अधम
जन अखिल आंन : सब चले राम की नोपयान : इत्यादिक जे प्रानी अ
नंत : सब चले हरषि अनंत संत : रघुनाथ रूप मन मांझ राषि : तव
कूत चले जय जय ति भाषि : प्रानी नेर लोको उप्रमान : तोन नगर स
नि लागत नयान : तब आये सरयू सरित तीर : बिस्वेस राम रघुबंस
बीर : सब ही नदई आग्यान रेस : पुनि करे सरित सर यू प्रवेस : मंज
नकरि आरोहन बिमान : सब जेत चले सुरपुर समान : गत कलम
षगुन रघुनाथ गार : सब गये स्वरग अपने सुनाइ : ब्रह्मादि स
कल मुनिवर बिसेष : आनंद जुकत आये असेष : मिलि कोटि के
टिन सुर बिमान : आकास तये आवरत अमान : पुनि अर्क के
टिन नतो प्रकास : सोगंध पवन चलि साब कास : हित पुहुप वृ
ष्टि नहगगन होइ : सुरदरी हरषि उडुत्ति सजोइ : सुर किंनरा मि
लि गंधरब नाग : पुनि नारक सुरकं नाग मान : कृत राम चरन नम
जन कृपाल : सयूजल निरमल अघनिसाल ।। बिधि बाच ।। बि
धि कौतक बानी बिष्यात : पुरपुरुष राम तुम जग पुनीत ।।
परमीस्वर पूरन बिस्वपाल : देवाधिदेव रघुपति दयाल : अनचित
अनामय चित अरेह : बिस्नु तुम तत बेता बिदेह : आनंद जुकति
अगति उदार : अनंत गगन पमन तअवास : आकास लिंग
तुम पुरुष ऐक : आरूढ देह कारन अनेक : सुनिये बिसेष मम दीन
बानि : अब कर उभ विरत निषित लो क आनि ।। कबि रुवाच ।।
जाचें त्यासु नियह कमलजात : प्रभु कीय प्रमान बाचा बिष्
न : रघुनाथ पलटि तब मनुज रूप : तये इह चतुरभुज दिब्य
प : अरू तये लषन सेषावतार : भ्रात जिहि फन परि भूमि
भार : तये भरत सत्रघन तन संभारि : धरि देह चतुरभुज
चक्रधारि : रघुनाथ बिस्नु तये महाबीर : सीय धारे तहं ल
छमी सरीर : रुद्रादि देव रिषि सिध अपार : मुनि पितर पिताम
ह दरस पाइ : जोगेस जल पर बत प्रचेड : अंबोधि सरित

सखनअबंक ॥दुहा॥ मिलि सबहिनकहि लोकमहः पावनक
रतप्रबीनः अत्र आये बैकूंठपतिः पुनि बैकूंठपुनीत॥१॥ पू
जिमांनिप्र तिलोकप्रभुः सबहिनकरेसनाथः आयेअपनेलो
कप्रभुः सानुजसीतासाथें॥॥२॥ कारनवानररूपकोः अमरअ
पिलसुवआरः सुरपतिकार्यसिधकरि ःपुनिअपनेपदपाय॥३॥ति
रजगाहिनवजूतनहोः सदगतिपारअसंकः नवबंधनकरिकेलिनयु
तेनिरबंधनिर्यंक॥४॥कबित॥ रामचरित्ररसाल· यहअदभुतसिव
गायो· प्रश्नो सिवासप्रेम· सुगमजूतेसमुनायो· लिषे सुने बांचे
निसंक· पुनि ताव प्रकासेः जनसहसकीयअकृत जाल निरमूल
सुनासेः सोलहैजगतिनरहरसुकबि· अरुएकोतरउधरे· करुना
निधांनरघुनाथको· यहचरित्रकृतउचरे॥५॥ धरमरूपअवध
स· बदनसप्रसनबिराजितः द्रिगनिसुधाभ्रवतदयाल· सिरछ
त्रसुसाजितः उरआयुतआजानबाहुः सोभितसिंयासन· प्रगट
कोटिदिनकरप्रताप· मिलिछबिजुमथनमन· अंकूरधरमकोनि
उदित· रसोअटकिमनरूपरस· कासिअकमनरहरसुकबि· जथ
सकतितापेसुजस॥२॥ सघनकुंदरजरेन· कवनतरपत्रगांनक
रि· अकलपंथकिहिकसो· धराधरमनुजकरहिथरि· उदधिक
वनथाहयो· पानिकिहिधस्योप्रभंजन· नावतअनवजूत· कविन
बसकीनोकारुनः सतकोटिरामसंष्यासुजस· कबिसकवनप्र
रनकहे· सीतहैमुकतिनरहरसुकबि· रामचरनहितचितरहे·
॥दुहा॥ दससहस्त्रअरुदससतबरषः रहेमनुजतनराम· तीनलो
कउद्धवअबिल· सुरमुनिलहिबिश्राम॥५॥इति श्री चतुरवि
सतश्रीअवतारचरित्रे॥भाषाश्रीरामायणे महामुकति मार्गि
या॥श्रीउतरकांडरामायणसंपूरन॥ भाषाबारहटनरहरदासेन
बिरचितो॥ ॥ अथश्रीदसमकृष्णचरित्रबर्ननं॥कवित॥गवरीपुत्रग
नेस· सुधिदातालंबोदरः बारनबदनबिसाल· सकलकारि
जअग्रेसुनः बरनअरुनबिथरीय· सीससिंदूरसमंगल· रुचि
कपोलमदरेष· करतमधुकरकोलाहलः कीनोउछाहनरहर
सुकबि· कृस्नदेवजयजसकरनः सिधिहोइविघनविलसैस
बै· धुरबंदोंपरसीधरन ८ अहमसुताबागेसरीः सारद

सरस्वति : कृष्णचरित मंगलकरु : मातादेऊ सुमत्ति : ॥ गाथा ॥ जयज
न्तोजयंती : ज्वालमुखीजोतिजालपा : जगजननीजयकारी : जुगल
करजोरिकरौजाचंना ॥१॥ भाषासुमतिरसभेदं : अषिरछंदअरथ
गतिउतम : पावेसुकबिप्रमानं : भगवतीभगतिभावेन ॥२॥ क
बित्त ॥ ब्रह्मबिस्नुअरुबिस्वनाथ : रिषसहसअग्रासी : अमरकी
टितेतीस : पंचपालगरप्रकासी : नवदुरगानवनाथ : द्विजसुगिर
धरगिरदीसत : दयाकरउनिजजांनिदास : हरिबिघनमांबिहित सी
ऊसुकृष्णजदुनाथकी : जोपुरानमतिजांनिहौं : हरिकृपाजनमउ
धारहित : बुधिप्रमानबाषांनिहौं ॥१॥ दोहा ॥ महाकबेसुरजेमनु
जे : सुमनसगुनसुजांन : कबिनरहरबंदनबिहित : मांनउप्रेम
प्रमांन ॥१॥ सवैया ॥ कृष्णकृष्णहरिकेसवकृपालहरि : करुनां
निधानहरिकारनकरनहें : भवकेतरनहरिभयकेहरनहरिक
मलनयनहरिकमलाबरनहें : बृजकेबिहारहरिकंसकेस
घारहरि : गिरकेधरनहें : दुषकेपयारहरिअघबनकेकुगरहरि
जोगसिधांतकेसार : नरहरकोसरनहें ॥१॥ दोहा ॥ नगरदाकर
घुनाथजब : मनुबेकूरूपधारि : पुरीअजोध्याउधरीय : सब
भवभूतसभारि ॥१॥ छंदद्वैअषरी ॥ दुषुरअंतआदिकलिक
ला : असुरबरेबऊकरमकराला : बसुधामहापापबिसतारे
नियमसाधिसबधरमनिवारे : जिहिअघपीडितहथीपुनीता
भाराकोतिनईनयननीता : सुधिनरहीकछुअयभरकेसग : अ
तिबिह्वलह्वैगईसकलअंग : हथीधेनकेरूपपलाई : आतम
बिकलब्रह्मपुरआई : सबदुषकारनबिधिहिसुनायो : भयो
सुकछुभायोअनभायो : यहसुनिसोचभयोब्रह्माउर : संगल
येइंद्रादिकसकर : रहाषीरसागरतटआये : अवनिसकलसुरग
नअकुलाये : कमलजातप्रभुसुमिरनकीनो : अतिजीयभयोस
रूपअधीनो : सोहेऊतमअपथसागर : अषिललोककेरहक
हीसुर : करीबेदधुनिब्रह्मसकारन : नरहरप्रभुजागेनाराय
न : दयानिधानदरसप्रभुदीनो : कारनब्रह्मनिवेदनकीनो
॥ अथआकासबांणी ॥ हांआकासबांनिभईअैसी : त
हसुनीब्रह्मादिकतेसी : सबेदेवतुमभूमिसहासी : जदु

कुलमांझ अवतर कुजाई॥ दोहा॥ कै हैं नृप बसदेव तहं : जुवमंड
लनवरूप : तिनकै अवतरि हैं तहां : नारायन निजरूप॥१॥ सेषन
गतै ही समय : सुलच्छन दरसन देह : प्रभु अग्रज कै है सबल : प्रानन
कै द्वै देह॥२॥ रामकृस्न हि नाम करि : द्वै अंसा अवतार : जुवमंड
ल मे विहरि हैं : नव हरि हैं भुवभार॥३॥ माया जोग महेस्वरी : प्र
रनअनप्रकास : हितनुतन दृग्रहीर कै : वह अवतरि है आप॥४॥
कबित॥ यह प्रकास बानी नरी : धरा हेत निरधार : सो सुनि ब्रह्म
दिक सबै : बिसरे सोक बिकार॥५॥ ब्रह्मक आदि सुरन्न मिसंग
सब नितये संतोष : आये थान कुआपनै : मन हरषत दुषमोष॥६॥
रजधानी जदुबंस की : वृजमंडल बिसतार : कृस्न हांमी ठाकुर
त : सदा लगत सुषसार॥७॥ अथ जादु उतपति॥ सोमबंस रा
जाधिराज जदु नयो नरेसुर : तातै जादवबंस बढ्यो संसार साधि
पुर : तिहि साषा महं सूरसेन महीप बिकुलमंडन : ताको सुत
बसदेव बिजय रन बैर बिहंडन : जुवपाल राज श्री भोगवत
सहज बिजय पंजर सरन : सुत तास कृस्न कै हैं सुषद : कुतअन्त
कारन करन॥ दोहा॥ परम रम्य मथुरा पुरी : सब संपति सुषसा
ज : करत जहां जदु कुलतिलक : राजा आहुक राज॥१॥ कबित॥
आहुक के सुत उग्रसेनि : राजा सुधरम रति : देवक नाम द्वतीय
स्वरदाता बाचासति : देवक कै देवकी : साधकंन्या गुनसुंदर : ब
सुदेवहि मांगी बिचारि : पुत्री सप्रेम पर : मंगल निधानु उग्रेर
दलि : उरअनंद उपजे अतुल : घनसे निसांन धुमरत सयन : की
मउछाह जजाति कुल॥१॥ दोहा॥ इहि क्रम जादव अवतरे : मथुरामंडल
माहि : सुरसमाज रजनी सहत : बासुर सुषहि बिहाहि॥१॥ कंसउतपति
कबित॥ छंद पधरी॥ इक समय सुषद रितु बसंत आर : सब फूलफ
लतवन यन सुजार : तिहि काल बिमल चलि त्रिबिधि बात : सोगंध मंद सी
तल सुहात : तरलत गुलम कोमल तमाल : बनि रंग पुहप मंजर बिसाल :
सरस रस सरोज फुल्लीय सुगंध : अलि जूथ भ्रमत मदगंध अंध : बनि बनि
बिसाल बितत निर्द्वंद : जलकेलि जथा आतम अनंद : सुजवन बिह
र नृप उग्रसेन : मिलि समय समय सुषद दिवस मैन॥ छंद द्वै अ घरी आ
गेम हाहु ष्टको उग्रसुर : पहलें नया ऊत जुग द्वापुर : सो निरमल हे

नारायन: पापी तिहि जीय नांथि बयर पन: वज्रस्यो सो ईउपजि महाबल: षे
चर कालनेमि नाम षल: बैर नाव सो असुर बिचारे: बिसरै नाहि बिरो
धा बधारे: ताकत बयर रहै सो निसचर: अवलोके कोउ ऐसो अवसर:
राजा उग्रसेन पटरानी: मंजन करि बेगि रति मानी: पापी यहै जु अवसर प
या: आसुर कालनेम सो आयो: अति हीन न मारग रथ हांक्यो: तिहि षल
छि न्यहे जो ताक्यो: दुरजन त्रीया अवसत्र देषी: बिषम बिरोध अनेग
बिसेषी: उग्रसेन को रूप कस्यो अर: निसासम सत्र आयो सो निसचर: गग
हि कपट जऊ ऐसो गम्यो: पटरानी सो नाहि पिछान्यो: ररिरति दान दयो ति
हि आसुर: जात अपालनयो आनंद उर: उग्रसेन सन्मायह आयो: पेताम
न समय यह पूयो असुर गरभ थित ईत्रीया के: नवते उदर तापब दिल
के: दै त्रीया के गरभ जु दारुन: करत दुष्ट अभिलाष सकारन: बिबरन व
रन देह अति बिरुबल: दिन दिन होत सुरानी दुरबल: नृपति त्रीया तन
देसा निहारी: पुनि ताकी इक सषी प्रचारी ।। सषी बाच ।। तिहि स्त्री स्वा
मि नितै रोतन षीन होत का है तेषन षन ।। रानी उ ।। सुनि सषि लोक हे मर
म सुनाऊ: पतिको कुछ कलेजा षाऊं: मन अभिलाष फले तो मेरो: ग
ते मुनि मानो बहु तेरो: सषी नृपहि वृत्तांत सुनायो: बहुरा इको उगु
नी बुलायो: कागद मय राजा तिहि कीनो: दे हमध्य अजका लिज दीनो
नृषन वसन सुगंध वनाए: उग्रसेन नृप मानकु आये: सो पुतरा ऐक
त सवायो: बिनता कहे ले सषी बतायो: इहि रानी मन हरषत आई:
पथ्य परीमान कु निधि पाई: बेगि उचकि हीये पर अतिबल: षाइ कले
जा लई त्रिपत षल ।। दो ।। राजा सों तिहि सषि रह सि: सबै कसौ
समझाइ: दुष्ट गरभ त्याके दुषद: को उ अरिष्ट है आइ ।।१।। राजो बाच य
ह मंत्रनि सों मंत्र यह: रह सि कहे सब राज: है अनिष्ट उतपति यह: क
रहु सजन यह काज ।।२।। मंत्री बाच ।। कबित ।। उग्रसेनि सो रहो
कह्यो मंत्रीनि मंत्र मिलि: यह अनिष्ट कछु आज: विस्मोता बीस जोगनि
ले: षेसन स्त्रर बयर माथि दिन बदन न दीजे: जथा जतन का वेसु
जानि निरमूल करीजे: पिरथी सत्र आप अरथी सगर करत रहे राजा स
कल ।।१।। सचि मंत्र उग्रसेन: यह बचन उचास्यो: कुल जादव नि कलंक
बंस को धरम बिचास्यो: अबला बध अन उचित: यह जु हमतें न होई
दई बीमाया दुगम: करे तिहि लगि कहा कोई: सुत अस न करम संत
त सब जात सुरासुर जो इहै: सो टरे नाहि नरहरसु कबि होन हा

रमो हो इहै॥२॥ अवधि पाय उग्रसुत ग्रेस · इहां कंस उपजौ : चरन चलै ज
यो चत वेत · जन दोष सुसजै : देवी को देवल सु दिष्य · षेचर षेल षिल
न त प्रेत बेताल · कर हिर जनी कोलाहल · कौऊ सु कंस ति न महकौरे · वै
सी ही बुधि आवरै : मानै न बेद कुल लोक मत : अहित करम सो ईअनुसरै ।
अथ बसदेव देवकी विवाह ॥ इहां देवक सुता सु देवकी · सुंदर सगु
न सुजांन : दई कुंती बसदेव की : पहले प्रीति प्रमांन ॥१॥ लिषि पत्र्यो त
कोलगन : पंच अंग सुध पार : करि मंगल बसदेव कहुं : विप्र लिग्यो निवध
॥२॥ कबि त्ता ॥ बनि बरात बसदेव · आर मधुपुरी उछा हनि · कनक क
लस तोरन उतंग : मिलि थंभ नष चित मनि : सजि चोरी मंडप सुरंग · बिबि
हार जथा बिधि : बरवरनी सो न्हा विसेषि · सुभजोग महासिधि : कुल रे
म द्विजन नरहर सुकबि · बेद मंत्र बांनी बिहत : जुग बसन गांठि जोरी जि
नन : फुव अनंद बिबहार हित ॥१॥ करि संग्रह कर कमल · रमन रमनी
पर रंग रस · बिबिध बेद बिबहार · बिमल बिसतार बिहत बस · परिन्ना वरिल
कि कृ प्रकार · सुभ काज सवारीय · पूरन आहुति प्रगट · अषिल जग जस उच्च
रीय · न्रप उग्रसेन बढि हरष अति · दिय असक लद इज दीये · मिलि जुवति ग
न मंगल धमल : जग वदिन जाचिग जीये ॥२॥ छंद बैअषरी ॥ कनक अथ
इस सतरथ कीनै : देवक प्रसनन डार ई जा दीनै · गज्जम इमतन मरगुंजार
न · वहत छरित वन सरित बिहारत : बंन परव सब कनक मय किंकनि
धावत धरा गगन मिलि प्रतिधुनि : निकरत रारत सहत न वीनैं : तुरद
मतंग वारि सत दीनैं · सोन्ना जीन जरा रन साजे : बिबिधि सोंथ परकार वि
राजे : उव जि सुषे न जाति अधिकारी : आसि सहस पंद्र हअवधारी : कार
न वसत गांन कि हि कीनैं : दिय अनेक दास जे दीनैं · दासि तीन सत रुन
हित कारी : सबै कनक परब सन सिंगारी · ॥ छंद पधरी ॥ विधि जु
कत सबै रस रहि बिबाह · इहां जांन बिदा की न उछाह · संग चल्य
हरष सो कवर कंस : पुह चावन उहन हित प्रसंस : नग नीरथ
हांकत चित नार · इहां नये सारथी के सआर : तहां आर एक जोजन
बरात : बस कर मन नी नवत अनात : जैसी कछु तावीर दीजोग : पु
नि मिली आनि सो ई प्रयोग ॥ आकास बांनी ॥ कबि त्ता ॥ गगन
गिरा अनगूढ · नईया समै जु ऐसी · सुनी कंस सासवे · तहां उर दाक
तेसी · रे मद धम तिमर · करत तू सारथ जाको : तेरो है ताग्र छिन · गरु
अष्टमै याको · यह सुनी गगन बांनी असह : पाप कंस उर अत्र पर
पर जस्यो चित रथ ते पिसन · इहां उदृष्ट दोउ तरि ॥१॥

काढ्यो षग सि षाग हिंगाढी : कंस देवकी बाहरि काढी : काटन मूंड लग्यो जुक
लकी : बिनउ सों गपन दिष्ट जु बेकी : अबला आहि आहि तु चारी : नयो स
बनि को त्रास जु न्यारी : इहा बसदेव निकट तब आयो : पापी चरित देषि दु
षपायो : महा अनरथ बिलोकि धरम मत : कर जोरे थरथर उर कांपत :
इहा बसदेव बिचास्यो ऐसो : कंस क बारन रोसो कैसो : ॥ बसदेव वा
च ॥ यह तो पतित सुरापी पापी : महाबली आतमम तथापी : अब तो को अन
ते उपाऊ : बिषम कालतें त्रीया बचाऊं : जो सुत जामें कि धुन जामें : आ
महा सदेह जु यामें : जो पै यह बच हा मरि है : है कछु करत कछु पुनि करि है
नयो होत नवत अनु जैसो : ताको को जानत है तैसो : ॥ बसदेव कंस
प्रति बाच ॥ तुम छत्रीय जदु कुल महं जाए : अरु नृपनीति चलावन आए :
अबला बहन आऊ को अवसर : धन आसा जु तच लीअ पधर : बाला बि
प्रगउ अरु बालक : इनको बध अपनो धर घालक : इनें अबध्य नृपति उ
च्चारीनों : निज अपराधक बेर निदानों : निंदक करम जु धरम बिनासीय
सो न करे जातें जग हासीय : जो तुम महा मीच नय मानों : पाप बडो यह
चित्त पिछानों : करऊ जतन बऊ जी बेकारन : दिनव हत दषि नर रिहै
दारुन : आयुर बल यह देव अधीनों : कलिजुग बरष सवा सत कीनों : प
रम अवधि जो नृपति पिछानें : जगम ह धरमा धरम स जानें : जतन करे
जिहि जिहि नृप जोई : काल बलिष्ट न छोडे कोई : पापाचरन करें न ही नृप
ति : सुष है अलप दिष्ट दुष दुरमति ॥ कंस बाच ॥ याको बध मेरो हित त
में जीयत रहें तो सुत जामें : करिये अब धरहि बिलंब न कीजे : जो न हि अ
पाहि जमहि सु दीजे ॥ बसदेव बाच ॥ जो तुम दुसह मीच तें डरऊ : कंसक
ऊ इक जतन सु करऊ : याके जो कोउ बालक होई : आनि तुम्हहि दें हूं
ऊ सोई ॥ कबि रु ॥ निसचय यह बसदेव जु कीनों : दुष्ट देवकि हि अ
नय जु दीनों : यह बसदे व देवकी गए : नय जु तनता ब सत सो नये :
जो सुत प्रथम देवकी जायो : कीरतिमंत सु नाम कहायो ॥ छंद पधरी ॥
इह प्रथम पुत्र बसदेव आनि : पन जुक तदयो सो कंस पानि : बऊ सो न
नृप बिलोकि बाल : इह दुष्ट कंस कछु नोदयाल : ज ब बचन साच ब
सदेव जानि : पुनि दयो फेरि बालक प्रमानि ॥ कंस बाच ॥ तातें अब सों
पत बाल तो हि : मांगो जब दीजऊ आनि मोहि : बसदेव चले लेये ह
बाल : कंस पह आर इदर सी त्रिकाल ॥ नारद मन चित बना कंस
जो हते न ह बाल कोइ : सुरकार्य हेत बिनास होइ : चित मंऊ यों

नारदबिचारि:सुरकाजआजजेकसुधारि:कंससोंमंत्रनारदजुकीन
हासनबिसेसउपदेसदीन:करिगिनतीअष्टमगरभकोर:आगेबोय
रभतोयहैहोर:निहचैनबालछांडौनरेस:सबहतोजिनेदेषकुअ
सेस:नेरदिगेपजादवनिजानि:येअमरअंसअवतरेआनि:इनकेवि
नासकरियेनआज:कछुकहनकरनकछुऔरकाज:उपज्योतषेत्रज
पुत्रआहि:मतिउग्रसेनकहपितामानि॥कबित्त॥बातनिअनर्थना
रदबदार:परघरहिघालिपुनिगेपलार:जोलेनहुतहोयेहजार:
बसदेवफेरिलीनोबुलाइ:बसदेवलीयेआयेसुबाल:कृतजोगसीस
तिहित्रम्योकाल:पुनिलयेबालबसदेवपास:सिलपेनेदुष्टउपजीन
नास:बसदेवदेवकीपकरिबांह:लेमेलेकारागारमांह:पुनिजेरले
हबसदेवपार:जिहिगेरओरकोउनजाहि:पहरारतराषेचहूपास:
बिष्यातबीरजेमनबिसास:सुतजनमतयोंजोसुषेन:सुततीजे
पज्योभद्रसेन:सुतचोथोमृदुनामासरूप:अरुपंचमसमदनतांअ
नूप:पुनिछठेनामतिहिनद्रपार:इहिक्रमसोंउपजेपुत्रआर:कंसहि
तेदीनेसबकुमार:पापीसोमारोसिलपछार:जादवसुधरमजुतजिते
जानि:अवरोधकरेतेसबेआनि॥अथउग्रसेनअवरोधकंसति
लक॥जरिसहितलोहपारनजंजीर:पापिष्टपिताकहदईपीर:संक
टमहदीनेउग्रसेन:षलकंसपाटिबैगेसुषेन:कंसासुरजबहीराज
कीन:निःसेषपापबरतेनवीन॥अथसंकरषनप्रसंग॥देवकीगर
भसप्तमसुत्ताइ:असाबतारबलभद्रआइ:प्रभुजानिगरभयहसु
प्रतीत:पठईसुमहामायापुनीत:बसदेवरोहनीनंदबास:पहले
हीराषीअप्रकास:देवकीगरभसप्तमदुरंत:आकरषिगरभलाईअनं
त:यहमेलोरोहनिगरभआनि:जगभरमसुपेकाकनजानि॥हू
ओ॥अतिसरूपबलभद्रहो:पायोजनमप्रकास:जातकरमकीनो
जतन:आयुनसंदअवास॥१॥नंदमहरकेअहलब:हैतसमंगलहो
र:त्रुतीयनामबलभद्रको:संकरषनजयासोर॥२॥इतिश्रीनागव
रेमहापुराणेदसमसकंधानुसारेणभाषाबार हटनर हर
दासेनविरचितं॥ प्रथमोअध्याय॥१॥कबित्तबंध॥छंदपध रो॥
इहिसमयमिलेसबदुष्टआनि:पापनिजिननहियरमहिपिछां
नि:सबसुसरकंसकोजरासंध:अबआनिमिल्योसोईमदांध

अयवकी बकासुर मलेबआइ : त्रिनचक्र बरासुर कौसितार : इस्मादि पाप
सबजुरे ओर : गये अरिष्ट जे और और · जब लगें जादव नि दुःष दैनें : कं
ज गए से तत चित अचेन : अक्रूर आदि कौउ मन उदास · देषौ जु समय ये
रहे दास : मानेन अहित हित मिलि समाज : जो कहे कंस सोई करहि काज
॥ अल तिका इहा ॥ नयो जु सत मगर नगत : प्रभु कछु कारन पाइ : कं
स हि केलो ग्रस तिका : सो ऐकौ तसु वार ॥१॥ गर न देवकी को गयो :
पार कछु उनपात : मथुरा घर घर नगर महि : बात न ईबिष्यात ॥२॥
अथ श्रीकृष्ण देवकी गर्भ उत पति ॥ तब ईस्वर अंस निस हत : कृत
कारन करतार : कृपासिंधु बसदेव के · चित कस्यो संचार ॥३॥ कीनो प्र
उ बसदेव के · मन हि प्रवेस प्रमान · तछन तन मो न ऊउ दित : नऐक
द्वादस नान ॥४॥ छंद पधरी ॥ मन ताव धरे देवकी माहि · निज धात
हेत सबंध नाहि : नगवंत जोति देवकी नासि : सुन मनि मह ज्यो दिनक
र प्रकासि · अस्ता सो मंदिर माहि आइ : नो ऊरम हदीपक जो तिनाइ
॥५॥ कबित देवकि उदर दयाल · अषिल नुवनार उतारन : अष्टम गस्त
अनूत · कृष्ण प्रभु आइस कारन : इहब्रहमादिक आनि · गरन अस
तुति गुन गाए : जय तिजय तिजदुनाथ · अमरगनर तक आये · ब्रज
के अनेक हर हो बिघन · हरि बन बन हि बिहारि हो · करि पावन नर
हरपति नकहें · हगिकंसा सर मारि हो ॥६॥ अवधि पाइ कलिजुग हि
आदि : पूरन कृत पावस · न नजु मास रोहिनि नित्र · बसि सिय बि
नावस · असित पाष अष्टमीय · हेत मिलि सिय जोग यह · अरथनि
सा बनि बुधबार · श्री कृष्ण जनम तंह · कृत उअफले बसदेव के त
ग उदय सनमुष नए : त्रैलोक नाथ सुत अवतस्यो : अह अनिष्ट सि
गरे गये ॥७॥ कबि रुवा च ॥ दूहा ॥ अनस तुति ब्रह्मादिकन · गंजोकी
नी करजोरि · गावे सुने गरस्तके : बस न ही परे बहोरि ॥१॥ इति श्री लागव
तेम हपुराणे दस म स कंधानुसारेण नाथबार हरनर हरदा
स नलिस्वितं ॥ द्वितीयो अध्याइ ॥२॥ कबित ॥ छंद पधरी ॥ जब न
योजनम श्री कृष्ण जानि · पय बही कोउ कसिरता प्रमानि : मह मंगल
घर घर अकसमात : सुरसिध हरषमन न ही समात : सरसर सरोज
फुल्लीय समोह · मिलि कुसम लता तर चित मोह : चलि पवन त्रि
बिधि दिसि दिसन चार : अति सुषद मन फुरित बसंत आइ : इह
कुरी अगनिज रि उगत आप : अगटी सजो तिजनु प्रभु प्रताप · आ
नंदनये अमरनि असेष : बाजे अकास दुंदुभि बिसेष : लहिसम

प्रहरष सुरबर बिकूल : सुरलोक लोक मंगल सम्रल · किंनर सुर गंधर
ब गांन कीर्त्तंन · नाकि सुर कें मोर चिनबीन : देवकी दिसा प्राची अनं
द · दीपत्ति ऐ पूरन रूप चंद : सिर मुकट कनक मनिमय सुदेस · कुं
चित अति सुंदर सघन केस : रतन मय अ वन कुंडल सुरंग · अरुनंद
हा सि आकृत अनंग · मनि सोन उरसि मुकता निमाल : बनि अंग अंग
भूषन बिसाल · तन स्याम सघन बनि बरन तास : करि पीत बसन त
डिता बिकास : चक्रादि कं आयुध भुजा चारि · निसेषत सुत लछन नि
हारि : देवकी त बे सुत ओर देषि · बिस्वेस पुरुष लछन बिसेषि · न
ऊ बार बार ले ले बलाइ : सुत जनम हरष उर न ही समाइ ॥ दूहा ॥ उग्र
कंस को दुसह डर · हित छबि पुत्र निहारि · नरि नरि लोचन प्रेम नर
धर नि अंजकि तधार ॥ १ ॥ दुसह दसा सो देवकी · देषी दीन दयाल · अ
स्तुत बैं हसि यों कह्यो : करो न भय इहि काल ॥ २ ॥ बस देव बांच ॥
छंद पधरी ॥ बसदेव दे षि गोबिंद बाल · करि बार बार बंदन कृ
पाल : प्रभु परम पुरुष पूरन प्रमान : पायो न बेद रु पुरान : अ
न षंड जोतित व अनाधार : पेलहि न सुरासुर वार पार · ध्यावत जिहि
निगम ध्यांन धारि : चित वाच अगोचर राहि बिचारि : निगमागम ष
जत जो न जानि : अवतरी जो तिमम ग्रेह आनि : करुनाग पवान मो ते
न को इ · हित रूप अंतर पर कहा होइ ॥ दूहा ॥ है जाके कच कूप मह
मिलि ब्रह्मंड समान : ते प्रभु मेरे अवतरे · बृज कै है यह बान ॥ १ ॥ रूप
अलौकिक राबरो · बेद बिदित बृजराज : समय निहारि बिचारि सो : व
हु प समीये आज ॥ २ ॥ अब सो अद्भुत रूप यह · नही उर हि जु देव
व ह ह सो रोग आइ है : तब क कुल हि है नेव ॥ ३ ॥ अगे मारे बाल रनः नि
रदय निठुर अनीत : सुधि आये आवत सहमि : पापी कहा प्रतीत ॥ ४ ॥ श्री
रूप बाच ॥ अगे कालें तर कि कु : जो रिष सुतपा नाम : ताके तूं पति
व्रता : पृस्नि सु नामो बाम ॥ ५ ॥ तप सा धे अति उग्र तिन : मिलि रिष
त्रीया समेत · देव निजो दुरल नद रस : हरि दीनो करि हेत ॥ ६ ॥ छंद प
धरी ॥ इहां कहे बचनन गवंतये ह : निहि हेत करे बन दमन देह · या को
अमोघ फल लेहु आज : कृत कर उज पूरन चित काज ॥ रिष बाच क
र जोरि कि सोदं पति सकाम : बर दे हु हम हिय ह धरम धाम : अवत
रहु नाथ मम उदर आइ · तुम सदृ देव दीन निस हाइ ॥ श्री न गवान ॥
मे दीनो तु म क हें बर मह त : यह यो ही कहे हें कें हि अनंत : बर दयो
जथा बांछित बिसेष : स्वसथान पधारि सयन सेष ॥ दूहा ॥ पृषि

मातसुतपापिता॰ बिहतधरमबिश्राम: अगस्तयेपूरनपुरुष: छलि
गस्तयहनाम॥१॥ कालेतरबीतेकछुक॰ जनमसहजेजानि: कसि
पत्नयेप्रजेसपति: पतनीअदितप्रमानि॥२॥ अदितगस्तऊअव
तरयो: वावनबिप्रबिनीत: कीयसहाइतबइंद्रको: पुनिबलिछलेपु
नीत॥३॥ तेईकसिपबसदेवतुम: अदितदेवकीमाइ: लीजेजन
मप्रअवतरे॰ यहव्रजमंडलआइ॥४॥ छंदपधरी॥ मेलयोजनमत
वउदरमात: बरदयोऊतोपहलेबिख्यात: कहिबचनजथामेसल
कीन: यहदिव्यरूपप्रसयजुदीन: अबकृस्ननामम्मूरतिउदार:
व्रजमांऊबिबिधिकरिहैंबिहार॥ श्रीकृस्नबाच॥ दूहा॥ करतम
हात्तयकंसकोः सोतुममोकहजानि: करहुजतनजोऊकह
त॰ पेयहसमयपिछानि॥१॥ महरनंदकेग्रेहमह: अबेदेऊपु
ह्चाइ: हितजसमतितहापोषिहैं॰ पयकुचपानकराइ॥२॥
कबिरुबाच॥ छंदपधरी॥ योकहिकृस्नतनतनककीन: पु
निबालत्तावबरनेप्रबीन॰ इहालयेमातदेवकिउगार: लेलेब
लाइअरुकंठलाइ: तहादेषेअद्भुतचरितताम: बसदेवनयो
अंतरबिसास: आनंदसलिलबढिउरअमान॰ समतासकरे
स्रुतकसनान: इकअयुतयेनबिधिजुतनवीन: करिमनहि
ग्रहसंकलपकीन: दीनेलपेरिपरजननिदार: लीयपिताकृस्न
तबउरलगाइ: जंजीरचरनछुरिपरीजानि॰ बसदेवपुत्रदेवतप्र
मानि॥ गोकलप्रतिगवना॥ बसदेवचलेलेजहीबार: दुरगम
कपाटखुलिगयेद्वार: इहापरेपहरुवानछिनगपन: निद्राजुका
लरूपेनिदान: नत्तनिसाअरधघनगगनघोर: अंधारनिस
मिलिचहुओर: छायोनत्तचांदसयनदुरंत: पसरयोतमउ
रगमदिगदिगंत: मघा॥ वमिलिबरषतमंदमंद: कृतजोतिबदन
आनंदकंद: इहासेषनागफनसहसआइ: छतनाकरिलीनेचलीने
चलेछाइ॥ दूहा॥ मायाजसुदाउदरमह: आपुनबसीजुआइ: नयो
जनमताकोअत्तय॰ पेयहअबसरपाइ॥१॥ ताकहलेसोईतबे: मात
अतिहितमानि॰ दृष्यासंततिमुखदुलत्त: जनमसफलकरिमानि:
छंदपधरी॥ तबतरनिसुताकेआइतीर: बसदेवजुगदेत्तयेबीर: ज
लचढेतरनिमिलिलहरिजोर: आवरतबिषमपरिओरछोर: पावेन
घाटकहुथाहपाइ: इहिगेरफुरतनाहिनउपाइ: बसदेवकृस्नचिंत
वनकीन: नदिजमनातबहीथाहदीन॥ छंददोआषी॥ उतरिनदीज

ोकलआये: पुरबासीनि नाबसपाये: दुगमकपाटखुटेअहवारा: तं
करिबसदेवसंचारा: पलिकापरसोवततहापाई-जसमतिलीयेसु
तीजाई: इहाजसुदाढिगकृष्णसुआये-आपुनसोकंन्यालेआये: पुनि
तदेवबंदिग्रहपैसे-जगिगयेनिकटकपाटजुजैसे: पहरिजेजीत्रा
नैपाइन: सोइरहेबसदेवसुतारन॥ इहा कृष्णजनमबसदेवके दे
किउद्दरदयाल: कीयनिवासग्रहनंदके: प्रभुबृजकेरिषपाला॥२
श्रीभागवत ने महापुराणदस मसकंधानुसारलोनाषाबार हट न
हरदासेनविरचितं॥ श्रीतीयेअध्याइ॥ संपूरणश्रीकविरु॥ कवित
महामायाअंसावतार-कीयरुदननुकंम्या: दयाजुकतदेवकीध
लोगोदसुधंमा: बालरुदनसुनिसबद-जगेजामिकसेजांन्यो ग्र
सुरकंसहिअगनि-विवरियहमरमबषांन्यो: आगवैगरजतयेगो
अब- सुन्योबालरोदनसही: करजोरिकंससोंसेवकनि-हितबद
सगरीकही॥१॥ अतिजनातअरसात-उग्रोसज्यातजिआतुर-सु
पानबसबिकल-गिनतनहीधर्मविगुर: नयजिहिअष्टमगर
त-सुपैनयोमोषसुनायो: रोषनयनपरजरत-धरेकरषगसुथा
यो: आयोत्रसाधअबचिंतयुह-जनकाहूनहजान्यो: प्रतिमाबि
लोकिउरत्रासपरि-प्रांनबिनासप्रमान्येपा॥ छंदपधरी॥ इहांमें
सजुमंदिरमांऊआइ: पुनिबहनगोदपुत्रिकानिपाइ-उचकाइलई
कंन्यांअनीत: कछुनाहिदयालजाकुचीत-कंन्यासुपछारीसिल
प्रकास-उछिगईकरोनितेछुटिअकास: सोतरईदिमअपनेसरूप
अतिप्रनामहामायाअनूप॥ महामायाबाच बोलीसुगगनम
हबिमलबांनि: पापिष्टनतेहनापिछांनि: सोप्रगट्योहैरथीप्रमांन
मारिहैतोहिमंसकासमांन: अनकाजबालमारेअनाथ-हमारेअ
योकहाहाथ॥ कबि रु॥ इतनोकहिमहामायाअनीत-पुनिअप
नेथांनकगईपुनीत: बिलपातकंसकहंनोबिहांन: निसिनूरी
ठंढेबरषमांन: करिसनाकंसबेगेकुन्चीत: नमसुहमंत्रिआयेअ
चीत: सुधिकरिकरिकंन्याबचनसाल: करिक्रोधकंसमनमहंक
राल: तहामिलेआनिनवतअतंत्र: मंत्रनिसोपूछेमूलमंत्र: कं
निकाबचनसबप्रगटकीन: पुनिमंत्रिमित्रबोलेप्रबीन॥ मंत्री
बाच॥ कहियेनसोचरहिगेरकंस: अवतारजपेजउअमरअंस :न: मि
अमरनिकेदेषेबलबिधांन: निसनैथलअतिपो
लिआसकंपउछिवितमाह: जबपरैकगिनतब

हमासोतपसीअबलवृध॰ पूजेनताहियहकोउअतिप्रसिध॰ हेरुद्रलिषप
रीरहतराग॰ बनबसतरत्नाकृतजुतबिराग॰ हरिदुस्योरहतयेकातहोइ॰ कि
ऊताहिदिष्टदेषेनकोइ॰ मुनिआपदगथलजाइमोन॰ सुरराजरहेकेऊनय
समोन॰ हैंसात्रवजरूपिमहाहीन॰ पैसंकनीयबादपिअबीन॰ अनुदेषऊके
टकतनप्रमान॰ पदगरुतकरतहेंबिकलप्रान॰ अगनिकनअलपआ
मयजउपाधि॰ येहोइहृथउपजेअसाधि॰ बदिपरेतबेकछुनहिबिसार॰ अनु
करऊसमरिपहलेवुपार॰ निहचैसुरपोषकमबनिदांन॰ सोकरेबाधबि
प्रनिसमांन॰ अमरनिकोसाधकयहउपार॰ रावरेअयलगिकहतरार॰ र
कमंत्रसुनऊअथीसआज॰ कीजेनबिलंबयाजतनकाज॰ वृजमंडलमं
हबालकबिसेषि॰ इसयोसउरेजनमेजुदेषि॰ पुनिहतऊजितेजिहि
हिप्रकार॰ बलछलकरिअबतोयहबिचार॰ हेनिपुनप्रानहिंसानिदा
न॰ अनुलिनहिदेऊआग्याप्रमांन॰ कृतदुष्टतितेसबबिदाकीन॰ पर
प्रांनघातबिद्याप्रबीन॰ पूतनाआदिदैचलेपाप॰ छलकारकबांधे
सीसछाप॰ पापिष्टचलेआदेसपार॰ अजजूथजूथवृकछुयितआइ॰
गतिनरकआगमयहचरितमूढ॰ मायाप्रपंचज्ञानेनमूढ॰ मवबाधकरेअसु
रनिसमूल॰ सुरराजसुनतउरउगेसूल॥ कंसबाच दूहा॥हहाबिचारयौ
कसयह॰ जोबनधनमदराज॰ बालहतेमेदोषबिनु॰ कछुसरयोनहकाज
जा॥१॥ बचनअमरबिस्वासतैं॰ मैजुबहनकेबाल॰ सोनकसोंमारे
सबै॰ कस्योअनर्थअकाल॥२॥ कहिऊरअष्टमगरतको॰ अमरबानि
अकास॰ जैगहरकंस्यांतई॰ सुरनिकहाबिस्वास॥३॥ कारायहतें
देवकी॰ दयेकाढिबसदेव॰ कंसजुसामउपारकरि॰ ताषतबचन
सनेव॥४॥ नलीबुरीनवतब्यता॰ होनीहोइसहोइ॰ अमरऊबोल
नरूरअब॰ कहाकरैतिहिकोइ॥५॥ नोनटरेभावीअनय॰ सुरासुरनिऊ
साध॰ करियेषम्याकरिकृपा॰ यहमेरेअपराध॥६॥ बसदेवबाच॥ क
होजोरिबसदेवकर॰ चितमहसमयबिचार॰ भावीबसजोकछुनये॥
ताहिनहीउपचार॥ कबिरुबाच॥ गयेतबेबसदेवग्रह॰ मानिकुसल
ग्रहमोष॰ कहानरेसोकेसको॰ देतअदेसनदोष॥७॥ कंसहिकर
नरनरनको॰ आयेनंदअहीर॰ समझायेबसदेवसो॰ बेगजाऊग्र
हबीर॥८॥ करियोरिछ्याबालकनि॰ अहेमित्रइनकाल॰ अबकूग
महउतपतिअति॰ सुनिहोअतरसाल॥९॥ इति श्रीभगवतेमहापु
राणेदसमसकंधानुसारेणेभाषाबारहटनरहरदासेनबिर
चित॥ चतुरथोअध्याय॥४॥ कबिरुबाच॥ छंदपधरी॥ अबनंदम
हरकेघरअनूप॰ सुतनयोस्यामसुंदरसरूप॰ बतीसपुरुषलछ

नबिसेषि: अंगअंग बिराजित हे असेष: अरंधापु बितीतेजु तआनंद: नि
रषौमुषसुतकोमहरनंद: प्राचीनकरमफलअबिलपार: उधोरउन
यकुलपुत्रआइ: दावानलपसस्योजोउरंत: अरुधरनिधानसुकत:
अनंत: चउओरबरषिघनचितचाह: योजयोमहरघरघरउछाह
सुषदेषिउतारेलोनमात: रसबओसुपेन हीउरसमात: गोकलके
मंगलग्रेहग्रेह: हितरूधनिबरषेमेह: बनिबनि हेआवतजुवतिरंद।।
मिलिचलतउरहगतिमंदमंद: गहगहेकंगमंगलसुगान: बासनब
निरूषनबिबिधिबान: आरतीकलसमंगलबनाइ: व्रजबधूनि
नंदरानीबधाइ: कैबदननिकटबालकनिहारि: आनंदपीवहिजल
बारिवारि: देदेअसीसजाचहिदरव: जसुदाकोबालकचिरंजीव: अ
ह्यहतेआएगोपग्वाल: सोलीनेदधिभाजनबिसाल: आनंदमगन
सुधिनहिनआन: सबकरतपरसपरदधिसनान: बनिदही हरदमि
लिपीतबान: जनुअजिरकाचदारेअमान: इहबहीदहीसरिताअपार
दधिकादमभचिनदुधार: आनंदकेलिकरिकरिअन्हार: पटबसननं
दपेसबनिपार: अरुग्रामग्रामतेंआरगोप: आनंदितभूषनबस
नओप: इहआपनंदसुरगुरआय: सुतकीधोनादीसुषसराय: बृ
जपंडितद्विजबोलेबिष्यात: पगधोइकरीपूजाप्रभात: सुचिनंद
नीरकीधोसनान: आचरनबसनपटबिहतबान: कृतजातकरम
बिधिबिहतबेद: अरुदानपुन्नकीनेंअभेद: जेप्रथमप्रसूतासु
रतिजान: आकतउतगबछरूपआन: कनकमयउचितरूपनउ
कीन: बनिबिमलपाटलोइनवीन: सुथारदोहनीकनकअंग: आ
छादितपाटंबरउसंग: इसोदिकपरकरिउचितआनि: दोइलछधेन
दीयद्विजनदान: अरुत्तरिदहनादीयअनेक: बिधिवतबिधानकी
नेबिवेक: जाचकजनमागधसूतजानि: बकुपाइकोतिजयजयतिबानि
ध्वजकलसबनेप्रतिधामधाम: रबिबंदनमालाद्वारगंम: सुतूधनथफर
गनउतंग: नीसाननादपूरितनिहंग: संमिलीजूथजूथनिसबेह: गव
नकिरिगोपीचलीग्रेह: कीयअवधिपारपूरनसकाम: नाहतजेगत
येफलनाम: ।। इति श्रीभागवते महापुराणे दसमसकंधानुसा
रतेंभाषाबोरहटनरहरदासेनबिरचितं।। पंचमोअध्याइ
५।। कबिरुवाच।। छंदपधरी।। रकुतीपूतनानात्रीयत्रसाथि: पु
निकसकरनपरईउपाधि: बिधिजकतबसनन्त
निप्रतिकरतीहबनाव: लरछुद: . . नस

हो गोपि
रनचाहि

मा व्रदियनैंन: उचकत कुच सो लाग्यो गओग: मुरि मुरि है चितवत
गति मत ग: पापनी बात मुसक्काति पान: उफनात रूप सो लाग्यो मान:
सब गोपवधू सेरहे गोम: बिसमो हपरे सो देषि बाम: तन रूप अनूप
मबसन चाहि: बस तावी काऊ न बूझि बात: तो कौन ग्राहि अरु कह
नक मथ बिहत पालना कीन: नग लटकत मुकता सरि नवीन: घन मे
लर तन मनि जरित घाट: पर बसन बिराजित जोर पाट: पलना ति
हि देव: जसम जोग्गग निक निकासते व: बिषलेप कुच निअंतर
बिकार: पापनी लगी नहो करन प्यार: लीने उगरति हि नंद लाल: षत
बाल षिलावति करत ख्याल: पापिष्ट दीने उरज पान: पय संग सो षि
पूतना प्रान: मुष मो ऊरू कुच ऐक मेलि: कुच द्वितीय अलो करबाम
केलि: मुसकात मनोहर मंद मंद: अति बिथा बढी नये बिकल अं
ग: गयेज तनाव बलबुधि तंग: रहा लगी छुटावन कुच अधीर: अति
अंग अषिल नरी बिषम पीर: छूटे न जबे बल छल अछेह: दुष्ट सुक
री आसुरी देह: रहा कूलपथो धर धरि उछारि: दीनी सो बाहरि निगर
रारि: सत्र पूरी को सब घरपा इसीस: चर ओलि मरतति हि करीचीस: त
रलतारूबे जे परतताहि: ये ते सब्र ऊरन नये आहि: जीय जात करी
पापनि पुकार: सुनि गिरे लोक नूलेस नार: रहा आर गोपगो पीअग
न: सो परी देषि परबत समान: उर ऊपर देषे कृष्ण आर: सुज षेलत
र: उनदयो वतज सुदा हि आनि: माता यह सुतकी कुसल मानि: अबले
कि लो नराई उतारि: अरु देत कृष्ण पर दिव्य वारि: गोमय मिलि गोरजल
र अंग: गोमूत्र न्हवायो नीरंगंग: बहु धेन देय बिप्रनि बुलार: सुर
कवच राम रहा सुनार: सुत कुसल लगे षेलन सुनार: पुनि मन ऊज
सोदा प्रानपार: लाल हि लरुार उरलाइ लीन: दुष टारे सुसह कुच पान
दीन: कर नरदे कैस हि सावकास: रहा ललने नंद सो चत उदास॥ नंद
बाच्य॥ मिथ्या न हो रिब सदेव बानि: नि हि दये ते दष लमरम जानि
कबि रु॥ सो चत समे चेत उर घस्वास: रहा नंद मह र आये अवास:
हरा॥ ऊ तो दूसो गन को दिवस: रहा पूतना आर: करे जु जैसो कर
मको ई: पुनि ते सो फल पार॥१॥ गोकल आये नंद अह: करत लिये
ही काल: पाये मान ऊ प्रानसे: कुसल बिलोके लाल॥२॥ मरी पू

तनां कृस्न करि पुनि तिहि सद्गति पाइ: हैं सो सा पिजु दसमम ह: सुनि हैं सं
तसुताइ॥१॥इति श्रीभागवते महापुराणे दसमसकंधानुसारेण नापस
रहट नरहर दासेन बिरचितं॥षष्ट्यमो अध्याइ॥६॥कबिरुवाच॥
रुहा॥ ऐकमासके जब नये कृस्नदेव श्रीकंत: महाउपद्रव घोषम ह: उ
पजन लगे अचिंत॥१॥देवसथल रकदेविको: ऊतो महावन वीच: त
हा मिलि षेलो के सषल- निसचार निसो नीचा॥२॥इहि अवसर चेई असुर
मिले सषा सब आर महाउपद्रव घोषमह करिहे के सस हारा॥३॥छंद
हेअषरी॥यह माया बल कृस्न उपायो: जसुमति जानें मेरो जायो: सो
महिमा तचु षारसु वायो: पलना कन करतन छवि छायो: पछिम नागस
करके पलना: लेतिहि छाहसु वायेल लना: सुत के गरल हि म हरसिन
गी: ग्रह बिबहार करन पुनि लागी: निसचर एक सकट तिहि निरदय
कीनो आनि प्रवेस महा कय: पूजी घातजु असुर सबीनो: कृस्न हिद
बन दावस कीनो: अंतर फुले निकट लषो आवन: प्रभु तहा देषो स
कट अपावन: मोहन बाम चरन सों मास्यो: प्रबल पृष्ठि थरथरनि प
छास्यो: अग्र नाग थरनी महाअटक्यो: पेसोई सकट उलट ले पटक्यो
॥१२॥ सकटासुर तौ स्यो सहज: अंग बिथुरे स्व ऊअरी: कीनी एक
हि मास के: क्रीडानंद किसोर॥१॥इति सकट भंग॥ कबिरुवा
च॥ छंद हेअषरी॥ इक दिन गोद लीये आनंद हि: मात षिलावत
बालमुकंदहि: जब प्रभु असुर आगमन जान्यो: आवत त्रिणबरत
जनमान्यो: भारी कस्यो मात सों आपुन: उतरि गोद ते लोरत आगन
याही समय त्रिणवरत आयो: दारुन बातचक्र दरसायो: उठे
पात त्रिन चक्र अकारो: अरध दिवस तब भयो अधारो: उडत रेन
कोकरी ऐसी: जिहि तन लगत गिलोल जैसी: पुरजन नाजिय हन
महपेगे: जथा बाल तरने अरुजगे: पापी असुर दावय हपायो: अति
रिसलस्यो त्रिणावृत आयो: रहा पेच रति हि कुलबिलाये: मरुतचक्र
मह घालि उडाये: सीस अकास लगे तब असुर: सगहीलषे पणये र
हक सुर: केरथ्र हन बालक कीय ताको: रह्यो कपट बल छूट्यो या
को: सिल पर परस्यो निसाचर सोई: अति दारुन रव ब्रजमह होई: त्रि
णवरत के प्रान तह ठन: निकसे नयन बार हू रतन: कृस्न बालको तक
यह कस्यो: परब तमन ऊ बज्र हत परस्यो: रह्यो घोष जन आतुर आए
प्रभु तिहि ऊपर षेलत पाये: नंद उगा रला इ उर लीनो: कुसल बा
ल पायो हित कीनो: पूत हि रहा जसुदा नहि पावति: मन सोचति अ

तिहिं वमन वेति: अव षेलत बालक किन गयौ: हाहा दई बक हाय हनयौ:
याही समय नंद जु आए: कुसल लहि आनंद पाये: घरनी कहं लै दीनौ बा
लक: घर को दूरि जु अरिष्ट घालक: लाल जसोमति सुत उर लायौ: लैलै
लोन सु बाल लरायौ: ऊथ जूथ ब्रज बिनता जेती: दौरी आइ असीस निदे
ती ॥ छंद ॥ बिनता बाच ॥ अहो महरि तव बड़ भागी: लाल हिं नेक न चे
टन हि लागी ॥ कबिरुवाच ॥ गोदान दिक दान गनि: करे नंद तिहि काल:
मंगल बजे निसान मिलि: बच्यौ कुसल सौ बाल ॥ १ ॥ असुर त्रिणाव्रत के
रहो: नास करे नदृ नंद: मंगल घर घर घोष महा: उपने अति आनंद ॥ २ ॥
त्रिणावर्त बध कबिरुवाच ॥ असुरनि के बलकाइ अति: अरु सुतक
बय अंग: कमजु तमन महम हरि के: अचिरज नयो अनंग ॥ १ ॥ सिसु देष
तको तनक सी: अति पोरुष बल ऐह: मनहि समात न मात कः है उप
जो संदेह ॥ २ ॥ घर घर व्यापक स्याम घन: अंतरजामी आप: हरक सह
सु नावय: पर चित को परिताप ॥ ३ ॥ छंद हंस पदी ॥ एक दिवस जसुदा अनु
रागी: सुत हि षिलावति अंक सलागी: रहा कृस्न कहं आरज नारी: देवी
माया अगम दिषाई: बदन को षज्ज हमंड बिलोक्यौ: सब नो बिस्व निरषि
मन रोक्यौ: सर सरिता परबत बन सागर: धरनि अकास हंस उडस
सि हर: षानि चारि नवषूत अषंकित: मह चवरासी लष जु मंकित: ज
ग जरु जीव चरा चर जेते: तिहि छिन मात निहारे तेते: तहा जसोदा मु
रु त्रिलोकी: कान्ह के मुष ही मांझ बिलोकी: रतहि हरन ज्ञ हमप्रमानी
जग आधार जगत पति जान्यौ: पुनि प्रभु माया प्रबल प्रकासी: वहे मा
न सुव मति आनासी ॥ इति श्री भागवते महपुराणे दसमस्कंध
चतुर्थे नाभावार हट नरहर दासेन बिरचितं ॥ सप्तमो अ
ध्याइ ७ ॥ कबिरुवाच ॥ छंद उधोरा ॥ जब लगे उर बनि लाल: करते किच
लन कृपाल: हरि रिंगत अंगन मांहि: जब कछु क अंतर जाहि: दहले
त मात उगर: जिन बाल बाहरि जार: कच स्याम सघन सुदेस: बनि
अलक बिथुरि बिसेस: भृकुटी विक सि बदन सरोज: मनु लजित सुम
न मनोज: जुग नयन षंजन जोप: अति त्रिक्ष्न दृग अनोप: मिलि कु
टिल तोह मंरोर: जनु बाल मधुकर जोर: अधर तर रंग अनूप: रद व
ज्र कनिका रूप: बिधि जु फ तनु तर बैन: मनहरन मंत्र जु मैन: रहि
के उसुषद त्रिरेष: बनि रूप सीम बिसेषि: उर सिं घन षर सचाल
बी यजो ग मनु ससि बाल: लसि कमल कर तल लाल: बनि बाजुबंद
बिसाल: कटि कनक किंकिनि कीन: नग उरित अंगोपन बीन: सुष
रुनक नूपर सद: बनि चलन पेंठ बिहद: लगि जबे दौरन लाल:

बिचकाचअजिरबिसाल: मुषनिरषिहरषतमाहि: सुषअतुलउपजिसुन
इ: यहसमयनंदकुमार: व्रजकरतबालबिहार: अबरामकृस्नअनूप: सु
नगोरस्यामसरूप: संगलीयेसघनसमाज: बयरूपसमजुबिराज: श्रीग
पिकाकेआइ: पुनिसुनिमंदिरपाइ: मिलिधसेअेहमेऊरि: नवनीतपात्रनि
हारि: सीकापरंतबितसोइ: हेहंसतगतनहीहोइ: ऊचोसुउगमआहि:
तहाकरनपुहचततहि: यहकृस्नबुधउपाइ: इकधरेऊषलआइ: बेग
रितिहिपरबाल: ताकंधचढितत्तकाल: निसेषमाषनलीन: निजसषनि
बांटिसुदीन: रहिबीचग्वालनिआइ: सोहाररोकिसुनाइ: मुषमांऊरू
थजुमेलि: कीयकृस्नताइसकेलि: त्रीयनयनमांऊनिहारि: दीयबदन
तेपेऊरि: रहीनेनमीजतनारि: मिलिसषाभजहिमुरारि ॥ छंद ॥ अ
परीअवरदिवसकाऊअएआये: पुनिदधिदूधनबाहरिपाये: तहाइक
सषाधसोअहनीतर: अवलोकेताजनतिहिअंतर: अंधियारेसोअ
तिअकुलाये: ब्राहरितेतिहिकृस्नबुलाये: तयोअकासरतनमनिन
बन: बांटिदयोदधिअसुराबिदूषन: इहांषाइदधिबाहरिआये: पह
चानेअहनीतेपाये: मथिकारिकतबिलोकेमंदिर: करिप्रलापमीऊत
करसोंकर: इकदिनकृस्नअकेलोआपन: हेकोउसंगसषानबनाहिन
इहागोपीकेअहमहआयो: पेमांषनबकुतेतहापायो: मनिमयथंभ
मांऊमनमोहन: निजप्रतिबिंबबिलोकिचकितमन ॥ श्रीकृस्नबाच ॥
लग्योकहनताबिंबहिलालन: मिलिहमतुमषरीयेयऊमाषन: येम
नमातहिसोनसुनावऊ: अरुहमसंगबेलननिसआवऊ: येककव
लमेलतमुषआपन: तामुषदेतहलीयप्रफुलिततन: याअहकीस्वो
मनितबआई: मोहनचरितदेषिमुसकाई: लालउगरइलालउरलीनो
ऊतयहप्रगटजसोदहिकीनो: मइरिबुलाइललेमुसकावे: लालअ
पनोंछुटीयालावे ॥ जसोदाबाच ॥ मुदितबचनयोंलाषेमरयो: का
हिपरयरजातकन्हईया: मेरेऊधदहीअरुमांषन: अतुलितलाल
सुषरीयेआपन: यरयरजाइकवनपदपावत: कान्हरमांषनचोर
कहावत: अवरदिवसकाऊअहआये: संगबलदाऊसषासुहाये:
पुनिसबग्वालअेहमहपेसे: जनबंचकअदस्तुतगतिजेसे: जतनधरे
छीकादधिताजन: मोहननयेबिलोकिचकितमन: अतितेपात्रअल
बितऊंचे: हेतिनलगिनहीहाथपऊंचे: कृस्नतहांअदस्तुतमतिकी
नी: लांबीलकुटीकरधरिलीनी: सबमरकनिकेलकुटसंचारी: न
येछिद्रतिनतरहरनारी: धसीतहाअबिरलदधिधारा: इहांआप

दई कृस्नकुमार। औकमाडि सब सषा आए : पानकरे दधि अति सुषपाये :
याही समय अहेरनी आई : करि चोरी न जिसये कन्हाई : हे दधिपात्र जुछि
निहारत। बिसमत बालचरित्र बिचारति : दिवस अपर जसुदा कीने
छानौ करत मूस कान्ह दोन : कृस्न सषा कछु सघा बिलोक्यो : रहैन
ताकौं जोरे कैसो : यह बाल सो देषि रिसायो : रहनि कसि जसुम
त्यायो : छो हे बडो बालकता हीछन : लाग्यो कहन कान्ह के लछन
बालक ॥ में अब ही देष्यो री मईया : करउ व माटी षात कन्हईया : लै छ
टिका जसुदा रिसलागी : सो आरीत हा दौरि सतागी : लीलि लई मुष
माटी लालन : तह धर थर कांपन लाग्यो तन ॥ मात उरा मन रिस पूछति
जसुमति माई : क्यो रे षल तैं माटी षाई ॥ श्रीकृस्न उवाच ॥ छिगज लन
रेल कुटीया के डर : थर नि निहारत कांपत थरथर : लेले बडे अ सास
उचारे। मईया मो हि छ्टिका जिन मारे : है ये सषा षि जावत मोही
तेल बार बहकावत तोही : सग कि ऊरूठे ही आनि मिलाई : मेरे मु
ष अवलोकि री माई : पुनि यो कहि लयु बदन पसार्यो : नियत मात
तहा विस्व निहार्यो : पुनि भूगोल बिलोक्यो पावन : सप्त दीप नव षं
ड सुहावन : सात समुद्र न बासे सरिता : सात पताल भुयंगम सहित
अषिल बन सपति तार अगारा : पर बत अष्टकुली अनपारा : सोल
कला ससि द्वादस दिनकर : नवन छित्र तारागन नन चर : निगम
चारि नव रूनपुरानो। मिलि चत्र षानि चराचर मानो : देषे राकस दै
त जु दानव : किंनर जछ गन्ध्रव सुरग धरब : गगन को टि तेतीस सबै
सुर। सहस अठ्यासी तहा रिषि सुर : मेघ त्रयोदस नन्त घनमाला :
पुनि तहा अष्ट अगट दिगपाला : अणुपल दंड पहर दिन तिथ पर : मा
स अयंन रितु सब सम सर : पंच सलिल त्रय काल अनल त्रय : मा
रुत मंद सुगंध सीत मय : त्रगुन देव त्रय पंच तत्त तह : जोति चक्र
अनषंडित है जहा : जीव जोनि चतुरासी जेते : तहा बिलोके ज समति
तेते : इमा दिक जु व चक्र अषंडा : बदन को षदेष्यो ब्रह्मंडा : ब्रह्म
अषि जो बेद न षानी : जननी सु पे बिलोकी जानी : मुष महि यो पुनि क
वर मनोहर : अदभुत रस उपज्यो तिहि अवसर : पुत्र हि मात ब्रह्म
प्रमान्यो : जग करता हरता सो जान्यो : दैवत अदभुत नावदिष
यो : आदि पुरुष सोई गरन्त हि आयो : अनुत ब देवी माय प्रेरी : है
त व जननि मनु जगति हेरी : ताव ब्रह्म ब्रजरानी भूली : फिरत

पुत्र हित फूली फूली ॥ दोहा ॥ लीने सषा अनेक संग : सो बय रूप समान : माषन
घर घर रूथ दधि : मुसि घात दिन मान ॥१॥ यह ज्यु चलो चवावअति अद्भुत
गोकल ग्राम : मितत जहां त हग लीने मैं : वंदर वंदत्रज बास ॥२॥ बाल बि
नोद बिचत्र वर : अद्भुत चरित अपार : बिबिधि अगोचर मन बचन : क
रत व्रजेस कुमार ॥३॥ इति श्री भागवते महापुराणे दस मसकंध नुसा
रेण भाषा बार ह ट न र ह र दासे न बिरचितो । बाल चरित्र अष्टमो
अध्याइ ॥८॥ कबित ॥ दोहा ॥ पहले द्वापुर जग मगर : हत यह न यो प्र
कार : मुनि नारद के श्राप मरि : उनय कुमेर कुमार ॥१॥ सुत दोउ ते कुवेर
के : नलकूवर मनिग्रीव : धन जोबन मन मद महा : सोउ एति कीसी व
॥२॥ त्रीयन सहित अब सत्र ते करत गंग जल केलि : सुरापान बस मद न
मत : मनत नलजा मेलि ॥३॥ मुनि नारद या ही समय : सरिता तट सत
नाइ : बीनां पानि जु बानि वर : आपुन निकसे आइ ॥४॥ सो रंग नाल ये
बसत्र बसला ज : देषे जब नारद दवस : सकुची त्रीया समाज : चित
ना मन निगति नय चकित ॥५॥ छंद पधरी ॥ ये कुवर महा मद अंध
आप : पर हरि नय लजा प्रगट पाप : इहां मिले असुन नवत मआनि
कछु करी न नारद देषि कोनि : कर जोरि न बंदन प्रनित कीन : द्विज ब
र बिसेष आसिष न दीन : तन कुते मगन मन मद मनत्र : सो ही नर हरस
रंग रत्र : रिषि रोष बचन बोले रिसाइ : पापिष्ट के अति बिलन पाइ : बउ
द्धि मग्र हवे श्रवन बाप : याते धना दितु मनये आप : तन रूप गरब तु
मठ के तास : सो नास हेत के सो बिसास : पोषत जे हि निसि दिन सम्य
पार : नव अष्ट द्विम नोजन बणार : सो गंध बिबिधि बासन सुरंग
अन मोलि कनूषन अंग अंग : सुष बास कुसम सज्जा समान : सतज
षदासि का सावधान : बिन ता जु मध्य मुग ध्या बिसेष : अति रस बिला
स बिलसत बिसेष : इहि देह गरब तुम बडो आप : सुष पाइ राज सपति
समाज : पुनि सुन उदे हता के प्रकार : छन मांझ जलत न जरि होत छार : ज
ल स हस कार कि छुक्त संजोग : नव न हूं त तो जल जंत लोग : अ
र यात कि ऊक्र मिकुल अयाइ : बिट होत कलेवर सो सुनार : परिना
म पिंड ये त्रय प्रकार : ति हि हे लग र व मांन तगवार : यह देह दुष्ट तुम
तज ऊ आप : पुनि हो ऊ जमल तर महापाप : पेमुथ रा मंड ल जनम पा
इ : जऊ जो नि सु गो कल नज ऊ जार : निसि दिव स नगन तन निरा
धार : पुनि सहो सीत तप जल अपार : मिलि जोर जमल अरजन सम्
ल : हत जोग हो ऊ कालिंद कूल : छिन मांझ उनरि तव गर ।

बपुर्कंपबदननहीफुरतबाक: पह्चान्योतहोनारदपुनीत: स
रिकरश्रतिसनीत॥ नलकूबर उवाच॥ बसदीननावकहिबिमलबा
मुनिदयोश्रापहमलयोमोनि: तुमदंडअनुग्रहजोगिदेव: तबकहो
महिउधारनेव॥ नारद उवाच॥ सतदिव्यबरषजडजोनिसंग: पा
इरहउरमदप्रसंग: कलिप्रथमचरनकृस्नावतार: तबहो
रनतूमिस्तार: अबाकरउंषलबंधिश्राप: पुनिकरहितिहरेनास
पाप: रिसदेसरापनारदरिषेस: पुनिकरेबदरिकाश्रमप्रवेस:
लकूबरअरिमनिग्रीवनाम: कौबेरउतनयकिंकरसकाम: पुनित
हातासपंचतपाइ: जडजोनिसुगोकलतयेजाइ: लहिजोरजमल
अरजनअजान: नारदसरापनुजनतनिदान॥ इति श्रीभागव
त महापुराणे दसमसकंधानुसारेण नाभावार
दासेन बिरचितं॥ जमलार्जुनश्रापोनाम॥ नवमोअध्याइ।
९॥ कबिरुवाच॥ दोहा॥ सुतकाजेमाषनसुकर: मथिकादतद
मोह: हेतकृस्नकेजननिहरि: छिननपितवनछाह॥ छंदचौ
परी॥ मातप्रातहीमांजिमथानी: अरदनुतननेतरइतिहाआनी:
रद लोमेलेतामाही: सुषहिकरतमंथानसनाही: सबही
हरिसवारे: दहीबिलोवतअंचरहारे: करतआपश्रमसुतहितकाजे
बिमलकरनिबलियांबलिबाजे: सुषसन्यासेवतहोसुंदर: कु
ग्यांचषमीजतजुगकर: कहतसुआयेकेबरकन्हईया: मोकहमा
नदेरीमईया: गहिरलोकान्हमथनीयागाढी: थकितजसोदाचितव
तगढी: लैउबलाइमथनदेलालन: मेरपूतहिदेहमाषन॥ क ॥
कान्हरकाजेदधकढायो: याहीबीचसुपैउफनायो: मथनाछांडिज
सोदामाई: इहादारिमंदिरमहआई: लेदरबीकरदधचलायो: बार
छांटदेजतनबनायो: कान्हधुधाबसअतिरिसकीन्हो: दहीम
नीफोरिजुदीन्हो: आंगनकाचकैलिदधिऐसो: सोभितमही
वरजैसे॥ सोरठा॥ तबेकृस्नअतित्रास: नाजिदुरयोडजेतवन
दहापायोअनयास: नोजनमाषनसोंतरयो॥१॥ छीकाधरयो
पाइ: सोपैमाषनजतनसों: चढोअंतूषलआइ: काढि
सोंकबर॥ छंदचौपरी॥ इहाजसोदाजबफिरिआई: कहु
लोक्योकबरकन्हाई: महीगिरयोअरुफूट्योमटिका: छोहच
ढ्योकरलीनीछटिका: दूटतसुतहिफिरेअतिधाई: मनरिस

आकुल जमति माई : महरि जबै आई तिहि मंदिर · मांषन चोरत लि
ष्यो मनोहर : लालत तातन कांपन लाग्यो · नयते नीनन वन पतिन
ग्यो · इहां महरि गहि लीनो आतुर · मरदन महाबली षल मधुर ·
मुष परदीनी चनगर स्यारी : इहां सुत अं षियां जल नरि आरी · मं
द मंद रोदत मनमोहन : गिरत मनउ अंसुवा मुकता गन ॥ मा
त अरेटी मनु बिगस्यो ऐसो · तो को रे रूअ बफलते सो : तानत फि
रत रुध दधि गोजन : मुसि मुसि षात पराये मांषन ॥ कबिरा ऊ
षल इहां निकट हैं आन्यो : गरपूत कहं बांधन गन्यो : इत पाटक
लोरि आनी : तासों बांध्यो ऊषल वानी : लोरि अरध नाथ लेत्यो
ध्यो : बाल मुकंद हि चाहत बांध्यो : सुत करि कै सी दावरी सोई
दुइ अंगुरी घटत न होई : सरल दावरी सजी सांधी : चउ स्यों पांचि
न पूजित बांधी : नाथी ब्रजकी जेति क नोई · ही न तउ द्वै अंगु
ल होई : नयो जसोदा कहुं अमरतारी · देषी जननी होत दुषारी :
कृपा रूपाल दया तब कीनी : दावरि गांठि जिन सों दीनी : जाके
आस्रित नहीं जान्यो : ता कहं बांधि अलूषल तान्यो । देव जु नर
बिधि दया दिषाई : गूढ अगर निगम गम गाई : प्रेम नगति केव
ल पंतु पूरन : अति सुष करत दास कहं ऊरन : जाकी गति न सुर
सुर जानी : रसरी सों बांध्यो नंद रानी : लहि परम सुष ब्रजपति लल
ना : पय कुच प्याइ झुलाये पलना : बाल गुपाल जसोदा बांध्यो : सब ब्रज
जुवति हासि रस साध्यो ॥ ब्रजबिनता ॥ प्रतिदिन मांषन मुसत परा
ये : प्यारे लाल सु पेफल पाये ॥ कबिरा नैन सैन देनो हे न चावति ·
षेलत अपुन कृपा बिजा वति ॥ गोपी बाचा ॥ लीनै अबै कर म फलल
लन · मुसि मुसि ब ऊ स्यो बेहो मांषन ॥ कबिरा सुत कों ऊषल बां
धि सन लागी : ललित करनि ग्रह काज लागी : सिधुर महा मत्त जो सि
कुल : ऐसे बाल कदो रत ऊषल · नाथ रहीत रु जे मल नि हारे : दे
षि जस रुजे निडु षारे : अनुनारद को बचन प्रमान्यो : अगिलो
कारन सो सुधि आन्यो : आनि निकट तिरछो करि ऊषल : बिच स्यो
दुम बिचि बाल महाबल : ऊषल अटक्यो उव द्रुम अंतर : निक सि
गये उत स्याम निरंतर : तहां जमल अर्जुन हगि तोरे ·

जहांबिछोरे पाप आप हत धरनि पछारे : नयेमु कत तह दो आई
सुत कुबेर के हल्लस हाई : उपरि परे तरु अति अररानें : तयो सब ब्र
जलोक नयानें : इहां जसोमति दोरी आई : मांनु प्रान निकसि है
आई : महरि बिलो क्यो कोन अत्तयमन : ऊषल बांध्यो हो लत अंग
गन : लोटी छोरि लाल उरलीनें : कहति जु हाहा मैं कह कीनें : बलि
बिघन टार्यो बिस्वंभर : कुसल लला मे मेरो कान्हर : मुष रहु
रति चुंवति मुइ यु : बार बार सुत लेत बलइ यु : तरन मांहते निक
सि लछन : तहां जसुदे उदि ब्रधरे तन : अति छबि तेज बिराजि
नत्रैसें : जलन काठते निकसे जे सो ॥ जय स नाति । जयति जय
ति रघुबंस उजागर : स्याम सरूप जयति तन सुंदर : कृष्ण जयति ब्र
जजन सुषकारी : हित जुत बृंदाबिपन बिहारी : नागरि जय तिज
सोदानंदन : निगम हेत ब्रजा बिपन निकंदन : देह जहां धरे त्रात
हो : स्वसथांन कहर षत गये सो : त्रिभुवननाथ अर्थ गतता
रे : यो कुबेर के पुत्र उधारे ॥ दोहा ॥ आप पुरषी दुष ओर के : ऐसे कृष्ण
उदार : सरनागत पंजर बिजय : नरहर के निस तार ॥१॥ नाउ बि
दुर जित भागवत : कहे सुनें जन कोर : इरबी परू सत सर बहिन :
हित स्वादन हिहे रो ॥ इति श्री जग बतेन हपुरांणे दसम स्कंध
गुसरबेन बाबा रहट नरहरदासे नबिरचिते ॥ जमला रजन
उधारनो नाम ॥ १० ॥ कबित ॥ दोहा ॥ महा उपद्रव होत ये : हे बृज मं
ह बिपरीत : महर कर त सब मंत्र मिलि : नंदादिक जुत नीति ॥१॥
अब चलिये अनित्र कहु : न जिये गोकल ग्राम : बाल उपद्रव अति
बदे : मन न थकु सह बिराम ॥२॥ उपनंद बात कहे उपनंद स्त
ब : धन जल पूरन घास : इ भी बृंदाबन प्रगट : बसिये तहां सुष
बास ॥ ३ ॥ देषित रलता द्रुम निकी : बालक बेस बिचार : बिना प
बन ही दृष्टि बो : अचिरज होत अपार ॥४॥ कबित ॥ बृंदाबन ही
रू बिमल : मन जब धरी मुरारि : नंदादिक ब्रज गोप के : प्रेरि बि
न प्रचारि ॥४॥ सब निकस्यो निरधार सो : बृंदाबन को बास अ
पने अपने सकट साजि : करत प्रयान प्रकास ॥५॥ साधि दिवस
पंचांग सुध : बिरज यगवने नंद : आरूढ तरंग अनेक ग्रा नि : बनि

गोधनके वृंद॥१॥ मिलि सुष गोधूलक समय: वृंदाबन परवेस
सबके समत सुन सगुन: कीनो बास ब्रजेस॥२॥ इति वृंदाबन बास॥
छंद द्वैअगरी॥ महर बसे वृंदाबन माहीं: सुरभी जूथन गरक समाहीं
आकुत रंग अनेक उतंगनि: सोभा बनी बिबिधि समस्रृंगनि: सेतद
षन्न उजल रव राजे: गहर जलद से दिसि दिसि गाजे: बछरा वृंदअ
नदबदावत: उरध पूंछ धरि धरि मिलि धावत: बालगुपाल जु हर्ष ब
ढावे: धरि सु अनुज निसु अंगनि पावे: घुमरत दधि मथान घर निघर
घर निघसे मनु गाजत जलधर: संपति देषि नंद्यह सोहत: बरनकुबे
र सुरेस बिमोहत: गोप बसे सब गाव निगावनि: परम बिसाल सक
ल सुष पावनि: कृस्न चये इह पंचबरष के: हित कहि जास्न जननि
हरष के: एक दिवस जननी पहआये: संग सषा मिलि कृस्न सुहाये:
श्रीकृस्नबाच॥ कहत मात सों कुवर कन्हीया: अब हूं बछ हो चराये री
मईया: जननी कृ बछरनि संग जे कृ: हित सहत च कृओरचरे कृ: मो
कंपन हीन ईमग वकु: ओंतिक मरीय अस्नन उदावकु: लावलकु
टीयों कं कर लेकं: बंसी दै मुहि बननि बजे कं॥ कबि कां६ तनी सु
नत महरि मुसकाई: लये उगइ लाल उर लाई॥ माता जा बार बार ले
महरि बलईया: करि है गो कछु कों के न्हईया: कबि रुा बालबि
नोद बछ संग बन बन: महिमा मनुज बिहारत मोहन: अबिले सु
रगो सी कछु ईछा: दुहनि देत र ठमय दिछा: सरवर सरित गहन ब
न सुंदर: लता बितान पत्र मिलि मंजर: कुसमत फलति सदा सुष
कारी: कुंज कुंज रुज बिपन बिहारी: फूले सरनि सरोरुह सोहत
मिलि मधु मत मधुप मन मोहत: अति सुष स्नाष बिहंग म अनअ
ने: तठब मझ मयूर चित्र तन: कौं गीन घीज दंती सुंदर: कर तके
ति बन जंत भयंकर: बन मृग बरन जाति को जाने: मिलि मिलि
जूथ भ्रमत मन माने: सा षा मृगत रूप तसो है: जूथप जूथम
हा मन मोहे: बछरा कृस्न चरावत बन बन: ल हबल दाऊ संग गे
रतन: सषा अनेक बंस बय सुंदर: बाल बनाव बिचत्र कीये ब
न बन डोलत बंसबजावत: षेलत आप सषानि षिलावत।

आयो बछरूप करि असुर : निकर बछ मह मिलि गो निसचर : पापी सो कालनपि
छांन्यो : जन हिंसक ओमासुर जांन्यो : आंच कि हरि ताकी ढिग आये : अनुकि
ऊ संग सषान हपाये : आसुर सोंग हि चरन उठायो : महाकोप करि गगन नत्र
मायो : परक्यो षितहि धर निअपावन : तजि गये प्रान असुर छूटतन : महा
अमान बछासुर मास्यो : रोम सरीर सषानि निहास्यो ॥ दूहा ॥ बछासुर मार
बिषम : अनुनरहरग हिपाइ : बाल बिलोकि बिलोकि बपु : लिरनयन
ऐसु नाइ ॥१॥ छंद द्वैआषरी ॥ नयो बालक निअबिरजनारी : निसचर देह
निहारि निहारी : बकुस्यो एक समय बिहरत बन : गये सरोवर तट बालक
गन : मोटो इक बुगला ता सरमह : बैगो तीर दुष्ट ताकततह : तहां नये
बालक बछ त्रिषातुर : सीतल जल पीनें अति सुंदर ॥ बाल को ॥ बिस
मय नये बिहंग बिसेषे : काअे सो अबलों न ही देष्यो : याही दिस बलऊ
ते जु आगे : संग कृष्ण सब सषा सुहाये : नये पीयत जल दोउ नाई : इहां बल
के ढिग गए कन्हाई : लीलि लियो तिहिं बक नंद लालन : घरघरन आसुरथ
र घालन : बक को कंठ जरन जब लाग्यो : तब छनतिहि मुष के मग त्याग्यो :
चोंच उघारि लग्यो बक चाबन : दुष्ट बलोतन चरनन दाबन : कृष्ण चंचपु
टजुग मग हैकर : निठुर त्रिनां ज्यों फास्यो निसचर : तीरनीर ह्वै नागबिह
गतन : बाल बिलोकत परे अपावन ॥ दूहा ॥ बक मास्यो टास्यो बिघन :
नरहर अनुनंदनंद : जगत कंस उर त्रास परि : अमर नये आनंद ॥१॥ छंद
द्वैआषरी ॥ बछ बरार बाल वृंदावन : आये कृष्ण संग अहग्रापन : बछ बन
सुरमरन बषान्यो : जान्यो नहिंन तिन कुपु निजांन्यो : ग्रेह ग्रेहते मिलि गो
पीगन : आरी सबै जसोदा अंगन : लेत बलाइ कंवलपरावत : गलगहकें गसु
मंगल गावत : नंद महर की नागबकाई : बिघन उपजि जोइ जात बिलाई : म
रिमरि जात जु आवत मारन : कान्ह कवर को उपुरुष सकारन : इहां कछु
यह दई वी इछा : दुष्ट निदेत दंड मय दछा ॥ दूहा ॥ वृंदारनि बिलास सब
नितबिहार नंद नंद : कबिनरहर उधारकरे : अमरवृंद आनंद ॥ इति
श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा सारे भाषाबारहट न
रहरदासेन बिरचिते ॥ ऐकादसमोअध्याय ॥११॥ कबित ॥ क
बित ॥ बकी नाम इक बहनि असुर षलता अधिकाई : अधम बकासुर
ऐक नयो अघ तजो नाई : प्रथम बकी पूतना जबै षल त्ता वजनायो :
ताही छन तिहि तिहां पापफल कस्यो सुपायो : अजगर धरि देह जुइ हिसि
मे अबै अघासुर आरहे : कबिनरहर नंदलाल कर अगट करम फल
पाइ हैं ॥१॥ छंद द्वैआषरी ॥ मिलि निकसे बलदाउ मोहन : सषाअ

नेकसंग व्रजमोहन: सुंदरबछरावृंदसुहाये अपनेअपने सब लेआये नंद
गोपतेंबाहरि निकसे। बिमलसरोरुहसेजनु बिकसे: करत बिलासहास
कोलाहल: मिलिधावत बोलत मुषमंगल: बिहसत नाचत बेन बजाव
त: गोपकुमार मधुरधुनिगावत: सुंदरबालमदनसे सोहत मुषछबि
देषिचराचरमोहत ॥१ छंद पधरी॥ इत्यादिकरतकौतुकउदार: कीनो
प्रवेसबनयनकुमार: बनगहनधसेतबबछवृंद: अपनेसुनारसंजुत
अनंद: दिनमध्यबितीतेप्रहरदोर: क्षेधुधितबालऐकत्रहोर: याहीबि
चिबिजनछाकआर: पुत्रनिकहेजननीदीयपगर: पुनिबैठिसबेति
सुपांतिपांति: सुरिदोनानोजनजातिजाति: करिजथाछाकनोजनकु
मार: सबग्वालबालबेगेसुदार: इहिसमयअघासुरकरिउपार: अ
जगरहोइरोक्योपंथआर: मगमोंऽपरेतनअद्रिमान: सतिमांसुनास
जोजनप्रमान: तिहदुष्टधरिउरमोंऽदाव। करिजगनिजातबेरताव
मारूपदेहअपनोसुनाव। मुषबिवरकोसकंदरामान: अथधरअवनीसों
मिलतअंग: पुनिउरधअरधनत्तसौंप्रसंग: दृढाकरालबिकरालदंत: उ
पमेयतासकबिलहिनअंत: ऋतमध्यकोसघनअंधकार: पावेनकऊक
छुवारपार: नऊनथजथउगिबछबाल: पितिचलेजानमिलिकरतष्या
ल: अयरअसुरपनगतनदेषिआहि। चिंतचकितरहेसबबालचाहि॥ब
लको॥यहककहोकरुधोंनीयाकोर: यहहेतबतावऊसनरहोर: यहप
रवतहैकोउमहाकाइ: प्रथीतेनिकस्योहेतपाइ॥कबिरू॥ रूहा॥मन
मनतर्कबितर्कमिलि: बालकरहेबिचारि: मनुमायाप्रेरितप्रबल
मुषतिहिधसेमंझारि॥१॥बालको॥ करिहेंकृष्णसहायकछु: निह
चैनयकछुनाहिं: नईजुपेनवतबतात। मिलिचलियेयामांहि॥२॥
बछासुरमास्योबिषम: दुष्टअसुरबकदेह: करिहेंतेईकृष्णकछु
उनहिनडुरगमयेहाइ॥छंदपधरी॥कबिरू॥ इहिसमयकृष्ण
पुनिइहांआइ: सबबालधसेदेषेसुनाइ: मनुकरेकृष्णआपुनप्रवेस: अ
बिलेसबिसरहकअसेस: मुषरोकिसर्पकोसर्पमार: करिजथाजतन
जसुमतिकुमार: अजगरमुषसंपटजटितआइ: सुरनासस्वासरुधित
सुनाइ: निजब्रह्मरंध्रफूटेनिदान: पंनगकेतिहिमगगएप्रान: पापीभरि
आसुरइहिप्रकार: कृतअमरवृंदजयजयाकार: बजिरहेदेवदुंदुभिबि
सेस: आकासकुसुमबर्षअसेस: बिबिउदरबचायेबछग्वाल: करिसु
धादिष्टिमोहनकृपाल: निकसेतहांबिहसतनंदनंद: बनिपाछेबछ

ग्वालबृंद: इहिरूपकृस्नप्रभुनिकसिंगार: सबकालग्वालबालकस
जोकुतीअसुरमहदस्विजोति: बलबिक्रमताहीहेतहोति: वहजोति
कसितबगईअकास: पुनितयेतासपूरनप्रकास: सोईजोतिउर
नतनेसमूल: तबआईउलकापाततूल: इहिजोतिकृस्नमहमिली
र: संबारवज्रोयनमहसमार: करकृस्नइतेजदुष्टकोर: हरिमा:
हेऐकेत्रहोर: दनुदुष्टबिजयकरिकृस्नदेव: अषिलेसयेहआयेअजे
बनचरितकेहेलरकनिबनार: रसअइदनुतउपज्योनंदराइ: बालहिउ
बतबारबार: अरुकरतदानजननीअपार ॥९॥ नंदजसोदाकेनि
ल्ह उअपुराकृतकोर: ब्रजमहजोउपजतबिघन: नासहिपावतसै
द॥१०॥बीतेरहिबिधिषटबरष: सैसवबयपूनस्याम: प्रभुनरहरदस
बतप्रगट: करेसपूरनकाम॥११॥अघासुरमारेअथम: राषेबछराबा
प्रभुनरहरपूरनपुरुष: देवनिदीनदयाल॥१२॥इतिश्रीजगवतेम
हेतु रागे दलमलकंथानुसारगोलिनाथाबारहटनरहरदास
कबिरचितो। अघासुरबधनाम॥१२॥ कबिरुवाच ॥दोहा॥ दे
हैअबबछाहरन: ब्रहमाचितबिचार: काजप्रतीछाकृस्नकी: रूमित
तारनतार॥१॥छंदपधरी॥इकसमयसुषदरविसुतातीर: बछरानि
चरावततनयबीर: बनिसंगसषाबहुगोपबाल: रसरत्नरमतबानी
रसाल: बहुकरतबाललीलाबिनोद: पुनिबरतचितनानाप्रमोद
क्रीडाश्रमतेमध्यानकाल: बैठेमिलिमंडलग्वालबाल: जबतये
छाककोसमयजानि: अपआपसुपंकतिबैठिआनि: दोनानारिबिजन
बिबिधिदीन: क्रमजुकतसबनिआहारकीन ॥दोहा॥ कृस्नहितईअवे
रकछु: तेजनकरतसुनाइ: बछराजमनाकछुबिचि: चरतकुतेचित
चाइ॥१॥ताकतकुतेबिरंचितहां: प्रजीघातप्रमान: हरिकीनोब
छाहरन: हितसुरकाजसुजान॥२॥कृस्नबछासुधिलेनकहं: रहिअपु
नचलिआइ: तहांनपायेबछते: सोचतनयेसुनाइ॥३॥तबब्रहमाअ
येतहां: जहांसषासबजानि: बालहरेतेउबहुरि: प्रगटअसेषपिछा
नि॥४॥उहांनबछराबालइहां: पायेकृस्नकृपाल: अबदेवीमायाअ
गम: प्रेरीब्रजप्रतिपाल॥५॥वैसेईताहरूपअषिल: बछराबालकबृंद
सबअपनेपरिकरसहत: कीनेबालमुकंद॥६॥मातपितासोंहितमि
ले: वैसेईसबआनि: अदभुतइछाआपुनी: प्रभुसोईकरीप्रमान
॥७॥बछराराषेऐकबिधि: बासुदेवदुराइ: संकरषनकृतासमय

पैसोईमरमनपार ।। छंद दैअषरी ।। बिबुधनिकोबीलोजबबासुर : इहांआये
ब्रह्मातबआतुर : तनयनस्यामकमलदललोचन : मुरलीपांनिमदनम
दमोचन : बसनकबरीयांबेतबषांनों : निरषेमोहनरूपनिदांनो : ग्वालमं
डलीमिलिमिलिगावत : बिहतबेसुरीमधुरबजावत : हैकोउद्रुमचढि
बछराहेरत : फिरिफिरिलटवाबकरीफेरत : सरिताकछ्छनिबछ्छरासोहत
मिलिधावतमारुतगतिमोहन : चफुयांग्वालचरतचितचाहन : सोनि
तघेलतआरसुनारन : तेईबछ्छराब्रजबालकतेते : जातसरोजहरेहमे
ते : पुनिवेरहोबिरंचिपिछांने : आपहरेहेतेउतह्मांने : दुहुघांजरथदेषि
बिधिदोऊ : कृतमकहेजातनहकोऊ : प्रतिमांबयसन्तेदनहीपावत : बि
धिमनतर्कबितर्कबढावत : बारबारप्रतिमांबिलोकत : रहोकमल
नपलकनिरोकत : ब्रह्माअंतरत्नावबिमासे : सोअबकृस्नमई आ
नासे : दिअदिष्टब्रह्मातबदेष्यो : बिस्वमूलश्रीकृस्नबिसेष्यो : मो
हनकेप्रतिरोमनिर्मलित : अषिलतहांब्रह्मंडअषंडित : प्रतिब्रह्मंड
चराचरप्रांनी : षेचरजलचरचास्योषांनी : आदिब्रह्मसुरसंकरआसुर
पंचतत्वपचीसप्रकृतिपर : अषिलविभूतिलोगद्विजदेवा : सबेरहतअ
रसबससेवा : जोतिचक्रमहदादिकजेते : कालकरमतवकारनकेते : मह
बिलोकीदईबीमाया : छनकब्रह्मपरपरीसुछाया : तयोमोहबसतबेल
नतलेो : लहरिअपानसमुद्रहितलेो : आपुनसुधिबुधिरहीनअैसी :
जगकीरचनादेषीजैसी : अषिलप्रपंचबिलोक्योअदभुत : सातिकत
बनयोबारिजसुत : इहांबिरंचिनयेजबआतुर : स्यांमदयालनयेरद
कसुर : मायाबिषमनिवारीमोहन : चेतनयोतिहिछिनचतुरानन : दिष्
उघारिब्रह्मजबदेष्यो : वहजुवृंदाबनबिसेष्यो : सरिताकुंजपुंजबन
सोना : लहरितरंगकमलबनलोना : नाचतमोरमदनमदमाते : क
लरवकोकिकलगनकुहकाते : नावअनेकबिहंगमत्नाषा : सोनात
रप्रतिसाषासाषा : बनबनजंतअनेकबिहारत : गुहगुहामृगपति
गुंजारत : फलअमृतमयतरवरफूले : लतामाधुरीमधुकरफूले : बंदर
इंदअनंदबढावत : स्कद्रुमऊपिअवरद्रुमआवत : इत्यादिकबनसो
नाअनगन : चितवतह्मगनतयेचतुरानन : मंहाग्वालमंडलबिचि
मोहन : अतुलिततनछबिप्रफुलितआंनन : आदिनमध्यनहीअवसा
ना : जगकरताहरताबिधिजांनों : पूरनपुरुषनंदसुतपरष्यो : हेतबि
चारिबिधाताहरष्यो : रचनांदेषिब्रह्मअनुरागे । ...तप्रेम

रसपागे:नयनढरतआनंदजलधारा:नयेअद्भुतरसरोमउन्नारा:क
मलसुतनपदबंदनकीने:लालवुगरलालउरलीने:हेरेहेरैचितवत
हरिमांही:अचवतछबिनहीनैनअघांही॥बिधिबाच॥बिनयसह
बोलेबिधिबानी:प्रभुमहिमामैंनाहिनपिछानी:सापराधकुत्रि-
तवनस्वामी:जगकरतातुमअंतरजामी:देवउचितमोहिंडसुदी
जे:कारनकरनबिलंबनकीजे।कुंअग्यानअबुधअपराधी:सन्तवू
मायाचाहतसाधी:अगिनेकनिकाउछलिअपारा:बन्हिदिषावतजा
बिसतारा:बारूपदहतजाकेबटै:चलितहाकेसिरपरचटै:सोहीमैं
अग्यानतुम्हारी:लेनप्रतीछाकुयबिसतारी:ममबलबिक्रमसकलबि
लाये:राषकृपाहिंमाहिजिउराये:मैंदुरमतिबसहरेमुरारे:तेईबालकबछ
तिहारे:सबैसंभारिलेकृपबस्वामी:जुतपरिकरजगअंतरजामी॥१॥स्तु
करिकरिबंदनपरिक्रमन:ब्रह्माजगतिबिधान:अतुलकृपाछबिधारिउ
र:नयेसुअंतरध्यान॥११॥आयेबछराबालले:संध्यासमयंनस्यामकी
डाकौतूहलकरत:मनबंछितअभिरांम॥२॥मातपितासोंहितमिले:हरख
जथाप्रकार:बछराबाछीधेनबन:बरततप्रेमबिहार॥३॥इहिबिधिबछ
राहरनबन:कस्योबिरंचिबिकार:नरहरप्रभुमायानियत:पायोतदपि
नपार॥४॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधानुसारेण
भाषाबारहटनरहरदासेनबिरचितं॥ त्रयोदसमोध्याय॥१३
अथब्रह्मस्तुति॥कबित्त॥कबित॥महिमाकृपाअमेव:निरषि
थकिरहेअजोनिज:सघननीलतनस्याम:परमकरुनांनिजपंकज
बिमलबदनकचबक्र:करनिमंडितचलकुंडल:भ्रकुटिनावनुव
नैग:लसितमनुअलिसुतचंचल:आमोदस्वासनासाअतुल:अरुन
अधरदाडिमदसन:सोभाअनूतनरहरसुप्रभु:मोहतमहामनोजम
न॥१॥कंबुकंठमृगराजकटि:भुजजानुप्रलंबित:उदररेषसोभ
अनूत:उनतउरआयुत:बनिनितंबनरबिहत:कदलिजंघाकरिके
हरि:चरनसरोरुहनषरतन:कलचालमत्तकरि:कमलाउरोजकुंक
मकलित:करपल्लवमर्दनकरे:सकतारहोकुकहिकमलसुत:हितम
मपदपंकजहरो॥२॥छदपधरी॥बनिआतचित्रमंडितबिचित्र:तरतर
लपत्रबेजंतितत्र:सुतसिषसिषंडसिरमुकटसोह:अंगअंगउचितन
षनअरोह:आलानबनीरदनीलअंग:समबसनपीततडितासुरंग॥

उधारमूलअवतारऐहः दुखदेवहरनधरिमनुजदेहः अपराधमोहिछमि
येअनंतः कृतकारनकरनजुरमार्कतः यहदेहधस्योममहितउदारः सि
ष्यामोहिदीनीजगतिसारः पावेनहिमहिमावारपार पचिमरेजदपिमै
सेअपारः दुखसाधिजोगमषतपुरंतः पावेनहिइनकोकउअंतः त
जिआनआनसाधनअनेक अनुसरेचित्ततवचरितएकः दुखसाधिप्रेम
उधारसोइः कृतगावेबृजलीलाजकोइः येचरितनुम्हारेआदिअंत सु
षलहेध्यानकरिपरमसंतः उधारमूलसाधनायेहः हमरतजेगकरि
दमतरेहः वयबालतिहारेबृजविहारः सोईगीतआहितधारसारः करि
सरधागावेजपेकोइः सुषवेछितपावेसाधसोइः कछुनोहिग्यानविग्या
नकाजः आचारविचारनहेतआजः करिनिरगुनसाधपुचेकोइः सुलोक
कासपावेनसोइः जाकेनरूपरेषानरंगः पुनिहीयाकरमसंगनप्रसंग
मनकरमअगोचरवचनमूल. साधेकहाआनीसानकूल. निरधारपारनि
रगुननिदान. पावेनकछुपचिमरेप्रान. परहरहिधानेकूरहिपरालः कन
हाथनलागेकछुकालः तजितेगजेएसाधेजुतंत. आगेअनेकपचिम
रेअंत. हमअसाधिलषित्रिसतहोइः पुनिसगुनउपासीनऐसोइ.
तिनलहेसुलक्तअतिसगुनतंतः सुषकऐमुकतजीवनसुसंत. अवत
रललेतातेअजेवः दुखनूतहरतदेवाधिदेवः तुमसगुनरूपमारगव
ताइ. करिदेनसुगमउधारकाइ॥छंद बेअ चरी॥धन्यसुरनियेजिनसंग
धावतः चितहितलावतनुमनुचरावतः लेलेनांमदुहततुमनिजकर
सगुनसरूपस्यामघनसुंदर. जिनकीकृपालोकत्रयजीवतः तेईतुम
टाकपातपयपीवत. गोपीधन्यनिगमयेगावतः कृमहिजोपेटभल
करावतः सषाधन्यथेषेलतसंगनिः पलपलउगरतप्रीतिप्रसंगनिः
महरजसोदाधन्यमहेतमनः वदनविलोकतलेतवलईयाः पयकुचप
नपिवायेपोषेः सुतकेलालनकारसंतोषेः महरनंदकीधन्यकुमार्ई
कहीयतजाकेकुंवरकन्हाईः बृजगोपिनकेपुनिविचारो. हेतजुतु
मसोंहितवाचारोः धन्यधन्ययेबृजकीधरनीः वेदचरनतवअंकि
तवरनीः प्रस्तुयहधन्यउगतपदपंकजः रिषवासीपावनभई जिहि
रजः तिहिवनधन्यधन्यसोईतरः बेगेजिहिछायासुंदरवरः जमन
धन्यपुलिनतेजानेंः मोहनजहांविहरतमनमानेंः विहंगधन्यतेईपसु
वनवासीः निरषतजिनहिकृष्णअविनासीः सरवरधन्यकमलवनस
नाः लालकरतक्रीडाजलनाना. आदि हरि
तिनहिनंदनंदनहरषेः धनियराबादरमिलिधावत

हैषगराजनदोषहमारो: यहकालीकोचरितकुचारो: षेलसुघरजाने
कोघेले: पैषकधारकैगधरिपेले: प्रतुहमसोकछुदुषजिनपावे: सर्प
थमवाकोसमझावो: विषधरसबयहलेइबतायो: पुनिकालीग्र
घराधीपायो: इहांगरुड़कालीकेंआयो: सतफनमांडिदुष्टसमझ
यो: द्वैसतलोचनताकेदारुन: सोबरषतमनुअनलसकारन: ज
हलहतजीहाबिषज्वाला: क्रमधैसतअतिदंतकराला: विषमजुध
नोतारषबिषधर: चकितनथेनवन्हतचराचर: बामपेषहिममथ
बिसतास्यो: मुषपरगरुड़भुजंगममास्यो: क्रमतन्नयोजबकाली
नाग्यो: लसेसगषगराजनलाग्यो: अहिकालीबृंदाबनआयो: पै
सोदहनिरनयथलपायो: मननिसंकबस्योफनमाली: कहियत
सोतबतेंदहकाली: बिनसकातहारहैमहाबिष: चहैगरलगलदह
षतहीचष: याकेजोरईषलनिकसेऊपर: अतिविषेचहैगिरसोंऊंग्र
उर: जलकीछींटलगेजबजाके: ततछनदगधहोततनताके: जिहिं
जलकीमहिमायहजानी: पानकीयेकाकहिबोप्रानी: महादुष्टबि
षमयफनमाली: कुटंबसहलरहैतहकाली: सोनरिस्यापजुसंक
पावै: यादहगरुड़नतालेआवै: ॥इतिकालीदहप्रसंग॥ जमु
नादहमेकालीजबतें: तारषआपआनिरहोतबतें: जोजनजोज
नचऊघोजेलै: तिहिबिषजरेचराचरतेते॥ अथकदमप्रसंग॥
दुमकदमइकतहांनदाढ्यो: निमलनरलपल्लवफलबाढ्यो: त
कदंबकोसुनऊ इतंत: आगेकऊकलपकेअंत: कग्निसुरा
सुरहीडाकीनी: तिकमेउपजीबुधिनवीनी: तुजाषुजानल
गीजबनारी: चितमोऊतनबानबिचारी: कगिनमथानिपमु
निथिकीजे: लानरतनचवदहतहलीजे: क्रममथानजथाबि
धिकीनो: निकासिसुधाघरप्रथमनवीनो: दिव्यकुंनसोगरु
ड़हिदयो: नयतजिजानगगनमगलयो: इहांनिकस्योवृंदाब
नआइ: अममगताकोनयोसहाइ: याकदंबपरबेगेआनि
महासुषदजमनातटमानि: अमृतप्रनावनयोद्रुमयाको: त
रलगरलझललगीनताको: आसपासतरुजरेअनेक: यहफ
लफूलतरसोयेक: ॥छंदपधरी॥ धरिप्रियदिवसरुकुज

षधेन-चलियालबालअति चिलचैन: बनपथसमातनधेनअंद: इह
चलीलगरिजितातितअनंद: पाछैनबीचकजनीरपार: याहीदहन्ना
वीजोगआर: निरदोषकरनयहबननिदान: प्रभुइछाकछुऐसीअ
मान: अकुलपेत्रिषातुरधेनबाल: तिहिपीयोयहेजलनातकाल: वि
षचटेसुरतिगोपालरेद: दिटपरेसव निकैकालफंद: करिनोजनपुनि
नसुदकुमार: बिनदाऊगवनैबनबिहार: तरलतातरलकुसमित तत
माल: मिलिमदनमतमिलमरमाल: देषतबनसोभाकेलदेव:
जमनादहआयेतवअजेव: कालीदहकेतटआसेकाल: वकूपरेविले
केधेनबाल: करिसुधादिष्टचितयेसकाम: सबउठेकहतधनस्यामि
स्याम॥बालको॥ जलपीयोसबनिहमत्रिषजानि: अवहमजिवाये
तुमहीआनि यहजलमहहैकोउआरिष्ट: आगेसुनजान्योहमअनिष्ट:
श्रीकृष्णवाच॥सुनिनंदनंदबोलेसकाज: यहनीरकरौनिरदोषआज
सुनकिंकनिमनिनगमयसमेटि: पटपीतबसनकटितरलपेटि: चढ़
कदंबसिषरपरबढिउछाह: अविलोकिनीरतहआतिअथाह: पुनि
लईऊपपोरुषप्रमान: जलजंतबजआयातजानि: सतधनुषनीस्व
ऊदिसिसुनाह: पसर्योअगाधअवकासपार: अवगाहसलिलगज
मतगोप: कैधोंमदराचलकृष्णकोप: कोलाहलसुनिचक्रयोकरा
ल: कालीभुजंगमनुप्रलयकाल: रसनासचालज्वालाजुनेन: फु
कारसबदसुषठरतफेन: असातअंगमोरतअनीत: उफनातरोस
आयोअनीत: रहाकृष्णबालअवलोकिऐक: अहिबद्रोगरलअरुब
लअनेक: लीनोलपेटितननंदलाल: करिकोपमहाकालीकराल:
श्रीकृष्णजोपनयसंग: आवरितकृष्णसतिअंगअंग॥बालके॥
जेगयेनागिकेउबालग्वाल: कहिकृष्णनागलीलाकराल: रहे
तसबरतबघोषहार: कहातयोकछुजानैनकोर: सबगोपनदुष
येसत्रास: पावैनकृष्णकरुनाप्रकास: जसुदामिलिरोहनिजुवति
जाल: बिलपातकरतआईबिहाल: बलनंदआइतहांमहावीर: त
बरहेचकितहूसरिततीर: आवरितअपनहाकृष्णजानि: जलऊ
परनिकसेसमयजानि: यहदेषिनंदउपज्योअचैन: निकसैनवोल
सकेनैननैन॥दूहा॥जसुदादेष्योकृष्णनव: अहिलपटानोअंग: पुनि
चाहतजलमहपस्यो: उपज्योसोकअनंग॥१॥देष्योजाततनयदुसह उ
तहमरैकेसाथ: रोरिरोरिऊंपतिदुषित: हरिविलपकरतहाथ॥२॥जित
तितकोपतिरजजुवति: तहागोपगहिलेत: बलपै · · ·

ल: हा हा मो हन हेला॥१॥ सुरनी तोउत। विष मसुर: वाढी वछरा बाल:
हाहा कब बन घन हम हि, लेच लिहैं नंदलाल॥२॥ वृंदावन के सब विक
ल: है जउ जीव जितेक: मिलि मिलि आपतिनी रमें ह: ऐके निपकरत ऐब
॥३॥ देखे मोहन जब दुषित: ऐ वृज जीव अनंत: भूरन नील आपनी कर
त नयेश्री केत॥४॥ छंद पधरी॥ अहि क्रस्न ये सम हरअनंत: दुस्को
र दाव घाव निदुरंत: नियय लोद हु अपनो निहारि: महिमा अमेय प्रभु
जे मुरारि: टरन तन लागे पपनगतास: सो नये सिथल आवे न सास
गयो उछारि तब कृस्न रारि: पटक्यो लेत रसों रोष पूरि: यह समय न
यो काली अचेत: मुरछा गरीक अबल समेत: करि फन उनार फुंका
र कीन: महिमा बिलोकि मन नयो मलीन: चढ़ि गये क्रस्न फन मांल चा
हि: तहां मर्दन लागे सीस ताहि: अहि कमल उगत जोर्ई जो अमान:
निरत तताऊ पर बल निदान: प्रति फन फन ऊपर नंद श्रत: रहो स्वेम
हनार्टक अन्तत: मिलि करे जो जरे चरन मारि: अहि सकत न हिके उ
फन उनारि: फन पटक न लगे मुष उरत फेन: नहीं सकत मुदित हो नैं
न: मति गिरत फन निते बिषम मार: तहां लेत मनेप दतल प्रहारि: अ
हि तये बिकल सब अंग अंग: नय उपजे जानो देह नंग: पति के जब वि
कसन लगे प्रान: मिलि आई नाग तिदीन मान: न पकं पदे हुरूप नवित
ति: मन महा सोक न हीं उरसमाति: तर्क तअथर चढ़ि उरय स्वास: वि
परीत काल जाने विनास: बालिका बाल बिललाति वांनि: अषिलेस
अअले धरि आनि:॥ नाग नी बाच्या। कहि त्राहि त्राहि कीनी पुकार: क
रियेस हाय जसुदा कुमार: दुरबुधि दुष्ट कहं दंड दीन: करता रअनंत तुम
उचित कीन: दुष्ट को देय राजान दंड: अवनी अनरथ उपजे अषंड: प्रज
तजे नीति अनुसरे पाप: अवनी सकरे तिहि जतन आप॥ कबिक बिष
धरी बचन सुनि सुनि बिषाद: अनुदयो रहा निरन्तय प्रसाद: उतरे फ
न माल तैं अजेव: दंड दयो सामर्थदेव॥ श्रीकृस्न उ॥ दहा॥ कृस्न कहे
हसि नाग कहं: रे पामर षल जेत: ऐसे दुष्टनि को उचित न बासअनंत॥१॥ काल
वान्॥ तन बिहबल काली तहां: बोल्यो समय बिचारि: अवतारष केत्रास
नै: मोहि बंचाउ मुरारि॥ श्रीकृस्नोबाच॥ यह वृज मंडल में बिहल: वृं
दाबन मम बास: पावन प्रगट पुरान प्रति: जपत साधु निसजास॥२॥ ता
ते जाहु अनित: बसिये सरस बिकार: वृंदाबन मेरो बिमल: है यह निस
बिहार॥३॥ तामस जो निदुजी हत्: बेर अकाज बिसेष: मरे उस्यो लउ
रि कृमुष: देतन लोक देषि॥४॥ सिर तेरे मेरे सदस: है पद चिन्ह सुनी

मातकुपगराजेतैं: यह नवननयोअनीता॥२॥ अबतोरमनकरै
नसिहैसकुलबिसाल: प्रभुकीआगपापाइपुनि: तहागयेतनक
३॥ कालीदमनजुकृस्नकी: कहिहैलीलाकोर: ततोसंतअवसर
हेतजुतनिरन्तयहोर॥४॥ श्रीआनंदकिसोरकी: कबिनरहरजस
नैसुनैताकहंनगति: बदैनित्यनवीन॥५॥ इति श्रीभागवत
हपुराणेदसमसकंधानुसारणे भाषा रहरनरहरदास
नबिरचितं॥ इतिकालीनिग्रहोबोडसो अध्याइ॥१६॥ कबित्त
हमातजसोदाकहंमिले: इहमनमोहनआर: उरलाये आनंदश्री
शनसूतकमनुपाइ॥१॥ नवनिहारतहेतसों: ऐककृस्नकीओर: सु
धापिबावतनैनसुष: जेसैचंदचकोर॥२॥ मनकृस्नजेजनम:
आयेबृजअवतार: पाईनिधिरंकनिअगर: सुतनयेसुषसार॥
३॥ बडेउपद्रवतैंबच्यो: मोहननंदकुमार: बेदप्रबीनजुधरमबि
पुनिसोईनयेअपार॥४॥ धेनधुरंधुरबसनधन: मनिगनरतन
अमोल: कोऊकछुवेछाकरत: तेईतेइलहतसतोल॥५॥ करिकरि
नेछावरिकनक: दानजथाविधिदेत: गोपीगोपपसुपालगन: ला
धरमसुषलेत॥६॥ इहिविधिकरतउछाहअति: नयेअसतगतिनां
न: तहांनतपसस्योबिषमंतम: मिलिवनथनअप्रमानं॥७॥ चलिन
सकेतिहिसमयचित: पंथअगमनिसिपार: वैरिहेजहांतहांविह
न: सबहीसहजिसुनारा॥८॥ नयेहरषश्रमदिवसतर: आपिनघु
साबिराम: सोहरहेजहांनहांसुषहि: करिवनतलपसकाम॥ छंद
धरी॥ पुनिअरधनिसाकेसमयपार: आपानउपद्रवबन्योंआर: च
ओरअसुरमायाप्रचार: बिसनरेअनलचऊंधाविकार: दृजनयेवि
नजडजीवजंत: दंवदाहमनऊपस्योदिगंत: अरहूतअगनिलगीअ
ल: कृतघोषडुसहज्वालकराल: मिलिअबिलअनलचढिगगनअ
हांतहांपुकारजीवजंत:॥ गोपवाच॥ हाकृस्नकृस्नसहवानिहे
ऊमातत्रातत्रातानकोर: कहित्राहित्राहिकृतकराल: प्रभुह
षिलीजेकृपाल: कछुहमहिनाहिनयमरनकोर: हाहाविजोगत
नहोर: प्रभुउरडेरहांदिगमीजिपानि: जगरहेककलपाअंतजा
हांऐकसकतिप्रेरीअनंत: उसाधिअगनिपीनीतुरंत: नहांजरल
त्रिनतमाल: जिमिदिष्टसुधासीचीदयाल:

रसमूल: फल तारन मिन बकुरंग फूल॥ दोहा॥ रच्यो अमंगलकाल तत
गावत मंगल गीत: पुरबासी सब प्रातही: आये घर निज नीति॥१॥ गो
दोहन ब्यापार यह: करन लगे सुष काज: जथा जथा क्रम यो षजन: म
हर नंद के राज॥२॥ महिमा कृस्न अमानुषी: देवी सकति दुरंत: व्रज
महजो कोउ बिघन: उपजत पावत अंत॥३॥ यह लीला हरि अनल की
कबि नरहर कहि कोइ: पाप अनल के पुंज मह: साधन परि हैं सोइ
॥४॥ कालिंदी निरदोष कीय: निग्रह काली नाग: कृस्न कृपालै गोप के
नये तव कृत सत्ता ग॥५॥ इति श्रीभगवनेम हद्दु रापे रसमस्त
कथानुसारणे भाषा बारहट नरहरदासे न बिरचितं॥ दावा
नल भंजन करनो नाम॥ सप्तदसोध्याय॥ १७॥ कबित्त॥ छंद है अष
बन घन सुषद बसंत बिहाई: रहा क्रम जुत ग्रीषम रितु आई: नरङ्क
द्रुम बेली फल नर: ऊरे पत्र कानन नये ऊषर: बारि प्रकृति मानि गुन नि
सचय: मिलि सब तरी येक तेजोमय: पृथी अकास पवन अरु पानी: म
ह प्रकृति तिज अनल समानी: ऊऊ मारुति केसी रूपटे: लुवा बहत अति
ताती लपटे: सरवर लघु सरिता जल सूके: क्रमन वरूत त्रिषातुर कूके
तकि सरोज लता संग सरवर: जहां तहां दुषद दसा तेरी जलचर: सफ
र भरे जल घरे सुषद सर: दुरि दुरि रहत पंक मह दादुर: उरग मकर क
मठी अकुलानें: जल बिनु प्रलय काल से जानें: सब ले जलासय करदम
सूकत: कहि कहि सघन सिषंडी कूकत: सलिल लाव सर ऊसर केस
ग: मृग त्रिस्ना भ्रमि मरत जूथ मृग: संग सषा लीने बकु सोहन: मिलि
बन धेन चरावत मोहन: तहां बिलास तर नितन यातर: बन नेडोर
समीप महा बर: माया षेल सुरंछा मोहन: करत नये व्रज बिघन
निवारन: नव मिलि आंषिमिचनया षेलत: ऊपर तरुर तबी चिगहि
ऊलत: चढि चढि साषा ढूंछ चलावत: हंसि हंसि कुसम तिलता हलाव
त: मोहन हसि हसि सषा रमावत: दुऊ घांघ्वाल नच मूदं रसावत: चतुर बि
लि फल बिसद चलावत: ते ते छल करि करि स बटारत: मांऊ अरथ फ
ल ले गहि मारत: बानर ह्वै कोउ बाल बिहारत: तरतर साष अंपिबु
कारत: कबऊक मोर मुकट धरि माथे: सब निरतत मिलि मोहन सा
थे: कबऊक ग्वाल समसुर गावत: बिबिधि मधुर धुनि बस बजावत: क
बऊ बांधि तर झूला झूलत: फिरि फिरि हंस तताल दे फूलत: इत्यादि
क लीला अधिकारी: हेतन्न सुरव धरची बिहारी: असुर प्रलंब ग्वाल
के गायो: पुनि मिलि षेलत काऊ न पायो: जग बंचक जन हिंसक

जान्यौ: पैवह बालमुकंद पिछान्यौ ।। श्रीकृष्णवाच ।। दोहा ।। स्यामकहे
बलरामसौं: दाउ सुनहु निदान: अबतौ षेलहु षेल यह: चितलाइ चे
गान ।१।। कबित्त ।। ऐक ओर दाऊ नए: अरु मोहन इक ओर: अरथ्य्वा
लइत उगर धउत: नाइक नंद किसोर ।२।। आपदिसा लीनें असुर:
ऊं स्प्रलंब कुल ताउ: रमन लगे उहागे दरस: दैत दाव पर दाव ।३। पन
कीने दुहु ओर मनु: हरिजीति जब होइ: येक ऐक के कंधक रि: बर
उह चावे सोइ ।४। निह चै ऐसो नेम करि: षेलन लगे ग्वाल: न्यारी के
लाहल नये: गोपबाल गोपाल ।५। लेगो दाऊ दाव लगि: ढेढे दाव
लदैव: हरीजे रिजीत्यो हर षि: अहि अवतार अजेव ।६। कांधे लेले कृ
ष्णके: बलके बलीजु बाल: पुंह्चावत बट लौं प्रगट: तहा हसत दे ताल ।७।
आसुर कंध प्रलंब रह्यौ: औ रो बल पह्यार: अपनै लीनें दाव अब: से
हसि चढे सुतार ।८।। कंध कीये बलदेवकौं: असुर अवधित जित्यार: य
हसुन चलौ आपनो: दीरघ देह दिषार ।। अंजन तन कारे असुर: द
स्नन दंत कुदाल: बिवर नास दृग कूप बनि: बिकट बदन बिकराल ।।९।
कपिल केच लकुटी कुटिल: अरु बरषत दृग आगि: तरकति जिव्हा
तडितसी: बारंबार उजागि ।१०।। पहचान्यौ यह तो प्रलंब: बलज द
पि बय बाल: मार्यो मुष्टमु ठमह: फूटस तषंड कपाल ।११। गदो के
रि कंग ग्रहन: निग्रह स्वास निदान: परक्यो षलले सिलपरे: पिंडगऐ
नजि प्रान ।१२।। बज्राहत मानहु बिवस: परबत पर्यो अचेत: महाबि
षम तुब चक्रमह: जो आघात अर्षत ।१३। आतुर आये कृष्ण इह: सु
षद साथ सब संग: तन अवलोके असुरतह: अविर ज होत अनंग ।।
१४। अति हित दाऊ लाइउर: बारंबार बिसेष: नर हर अनुलीलानि
गम: सोन ज्ञानि सुर सेष ।१५।। इतिश्रीभागवते महापुराणे दस
मस्कंधानुसारेण भाषाकार हरनरहरदासेन बिरचितो ।१८।।
कविरुवाच ।। दोहा ।। बन बन करत बिहार ब्रज: राम कृष्ण घन स्या
म: गोधन वृंद सुपालगन: आहिहित जुत अभिराम ।।१। आत ही गैद
हन प्रगट: करि करि ग्वाल सकाज: बोरि दये जित तित पर क: निकसे
सुरनि समाज ।।२।। अरगत मुट्टि छुटी अटक: घेन चली सब धाइ: त
बे हरित त्रिनगंध तैं: इहां जमुना बन आइ ।३। तरल सकोमल घास
नह: बढि बढि रहे बिसाल: मुजातरच दिग गन मग: मिलि मि
लि लतानमाल ।४।। छंद पधरी ।। ।। ।। ।।७ प: अ

घारमध्यबनआसपास: निरधारयहैपसुकुलनिदान: त्रिनतरलजुपाव
नगधथान: मिलियसेसुमुजारनिमाफ: सूझेनतहाकछुदिवससाझ:
बझ्यसेसंगसबगोपबाल: त्रिनसयनउरभिसुजातमाल: पावतनहीग
भनमनसपीर: धनगयेरूपनज्योंतयेअधीर: परहततिनतेंटचिन्पाइ
सुरनीनिसंगलीनेसुन्हाइ: पावेनकछुबनवारपार: करिधेननामलेले
पुकार: कछुलहैनहीजबगउकोर: हफ्रेलकलअबकहाहोर: देषेनि
रउदिमसपादीन: करुनानिधाननवदयाकीन: ऊचेद्रुमऊपरचदेआ
प: स्ररनत्रनावपोरुषप्रताप: बिधिपूवजथावेसीबजाइ: लैलैजुनाम
सुरनीबलाइ: पेअवतिथननीअतिहितप्रकास: सबचलीहरषजुतास
वंकास: हूंनारकरतआईअनंद: वंसीरवगोचरथेनछूंद: इहामोहन
द्रुमतेउतरिआनि: पेपानकरतदोनोप्रमानि: ऐसीकछुइछाजनऐन
त: दावानललागेबनतुरंत: फिरिगईआगनिचऊओरफैलि: गहनब
नकछुलाग्येनगेलि: त्रिनव्रंदजरतबह्रीतमाल: मिलिअतिलअनल
चढिज्वालमाल: चढिधूमगगनअधारचीन्ह: दिनलयेदुषितगउपाल
दीन: प्रतिग्वालबोलकीनीपुकार: अबकृस्नदेवतुमहीअधार: अपि
लेसरगोधननरतयेह: रहकनुमतुमहीरापिलेह: धनस्यामसम
यरहितुमहित्रात: जरिदावानलहमअगतिजात: बिनसतअकालगे
पालब्रंद: निरनयप्रभुकरियेनदनंद: धरिचितधीरतुमग्वालथेन
निरनीतहोऊछनमूंदिनेन: डिगरहेमूंदिसबदुषदुरंत: इहांअगनि
पानकीनोअनंत: प्रभुकीनोदावाअनलपान: निसषगगनबाजेनि
सान॥ दोहा॥ मोहनमुजारनिमंह: पीनोबन्हिबिसेष: देष्योबाल
कषोलिद्रिग: रहानकछुअवसेष॥१॥तैसेईबननतरलतर: मिलिमं
जरफलफूल: फूलकरनअदलनकछु: कुंजतषगअनकूल॥२॥दाव
नललागेदुसह: जरतबालगउजान: नरहरप्रभुकारनकर: प्रभु
इछाजुप्रमान॥३॥इति श्रीनागवतेमहापुराणेदसमसकंधा
नुसारणे नामाबार हट नरहरदासे नाविराचितं॥ मुजारनि
प्रवेसा॥ अग्निपान करनेनाम॥१९॥ कबित्त॥ दोहा॥ याहीक
मकीउउचित: व्रंदाबिपनबिहार: पावसरितआगमप्रगट: सुषद
इकसंसार॥१॥छंद उधोर॥ आषाढजजलदअकास: प्रतिरंगरंग
प्रकास: संघटानलघनघोर: अरुघटाबढिचऊओर: दिसिमतसघन
सहाप: चढिरंगसुरपतिचाप: बगपंतिउजलबोन: प्रतिघटामध्यप्र
मोन: चऊओरबीजचमक: नहीदुरतनलहिनिसक: सबारवति

षरसलाव: प्रतिमा अनेक अन्नाव: मिलिजलदपचनमरोर: अतियर
जिमनचकुओर: सरसरितदादुरमोर किलीरमोरकोर: रजिअरन
कदनिरंग अवलोकिवट तअनेग: अतिअवति जलआकास: पृथीस
सुरिप्रकास।। छंद पधरी।। त्रिलगुलमलताअंकुरितनास: बसुथ
गुनीरअवरनिलास पानी निवानद्दथीप्रसंग: आनूसनमानकुअं
गअंग: मह्रिनयोसयनदंपतीमिलाप: रतिबदीबिबिधिगतिबिर
हताप।। कवित्त।। महिबिजेगसहिअष्टमास: गनिजलधरआगम: रं
हिसबेदआसितअंकूर: सहिसीतलापसम: पीयआगमपतिवता अ
षिलआनंदसुसजीय मिलिदंपतिरतिमोनि: अषिलआनंदतुपजीय:
पुनतजोसंगनरहर सुकवि: मासचारितिमानयो निसिदिवसप्री
यापीयनेहनव पूरनप्रेमप्रमानयो।।१।। छंद पधरी।। वरिषावदित
रबल्लीबिसेष: अतिसयनकुंजतपमोअसेष: सोनाबकुपल्लवतर
लसाष: नवसजतनीरपंषीसनाष: परबतनिलतातरगहरपुंज:
गिरगुहागहरमृगराजगुंज: बनजंतबिबिधअनेकबास सुषबसत
वेसबससावकास रतिकालत्रीयापसुपंषिरंग: अतिसयप्रसंगउद
नवअनंग: जलबराबिलिरनिमिलिजलदजाल: षलकेदरीनिचलिबि
पुलषाल: गिरगुहावलीसरितागहीर: निसेषतरुवरसनेरनीर: सिप
रनिसिषरकुंजतसुनाद अनेकजलदमिलिधसतिआद थरथरपिस
यनबंकेनधार ठित्रीरवजिततितरातकार: जलजातविकसिस्थिम
धुपजाल गुंजारबिहतबानीबिसाल: मिलिमीननिकरलयुदियमा
न: प्रतिमाअनेकबिहरतप्रमान कमगतुमकरतंतीकुजंत: आकार
नाषजलचरअनंत: ओषधीअनउतपतिअसेष: कुलधरमहूबीवरत
तबिसेष: नवन्नतरुथअनेकजाति: जगषानिवारिअनेकजाति: न
ससरितानीरसमुद्रस्थ: सबप्रानीपावनकरमसिथ: ससिसूर्यसत
मारगसमोह: आछादितबादरत्रिनअरोह: मिलिसयननीरछुटीमजा
र बरजितप्रयानदपवेरबाद: दलचलतननिचतुरंगदेस: निरउदि
रतिबिलसतनरेस: गतिमंदरथपेकुचनिगाउ: ससथलअंगत्रपने
सुनाव: मिलिपीयोकिरनिजलअष्टमास: पुनिउगलितरविमानकुम्
कास: बरषानिसिसंकुलतमबिसेष: अवरतजलदनजयनअसेष
पेकरतएकचातिकपुकार: अतिनईजदिपनरघाअपार।। कवित्त।।
वर्षजथाबिलास: बिबिधिकीनोंबिहारवन: स्यामराममिलिसषा
संग: पृथीरजपावन: वृंदावनगोधनबिसेष उग्रे ’’ .हि

नजुत जमनांजल बिहार॰ आनंद उमाये॰ कृतफलै जसोदानंदके॰ ना
नगतिजुतहितनर्ईय॰ श्रीकृस्न देवनरहर सुकबि॰ यहबरषारितबितई
इति बर्षारित अष्ठ सर्द रितिबर्नना॥ दोहा॥ सुषहिनये आगम
रद॰ क्रीडत कृस्नकुमार॰ पदअंकित पावन धरी॰ बृंदारन्य बिहार॰
॥ छंद कैअषरी॥ दोहा॥ अति सुषद सरदरितिआई॰ उजलनन सोभा अधिक
ई॰ निरमय चात्रिग त्रिषानसाये॰ प्रमुदितस्वातिबुंदजलपाये॰ पुंजपयं
द्रिबिचत्रबिहाये॰ सीतसुगंधपवन समुहाये॰ कंन्यारासिआगमनदिनं
कृत॰ पितरप्रतोषहन्यकन्याहित॰ देबीनंग तिनिसनेवनवदिन॰ प्र
दसमीसहत बिजयपन॰ होतपयाननरेसबिजयहित॰ कारनसंपति
सकलबिलोकत॰ मालादीपबिराजितमंदिर॰ घनउछवजुत हरषतघ
रघर॰ जाम्योसीतनयो निरमलजल॰ प्रतिदिनघरतबरतनि सिपलपल
पंकप्रमुदितधरथीसपेषी॰ सतमारगउघरेसबिसेषी॰ सुरनीधीरअ
तिअतिसुंदर॰ परमबिचत्रबरनसोभापर॰ निरमलनीरगिरनिचलि
निरझर॰ कुंडनरेअतिजितनितसुषकर॰ सालिषेतमरजादसचारी
कृषीआसपूजितहितकारी॰ प्रगटसकलउदिमफलपाये॰ दिसिदिसि
अंनषेतदरसाये॰ हाहंसअवनीतलआये॰ सकेकरदमनीरसुहाये॰
पुहपवतीत्रीयलताप्रसूता॰ संपतिसकलप्रसूतपुनीता॰ पूरनकला
ससांकप्रकासे॰ नवजरुजोतिवंतअतिभासे॰ सरनिसरनिकुमदनिबं
नसोहे॰ मिलिनिसजोन्हसरदमनमोहे॰ दिनकरउदेप्रकासकमलद
ल॰ करतमधुपनिकसतकोलाहल॰॥ दोहा॥ इत्यादिकसोभासरद॰ ब
नबनकृस्नबिलास॰ संपतिजथअनेकसुष॰ कहिनरहरकबिदास॥१॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणे दसमस्कंधानुसारणे भाषाबार ह
ट नरहरदासेन बिरचितं॥ इतिसर्द बर्षारित बरनना बीसं
मोअध्याइ॥२०॥ कबिरुवाच॥ दोहा॥ येकसमयक्रीडाउचित॰ कृ
स्नगवनबनकीन॰ महाजूथसुरनीनिमिलि॰ पुनिदृजबालप्रबीन
॥१॥ बेनबजाईबिमलबन॰ सुंदरस्यामसुजान॰ थिरचरमुनिषगमृग
थकित॰ सुधाश्रवनपुटपान॥२॥ कबिता॥ जथासुनतमृगमृगीजूथ॰
रसबिवसबेनरव॰ बिकलतईब्रजबधू॰ नवननुस्त्रीयसकाजनव
कृस्नचरितचितवन॰ बिबिधिअभिलाषबढावत॰ प्रेमसमुद्रहिपरी॰ प्रग
टकछुघाहनपावत॰ धरिध्यानअतुलछबिउरधरीय॰ जथाजोगजोगेस
वर॰ नजिकीटभृंगतनमयतई॰ ग्यानमदनउपदेसगुर॥१॥ छंद दुतीया॥
धरिचितअस्तुतध्यान॰ प्रतिमासरूपप्रमान॰ बनिबिहतनटबरबेष

सबअंग अंग बिसेष : रजिमुकट पछिमयोर : कच कुटिल साम किसोर
जरि कनकरतन सजोप : प्रति श्रवन कुंडल ओप : झलक रुचिर जुगल कपो
ल : लसि बक्र अलक सलोल : नयर षन्न कुटी नाव : जुव चाप चक्र स्व
टाव : सुन्न नास स्वास सुगंध : मुष अधर अरुन सबंध : रद बज्र कन सम
राजि : विधि बचन अम्रत बिराजि : रुचि चिबुक कंठ त्रिरेष : तो ईस्तुपसी
म असेष : बेजंति माल बिसाल : मद मत्त चाल मराल : मुष चंद्र बिंब समा
न : पुनि नेत्र कमल प्रमान : लसि अरन अधर प्रवाल : रव बेन रुचिर रस
ल : श्रुति बासुरी धुनि संग : सुचि नैन दरस प्रसंग : श्रुत नेत्र बान सुजा
न : मानी सुधा मग्र मान : वह बासु पुनि प्रसंस : नरी बासुरी जिहि बंस
उभि अरन पल्लव अंग : रोमांच छंद सुरंग : कुल ग्वाल मंडल कीन : बनि
मध्य स्याम प्रबीन : न दिथ कित नीरनि दान : पुनि पवन गवन प्रमान
प सुपं सिउत पति प्रेम : निसि सुनत बेन सनेम ॥ ह्रग ॥ इत्यादि करव
न अषिल : अति सेत्तो प्रति अंग : करि करि सुमिरन गोपिका : पूरन
प्रेम प्रसंग ॥१॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसमस कंधानुसा
रेण भाषा बार हटन र हरदासेन बिरचितं ॥ दिवस बिरह गो
पिका गीत ब रनने नाम ॥ इकवीस मो अध्याय ॥२१॥ कबि
त ॥ दोहा ॥ उपजी दसा जु नैन की : रूप नयन अनुराग : झत देवी ब्रत
कनिका : गोप सुता बड़ भाग ॥१॥ पंकम ई प्रतिमा प्रगट : कात्यायन
कीकीन : पूजा अरचा नगति पन : कीनी निस नवीन ॥२॥ सब मि
लि अरुणोदय समय : अरक सुता जल न्हाइ : क्रम जुत नगति हव
ष्प करि : हित ब्रत काल बिहाय ॥३॥ हिम रित अग्र हन मास हू : ब्र
त कीनो ब्रजबाल : झत देवी कात्यायनी : बासुर निसा बिसाल ॥
॥४॥ गोपी बाचा ॥ कृत सनान पूजा सबिधि : नगवति नये जु नाइ : बढि
न फल मांगत बिहत : यहे मनोरथ माइ ॥५॥ जगजननी जोगेसुरी
हित जे लगति सनेह : कंस ज्वाजे जो रिकर : हमहि कृस वरदेह :
॥६॥ कबित बाच्च ॥ छंद दोधि अघरी ॥ पूरन नयो मास ज बूपावन : न
ग तिसनेह मिलन मन नावन : अरनउदय अग्र उय हुते आरी : सम
वयकं मां मिली सुहाई : पूरन दिन ब्रत मास प्रमान : जन मह
तार थअ पनो जाने : गोपी चली कुल गुन गावत : नुजथ रि
अ सम मन नावत : हास बिलास करत कौतूहल : जगपा
रस्पो जमना जल : बसन उतारि तीर धरि बांनो : कर

नांन बिधांन सकांमा : ।। दूहा ।। महा जोग जोगेसवर : समनि
कांम सुभाव : स्यांम लिषे रैवी सकति : नांम निरंतर भाव ।।१।।
घट घट व्यापक स्यांम घन : आदि ब्रह्म बिन अंत : तूं तत्व बष्यत ब
रत मन : तिन ते कछु न दुरंत ।।२।। कबित्त बाछें दउयौर ।। नामनि
रंतर भाव : अनुजा निजोग प्रभाव : रहो आइ कृष्ण अचीत : बरह
न हेत बिनीत : तरैं मगन जल महं भाम : कमकं अव घिस कांम
हरि बाल लीला हेत : तहां कृष्ण जदुकुल केत : लेबसन तबन दल
ल : सो चढे रूछ बिसाल : ।। छंद हनुफाल ।। कृत कदंब आरोह कं
न्हाई : चितवत बचन करत चतुराई : हर चढे तुम चीर दिषावें
त : हसत आप अबलांनि हसावत : ।। कृष्ण बाचा ।। पुनि बोले श्री
कृष्ण प्रबीनां : तन रत बेदन ई तुम षीनां : येक येक आवे तुम आवकु : तो
स बग्रां निबसन ले जावकु : देष कृपा बिधि अंबर देऊ : जथा जतन के
घर ले जेऊ ।। कबित्त ।। सो सुनि बचन हसी सब स्यांमा : बिषम लगे
लजित भई बांमा ।। गोपी बाचा ।। बोली कुलबल ली येबनाई : काहे कर
त अनीति कन्हाई : जांनत नंद महर को जायो : पेषि महरि कुच पांन
पिवायो : जपै लरे तो सब ब्रज जानें : पे सब गोप जु प्रीति प्रमांने :
कहां भयो गोधन अधिकांने : सबै गोप कुल जाति समांने : के हम ज
इ महरि सूं कहिहैं : स्यांम उपाधिन असी सहि हैं : लछन ये सी षेन
द लाला : बकुते हसति गोपकी बाला : प्यारे कि हिये नीति पदारी :
महरि वहे है जसुमति माई : तन कम ही के काजे ता दिन : महा अल
षल बांध्यो मोहन : कटि म हगरो दांवरी कर कस : पुनि तुम रहे ब
धे ई परबस : अंगन फिरे के दौरत ऊषल : अनम हरि ही बोले आकु
ल : देहि चीर हम तेरी दासी : होत सषि न महं अतित उपहासी : स्यां
म हम हि अबसीत सताई : कहि है जो लूक है कन्हाई ।। श्री कृष्ण बा
च ।। तुम हि कहत हम दासी तेरी : मांनो तो यह आग्या मेरी : येक ए
क आवे तुम आवकु : जां न्यो न्यों अंबर ले जावकु ।। गोपी परस
रमत्र ।। करत परसपर मंत्र जु कन्या : छवि धरि रसना दंत निधंमा
सुनहु सषी तुम सबे सयांनी : इहि बिगते अैसी अबगांनी : जिहि
तिहि बिधि करि अंबर लीजे : कछिन परे तब कहा न कीजे : क
र से परम दनां लय करि करि : बेपथ बन निकसी सब बाहर :

येसबजबेक दैवतरआई : इततैं उतरे कवरकन्हाई : जबयेसुध
नावसबजानी : बोलेमनमोहनयहबानी ॥ श्रीकृस्नबाचा ॥ इं
हिजलतेतुमनगनअन्हाई : पयदेव निसुअवगपपाई : तुमहि
नयेअपराधसुताते - ऐसेजतनकरहुअबयाते । मसतकलौ
रजोरिकरहितमन : बरनदेवकहं करियेबंदन : तातेयह अपरा
धजुटरिहैं । केंजलदेवकोपअतिकरिहैं । नयर्हेत्रिसतन्नरीअति
नावति : करजोरेकृतबंदनकोमनि : सुधनावजानीकेन्यास
ब । तंहासनतयेमोहनतब : उपज्योतबेहासिरसऐसो : जान
तकृस्नकेनिकाजेसो : दीनेबसनसुथमनदेख्यो : पूरनप्रेमअ
नेगपरेख्यो ॥ श्रीकृस्नगाहहाकारनव्रतव्रजकंनिका । हरिकि
नेजिहिहेत । सोफलतुमलहिहोसरद । मनक्रमबचनसमेत ॥
॥१॥ सुकलनिसाराकासरद : हमरचिहैबनरास : तबक्रैहैसबकी
तहो : पूरनआसप्रकास ॥२॥ बिनतापूरनमासव्रत : पुनिबंछि
तबरपाइ : सोक्रैतनमयकृस्नसों : अतिहरषतयहआइ ॥३॥ बा
सुरथेनचराइबन : करेजथाक्रमकाज : संध्याआयेघोषसुष । रो
मकृस्नव्रजराज ॥४॥ समयजुबसत्राहरनसुष : कीनोनंदकुमा
र : कलौसुपेनरहरसुकबि : आपसुमतिअनुसार ॥५॥ इतिश्रीभा
गवतेमहापुराणेदसमसकंधानुसारणेभाषाबारहट नरहरु
दासेनबिरचितो । इतिबसत्राहरनअध्याय ॥२२॥ कबित्त ॥ छंद
पैअषरी ॥ मिलिसबसषाअपरदिनमोहन : गयेसघनबनगोध
नगोहन : कुंजकुंजमिलिक्रीडाकीनी : नावकअनेकउचितरसभी
नी : चढ्यौघामदिनबछचरावत : बनबनबिहरतवेसबजावत :
अषिलबिहारश्रमतअकुलाये : इहाअसोकबिपनमहआये : मं
डलग्वालबालकरिमोहन : साअजमध्यकृस्नतिहिसोहत : कलौ
सुदामोकवरकन्हाई : अजहूबिलोकतछकनआई : नयेषुधा
रतहमतेभारी : कछुमगावहुचितहितकारी : प्रभुसरिताटनि
करप्रमानें । जग्यकरतरिषिबरजहांजानें : पुनिमोहनतहांसष
पगये : तोजनलैआवहुमनभाये ॥ सषावाच ॥ जाचेंनाहम
तोनहीजानी : पेयहजाचिकदसंअमानी : यहसुनिसषाकर

तनयेउत्तर : देव हम हियहतो कृतउ सतर ॥ श्रीकृस्नवाच ॥ जग्य
प्रसादन निहाजानकु : पैयहु अनपवित्र प्रमानकु : कह्यो कृस्न
अबका रिजकीजे : देषहु समयन उत्तर दीजे ॥ कबितु ॥ यहसु
निसषाजग्य थलआये : रिषकहं आनि चरन सिरनाये : करजुग
जोरि कह्यो तिहि कारनं : मुनिवर इहां बैठे है मोहन : द्विज वर कछु
प्रसाद जु दीजे : कारन उचित बिलंब न कीजे ॥ कबितु ॥ द्विजन
मौनि ब्रतलीनी देष्या : मौन ही बोले गुरकी सिष्या : इहां ते ईग्व
लबाल फिरि आये : सबै कृस्न को मरम सुनाये : पुनि वे मोहन ष
रि पगये कारन रिषपतनी निकह आये : इहां सो ई रिषपतनी पहि
आये : कहे वचन जे कृस्न कहाये ॥ सषा बाच ॥ मातात्रोजन कृ
स्नमगाये : सब ग्वालनि व्रत तांत सुनाये ॥ रिषपतनी ॥ यह
सुनि रिषपतनी अनुरागी : तबहमते कोत्रीय बडभागी : जग्यपु
रुष निगमागम गाये : उन हम पै सी धीन मगाये ॥ कबितु ॥ पुनि
त्रीय भोजन बिबिध प्रकारा : पूरन करे बिसद पनवारा : चारि
प्रकार अहार सचिकन : कीने कृत जग्य के कारन : अहे अहेत मि
लि गग्याम नि : भोजन लेनि कसी मननामनि : आनि कुटंब क
रे अवरोधन : पुनि इन मानी नाहि सहतपन : इहां त्रीयाते आई
आतुर : मुष देषिबे निरषत मदनमनोहर : भोजन अग्र धरे मनभा
ये : जग्यपुरुष हित सहत जिवाये : मोहन बाल गुपाल मुदित म
न : इहा लये सब हि निजल अचवन ॥ कृस्न उवाच ॥ अबतुम नारी नगति
हित कुरन : पुनि अभिलाष जु होहै पूरन : देवकृस्न इहां आगपदि
नी : परमत पो थलजा कुम्रबीनी : ये रिषपतनी सब ग्रह आई : बि
बिधि फेरि मब सेजबनाई : पतनी येक औरग्रह पैसी : त्रास द
ई ताक हं पति तैसी : बहत जि देह जो तिअकुलानी : सो पे कृस्न
हि मोऊ समानी : जोग ग्याग जप तप ब्रत संजम : देह त्याग तीर
थ आलम दम : ये सब बिबिधि बिहूति बदावन : येके ना वस्तु
कति सें ना वन ॥ दोहा ॥ तिन रिषपतनी न गतिते : करे सफल
मनकाज : प्रतुनर हर पूरन पुरुष : राम कृस्न ब्रजराजा ॥ १२ ॥ इ
ति श्रीभागवते महापुराणे दसमस्कंधे नुसारे भाषा बा

हरिनरहरदासेनविरचितं॥ रिषपतनीअनुग्रहोनाम॥
त्रयविंसतमोअध्याइ॥२३॥ कवित्त॥ कवित्त॥' सुरपतिहितश्री
वरष·करतमघगोपजथाक्रम:पनप्रनातहुंअवधिपाइ:सबनयेसउरे
म·सकलसारसंस्कार:करतघरघरहितकाजे·बिप्रवरनबेदिकविधा
ने·सुनमंगलसाजे:ओहितप्रधानमंत्रीपुरुष-आपआपकारिजअन
य·सबकरतसिधनरहरसुकबि·महरग्रेहआनंदमय॥१॥श्रीहरि
वाच॥ अषिलदेविउछाह·क्रस्नपूछेजुनंदकहं:कवनजग्यकिहि
काज:हेतफलततकहोतेह·सरबमरीसरबग्य·सरबज्ञातमसर्व
वन:नंदपिबाललीलाबिचत्र·कीयक्रस्नजुपावन:पितुकहोमे
हिकिरिकैंक्रपा·धरमपरायनधरमधुर·त्रतिग्रेहग्रेहमंगलनगर·
सनुयहउछिमहोतपुर॥ नंदबाच॥ छंदपधरी॥ अंगिरसनं
मरकमषअनूप:रिधदानसुपेबरअहमरूप·हमकरतइंद्रजगवां
नहेत·दिनबंछितसोफलअषिलदेत·इंद्रानमजानक्रुजलदजाल:
वसअवधिमिलितहैनन्नबिसाल:ष्टथीजुइहांरितवतीपाइ·सुरराज
मेहउपजतसुनाइ:मघनागपारसंतोषमांनि:अतितुष्टमिलिहि
जलजालग्यांनि:सुषअवतसघनजलरतआव·आनंदउपजिउक्र
षांअमाव:रजबीर्यजोगदंपतिरसाल:सुनकालगरभथितहोरसु
दल:ओषधीअंनविनतरअपार:नवउदभिजषांनिअदासार:
नयनतलहंततिहिसुषअनंग:संतोषपोषआनंदसंग॥श्रीक्र
स्नबाच॥ पितुसुनक्रुकरमबसअवधिपाइ:अवतरतजीवकिक्रजो
निआइ:कछुकालबाललीलाअकाम:अप्यांनगमावतदिनअबाम
उनिअंगहोतजोबनप्रवेस:बलसंगबढतबिषीयाबिसेस·चषअ
नेनरसनकरचरनचाहि·सबहिनकैंबरततमनसहाइ·इमसंजे
गमनमिलिअसाधि:इताकरतनयेनानांउपाधि·येनयेकरमका
रकअनीत:निसिदिवसकरतनीतिहिअनीति:सुनअसुनकर
मसाधतसुनाइ:पुनिबिलसततेईपरिपाकपाइ:उतपतिनूत
करमहिंउदोत·हैसाधिकरममहलीनहोत:दिनहोतकरमकरि
दिव्यदेह·हैनासकरमबसनिसंदेह:सुषदुःषलाभअरुहानिस
ग:येसबेकरमकारकअनंग:करमांअधीनकाजक्रुअकाज:इह
ईसनयेजनकवनआज:करताजोप्रेरककरमकाल·उपरहतहत
सुषसोईदयाल:अबपिताछोडिकलपनाआंन:पुनिकरियेमतमेर

त्रमांनि: बिश्रांम हम हि बनषंड बास: पसुजीव नि हे परबतप्रकास: निर्झरस
रुा वरस्त रतनीर: त्रिन बृध होत तहां तीर तीर: धनमहा हमारे यहै धेन: सोई
जीयत बदत चरि चरि सुषेन: निहचै सब छांडउ अवर नेम: पूजउ गोवरधन
सहित प्रेम: ईश्वर देह मैं जानियाहि: तातें प्रसन्न अब करउ ताहि: पूजाय
ह बत्त्रन मुहि भांनि: बिसेष कहां तुम कहं निदांन:॥ कबित्त॥ नंद सो
ह लाजे कहि निदांन: पितु यहै मत्र कीनौ प्रमांन: संनार सार नरि सकर
साज: इत गोप पथ मन मिलि चलि सकाज: इहां गोप सबे गिर निकट आ
इ: बिसतार करें भोजन बनाइ: करि सिह ससनौ जिहि द्विज त्रिमकीन: बन
धेनजा इ चित्र तन बीन: मंदिरन सीस निसि दीपमाल: बाजित्र बिबिधि
उछव बिसाल: इहां आनि आनि भोजन असेष: बलि दीनी परबत क
हं बिसेष: आवरत अद्रि नये चउ ओर: कछुर लैन षाली किउ केर: भौ
नौ गोवरधन अनकूट: लै हाथ षवायौ सषा निलूट: संसार त्रि मनयौ
अेन संग: परबत हित पूजा सुत प्रसंग: इहि भांति महोछव कउ वु अनंद
मघ तंग इहां गोगर बुमंद: इत मिलि गोप परिक्रमन कीन: मन त
ये देषि बास वमलीन: सब पूजा पूरन करि सुनाइ: इहां इत गोप मि
लि ग्रेह आइ:॥ दोहा॥ कस्यौ बाध मघ ईंद्र कौ: नरहर प्रभु निदांन बु
सव कस्यौ बिरोध बस: अति बल क्रौध प्रमांन॥१॥ इति श्री नगभु
महापुरांद स मस कंधानुसारणे भाषा बारहट नरहरदासेन
बिरचिते॥ गोवरधन महोछवनांम॥२४॥ छंद पधरी॥ कबित्त॥
अब इंद्र कोप कीनौ अपार: पठये जलवाद्दल प्रलय कार: सांवरतक
नांमांघन सचेत: हरि त्रेरे घोष बिनास हेत: घन बरषन लागे अति स
घोर: आरोपजल दमिलि ओर ओर॥ इंद्र बाच॥ इहां इंद्र कहै प्रति अ
मर ईस: धन मद ये छाये गोप धीस: इनकै इक उपज्यौ पुत्र आर: मति
मां सु कृस्न मानुष प्रजार: आश्रय लेता कौ ये अगयांन: मघ तंग कस्यौ मेरे
अमांन: कूके सउ येतकै बिसास: निरमल सक रिउ येषनास: बाचाल
बालकारे बिवांन: मन मे सुगरब अति पांन मांन: जल बिंब करउ तुम
सघन जाइ: अैरावत आरूढ हम कुआइ: धर अवत बुंद गज सुंडि धार॥
परमांन थंभ देवल प्रकार: पे पवन गवन संघर नपार: नैक र गगन
गरजा सुनाइ: इत घटा स्याम नभ अंधकार: करकी सिल बर्ष प्रलयका
र: बनितड़ित लता बिभ्रम बिहार: चउ ओर करत अति चमतकार: तत
रुत तनये कंपत सनीत: संपात धारा मिलि बिषम सीत: गो बिंद गोप गोपि

कष्याल: कीनीपुकारलषिप्रलयकाल: करित्रा हित्रा हित्रोनीपुकार: अ
षिलेसकुमतुमहीअधार: नवनंतसरनतुमहीसुतार: स्वामीत्रिलोक
करियेसहाइ: सोसुनतस्यामव्रजकेसहाइ: रह्यौगिरगोवरधननिकट
आइ: सोलीयउगइपरबतसमूल: तिहिकालबालछत्राकतूल: कम
लामपानिपल्लवकनिष्ट: प्रभुधरेअपरबतप्रतिष्ट: देवाधिदेवदीन
निदयाल: करिदयाकुम्बेलेकृपाल: मतसहोकष्टजलसीतमाह:
छिनरहोजीवसबअदिष्ठाह: बरषाविसेषसुरपतिविकार: जेहेविल
ष्येसबजंजार: मतरूकुजेतकोउत्रासमानि: परबतहेदिढमत्र
अपानि: नवनंतसरबमनभयेअनीत: पुनिआस्त्रहपरबतपुनीत:
निरानकुध्यात्रिषमापिनाहि: मनरहेसरबआनंदमाहि: गोपिकागोप
गोजनयाल: पसुपंषिकृषीसबवत्सपाल: दिनसातलबरषाबि
सेष: व्रजनमोअदिष्ठायाअसेष: बयबरषसातेक्रष्णहिविलोकि: र
हिकनरंमनबुधिरोकि: विथकेकरिउदिमरजविनास: तबइं
द्रकिमानेपरीत्रास: जबरहेबरषिसबजलदजाल: ब्रतभंगभयेसु
रपतिविहाल: संकलपनष्टितहातेसुरेस: इहिगेरनिवारेघन
असेस: फटिजलदनयेउजलप्रकास: पुनिकिरनिमहादिनकर
प्रकास: हंगिगेसुरेसबलभंगहोइ: कृतउदिमनाहिनफुरतकोइ
प्रभुदईतबेआगयासमान: निकसेजनबाहरसबनिदान: थितक
रिधराधरधरनिथान: गोपालबेनरवकीनगान: रोहनीजसोदानंद
राइ: इत्यादिकनेटेसकलआइ ॥ दहा ॥ अतिसनेहकातरअषिल
व्रजनरनारिबिचारि: स्यामहिदेतअसीसबः चिरजीवनंदकुमार
॥१॥ सुरसीकृतहजारसुर: धरनिअवतपेधार: कृष्णहिबिनवतरे
करक: उरआनंदअपार ॥२॥ मुनिवरासिधप्रसिधमिलि: अरुच
रनचितचाइ: करजेरेअसतुतिकरत: बारंबारबनाइ ॥३॥ पुहप
बाषिहितहीयहरषि: दुदुभिविजयबजाइ: कीनेबंदनपरिक्रमन
अमरवृंदतहआइ ॥४॥ महरआदिसबगोपमिलि: सुतजुतकलसह
इ: अपनेअपनेघेपरहो: सबआयेसुषपाइ ॥५॥ रामव्रजगिरवरध
स्यो: मानहस्योमघवान: प्रभुनरहरष्टनपुरुष: भयेनरतनभगवा
न ॥६॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमसकंधअनुसार
भाषाबारहटनरहर दासि नाबिरचितं ॥ गोवरध न
र नं ॥ पचीसमोअध्याइ ॥२५॥ कबि रु ॥ इहा ॥

नगमिलिइकसमय: वेगेगोपबिनीत: क्रस्नचरित्रबिसेषक्रम: प्रगट
नलगेपुनीता॥१॥ कहतनयेसबनंदकहं: बिसमयबातबिसाल: क
हवेसयहक्रस्नकी: पुनिब्रजकेउतपात॥२॥ छंदचेअपरीगोपब
चा॥ बिहसतकहतनयेब्रजबासी: बासुरदसकेबकीबिनासी: मास
त्रितीयसकटासुरमास्यो: पतितसुबायेचरनप्रहास्यो: मोकबरष
त्रिनचक्रजुमारे: अरजनजुगत्रयबरषउधारे: बछासुरबकअघघ
अस्तुत: अरुप्रलंबकालीअहिअनुहित: महदुष्टसबरहिक्रम
मारे: रहीगोवर्धनगिरउधारे: कीनेसातबरषमहयहक्रत: हेअ
वतारक्रस्नब्रजकेहित॥ नंद बाच॥ तिनकहनंदरयोफिरिउतर: यु
हकलीहीमोहिगरगगुर: आगेत्रिजुगतीनअवतारा: स्वेतअरुन
नयेपीतसुदारा: इहि स्वेथेजुगक्रस्नजुआये: बिधियाहीमोहिग
रगबताए॥ दुहा॥ कलिजुगकहियेगेक्रस्न: बासदेवययहनाम
भवउधारनयेनये: बिहलबेद बिश्राम॥१॥ बादिनतेजानेइनहि
मेपरब्रहमप्रमानि: चिरजीवोब्रजहितबिहत: बिलसतुप्रेमबि
धान॥ कबिरुवाच॥ अघनासनजगउधरन: क्रस्नकथाहित
काज: कबिनरहरसुनिजनकरि: साधलहेसुषसाज॥ इति श्री
भागवतेमहापुराणेदसमस्कंधानुसारेणभाषाबारहटन
रहरदासेनबिरचिते॥ नंदेनअश्रीक्रस्नप्रभावबरननोनामा
२६॥ कबिरुवाच॥ दुहा॥ सुरराजसुरधेनसंग: आयेयाहीकाल
अवलोकेएकांतइहां: मोहनमदनगुपाल॥१॥ छंदचेअपरी इंद्रस
तुति॥ करजोरेबंदनबहुकीनें: इंद्रनयेइहाअतिआधीनें: तीनलो
कप्रभुतामैपाई: यातेनयेगरबअधिकाई: तिहिमदअंधनयोऐ
सो: जगकरताजान्योनहीजैसो: मायाबसरीसरतामानें: कारनक्रो
धलोभअधिकानें: ताकहंदुष्टकरमकरिजानत: प्रभुतहांहीहांदं
डमानत: यातेपंथचलतसुरआसुर: तुमगोबिंदगुरुकेगुर: जेष
लईस्वरमाननआलम: ताहितइछारूपधरततुम: मैंअपराधकरबेस्व
मर: प्रभुअम्याकरिदेउअमनेपद: यहमतनाथमोहिफिरिनावे: प्रभु
हीनयहबेछितपावे: गोकुलनाथचरनअनुरागी: तेईत्तिवअतभ
येबडभागी: मेरोजप्रनिवास्योमोहन: मोकहउपज्योक्रोधमम
हामन: प्रलयमेघमेपवनपठाये: याब्रजनासकरनकोआये॥

...रबलिबरषिघनहारे॰ मैहतउदिमनयेमुरारे॥श्रीक्रस्नवाच॥
पुनि हसिबोले जगस्वामी: मदकरि होतजु उतपथगामी॰ संपति...
करु क्रति हिसर: हे निहचे मे रोग्रे सो हर॰ अवसुरराजजाऊ घ...
पनै: पुनि ग्रैसीन बिचारऊ सपनै॥ दोहा॥ इंद्रलोकबसि इंद्र अ...
क्रतजु इंद्र अधिकार: करियेरहो अष्टकी: सब बिलसऊ सुपसार॥
कामधेनि बाच॥ छंद द्वैअ परी॥ कामधेन बोली भीरज करि: हनुम...
...गुनब्रहमनिगुनहरि: जगतपिताजगदीस जगतगुर: बासदेवव्रज...
...गय बिस्वंनर: इंद्रकसो होतउदिम ग्रैसो: जन॰ गउ बीरजर हेनजेसो...
...जगोधनजो प्रभुनवंचावत: नोइंनको कऊ नामनपावत: निरु...
...नरीधेन नंदनंदन: ध्जबसि हैसुष सोजगबंदन॥ कबिरुवाच॥
दोहा॥ सुरपति सुरसुरभीसहत: सबै कितसेंदेदे: प्रभुनरहरगवतप्र...
...सिध॰ गये आपनै ग्रेह॥१॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणे दसमस्कं...
कथानुसारणे भाषाबारहटनरहरदासेनबिरचितं॥ इंद्रेन ग्र...
क्रस्न अनषेककरनो नाम॥ सताईसमो अध्याइ॥२७॥ कबिरु...
दोहा॥ येकसमय ऐकादसी॰ निराहर कीय नंद: कालिंदी हसनान...
क्रत: आये सहत अनंद॥१॥ असुरकाल संध्या समय: बेदलोक...
बिवहार: सलिल प्रवेसजु इहि समय: तोनउ चित संसार॥२॥ छंद...
...द्वैअ परी॥ इहबरनके क्रतजु आये: पुनि तिन नंदनीरमहपाये: ग्र...
...नंदतिन रूतनिगादे: करषिजुगलकरजलतें कादे॰ पलमहबरन...
...केपुहचाये: पुनि सेवक इहानंदपगाये: सेवक आरत बचनसु...
...ये: इह क्रस्नपह आतुरआये: बिरह बिलापकरे ब्रजबासी: अ...
...क्रस्न ब्रजहित अबिनासी: कारनपूछि क्रस्नकरुनाकर: बरनलो...
...ये बिस्वंनर: सनमुषआं निबरनसनमांने: पूजाकीनी ब्रहम...
...नें॥ बरनवाच॥ सबै दीनताबरनसुनाई: नयोक्रतारथ दरसनदेवा: सदाइऊ पदपंकजसेवा: प्र...
...थमनामिरमपिछांन्यों: इहानंद अनजानेंआंन्यो: यहअप...
...मरु अबिलेसुर: गोबिंददीनदयाल जगदगुर॥ कबिरु॥ पु...
...ंग नंदपुहचाये: इहालेक्रस्नयोषमहआये॥ नंदवाच॥
...री ब्रहम निगउपाला: परमातमपूरनप्रतिपाला: सकल...
...नंदसुनाये: लोकपाल इहि बालन वाये॥ कबिरु॥ गो...
...गोबिंदगुनगावत॰ प्रभुपोरुषकहिके

रहौ॥ तातछिनआयो बरनतैं, इहांलये आनंद : हरखि लगाये मात हीय : कं
सकवरसुषकंद॥१॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसमसकंधे
नुसारेण भाखा बार हट नर हरदास नवि रचित॥ बर्णननंदमे
दनो नाम॥ अष्टाविंसत्तमो अध्याय॥२८॥ अथ पंचाध्याइ॥ कं
बित॥ सरदकाल निसि सुषद : बिमल कुसुमीय सरोज बन : बिबिध
बरन सोरभ बिसेष : कुसमित लये कानन, येकाकी उद्यान इहां
नमोहन आये : नंदनंदन आनंदकंद : तब बंस बजाये : सुरबेनजु च
गे दोरि सुन 'अगम गमन तेउ तरीय, बस प्रेम नेम बिहबल बिकल
सकल चली ब्रजसुंदरीय॥१॥ छंद छैअखरी॥ कोउ अंजन मंजन
अनकीनी : अरु कोउ अहार बिबहार अधीनी : कोउ पितमात सती जन
ई, अधसीजनदीने उठि आई : इहां कोउ धेनु दुहावन आवत : धरि
पयपात्र धरनि उठि धावत : छाडे पय कि उफलत धराये, ते अनज
तनगये उफनाये : कोउ अरधा लषनकीनै, कोऊ दधहि जावन
अनदीनै : कोउ कुचपान बाल अनकीनै : दीपक अरु हुचे को बिनुदी
नै, इत्यादिक सब अखिल काज : कोनि गनै छाडे अहकार ज : इहिगति
प्रेममगन बन आई : अति आतुर मन मैं अकुलाई : बिहत कुटंब
मातपित बरजी : तउ न रही जे पैपति तरजी : बिकरपाट जटिकत
बिरोधी : करि हाहार बदीनति कीनी : दुष्टगोप पति जानन दीनी
प्रेमबिबस तइ जानन पाई : अब त्रीय प्रान तजे अकुलाई : करि
सोई ध्यान धारनो कामनि : गई कृस्न महमिलि गजगामनि॥ कबित
गनो प्रथम मने अनुराग, चित संग बिलगीय : प्रेमबिबस संकलप
भावलि हि निद्र लगीय : तनसुषीन बिषीय निवृति तह त्रीयान
सावे : मिलि अनंग उदमाद इहां प्रमुरछा आवे : पावे जु प्रान पंच
तपे यह अस्तगति अंग की सुरसिधक हतनर हरसु कबि : एहसद
सा अनंग की॥ छंद छैअखरी॥ मिली प्रथम जे रोकी मंदिर : यह कछु
प्रेमतावअपरंपर : आगे चली सुपूछे आई : आतुर जदपि मदन अ
कुलाई : इहां मदनमोहन अवलोके : रहीए करगपलक रोके
[illegible] ३॥ तलेजु तुम आई ब्रज भामनि : कारन कहो आगमन काम
नि : ब्रज है कुसल ग्वाल सब गोधन : अब रहि समय भयो कौ आवन
कठिन निसा उद्यान भयेकर : निकसे काल ब्याल रहि अवसर जो त्री
य चतुर बड़े कुल जाई : भ्रमन निसा बन कवन भलाई : तुम हि कुटंब

सुषोजतनति: अनपायेसु मउपजतयाति: उरलननवतसोनत्रिसिदे
षी: वेगजाऊ अवनुवन विसेषी· वेदविदितरिषवरयरवांनी: वि
नतापतिदेवताबषानी: पतिसेवा हितसोकरिपारी: नियतलहेसो
तद्गति नारी· जऊ जोगीषलजरगजवारी: वामनवसनदृविन
चारी: विगुनविरूपविरागविसेषी: निंदकरेवदुष्टद्विजदोषी· द
याहीनदुरमतिदुरवादी: वैसक विसनदरिद्रविवादी: कलह
कुटिलक्रूरकम कातर· पपआपहतपतिकुपातर: अथअलसअ
गहीनअनागी: आतममदअनषिदसुषतागी· कृतघातकक्रत
चोरकुकरमी: घूतघूष सबआदिअधरमी: नारिनथापतिजेपति
नांहीं: महाकुलछनयेजिनमांहीं॥ दूहा॥ परमधरमपतिब्रत
कों: पतिसेवाफलपार: पतनीपावतसुषपद: साषीवेदसुनार
॥१॥ गोपीवाच॥ हा हा हा ब्रजनाथहरि: उचितवचननहीएऊ: ता
तेअसरनसरनतुम: देवनउतरदेऊ॥२॥ कबितु॥ उरकंपत
रुकतअधर: दरतनयनजधार: गदगदसुरगोपांगना: बाढेस्वास
बिकार॥३॥ गोपीउवाच॥ परपत्नवनवनुवालिषत· बोलीसहतविवे
क· तुममतितुमपतितुमहितिति: अंतरनावजुऐक॥४॥ छंदपधरी
ये नरईमगनतुममांऊ आर: सुतकंतअरु हछाकेसुतार: जगदीसक
हिअवकहांजाहि: निसेषचलतकऊचरननाहिं· उपजोजुत
पउरमदनआर: सुनहिहसीविकुरुवोसुनार: नातरियेविरह
अगनिज्वाल: मिलिहेहदगधव्हेसमतल: मनजोगध्यानधरिमूलमं
त्र: सबतुमहिमांऊ मिलिहेसुतंत्र: तवरमाउपासतपदपुनीत· हमसे
वतहैंवनवसिविनीत॥ पदरजतवतुलसीनदीप्रेम: निहचैहमपारी
सहतनेम: करिकृपाहमहिप्रनतपाल: दासिकाखावकरियेदया
ल· ऐसीकोत्रीयात्रिकुलोकमांहि: तवमुरलीरवमनजमिनताहिं
सवअंगअंगसुंदरसरूप: रतिरंगरमतमनमथनरूप: इहांदीनव
चनसुनिकेदयाल: करुनानिधानप्रभुप्रनितपाल: बिनताविला
सकरिमहावीर· तहांआयेदिनमनिसुतातीर: रतिकरतिविविध
रसरीतिरंग· अवलोकिहासिकरपरसअंग: विधिविधिविलासवि
नताबिहार: करित्रिषसकलजसुमतिकुमार: गोपिकारीफिरहर
वेनुगांन: गरविष्टनईअतिरतिगुमांन॥ दूहा॥ इनकेमदमोच
नअर्थ: नरतनछदमनिदांन: हितजुततबेअदिष ... रिन

येअंतरध्यान॥१७॥ नरहरप्रभुकेतबलिपुन: इछाअगमअ
पार। बिलपतिछांडीब्रजबधू। ऐसेचरितउदार॥१८॥ इतिश्रीनरह
रतेनहरिचरितेदसमस: कंधानुसारेनामबारहदनरह
रदासेनबिरचितं॥२९॥ कबित्त॥ दुहा॥ गरबबिगतगोपांगन
धरितरमोहनध्यान: करतनईलीलाकृष्ण। जथासमयजी
यजांन॥१॥ छंदउधोरा॥ गतिहासजपनगान। अवलोकित
मवतांन। मिलिपरसपरतुजमेलि: सबनईबेजतस्यांम। बनबदतबि
रहाबिरांम: सोसकलब्यापकस्यांम। अनन्निननिनअकाम: नवनतअ
तरनाव: सबमांझबसततसुभाव॥ गोपीबधावहजांनिपूछनआर
हेब्रछबनघनराइ: सोकहूदेषेस्यांम: बिललातत्जिगयेबांम: हेतु
लिसिकाप्रीयतोहि: मेमलेगयेमनमोहि: हेद्दथीपुनिप्रबीन: क
मतीनबामनकीन: रहअग्रधरिबाराह: उधारिसलिलअथाह: येई
कृष्णनगरेआर: बसुमतीदेऊबनाय॥ कबित्त॥ तेसकलकरमसुत
त्र: ब्रजबधूकरतबिचत्र:॥ छंदपद्धरी॥ अषिलेसबिस्वब्यापकअ
नंत: तहांतगोपिकास्तदयनंत: बनओरनिकरतरओनिबीर: इ
कप्रेमबिवसजांनीअधीर: बालिकासुपेलीनीबुलाइ: लेगयेकृष्ण
तिहिसंगलाइ: सोलीयेफिरतअछाअनूप: बनबनबिहाररतिकांम
रूप: योंफिरतश्रमतनईबालयेह: दिनतुछमहासकुमारदेह: सो
चलिनसकतअतिश्रमतअंग। आपुनउगरहलीनीउछंग। अनेककुस
मइहांबीनिआंनि: प्रीयगूंथिप्रीयाकबरीसुपानि: तुजमेलिपरसप
रआसनाइ: सोईचलेपथदंपतिसुनाइ: आयीननिहारतबदनआप
बिस्वेसबिषमभनमथबियाप: गोपिकाकरेतिहिप्रतिगुमांन: आ
धीनतयेमोहिछांडिआंन: कृष्णयहलिष्योत्रीयगर्बकीन: प्रभुयये
छांडितासुप्रबीन॥ छंदउधोरा॥ वेअवरगोपिउदास: प्रभुद्द्छां
डिप्रकास: इहांभ्रमततेत्रीयआर: पतिचरनपथतिपार: बनआदिचि
न्हबिसेषि: इहांदेषिअनुलअसेष: येचलीतहीअनुसार: पुनिचर
नचारिप्रकार: देकृष्णकेपददेषि: अरुउनयत्रीयअवरेष: पदजुग
तिजांनिप्रमांनि: उरबढीरूलअमांनि॥ गोपीपरसपरमंत्र॥ बड
गकोउयहबांम: संगलयेजातसुस्यांम। निसेषहमअपमांनि: पेत्रीय
येकप्रमांनि: ब्रहतजोगेपीयेक: बनभ्रमतसोरबिबेक: बिनतासु
करतिबिलाप: यहाएकबनघनआप:॥ दुहा॥ बिलपतिदेतस
घनबन:। बिनतानिहबलबानि: यासोबिरहबिआदअति: इहमि
लीसबआंनि गावतगुनगोबिंदके: त्रीयगरजिमुनातीर: इहांनि

हरत आगमन: अंतर बिरह अधीर॥१॥ यह छांअ मिले सखी: लील
अगम अगाध: क बिनर हरते सीकरी: सुनजथा सुभसाय॥२॥ इति
श्री भागवते महापुराणे दसमस्कंधानुसारणे भाषा बार हट नर
हर दासेन बिरचिते॥ गोपी कृष्ण प्रेम॥३०॥ सोरठा॥ नां मनि
आसा लेग: सोविसो विनई बिन सकल: उपजो ताप अनेग: बिरह
बिथा बाढी बिषम॥१॥ छंद कधो पीय बदन कमल प्रकास: अलि नयन
सोरत आस: रद छद न सुधा सरूप: पीय दे फल अनूप: सुन बचन
अहूत स्वाद: प्रभु कर अवन प्रसाद: नव दिष्ट नेह तरंग: दुलगेम
न अनेग: भुव भंग भृकुटी भाव: दुसा विबस कृतदाव: कर जो नि
लेबितलात: कुच परस कर अनुकूपाल: तुम सगुन स्याम सरूप: आ
लिंग कर अनूप: प्रभु चरन पंकज प्रेम: मिलि सुर नि संग सनेम:
बनि सी सकाली माल: नव चरन अंक कृपाल: सोई चिरन मम कुच
संग: प्रभु कर अपरम प्रसंग: आलप हासि अनेक: प्रभु दिष्ट नेह बि
बेक: रस रह सिबि बिधि बिलास: अनेक पूर आस: तेई नये फिरि बिप
रीत: प्रभ उपजि मन न थे नीत: सोई बिरह अंतर साल: प्रभु हरउ मिलि
सुकृपाल: दृवगर लज लखन यह देखि: ब्रजन लये राखि बिसेखि: अब हम
हि मारत हाथ: बिनु ससस नकत ब्रजनाथ॥ दोहा॥ इहि बिधि कर
न बिलाप अति: उर धस्वास उस्वास: क बिनर हर प्रभु दरस की: आ
ति बाढी उर आस॥१॥ करि अपमान कुरंग को: बनआरी निसि बाम
कपटी तुम बिनु अवर को: अबलान जे अकाम॥२॥ महा सघन उद्या
न महि: बिलपत छोरी बाल: कही यत बेद पुरान करि: नीति निपुन
नंदलाल॥३॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसमस्कंधानुसा
रणे भाषा बार हट नर हर दासे न बिरचितो ३१ गोपी परस
पर बिलाप॥ दोहा॥ करत मनोरथ मिलन को: बिनता बिरह बिराम
चित चिंतत जों चातुकी: स्वाति बुंद घन स्याम॥१॥ प्रगटे दछा आपुनी:
इहि समय अखिलेस: गोपी मंडल मध्य गत: सुंदर स्याम सुबेस॥२॥ छंद
उधरा उहस कल सनमुख आइ: प्रभु परम निधि प्रीय पाइ: कोउ कर
न कर करथाइ: कोउ मिलत मद सुसकाइ: तह लेत कोउ ताबोल ब
अधरत रसमय बोल: सुन कुल चरन सरोज: आलिंग करत उरोज:
भुव भंग भृकुटी भेद: अरु दिग कटाछि अभेद: कोउ धरत उर प्रीय
ध्यान: दिग मूंदि प्रेम निदान: नये बिरह टरि उर लोम: कृत उदित
अंग अंग कोम: ब्रजगोप बिनता वृंद: निसि जोन्ह मिलि

पारविसुतातरगाइ : सरवतातिसुषदसुनाइ : बनकुमदफूलिसुबास
बहति त्रिविधिपवनबिलास : मधुमत मधुकरमाल : रसलबद्दमत्तर
साल : बिनतानितनरबास : प्रगुलये प्रेमप्रकास : तेईविसनपीग बना
इ : सुषबेगिस्यामसुजाइ : जेगेंद्रउरजगजीव : जेवसतदेवनिदेव : सो
ईसश्वराजतस्याम : जुवसनावनिरजनाम : तेईकृष्णजमुनातीर
बिचगोपमंडलबीर ॥ गोपीवाच ॥ नहबिचनकहिब्रजबाल : बसरा
षतरकबिसाल : हितसबदअमरषहास : पुनिद्विष्टचक्रप्रकास : प्रगु
कहानीतिप्रकार : बसकपरछाडिबिकार ॥ दोहा ॥ कोउनजतेकहत
जे : कोउनजतेननजेत : नजतेअनजतेअनज : कोहेंसोधोकेत
॥ कृष्णवाच ॥ हसिबोलेयहसुनतहरि : नागरिसुनऊनिदान : नतजुप
छेमोहितुम : पेसोईकऊप्रमान ॥ छंद पधरी ॥ नजतेकहजोपेनजे
नाइ : कृतवहआपनारथकहाइ : सुरतीज्योंनेजनपाइसुध : देहै
तहनंतरततोसुध : नजतेननजेकोउकिऊनाइ : क्रमउदासीनसो
पेकहाइ : नहीनजतनजेनजअनजमान : निरधारआरिविनके
निदान : सुनियेंऊमानसीप्रथमसार : हितपूरनकामसोद्वितीयहार
कृतयनपेनीजोसोकहाइ : अबत्रकृदयचोथोसुजाइ : इनचऊभां
तकैनहीअनीत : गोपीयऊनकऊरदगीत ॥ कवित्त ॥ पतिब्रतनि
पुनयहसमयपार : सबहसीपरसपरत्रीयसुनाइ : जगदीसगोपिका
मरमजानि : प्रगुतनबतायेचक्रपानि ॥ कृष्णउवाच ॥ पूरनदरिद्रो
निधिहिपाइ : जगबढेगरबसबभूलिजाइ : निधिनासहोइजबयहनि
दान : पुनिअरकेताहीमांऊप्रान : तातेतुमकोनोपरिस्याग : सोसमऊ
लेऊगोपीसनाग : ममहेतलोधितुमकुलम्रजाद : मनबचनकरमकरि
अप्रमाद : हितजानितजीबननिगुरहाइ : करिबोविष्यादताकोनको
इ : द्विलोकबेदसेकुलउरंत : तुमतोरिमिलीमोकहतुरंत : असोष
कारताकोप्रमान : सोपेनहोतयहसमान : सोअबेतिहारहीसनो
ष : मेकृष्णअनरनदोषमोष : इहिगेरजतनकछुनहीआंन : यह
परमप्रीयेमानऊप्रमान ॥ दोहा ॥ सुनिरस्यादिकस्यामके : बिनताब
चनबिनोद : उमगेप्रेमसमुद्रउर : पूरनप्रेमप्रमोद ॥ इतिश्रीलगन
लगहपुराणे दसमसकंधानुसारणे नानाबारहटनरहरदा
सेनाबिरचिते ॥ कृष्णगोपिकासमागमेनोम ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ कृतञ्ञा
रंवजुरासको : सजिमोहनयनस्याम : सरदनिसाराकाससी : उदितन
येअभिराम ॥ १ ॥ हेनिकुंजमंडलतहां : बिन्नमलताबितान : सीत

ंदसुगंधसुष॰ पवनचलतहितआंन।।३।।रंगभूमिराजतसुचरःप
नबिबिधिप्रकार: नामनिमिलिनिरतनत्तये॰ मोहननंदकुमार।।
।छंदपधरी।। ग्रीषमध्यसांमसुंदरसरूप: अरुउओरबिनताअ
।प॰ इकइककान्हगोपिकाऐक: अवलंबकरनिकरछबिअनेक।
सबदेहेतबिलासरास: अमरनिबिमानछायोअकास॰ सुररागनेद
।तिहालसं: अनेककलासंगीतअंग॰ नरकुचनितबकरिबैनचारु॰
नुरमनसंगमतिदृष्टिचार: नूपुरकटिमेषलवलयनाद॰ संमिलिन
नुडुलितमलसार: मिलिनीलकनकबनिकानिमाल॰ बनिमनउ
रासमंडलबिसाल: श्रमस्वेदबुंदमुषहासमंद: अरुउठतबासबासन
अनंद॰ चमकतकपोलकुंडलसचाल: मिलिचंचलहारावलीमाल
उरिअंचरउघरतउरजओर: जनुदरसदेतजुगसंतुजोर: मिलिसु
मडलदमनुतडितमाल: घनमओरासमंडलसुभाल॰ नारायनमो
कमलानिहान: बससकलगोपिकाप्रेमबान॰ सुरत्रीयाकुसमबरखास
हासं: पुनिबजेअमरदुंदुभिप्रकास: गंधर्व मिलिकिंनरकरतगान॰ अ
पछराअनेकरसआंनआंन॰ अवलोकिरासमंडलअनूप: सलिलयोहआप
नसरूप: गातिपंगनयेअहगननिसंग॰ नहिचलतथकितरथरहरितिप
ग॰ निसिबदीयहेकारननिदान: पुनिनइअयनपूरनप्रमान॰ रबिकुल
देहतेतेसरूप: अबिलोकितितीगोपीअनूप: ऐकहीबारसबहिनअ
नेद: मिलिदयेमदनमोहनमुकुंद: हेऐकजदपिनिसनिराकार: अ
कूरुरचेतदपिअपार: अषिलेसआपइंछाअनंग: येकतेअनंतअ
नेकअंग: श्रमस्वेदबुंदक्रीडासमंद आपुनहरिबूंछततरनिअंग॰ र
हपेलसहतरमनीउदार॰ बिस्वेसआइजमनाबिहार: जलमांझ
सेलेजूबतिजूथ: बारनजोंमतकिरनीबिरूथ॰ अवगाहकेलिज
लतटनिअंत: कढिआयेउपवनरमाकेत:।।१।।दहा॰ ऋतुराजकेमालेभ
ससहत: सरिताकरसनान: सब्रनन्तयोमागसिर: बरदीनेंनगवां
३।।१।।सरदनिसाराकासमय॰ विभ्रमरासबिलास: याकोफलपू
रनहहं: पायेप्रेमप्रकास।।२।।छितगोपीबसत्राहरन: कृष्णप्रथम
जोकीन: अबताकोअभिलाषहं: देवकृपाकरिदीन।।३।।परीहत
बाच।।इहांपूछोसुषदेवसों: रहसिपरीछतराइ: हेनारायनधरम
हित: संततबेदसहार।।४।।तिनारायनअवतरे: अवकैसोअवतार॰
कुलजादवबसदेवके॰ भूमिउतारनभार।।५।।अवलोकनपरत्रीयउम
ग॰ परसनबचनसप्रीत: साधनकोअनुचितसदा: यहतोपरमअनी
ना।६।।मुरलीसुरममोहनी॰ पटिपढिमंत्रप्रयोग: अधबनि बंन

येनअबल: सोनधरमसंजोग॥१॥कहीयहजोगेस्वरकृस्न: तेजोमयज
गतात: अैसीकेसेंआचरी: बेदबिरोधकबात॥२॥मनहिबिचारिबि
चारिसो: असंतावनायेह: तुमकरिमिटिहैजीवतें: दुषदारुकसंदेह
॥३॥श्रीकृस्नकोबाचा॥छंदउधोर॥ नृपकलोनीतिनिदांन: यहसाधम
नसुग्यान: पूछेजुराजप्रबीन: द्विजब्यासउत्तरदीन: येजोतिमेंजग
दीस: अरुकरनकारनईस: ऐईसअजतपालतसंत: मतयहैबेदमह
त: इनकोनपुनिनपाप: अनबिद्यअनगुनआप॥१॥ छंदपधरी॥अ
गनिजोसरबतबीअभेव: दाहकनतुसुरमुषअगरदेव: बिबहारब
दबिद्याबिबेक: अगनिबिनुकरमनहीहोतयेक: आचारकरजे
पेअसेष: बाप्योनसिवहितवुबिषबिसेष: थेस्वयंजोतिपरपुरु
षजानि: पेकरमदोषानिनहिंनप्रमानि: कछुकरेअरईवतकरम
कोइ: हहहेततासतेनासहोइ: हेतलीबुरीजोग्रहेहाथ: नियत
नउकृस्नत्रैलोकनाथ: अपवित्रानअगनिहिअकाल: तिउलेक
तदपिबंदितत्रिकाल: आचरेहलाहलकोउअग्यान: निसतनास
पावेनिदान: श्रीकृस्नमहाजोगेस्वरेस: रहिषेलमदनजीत्योअसेस:
आगेजोबियवासबअमान: निरदेहकृस्नकीनेनिदांन: योंकरीअतुल
लीलाअनंत: सजिमनुजदेहउधारसंत: गोपिकागईसबआपग्रेह
निसचेमनबंछितसहतनेह: यहअजितदेवमायाअमान: जामो
नमरमकारूसुजान: निरगमनआगमनगोपनारि: समझेनकुस्म
नेबुधिसार॥५॥कृतब्रजलीलाकृस्नकी: अद्भुतचरितअ
नेत: सरथाजुतगावेसुने: सुषपावेतवसंत॥१॥कबित्त॥बेनबजाए
निसिबस: कृस्नइछायहकीनी: अषिलचितआकरषि: नारिब्रजबो
लिजुलीनी: बिभ्रमहासबिलास: रासरसजुमदरचायो: नयछ
मासनिसितई: रहीअद्भुतउपजायो: क्रीडाबिलोकिश्रीकृस्नकी
आनंदेषिस्वरअमर: सुतदानियहैनरहरसुकबि: पावेमुकति
प्रसादपर॥१॥इतिश्रीभागवतमहापुराणेदसममसकंधनुस
रलेनाबार ६८ नरहरदासनबिरचित॥ रासक्रीउ
बिनैदोनाम॥२२॥कबिरनचाछंदपधरी॥सकुटबनंदअ
पनेसुनाइ: इकदिवसअंबिकाजात्राआइ: सरसतीसरितकरिकि
रिसनान: बिधिजुकतकरीपूजाबिधान: दिवसेसअसनमितन
येदेषि: बासरहेगोपपतिहिगेबिसेषि: उमावासदनतीरथअन
द: निसिकरसेनतिहिगेरनद: रहामहाएकअजगिरअसंत

ज्वोग्रतिआयोतहान्तमंतः नंदकहंअसनलाग्योनिसेकः इहाबने
आनिबिधिलिषतअंकः पुनिनंदपुकारेकेष्टपाइ। हाकृस्नकृस्नकरि
येसहारः यहसुनतगोपगायेअपारः पेनगकहंकरेउलमुकस
हारः इहांकृस्नआइत्रैलोकईसः सोत्र्योलातग्रहिफिआसीसः पूनु
चरनछुवतग्रहिगयेपापः अपनोंपदपूरनलहोआपः सोछांडि
होअजगरसरीरः धरिदेहदिव्यथाढोसधीर ॥ सुंदरसनना ॥ बिद्याध
रसोंकृस्नमहाबीरः सुदरसननांमराखासधीरः मोकहंजोपूछ्योतुमसु
रारिः वृतांतयहेसुनियेबिचारिः देष्योमेंसुंदरआपदेहः सुनरूपवि
षबढ्योसनेहः तपसाधअमुनिसरसतीतीरः समरजितत्वयेजरज
रसरीरः इकदिनसुनिकस्योतहाआइः सुनरथारूढअपनेसुनाइ
तेनदुरबलतापसदेषितासः हमकस्योतहांमेंप्रगटहास॥ अगिरा॥ रिष
कह्योअंगिरातरिसाइः कृतदुष्टहोकृतसरपकाइ॥ सुदरसना॥ ततका
लहीमेंजोनितासः तुमतेमेंअबलोंजुतउदासः अबजनऐउदयमम
करमआनिः पदसीसहन्योमोहिचक्रपानिः उपछुद्योआजमोहिदुष्ट
देः अपनोपदपायोप्रगटयेह ॥ कवि॥ अनुकृष्नचरनबंदनप्रमा
नः सुनदेहपाइआयोसथानः अवलोकिकृस्नदेवतअनंतः सब
हरषेव्रजजनसाधसंतः करिसकलदेवजात्रासकांमः धीरजसोंआ
येनंदधांम ॥ छंदऊधोरा॥ इकदिवसजुतबलदेवः बनआइकृस्न
अजेवः कृतउदेससितिहिकालः बनफूलिबिबिधबिसालः म
नमुदितभ्रमिअलिमालः सुनकुंजकुंजसजोगः पुनिवदतप्रेमप्रयोग
इहाकृस्नबेनुउदारः बजिसमसुरइकबारः सुनिगोपिकारसरंगः अ
तितीरबिबसअनंगः जोबिसतभूषनजोरः आगउकतअंबरओरः न
हीप्रेमबिहबलतारः सोजानिपरिनसुनारः इहिसमयआसुरएक
कृतदुष्टकीनेटेकः नरिबाथलेचल्योतांमः निजसंषचूडसनाम
कीयत्रीयनताहिपुकारः हाकृस्नदेवउदारः जयसबदसुनिगउज्ज
पः उठिलगेसंगअनूपः जबकृस्नपुहचेजारः पुनिचलेअसुरप
इः मुष्टिकामारेमूलः तिहिलिगेधरनीतूलः पापिष्टछांडेप्रानः मह
परेपरबतमांन। सुतकृतीमनितिहिसीसः सोईकादिलीजगदीसः म
निकृस्नसोसनमानिः अग्रजहिंदीनीआनि॥ इतिश्रीनरबृवंते
महापुराणेदसमस्कंधानुसारेनाभावारहटनरहर
दासेनबिरचितं॥ संषचूडबधोनाम॥३४॥ दूहा॥ बीतीबि
बिधिबिलासबनः सबनिसिस्यांमास्यांमः बि
तः बासुरबिरहबिरामः॥१॥ छंदपधरी॥ गो॰

पाल: बकुसषासंग ब्रजगोपबाल: बसबिरहपरसपरकहतबाम: सुं
सषी अबेयहस्त्वरूपस्याम: करिबामबाकु ऊपरकपोल: धरि अथस्वेन
अति तन अमोल: करपल्लवपूरित छिद्रकीन: पुनि बंसबजावत अति
बीन: सुरबधूजदिपिनर नारसंग: अति होतमुनतबिसमो हुअंग: ते
नबिसतबसनसुधिनहिनतास: बंसीधुनिसुनिन्हलतबिलास: त
कवनमात्र हमम नुषदेह: सुनि होतबंसधुनिबसमनेह: बनजंतु
सुरलित जिबन बिलास: अहिरहे रंवबिनपत्रयास: चकुओरग्वाल
करिआतचित्र: बांसुरीबेत्रकरधरि बिचत्र: धरिमोरपछा सिरगुछध
रि: सुतपुहपमालउरधरिसंभारि: जलजंतबिहंगमबिबिधिजं
नि: यहरूपबिलोकतनिकटआनि: इस्यादिकृस्नकेचरितअंग:
सुधिकरिदिनबितयेप्रेमसंग।। ८०।। सुरत्नीरजरंजितसुनग: स्या
मसुगोधनसंग: संध्यामुषआवतसुयह: अदभुतसोनांअंग।।१।।
गोषगोषगोपागना: चदिचिढिचितवतचार: बिछुराजैसेकरमब
स: प्रेमसहतनिधिपार।।२।। इतिश्रीजगवतेमहापुराणेदसम
तकंधानुसारलीलाबावरहटनरहरदासेनाबिरचितंगो
पिकादिवसबिरहनाम।।२५।। कबिरुवाच।। छंदपधरी।।
आसुरअरिष्टनामाअनीत: कृतदुष्टकुटिलकपटीकुचीत: रही
कृस्नमहामहिमाअसेष: सो सहिनसक्योबृजसुषबिसेष: ध
रिवृषनरूपआयोसधीर: बपुदिर्घककुतिगरअंगबीर: ष
षअरुनकुटिलतीगूलचाल: किंचतसमूत्रमतिमोजुकाल:
आकृतअत्यंतमुषषरिकआर: नयकारगरजकीनोंसुनार:
नईगरतआवसुरस्तीसत्रास: त्रीयगरतगिरेसुनिसबदतास: पु
रयेभितहाबृजजनपलार: सोदेषिकृस्न निकसेसुतार: षिति
षनतषुरनिनतचदीषेह: अवलोकेमोहनदुस्टयेह।। कृस्
नाबसरोसकृस्नबोलेबिजेत: दुस्टनिकदीप्यादेकदेत: वृष
नाथमजोकृसमरबीर: रनआवपचारतकृसधीर।। कबिरुस
हसुनतअसुरतठितासकोप: कृतपूंछउरधधायोसकोप: ध
रिश्रंगउनेमोहनसधीर: बसुमतीपछास्योमहाबीर: इहलयेश्रं
गदोउउषारि: मार्योसिरहीसिरसोमुरारि: पापीवृषनासु
रतजेप्रान: मोहनग्रहआयेबिजयमान: वृषनासुरकेदेषे
बिनास: पुनिआयेनारदकेसपास।। नारदबाच।। मुनिकहे

कंससोंमतभेत्र॰ तहां मिलेश्रां निसुरकाजतंत्र॰ रिसकरिवुमकंसा
हतीरार॰ वहमहरिजसोदागरत्नश्राइ॰ रोहनीपुत्रबलदेवराज॰ सोत्नयोनंद
कैग्रहसकाज॰ देवकीगरत्तजयोक्रस्नदेव॰ नवसुपैनजांमैतुमक्रनेव॰
हेडुलकरिपग्योनंदग्रेह॰ सोपोष्योजसुमतिश्रतिसनेह॰ जोहतीदेवकी
सुताजांनि॰ वहमायाधरिगईहांश्रानि॰ श्रनसमझि बालहसाश्रगुनि
पुनिकरीसुपेतुमश्रप्रमांन॰ बसदेवपुत्रहैमहावीर॰ सोश्राहिनंदके
ग्रहसधीर॰ निहचैसुकरहुतनंदनंद॰ वेतोहैजादवकुलश्रनंद॰ बंसद
वनंदहैमित्रबीर॰ सुतराषेलेंउजेमहसधीर॥ कबित॥ यहसुनतज
योरिसकंसराइ॰ धरिधिगश्रसुरश्रायोसुधाइ॰ बसदेवमूंमकाटत
बिताइ॰ सोबरज्योनारदमुनिसुताइ॰ देवकीसहतकरिमहाद्रोह॰
लेजरेबूऊरिबसदेवलोह॰ स्वस्थानगयेनारदसकाज॰ करिसिथर
हासबदेवकाज॰ इकदैतनामकेसीश्रसाथ॰ बिपरीतकरमथरथ
रमबाध॥ कंसबाच॥ हैक्रस्ननांमसुतनंदग्रेह॰ सोहतऊजारतुमनि
संदेह॰ पगयोसुकंसकेसीपचारि॰ मिलिश्राइमोहिसोबालमा
रि॥ कबित॥ इहसाजिसनाबेगेसुताइ॰ रिसरोसनरश्रतिकंस
राइ॰ इहांश्राइमित्रमित्रीश्रसेष॰ बिधिजथाथांनबेगेबिसेष॰ ग
जपालबोलिलीनोसग्यांन॰ सनमांनकस्योश्रतिहिसमांन॰ चाण
रमल्लमुष्टिकसवेत॰ सलतूसलमिलिपरिग्रहसमेत॥ कंसबाच॥
इहांकहिकंसतब्बचनयेह॰ हेरामक्रस्नरेउनंदग्रेह॰ छलुकरित
हाराषेलेछिपाइ॰ यहमोसोनारदकहिश्राइ॰ सोबासदेवहैश्रसु
रसाल॰ करउनकेमेरोलिष्योकाल॰ उनकेश्रबमारनकोउपाइ॰ सो
करऊसबेमेरोसहाइ॰ निरत्नययकमंदिरसुषनिधांन॰ थितकर
ऊरहूश्रबसमथांन॰ करियनुषजग्यसोइहकाज॰ श्रबश्रांनिलेके
मितिहैसकाज॥ कबित॥ सुगफिस्योदिवसउरवटीस्तूल॰ मारन॰
सिसुश्रगपाइरसमूल॰ उगितबेरहायेकोतश्राइ॰ श्रक्रूरतबेलीनोबु
लाइ॰ श्रक्रूरयेकहितकाजश्राज॰ सोकरियेमेरोबुधिसाज॰ येजा
दवहैजेतेश्रनेक॰ इनमहहितकारकतूहीऐक॰ कहरनतोहिराषत
बलेकाज॰ वहश्रांनिबस्योसेजेगश्राज॥ तहांहैदैसुतबसदेवके॰
रामक्रस्नयहनांम॰ इहांजोल्योकरिश्रांनियें॰ बसतनंदकेंधांम॥
॥भ॥ कारनकहिकरबरषको॰ सोनंदादिसमाज॰ इहांसोहगिलेश्रा
ईये॰ कपटधनुषमषकाज॥२॥ कितोकुबलयापीडकर॰ मरिहैं

निसचर यम दूत : कैंस हत्या निकरि मारि बौ । अह दोउ लागे गढ़ ॥ १ ॥ जो जदुस
रह आदि नद : जितेक जादव जानि : करि सब हनि को नास कुल : मैयं हमें त्र
समो नि ॥ ॥ जराअसित मेरो जदपि : उग्रसेन पितु आहि : कछु इच्छा पुनि रा
जकी : तदपि यहीं नाहि ना हि ॥ २ ॥ येतो हति वे हैं अवसि : देव कन्य हव बस
देव : वाकी पुत्री कैं उदर : वाको पुत्र अजेव ॥ ३ ॥ हनि ये सब ही मारि है :
वृष्णि आदि दैवंस : अनकंटक करि आपनो : करौ राज तो कंस ॥ ४ ॥ छंद पधरी ॥
सुसरो है मेरो जरासंध : संबरनरका सुरप्रीति संध : अतिबल बानासुर द्विवि
दवीर : ये संग सखा मेरे सधीर : ये केत्र करो पेस वे आज : सम्हल उषारो सुरस
माज : दंनपति सुनकु यह निसदेह : हैं अन्नि प्राय मम चितय हो ॥ ५ ॥ हलूमी
चर्बं चावन के मरम : अब तोय है उपार : इहां क्वचन अक्रूर यह : सुपेकलोम
मञ्ज इ ॥ ७ ॥ परम मनोरथ आपनो : प्रतिदिन चिंतत ग्यान : सिय असित जु सु
त्र असुर : दैवाधीन निदांन ॥ ८ ॥ सुफलक सुत आये सदन : तहां था पिय ह
मंत्र : तब जैसी नवत ब्यता : तैसे मिलि है तंत्र ॥ ९ ॥ इति श्री भागवते महापु
राणे दसमस्कंधे अनुसारेणा ॥ बार ह हन रह दोसे नाराति ॥ अ
क्रूर गोकुल आगमन नाम ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ अपर दिवस केसी असुर : र
हो वे दाब न आर : प्रात समय रोके नगर : पुरनी पंथ सुमार ॥ १ ॥ का
रन अस्व सरूप करि : दिघ नयन करदेह : पिति हि बिदारत अयखुर :
बेमग च दी सुषे हो ॥ २ ॥ छंद पधरी ॥ नर हयु नितसटा लंबल तास : यह
पवन जल द बिथुरे अकास : नवनील जलद तनबरन तुंग : मुष बिव
रसो षच घरत रंग : या हि समय धेन संग क्रस्न आर : देष्यो सो ईस्वा
र वयर दार : अवलोकि क्रस्न इह निकट आर : जुगलता चलाई बज्र
जानि : आकर षि चरन लीनो अनंग : अरु गगन भ्रमायो असुर अं
ग : हरि दियो डारि हरि कुघ है र : सत धनुष मात्र यह पत्यो सोर : पुनि
उठ्यो असुर कछु चेत पार : थरि क्रस्न समुष आयो सुधार : क दरा का
र मुष मुक तकीन : देषे जु क्रस्न तुज मांझ दीन : कर करी बृद्धि ति हिम
ध्य कार : सो फारे कर कटि ज्यों सुनार ॥ ३ ॥ दोहा ॥ इहां मारे केसी असुर
पौरुष क्रस्न प्रकास : अतिहरषे नंदादि उर : उउ निबजे अकास ॥
॥ ४ ॥ छंद तोटक ॥ इहि बीर नारद आर : सब चरित देषि सुनार : कर
जोरि अस्तुति कीन : प्रभु परम पुरुष प्रबीन : तब रूत नावनरू
प : अद रूत सरूप अनूप : तुम आदि मध्यजु एक : अरु करत रूप
अनेक : जोग सतुम जगदीस : अप्रमेय आतम ईस : तुम बासदे

अबिनीत: जदुदेवत्र यदुरजीत: तुम सरवग्यातमासिधि : प्रभुस्वयंजोतिप्र
सिध: सतपुरुषमायासंग : नवन्नतस्वजतअनंग · सोईरासिकरतसीधार
छोसुआपउदार · यहदुष्टमास्योआज : कीयक्रूलतुम सुरकाज : इहिविधप
रिदिनएक · अरुकरकुकाजअनेक · हतदुष्टमारकुकंस · निसचारकरिनि
रबंस · यहसकलबिधिसमझाइ : अरुगएअ हरिपराइ॥ कबिरुवत्त॥ बन
चरै गोधनबृंद : चलिसंग श्रीव्रजचंद ॥ छंद चौपई॥ बिबिधि प्रकारक
रतक्रीडावन : मिलिसबग्वालबालसंगमोहन : कुतमसेषजथसिसुकीने·
देवग्वालकेउरहकदीने : लालबालकोंचोरलगाए · नवअनेककरत
मनभाये : कछुपसुचोरचलतलेनसकर · पुनिकोउबालहोतरहापर · उप
राजीक्रीडाकछुऐसी · जुकछुकोंमनआईजैसी · मयदयंतकोपुत्रमहा
बल : ब्योमासुरनामोप्रबल · तबतिहिरूपअसुरआयोतह : मिलिगोआं
निबालचोरनिमह · लैलैजाइमेषसिसुलंपट : सोरोकेगिरकंदरसंघट ·
सबहरिलयेकछुबालकसब : तहकृष्णदेषेथोरेतब : प्रभुतबजेएथ्यां
नपहचांनो : जनहिसकब्योमासुरजांन्यो : पुनिलैचल्योमेषसिसुपामर
पुहचेदोरिकृष्णताप२ : पकरिकेबसोइअसुरपछास्यो · मधपसुज्यों
गुष्टाहतमास्यो : परपद्धितकेदरसुषपाई · करि सिलकेनकनधसेक·
न्हाई · पुनि तिहिमोंग्वालसबपाये : इहनेंदनंदतिनहिलेआये · महा
दुष्टब्योमासुरमास्यो · अमरबृंदजयजयतिउचास्यो : इहबलदेवकृस्नघर
आये : संध्यागोधनअंगसुहाये॥२॥ इति श्रीनग्र वतेमहापुराणेदसमस
कंधानुसारणे नाथाबार हट नरहरदासे नबि रचिते॥ केसीब्योमासुर
बध॥३७॥ कबित्त॥ सोरठा॥ आएबसअक्रूर : चितहितदेदबि
नचल्यो : महादानपतिसूर : नीतिधरमपालकनिपुन॥१॥ छंद पधरी॥
सुनरथपरआरुहसाबकूल : सांतरसुमनगतिउपजीसमूल : उरकृष्णद
रसकीबढीआस : बसप्रेमचितउपज्योबिसास : नवचिंततमनमहगरद
नेव : दरसनमोहिदुरलभजगतदेव : अबनाथउदयममभयोआज · क
मलोतेपूरनहोतकाज : अवलोकिकृष्णकोमुषउदार : उनिकेरूप वस
सुअपार · ब्रहमादिचरनबंदितबिधांन : सेवतनिसकमलासाबधां
न : मेरेसिरधरिहैचरनमूल : करधरिहैमोहनसानकूल · ममफिरि
प्रदछनमृगनिमाल · जेहैसबिलयअकरमजाल · अबरीधआदि
देनृपतिओर : धिनराजतिरेज्योगेरगेर ॥२॥ राचेसुदरसान
रंग : जतनकुकारीकनज्यों अहेनरूजोरंग॥३॥ छंदप: · · क
केधोसितअंग:

रतनदेकेयोषआइ : रहासुफलकसुतसातिकसुजाइ : अवनीबिलोकिहरिच
रनअंक : रजलहीमनहुनिधिमहारंक : लेलैरजलावतमुषलिलाट : पेरत
जनुप्रेमसमुद्रपाट : पायेगोदेहतप्रभुप्रबीन : करिबंदनदंडप्रनामकीन
अवलोकिकृस्नरतिउदार : पावैनउदधिआनंदपार : लीनोउठाइअक्रू
रकंठलाइ : सुषरामकृस्नतेरसुजाइ : हैषेजबमोहनबालदेह : अक्रूरत
जोसंदेहयेह : कहदुष्टकंसवहमलाकाइ : प्रभुबालकृस्नसमतानपा
इ : क्रूरकृस्नदिषायोचक्रअंक : सबमिटेरिदयअक्रूरसंक : आकरषि
राहिकिरयेहआनि : पुनिधोइचरनआसनप्रमानि : अतिहरषमिलेतबनंद
आइ : सोकरनलगेबातैंसुजाइ ॥नंद बाक्य॥ नंदपूछिनंदकुसलाततात
हि : वहदुष्टनिकरक्योरहतआहि : केहिभांतितुमहिराषतकुचात-अय
तेनठरतअंतरअनीत ॥अक्रूर॥ अक्रूरकह्योफिरिबचनयेह : सुनि
येजुनंदयहनिसंदेह : अजयोषतजैसेसुनकआनि : पेषततिनतिनआप
नैपानि : हैकेरतपापसेउदरहेत : मानेनत्रासमनकमसमेत ॥दोहा॥ कार
नजीवनराजके : करहिअनरथअनेक : अैसोकंसअसाधयह : हैकलिजु
गमहएक ॥१॥ सबनगनीकेसुतसुता : कीनेनास[illegible] : अैसोमहअधा
मयहि करतराजकेकाज ॥२॥ बसीयतवाकीसीवबिच : पुनिमुषदेषत
प्रात : हमकहंजोपूछतमहर : कहुंकहाकुसलात ॥३॥ नातिनातितेजत
नगति : कीनेनंदअनेक : अतिसुषजुतअक्रूरहरि : बसेनिसासबिबेक
॥४॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधानुसारेणभाषाबा
नवहररहासेनबिरचिते ॥ अक्रूरगोकलेआगमननाम ॥ अठतीसमो
अध्याइ ॥३८॥ कबिकृतदोहा ॥ सुफलकसुतसज्यासुषद : बिमलकरबि
श्राम : बैठेनिकरसनेहबस : संकरषनयनस्याम ॥१॥ मिलेमनोरथ
चितमहं : करिअक्रूरसकाम : मिलिकीनोसंजुतमहत : सबैसपूरनकाम
॥२॥ पुनिपूछेअक्रूरप्रति : बासदेवयहबात : प्रगटसुनावहुइनपति
कुलजादवकुसलात ॥३॥ अक्रूरबचन ॥ छंदउधोर ॥ कहिबचनतबअ
क्रूर : सुनियेबजदुकुलसूर : जिहिबंसकंसकुरोग : प्रभुबदनहतसो
ग : तिहिबंसकीबिख्यात : कहापूछियेकुसलात ॥४॥ कृस्न ॥ पुनिकहे
कृस्नसप्रीति : अक्रूरसुनहुअनीति : ममसातभ्रातामारि : पेबहनसि
लहिपछारि : ममहेतपुत्रनिमारि : पुत्रिकासिलहिपछारि : देवकीअरु
बसुदेव : जरिपगनिलोहअजेव : दुषसहतदुसहदेह : गहिदयेकारागेह
तुम्हनसोंआवनसाय : तबतुसहस्त्रदुषबाय : आगमनकहियेआन

कंमनथाकछूसकाज ॥ अक्रूरबाच ॥ दूहा ॥ तबेकह्योअक्रूरप्रति : सुनियै
सुंदरस्याम : जातेकंसरूजादवेनि : बाढेबयरबिराम ॥१॥ कबित्त ॥ कंस
श्रेह्नारहसकोम · अवचिंततआये : करिपूजाऐकांत · बिहतआसनबे
गये : मुनिकीनोरहांगूढमंत्र · सुरकाजसुधारन · करनकंसनिरबंस ·
निषलब्रजबिघननिवारन : देवकीगरभनवजनमदिन : कह्योमरमरि
पकंसकहं · पापिष्टसुननउरपरजरे · मेलेशृतजनुअनलमंह ॥१॥ कारन
जिहिषलकंस · बिषमजदुबंसबिरोध्यौ : कोउकदेहतिकछुक · सबे
व्रजमंडलसोध्यौ : जरिपाइनजंजीर · रोषराजालेरोके · सबेपरेउर ·
साल · सहतसोईरहतससोके : तवअंतकाजउदिमअषिल : करतज
थाकारनकुमति · बिधिलिषतअंकनरहररसुकबि · मिथ्याहोंहिन
साधमति ॥२॥ बिषमधनुषमषभाज · तुमहिबोलेअतिआतुर : पाट
हसतिकुवलयापीड · रहिद्वारनिरंतर · महामल्लचाणूर · रंगभूमिर
हये : अरुअनिष्टअनेक · सकलजहांतहांसजाये : बलदेवगोपनं
दादिसब · जथानेरसंगलीजीये : करिहैतबरद्धांदेवंकुंल : कृष्णग
वनअबकीजीये ॥ छंदचौपाई ॥ यहसुनिकृष्णनंदपहआये · सबेअक्रू
रबचनसमझाये · बिषमकंसकेमरमबताये : अपनेहितअक्रूर
जआये : करियेगवनबिलंबनकीजे · जथानेरआगेंकरिलीजे : इहांनें
दरनगोपबुलाये : सबेपयानमंत्रसमझाये ॥ कृसज ॥ प्रातप्रया
नकरउमुथराप्रति : जथाजोगकरिकरिसबसाजति ॥ कवित्त ॥ न
ईबातयहघोषअजाई : कहियतचलिहेंकवरकन्हाई : घेरूचली
सोईव्रजमहघरघर : परमदुसहजोयसोचपरसपर : ऐसेंव्रजबि
नताअकुलानी : बिषमदसासुनजातबषानी : सुषहिप्रतापउसा
सनिमोचति : सोचमगनमनहीमनसोचति : कंपरिदयबिगलत
करकंकन · नीरअषंडधारचलिलोचन : इन्द्रीबिकलभईअकुला
नी : पेनपरंसपरजातपिछानी : तारूअधरसोषिकंठकतनअ
रमतिभंगभईगतिअनअन : उपजीबिषमदसाकछुऐसीज
थासुकृबिकहिजांतनजैसी : कहिदुखदबिषादसंकोमोधि
धिकहेंदोषलगावतिबामा : बिस्वउपाजकजगतबिसेषौ : दा
रुनकरमउदयहमदेष्यौ : महाप्रेमअनुतनहूतमिलावत : बिनुअ
तिलोपनयेबिछुरावत : क्रूरबदनछबिमोहकरायें : अबय
हबिरहदुसहउपजाये : साथकरमयेनाहिनस्वामी : जगतउ
पाजकअंतरजामी : जगअक्रूरनामलहिजेसो :

हकरीयतकेसो : हैयेमोहननेत्रहमारे : सोनजाऊ लेदईसवारे : हमबि
चुनयनआंधरीकैहैं जगदिनरातिमहनकसेजेहैं : सषीपरसपरकहिक
हिसोचति : चषअंबुजलधारामोचति : निगमलोककुलकानिनसा
ई : करेरहहमकवरकन्हाई : पतिगतिनंदकुमारप्रवीनें : दासीजथा
मानतनदीनें : तेहमविरहसिंधुक्योंतिरिहैं : कृष्णगवनजोंमुथरा
करिहैं : कृष्णअनाथहमहिजोकरिहैं : तोहमअनमारेहीमरिहैं : क
रिसुथिरासबिलासकन्हाई : बिषमदसाव्रजबधूबिहारी ।सो
ग।। अरनउदयअक्रूर : रामकृष्णबैगरिरथ : सदादानपतिसूर :
लैमुथरासनमुषचल्यो ।।१।। जथासकटरथजोर : मिलिमिलिनदादि
कमहर : दुनउपहारसमोइ : अहयहलैकोनेगवन ।।२।। सबेसषाच
लिसंग : ग्वालबालगोपालके : पूरनजगतिप्रसंग : मिलेकृष्णम
हनैनमन ।।३।। छंदपधरी ।। व्रजबधूकरतगदीबिलाप : उरहनतिक
रनिकरयसतिआप : ज्योंसाहकुदधिबूडेजिहाज : निधिबोरकृपनजैसे
निकाज : संग्रामपरानवपारसूर : मनिबोरपनगपरिसोकपूर : इहि
समयत्रीयनिकीदसायेह : दुषसिंधुमगननइबिसरिहैं : अनदि
छनयेरथध्वजअकास : अबलाअचेतआनीउवास : जसुदाअरु
रोहनिबिरहजोंन : कबितासकहनसामरथकोंन ।। दो ।। रामकृष्ण
रहोहांकिरथ : अरकसुतातटआर : व्रजसमहबिलोकिबर : नये
गटेसनतार ।।१।। बासदेवआग्याबिरत : नरहिकरीनिहारि : क
रियेउपवनमांझकह : बिधिबिश्रामबिचारि ।।२।। निस्नेमका
रननियत : करिमंजनअक्रूर : ज्योंअवगाहतमतगज : पेखिमन
जलतरा ।।३।। छंदपधरी ।। मनसोचबूडिलेनीरमांह : निरधारक
ऊगहरातजाहि : कहाबालकयेसुंदरकुमार : प्रतिजुधमहाबल
तनअपार : येसाथकरमनहीधरमअंग : सिसुजानलीयेकृबिस
ससंग : सोचतचितलेलेउरधस्वास : बिसमयबढिपावतनहिबिल
स : दुषदसाजबैअक्रूरदेषि : बिस्वेसबिरदअपनोबिसेषि : सुनरा
मकृष्णसुंदरसरूप : अवलोकेसोईजलमहअनूप : अक्रूरदेषिपुनि
रथतिओर : कारनसुपैरथपरकिसोर : निरधारदानपतिजल
निहारि : तेईतहामदनमूरतिमुरारि : अवलोकितबैजलथलअन
त : तनगोरस्यामउधारसंत : सुनसुजगपूरबलछनसुजान : सांम
घनबसनतडितासमान · चारिभुजचारिआयुधसंचाल : बनि

विमलकमललोचनविसाल ॰ वनिमाल बिबिधिउरमनिबिकास : हिमनगमे
रूपनमहहास : नागे सत्रं कथित अनुनरेस : दानपतिदेषिमूरतिसुदेस : सनका
दिसिधपरिघदसमान : असनुतिकरतसबग्यानग्यान : ब्रह्मादिरुद्रवसुनागदे
व : सबनयेमुकतसोईकरतसेव : अगिरातुष्टसोईषुष्टसंग : नवकीरतिकी
तिबिजयाअनंग : बिद्यासुसकतिमायाबिसेष : इस्यादिकरतसेवाबिसेष :
हाइहादेष्योअक्रूरप्रति ॰ अस्तुतचरितअनंत : नयो बिस्वासमहामन
सातिकउपज्योसंत ॥१॥ कृस्नजनावसुचावकुल : देवीसकतिउरंत ॰ सोच
न रहांसंतावनां : सबेमिटेभ्रमसाल ॥२॥ इतिश्रीनागवृतेम हापुराणेदस
मतकंधानुसरणे भाषाबार हटनर हर दासेन बिरचितं ॥३९॥ श्रीकृस्नमथ
रा प्रतिगम न ॥ आदिपुरुषअब्ययअमर : नारायन निजनाम : तुमअ
नंतमहिमाअतुल : संतरूपघनस्याम ॥१॥ छंद उधोराप्रतुनाबिकुंठधामं
न : तीरोजउपजिनिदान : नएब्रह्मबेदबिष्यात : तिहिअमलअंबुजतात ॰
कीयब्रह्मजिहिसबलोक : सो बसतअपनेओक : जलअनिलअनलअ
कास : पृथ्वीसततप्रकास : मनमिलतइंद्रीयमान : पुनिअर्थबेदप्रमा
न : तवअंगउतपतितास : पुनिमहाततप्रकास : तवरूपअगमअनंत : सु
नग्यानिबिधिसुरसंत : गुनहीनतैंगोपाल : तुमपरेपरमकृपाल : तुमआपन
रूपगोबिंद : अनबिद्यनिसअनंद : कोउजपततपकार ॰ केउबेदपंथ
बिचार : कोउजपतग्यांनीग्यांन : कोउबिस्नुमंत्रबिधान : सिवमंत्रकोऊ
साधि : आराधइहतउपाधि ॰ अनेकनावअनंत : सबजनतुमकहंसं
त : तुमऐकरूपअनेक : बिसतारबिबिधिबिबेक ॰ ज्यों सघनबादलसा
जि : गिरगिरनिझरनतगाजि : तिहिचलतसरितासोर : हुगितटनिबाहरि
होर ॰ सबसरितनीरसुनाद : येईमिलतजल निधिआर : सबजनत
मारगसंत : येतुमहिमिलतअनंत ॰ अनेकपथअबिलेस ज्योंहोतपु
रहिप्रवेस : सुजकरमकरिकरिसंत : सोतुमहिअरपितअंत ॥ छंदप
धरी ॥ सतरज मिलिनामसप्रकृतिसंग : ऐस्वरीसगुनमायाअनंग : पु
नि ब्रह्मआदिदेत्रिनप्रजंत : ये त्रिगुनमाऊपोयेअनंत : सारणीमनइद्र
यग्यांनसार : नारायनतुमकहंनमसकार : गुनमांऊअबिद्यापरिपु
पाल : सुरमांनवतिरजगसहतसाल : अपनेसोईबिद्याबलअनंत
सहिसुषदुषछूटतपरमसंत : नवसगुनरूपब्यापकसंसार : पुनिसु
निपेप्रतुतिनकेप्रकार : मुणअनलबरनटथीप्रमांन : द्रिगसूरजचंद्रनास
तनिदान : अषिलेसनानिसथलअकास : प्रतुअवनदिसआसाप्रक

सं· पावनजु स्वरूप मसतक प्रकास: इन्द्रादिजु जाचक सुर समान: परमी
पतवत्र कूपार: प्रभु प्रांन पवन हथी प्रचार: प्रतिलोक रेह कलिपतग्र
नि: जलमध्य जथा जलनिधि जानि: मसका ज्यों ऊंबर फल तिमांहि: सब
कै जथा तव तन समाहि: तव रूप सालग्र अवतार ऐह: हो दैवत कारन धरत
कै मीन प्रलय जलकृत बिहार: हे श्रीवरूप मिलि ग्रसुरसार: मदराचल
निधि धरमिथांन: प्रभु कछप तन कीनो प्रमांन: बारोह रूप कीनो बिनीत
रह्य ग्रथरी हथी पुनीत: अवतार उग्र नरसिंघ ग्राप: प्रहलाद राषिलीने
प्रताप: द्विजराम द्विजनजु वलोक दीन: करिको पछत्री कुल छेद कीन र
त्यादिकरे अवतार ग्रांन: प्रभु रूप जये जुग जुग प्रमान: ब्रजमांऊ जयेतुम
बासदेव: अवराम कृष्ण ग्रवतरि करग्रजेव: अवबरया रूप बोधावतार: कलकी
मलेछकुल निधनकार: तव मया करि मोहि तिमुरारि: संसार भ्रमत करम
नुसारि: छूटत नहीं ममतेल हतछेह: अब पुत्र दार दभ्मादि येह: कामोह
मकरिक रिक रतकाज: सुष हेत सबे तेई दुष समाज: ग्रपान तिमरस्याव
रतग्राप: पावन नहीं स्वरूत तव प्रताप: माया प्रपंच जन छुटे मोह ग्रषि
लेस सरन तव लहे ग्रोह: तव नमो नमो करुनानिधान: पुरुषेस जनम
रति प्रधान।।१।६०।। सकति अनंत अनादि सिध: अजित सुरासुर ग्राप
स्वामी कें ग्रायो सरन: प्रभु तव चरन प्रताप।।१।। तुम मोके हकेमनबथैं
राषिलेऊ ब्रजराज: कबि नरहर बिनती करत: ग्रातुर पतित ग्रकाज।।२।।
इति श्रीभागवते महपुराणे दसम मस कथा नुसारगे नाभाबार हर
नरहरदासेन बिरचितं।। अक्रूर स्तुति करनो नाम।।४०।।६०।।
कबिरुवाच।। सुफलकसुत जलतें निकसि: बंदन करे बिसेष: तव
प्रताप महिमा अतुल: सकि न बरनि सुरसेष।।१।। जल महरूप दि
पारज्यो: हरि जये अंतरध्यान: नाचत तहां के अनेक नर: प्रतिमा ग्राहि
प्रमान।।२।। जल ग्रकास ग्रथव ग्रवनि: कछु देष्यो अक्रूर: मन मह ऊ
तेजु मोह भ्रम: देवकस्यो सोई कूर।।३।। छंद: पधरी।। चित वेगत
वरथहि चलायो: रहा अक्रूर निकट पुर ग्रायो: जब ग्रवसेष पहर दि
नजान्यो: प्रभु अक्रूर मन भरम पिछांन्यो:।। कृष्ण उवाच।। सुफलकसु
तग्र वग्रे हप धारो: सुष जुन मंजन वसन सवारो: कहो तहां अक्रूर जो
रकरा। अक्रूर।। रामकृष्ण चलिये मेरे द्वार: करुनानिधि पावन मो
हकीजे: देवचरन मम मंसं तक दीजे: करचनौ दिक परसकन्हा

ई: प्रभुसुरपितरपरमगतिपाई: नयेपुनिजलपदसंन्यावन: पुनि सोकर
तलोकत्रयपावन: प्रभुतवबोलेकृपापरायन: जदुकुलद्रोहिमारिदुष्टज
न: हितुदासिंकरसुषदैन: अतिहितनवमदिरलगैन॥ कबित्त॥ रहा
अक्रूरकेसपैक्ष्याये: सिथलयेकारनसमझाये: स्यामराममिलिग्वाल
बालसंगआसवनवेषविराजितअंगअंग: सरितघाटपररजकसकेल
त: मोटतवारिबांधिपुनिमेलत: ताहीसमयकृसनदृंगआये: पटउजल
बडुरंगसपाये: धोबीतहांकंसकोधूरत: कृपापात्रअहथनकरिपूरति
कृष्ण उ॥ दिव्यबसनयेहमकहंदीजे: लालचजपैमांगिकछुलीजै॥ र
जकबाच॥ राजगरबनहीसमयविचास्यो: रहारजककछुबचनउच
स्यो: हैकछुऔसेबसननिहारे: राजबापकेवनबसवारे: उपजीर
जेरव्यकीइछा: दहीकवनतुहिऔसीदिछा: रनबसत्रनिदेलारकत
औसो: कारीकुटिलस्वरूपहैकैसो: अबजोराजपुरुषकोउगौहे जनप
दमांझबांधिलेजैहै॥ कबित्त॥ क्रोधकीनोकृसनसकारन: दुष्टरजकसि
रधरिप्रोदारुन: जथाजोग्यपटजेसेपाये: पेसबग्वालबालपहराये:
धोबीतजेयारलेरिधुर: परीपुकाररुसहमुथरपुर: नगरद्वारआयेन
दनंदन: निरषतसोभादुष्टनिकंदन: परिषाकोटकंगुरेपूरन: पोलिक
पाटतरलवनितोरन: महाअमूलिकसकेलारक: बसनवनारबलोलेक
रक: दिव्यरूपतिहिवारकरदेषे: बीरउनयछविअतुलविसेषे: पुनिति
हिवसनजुगलपहराये: उनयमदनमानकुबनिआये: देवहंसतसजी
सिरदीनो: कहिनिजसतागकुतारथकीनो: सुंदरस्यामसषासंगसोहन
मालीरहाबिलोक्योमोहन: पुहपसुगंधहारकरिपावन: हेजुबले
कसहितपहरावन: मालीनामसुदामसोचिमन: पूरबकरमउदैन्नए
पूरन: हारकृष्णराममहिपहराए: पुनितिहिसबबांछितफलपाये॥१॥
इतिश्रीभागवतेदसमस्कंधेभाषाबारहटनरहरदा
सेनविरचित्तं॥ रजकबधो॥४१॥ दोहा॥ निरषतसोभानगरकी
स्यामचलेमषसाल: प्रतिद्वारेद्वारेमगर: मंडिततोरनमाल॥१॥ कन
ककलसध्वजदंडकरि: सोभितसबैसुदेस: चंदनपाटकपाटचिरुबं
नेउतंगबिसेस॥२॥ जालीमनिमयकांचजुत: प्रतिप्राकारप्रमान: वि
विधजुतबातायनविमल: बारनदंतविधांन॥३॥ यंत्रप्रवालगवाषिथि
र: विधिपरदाबहुबांन: कहनसमथजुकवनकवि: बरनेनगरबषा
न॥४॥ छंदहेत्रप्रसरी॥ मिलिमिलिबरनचारिमनमोहन: ५।

नेरलेकरतनगरजन: गोषगोषचढिचढिगजगोमनि: मनमंथरूपनिह
रत्तसोमनि: बिथरतपुहपकमलकरबामा: सुतमंगलगावतसुषसांम
कुबज्यानामक्षिबेकाकोमनि: नृपमलयअधिकारनिसोमनि: प्रतिदि
नयसिचंदनपहरावति: राजकाजकरिकंसरिझवति। पात्रत्तरेयसि
चंदनपूरन: गुंजतत्रासमुगंधमुधपगन: कुबज्याआवतराजद्वारक
हे: ताहीसमयमिलेमोहनतहें॥ कृष्ण उ॥ कहांजातितूकोनकहांकी:
तेपेकहोकहाबिधिताकी। कृष्णदेवपूछेयहकारन: चलीजातआतुरआ
वरतन॥ कुबज्या उ॥ देवनरेसकंसकीदासी: सेरंध्रीबरतनसुषवा
सी: कंसकाजचंदनअतिहितकर: मैंयहलीयेंजातनृपमंदिर॥ कृष्ण उ
उ॥ प्रतिकमेहिमहिजोदीजे: जोकछुइछामांगिसुलीजे: प्रभुयह
तुमहीजोग्यपदारथ: करिअंगीकृतमोहिकृतारथ॥ कबि रू॥ चितअ
तिहेतसमरप्योचंदन: बंछितकृपाकरिजगबंदन: पगसोंपगचापि
सुषपायो: अरुकरपल्लवचिबुकउगयो: सूधीकरीबेचिसासुंदरि
महिमातईत्रिलोकमनोहरि: कामबिबसकछुबिगरबितकोमनि
नावसहतपरपकस्योसोमनि: कृष्णकृपायहमोपरकरियें: धाम
पुनीतहोइपगधरियें॥ कृष्ण वाच॥ त्रासदेवहसिकलो बिचषनमो
हिकछुकाजबिअताहैमन: काजसिधकरिजबेसकारन: पुनितव
करूमनोरथपूरन॥ कबि रू॥ धनुषसालजबधसेचक्रधर: अरके
दूरदहाषलआतुर: असुरनिगेलिमधप्रजुआये: सषाग्वालग
नसंगसुहाये: लीलाचापउगरसुलीनों: करेचढावटंकारवकीनों
ततछनअहिकिरनाबाधितानों: तोअतिसबदसरासनतानों: रत्तो
गगनत्तरिधनुषतेगरव: टुटकंसउरपरेदाहरव: कंसकोपकरि
असुरहकारे: मोहनयनुबधेकसोंमारे: धनुषतोरिआयेगिरवरधर
सुषदनंदआश्रमजहांसुंदर: नंदचरनत्तेटेनंदनंदन: कृष्णकृपाति
घिदुरानिकंदन: दिव्यसुधाजसमतिसंगदीनें: कृष्णसबनिमिलि
जनकीनें: सुषसज्याबिश्रामस्यामघन: बसेनिसानंदादिकउपबन
सोयोजदपिकंसमज्यासुष: नावेनिंद्रादहेदुसहदुष: दुरनिमंतदेषे
अतिदारुन: तिहिछिनसीसनाहिउपरतन: ससिनछत्रप्रतिमादी
इदोरसम: इहकनकमयदीसतबित्रम: श्रुतिमूदेनहोतअनहद
सुर: आतमछाहसुछिन्नआतुर: दिष्टआपनेचरननदेषत: इहाके

सुनिसारहीअवसेषत:पुनिकंसासुरनिद्रापाई:देषेस्वपनमहादुषदाई
धरारुद्रप्रेतनमिलिषेलत:मालाजपाकुसुमउरमेलत।कंसतेलतनम
र्दनकीनें:जटिलतिलकरतपापस्तलीनें:दुरनिमंतदुसपनयेदेषे:बीतीरज
नीप्रातसपेषे:प्रातकंसकरिपापसथरन:दीनेगोषबेग्नित्तदरसन
इहसुनतमंत्रीसबआये:बिहितजथाक्रममेचबनाये:इहाबुलाये
मल्लअषारे:निरषनकौतुकबैठिनिहारे:महाबीरजेधामंडलसुर
नगरनिवासीचतुरबरननर:निरतरहरंगन्हमिबनाई:अतिबलमल्ल
मंडलीआई:समभूमिनिरषनयकेसासुर:महादुष्टबैगेबनिमंदिर:मुष्टि
मल्लचाणूरमहाबल:मुष्टिककूटसंगसलतूसल:उपाध्यारनाक
धुनआये:सबमिलिकरतबिलाससहाये।नंदबुलायेसहतगोपग
न:जथाजोगबैठेसबरजजन:बाजनलगेबिबिधिसुरबाजे।गहर
मनऊअंबरघनगाजे।।दोहा।।सिधजयेउरिमसकल।कंसअस्मोसि
रकाल:आतुरपर्य्येदासरहे:लैआवहुनंदलाल।१।इतिश्रीनाग
रवेदसमसकंधेनामबारहठनरहरदासेनबिरचितं।।रंग
भूमिरचनेनाम।।४२।।दोहा।।करेजथाबिधिनिसकृत:लोकबेदनं
दलाल:मल्लअषारेकेमहा:बाजतबजेबिसाल।१।रामकृष्णबदिबि
ररस।निकसेनयनबिसाल:कोयहरबस्त्रकुटीकुटिल:कस्योरूपण
लकाल।२।।छंदपधरी।।बाजितगहरजदुबंसबीर:सुनिचलेसमरबि
जईसधीर:अननंगरहानृपद्वारआर:सबसंगग्वालमंडलसुन्ना
र:कुबलयापीडकुंजरसकोप:आडोमगगदोकालओप:तहलक
लोलक्षगजन्हसहिरै:रेरेकुजातिगजराजफेरि:हरिरोक्योमा
रगकवनहेत:जमसादनजैहोगजसमेत।२।कबिरुकीयकोपब
चनसुनिकेकेमेर:इहापेल्योकुंजरकृष्णओर:गहिलिऐतहातिलि
जगुपाल:करिक्रोधदसनचापकराल।उवदंतमध्यरहिबासदेव
अरुचरनमांडनिकसेअजेव:निग्रहेपूछछबेमोनिदान:पचीसधनु
षकुंजरप्रमान:मंडलाकारकेस्योमतंग:इहाल्लयेसिथलसबअं
गअंग:गजछोडिदयोलीलागुपाल:करिकोपबहुरिआयोकरा
ल:मार्योमतंगमुष्टासमुड:तहाभयेबिकलधरगएतुंड:सोउआ
जबेहसतीसंहारि:पेल्योसुबहुरिगजन्हसअवारि:लीनेलपेटिगजसे
झिलाल:सोकोचित्रअंगनिकसेसुदाल·सोईसरुंडऊपरचंडसांम।
२अहिलयोबिलोकतसकलग्राम:बिचिगगनभ्रमायोबारबार।
परस्योसंभमिमानरूपहार:दुवबीरउघारेद्विरदरंत:अबिले

सबदी सो तो अनंत : संग्राम बिजत अरु संग : मास्यो तिन दंत सो नि
मतंग ॥ १ ॥ दूहा ॥ बिहत बदी अति बीरछबि : बने बसन रत बुंद : १
ह कुबलयापीड यह : गजनि हत्यो गोबिंद ॥ २ ॥ अनित्राय जिहि
मन जथा : तेसे दरसे ताहि : येक रूप अनेक अंग : अबिलोकत
जग आहि ॥ ३ ॥ छंद पधरी ॥ देषे सु मल्ल निबज्र देह : सब गोप जुस
जन जुत सनेह : नरब दिदेषि नरवर निदान : बिनता बिलोकि मन
मथ बिधान : मानत अ साध सासन समान : पितमात्र पुत्र अति मो
प्रमान : दुषबद के समन मृत्यु देषि : बिदुषनि बिराटरूपी बिसेषि
जोगी निजोगके ततजानि : पुनि जादव कुल देवत प्रमानि : द्रसरू
प अगट देवाधिदेव : अवधूत बिलोकत जथा जेव : बिस्विसकरु
बारन बिनास : तहा परे कंस उर महात्रास : करि दंत महा भुज कंध
कीन : पुनि रंग भूमि आये प्रबीन : बनि सभा जथा कमलाकबं
द : अवलोकि कृस्न उपजे अनंद ॥ ४ ॥ सजा सद ॥ देवकी गर्भ अष्टम
दयाल : कही ये सु कृस्न यह कंस काल : बिषु कुचा आदि दुरजन
बिनास : बनि करे रास मंडल बिलास : बेगे जु सत्रुपुरजन बि
ष्यात : ते करत परसपर कान बात ॥ ५ ॥ कबित्त ॥ बाजित्र बजे चहुधा
बिसाल : चाणूर मल्ल बोल्यो सचाल ॥ चाणूर ॥ सुनि राम कृस्न
तुम कहं निदान : हम निपुन मल्ल बिद्या निदान : करि कृपा बुल
य इही काज : यह अवसर अद्भुत बन्यो आज : रस रहे रिझाव
हु महाराज : नृपति किते नि परीत आज ॥ श्रीकृस्न बासुदेवा
धिदेव बोले दयाल : कहि उचित बचन जोई देस काल : तुम मल्ल
भोजपति के बिष्यात : बनबासी तरु हम कितक बात : मल नि
सो सिसुन ही बलप्रमान : संग्राम बने जो पे समान : असमान
बिलोके जुध आप : परिषद कके तुक है रपाप ॥ कबित्त ॥ स
दस हजार गज बल दुगम : कुतो द्विरद जिहि माहि : सो तुम मास्यो
पलसो : हो बालक तुम नाहि ॥ ५ ॥ मुष्टिक सो बलदेव मिलि : बिधि
हम तुम हि बिरोध : जान कृय हतो धरम जुध : पोरुष नीति प्रबो
ध ॥ ७ ॥ इति श्री भागवते दसम स्कंधे भाषायां बाराहट नरह
र दास नबिरचित ॥ कुबलीयापीड बध ॥ ४३ ॥ छंद पधरी ॥
अति रोष मल्ल चाणूर आइ : के तात रूप अरु महाकार : कृस्न

सो आनि जूट्यो सकोप: अत्र यित्र गरू मातंग ओप: बलवंत मुष्टि
का मल्ल बाथ: सो जुरयो आनि बलदेव साथ: आघात चरन मुष्टी
अनंत: दारुन कोलाहल तो दिगंत: प्रति अंग अंग प्रहार सूर: सुर अ
सुर जुरत संग्राम सूर: मस्तक सो मस्तक उसह भार: परि अस
अस उर उर प्रहार: मुष्टिक मुष्टि उरगो आनि मेल: प्रति मल्ल बाल
न रीमेल पेल: घर घाउ दाउ अनेक घात: बिसतार मल्ल बिद्या बि
ख्यात: कछु काल मल्ल क्रीडा जु कीन: पुनि कृष्ण समय जान्यो नवी
न: रहा कंस नास यंटिका जु आर: सो काल आनि बरस्यो सु नार
सिर हने मुष्टि तन छुटि संधान: पुनि छुरे मल्ल चाणूर प्रान: यह म
हा मल मारे मुरारि: आको सत्र मिलि जय जय उचारि: मुष्टिका अ
दि सब मल मारि: नि सेष सेष कीने निहारि: रंगभूमि सब मिलि
कृष्ण राम: यो रची मल्ल लीला सकाम: यह चरित देखि जन बदी-
आस: तिहि समय कंस उर परी त्रास: नीसान निवारि बजत नाद: स
गुष्ट कंस कहि प्रगट साद: इगि दुष्ट बालयें का दिदेहु: लाल हु ब्र
ज बासी लूटि लेहु: बांध हुग हिन दिहि उसह बंध: हुत बयर तो रि
बसदेव कंध: अरु उग्रसेन नृप हत हु आज: सब आनि सुन्दर मंत्री
समाज: सुनि बचन कंस के श्रवन साल: च दिग ये मंच मोहन स
चाल: अगिले सउच किंच दिगे सआप: परित्रास कंस यट न सो
पाप: धरि बज्र चरम आसुर सधीर: बदि अतुल कोप सो महाबीर
सिर ते किरीट गिर मुकट संग: रहा दई प्रथम थापर अचंग: गहि कं
स केस गादे गुपाल: सम गगन भ्रमायो अमरसाल: थहरानो मेदि
र सम थांन: पछु नारि दियो ध्रुथी प्रमान: दीय रूप संग तिहि बास
देव: उरपे गिरवा सरी के अजेव: पापिष्ट कंस के गये प्रांन: रह त्यों
सबद जय आसमान: पुनि तरी पुहुप बरषा प्रसिध: सिव ब्रह्म
करत अस्तूति सिध: बसबयर कृष्ण मूरति बिनीत: उरकंस ब
सी निस दिन अजीत: देषा प्रतछि मूरति दयाल: को उकर म उदे
नो अंतकाल: कंस के अनुज आये सकाम: निग्रोध कंक दवीर नो
म: सो जुरे आनि दाउ समान: आहार परि घते दये प्रान: कर म फ
लपा ध्वल कंस क्रूर: सब मिले आनि जदु बंस सूर: पुनि कलो म
लक रिये प्रमान: मस्लक तकस बिधि बेद मान: कु
सब उचित कीन: पुनि पूजि जथा एरद्विज प्रबीन:

य बलदेवराम ‧ धरि धीरगये ग्रव थधाम ‧ मिलि बंदि मोष
कीय पिता मात : बिस्वेसन्नये पोरुष बिष्यात : पित मात कृष्ण
देवत प्रमान ‧ जगकरन न्नरन अरु नास जान ॥ दूहा ॥ कसे बिन
सत्रु कंस को : मात पिता ग्रह मे षे : मथुरा में कुलमें महा घरघर
मंगल घोष ॥१॥ इति श्री भागवत द समसकंधे भाषा बार ह हट
नर हर दास न बिरचितं ॥ कंस बधो नाम ॥४४॥ दूहा ॥ मोहि
बिलोकैयो मात पित : देवत नाय निदान : कृष्ण लिष्यो तब चित क
रि : पूरन ग्यान प्रमान ॥१॥ तहा देवी माया कुगम : प्रेरी परम कृपाल : म
न पिता ताम हम गन : ते हान्नये तत काल ॥१॥ कृष्ण वाच ॥ छंद पधरी ॥ ह
म हेतस हेतु म दुष दुरंत : य ह पिता मात सोक हि अनंत : बालक किसो
र बयसु ष बिष्यात : तुम नहि मोहि मारो कछु न तात : हम कुलसि तु म
ता पिता हेत : सुन जो निला उ संपति समेत : मैल योजन मसब उ
र ग्राइ : पित मात न हि लेक छपा इ : सुत जो निन ही पित मात सुष दे
षे स कष्ट म ल महा दुष : चिंता स हत उपजत दहा चेत : हम कारन कै हेत क
वन हेत : सब जाति जपे हम सा पराध : सो छमा करहु तुम परम साध :
कबि क्त ॥ ग्रेस्वरी प्रिरत उपजो ग्रगनाव : तये तत मात पिता मनुजन्न
व : सुंदर बिलोकि मुष छबि सहास : पित मात जेतृ तिमे हपास :
दूहा ॥ तब माता य ह चरन लै : बिषम संकल बाटि : उग्रसेन ग्रामो र
हो : कारा ग्रह ते काढि ॥१॥ देस कोस गज बाजि दल : केसव राज बिचारि
उग्रसेन कहो आपनै : सब सुष करहु संभारि ॥१॥ कंस ग्रपावन आपनौ
प्रगट करम फल पाइ : मिलि अलोक सो लोक महि : तयो बिनास सुता
रा ॥२॥ देवदेव निंदक दुसर : पिता बिरोध स पाप : या ते ताकी सी कृ
व : उचित न करि बो आप ॥४॥ छंद पधरी ॥ उग्रसेन फिरि बचन उचारे
बिषम काल ल बिसमय बिचारे ॥ उग्रसेन उ मोहि न राज सकति
मन मोहन : गले गलानि त्रिपिल इंद्री गन : तुम सर बनु सर बमय सब
मी : जथा लोक त्रय अंतरजामी : कहो समरथ ग्रोर प्रभु के है : स्वा
म राज य ह तुमको सोहै : पोवन नरन पुरुष तुम पूरन : राज तिलक
लीजे बिज दीरन ॥ श्री कृष्ण ॥ तुम ही उग्रसेन सब जानत : पुरुष
कुल को धरम प्रमानत : नृप जजाति जो निस्चय कीनो : देस राज से
पुर कहि दीनो : हम जदु बंस लिह तन न ही हम को : ताते राज उचित
य ह तुम को : कृत य ह उग्रसेन अब कीजे : लोक प्रसिध राज पद लीजे
जे : ग्राग्या न ष जा लि अनु सरिहै : कर हु राज हम सेवा करिहै

राम्राहमकरिहैंनवरहा। साधऊकारिजमोंकूंसहा॥ कबित्त॥ जादवग
येकंसनयजेते: तहासवक्रूंबुलायेतेते : लोकबेदसबकेमतलीने: अ
गसुतउग्रसेननृपकीने। आइपकरिआसनबेगरे: सोमग्रापकरितिलककसं
नोरे: सेतछत्रचामरतवसाजे। बाजेबिबिधिसमंगलबाजे: अपनीन्रमिथ
तिग्रथिकाई: पुनिसवयादवकुलपाई: महाधरमबरतेजुबमंडल: उग्रसे
नराजाग्राखंडल: बसुदेवमानदेनंदबुलाये: जथावचनकहिसुषउपजा
ये॥ श्रीकृष्णबाच्या॥ पुत्रभावहमकहंतुमपोषे: सबबिधिलाडलडासंतो
षे: हमनसमरथसुपेकहिबेहित: प्रेमनेमजोकीनोतुमपति: पितान
दतुमग्रेहप्रधारो: तहासकलव्रजकेउधारो: इहांकरिकाजहमकूंपुनि
ग्रेहैं: देवजननिजनकहंसुषदैहैं॥ कबित्त॥ दिव्यबसनभूषनसब
दीने: करिमनुहारिबिदातबकीने: बसुदेवकुलगुरगरगबुलाये: ब
हुतमानदेदिगबेगयो: क्रमउपनेमआदिसबकीने: परमधरमजेब
संप्रबीने: दैगौदानद्रिव्यबहुदीने: कुलगुरपुरद्विजहरषतकीने: कृ
ष्णजनमसंकलपजुकीनी: सोबसुदेवलहागउदीनी॥ सांदीपनग्रह
गममन॥ लबबिद्यापूरनसांदीपन: बसेउजेनपुरीसोबासन: उह
सिषदसदिसकेग्रावे: ग्रगरसुबंछितबिद्यापावें: ग्राग्यागरगपाइग्र
हांग्राए: रामकृष्णसंगसषासुहाये: करिबंदनगुरपूजाकीनी: द्वि
जसांदीपनग्रासिकदीनी: ॐ नमोसिधग्रनादिग्रछर: संध्यादइ
पटिकासुंदर: सबबिद्यापारंगतस्वामी: जधाजगतगुरग्रंतरजा
मी: तदपिलोकबिबहाररहितपर: टहलकरतगुरग्रेहनिरंतर: पु
निगुरबिद्यासकलपढाये: सेवासिषपरमसुषपाये: ग्रातमबि
द्याधनुषउपासन: ब्रह्मग्यानपथग्रारप्रकासन: बेदधरमबि
द्याबिस्वेसर: राजनीतिसीषेराजेस्वर: राजनीतिसोईपरबिद्या
रस: बेदप्रणीतंबिहतपोरूषबस: उचित: संधि: बिग्रह: जानग्राश्र
य: द्वैधाभावजानुग्रासनजय: पारीइकसंध्याजोपाई: तीनीपदिसु
नफेरिलिषाई: इकदिनऐककलाग्रभ्यासी: बासुरगुरग्रहचोसठि
बासी॥ दोहा॥ दोरमासग्ररुचारिदिन: द्विजग्रहहरिदयाल: गुरग्र
वलोकेदैवगति: पूरनपुरुषकृपाल॥१॥ गुरपतनीसोंमंत्रगुरग्रैसी
कह्योउपाइ: ग्रपनेपुत्रजमतकवहु: जाचोइनपहजाइ॥ग्रहिल
प्रभुहमसोंपूरनकृपा: ग्रापुनकरीग्रसेष: दयेसुरासुरकुलभ
बिद्यादानबिसेष॥२॥ सेवकजनकरिसमझवे: हरषसहतमन
मांहि: द्विजमांगऊंगुरदछना: हमसोदैग्रहजोछिछंदपधरी॥

पतनीगुरुतिनयहमभयपार: सोकीनीजाचेंमांसुनाइ।।गुरुको।।पित
बारसमुद्रपरतासँबेत: हमआयेतीरथजातहेते: बिधिजिषतहमारे
पुत्रबाल: कृतजेगमस्योसोरहीकाल: प्रभुयहेंजुगुरदछनांप्रनत्रि
अबरामकृष्णतुरदेजुआनि: सोईकरिप्रमलनप्रभुधरमसेत: चिनअ
तरआरप्रस्तासमेत: उदधिसोकेंपकीनोंअनेत: द्विजरूपउदधिआ
योउरत।।प्रभुजलाचानीरनिधिइहबोल्यौनिसंक: प्रभुआइपाकजेमप्र
मान।।श्रीकृष्णउवाच।। बालनकोतोमहमस्योबाल: करिसेघआनिसोइ
हीकाल: पंचजननामअसुरसपाप: इहसेषरेहैउहबसतआपा।कवि
त्त।।यहसुनतउतरिरथतेंअनंत: जलमांझकूदियेजेजयंत: पंचजनतरु
मारिपछारि: फेंस्योजलअंतरउदरफारि: पुनिअसुरउदरबालकनपा
इ: इहकृष्णदेवजमलोकआइ: जमराजकृष्णजगदीसजानि: पूज
अनेकअरचाप्रमांनि।। यमउ।।आगमनहेतकहियेअनंत: दीजेसोंऔ
प्पादेवदेव।।कृष्णउ।। बालनसांदीपनपुत्रबाल: कीनोंतिहिथेंत्रप्रम
नकाल: वहआनिदेहुजमराजआज: करियेनबिलंबयाबिप्रकाज
प्रभुबचनधरमराजप्रबीन: द्विजबालकतबहीआनिदीन: इहकी
मकृष्णउजेनिआइ: सुतदीनोंसोगुरुकेंहसुनाइ: पुनिबासदेवयों
कहिपुनीत: बिप्रकछुबोहोरिमांगहुबिनीत।।गुरुउवाच।। दछनां
सुतदीनोंबासदेव: अबतोतुमअनरतनयेअजेव।। दोहा।। बेदउबि
नगुरबिप्रबर: आसिकदयेअपार: कलोजथाबिधिग्रहकों: करिये
गमनकुमार।।१।।कबित्त।। रामकृष्णतबबैठिरथ: ग्रहआयेगो
बिंद: मातपिताअतिहेतमिलि: उपजेउरआनंद।।२।। इतिश्रीभागव
ते दसमसकंधेभाषाबारहहटनरहरदासेनबिरचितं।। उग्रसे
नबंदिमोछन।। श्रीकृष्णबिद्यापढननोनाम।। पैतालीसमो
अध्याइ।।४५।। दोहा।। नीतिधरमबिद्यानिपुन: बचनचतुरहित
वंत: ऊधोलयोबुलाइइहां: सखाआपनोसंत।।१।। रामकृष्णउध
वरहसि: बातेंकरतबिचार: कृष्णसनेहरतप्रेमकरि: ब्रजजनके
बिबहार।। कृष्णउ।। हैंअतिकातरममबिरह: वेपितमातअथी
र: क्रमक्रमउधवबचनकहि: बिषमहरउदुषबीर।।२।।छंदचौ
बरी।।गोपनधूगोकलगजगामनि: भ्रमतनिकुंजकुंजप्रतिजाम
नि: रासबिलासथलीअवलोकत: रहतउदासबिषयमगरो
कति: मोकहंनेनप्रानअरपेमन: तजेसुगंधअसनरूपनतनं।

समहितनजेलकलसज्जासुष: मानिनि हार सिंगार पानसुष: बिबिधबस
नग्रहकाजबिसारे: बितजेलोकधरम बिवहारे: दसा बावरीसी ज्हींडोल
त: बिकलकाननकानकहिबोलत: जुवतीदंदंदमिलिजेसी: तलफ
तिमीनहीनजलतेसी: गुरजनबचनत्रिसतिगजगामनि: ज्योंमृगराज
गाजमृगनामनि: जथाधरम हितमुथराजे है: रहाकरिकाजबेगफिरि
ऐहै: जबमेरोयहबचनसुन्योंजिहि: उनकेप्रानबिस्वासरहतरहि: स
नासमयबिधिबचनसयानै: जथाधरमतेतुमसबजानै: करउत्रबोध
जाइहितकारन: महाग्यानउपजेगोपीमन ।।कबित्त।।अपनेदयेबसन
आभूषन: मुकटकिरीटबेनबंछितमन: आरोहितअपनेरथऊपर:
उपगवसुतबऊतैंकरिआदर: मानअसतबेलामनभाये: रहोउधवबं
दावनआये: उठिगोरजआछादितअंबर: नाहिनजानिपरतअपनेप
र।।दोहा।।उधवकरेप्रवेसपुर: जनकाजूसुनजानि: महरनंदकेबगर
महं: रहोछोरिरथआनि:।। छंद देअखरी।।रहासंध्यागोधनकेआव
न: सुनियतसबदअनेकसुहावन: मोहितकामदुघनमदमातेग
रजतमहारोसरसराते: मिलनसमयगोबछसुषदसुर: पुनिमिलि
ग्वालबालनाषपुर: दूधधारबाजतगोदोहन: मातहिंओनिदेतमन
मोहन: संध्याधरमसदनप्रतिसाजत: बिबिधिझालरीघंटाबाजत
पुनिसुनियेघोषघोषकेसुंदर: उधवअतिआनंदलयेउर: गोपबधू
मोहनगुनगावत: धरिधरिगधंपात्रकरधावत: रहानंदऊधवपैं
आये: पकरिभुजाभीतरपधराये: क्रमजुतआपनपूजाकीनी: दिव्यउ
चितलेआसनदीनी: उधवजुकतअनेकजिवाये: बोहेसोंसुषस
ज्याबेगये।।नंदबाच।।दोहा।।कुसलबातबसदेवकी: पुत्रनिसहत
प्रबीत: उधवकोंपूछीरहो: नंदमहंरसवनीति।।छंददेअषरी।।
केसैंनासकंसकोकीनों: दुषटासोजादवसुषदीनों: गोकलबसिगोपा
लगुसाई: चितहितबछितधेनचराई: ब्रजअरिदूउपजेजबनबन।।
मारिबिनासकरेतेरीमोहन: ब्रजकेबिघनअनेकबिनासे: प्रभुहमारेजतनप्र
कासे।।जसोदाबाच।।मातजसोदाउपजिमोहमन: पुनिरहाबोलीबचनप्रेमप
न: रहोछनरामकृस्नसुधिआये: छोहमोहनेननिजलछाये: दरिजुगकुचनि
नधकीधारा: स्रतस्रततहाकरीपुकारा: स्रवहिनैदलोटतअकुलाबत: प्रेमथा
हजसुदानहीपावत: मगनभयेदुषसागरमाही: हेकछुरहोतिनहिसुधिन
ही: ऊधोदसाबिलोकीइनकी: नहाजरीगतितेसीतिनकी: गयेकालक

छुमुरछांजागी। नयेसचेतनंदबडभागी: ऊधोरहाजुबचनउचास्यो: बेर
समृतकोधरमबिचास्यो॥ ऊधोबाच॥ जिनहरिसोंयहरतिउपजाई: महरनंद
कीधंनकुमाई: देहधरीकोधरमदिखावत: बिधियहबेदपुरानबचावत
निसचयआदिकृस्ननारायन: परमपुरुषअरुजगतपरायन: उनकेश्री
पअग्रीयअपनेपर: उनसेममथ्यमनोहिनअंतर: सबनिसमानसदाबस
मी: जथाचराचरअंतरजामी। निरगुनरूपउनहिजगजानें। पैकिऊका
रनसगुनप्रमानें: वेहैंबसतसबनिकेअंतर: निकटप्रेमहितरहतनिर
तर: जोउनसोंअतिरतिउपजावे: प्रेमीजगतपरमपदपावे। अबवेसमय
पाइइहांऐहैं: हितसबनिमिलिहैंसुषदैहैं: करिहैंबचनप्रमानिकन्हा
ई। मनुषकरऊजसोदामाई देवमनुजतिरजगमयदेही: हैसबब्यापक
सरबसरबसनेही: मानऊउनकेपितानमाता। तिनकेकोउहितकनत्रा
ता। जनमनकरमकछुमनजानों: पैनसुतासुतभावप्रमानों। देहनर
स्वसुतासुतदारा: गनेतिपुरुषबऊरूपप्रकारा। संक्षितरिष्माहेतसु
नास्न। निरगुनसगुनहोतनारायन। सतरजतमत्रयगुनमयस्वामी:
फाल्गुवंधनकामअकामी। हैरनबिनसोपैसुधिनांही। बिलपतहैंतबु
नृतचपाही। येहैंरमतआपनीइछा: दुष्टनिदेतदंडमयदछा।। कबिरु
नातकरतहीरयनिबिहांनी: बोलितमचरअपनीबानी। अहआपारकर
नत्तहीगोपी: अतिसुंदरसुंदरतनओपी: मांठेसदनसदनमथांनो॥
पारनेतकरिरईप्रमानों। नतिरतिरिआनिजथादधिनाजन: उदहितलेले
गोपीअनगन: इहांमथानकरतअनुरागी: लीलाकृस्नसुगावनलागी।
छुमतिरहेमथानजथायन: सोभितहैंसुंदरिसुंदरतन: बलीकरनि
चलियाबलिबाजत। नूपरधुनिकिंकनिरवराजत: देहीगोरअंचरा
ठारे: उछरतहारजुउरनिउघारे: सुनिऊधवसोईघोषसुहाये: ग्राल
हउगेपरमसुषपाये। मिलेग्वालगोबछमिलावत: पैदुहिदुहिमंदिर
पुछावत: द्वारनदथाटोरथदेष्यो: बिनतागोगमकृस्नबिसेष्यो। सो
नितधजापताकासोई: हितउपजोमोहनरथहेरी।। गोपीबाच।। इहां
चलीमोहनकहिआवन: सिधकरसोईबचनसुहावन: दिब्यबस
नअबऊधवदेषे: बिनगामनअतिकोधबिसेषे। बूचनकोधगोपीतबूबे
लत: छदमबाकिउधवउरछोलत: यहअकरूरफेरकतआयो: कांकें
रथपुनिकवनपठायो: रामकृस्नलेजाइलगाये: महाराजइहिकंस
मराये: आयोदुष्टसबनिउरदाहत। हैअबकहाकीयोचाहत॥
करिसतुनासक्रीयाअबकरिहैं: हैममआमिषपिंडजुधरिहैं। सति
नाकरिनिसकृतसुहाये: उधवइहांनंदकेआये:॥ इतिश्रीभागवते

दसम सकं धेनाम्राम रहट नर हरदासेन बिरचितं उधवगोपिक्र
गम नोनाम ॥ ४६ ॥ कबित्त ॥ दोहा ॥ विश्राम रूपन बसन वे: वेसी हित्र
तुहारि: अवलोकत गोपी अधिक: रही बिचारि बिचारि ॥१॥ आनि वि
लोके निकट यह: विनता करे बिचार: पत्री बालक रूतपे हैं को उमति
हारा ॥२॥ पहचानें उधव प्रगट: सषा कृस्न को साथ: करि नंदन पूजा करी
अवरस बैआराध्य ॥३॥ अहय हलते गोपागना: आनि तरी ऐकेत्र: अप
नें अपनें नावरहा: बातें करति बिचित्र ॥४॥ छंद छैअ परी ॥ जोगी जतीत
पस्वी जोई: अंबा पितन विसरत वोई: पूरन ग्यान जपे सिध पावत:
तें कुटंब मातरा आवत: सुत हि मात पितस सनेही: देष कृस्न बुरल
नये देही: हमसों स्वारथ हेत सगाई: सो तो कृस्न चली समझाई: कुसम
लता जैसें मिलि मधुकर: पुनि रसलेय सबंध करे पर: अरु गनिका मयत्री
आराधे: स्वारथ प्रीति तब हि लों साधे: हित बिद्या लों सिषजु होई: स्वारथ
नये जाइ उतिसोंई: बसत प्रजा जो लों सुषबासी: अरथ बिनां उठि जाइ उ
दासी: ज धाज गप आचार जजाई: पूरन नयेद छनापाई: पंषी ज्यों छाया फ
लपावे: बसे बृछ सो चित लगावे: स्वारथ घटे सुतौ रिसगाई: फूं घर हेर
नबहिं उठि जाई: जैसे अतिथ चले करि भोजन: तजिय ही को ये हतत
छन: बन बिन हरित तब हि लों बासी: देषि दाह मृग जाइ उदासी: लप
ट मों पर त्रीय चित लावे: पूरन कारिज ऊरि पलावे: ऐसी गति स्वारथ अ
धीनी कृस्न प्रीति गोपिनि सों कीनी ॥ लेषक बाच ॥ लोक लाज तजि तुर
बिहाला: बालचरित गावत ब्रजबाला: याही समय भ्रमर रक आयो:
कान्ह चरन नीय राथे: तब हसी गोपी हेतारी: उधव अजसु बात
उचारी: भ्रमर धूत मोहन को नाई: सरदार हत तू निकट सषाई: मधुपक
नव पुहपाकि मालो: निमत कुदीनी निंदलाला: माधव जब कुबजा लि
मन आवत: पाइन लगत प्रेम उपजावत: दासी केय ह चरन निहानो: कैउ
बार ही ये को ग्रानें: कुबजा को सौरन कुच कुंकम: है यह लिमसु देषत
है हम: तातें हम हि छाँयि मतमधकर: उपज तषे दूर हत उर अंतर: अबला
कर न प्रसन जु आये: स्वारथ हित तुम बचन सुनाए: रहत उह कुबजा परत
नी: निस प्रसन करऊ तुम गांनी: अविरजु महा हम हिय हआवे: कमल
हरिकी प्रीया कहावे: यतो परम धूत हे ऐसे: करत जु पे बिसवास जु केस
हम अग्यांन श्रीयासी नांही: सदा तज तन ही संग सनांही: करियु जार कृ
स्न गुन गावत: बार बार लेह महि सुनावत: सो कुबजा क हजार सुनाव उ
प्यारे लगो दांन कछु पावऊ: बिन वन बिषे कवन सो तरनी: उरलन्त

रन हिं बिस्व कहि बरनी : बिष्नु चरन रज रमा बिसेषी : तौ हम कवन मात्र
कि हि लेषौ : करि तुम सतकरम दुष पावत : हम हि कृस्न सों से धि करावत
देष रूब लि सरबस जो दीनों : निय हरा जछी निकेली नों : जदपि वे ऐसे
ही जानें : नैन रूप हमरहे निदानें ॥ अथ बाचा ॥ कटि ये बिरह कुटिल को कैसे
उन संदेह केलो है ऐसे ॥ तथा गोपी ॥ बोहो स्यो हसि ब्रज बनिता बोल
परी गागि रि रगौ तर षोली : जुग ति हमन कछु ऐसी जानी : मुष उन ही सों स
वी मानी : तुम जु हम हि बिसवास करावत : मुष कहि मीठी बात मिलाव
हम बिनु को उनके आ नांही : मधुप बिचार कर उमन मांही ॥ कवि रुवाच
रहा अथ गोपिनि को रहां : देष्यो प्रेम निदान : रंग निरंतर स्यां मरंग : प्र
न प्रेम प्रमान ॥ १ ॥ अथ वचा चा अबउधव बोले रहां : छाके प्रेम ग्यान गुम
न : धंन्य धंन्य तुम धीर धर : धरति कृस्न को ध्यान ॥ ॥ छंद है अपरी ताते
न लोक पूजित तुम : कृस्न नगति करि तई जथा क्रम : जोग जग्य जप तप
न संजम : दान बिधान देह इंद्री दम : स बरितु सहत कष्ट तप साधत : र
सादि कि जोग समाराधत : तिन हि कि जदपि दुर्लभ जो : तुम कहि गोपि
सहज उपजि सो : सुत पति स्वजन गेह सब त्यागी : लोक लाज तजि कृस्नहि
लागी : उन संदेस कह्यो है ऐसो : तुम सों सबै प्रकासों तैसो : हम तुम
कबहु बिजोग सु नांही : सो उर चष परदेषत सत नांही : पंच तत्त मय रूप
प्रमानों : तिय तमों हित व्यापक जानो : बुधि मन रंद्रीय तत्त बिचारो
ये है सबै सरूप हमारो : कारन पारस रब मह व्यापक : उन बिन है नां
हि न कौ ऊ रक ॥ गोपी बाचा ॥ व्यापक सरब सु उनहि बतावत : सांनीत
तो नासु क्यों भावत ॥ अथ उधव ॥ नी रूत बिकार हि पावै : है वह रहत बिक
रके है वे : कृस्न ग्यान तम सुध अगोचर : निरबिकार निरनास निरंत
र थनि ती नि अवसथा गारी : सुषपति जाग्रति स्वपन सु त्यारे : मायगुन
के तेद बषानत : सो कहउन ते तिन समानत : कहीयत तुरीय अवस
था कोई : सिध सरूप हमारो सोई : महा सरूप सान है मेरो : हैत बिन
सदेह को हेरो : तादे ही के षट गुन ते से : जात स चित बरधत है जैसे : बृ
धर हत अपषीयत बषानों : नास अवसथा छठीय निदानों : कृस्न आत
म रूपी अबिकारी : नास रहेत्य उदेह नितारी : मारग तत्पर मसत्य गु
मानैं : सो सब मो हि मा ऊस मानैं : अपगा जथा गिरन ते आवति : सबै स
मुद्र हिमाऊ समावति ॥ गोपी बाचा ॥ सगुन सरूप सकल गुन सुंद
मह नंद के कुवर मनोहर : चितचुरावन मांषन चोरत : दृग बालद पितोर
न तोरत : तिनकी बिरह उसहस्र अति उसतर : कैसे अबलास हे स मधुकर

जेयह बिरह करे अंगीकृत: तिनकृ कुंज कुटी करि हित चित॥ श्रीकृ
ष्ण॥ हे तब हिंग तें न्यारि रहत हम: ताको यहै निमंत सुनकुतुम: द्रिष्ट
अगोचर तब मन मांही: हम तुम तहां बिछोहन नांही: निकट रहे तब रू
रिसने ही: रति हां अंतर नही देही: रास समय गोपीपति रो की: सो पह
ले ही मिली सखी की: हम तैं न रिज पे तुम कें है: जथा त्रंग कीट मिलि
जे है॥ गोपी वाच॥ उधव यह चर चा अ सुहती: छिन क नि वार कुजार
छाती: हम तो जोग पात्र रस जोग हि: जोगी नाहि जु साधे जोग हि: अहि तर्क
सज उन्मूल उपारे: सबे आपने काज सवारे: स्याम राम को कुसल सुनाव कु:
बोध आपनो गो हि न आव कु॥ किंच तें गोपी उधो कंव कुंज कुल सख जग्ये है:
सौ जिये जिमां षन द घिषे हें: हित बन धेन चराव हि जो हन: ये हकर हिं सध
गेरो हन: क वक कहि है केवर कन्हैया: मो हि विकृत मांषन दे मैय्या:
बन वृज बधू निकर निसि निरमल: करि है रास बिलास कल हल: पुनि
इक गोपी बोलि प्रबीनी: कि हि जांनी जे सी उनकी नी: एक रिमहन चाण
र ण डारे: मातु लिकं सबे लही मारे: पुनि पर्थी गत बेन कपाये: सबे नि
मो जदु बंस सुहाये॥१॥ कंस्मा नृपति मधुबन कर ऊकरि है: सुख अनेक तिन
संग अनुसरि है: मि लि ब सदेव देव की माता: जोग बिलास करत दो उ
भ्राता: बास देव तन ये जदु कुल बेदन: निषल बंस हित के सनि कंदन: अ
ब के हि काज ये षम हुं आव हि: काहे कों नंद कुवार कहाव हि॥२॥ श्री उन
के अरथे पासु दरि: नगर जो पिता बुढ़े नागरि: हम तो वृज बनिता व
न बासी: येक ही गोधन वृत उपासी: तिन कों उरल न मिल बो ताको: ज
था नाम सु दरसदन जाको: अब ने रास म हु सुष मांनो: जथा पिंगुला ग
निका जांनो: कांमी बाम ल ले नको ई: सु निग निका सुष निद्रा सोइ:
गनिका इत त्रय की नी गुर: वाही समय प्रान उपज्यो उर॥३॥ इहां एक
गोपी कहि अैसे: जथा बिलो कि का लगुन जेसे: जदि पक्रु लम हजे
गेस्वर: प्रान निधान गुर नि स्के गुर: तदिप नर मांत जत संग तिनको
जो न तिज रूपि परम गुन जिनको: तो हम कवन मात्र हैं मधुकर: यास
छबि दरसन छायो उर: निमल निकुंज बिबिधि सरिता बन: अरु पद
अंकित न्रमि जु पावन: जा हां ज हां दिष्ट परत ये ओ ज्यो: तिनको बिर
सतावत त्यो त्यो: उनको हास बिलास बिलोकन: मोहन मंत्र मन कुब
रत तन मन: उनके रूप चरित अनुरागी: न ई तन मय गोपी व क न्हागी: अ
ति बिरहातुर बचन उचारति: स्याम स रूप अनूप सं भारति: हां वृज

नाथदीनकेबेथव: अबलापरीबिरहदुषअरणव: स्यामआपनेबिरह
सँभारो: अबलादैदरसनउधारो। मैंकअनयत्रजमेंबसिऊधो। सबी
नकोदेष्योमनसूधो: प्रेमनेममनसामनपूरन: कालबिहावतगावत
हरिगुन: निसचयपरमानंदनिरासा: उनकोतदपिनछूटतआसा। कृ
स्नमहाजोगीजोगेस्वर: उनकेमोहनमायाअंतर: कृस्नबिलासजह
जहांकीनो: नामनिसंगप्रेमरसभीनो: नदीनिकुंजपुंजबननिरझर
उपहारकगिरवरबापीसर: चितहितसहततिनहिजोचाहत: दुषह
नयेतेईफिरिराहत: गोपिनकेगुनउधवगावत: चरनरेनलेनालल
गावत: गोपीजनबेकसगुनगावहि: प्रेममगनतनमयतापावहि। गो
नबेसबयकरिगरुवाई: सदास्यामकेमित्रसषाई: जदपिबडेबडेके
जाये: अरुगुरग्यानप्रबोधनआये: गोपीप्रेमनेमअनुरागे: आपु
नउहितनकेपाइलागे॥ ऊधोबाच॥ धंनिदेहइनगोपिनधारी। मन
बचक्रमकरिनिजतमुरारी: जोगीजतीतपीसंन्यासी: आतमदम
नबिरागउपासी: तेईयहभावजुबंछितजाते: जगअघबंधनछूट
तजातैं: ब्रतसंजमतपसानबनाई: ग्यानिनकरमनिगमऊगाई
कृस्नकृपासबकाजसुधारे: अघअरणवबूडतउधारे: गोपब
धूपसुपालकमनमत: दुइभावबिनचारहिरूपत: जिनकछू
कृस्नप्रभावअजानें: मनबचकरमसुपतिमानें: जेअनजानिअ
मृतमुषजावे: ग्यानीतदपिप्रेमरसपावे: गोपीकृपाप्रसादजुग
यो: प्रभुकोअभीयानसुरतीयपायो: उनकेलागजुमहमांजोई:
कहनसमर्थनाहिकबिकोई: उनगोपिनसंगरासबनाये: प्रेम
भावमनबंछितपाये: अबतोयहैमनोरथमेरो: बृंदाबनमेंहो
इबसेरो: तिनद्रुमगुलमलताओषधतेंहू: ममउतपतिहोहि
याहूमहं: पदरजइनगोपनकीपावन: मेरेतनपरसेमनभाव
न॥ ऊधोबाच॥ गोपिनसोंतबहांआग्यामागी: अबकृतुवननयोबै
रागी: मनबचउधवआग्यामागन: आयेनंदजसोदाआगन: गद
गदकेंसोकगहराई: काकपेकछुकहिनजाई: दरसननयनअबि
रलजलधारा: कृस्नकृस्नहांकरीपुकारा: ऊधोरोवतजाइचढे
रथ: पुनिफिरिगमृदिचलेमथुरापथ: भूलेग्यानबिकलतननारी
मानकुलज्योंहारिजुवारी: कहाजोगउपदेसआये: गोपिन
सोसिषहोइआसिधाये: प्रेमसमुद्रहिथाहनपायो: इहांउधवमोहि

नपञ्आये ॥ दूहा॥ नंदजसोदा मुष बचन : स्याम हिके संदेस
कोटिक लपल गिराज करि. निधि तुव नजऊ नरेस॥१॥ इति हमारे
चितकी : येकहीनावश्रसेस : जगत होत हांथिरचरजन म : प्रभु मह
हो ऊ प्रवेस॥२॥ नारिन उपदेसन निगुन. उधव गये जु आप श्री
मेगुन उपदेस ले : अैसो प्रेमप्रताप॥३॥ बिहत जुनंदा स्कि बचन
सुनि सुनि उधवसाध : मुथरा आये मुगध है : करि मोहन आराध
॥४॥ कीने बंदन कृस्न को : उर उपजे आनंद : नेन अघात न रूपरस :
मोहन मदन मुकंद॥५॥ नेमप्रेम गोपागनां : सुनपितमात संदेस :
नरहर प्रभु हितसों सुने : सो तुव बचन नरेस॥६॥ इति श्री नागवत तेर
समसकंधे लला बारहट नरहरदासेन बिरचितं उधव गो
पी संवाद नाम रगीत॥ ८७॥ कबित्त॥ दूहा॥ समसरब गपसरब
नमो : सरबस ब्यापक सिध : कुबज्याको अंत हकरन : पायो प्रे
मप्रसिध॥१॥ कारन कारिज सध करि : हम को हेतव येह : बंछित
कुबज्याको बचन : आगे दीनो ये ह॥२॥ सेरं श्री केतिहि समय
आये सहत उछाह : प्रभु अैसी इछा प्रबल : हेत बचन निरबाह॥
छंद उधोर॥ बह हरषि सन मुष आइ : परिक्रमन करि परिपाइ : सं
गसषी जूथ सुजान : पुनि आंनिय हपमान : अनेक सोंज अनूप
सुषजथा समय सरूप : निज गंधबसन नवीन : कर कुसम सज
कीन : तहा बेठि कृस्न कृपाल : दुष हरन दीन दयाल : सुनपांनि मि
लिघनसार : अरु बिबिधि द्रिब्य अपार : सुन तन कचंदन सेव
दीय जथा बंछित देव : कामना पूरन कीन : पुनि कैले कृस्न प्रबी
न॥ श्री कृस्न बाच॥ दूहा॥ कुबज्या मन बंछित कछु : बोहो सो मांगि
बिचारि : करि ऊ पूरन करि कृपा : मुष हसि के हे मुरारि॥ कुबज्या
बाच॥ कुबज्या जा चे जोरि कर : तुम प्रभु बेद बिनीत : बासदेव
श्रु कालब सि : पुरय हकरऊ पुनीत॥१॥ कृस्न बाच॥ यह ये ही हि
हे अैवसि : अैसो बचन उचारि : कृस्न देव कारन करन : प्रभु निज अ
हपधारि॥ छंद पधरी॥ यह दिवस प्रात बेला अनंत : सस करन
बचन सुषदेन संत : सेंग संकरषन उधव सनेह : गोबिंद आय अक्रू
रये ह : अक्रूर हासन मुष आनि : पदबंदन करि पूजा प्रमांनि : प्र
भु रहा मध्य मंदिर पधारि : धोये स चरन जल सीस धारि : बेमूरि
उ बित आसन बिनीत : पुनि करत नये चरचा पुनीत : ८
व दीन निदयाल : षितिनार उतारन षलषयाल :
बेत षल के समारि : तुम जादव कुल के कष्टारि

ककीनों बिसेष : अब सुनिये परमारथ असेष : सत पुरुष प्रान ब्यापक प्र
सिध : सरबातम स्वामी सदा सिध : आपनी सकति तुम उचित आप : बिसत
र बिस्व माया बियाप : उत पति दे है कारन अनूप : रचि ऐक दिषावत अन
त रूप : त्रिगुन मय रचि तनुम लोक तीन : चव षानि चराचर चित्त लीन : है
तुमन देव गुन बंध हाम : निरलेप निगुन निरमोह नाम : पावै रूप थबेद कु
पुरान : उपजत है जब बाधा प्रमान : संसार है तनुम स्वयं सिध : प्रभु थ
रत दे है पावन प्रसिध : हित नये आनि बस दे व यह : अवतार नारस्तुव हरन
येह : मुहि किर कृतारथ बेद मीत : पापारे मम मंदिर पुनीत : तब सुक्र
सेव मनक मस समेत : तिनको तुम बंछित सरब देत : मम करत बाधम
याप्रमान : कर ये निवरत करुना निधान ॥ श्री क्रस्न ॥ प्रभु बोले तु
मपित्रा सुप्रसिध : बेदनीय बिहत अरु बंस रुंध : हम है तव बालक प
रम हेत : सो करिये रक्षा धरंम सेत ॥ अक्रूर ॥ बैराग प्रभु नतुम कहे बि
सेष : औ दास नावत जिये असेष : मर्यादबंस रषिक महंत : सुरतीर
थ सेतुम साय संत : सुरतीर थक्रत आराध सेव : तुम दरसन क्रत फलद
त देव ॥ श्री क्रस्न ॥ दोहा ॥ ताते अब अक्रूर तुम : पुर माते गपथारि : हित
हमारे हैत हां : स्यावऊ सोध सम्हारि ॥१॥ पंच तु पाये पेठ नप : देवा धी
न तु रास : ताके त्रीय सुत सोक जुत : नित नतये नैरास ॥२॥ सुष बिल
सत धृतराष्ट्र सो : इथी बित्त वस्त्र नाव : पोठव अरु निज पुत्र प्रति : न
हि सम दृष्टि सुभाव ॥३॥ तिहि कारन अक्रूर तुम : चलिये तहं तुरंत
उनको सुष दुष देषि सब : आवन कुआं निवृतंत ॥४॥ पाछे समझि बिच
रिये : करिहै तिनको काज : आनि नये ऐके ऋतु हा : सबे असाध समा
ज ॥५॥ अपुबरा जाओ धरो : पुत्र मद अंध सपाप : ताब सब रती है तेहां इस
बिकलत आप ॥६॥ कबित्त ॥ करी बिदा अक्रूर की : गजपुर कहे गो बिंद
सकं षन उधव सहत : आये ग्रह आनंद ॥७॥ इति श्री ब्रजनंद सम
सक्रं येजा बार हद नरहर ॥ दासेन बिरचितो ॥ अक्रूर ॥ हस्तन
पुर प्रवेस नाम अडतालीसमो अध्याय ॥४८॥ कबित्त ॥ दोहा ॥ बारनपुर
अक्रूर रह : आये सहत अनंद : कारन आप्या क्रस्न की : गावत गुन गोबिं
द ॥१॥ छंद पद्धरी ॥ अक्रूर इहां गजपुर हि आर : सब मिले आनि के रव सु
धार : धृतराष्ट्र भीषम बिदुर रव्य : पुनि मिले कर्ण कृत बिप्र सथ : अरु ब
ली करा जाग अचेग : सुत सोमदत्त सो मिल्यो संग : दुरजोधन गोतम नर
नाज : द्विज द्रोण सहत मिलि सब समाज : सुत पेठ मिले पं चो सधार
न अलपत था संग्राम बीर : इत्यादि बिप्र छत्री अनेक : मिलि बात रुध
नय बिबेक : सुन सना आनि बेगे सुजान : परसपर कुसल प्रछीत

मांन : सथवरित जथा अवलोकि सूर : कछु मास रहि गजपुर अक्रूर : पांडव बल
पौरुष बुधि प्रमांन : मन कौरव देषे असहमांन : अज हेत विनय प्रतिपाल प्रीत :
निरलोभ निरंतर धरम नीति : सो देषि लोक पांडव सनेह : दुरजोधन दहत तन अष्ट
देह : दुरजोधन दुष्टाचरन देषि : अक्रूर उपजि विसमय विसेषि : नीपम ह
आदि कौरव कुल नाव : दिन दिन प्रति सूचति दुष्ट दाव : इक दिवस विदुर ऐकांत
आइ : सब कारन अक्रूर हि सुनाइ : आपनी दसा दुसह दुरंत : इह कुंति बरन
आदि अंत : सुत बालक मेरे बिनु सहाइ : अरु वास सत्रु सों बन्यौ आइ : निस
सुउरथ जलद रतनैनें : बदि रिद्य कंप आवे नवैन : मिलि मृगी जथा इक जू
थ मांह : सुष स्वास न पावत नै रसाह : [illegible] पिता बिना हीन : दुरजो
धन परि निवस हत दीन : अषिलेस कृस्न माया अजेव : हे दीन बंधु देवाधिदे
व : इन की सुधि लै हे केव कुआर : हे सदा साम वे ईस हाइ : जोगेस जग
त नावन जयंत : अषिलेस बिस्वपालक अनंत : उन ही कौ हम कौं सरन :
आहि : कहि कृस्न बिना अब कहै काहि ॥ कबि रु ॥ अति दुषित देषि कुं
ता अधीन : दिढ बोधक स्यौ बिस्वास दीन : अक्रूर बिदुर अति सोच आप
जलधार नैंन मुष कृस्न जाप : पांडवनि पिता कहि कहि सुनाव : न्यायो सब
दिन को साक्षि कु सुनाव : धृतराष्ट्र पासि अक्रूर धीर : विधि परिषद वे
ठे आनि बीर ॥ अक्रूर उवाच ॥ सुनि कहत नयो सुनिये नृपाल : यह कहि
न विचार हु करम काल : पंचत जबै नृप पांडु पाइ : यह अवनि राज औ
तुम हि आइ : ता तें नरेस तुम सहत नेम : सुत पंडु बाल पाल हु सप्रेम : सम
दिष्ट बिलोक हु सब निसूर : सुनि बदै बंस धन धरम पूर : निसेध अनथ
धरम नास : बिष्यात नरक इकवीस बास : सब ज्ञात पुत्र बरतहु समानें
प्रतिपाल कर हु रहा प्रमान : अपने परजा निकरि फिर आप : सह बासन
ही तिन सों सताप : यह जथा देह आपनों जानि : पुनि ताहू सों बिछुरन
प्रमांनि : का कै कुटंब सुत बंधु कौन : ये का की जामन मरन जौन : करम
अकरम ताग नि कोइ : सुष दुष अकेलो जे सोइ : सुत पुत्र सुता वित
पहार : पुनि करम लीन करीत प्रकार : जल जंत जथा जल संग जांनि : प्र
ति छिन छिंन सोषत जल प्रमांनि : अभरम करि पोषित पुत्र आप : सो ईत
जे अंत उपजे संताप : चिरजीवी आपन उन हिं चाहि : इक हाथ अथर
गेर हे आहि : परजा कुटंब पोषन प्रयोग : सुपने की संपति को संजोग
संसार पुरुष सोई सग्यांन : सम न्याव सब निबरते समांन ॥ धृतराष्ट्र
वाच ॥ धृतराष्ट्र हा बोले सो सधीर : बिरतांत सुन हु अक्रूर बीर : कल्या
न बतीवानी अक्रूर : सुनि बिसम्य बनमानें नसूर : पैमरंन सील ज्यों
सुध पाइ : इहि त्यों तिन मन में रोअ याइ : सम तान निपत मम बल सु
भाव : भावी सें बरतत बिषम भाव : थिर चितन मम चंचल सुभाव

जैतउ तनरकिघनमांऊजाइ: सोह्लकरनकारनसमथ: हैदैवीमायाउन
हिहथ· प्रभुकीजेइछासोईप्रमान: अवलोपननाहिनसमथग्यान: मायाप्र
पंचउनकोसमूल: सोनजानिसुरासुरमहतसूल: नारायनउनकोनिमस
कार· सोबासदेव रंनकूविहार: अवजांनिनृपतिमनअनिप्राय· अकरूरप्र
तिमधुपुरीआइ॥ दूहा॥ इहधृतराष्ट्रआदि दे: कौरवकुलकोकरम प्र
मजिगयाअकरूरसुत· मोहनसोंकहिमरम॥ ॥१॥ इति श्रीभागवतेम
हापुराणेदसमस्कंधानुसारणेभाषाकार हरिनरहर द्वारोनवि
रचितं॥ अथ धृत राष्ट्र प्रबोध॥ ऐकोन पचासत मोध्याय॥
४९॥ कवि रा॥ दूहा॥ पुत्रीमागधराजकी: ग्रसतप्रतियहनाम· सोप
टरांनीकंसकी· विधिकृतविधवावाम॥१॥ कोधायिकसोकोकलित:
जरासंधिपैजाइ· कारनजोवधकंसको· सबैकह्योसमझाइ॥ जरास
धवाचा॥ पुत्रीदुषसुनिकैपिता: सजिचतुरंगसधीर: अवनीकरोंअज
दवी· वचनप्रतंग्यावीर॥ कवि ता॥ अक्षोहनीसंज्ञा॥ इक: द्विरद· रथ
इक· त्रयजुहयपंचपदातय: प्रथमपत्तियहनांम· त्रिगुनकरिसेनांमु
षतय: तासत्रिगुनगनिगुलम· त्रिगुनतिहिगनजुगिनेजय· तियत्रिगुन
वाहनी· क्रमसुतिहिप्रतिनांकिजय: मांनीसुत्रिगुनप्रतिनाचम्· ग्रमू
तिहित्रिगुनअनीकनी· सोदसगुनकरिनरहरसुकवि· यहसंख्याअ
छोहनी॥ ॥१॥ छंद उ॥रा॥ अक्षोहनीतेईस· सजिचल्योमागधईस॥ ह
यहीसगयमदगाजि: वाजित्रबीरसुवाजि· बेचढीफुरहतषेह· दिनर
योनिससंदेह: चतुरंगसेनसचाल: करिगमनमगकछुकाल· अतिको
धमथुराआइ· सबनगरघेरिसुजाइ: तबरामस्यामसुतंत्र: मिलिकरत
निजईमंत्र॥ बलदेव कृस्नमंत्र॥ रनषेतमागधमारि: इहासकलसेन
उवारि: कैमारिरनचतुरंग: इकबचैमागधअंग· हतिजरासंधहि
थ· अरुमारिसेनअनाथ· पुनिजुधतीनप्रकार: इहकरैवीरबिचार
मिलिहैजुलोहसमारि· नरदैउअवरविडारि: मगधेससेनमिलाइ: यूं
वउरिलरिहैआइ: योंभूमिभारअमांन: निःसेषहोइनिदांन· इहिहि
तमैअवतार: जुवलयोरारनतार: पुनियहैमंत्रप्रवीन: कृतनियू
तउद्दिमकीन॥ कवित्त उवाच॥ यहसमयमगआकास: प्रभुविजयहि
तप्रकास: सनाहआयुधसंग· रथउत्तयआरअलंग: इहादईवर
छाऐह: सोईस्वतआरसंदेह· सजिकवचआयुधसिथ: प्रभुरामकृस्न
प्रसिद्ध: आरोहरथतिनआइ: इह्याविजयसंषबजाइ· तबपरीअ
रिदलत्रास: विपरीतदिनबिस्वास: मगधेसबोलिगुमांन: नहिवि
लजुधसमांन· तिहिकृस्नछांडततोहि· मनहोतलज्जामोहि· मनरा

मनोउदमार : संग्राम ले कृसंबाद : मम सरनि विध सरीर : बैकूंठ जे हो वीर ।
बलदेव बाच ॥ बल नंदक हित बृबोल : तुम मुष हि कहि निज तोल : जो समर चं
रस मथ : कछु न कतन हि अकथ्य : कहिबो सु मथ्या मानि : पुनि कीयो स
च श मानि : प्रविषम धम मान : कृत धनुष चक्राकार : प्रचुमी षिब नि अ
पार : इह सेन रथ गज सीस : महि परे लुगतम हीस : चलि सरित श्रोनीस
ग : तहं उग्र तरो प्रतरंग : सो ईस रन र सुनकारि : हीय फट त निलज नि हारि :
मग धेस को दल मारि : अब से बदेय बिकारि : रन जरासंधर साह : इह कृस
तन मुष आह : दु कृ औररदाव खि दाव : धन घो षवजी य घाउ ॥ मरनि करम
रि संग्राम : रथ तो हित हलजु राम : जो विरथ मगधवीर : मोर्द दो पिराम सधीर
रहा ॥ जरासंध बल नृजव : बांधन लघि विचारि : हसि कहि नेन हसे न तह
नर हर नचु नि वारि : ॥ कृ हम ज ॥ कृस छिरायेदीन करि : मुष यो कहि घन स्य
म : है यासों करनी हम हि : रन की उ बलराम : ॥ क बिक ॥ पस्यो पिसानो मग
धपति : सेना गरख न साह : चल्यो तप साको तब हि : इहा ताग लमिलि आह :
॥१॥ करि करिनी तिअ बोध करि : धरि करग्रा ने धाम : मिलि सकल पविकल
पमन : सो न लह त विश्रामा ॥२॥ कृस देवरन विजय करि : प्रहराये गो बिंद :
करी सुरनि बरषा कुसम : हरनये आनंद ॥३॥ छंद वेअ धरी ॥ या ही क्रम मग
धफिरि आयो : साजि साजि चतुरंग सवायो : ले ले दल मुथरा पुनि लाग्यो : न य
जुन बार समह स न भ्यो : अष्टादस मजु ध कोउ दिम : करन नयो वकृस्यो
अमर घक म ॥ काल जवन प्रसंग ॥ इहि बिच काल जवन र क असुर :
पछे नारद सों अहमि निपर : ता ते मुनि कृत होतो सों : मोह च दि कोई दुद
जुधमोसों : बीर बताव कृ को उमह बल : तु जा धु जात फिरत षो जन पल :
मनअभिलाष जु पूजे मेरो : ता ते मुनि गुन मानों तेरो ॥ नार द ॥ निगमे लै
बोलि रह्यो नारद : बात निबैर बिरोध बिसारद : जदु बसदेव देवकी जा
यो : बासदेव यह नाम बतायो : कहीयत कृस्न बरन तन कारो : पीत ब
सन तन कच घुघुरारो : ताको अब अत्रात गोरतन : स कल छत्रन संगु
न सक रघन : अब है पुर मुथरा सो आये : धुरस्जन से रथ के धाये : अति
बल लेत सु जुध उधारे : महामल्ल मुष्टिक सो मारे : है मुथरा मैं नीके हेरे
हि हमने रथ फलि है तेरे : तुम सों जुध जोग्य वह जानो : अवरन को कृ
मन महं आनो ॥ काल जवन नृ[illegible]म ॥ प्र तिन र सुनो मह सुष पायो
युछ व जु ध अमित दल आयो : मलि मलेछ को रिअ यमुरा : प्रति मा
पारु बदे ह गवं रु : घन रत नयो मथुपुरी घेरा : दिसि दिसि करे उप
दल डेरा : अति बल काल जवन जब आयो : पुरवासिन तब अति दुष

पायो ॥ श्लोकवाच ॥ इहि बिधि जरासंध जो आये हैं: पुनि जादव दुअ युध पै
अष्टादश ॥ कालजवन आयो अति रिस करि: अब है जरासंध को आगम: इम
बिचारन जो मिलि कीनो: नियन बसो यह कष्ट नवीनो ॥ कबित्त ॥ राम कृष्ण मि
लि मंत्र बिचार्यो: निरजय गेर निवास निहार्यो: बिसकरमा को त्रात बिचक्षन
सिलपी दुष्ट नाम सलषन ॥ अरिल्ल ॥ कृष्ण जु ताकहं आग्य कीनी: निरजयन
गरी रचहु नवीनी: बिहल दुगम सो गेर बिचारहु: सुंदर मंदिर कोट सवारहु
कबित्त ॥ आग्या मंगल तुष्ट आयो: पुनि प्रस्तास बेत्र तहा पायो: पुरी बिचत्र ब
रका पावन: सागर मोझ सुरचो सुतावन: कृतपरि बेषस कोट सकारन: जि
हि परिकर मां ह्वादस जो जन: महा बिचत्र सुषद सुन्न मंदिर: कनक रतन म
य संजुत परिकर: दुरगम कोट चारि दिस द्वारा: बज्र कपाट सल बिसतारा
कपिसीर षग्र तिज जत्र नयानक: उपल अनल मय चलत अचानक: बनउ
पबन अति सुषद बनाए: सलिल जंत्र तहा चलत सुहाये: मंदिर यजा प
ताका मे लित तार हेम मय कलस अषंलित: जदु कुल जथा देवदेवालय: मं
लित अहय हम प्रतिमा मनिमय: बरन चारि ब्यापार बिहत बर: कारन निपु
न अस्रेषक रमकर: अंतहपुर मंदिर सोभा अति: रुचिर जथा परिकर बछि
त रति: सना सुधरमा नाम सुहाई: प्रभु सुष कारन इंद्र पठाई: सनाम नु
ज तिहि बेठे सोई: हानि म्रत्यु ताकहं न होई: पारिजात के बृछ सपावन
तोग जथा बंछित मन भावन: अरजुन सावकर्ण हय आए: प्रभु जगति हि
त बरन पठाए: दिव्य कुबेर अष्ट निधि दीनी: कमजुत जगति कृष्ण की कि
नी: ॥ अष्ट निधि नाम ॥ प्रथम पदम अरु महापदम पुनि: कूरम अरु मकम
छ नील सुनि: संष मुकंद नाम निधि मानी: पुनिये अष्ट रिषि निग्रमानी: जि
हि दिगपाल पदारथ जोई: आनि समरपे हित जुत सोई: इहां प्रभु देवी
सकति दिषाई: बीचि निमष रचना सुबनाई ॥ इहां देव सुजादव आदि
दे: ले मुथरा के लोग: तिहि छिन महं द्वारावती: पठए जोग प्रयोग ॥१॥ ति
न रछा बलदेव कहा: साम पठए संग: कछु ऐसी इच्छा कृष्ण: अदभुत रस
कलि अंतग ॥२॥ कालजवन जा स्यो कछु: लिष्यो न सु पुरलोक: जैसी
नरहर प्रभु: कीनै ऐसो कोक ॥३॥ इति श्रीभागवते दसम स्कंधे
नमाजर हदन रहर दासेन बिरचिते ॥ द्वारकापुरी रचनो ना
म अध्याय ॥ ५० ॥ कबि रुवाच ॥ दोहा ॥ कीनी यह माया अ
स: कालजवन बध काज: आपर ले पुर घोरि रहे: महा मलेछ समाज
॥१॥ रचना छै न अनर रची: कस्यो दुसह सो दाव: यह ऐसी इच्छा प्र
भुल: पूरन देव सनाव ॥२॥ निसचर के दल सो निकर: पुरते निकसे
प्रात: कालजवन देषे कृष्ण: जथा परामुष जात ॥३॥ मुनि जुबताये

होमरम सुंदर स्याम सरूप : वेई गुन लछन असस : अगर वसन तन रूप
॥२॥ कालजवन निरधार करि : पायेक्रम प्रमान : बिरथ अस सत्र बिले
किके : उपज्यो हरष अमान ॥३॥ रहा असुर रथ ते उतरि : अरु अस सत्र फेंक
प : पाछे ही धायो प्रबल : श्री नगर व प्रताप ॥४॥ कालज व न ॥ आप अस त्र
अस सत्र अरि : बिरथ हि बिरथ बिधान : अ बते पोरुष धरम यह : है स्रुति
सुध प्रमान ॥५॥ अथ कालजवन को पूर्व उतपति प्रसंग ॥ कबित्त ॥ छंद ओर
कहू काल असुर को र : जवनि द नाम सजोर : कहू जादव निके जार : परने
सुकारन पार : यह करे जर पितु पार : पुनि कछु न संतति पार : गे सु सरके तव
ग्रेह : सब मिले रहत सनेह : इक दिवस परि षद आह : सो स जन वे गिसु ग
र : कछु तर्क साले कीन : है तू जपो रुष हीन : अति न थो न जित आप : तिहि
असुर उर बढि ताप : जवनि द गोत जि ग्रेह : सब छाडि राज सनेह : रहि स थ
न बन आराधि : सिव हेत तप सा साधि : नये रुद्र देव दयाल : पुनि दरस दीय प्र
तिपाल ॥ सिव वाच ॥ हर कही तव मन होइ : सुत मागिले बर सोइ ॥ कालज
व न ॥ जवनि द जा चे जो नि : प्रभु देउ पुत्र प्रमानि : निहि रे जादव जाति
र न होइ अजय अराति ॥ सिव वाच ॥ सिव कही दयास मान : तव होइ पुत्र
प्रमान ॥ कबित्त ॥ हर साधि आये ग्रेह : सुषराज न जत सनेह : जवनि
द सुव रन जीत : नये काल जवन अतीत : बर पाइ असुर वीर : सो रैक
रै जस थीर : इहां जो निक्रम अनंत : तहा रचे माया तंत : जदुवंस उतप
ति जास : पुनि ते जो जात प्रकास ॥ अथ काल जवन दगध प्रसंग ॥ छ
दर निसचर हाक : कहि बचन तुस ह काक : पुरुष तछाडि प्रमान : नहि ब
चे नीच निदान : इहा अचल ऐक उतंग : सोइ गगन पर सत अंग : तहा दरी उ
गम उरंत : मिलि अंधकार अनंत ॥ अथ मुचकंद सयन ॥ मुचकंद
हम हीसं : अति अलस बिवस अधीस : यह गुफा सोये आनि : ऐकांत थल त
न मानि : कलपांत बीते काल : मुनि नये देह सचाल : नय कालपाता तत
र ही आर फल अनंत : पुनि करे बिवर प्रवेस : तहा सुत पार नरेस : रहि पीत
बसन उदार : नये क्रम अंतर स्तार : पद चिन्ह दे षि सपाप : रहा धस्यो नि
स्वर आप : पट पीत बसन प्रमानि : इहा हरि सोतात अजानि : अन अवधि
जाग्यो आप : मुचकंद रोष अमाप : द्रिग कोध अग नि उरंत : तिहि जस्यो अ
सुर असंत : तन जवन मान कुतूल : सो नये जसम समूल ॥ अथ मुचकं
द सयन कारन उतपति प्रसंग ॥ छंद पधरी ॥ बिष्यात जन म इख्वाक वं
स : जुवनास पितामह जगप्रसंस : पित भयो मान धात पुनीत : नृप च
क्र न ज्यो जि हि नृप अनीत : सुत नये नाम मुचकंद धन्य : विधि मुक

बेदबाचा बिसास : नवकूतहे तमुचकंदरूप : जगजेतपेयरधरमजूप
सुरअसुरआदिबिग्रहसमाज : कीयदेवासुररनबिजयकाज : रहोइंद्र
रनुवलोकआप । मुचकंद मिले मनहितअमाप । सुरराजनृपहिजाचेसा
इ : अवनीस मिलो हम मंझआर : सुरसमरजुरेमुचकंदसंग : जुवनयोप
राजयअसुरनंग : संग्रामबिजयपायोसुरेस : रहावजेगगनउउतिअसे
सा । सुरराज उ। सुरराजकह्योतुमकीयसहार : अवनीसआपसुरलो
कआर : बीतेजुकालसमहूरसधीर : बसरोसनजानेतुमकुबीर : जनग्री
यपुत्रअरुबंधुजोर : नयेकालकलितनहीरहेकोर : नवअमरहेतए
तेअकाज : अवनीसउचितबरलेहुआज : सुपछांकिराजसंपतिसम
ज : रहाजुहमारीकरीराज ॥ कबित्त ॥ सुनिसुपेबिरतिउपजीनरेस :
रहोन्योसोकब्याकुलबिसेस : बेराग्यनयोअतिबिरहबीर : सोका
धिकारसुधिगईसरीर ॥ मुचकंद उ। चिरकालजग्योकुंबिकलचेत
हैं निराबाधततासहेत · अबहोतसेनइछाअपार : बरमांगहुयहपेखि
तबिचार : कहुआनिजगावैमोहिकोर : हतदेवदिष्टममनसमहोर
कबित्त ॥ रहोनयोनसमअबअसुरयेह : दीयदरसदीनबंधुसदेह : जो
आदिरूपअपनोअनंत · सोईनृपहिदिषायोजोनिसंत ॥ मुचकंद उ॥
इहांपूछिरजअपनेसुनार : तुमकोनरहोकिहिहेतआर : ससिमि
रआगनिकैधूसंताप : अरुआहिकेउदिगदेवआप : बिधिबिष्नुरुद्र
कैधोंबिचार : रहिबिवरनसायोअंधकार : अतितेजप्रकासितअंग
अंग : अनुकहोदयाकरिनिजप्रसंग ॥ सर्ब पद्ध ॥ पूछहुकदापिमोक
हंकृपाल : तुकोनइहानयोकितक्काल ॥ मुचकंद उ॥ इक्ष्वाकवं
नयोजनमजानि : ममपितामानधाताप्रमानि : मुचकंदनाममुहिजे
गतमानि : जुधजुरयोउचितसुरकाजजानि : केउकलपउजागरअल
सआर : सुनिरह्योसोइयहबिबरपार : आयोहोकालसंजोगकोरए
हानयोनसममममदिष्टसोर : कोउदुष्टइहांआयोअकाज : तिहिमै
हिजगायोमहाराज : ममदिष्टअनलसोईसलसमूल : तिनहोतत्त
समज्योपस्योतूल : तुमदीनबंधुमोहिदरसदीन : करिकृपाकतार
थजनमकीन : इहांजनमकरमगुनगोत्रआप : अनुकहोजथापूर
नअनंतपा ॥ श्रीकृस्नबाच ॥ इहांकुसकलोतबबचनयेह : सुनिराजक
हहुंनिसंदेह : ममजनमकरमप्रतिमाअनंत : ऐकहुजपेकहुंसे
सअंत : कनरेनबुंदघनगनेकोर : तिजनमकरममसंख्यानहोइ ॥

नृपकालजनमत्रसकरमकोर: सुरतिथरथजानैंनसोर: निहचेकछुकहि
ऊँदतमान: श्रीमसिधवेदपुरान: सुवनईदुषितजबन्नसहनार:की
यथेनरूपबिधिसोपुकार: तबजाचेमाकीसकमलजात: वरबिष्णुअनेदीनो
बिष्मात: रहिहेतलयेअवतारज्ञानि: अबुबसजनमनरदेहजानि: देवकी
कृषउपजेअजेव: बिष्मातनामरूबासदेव: पूतनाआदिकंसहिसजेत:
सबहतेउषजेतेअसंत: यहकालजवनसंजुतबिकार: तबहिषजस्यो
अतिदुराचार: करिद्याताहिमेदरसदीन: पुनिइछासोईमांगहुमबीन
सुचकंधउ॥ छंदहेषरी॥इहापरमपुरुषप्रभुजानोरहि: तहलगति
दुरलभजाचीतिहि: तहालगतिदुरलभजाचीतिहि: तबअसतुतिमुचके
धउचारीय: जयोहरषअतिजोतिनिहारीय: यहजबतबमायाकरिमे
हित: हेकुरबसोकरतमहाहित: जोसंपतिअपनीकरिजानत: पुनि ति
हिप्रानसमानप्रमानत: पुरुषत्रीयात्रीयपुरुषहिधूतें: पतिकोछाकि
बदावतिपूतें: मनहितबसेयेहतिहिमांही: नारायनकोचीन्हतनाही:
जनममनुषदुरलभलहिजावर: प्रभुतेबिमुषउपासतहेपर: कामादि
कपुषसूकरकूकर: तेउरहतनिरतरततपर: नजेनमानुषजनमसु
नावन: पैसोईसमज्योनाहिअपावन: संपतिराजमजेमेघरसुष: मृ
दरलोनबचरनपरामुष: जनमगयोनि:फलअबजान्यो: मेंअपनो
नत्मतकप्रमान्यो: संपतिअेहुबंधनाज्योसग: हेसोईजीयतकरतअ
पनोहग: कृमिबिस्तसमदेहकेकारन: संपातीनअंतजोसजन: पिंडदस
येबेरप्रमानें: जीयतमरतअपाननजानें: सगहैपस्योमोहयहसंकर:
मायाबसनाचतज्योंमरकट: नापउदेमेरेसंभावन: प्रभुतवकृपा
ईजबपावन: ग्यानीलगतिलहेमनबपन: बिषमतबेछूटतनवबंध
न: राजदुषकोहेतनिरंजन: बरुज्योंकोनपरेतिहिबंधन: बंधनराजन
जेवकुनेरे: मोहनदरसनापनयमेरे: कृपासिंधममरहाकीजे: देवचर
नसेवादिढदीजे: प्रभुतवबोलेकृपापरायन: सगुनसरूपनिगुननार
यन:॥श्रीकृस्नबाच॥ पेहोनगतिनृपतिनुमपूरन: मेरोध्यानकरउय
चामन॥ दूहा॥अषेरकहीहअषिल: पसुबधकरेनृपाल: अघनास
नताकेअबे: करकृन्नमनबकुकाल:॥१॥दिवालेतीरथपुगम: पुमषेत्रजे
पार: पूजामंजनदानपन: कोहेसुधसुनार:॥२॥कमजुतजोगअना
सकरि: तजिहोदेहपुनीत: हमसहमिलिहोग्यानितब: विस्वविष्यात
बिनीत॥३॥कालजवनकोदाहक्रम: कस्योजिष्टमुचकंद: पुनिमुधरा
नरहरप्रभु: ध्यायेजुतआनंद:॥४॥इतिश्रीभागवते गणेदस

मलकं थानुसरभेना छा बा र ह ट न र हर दास नबिरची ते। इतिमुचकंदबिध
कालजवनबध॥ इक्षव न मोध्याइ॥५१॥ कबिह॥ दूहा॥ कृस्नहिं
दनपरिक्रमनः करिमुचकंद अनेक। तबानिकसे ताबिवरतेः इहांकलपब
सिऐक॥१॥ त्रतबिपरजयदेषिनवः नरपसुकुमतेनाहिः प्रतिमांलघुथिर
चरअगरः बकुबिसमयजीयमांहि॥२॥ कलिजुगआयोजानिकेः धरिमन
मोहनध्यानः चितहितउत्तरदिसचले। लषिबिपरीति बिधान॥३॥ आरब
दिरकाश्रमरहैः नरनारायनथानः करतनयेतपध्यानक्रमः परबतसुष
दप्रमांन॥४॥ तहांगंधमादनजुगिरः अद्भुतअगमउतंगः तपसाहि
तबेगेतवें आसारहितअनंग॥५॥ छै द छैआपरी॥ इहां कृस्नबलमुथ
राआये। पुरअवरोधदेषिदुषपाये। कालजवनदलघेराकीनें। पुरतेंनि
कसेकृस्नप्रबीनें। इहाबलदेवकृस्नरनआये। नषिलजवनदलमारिन
साऐ। निकरस्तारबाहकसबलीनें। कसिसमसोजसुआगेकीनें। इहिबि
चिजरासंधबलआयो। सजिधोहनितेईससवायो। सत्रहिबारजुनागे
समरः अष्टादसमसुआयोआतुरः इहांकृस्नतबमंत्रउपायो। बलकह
मानुषनावदिषायो। आगेहोइनागेअषिलेंसुर। पूरिलग्योयहछांडिपुर
धरतिरामकृस्नधरधावतः अरुषलपूरिलग्योहीआवतः परबतएक
जुनांमप्रबरषनः अथाउरधऐकादसजोजनः गोकलेसआयेतिहगिरव
र। आतुनचढेसिषरतिहिऊपरः आतुरजरासंधतहांआयो। परबतघे
ध्योसेनपठायो। जबहरियापरबतमेंजान्यो। पुनिषलदारुनमंत्रप्रमां
न्यो। गिरबरतिहिदवदाहलगायो। अनुतिहिसमयदावसोपायो। गि
रउतंगतेंकूदेगिरधरः उतरेदूरिसेनतेंअंतर। जरासंधसोमरमनंजानें
मोहनषेलकस्योमनमांन्यो। इहांकृस्नद्वारावतिआये। नयेहरषस
बहिनमनभाये। जरासंधनिसचयकरिजानें। पिसनजरेदवदाहप्र
रा मानें॥ इहांबिजयनीसानबजाये॥ अथ श्री ब ल दे व बि वा ह बर्न
नं॥ दूहा॥ राजारेवतदेसकोः रेवतताकोनांमः ताकीकंन्यारेवतीजु
ईसजप्यानांम॥१॥ रैवतउवाच॥ पूछोब्रहमासोंजगटः नृपरेवतसप्र
नः काहिदेउमसुकंनिकोः प्रभुआग्यासप्रमांन॥२॥ बिधिबाच॥ सुनिबो
ल्यो बिधिनृपतिसोंः सबनबनृतसमाज। तुमदेषेतिनमहतहांरहे
नकोउराज॥३॥ कबित्त॥ ब्रह्माकेपरिषदबिहितः बेगेरेवतराइःक
कुकारनतेंतबेः कछुबिधिघरीबिहाइ॥४॥ बिधिबाच॥ रामकृस्नहें भू
रकोः दोऊसुतबसदेवः कारनअंसअनंतकेः येअवतारअजेव॥५॥ ति
नमहजेगेहैंतहांः रूपअतुलबलरामः ताकहंकंन्यादेउतुः करउ
सिधयहकांम॥६॥ कबित्त॥ तबवहकंन्यारेवतीः गुनलछनसं

कह्यो आऊ बल्लभ कैः पूरन वेद प्रयोग॥७॥ अथ श्री रु
यम रुकमनी बिबाह॥ दुव दिस रतन रहन दिसा· पुर कुंदन सपु
करत राज नृपति भीषमकः विद्या विनय विनीत॥८॥ पुत्र पंच इक
तिः सुत लछन गुन लाजः कुल सुधरम क्रीडा करतः संग समान
॥९॥ छंद पधरी॥ कहि प्रथम बडो रुकमी कुमारः पुनि रुकम ब
ताअपारः तीसरो रुकममाली समथः पुनि रुकम केस चौथो प्रसि
धः पंचमो रुकमरथ अति अनूपः रुकमनी पुत्रिका श्रीया रूपः सुलल
छन गुन महिमा समान· निगम नीति निगम बाचा निदानः गुन रूप सील बु
धि बल सुभावः प्रतिमा प्रसिध देवत प्रभावः सुनि बासदेव महिमा अमा
न· पै नियत बखानी जे पुरानः रुकमनी उपजियो अनुरागः नई द्रसक
जरुछा सभाग· सिव सिवा हेत नित ही करे सेवः दीजे वर मो कहं कृस्न देव· पु
त्री वर प्राप्त भई पेषिः वदि पिता चित चिंता बिसेषः नीषमक राज रुक
मी कुमारः कुल वृध साव निकी नो बिचार॥ राजो वाच॥ नृप कहो लोक
भक कहं करि निदानः दीजे यह कन्या रतन दानः बसुदेव पुत्र जदु बंस वि
रः सब अंग सुध सुंदर सरीर॥ रुकमनी॥ करि तर्क बोलि रुकमी कुमार·
बयरथ हेत कछु बुधि बिकारः करि तबे कृस्न नंद कुमार· दुयि नृप वाथं
कीय सो विचारः पुनि कि लोक वर सो जग प्रसंसः विख्यात बीर अरु चेदि बं
सः तहा रुकमि सब निसोक सो टेरि ः हम बंहन दई सिसुपाल हेरि: रु
रु अदिन लगि कवर कीनी उपाधिः सिसपाल हिय उयो लगन साधि: यह
सुनत भयो अवर निउछाह· दुख बढ्यो रुकमनी चित दाह: हा कृस्न कृस्न
हवानि होरः करुनह प्रान अवलं बकोरः आपनी दसा दुष लिख्यो आप
दुष्ट कहत कागद हित अमापः यो समय साध इक बिप्र आरः पुनि ताके
रुकमनि बदि पाय॥ रुकमनी॥ द्विज जाऊ बेग द्वारिका देसः स्यामहिं
य हकहिबो है संदेस: अरु देऊ पत्रिका कर अनंतः तो मा रुस बेम मरू
दय नेत॥ कवि· रु॥ तब सो यो कुंदनपुर द्विजातः पुनि जाय पो द्वारावती
प्रातः द्विज आयो सो पै राजद्वार: अनुग्रह करे ले प्रति हारः इह आबास
देव ऐको तंआरः लीनो सवि प्रनीत रबुलारः पुनि दयो पत्र तिहि कृस्न
पानिः मुसकाइ लयो मन हरष मानि॥ कृस्न उवाच॥ पुनि पूछि आप हित चि
त प्रमानः द्विज कहो जथा आगम निदान॥ विप्र वाच॥ बिलबे सवि
है पठ विचार· या वीगी मे सब समझि लेस॥ कवि रु॥ तहाँ कागद
हरि कीनः अनुप्रेम अंक दृग बेग बीनः नव उपजित हो सानिक
आनंद अश्रु रोमांच अंगः बांचे नृप रंगद गद सुबांनिः

हि विप्रपाति॰ द्विजबांचत रुकमनि बचन दीन: पत्रिका सो ऊजो लिषिय व
न॥ दोहा॥ श्रवन निगुन लछन सुनें सोई उर बसो सरूप: तातें मैं तन प्रान त
व अरपन करे अनूप॥१॥ जो कहि है कुलक निका: उचित नयह आचार: प
ति हि बरें जो आपने: पूछे बिनु परिवार॥१॥ रुकमनी के सब यजुगक नि
का: ऐसी को नअजान: परम पुरुष को पर हरे: अरु बरि है नर आन॥
छंद पधरी॥ मैं बरे नाथ मन करि निदान: मन ही को कीनें कृत प्रमान: मे
हि बीर तागे जानो बिसेस: नहि चेति जोग त्रिभुवन नरेस: बलि सिथ
पाजं बुक बिकाल: पावैन अंत कूरे कपाल: मैं जनम जनम अरुगे स नेम
प्रभु करज अप हुतदान प्रेम: मोहि बीर तागगुर जन अराथ: उपरे जलास
यसंग साथ: इसा रिक्षरे सुनकर म अंोर: गिककाल पात्र अरु पुनिगेर
दीजे पूलता को यह देव: सरब था करो प्रभु चरन सेव: मन गताकरु
मी मदा अंध: ससिपाल भरा सिमो हि कीय सबंध: सोऊ पुनि अहै सेन
साजि: तिरितु मसो जे हैं समर ताजि: अबि के देव देवल उतंग: पुरबाह
रि है पूजा प्रसंग: उछाह दिवस तह प्रथम आर: सुन प्रजा लोक रिकुमु
र: हरि मोहि करो रास सबिबाह: दुष्टनि के परिहै अदय दाह: कहि हि
कहापि प्रभु नीति कोइ: हम पे अनरथ ऐतो न होइ: सिसपाल रूप गुन
प्याति सुथ: पुनि चेदि बिस पुहवी प्रसिध: थित चंदेरी तिहि राज थान
उनिक वनदोष तामह प्रमानि: प्रभु चरन रेन बंछित प्रसिध: बिधि
रुद्र बिबिधि सनकादि सिध: अब यहै दान दीजे अनंग: सबकाल रु
ऊ प्रभु चरन संग॥ दोहा॥ प्रह जो पैन हहो इअब: सुनिये स्याम सुजा
न: कारन जिहि तिह कष्ट करि: प्रभु मांगों मम प्रान॥१॥ कहो बा
चि द्विज पत्रिका: समाचार समार: ऐसी गति दे षी उहां: रुकमनि
जा हे राइ॥२॥ इह जु कछु कारन उचित: करिये बेग कृपाल: देव
लगन के तीन दिन: पुनि आगम सिसुपाल॥३॥ इति श्री भागव
ते द सम सकंधे भाषा हरनरहर दासेन बिरचितो। रुकम
॥नी पत्री लाम॥५२॥ कबित॥ दोहा॥ स्याम श्री या स देस सुनि प्र
ती अकस प्रेम: उपजि उछाह बिबाह उर: नरहर प्रभु कृत नेम
॥१॥ द्विज वं हि रुकम रीये दुष्ट: मन कीय दोष मलीन: ब्याहन
रे को बिघन: क्रम अछि प सुकीन॥२॥ महिपाल निको मांग मिलि: के
नाले उ सकाज: जैसे मंगल दा रूम धि: सेना सुन्तर समाज॥३॥ जो नीत
गवन नीक जब: सुंदर स्याम सुजान: हित कर दारक सो कह्यो: प्रीयर
थ सज कुप्रमान॥४॥ कबित्त॥ मैं थ प्रभु हप सुग्री व मिलि सेन व

लाइकसेग॰ कमचास्यौ हयजुकतकरि : आंनोरथग्र नतेग ॥ छंद पद्ध
री ॥ गहिला हो द्विजको करगुपाल : दिअरथग्रो निवेगै दयाल ॰ आंनरत
देसतें चलिउदार आये विक्तम हिमां अपार : जोमोरजनीमुषर भजपे
न ॰ इहां प्रातसमय आये अनंत ॰ ३१ वनकहेउ नरेसांनि आप ॰ सुनुदेव
सकति पूरनप्रताप : बसपुत्रनृपतिनीषम विसेष : ३ छाहमाऊकी
लोग्रसेष ॰ करिहोराकों कनविधिजुकीन : विविलरबंसपूजाप्रबीन
निसिपनगरसोभानिहान : बाजेअनेकवाजित्रविधान : सुरपूजाविप्र
निदानसाधि आपनेदेवदेवीअराधि ॥ दहा ॥ नगरचंदेरीकोनृपति
सोरमघोषनरेस : ताकोहैसिसपालसुत : दलबलपूरनदेस ॥१॥ जरास
धपेदुकजथ्थ ॰ बीरसत्वविष्यात ॰ देतद कतन पग्रादिदे ॰ आयेबिर
तबरात ॥२॥ कलोबधउवाग्रांनिकरि ॰ सुनुआगमसिसुपाल ॰ आगे
केलीनैंउमगि ॰ कवरकक मलनकाल ॥३॥ जनवासोदीनोजथ्था ॰ मनवं
छितमनुहारि : होनलगे मंगल हरष ॰ सबैसंनारि सनारि ॥४॥ संकरषं
नजबहिसुन्यो : कलगवननिसिकीन ॰ सेनाचतुरंगीसजे ॰ पुहचेप्रातस
बीन ॥५॥ छंदढेग्र षरी ॥ करतबिलपनमन महरुंन्यो ॰ धीरनरहत
कहतयोंधंन्यो ॥ रुक मणीवाच ॥ आयेबिमनमोहनआये : इहाकछु
कारनदैवउपाये ॰ कवकुठेरनऐसोकीनो : दीनहिदरसतनतछन दीनो
दीनजहांजहां देषिदुमारे : पूरनपुरुषनतहांपाउधारे ॰ नैनमूदिधरिध्या
ननिरंतर : हाजदुनाथस्यामघनसुंदर : बामनेत्रभुजफुरकेबामो ॰ सो
ईबिसवासभयोउरसामों : याहीसमयनिपसोआयो : पहलेजोरुक
मणीपठयो ॰ कंन्याद्विजकहबंदनकीनें : लछनदेषिमोनसुनलीनें
उलिषिविप्रबधाईपाई : सपतिजोकछुचितसुहाई : कोऊबाकेवं
सकहवे : अजऊताहिदरिद्रनआवे ॰ रामकृष्णआयेसुनिराजा ॰
करीबिदनारा हितकाज : दीनबंधुनिहितुरजनदेषे : बेरकंन्यासे
मजोगविसेषे ॰ सुपेपरसपरकहतसुनाए : येनृपअवरकहाहैं
आये ॥ रुकमणीजीअंबिकापूजनअसंग ॥ पारस्नचलीअंबिका
पूजन जथासषीसंगलीनैंपुरजन : सहजसिंगारगंधतनसोभा :
लीलादेवीपूतिहितलोभा ॰ संगसेनांचतुरंगनिसाजे : बीरचलेब
ऊबाजनबाजे : करचोप्रवेसदेविदेवालय : मेवाफलनवछितउर
अतिसय : करिपूजाअर्चन्योकीनी : नांमनिहाथजोरिरसभीनी
रुकमणीवाच ॥ किंकरिजांनिकृपायहकीजे : देवीमोहिकृष्ण
वरदीजे ॥ कबिरू ॥ लयेप्रसादतिलकफललीनें : कंन्यापरम
महोछवकीनें : इहांदेवालयबाहिरआई ॰

...गहे बामीया: कीयबिसतारसुलछनकाया: रहाबीर
हीकजोश्रोने· प्रतिमामनरूपषानश्रमोने· नावीजोगमोहसाहन्नट: सबै
रेमायाकैसकेर· याहीसमयरूक्मनहाश्राये· साधसजनमनश्रथकसु
हये· श्रीयकोप्रतिमादेषिश्रनीनी: कैन्यातनछबिश्ररपनकोनी· महा
हरषकरकरछिमुरारी: रूकमनिलैरथपरबेगरी· मलेसबनिकेमद
मनमोहन: प्रभुलैचलेकनिकापावन: श्रपनीबलिधरिलेतश्रचानक:
ज्योंमृगराजबिसारतजंबुक: रहासिसपालकुकसुनिश्रारत: महागरब
करिबोल्योमरस्मत॥दोहा॥देषकुबालश्रहीरके· सुरमहामतिमंद: क्री
चेरीनपकैनिका: दुहपरेजमफंदा॥१॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेद
समस्कंधानुसारणेनाभाषारहटनरहररासेनाबिरचिता।रुक
मनीहरनोनाम॥ त्रेपनमोश्रध्याय॥५३॥ कबित्त॥दोहा॥श्रीचका
रीपुकारयह: घरघरपरेकपार: श्रारस्योकछुनोकछु: गयोदरयहुग
टा॥५॥कबित्त॥सेनउन्नयकैसावधान· सनोहनुसजीय· बीरवित
बिकसीय· गहरसुरत्रंबकगजीय: हयहेषारवगजनिगाज· नरमार
मारसुष· परिकाथरउरकंप· सुरसुरलोकगमनसुष: षेचरीषेहसु
रहलश्रषिल· श्रर्कजोतितिहिश्रंतरीय॥सिसपालसेनचतुरंगसजि
सुरसमरसुषसंचरीय॥१॥ सबलसेनसंक्रमीय· धराधुरयातथ
संकीय: कोलकमठकसमसीय· चरकचरचितचमकीय: सेनसुरसम
हीय· बीरबुकोरवबजीय: हयगयनरहलमलीय· श्रीयपलचार
गरजीय· रनत्रयेधनुषटंकारवन· संषनादसजीयसघन: माथवय
नगससिपालमिलि· भूमिभारटरिहैनवन॥२॥मारमारउचार· म
हासंग्राममसुमचीय: कनककुंडलकोदंड· षेयलगेगुनषंचीय: मरु
रेनवसेन· तासश्रायासरुश्रंतर: हथसंमिलिघुरबेह: नयोतममर
नयंकर· उतपनत्रासरुकमनिउराहि· रोमउन्नतहाकंपतन· त्री
यलषीकसकोनरनबिहि· मोहनसत्रमछारमनन॥३॥रहाबील
श्रषिलेस· नयननदेसंनावन: श्रंधकाररजउरुन· नियतयेसम
हरलछन· करुउषतवकाज· मानमर्दनरनमारो: श्रनलसेनामि
सुपाल· बीरसमसषाबिकारो· संकरषनमिलिमाधवसकल· कि
नवोनबरषाकरीय: कुंडलकिरीटसंजुतमुकर· पिसनरथीसिर
उवपरीया॥४॥ सजिसारंगसारंगपानि· समबेरसंनारीय: समर
नसधोन: कविनमुकेनयकारीय: उनिहयगयनरपरीय: लोषि
परलोघिजुलगीय: हयगयनरहलमलीय: श्रीयपलचारगरजीय
पतचारप्रेतपायेत्रिप्त· नारदकौतुकरचयो: सुरकाजसिधनरह

सुकबि · जुवनतीनज सजयनथै॥१॥छंद्‌ द्वैअषरी॥ जरासंधरैआदिजुआरे
सबैनृपतिससिपालसहाये · साजे षेतछांडिजेजुवपति: उरहिनिसाससमात
आसअति: नजत सेनससिपालकुनाग्यो। लसोचदेरीमारगलाग्यो॥छंद॥
समहरनाजेराजसब: आनिनयेऐकंत्र: बिषमजथापरिबातबस: नरवर
बिधुरेपत्र॥१॥देषेजब अतिहीदुचित।पौरुष हतसिसुपाल आगधताहि
बोधमिलि: करतनयेति हिकाल॥२॥मा ग ध बा च। चेदिनर हो चिंताउ
चेत · पुनितुमसमरप्रबीन · ज थासानककुजयअजय · नि ह्वेदईआधीन ·
॥३॥कामरीजोपत्रिका: नरबसनचित निदांन: समकायो आनीसबे: अनु
बसआहिप्रमांन॥४॥ सत्रहिबार सकेलिमें: अहो हनि ते ईस: लेलेजाद
सोलस्यो अजयदयोतउरीस॥५॥ आयोबारअगर ही · सोपैदल बलस
जे · तबजारचमोसोतहों · नयकरिनिकसेनाजि॥६॥अबतोकाल बिसेसयह
रतेनृपतिमिलिआर: लघुसेनासोंषेतलरि: अगटपराजयपार॥७॥कारनक
नप्रकोधकरि: समझायोसिसुपाल · अपनेअपनेअ हर हो: पुनिसबगऐनृप
॥८॥छंदृ उधोर॥ ससिपा लप रा ज य॥करिकोपरुकमकुमार · बपबीरर
नबिसतार: सना हक सिनूनीर · पुनिसकलआयुधधरर: थरनगरसुनिय
धाह: बरिकबरिराहुसब्याह: पुनिअगरसुनरप्रबीन: कहिसुपसनंग्याकीन
कै मबा चा॥सबमारिदुयनअसेस · पुनिकरूंअेहसबेस: रहाफरि कंनाआनि
पुनिचेदिआहिप्रमानि: अतिक्रोधरथआरोह: संगसेनचदितनसोह: पलक
नको हतिषेत: समजीतिसेनसमेत:॥कबिरु॥ रथहाकिरुकमकुमार: अब
नेकरआनिउदार: रहदुहकहिदुरबार: बपुजरतरोषबिभार: रहा रूलसन
षअानि: पुनिसज्योचापप्रमानि: अबमांकिपगआस्तीर · किहिबेसउपजो
और जेसेगनि सिबनजांहि · हैंगोपिकाबेनाहि · सर निकर बिधसरार: नहिय
निलुभतअहीर: ते कबरिते लों छांकि: मम समुष के पगमांकि: करिकपदजुध
राल · कऊबिजयपारअकाल · अब तिहीधोषेआज: करिसमर मरिनअ
ज॥कबिरु॥करिकोपरुक मकुमार: सरतीनमुकीयसार: तहांरूसहति
थतास: कीयबिसषमारिबिनास: चवबानबेधीयबाजि · तो रीसतजु
सरसाजि: दिर धजपताकोदंरु: षलकरेत्रयसरषंरु: बहिचापसजीयत्रं
: पुनिरुसत्रेदिसमांन: जोरदुसहसजिकोदंरु · बिजिरूलकरतसुप
: पुनिपरिघपट्टिसपांनि · असिसूलजोपेआंनि अरुसक तितोमरआनि
पुनिकबिनचरमप्रमांनि: असादिआयुधघोर: सजिहतेरुसमगेर · द
होउतरिरथतेआप: धरिषगकीनोमाप: रहारूकमपरजलिअंग: परिजथा
दीपपतंग: पुनिषगचरमप्रबीन: रूमरूस तिलतिलकीन: सिररुकमछे
तस्योम: नयउपजि बोलीनोम: जोगेसतुमजगदीस: अप्रमेयअमर
ते: रुन
अधीस॥रुक मणीउ॥यहत्रातमेरेआज. १४

चितयरुकमनिओर: कछुहसे कवरकिसोर ॥कबित्त॥ इहो रुकमपाघउ
रि: दीयमेरबंधमुरारि ॥दोहा॥ उरकंपत सुकतअधर: नहिआवतमुष
न: नयो बिलोकत नातको: चितरुकमनीअचैन ॥छंद पधरी॥ मुषम
छअरयअरुअरअमुक: तिहिकसोमूकि बिपरीतनूक: सबगयेसंगतजि
पुतरसाथ: रहबांध्योरुकमीकरिअनाथ: इहिसमयरह्योबलदेक
र: सोछेदिबंधदीनो छुराइ॥ बलदेव बाच॥ संकर षनकीनोसमाध
न: दुषसुषकरमफललहेनिदान: करियेनरुकमकअवसोचकोर: हो
सोरह्योदेवहोर॥ बलदेवबाच॥ रुकमणीप्रति॥ पुनिकह्योरुकमन
सोप्रमान: यहछत्रधरमदुरगननिदान: संग्राममचेंमुहसमरसिध:
निहचैत्रातत्रातहिप्रसिध: त्रीयकूमितजगहंकारहेत: घनजानितैं
अमेषेत: यहषत्रधरमदारुननिदान: पुनिहमहिदोषनाहिनप्रमान
मनमोहकरैमानुषमलीन: यहपेअनंतमायाअधीन: त्रातकेहेतपति
सोकुताव: सोत्रीयामरमनाहिनसुताव: उतपनसोकतवचितगोति
कैहैबिम्पानकरितासहोनि: त्रीयअवचनसुनेजदपिप्रबोध: तउकुवरुक
मनहीछुटतक्रोध॥ रुकमा॥ बसरोषकवरबोल्यो॥ बिचारि: हरिगिह
प्रतोंप्यारीहारि: अरुदेहदसाथहलरीआज: उरदहत रुतेउपजेअका
ज॥ कबित्त॥ रनजीतिकृस्नजदुबंसराज: सबकुसलसंगसेनासमाज
रनषेतमोउरुकमीकुमार: रह्यनगरबसायेअतिउदार: नोजकट
यो तिहिनगरनाम: धनबिरचिजथासुषधामधाम: तुनबसोतह
रुकमीनरेस: पुनिकरनकुंदनपुरिप्रवेस: ॥दोहा॥ हरिकीनोरुकम
निहरन: जीतिसबेराजेस: कृस्नपधारेद्वारिका: सोसुनसगुननरेस
॥१॥ हरिअरिहरिजीतेजुरन: पानिग्रहनसपुनीत: मिलिसुषतनोते
कमह: गावतउछवगीत ॥२॥ इति श्रीभगवतेम ह पुराणेदस
मसकंधअनुसारेण नाथाबार ह टनेर हर दासे नबिरचितो रु
कमणीपाणिग्र हनोनाम॥ चौदनमोअध्याइ॥ ५४॥ कबित्त॥ क
बित॥ अबिलरीसकोअंस: मदनयह नाममहाबल: नीयतपद
कोउनाहि: दुगमचतुरंगनाहिदल: बिसमपुहपधनुबान: मह्सुर
बी मिलिमधुकर: कृततथापित्रयलोक: बिजयचितबिकलवर
वर: करिकपटअह्रतपनगकह: सनुनावसाथ्योसमो: सोकामरु
नतरहरसुकबि: नवदिगमंगलनसमतो॥१॥ कबित्त॥ कामज
यो हरकोप्रकरि: अंगीनयोअनंग: कलपंतरबीतेकरक: नयेप
सुअंग॥ ॥१॥ कृस्नदेवइछाकरी: मायाहईविप्रमानि: कारनमो

तिमनोजकी: उरमह प्रगटी आनि॥१॥ नावीबस रुकमनि गरभ: उपजौ
अंसअनग: प्रदुमनि नाम सुपरम प्रीय: अति सुंदर अंग अंग॥२॥ कृत उ
छवंस देवकुल: अहअह मंगल गान: जातकरम कीनो जथा: दीने
बिप्र निदान॥३॥ आदि बिरोध जु सुर असुर: संबर दैत संघारि: हस्यो ब
लरस दिवस महं: दयो उदधि सो डारि॥ छंद पधरी॥ वह बाल गिल्यो
कछु मछ आनि: परिमछ सु पै जाल हि प्रमानि: कालंतर आगे जस्यो का
म: बनिता रति नामा तास बाम: पुनि आगे ति हि कि उजनम पार: इहि
जनम त्रीया इकन ईआर: नि ह्वै सोर मायावती नाम: कृत निपुन
सु तीजन कारिकाम: संबर के सो पेस रूपकारि: सब कानौ तिकरैं तो ज
न सबारि: वह मीन समर थो कीर आनि: पुनि संमर दीनो दास पानि: मि
लित ह बिदारयो उदर मछ: परदमनि तह निकस्यो प्रतछ: जब माया
वंती पुत्र जानि: व हि दया जु कन्तरी य बाल आनि: य हक रे बाल रदा स
नेक: व हा आयो नारद समय ऐक: मुनि कीनो मायावती मंत्र: तहा सबै
बताये गूढ तंत्र॥ नारद उ॥ यह बालक है कामावतार: रुकमनी गरभ उ
पजो उदार: प्रदमनि नाम यह कृष्न पूत: अरु अंग अंग सोभा अभूत: देव
तप्रताव रहो सु निनिदांन: पुनि जयो द इ पूरन प्रमान॥ मायावतीउ॥ नाम
नी चितन रता रनाव: यह साधस मझि धर महि सु नाव: इक दिवस ग्रह
वेगे अग्यान: बिधिजु कत कर तर हा साधबात: करि हव नाव द्रिग नेह
कीन: निरधार उपजि माया नवीन:॥ प्रदमनि बाच॥ प्रदुमनि कलोक
रिबुधि प्रचार: कछु आज बिलोकनि मह बिकार: इहो नो हिन समम्यो
परत आज: कछु कहियै कारन जथा काज॥ मायावतीउ॥ मायावती उतर
दयो भल: करतार मथे मोहि सानकूल: लै आदि जनम तै जथा जोग: पुनि
कहे सबै पूरब प्रयोग: तुम कृष्न पुत्र रुकमनि कुमार: अवतार सुमन
मथ को उदार: अनुमानहु मो कउ रति प्रमान: रिष मोहि कह्यो नारद
निदान: यह संबर तेरो सत्रु आहि: तन तंग करउ अब बेग ताहि: जन
मातर धारी देह जानि: अब नो संजोग बिधि लिषत आनि: उरजन नित
बैपरजरति ऊक: कुररी बिहंग सो करति कूक॥ क॥ बिरु॥ पुनि समये मा
यावती पार: परदमनि कहं बिद्या पदार: करि मरेजद पिउपचार कोर
जिहि हेतन्त माया न होइ: परदमनि रहा अवकास पाइ: संबर सो जा
च्यो जुध जाइ: निसचार स्वरन हत मन कुनाग: सो उग्रो गरजि आयास
लाग: करि कोप त्रसुर आयो करूर: सिर प्रदुमनि बाही गदा सूर: नि
स्चार गदा बाजी निघात: सो नयो प्रद्युमनि बज्रपात: बरबीर कवर

तिव विसेष: सोग हाल्गि कीन्हे तेस: सु मनि गहाकीनी सुहार:
गये गगन संवर कुवार: गुलिक पिसाच गंधरब गोन: अरंगी राह
असमान: इमादि करी माया अनेक: रहि विरकाज न हिसदो येक:
उ हिम हेतन बमोन्लेय: सुत लोक सुर आये जग: कारबगक
नु मनि कुमार: हतनी सदे हसेव र कुवार: सुक्की हिसहन
कोन: उ दिव जे देव तु हुसै सकाल: तिस गहे ह्यालरतेक: ग्रसर
लिकी उ विगो रूप: सेपहु मनि नल मारग कुल: उतलो गेल सु
भोजार: हुव वहे आगनल ओर हेपि: नरी राजन रानि विलह्य वेरि
तन रूस हे पिसुम तिस रूप: ग्रेरूप वव रूप रुव न ग्रह रूप: रसनदे
गेलर सो रूप: पुत्र लिखि नीत कोन: न लप: पुत्र लोव हली लिनु पिल
लिश न के विश्व पलेसुर: ध्रुव वर्तन लगे कुवकु अधार: बेहत
को निक विव: लापे अधर मति निल लनल रूप: बेला ही वितव विक
जे नम: रूप सो नव सुतव लरकोल: सो तम रिल मल लेत मन
के कल हे कि कुरक ल गेत: तेहे वगरी लिकी लोलि सोन: अलव वत
लन रूप अ: रूसन वित कलन कार: सुख सो पसे लोर
लो हे वो वो बलह लिलिह: न कल पहि कल पल लो लिर: उपस
न लिति पि हि हे: हीनीत व वर सन वो लह्व: ग्रेल पुत्र सपरु
ग्गा मनि लि व आप रूप रुल: कहु तहपि न बोल रन केल: चरन
हरि हे सन अग्र: तन दर सहये अपने सुनार: नारद मुनि स्वक
नी न परु मनि हने सब सनन: जो हती ति हिये त पहु मन
न सन सब हि हललार: हे: प्रसन्न पल नारद नो: सब विर ले
ने: सीत कीलक वीहुसे: रह परुमनि गर: सब लल
कलन: लये पुत्र बलार: मात पुत्र सहन विति: लाति कदे सुन
कल वत र वसुदेव की: हिरन वल लहे: कल्व विलोकि
बुध सनेत: रुव माने तिव कहे तुर: सव रघु सुर ले: लहरि
कोरे हवे: उहब लहस: ... सी गन ले: सम हल से
... [illegible] ... विर वि ... मुह मल जन ... सर:
... को को ... सति लाल के व्याकुल: उनि जाइ वस
ले: हि जालि लि पीत सुः की हे हम व सपति: ... हे
... स्व लान सब जेसला को: हरि निज पासह कहे हलत लाको: सिव ली
सबेव ककसल को नी: हि लि करल हि सह लोहि हे नो: सनि के सिसे
नो: म लि निलु: हकि के सि सरको: सि कुलल: व न सनि ले सबल
गुहे: ... हसिन वे व लव हिल सिरवो पे: हे व ल मह रासि मनि

दर॰ प्रतिदिनसे वेताहि नगतिपर: सोनो अष्टभारमनिआवे: पेसे
ई निससत्राजितपावे:॥ भार संख्या कहिता। चारि ब्रीहि एक त्रि
रम॰ पंच गुंजा पण विषय: पण सु अष्ट एक धरण॰ धरणते ईकरप
बिसेषय: कर्ष चारि पल कहिय॰ पल जु सत तुला प्रमानीय॰ बिस
त तुला मिलि बिहत॰ भगरय ह भार प्रमानीय॰ कर्णादिग्रादिराज
जु कलि॰ कनक दये तिहिकि निकहे॰ कहि गिनत जथा नर हरसु
कवि॰ ऐक भारप्रमानयहा॥१॥ छ दर्वेग्न प्रीरहे ज हायहमनि
अधिकारीय॰ सुवतहाकै अरि॰ भ्रन भारीय॰ दुरलहमरी मरपव
यहाहन: आदिमा धि निसग्र सुत निवारन: मनिय हलहनव
पेमाया॰ देवजोग है सब सुषदाया: कलह दीनी नाहि सकारन
याते उपजत असुनअकारन॥ बस देवे बाचा॥ हल बसदेवकह
यो ऐसे: ज्यो जिहि जो पपदार थजैसे॰ जो मनि उग्रसेन कहदीजै:
कारिजनीति धरमयह कीजै: मनिके गरब बवचन नहीमांन्यो॰ जथा अस
न आगमन हीजा न्यो: सत्राजितके अनुज सहोदर: सुपेप्रसेन नाम अति
सुंदर: निरन्तय एक दिवस तिहि लीनी: कंमबांधि मनि रूषन कीनी। अ
पउ पायो: आषेटक हित बनयन आयो: पकरिकै ध
रखो मिलि मृगराज प्रसेन हि मारयो: मारिया हिले च
तहा कै ग बाधी सो पेठि हि: आर लिलो रहारी छअन्चान
जैट भयो नक॰ जामवंत जो याजरजीरन॰ दहासियसे
: मनि लेपे गेमहा बिवरम है: जामवंतको अहकु तो जह
हित जारी। सो मनि लेपलना लटकाई॰ इहा सत्राजित
मेनि सहत प्रसेन न पायो॰ असहमो नियत लवधस्यो
न कूमलोनी मनि॰ नगर मोरुय हबात प्रमानी: जह
राजा नी: कलह बिचारत वे यह कीनो॰ दुसह दोष कृ
मो हि दीनो॰ भलो चित चिंता बढिगाढी॰ रूलत हाय दृपधतिकाढी॰
जादव वृध सेगती ने जेन: तहां जु नाथ जु आये तत छन: दहा प्रसेन म
तक हय पाये: सब हिन के मनसे त्रमछाए॰ चरन चिन्ह लेचले सचेत
न: तहां सिंय सोल लो मृतक तन: पुनि पस अंकरीछ के पाये: अब
सब बिवरद्वार मिलि आये: दुरगम तहा बिलोक्यो कि दर: तामह सो
जनि हरि निरंतर: गरत प्रेवसकें तहि हि गिरधर: हम्यादव जनर
षेवा हर: आप कलत हाय से अके ते: षेत्र षेलत असो बहि पले पा
लना सो बाधो मनि पाई: कादि लई सो कवर कन्हाई॰

पौरुष बिसेष : सो गदा नंग कौं असेष : प्रदुमनि गदा कीनो प्रहार । चां
गयो गगन संबर कुचार । गुलक पिसाच गंध्रब गोन : और गौरी रास
अप्रमान : इत्यादि करी माया अनेक : इहि गोर काज नहि सस्यो येक :
उदित हत तब आनि नंग : गुव लोक असुर आयो अनंग : कर षग का
प्रदुमनि कुमार : कृत सी सछेद संबर कुचार : सुर करी कुसम बरषा प्र
कास : पुनि बजे देव दुंदुभि प्रकास : रति इहा दे हुअंतर सरूप : अरु दे
सक ति कीछ बिअनूप : सो प्रदुमनि नभ मारग सुतार : उतस्यो अंतहपु
मांझ आर : दुव गदे आंगन मांझ देषि : नरी राज रमनि बिसमय बिसेषि
सम रूप देषि प्रदुमनि सरूप : अरु पीत बसन रुवन अनूप : इहा रुकमनि
अंतर सोक आप : पुत्र हि सिं नारि कीनो प्रलाप : पुत्र जो न इति हि सुधि नपा
सुत ध्यान क स्यो अपने सुनार : धरआ वन लगे कुच दुग्ध धार : वे दूसत
कीनो तब बिचार : सारंगधर प्रतिमा तन सरूप : वैसी ही चितवनि छबि
अनूप : करुना थान दसुत बालकाल : सो समरि होत मम चित साल :
ह जीवत र लोकि कुकरम जोग : मो देव आं निकीनो संजोग : अरु बालमु
जो मम फुरत आज : कछु सु चित है कल्यान काज : सुत धस्यो गरभमें जो री
सनेह : हे वह बाल यहै निसंदेह : गहा कलप निकलप नलयो चेत : सुनसु
न होत हित प्रीति हेत : दीनो तव दरसन बासदेव : अंतहपुर आये प्रभु अभे
व : है आप विस्व व्यापक अनंत : कछु तदपि न बोले रमाकंत : यहां नार
द या ही समय आर : सुनदरस दयो अपने सुनाइ : नारद प्रसंग सब की
नि दीन : परदुमनि हस्यो संबर प्रमान : ज्यों रति हि दयो उपदेस जार : सो
बात इहां सबहि न सुनाइ ॥ दोहा ॥ अरु अपने नारद गयो : सब बिरतांत
सुनाइ : बाल काल को बीछुस्यो : इह परदुमनि आइ ॥१॥ महल्ला गत
रुकमनी : लयो पुत्र उरलाइ : मात पुत्र संप्रेम मिलि : सा तिक लयो सुनाइ
॥२॥ कृत बसदेव जु देवकी : हित उछव सुत हेत : कमल बिलोक्यो सुंद
र बधू समेत ॥३॥ रन मास्यो संबर असुर : सब हरषे सुर संत : नरहरि प्रभु
के ग्रेह नव : उछव लये अनंत ॥४॥ इति श्री भगवद दसमसकंधे ब्रज
बार हरनर हरदासेन बिरचितं प्रद्युमनि जनम । संबर । दे
बध ॥५५॥ कबित्त ॥ दोहा ॥ सातिन्ता मा के बाउसुष : पुनि जादव प्रति
पाल : हितजा मोती पो निग्रह : करि है कृष्ण कृपाल ॥१॥ छंद चौपई ॥
जादव नाम सत्राजित जाको : तरनि उपासक कहै हतताको : सेवा तिहि
मन बच क्रम कीनी : दिनकर ताहि महा मनि दीनी : मनि जु सिमंतक
नामो निरमल : जाके तेज प्रकासित भूतल : वह मनि लै सत्राजित
आयो : इहि प्रभाव सब हिन सिर नायो : देवल महर राषी मनि सु

दर॰ प्रतिदिनसेवेताहि नगतिपर: सोनो अष्ट भार मनि आवे: ऐसे
ईनिससत्राजितपावे॥ भार संख्या कवित॥ चारि ब्रीहि एक त्रि
रन॰ पंच गुंजा पण पिषय: पण सुअष्ट एक धरण॰ धरणते ईकरष
विसेषय: कर्ष चारि पल कहिय: पल सु सत तुला प्रमानीय: विस
त तुला मिलि विहत॰ भनत यह भार प्रमानीय॰ कर्ण दिआदि राज
सु कलि॰ कनक दये ति हि कि तिकर॰ कहि गिन तज थान रहर सु
कवि॰ ऐक भार प्रमान यह॥१॥ छ दरैत्र ष्रीर है जे हाय हमनि
अधिकारीय: सुवतह कै अरि ष्टन न्नारीय: दुरत दुमरी मरपक
यह फन: आदि मोधि नि सग असुत्न निवारन: मनिय हग्हनन्म
पेमाया॰ देवजोग है सब सुष दाया: कृस्न हि दीनी ना हि सकारन
याते उपजत अस्तु न अकारन॥ अत देव बाचा हर बसदेव कह
यो असे: ज्यो जिहि जो उप पद होय जे सो॰ जो मनि उग्रसेन कहँ दीजे:
कारिजनीति धरम यह कीजे: मनि के गरब बचन नहि मान्यो: जथा अस
नआगमन ही जान्यो: सत्राजित के अनुज सहोदर: सुप्रसेन नाम अति
सुंदर: निरनय ऐक दिवस तिहि लीनी: कम्बाधि मनि भूषन कीनी॰ अ
ष्ट उपायो: आषेट कहि त बनघन आयो: पकरि कुंप
स्यो: मिलि मृगराज प्रसेन हि मास्यो: मारिया हि लेच
तहा के बाधी सो पेठि गि: आरलिस्तो रहरी छत्र चंत
जनैरनयानक: जामवंत जो याजे रजीरन: इह सियमे
: मनि लै पैगे मह बिवर मह: जामवंत को अहउ तोजह
हित जारी: सो मनि ले पलना तर कारी: इह सत्राजित
मनि सह तप्रसेन न पायो: अस हम्यो निय ल्लावधस्यो
नकृस्न लीनी मनि॰ नगर मोझ यह बात प्रमानी: जह
जानी: कृस्न बिचार तबे यह कीनो॰ उस हहो
मो हि दीनो॰ गलो वित चिंता बढि गारी॰ कृस्न ता पर दपथति
जादव वृध से गलीने जेन: तहां जदुनाथ जु आये तत छन: इह
त कहय पाये: सबहिन के मन सत्र मछाए॰ चरन चिन्ह लि
न: तहा सिंय सोल लो मृतक तन: पुनि पद अंकरी छके
सब विवर द्वार मिलि आये: उरगम तहा विलोक्यो कि हर
जनि हरि निरंतर: गरत प्रवेस करो ति हि गिरधर: ह
बेवाहर: आप कृस्न तहा यसे अके ते: पेत्र पै
लना सो बाधी मनि पाई: का दिल ही सो कवर क

तेत्रीयपुकारी : नयो न हाहाहारव नारी ।
श्रो · बडो बिरोयछो हमनछायो : जादवनाथ सनावन जो ऐपो । इहि छन जामवंत हते
केउ ग्राह लतपुरुषप्रमो ऐपो । दुहु मिलिकस्यो जुधग्रतिदारुन : इ
हाउत हान नयेसथलतन : परेसचो नज थापलऊपर : समचोकबा
रलयोसमहर : कृस्नरीछमुश हतकीनो : कैगयो देहसिथलबल
हीनों : जामवंतनारायनजो ऐपो : प्रतिमां पूरनपुरुषपिछाऐपो । म
स्रदेवकरताकेकरता : होतुममहाकालकेहरता : रामहोसरावनर
मारे । अबतुमकृस्नदेवअवतारे । दीननयोपरिकरमारीनें । कृस
मनबवसुवंदनकीने । मोनिरयालनयेतनमोहन : ताकोपानिप
रसकीनोंतन : नयेबिथागतयाउनयंकर : कृस्नदेवपरसेजबति
जकर : कृस्नहितहां बिश्राहीकन्यो । धरेसुछबिजामोती धन्यो : कृस
जुतसुताबिराजबकीनी । दिब्यहारजेवहमतिदीनी ।। इतिजा
तीबिबाह ।। वहसहिचतरहे मुषकेहर : घनग्रालसबसगएऐजि
थर : इनहिदेवकी पूछनग्रारी : कहोकहाहेकवरकन्हाई : इनत
समाचारकहिग्रेसे : पेहरिकृस्नाबिवरनहपेसे : स्यामके दरामाहि
सिधाये : अबलोबाहरफेरिनग्राऐ : इहासबे हासीनउचारत : ते
ईसत्राजितकहदियकारन : अबबसदेवदेवकीग्रतुर : स्यामकु
तलहितुध्यावतहेसुर : देवीनांमवड्रनाग्यादिन : इजनताकहेकी
येनगतिपन : येदेवीमोहनजबग्रे हे : हमऐसोकछु तुमहिचहे
गएबीसदिनउहांग्रतीते : जुधकीउलबमोहनजीते । इहाकेदरा
बाहरिहरिग्राये । येते ईसंगीनहानपाये : लछिग्रेसुलहनिस
नैं : कृस्नप्रवेसघरकोकीनेकविक ।। वहमनिलेमोहनघरग्रा
बजेमंगलकलसबंदाये : उग्रसेनराजापहग्राप न : मनिसेलि
ग्राये मोहन · बेगेजादवसनावनाये : इहासबतहासत्राजित
ग्राये · कृस्नदेवजोमनकोकारन : नपजनसबसोकस्योनिवे
दन : सगरसबनिकहिकृस्नरयापर · सत्राजितहिदईमनिसुदर
अपनोमिथ्याकलंकनसायो · जदुजदुनाथपरमजसपायो ·
सत्राजितहहापस्योपिसानो : अतिलजाउपजीग्रकुलानें : इ
ग्रातुरअपनेघरग्रायो । दुतिसबसोमिलिमंत्रउपायो ।। सत्रा
जिता कृस्नअपराधहरिलोकीजे । जोयहकन्याकृस्नहिदीजे ।
ब्रसरूपनामसतितामा · स्यामहिकरीसमरपनस्यामा ।।

अथाविवाहवैरविधिसंजुत। करेसबैमंगलजेकुलकृत। कलहिज
॥ःद्विसुमतिसंगदायजदीनौ॥दूहा॥सतत्रा
ः ऊरनप्रेमप्रसंग ःनरहरप्रभुरछानियतःरलोजथ
रसरंगत॥१॥ कलवहमनि हेतकरिःपूरनप्रीतिप्रमानः ततछनदीनेभ
रितवःसत्राजितहिसुजांन॥२॥ इति श्रीभागवते महापुराणे दसम
स्कंधानुसारेणभाषा बार ह ट नरहरदासेन बिरचितो। जामेनी
सतिभामाबिवाह बरननोनामापटा॥ कबिरूवाच॥दूहा॥कीनोलाभ
अकपट। दुजोधनदुरबोधःकारनपंडवदाहक्रमःस्यामलोपु
निसोध॥१॥ घटघटब्यापकं सामयतःत्रिकालरूपकरतारःरहातदपि
करिबोउचितःबिदितलोकबिबहार॥२॥छंदहैअपरी॥इहाहसतना
पुरप्रभुआयेःसबहिनरामकृस्नसुखदाये।जीषमद्रोणबिदरगंधारी।
मिलिरस्यादिकसबनिमुरारीःद्वारावतीकुंसलबिनुदेषीयःकृतबरमां
अक्रूरदावकीयःइहापरसपरमंत्रउपायो।प्रगटबिरोधसमयजब
पायो॥ अक्रूरासतिभामांपुत्रीसत्राजिते। हमहिदईहीमांनिपरमहि
तःदुहितासोकृस्नहिलेदीनीःकछुहमारीसंकनकीनीःबेरतासअब
कलहबधारोःमनिकुलेकुसत्राजितमारो॥कबिरु॥सतधनवारन
प्रेरिपगयो।अरधरैनिसोछलकरिआयो।महानिसासत्राजितम
यो।बीरधरमनहिचितबिचारयो।मनउपजीतहालुधिमलीनी
लोनहेतमनिबोजिजुलीनीःरानिलेलमहपिताकलेवरःअतिदुष
सतिभामांनरीआतुरःइहाहसतनांपुरसोईआईःसबेकृस्नसोबा
तसुनाईःरामकृस्नतवहीबैरथःगुनिसोईहाकोद्वारावतिपथः
रहलजदवसतधनवाआयो। अणमरामकृस्नअकुलायो॥सत
धनवा॥ कृतबरमांसोंजेइजुकीनौं।अबकनयकरियाअधी
नों। मैंतवहितसत्राजितमास्यो। नियततिहारोबेरनिकास्यो।अ
बतोरामकृस्नदोउआये।सकोनरहिहहिबिनासहाये।कृतबर
माअक्रूरत्रासकरिःहेंनहिजुधसमांनहमहिहरिःजिनसोंजरास
धनिस्तिगेःलेअसोहनिमुषरालागेःजगकरताहरताहरि
जांनोःनाहितिनसोंहमजुधप्रमांनोंःसातबरषकेबालकसुंदर
राष्योलघुअंगुरीपरगिरवरःछिनककुलियजगतजिहिछीजेःतिन
सोंकलहहोंसनहीकीजे॥॥कबिरूबाच॥सतधनवावहमनिलैसुंदर
अक्रूरहिदीनीहैआतुरःनयकरितबसतधनवाभागोःअहनेहतजिमारग
लागोःजबजुतअस्वगयोसोजांजनःतहांगिस्यौतबसकतियदीतनःरह
बलकृस्नद्वारिकोआयेःपुनिसतधनवासुनेपलायेःली ॥ ताल

गे: परम बिचत्रबैररसपागे: दुहजबेमाधवरथरेष्यो: बिकलछाडिहयगयोबि
सेष्यो: रिक्मसुरथबलदेवुहिदीनो: कृस्नतरितिहिपाछौकीनो: सतुपु
त्वेयह सनमुषआयो: चक्रपानितबचक्रचलायो: सिरकाट्योअरुबस
नसंतारे लहीमनिबिसेसबिचारे ॥ श्लोक ॥ संकरषनसोंकलोकनाई
पिसनहसोनैमनिनहीपाई: रहाबलजहकवारबधायो: हनमनिलीस
तधनवामायो: कृस्नकह्यौहमसोंछलकोई: जतिजामहिमनिदेहेसोई:
वाकेपितकीबहम निआही: तातेसोअजदेहेताही ॥ बलदेवाइहाबलकरि
रोषजुतअंतर: रनजयकीयतुमकृस्नजादुयर: हमबिदेहनृपसोमिलिअहे
प्रीतमतातेकछुरे हैं ॥ कबित्त ॥ इहाउतरिमिथुलापुरआये: पुनिबिदेहको
मिलिसुषपाऐ: संकरषननगरहिसुनाये: याहीथलदूरजोधनआये: तहउ
कुबिमिलितदीमिआरी: सोमिलिषेलतसंगसघाई: गदाजुधबिद्याजोग
दी: पेनपजनकृसुहनहिपदाई: सोबेदूरजोधनसंकरषन: अनंगराजपरबि
धआपन: सतधनवाकोमारिमहारन: मिलेआनिसतिजामोमोहन ॥ श्लो
क ॥ तेरेपितकोहसोविहत: तातेजामनितजियेचित: घोजकरयोषलम
रिकलबनि: मैवहपाईनहीतामनि: कृसहिसतिजामारिसकीनी ॥ सत
जामामनितुमसहीअग्रजहिदीनी: नाथहमहिसोकपरबनाये: हतुम
षालीहाथनिआये ॥ कबित्त ॥ कृस्नसुसरकोमृतककीनो: दाहकलेव
कोलेहीनो: हमेजबेसतधनवारनहरि: कृतबरमाअक्रूरत्रासकरि: नयते
छाडिद्वारिकोराजे: कासीगयेजीयकेकाजे: सोमनिपूजितप्रतिहिपावे: अष्ट
रकंचनतिन्हआवे: सबषरचेअक्रूरसुहायो: तातेनमदानपतिपायो: जबअ
क्रूरवहांहेजांनो: पुनिसबहिनयहकपरमांनो: जादवबातकरतयोजन
जन: मनिदेकाहिद्योघोमोहन: रहायनस्यामसोचकीयअैसो: यहउपजे
अपबादअनेसो: मायाअैसीप्रेरीमोहन: दुसहहोतअरिष्टजो दिनदिन: देवक
सारीरकअतिदारुन: उपजितकोउमानासिकअकारन: उग्रसेनकोसनाऐ
कदिन: जादवबृधसबैमिलिपुरजन: उनहिकृस्नतबपूछेअैसो: असुनहे
तकारनयहकेसो: पुनितहबोलेबृधपुरातन: अनावृष्टिकासीनरीअसत
न: प्रभुकासीनृपयहसुधिपाई: जादवसुफलक्कतीयोबुलाई: पुत्रीअपनीप
रमप्रीतिपन: नामगादिनीसरबसुलछन: सुफलककोब्याहीसासुदरि: कछु
कालतहांबसेहेतकरि: घरघरआनंदबरषेअतियन: दुरतभ्ययेअरि
ष्टहहदिन: सुफलकसकोसुतसाधसुजारी: लीजेअबअक्रूरबुलाई: पुनि
सबहिनमिलिरुतपगयो: रहोअक्रूरद्वारिकोआयो: ॥ श्लोक ॥ रहा
बासदेवबोलेबिहसि: अहोदानपतिआज: सबकेतुमआवतसर: कारि
येअकाज ॥ १ ॥ सतधनवातुमकहसमकि: मनिदीनीकरिमोह: सबके
तिहिकारनअसह: छुनछुनबादतछोह ॥ २ ॥ अबअक्रूरसुमनिरहा

सबके देषत देऊ : मिथ्या उपज्यो हैं जु मन : सो नासै सदेऊ ॥१॥ महा सिमंतक
नाम मनि · अति रवि जोति प्रकास : दीनी कारि सुदीन पति : सबनि नपो बिस्व
स॥१॥ त्रिमि रथ सेनावनो · पेम निहोर प्रमान · कृष्ण कसौटि हिं प्रगट · नासत्र
नरथ निदान ॥२॥ यह आष्यान जहे न करि · पढै गुनै सुष पार : ताको कृष्ण कलंक
तब · सो निरमूलन साध ॥३॥ कारन लीला कृष्ण की · अद्भुत अगम अपार : कही
जथा नरहर सुकवि · अपनी बुधि अनुसार ॥४॥ इति श्री भागवते दसम स्कंधे
भाषा बारहट नरहरदासेन बिरचितो । सतधनवा मनि प्रगटनो ॥५७॥
कबित्त ॥ सोरठा ॥ एक समय अबिलास : महा जगत पांडव मिलन : द्वारव
ती नरेस : इंद्रप्रस्थ आये अबै ॥ छंद पद्धरी ॥ इहां पांडव सुत सन मुष आये :
ते प्रभु हित जथा मन भाए : जुधिष्ठिर आदिक जादव जेते : तहां मिले जो था हित तेते
पुनि कुंती के ग्रेह पधारे : कीनें नि मस्कार हितकारे : पूछी कुसल कृष्ण सुष पाए :
सब कुंता वृत्तांत सुनाए ॥ कुंता उवाच ॥ प्रभु जब ही अक्रूर पठायो : तबे कुसल तब
ते मन भायो : तुम सम दृष्टि सबनि के स्वामी : जग जन जंगम अंतरजामी : उर
तन जोग निकुजो दरसन : पे तुम दयो अतछि सुपावन : होत पुरा कृत उदय
हमारे : प्रभु इहि अग्रह आप पधारे : कृष्ण कृपा अब इन्ह कीजे : दिन कछु
रहिजे दरसन दीजे ॥ कबित्त ॥ बरष एक कों रहन बिचार्यो : सबहिन कों
अभिलाष सवार्यो : एक समय गिरधारी अरजन : प्रभु निकसे बन कों उप
वन : मोहन रथ हांक्यो मन मानें : पारथ बैठे मध्य प्रमानें : निज गांडीव धनु
ष कर लीनें · नियत कसे तूनीर नवीनें · बन बन घन आषेट बिहारे · महा जंतु देष
सो ई मारे : मृग · चित्रक · बनमहिष मनोहर : षगी ससक मृगाधिप सूकर · जलन
भ चार गनें को जेते : तहां नये आषेटक तेते : प्रबल दिग्य जे तेक छुपाये : पुनि ते
राजा पहु पहचाये : इहां अमित सरिता तट आये : सुंदर बन घन देषि सुहाये
दिव्य तहां रक कन्या देषी · बिहत तपसा करत बिसेषी : पुनि अरजन कहं कृष्ण
पठायो : नेद ले कु या को मन लायो : ध्यान करत इंद्री दम धर्यो : को धीं यह
काकी है कन्यो : अब अरजन या कीटिग आये : पूछत नेद समय सुष पाये ।
अरजन ॥ तहां अरजन पूछी गति ताकी : को तुम अहि कन्या काकी · इह कं
हो सुरक बन आराधति : सो किहि हेत इतो हठ साधत ॥ कालिंदी ॥ पारथ म
सूर्य की पुत्री · पुनि कालिंदी नाम पवित्री : कृष्ण बरन हित तपसा कीजत
छन छन काल सु दुर्लभ छीजत : कृष्ण बरन को निसचय कीनो : लोक अमि
ध यहै व्रत लीनो · यह जमना तट बसत स्वइंछा : प्रभु दरसन की करत प्रतीछा
कबित्त ॥ इह कि रिपथ कृष्ण पह आये : सब कंन्या कि मरम सुनाये : नियत कृ
ष्ण सो कर धरि लीनी : कंन्या रथ आरोहित कीनी : इंद्रप्रस्थ ताकहं ले आए
धरम सुवन कहं मरम सुनाये : बिसकरमा कहं ओत बतायो : वासदेव रच
नगर बसायो : कंन्या राषी तहां सकारन : अद्भुत इंछा दीन उधारन ॥ पां
डु वबन प्र संग ॥ तक्षक बिपन जरत लष सुंदर · उदनिज पांनि अमिल

तिहिअंतर : बिहतनाम ताको षांडव बन : पुनि तहां सकल अौषधी पावन : बानित
हां देषो षांडव बन · नये मनोरथ ताके हैं तहन ॥ मय वर्नं ग ॥ प्रथम जुगातरस
न कुप्रकारा : असुर हिरनकसिप अवतारा : दैतनयें आषंडल दारुन : करी अषि
तिहि नई सकारन : कर मजु कल तिहि दिगपति कीनें : निसचर राषे दिगन नवा
नैं : मय नामायक कदयंत महाबल · बिस्वकरम पद दीने निसचल : षांडवबन मह
वसे सुषेचर · सहत कुटंब तजे सुषसुंदर · पुनि इक दिन षांडवबन पावन : जगे
अनल सो लग्यो जरावन : याही समय सघन मिलि आये · बुंद मुसल जल अ
गनि बुझाए : ज्वालानल उदिम कीय जेते : तिहि बन दहन फुरत नही तेते : क
रि करि थक्यो मनोरथ भंगल : बल्यो न षांडव चल्यो नाहि बल : इंद्रप्रसथ
नबकुत नुक आयो · पारथ जाच्यो समथ जु पायो · धनु तूनीर पथत बधारे : पुनि
तिहि बन रथ बेगि पधारे · महा बिपनपति को मन मांमे : जाचे माहि तसु षेन
जामें : इहां अरजन षांडवबन आये : सरपंजर बनसी सब नाये : जित तितु स
हदवानल जाग्यो · लगी षुध्या अति जारन लाग्यो : कैगयो रंध्र न हां उदिम हल
सघन नीर बरषे पन संजुत : दाह होन बन मांझ दुषारे : पुनि तहां मय के पुत्र पु
कारे · आरत बचन सु नेज ब अरजन : जरत राषि लीने आसुरजन : बन्हि
नयो · बिहत पथ सों हित बढायो · अरु यनिषंग दिव्य धनु दीने : निरल
कवच जु वरमन वीनें : सेत बाजि जुत रथ अति सुंदर · पथहि दीने अनल अे
पर : इहां जब मय षांडवन आयो · पुनि परिवार कुसल सों पायो · नयो अ
जन संतुष्ट सु आसुर · दिव्य सभा दीनी तहां सुंदर : नव जल थल तिहिं ति
न हरस भ्रम : कारन बहुत बिलोकत क्रम क्रम : येस बले अरजन अ
आयो · नयो हरष माधव मन भायो · अरजन सत्य नदपहि अवधारी :
हेअ स्तुत सो सब निनिहारी : कमलदारिका आये जयकरि : संग लीये क
लिंदी सुंदरि : दिब्य लगन सुन बिप्र निदीनो : कालिंदी सों ब्याहु स कीने
कृत बसदेव देवकी कीनें : नियत तपे उछाह नवीने ॥ छंद पधरी ॥ इक न
गर अवंती को नरिंद : बिहत तिहि नाम बिंदानुबिंदु : तिहि बहन मित्र
दा बिनीत : पै नरी सयानी से पुनीत : सब पूछि नृपति हि न कुलसनार
ब्याह को कृष्णसों कीय बिचार : बिंदानुबिंद को महाभीत : आगे हो दुजो
धन अनीत : सबंध कृष्णसों तिहि असाध · बातें बना रथ लकस्यो बाथ पु
नि स्यौ स्वयंबर समे पाइ : अनेक नृपत हां मिले आइ : प्रभु कृष्ण करति
हि पुरप्रवेस · निसंक सता बेगे नरेस : बामा सु बिलोकत अति बिलबीर
धरि वाह कृष्ण ले चले धीर : नृपनि को कीनों मानभंग : इहां कृष्ण ये हिंग्य
ये अनंग : पुन लगन पूछि मिलि कुलसमाज : कृत बासदेव तिहि ब्याह
काज : ॥ इति मित्र बृंदा ब्याह ॥ अथ येसनगनजित तास नाम · धन

विपुलसबिलसैधराधाम: पुत्री तिहि सत्यानामपार: सुंदर सुलछन गुन
सुनार: नृपलयेनगन जितय हनिदान: कोउ सात वृषभ न नाथे हिसुजान व
लकरे वृषभ नाथि ऐकबार: सो बरैकबरि सत्या सुदार: पन कस्यो स्वयंबर ज
गप्रसिध: सब मिले आइ नृप समरसिध: हरि हैं सबै नृप मेलि हाथ: नाथ
न सात वृषको उ वृषभन नाथ: विधि सुनी जबै यह बासदेव: इहां आइ नगर क
सीअजेव पुनि वासदेव आगम नरेस: विधि जुकत करी प्रजा विसेस: कृ
स्न हि विलोकि सो नृपकुमारि: बर बंछा कीनी चित बिचारि: नृपक है नग
न जितय हनिदान: तुम परम पुरुष बेद निप्रमान: १न कस्यो प्रथम मैं यस
प्रमान: देषन कहं छत्री बल निदान: गहि वृषभन सात जो ऐक संग: ऐकी
बार नाथे अनंग: कंन्याय हुती केत तत काल: बरमाल कंच मे ले विसाल:
प्रभु बांधि पीत पर कहि पुनीत: अषिलेस उगे अंतर अनीत: धरि वृषभन सात
तन सात धारि: माया अनंत नाथे मुरारि: कंन्या बरमाल हरष कीन: पह
राइ बासुदेव हि प्रबीन: रस रीति वेद विधि का सिराज: करि सत्या करी बि
ऊ काज: कासी नरेस दाइजो कीन: दस सहस बछा धेन दीन: दीनी सब
न जय सहस दासि: बनि बसन कनक कनघन बिलासि: नव सहस तरन
मदमत्त नाग: बनि तिन तैं नव गुन रथ विभाग: बदि रथ तैं सत गुन हय बि
थार: बलि तिन तैं सत गुन चरन चार: बरनी बराज नतर थारोह: सब अंग
अंग रीति मदन सोह: निसेघ पिसाने लयेनरेस: पुनि आनि पथ रोक्यो प
वेस: इहा नयो जु थ तिन सै अपार: सब गये ता जि के उलये संघार: सम
र करि विजय जदुकुल नरेस: पुनि कीनो द्वारावति प्रवेस: हित लयो नगर
घर घर उछाह: दुख धुर उर परदाह:॥ इति सत्या बिवाह॥ इहां कै
कै देस नरेस की: पुत्री परम अनूप: भद्रा नामा कामनी: पूरन तन गुन रू
प॥१॥ कंन्या दीनी कृस्न क हं: बंछित लयो बिवाह: क्रम गुन तमाये द्वारि
ऊ व घर घर उछाह॥२॥ इति भद्रा बिवाह॥ मद्र देस को महपती: बिधु
जिन व बिनीत: लछन पूरन लमना: पुत्री तास पुनीता॥३॥ कस्यो स्वयंबर
कतिका मद्र सुर हि सनमानि: देस देस के नृपति दल: इहां मिले सब सोनि॥४॥
ऐकाकी रथ बढि इहां आय मद उदार: हरि सब बिधि कंन्या हरन: [illegible]
म कुमार॥५॥ कंन्या आनी द्वारिका: इहां लयेउ छाह: [illegible] सोक
स्यो बिधि रहसी बिबाह॥६॥ अति उरत माया अतुल [illegible] गमन
नि: अषिल सुरासुर कगगम: नरहर प्रनत निहालि [illegible] निज
मोती रमनि: सति नाम सुविसेष: कालिंदी [illegible]
मेघ॥८॥ मिलि वन अकूल छम तो: लछन [illegible]
गेप्रगट: कृस्नदेव हित काज॥ इति श्री [illegible]
पावार हट नरहर दासे न विरचिते [illegible]

बाह ।। ५८ ।। कबित्त ।। महा छीर थान कहै इंद्र को : मनि परबत यह नांम : बि
बिधि जलासय सघन बन । सो नसुष बिसराम : ।। छंद पधरी ।। नरकासुर नां
मां निसाचार : अति सप अनीत अरबल अपार : इंद्र सो लस्यो रहि गेर आनि : पु
नि असुर बिजय पाई प्रमानि : हरि लीने कुंडल छत्र हेत : सुरपति के मनि परब
त समेत : इहां जयो पराजय इंद्र आप : सो आयो द्वारावति सदाप : सति भा
के तिहि समय स्याम : मिलिं नृपति बेठे थर मधांम : तिहि समय इंद्र आयें सच
त : अनुकरे ज था आदर सप्रीत : वृतांत कह्यो बासव बनाइ : सो प्रबल अ
सुर सो अजय पाइ : सु निजये गरुड आरूढ स्याम : भांम निसंग लीने सति
म । पुर असुर प्रागजोतिष प्रसिध : स्यामघन आइ तहा समर सिध ।। अथ कोट
बरनं ।। गिर अस्त्र सलिल मंगल समूल : करि पवन पास जो धानुकूल : इहि
तिसम आवरन ये ह : तिथ पुरी कोट दुरगम अरेह : तन कोट बिदारन पेंज रोप : रहे
म रहे बगा ये सकोप : गिर दुरग गदा हनत कत गु बिर : निसेष जंत्र बाननि निकंद
आवरन अनल जल बांन अंत : जल कोट अनल सो छ्यो जयंत : पुनि मरुत बिद
स्यो चक्र मारि : दुरगम नपास बिसष हिं बिदारि : प्राकार गदा हनि चक्रपानि
अषिले सर लागे निकर आनि : आकास अवनि अंतर अमान : नरिर लो सब दु
मल नयांन : मुरनाम दैत इक दुरमूल : सिर पंच तास आयुध त्रिसूल : निकसे
से जलते निसाचार : पुनि कस्यो सूल गरुड हि प्रहार : मुष पंच के हें सो मार म
र : परिस बदत्रा सधिर स्वस अपार : सिर चक्र छेद कीनो सधीर : रन हत्यो कृष्ण
सो महाबीर : सुत बली बयर पित के संनारि : मुर चंद कृष्ण तें लये मारि : निस
र सेनापति पीठनांम : सो जु स्यो मारि लीनो संग्राम : सेना समूह चतुरंग संग : इ
हा निकस्यो नरकासुर अनंग : बिबिस महर दृष कृष्ण बीर : सत घनी सक्
बाही सधीर : जा जु लि मिले सब सेन जुथ : करि सस्त्र अस्त्र प्राहर क्रुध
अनु बान चलाये जब प्रचंड : षेवर हनि कीने षंड षंड : नरकासुर गज आ
रु निसंक : कृष्ण सो जु स्यो षल आनि कंक : कृष्ण हि त्रिसूल बाहि कराल : सो
सष मारि छेद्यो बिसाल : बसदेव कवर हनि चंद्र बाल : नरकासुर सिर कट
निदान : उव नरकासुर घर हाइ हार : सुरबर षिपु हपदुंदुभि बजाइ ।। रहे
नाग सुरासुर जक्ष नर : किंनर गंध्रब केरि : कंमा आनी बलकर पि : धरम
र षी घेरि : ।। १ ।। सतउपर सोरह सहस : ऐक हऐक अनूप : पलपल बाद तिगु
न प्रताषि : प्रति मालछ न रूपा ।। छंद पधरी ।। इंद्रादि अमर रिष मिलि आनि
ब दिस तु तिन हा जय जय ति बानि : इंद्र सो जु स्यो आगे अनीत : जय पायो न
रकासुर अजीत : इंद्र के जथा लषन असेष : करि बिजय छीनि लीने बिसे
ष : पुनि अल्प बनत इस पाइ : बंछित तें जय दुंदुभि बजाइ : उप सो जु न
मि केग र बगार : पुनि तो मासुर यह नाम पार : नरकासुर ता को द्वितीय
नाम : किउ कारन के घृकछ कांम : इहि हेत नाम थति दे स्यार : तेजुक

अमृत
दान :
कासुर है

तिकरी बिनती सुनाइ: नरकासुरसुत भगदत्त नाम: सो पृथी मे त्यो सरन साम
प्रभु चरन लगायो सुवपुनीत: भगदत्त नाम पोतो सनीत: प्रभु सीस नास करथ
रि प्रवीन: तब दीन वधु निज अनयदीन: अखिलेस तब रनिवास आइ: संपति
सुपरे येते हो सुनाइ: सत ऐक सहस षोडस सरूप: अवलोकत हो कन्यां अ
नूप: सुअसुर नाग कें सो सुदेस: वयलछन गुनसो ज्ञा विसेस: बलकर पिनु
आनी अबल बाल: चित अवलन जानी काल चाल: विधि पोनि अहन कन्यां बिच
र: सो करत रलो उदिकुमार: कोउ करत उहित नोइ हो कराल: लेगयो वीच
ही रूप दिकाल: अविलोकी देवी उ बिअनंत: कन्यां तिन मानी रूलकंत: सवि
का अरोहक रिकरि असेष: बिनता सो परसी अह विसेष: सुन चतुर दंत असु
सित अंग: मदमत पवय स्वो सगिम तंग: इहां रूलपधारे रूलोक: आनूपनइ
न हिदये ओक: करुवार दअगे किरुकाल: सुनपुहप पारिजाति क बिसाल
द्विजपुहप सुरूल हिं आनि दीन: प्रभु रूकमनि अहवे प्रवीन: नारद कहै पग
यो पूजि नाथ: हितपुहप दयो रूकमनी हाथ: सो देषि ससत्तामो सुजान: मे
हन सो कीनो तवे मान: कोमनी उनय अरूपुहप ऐक: बिस्वे सरग ताइ सवि
वेक ॥ श्रीकृस्न उ ॥ माधव कहि त्रीयसों वचन मांनि: याको तोहि दें रूस्व इ
आनि ॥ कबित्त ॥ नरदेह रंद्रपुर आइ नाय: सुंदरि सति नाम रूती साथ
द्रुम पारिजाति तिहि गेर देषि: बनिता सुधि कीनो वर बिसेषि: सो वृछि च
ले ले हरि सधीर: विहंगे सरब्रिधरि महावीर: रूतपंथ रोध मिलि अमर
क्रुध जाजुल्प रूलसों करे जुध ॥ रूह ॥ महासुरनिके मान मिलि: द्रुम
आनो जदुदेव: रूल सुरोपो हेत करि: नामा धाम सवेव: ॥ षोउ सतहं
अ कंना विवाह ॥ सुभ मंगल मरूरत सुदिन: अरु वेदिक आचार
रूत बसदेव जुदेवकी: जथा वंस विवहार ॥२॥ रूमतोरन चोरी कल
स: रचे विविधि बरुरंग: कारन जेते कंनिका: ऐते थोन उतंग ॥३॥ रू
लक वरदेवी सकति: यहअ दनूल अपार: नरहर प्रभु सब कंनिका: व्या
ही येक ही वारा ॥४॥ येक लगन छिन ऐक दिन: इहां धरि देह अनंत: प्रभु
नरहरअ ऐसी प्रबल: नवइछा भगवंत ॥५॥ सबहिन के अलिला व सुष
मरन करे प्रमान: नाव हा विलसत नएः नरहर प्रभ निदान ॥६॥
इति श्रीभागवते दसम सकंधे भाषावार हट नरहरदासे नवि
चते ॥ नरकासुर वध ॥ षोउ सस अ ऐक सत कंन विवाह ॥
५९ ॥ कबित्त ॥ सोरठा ॥ ऐक समय अखिलेस: वेदरनी केये हवनि
वेगे सेज बिसेस: कर तपर सपर हासिक्रम ॥१॥ छंद पधरी ॥ इहां व
सदेव कहित कवात: सो रुकमनि उरन: हिन समान: पितजाम

चंदेरीराजथांनः पुनि बैनबदिग पालनि प्रमांनि॰ सुनल छनगुनत
नवयक्त रूप॰ अतुलितप्रतापप्रतिमांगनरूप॰ बरबीरधीरसेचेदि
देसः ससिपालनृपतितथीप्रसंसःजामेंअहत्रातादईजाहि॰ तुम
बस्यौमहीकिहिदेषताहिः वहछांडिबस्योतुमसोंहिआनिः जुबेस
कहाअधिकारजांनि॰ नृपताप दहमकहेंनहिनिदांनः पुरुषाजजा
तिकीनोंप्रमानः पुनिजरासंधनयंत्रासपारः इहाबसेसिंधुकेसा
नआइः राज्याभिषेकनहीराजथांन॰ तुवत्रमतरहतअतिहीनयांनः
जिनकेनहिमारगजांनिजाहिः हमतेननलोकबिबहारमाहि॰ प्रतिमंग
नबरजितबयप्रमांनः निसप्रेहहमहिजांनैनिदांनः बिबहारमित्रत
बयरबादः करियेसमानसोंतजिप्रमादः निकामनिगुनकोंतजे
नारि॰ पेनहिनमनोरथचढेपारि॰ आचारउचितछत्रीनयेहः सोउ
मक्कानननिसंदेहः दुष्टनिकोंदडआदेकरेहि॰ हमचंदेस्वयंबरजीति
लेहि॰ कारनसेतिहितवहरनकीन॰ हेदुष्टकरेसबमानहीन॥ क
बिरुक्मिणीवाच॥ सुनिअप्रीयबेनः इहाउपज्योरुकमनिचितअ
चैन॰ अथबदनचरनतुवलिषतआपः परिनीरनयनअंतरसताप
चढिउरधस्वाससुधिरहीनचीरः उरकंपरोमउठीयअधीरः इहापाइ
यामनअनत्राय॰ अकुलाइरूकमनीनिउगाइ॥ श्रीकृष्णउवाच॥ कछु
कहेबचनहमहासिकाजः अपराधछमासोंकरऊआजः यहउ
चितयहास्रमधरमआहि॰ जनकालछेपनकरतजाहि॰ पुनि
हितसिरूकमनिपुनीतः बिधिजुक्तबचनबोलीबिनीत॥ रु
कमनीवाच॥ तुमअंतरब्यापकहोअनंतः तिहिजानतसबकेअद
यतंत॰ बिधिबिस्नरूद्रमहिमाबषानः सबकेतुमहीसरहोसमा
नः ऐसीअभागकोत्रीयअग्यानः अषिलेसतुमहितिजिवरेआंन
श्रीकृष्णउवाच॥ तनधंन्यतिहारेसुनऊबांमः कीनेजुकलेसपूरन
सकांमः॥ इहा॥ कीनोंत्रातबिरूपकम॰ मारिसेनमांनःतदपि
तुमहप्रसोतहोः मननहीकस्योमलांन॥११॥ कारनकरनसम
थकीयः प्रेमकलहसुषपाइः प्रभुनरहरइछाप्रबलः सुरनिअ
गम्यसुनाइ॥१२॥ इतिश्रीभागवते॥ दसमस्कंधे॥ नामबारह
टनरहरदासेनबिरचिते॥ श्रीकृष्णरुकमनीकोसाविमोंध
८॥६०॥ कबित॥ इहा॥ गनीअउपटरागनीः बयगुनरूपब
षानः सोरसहसअरूयेकसतः पुनियेबरीप्रमांन॥१॥ येक

कत्रीयकै उदार : दसदस पुत्र सुदेस : इहि क्रम संतति को उदय : जदपि सै
जोगेस ॥१॥ ग्रे हुते पितगजगामनी : चेती जर पित्र न्रूप : मोहन के जीतन म
नहि : लोन सग्रंथ सरूप ॥२॥ प्रथम रुकमनी का पुत्र बर्ननं ॥ छंद पद्धरी ॥ प्रदु
मनि बड़ो बिद्या बिनीत : पुनि द्वितीय चारुदेस न पुनीत : जुव चारुदेस अरु च
रुदेह : पंचम सुचारु ग्राहत ग्रेह : है चारुगुप्त पुनि चंद्रचारु : गहचारु चं
द्र सु बिचारु चारु : यह क्रम जु रुकमनी पुत्र ये ह : दस जान रुकमिनि जननि सं
देह ॥ अथ जामवंती पुत्र ॥ इक नये साँब रु जो सुमित्र : पुरजित पुन सतजि
त बिधि बिचित्र : कहि बिजय सह संजित चित्रकेत : बसुमान द्रविण कृतु र
न बिजेत ॥ सत नाम पुत्र ॥ जो प्रथम भानन्जो सभान : सुरभान प्रगट चौ
थो प्रभान : मान जु सुत पंचम भानुमान : जनि षष्टम यह क्रम चंद्रभान :
नवम्र भान रति भान रूप : श्री भान दसम प्रति भान न्रूप : प्र एक मसत
नामा पुत्र आन : पंडित क बिजानत सब प्रमान ॥ कालिंदी का पुत्र ॥ जये
भान सुचंद्र सुसील रूप : अरु बेग वान बित्रग अन्रूप : वृष संकु आम ब
सकूति वीर : सुत कालिंदी के दस सधीर ॥१॥ मित्र बृंदा का पुत्र ॥ श्रुति
प्रथम तृतीय कवि वृक वीर : पंचम सुबाहु रनजय वीर : मिलि सो न दरसम्र
रु पूरन मास : पुनि साम कद सम जग प्रकास ॥ ये सत्या का पुत्र ॥ पहिलो प्र
घोष गनि गात्र वान : बलप्रबल सिंघ ऊरध गसु जान : महस कति उरज म
हसहत मान : अपराजित दसवो बल प्रमान : सुत सत्या के ये ते सुजान : प्र
तिमा सरूप बिद्या प्रमान ॥ भद्रा का पुत्र ॥ वृक अपर कआ निलन लसंस
वीर : धुरंध मलनाद बरधन सधीर : महि सिंघ बन्हि पुनि पवन नाम : पुनि
क्रत पुत्र भद्रा स नाम ॥ लछमना का पुत्र ॥ सुत जो संग्राम जित बृहत
सेन : संग्राम सूर प्रहरन सुषेन : अरिजीत सु जय जय धाम आरु : अरु गोनि
दस मसा तिकु सुजाइ : लछमना पुत्र ऐते सुलछि : प्रतिमा प्रताप पूरन प्र
तछि : उनसों सहस महसु पिऐक : रोहनी नाम बिनता बिबेक : सब
हिन के दस दस जये सुजान : इहि भाँति पुत्र संतति प्रमान : जुव येक
लाख इक सठि हजार : क्रम जुक्त असी ऊपर कुमार : परदम निकव
रुकमणी सुत : अनुरध पुत्र ताको अनूप ॥ अथ अनरध बिबाह ॥ जा
चम्पा कीनी न्नात जानि : मन अपने रुकमनि हेत मानि : रुकमी तव पु
त्री सुबस सरूप : अनुरध हित दीनी अति अनूप : सनमथ निकुंज दिपस
मान : पुनि तथा बचन कीनो प्रमान : रतन भूमि नगर कीनो रसाल : ब
नि नाम भोज कटक अति बिसाल : बिधि जुकत रचन ता को बिबाह :
आर सो रुकमी अति उछाह : बिबहार बंस कीनो बिसेस : द्वारिका
लगन पठयो सुदेस : अनुरध बसत सा जी अन्रूप : जब मिले सुजद

चंदेरी राज थांन: पुनि औन वदिग पाल लिं प्रमांनि· सुनत छुनगुनत
नवयक्त रूप· अतुलित प्रताप प्रतिमांग नूप· बरबीर धीर सेचोदि
वेस: स सिपाल नृपति पृथी प्रसंस: जा म्यांय हत्रा ताद ईजाहि· तुम
तस्यौं जही किहि देषत हि: वह छांडि बस्यो तुम मो हिं आनि: जउ बस
तस्यौं जही कि हिदे षतहि: वह छांडि बस्यो तुम मो हि आनि: जउ बस
क हा अधिकार जानि· नप ताप ह हम कहेन हि निदान: पुरुषा जजा
ति कीनो प्रमान: पुनि जरासंध नयं त्रास पार: ह हा बसे सिंधु के स
न आइ: राज्याभिषेक नही राज थांन· तुव त्रम तर हत अति ही नषांन:
जिनके नहिमारग जानिजाहि: हमतो नलोक बिबहार माहि· प्रतिमांग
नवर जित बय प्रमांन: नि सप्रे ह हम हिं जो नैनि दान: बिबहार मित्र त
बयर बाद: करिये समान सो तजि प्रमाद: निकाम निगुनको नजे
नारि· पेन हिन मनोरथ चढे पारि· आचार उचित छत्रीन येह: सो तु
म क्रू जानत निसंदेह: दुष्टनिको दक्षा दरूरदेहि: हरि चढे स्वयंबर जीति
लेहि· कारन मेति हितव हरन कीन· हेदुष्ट करे सब मान हीन।। क
निरुक्षाचा।। उन समुषते सुनि आप्री य बैन: हा उपज्यो रुकमनि चित अ
चैन· अध बदन चरन तुव लिषत आप: परि नीर नयन अंतर संताप
चढि उरध स्वास सुधि रही न चीर· उर कंप रोम उठी य अधीर: ह हा पाइ
चढि उरध स्वास सुधि रही न चीर· उरकंप रोम उठीय अधीर: हहा पाइ
या मन अंतराय: अकुलाइ क्रस्न लीन उगाइ।। श्री कृस्न बाचा।। कछु
कहे बचन हम हासि काज: अपराध छमा सो कर ऊ आज: यह उ
चित अहा अमधर म आहि· जन का लाछ पन कर तजाहि· पुनि जा
हि हा सिक कमनि पुनीत: बिधि जुकत बचन बोली बिनीत।। रु
क मनीबाचा।। तुम अंतर व्यापक हे अनंत: ति हिजानत सबके अंत
यतंन· बिधि बिस्नु रुद्र महिमा बषांन: सबके तुमरी सर हो सम
न: ऐसी अभाग को त्रीय अग्यांन: अ षिलेस तुम हित जिबरे आन
श्री कृस्न बाचा।। सलंध मति हारे सुनऊ बांम: कीने जुक ले पूरन
सकाम:।। दूहा।। कीनो त्रात बिरूप क्रम· मारि सेन मान: न दृपि
तुम ह मसे तहा: मनन ही कस्यो मलान।। १।। कारन करन सम
थ कीय: त्रेम कलह सुष पाइ: म चु नर हर इछा प्रबल: सुर निअ
ग म्प सुता स्नम।। इति श्री का ग बले।। दसम स कंधे नाना बार
द नरहर दासे न बिरचितं।। ८ श्री कृस्न कमनी की सा बिमो
२।।६०।। कबित।। दूहा।। गनी आम्पर रागनी: बयगुन रूप
बांन: सोरस हस अरु येक सत: पुनि येबरी प्रमांन।।१।। येक

क्त्रीयके उदर : दसदसपुत्रसुदेस । इहिक्रमसंततिको उदय : जदपि सैं
जोगेस॥१॥ ऐहि लखितगजगामनी : येती जदपित्र रूप । मोहनके जीतन मन
नहि : तोनसमञ्थसरूप॥२॥ प्रथम रुकमनी को पुत्र बर्नन ॥ छंद पद्धरी ॥ प्रद्यु
मनि वरो बिद्याविनीत : पुनि द्वितीय चारुदेसन पुनीत ॥ उव चारुदेस अरु च
रुदेह । पंचम सुचारु अरु भद्रचारु : हैं चारुगुप्त पुनि चंद्रचारु ॥ नहं चारु चं
द सुविचारु चारु : यह क्रमजु रुकमनी पुत्र येह : दस जानहु क बिजनतिसं
देह॥ अथ जामोतीपुत्र॥ इक भये साबरु जो सुमित्र : पुरजित पुनि सतजि
त विधि विचित्र : कहि विजयसह संजित चित्रकेत : वसुमान द्रविणक उर
न विजेत॥ सतभामापुत्र॥ जो प्रथम भानु जो सुभान : सुरभान प्रगटचो
थो प्रभान : मान उ सुतपंचम भानुमान : ऋति षष्टम यह क्रम चंद्रभान ।
नवकृत भान रतिभान रूप : श्रीभान दसम प्रतिभान रूप : मह एक मसत्य
भामापुत्र भान : पंडित कबि जानत सब प्रमान॥ कालिंदीकापुत्र॥ जये
भान सुचंद्र सुसील रूप : अरु बेगवान चित्रग रूप : वृष संकु अरु भ व
सकूतिधीर । सुतकालिंदीके दससधीर॥१॥ मित्रवृंदाकापुत्र॥ श्रुति
प्रथम तृतीय कबि एकबीर । पंचम सुबाहु रन अरु वीर : मिलि सानदस सु
रुपूरन मास : पुनि साम कर दस भेजग प्रकास॥ येसत्याकोपुत्र॥ पहिले प्र
घोष गनि गात्रवान : बलप्रबल सिंघ उरधग सुजान । महस क तिउ जस
हस हतमान । अपराजित दसवो बल अमान । सुत सत्याके ये ते सुजान : प्र
तिमास रूप विद्याप्रमान॥ भद्राकापुत्र॥ वृकअरु अनिलनल नस
बीर : धुरंधमलनादवरधन सधीर : महि सिंघ वन्हि पुनि पवन नाम : पुनि
क्षत पुत्र भद्रा सनाम॥ लछमनाकापुत्र॥ सुतजोसं ग्राम जित दहत
सेन । संग्राम सूर प्रहरन सुषेन : अरिजीत सु जदमय धाम आर : अरु जो नि
दसम साति कुसु नार : लछमना पुत्र ऐते सुलछि । प्रतिमा मनोव पूरन अ
तछि : उनसोरसहस महसु थि ऐके । रोहनी नाम बिन ता विवेक : सब
हिन के दस दस भये सुजान : इहि भाति पुत्र संतति प्रमान : उव येक
लाख इकसठि हजार : क्रमजु कृत असा कपर कुमार : परद्म निकव
रुकमणीपृत : अनुरध पुत्र ताकौ अकूत॥ अथ अनरुध बिबाह जा
चम्पाकीनी न्रातजा नि । मन अपने रुकमनि हेत मानि : रुकमी तब पु
त्री सुजस रूप । अनुरध हित दीनी अति अनूप । सनमधनि कूज दि पत्त
मान : पुनि तथा बचन कीनो प्रमान : रंनक्षमि नगर कीनी रसाल : बं
निनाम मनोज कटं अति बिसाल : विधिजु कत रचनताको विवाह :
आर सो रुकमी अति उछाह । बिवहार बंस कीनौ विसेस : घरिकौ
लगन पठै येसु देस : अनुरध बसत साजी अनूप : नव मिले सुज द

ब-नृप-नृप: मिलि रामकृष्ण रुकमनि समेत : बनिकवर अरु मनिरन बिजेत
रहो न जब हितो रन हिआर : सब नीति करी प्रजा सुनार : हितजु कतन पाके
न्या बिबाह : अरु करे बंस घर घर उछाह : कालिंगराज आयो प्रकास : जुत
पति देस कलिंग जास : सम दंतबक्र राजा असाधि : पुनि करी बेर व समिलि
उपाधि : मन कपट रुकम सो करे मित्र : तिन सबे बताये मरम तंत्र ॥ दंत ब
... ॥ यह के ह्री यत संकरषन अनंत : उर बिसन द्युतयके हुरंत मिलि
कर ऊग्र ह स्रीउ कुमार : सबरन के जीते सीजसार ॥ कबि रु बाच ॥ बलदे
व रुकम छल बल बिधान : मिलि करत द्युत लीला समान : सत दि म्सव
कीनो समेत : पुनि सहस अयत रूपक प्रजेत : तहा रुकमी जा ले ठवतीन
कालिंगराज हसि तरक कीन : करि संकरषन मनम हकमार : लषकोटि
व कीने लजार : जीतो सु दव बलनन्द जोनि : गरुकमी त बहि कपट गोनि ॥ स
मबाच ॥ उहल्हव बोलि कीनो उपउ : देषो यह मेरो पस्यो दाउ ॥ कबि स
पुनि कस्यो कोप मन महाबीन : दसको टि दाव बल नन्द दीन : पुनि यह ध
व बलदेव पार : रुकमी सु कपट बोहो स्यो रचार ॥ रुकमा ॥ नि ह्वे स दउ
मेरो निदान : पहो नि सा छिदे कीय प्रमान : जब सत्ता मोह्य ह कपट जो
नि : बस धरम तई आकास बानि ॥ आकास बानी ॥ यह बोलत है रुकमी
अन्याउ : है दे व सा षि बलनन्द दाउ ॥ कबि रु ॥ नन बानि त हा कीवे निदान
पै करे नाहि रुकमी प्रमान : पुनि हसे सबे मिलि हसे सबे मिलि के कुपात्र : मं
नो बलदेव हितु छमात्र : कहि तरक बचन उरबाद कीन : मुषि नीति धरम म
न मह मलीन : बिधि स सत्र असत्र मिलि अह संग : ये आहि राज विद्या अ
ग : तुम गारवरा व ऊ बन निबास : नव नाहि राज बिद्या अभ्यास : यह उप ब
चन रुकमी उचारि : रिस करी मूरु मूसल निमारि : बल तत बिजय नयक
र ब जान : पुनि कवर रुकम त हदये आन : ते ई दंतबक्र के तोरि दंत : सो ई
सो ऊ तो जिन कलिंग सेत : अनेक उहजे मिले आर : पुनि गये सबे नृपते पलास
रुकमनी कछु न बोली रिसार : पुनि आर वध को कपर पार ॥ सो ॥ कस्यो
बिजय मास्यो रुकम : सहित बधु दल साज : कृस्न प्रआरे हारि को : राम सह
तजु राज ॥ १ ॥ इति श्री भागवते दसम सकंधे भाषा बार ह टनर हर
दा सेन बिरचितं श्री कृस्न सं तति कथनं ॥ अन र ध बिबाह रुकमी
मार्व धा ॥ ६१ ॥ कबिरु ॥ दो ॥ बड़ो पुत्र बलिराज को : बानासुर ति
नाम : कुली देत स्कस हसकर : सुर जीके संग्राम ॥ १ ॥ हर आगे नाचे हरष
पुजाउ गरज अनीत : बाजित बावे सो बिबिधि : अरगावे हर गीत ॥ २ ॥ कबि रु
बाच ॥ छंद पधरी ॥ हर कसे तत हासु प्रसन होइ : कहि मांगि अबे बर दान
कोइ ॥ बाण उ ॥ हर हे ऊ नगर मम ह रैठ धार : प्रभु कर ऊत हर हा प्रबा

कबित्त॥ सुनि कह्यो रुद्रसो ईसमनं: निसिदिव संकरत रहत निदान॥ बाणउ
हरसों बाण सुरजोरि हाथ · गरब बस करी इक बकुरि गाथ: हैं नाथ राथ मेरह
जार: न बमो करै तिनको लगत नार: जगम हस मरथ को उमैं न जान: अति बली
सु रैमो सो जग्यानि: दिग जस मेव दिगपाल देव: न यत्न गिगये मम जो लिजेन
हत चूरन मे परवत अनेक: कालनर कोन नेकेरेक: जगदीस रत तिनु महि
सुध: अतुल रुअ आनि मो सों अ सिध · सु जहै षुज्ञातमु हलगत नार · अब के
रऊ रैव ग्राणपाउदार॥ सिव बाच॥ हरस सेत वेष लगर वरे षि। बिस्व सब च
न बोले बिसेषि: न वग्रे हधजा गिरे अक समात: तब जानियहै न समवात · करि
ये अमान तव सिध कोज · उपजै जु धुकरता के उकस्याज॥ कबित्त॥ सुनि के रे
तीछाय जपात: बासुर निसि बिछैय है बात: नव नयो रूस को जन मजानि: प
रिअकसमात अरु धज अमानि: बाण सुर के सुंदर सरूप · इक उषा नाम पु
त्री अनूप: निसि अरध स्वपन सो वत नचैन · अनुरध स्वपन देष्यो अचिंत सु
प सयन पुरुष परे ष्यो सरूप: अति लछन गुन प्रतिम अनूप: उतरी यरो मउर क
पग्राइ: नो स्वपन दरस सानिक सुनार: इहो जागि उग दृष्यो न ओर: दहरात न
ही जीय करु गेरः दुषत योक रत वाहति दिगंत: रेक रागयो त अब होकेन: बि
वरन कपोल तन छीन बाम: बिरह तुर उर मन थाविराम: कुंतोकनो मलैत्र
षिकार: पयबाण सुरको चित अकार: मंत्री की कन्या उषा मित्र: तिहि ना
म चित्रलेषा विचत्र: सो रहै निरंतर उषा संग: उर उपजी चिंता देषि अंग: चि
त्रलेषाउ॥ सुरलोनी चंपक मन रुमाल: है उषा दे रुत वक्रन हाल: अ
व लो किर सायह उषा अंग: पूछै जु चित्रलेषा प्रसंग॥ उषा बाच॥ ऊं निसा उ
रध सो वत निसंक: प्रति रगपु हप सज्या प्रजंक · रहि समय स्वपन में उबि
अनेक: अबिलोक्यौ सुंदर पुरुष ऐक: करि जतन नि हरे धाम कोन: कित
गयो न जानौं कुतो कौन: आजान बाहु यन बरन अंग: अति दिग्घनैन मनु
छबि अनंग: बन माल कंठ उर वनि बिसाल: नुवबाल नेग उतंग भाल: य
हि प्रतिमा मे देष्यो जु आहि: तब ते मन रहत फिरत ताहि: पाऊँ के ताकहु कि
हि प्रयोग: के समररसा दसमी सजोग॥ चित्रलेषाउवाच॥ रह्यो कलेष चित्रले
षा कहै: स बिछ्यो तिअबे मन को संदेह: है पुरुष जु पे त्रयलोक माहि: ब
ल छल करि आनो पकरि बाह · स विक रि रुतव अनिलाव सिध: पै वच न
मानि मेरो अ सिधा॥ कबित्त॥ जग रुते जिते जु वंस जाति: नव लिषे चित्र
प्रतिमा सजाति: नृप उग्रसेन वसुदेव नाम: सुत गौर दृह व लन दसाम
प्रद्युम्न निसंग अनरुध पूत: इसादि बीर चित्रे अनंत: ये चित्र उषा के दि
ये आनि: सुनि कह्लो सषी या महि पिछानि: सब चित्र उषा देषे सुनार ·
अरसम नि चित य लज्जा सुपार: अनुरध हि देष्यो जबै आनि·

हेप्र तिमां ग्रमां नि: वसप्रेम चित्रलेषा विसेस: १ थगगनवारिका कीयुरवेप
पुनि सेतसयनअनुरथपाइ: इहि जोगसकतिऔं सोंउगाइ: इतिगस्तप
रहमनिसुतअरेह: अनुरधनांनसषिले ऊऐऊ: वसप्रेमनकस्योगंधरक्ष्य
ऊ: इहाकरेउषामनहीउछाऊ: इसरीतिउतैजो वनोसूर: यदधासमुहे
वाकरैगद: करिरूपतासमो हिनकुमार: वीतेजुकालसेनहीकिन
इकसमैगोपतरहअनांन: पुनिपरपुहपनोहरपान: कंचुकिनिस्रुर
ष्योकुवेस। पुनिकीयमनांनव हानरप्रवेस॥ कंचुकीवाच॥ अनुकवत्थि
हैनोतनप्रकार: सवमरमकंचुकीकहिविचार॥ कवित्त॥ पुनिकैनाल
मनग्रसुरईस। वससोचविनतहाधुन्योसीस: अकुलाइपुत्रिकायेहग्रह
पुनितहावसत्अनुरथपाइ: सीकांमप्रतनाहस्पसरूप। अवलोकिअतिवि
रूछविअन्तप: विसमोहकस्योतवचितविचार: सुनथाननरहोमासरूम
चार॥ बांणवाच॥ पुनिकुलोनलनिगहितेऊपाप: यहसुनतउग्रोअनु
धआप॥ कवित्त॥ लैपरियप्रहारेसुन्तरसूर: चितनेगनजेकोउदवे
स्तर: आयेबांनासुरवलअमांन: तिहनागपाससवाथेनिदांन॥ दूहा॥ क
रिवंधनअनुरधको। रेक्योउरगनगोर: उपाकरतिअतिसोकडर: अ
उपारनओर॥१॥ इतिश्रीनागवतेदसमसकंधेनाषाअर दस
रहरहासेलाविर चिते अन रथअवरोह॥६२॥ कवित्त॥ दूहा॥ अनु
रथहिवीजतअनुर: तहांचवमासवितीत: कछुनपायेसोधकछु: न
सेचितनयनीत॥६॥ आयेमुनिनारदइहां: विद्याविनयविसेस: वि
कालग्यतपसाअतुल: कीनोपुरहिप्रवेस॥ छंद उधोर॥ दिजग्रति
हरसनहीन: अनुपूजिचरनप्रवीन: इहवैठिअकलअजेव: दिजस
गमिलिजदुदेव॥ श्रीकृस्न॥ अनुरधगेअग्यात: तिहिसोधलेकि
तात: कहिरिषहिकिसकुमार: यहचितसोचअपार: अवमासच
रिविहार: पुनि कहूसोधनपार: तुमतेनकछुअग्यात: तिहिकिवा
गवनतुरत: तहाकहेरिषवरतेत॥ नाराछंद॥ सुनेसोधिनु
रपतनरकसुदर: राजदयेनकरेवांनासुर: वलिकेपुत्रअनीतम
वल: उरगमथानसेगआसुरदल: रिसकरिविहिअनुरथहिरोको
विषमकरमजवकवरविलोक्यो: हैअनुरथओणनपुरमांही: ना
कोनहाप्रवेसजुनांही॥ कवित्त॥ हेजुजधानआदिदजादव: वल
वरनसजेरथअतिजव: संगवलदेवस्यामघनसुंदर: प्रदमनिस
मजपजुधपरिकर: चलीप्रवलसेनाचतुरंगन: षलषयालवद
अहोहनि: प्रानआनिधेस्योओणितपुर: वलदलसाजिउग्रवाणा
सुर: निकस्योकोटद्वारतेनिसचर: सजियाकोदिसआयेसंकर॥

कपजचरेकरुवरूबज्रावत॰ फावतरोसत्रिसूलफिरावत: रणप्रतिन
रलोचनरोषारुन: दुंदजुथजुटतजयेदारुन: रुद्रकुसेनजयेमहार
न: पुहचदिकारतकेयअरुअदमनि: सातिकजादवअरुबाणासुर: स
वकुवारबाणसुतसमसर: येकरतैंवलदेवजुओपे: कूपकरनकुंभांडस
कोपे: इहिक्रमयोरजुधजोऔसौ: जगतविरोधसुरासुरजैसो: इहांअजत
ह्यगनआये: रनहिबिलोकिअमरअकुलाये: जनपिसाचप्रथमगणद्य
कगन॰ कूषमांडवेतालसकारन: राहुसब्रह्मविनाइकरेरव: धातुधा
नडाकनिकरिऊरव: इत्यादिकसेनुगणअदभुत: जथासरूपदुष्टअ
यसजुत: जुधसारंगधनुषहरिसाजे: नवगनसहितमारनलागे: सत्रु
अहमबानसमुहाये॰ विस्नुवानसोंकृष्णबचाये: नवजबमारुतबा
नसंधास्यो: नियतकृष्णगिरवाननिवास्यो: अगनिवानजतेसचलायो:
वारिवानकरिकृष्णबचायो: रुद्रवानतवसंभुसंधास्यो: विस्नुबाण
सोंकृष्णनिवास्यो॰ तहांजेनासारकहरितास्यो: यातेसंकरअतिअल॰
सायो: तिहल्योप्रदुमनिपेदलनारक: सोमकारतककोतनसारक: घा
इलजयोमयूरसहतघन: तवसेनानीनाजिबज्योतन: कूपकरनकुंभ
डसकारन: बलमूसलहलहतेमरेरन॰ रावकसमंत्रीउनयसंघारे॰ ना
गसंगीसोनसंधारे: सातिकजादवअरुबानासुर: प्रतिजटनिरतज
ऊतेपरसपर: जुगमंत्रीजरुजगजाने: इहांबानासुरअतिअकुला
ने: सातिकमुहछाडेबानासुर: इहांकृष्णमुहचडेसुआसुर: तहांसत
पंचबानसरसजीय॰ गहरसवइआसुरगलगजीय: इहांकृष्णइकबान
चलायो॰ वहसबधनुषकाटिफिरिआयो: सरजोमोध्योवसदेसुत: सा
रथरथबेध्योहयसंजुत: समरविरथजयोबाणासुर: इहांरनवासकु
कपरिआतुर: मायानिपुनबाणकीमाता: विद्याअसुरविवेकविख्या
ता: इहांरनजमिनगननसिरआई: प्रभुअवलोकीलजापाई: जयपरा
सुपकृष्णनयंकर: इहिविधिवाणललोकछुअंतर॰ पुनिअवकासअसु
रजबपायो॰ इहांजीअहनीतरिआयो॰ इहांकृष्णजुरकरुइउपाई: चतुर
वाणजुरसीतचलाई॰ जुरहीजुरहमविग्रहमोम्यो: माहेस्वरीपराजबम
म्यो॰ आनिसरनहरिअहलोआतुर: जथाप्रकारकरेजदनजुर: कृपानि
धानसरनहितकीनो: देवअनयजवजुरकोदीनो: आपकृलनदई
तवऐसी: तपजुरसीसमानिलईतेसी: यहप्रसंगजुसुनेसुनावे॰ पे
सोईपुरुषजुरजयपावे: अबवानासुरबकुरुचोआयो: साजिपुर
थरनरोषसवायो: इहजोईसजेनिसाचरआयुध॰ जथाचक्रतक
रेतुजाजुध: स्यामचतुरभुजकीयबाणासुर: सहसभुजा॰६

समहर॰ कोटनलगेजबेदोऊकर॰ सेवक हितआयेतबसंकर॰ कृस्न
जबतंतवप्रणपतिकीनें॰ देवअनयआसुरकहदीनें॥ श्रीकृस्नउवाच॥
आगेहोयहलादउधास्यो॰ मेंताकेहितयाहिनमास्यो॰ अतिहीगरबबं
आसुरउर॰ कारनतिहिकोइयाकेकर॰ बिग्रहइनतुमसोंजबथास्यो
तातेंतुजहतिनाहरुनास्यो॥ १८॥ कबित॥ नारथराछैवारितुज॰
सचरंसहसनसार॰ दीनबंधुदुष्टनिदमन॰ सबदिनसंतुसहार॥१॥
देअनुअहगमअगम॰ सबबिधिस्यामसमथ॰ कोटहाथतुबानके
रिदीनेसिरहथ॥२॥ केस्योसंगअनुरथकवर॰ आनिद्योअसुरेस॰ पी
त्रबधूलीनेंअगर॰ अनुकीयअहवेस॥३॥ जातसमेंउगियहपरख॰ न
चैसुनेबिसाल॰ करुनपराजयहोरकछु॰ कृस्नरूपासबकाल॥४॥
यतिश्रीजगमतेद स्र सकंधेमाषाअर हरनर हरदासेनाबिरचित
अनरध बंहंमोहनाबोगसुरजुधवरणनोनाम॥६३॥ कबित॥
रहा॥ कृस्नदेवकेदेकवरा॥ अरुजादवसुतआंन॥ करतजथाकमरी
तिकुल॰ बनआषेरबिधांन॥१॥ त्रमतत्रमतआतिस्रमतये॰ महास
घनबनमांह॰ आनितयेएकत्रहो॰ हेरोटकुमछाह॥२॥ षोजततजि
ततिनजलअषिल॰ पीउतनयेजुप्यास॰ इहदेष्योअतिकारइक॰ कूं
पमाझकृकलास॥ छंद पधरी॥ इहासुनतमात्रसबबालआइ॰ कृ
कलासबिलोक्योमहाकाइ॰ इहकलोपरदमनिबचनयेह॰ हो
सरदकूपतेकाढ़िलेऊ॰ बसदयाबालउरमिबिचारि॰ इदरजुकूप
केमध्यझारि॰ ननबांधिसरदकेरजुतानि॰ नहिनिकस्योसबहि
हारिमानि॰ इहबालछाडितिहियेहआर॰ सोमरमकहेकृस्नहिं
सुनार॰ यहसुनतकृस्नआयेअजेव॰ दीनकेबंधुदेवाधिदेव॰ पुनिक
रनकेउदिमप्रमानि॰ अनुगहोसरदसोबामपानि॰ इहछुवतमा
त्रकृकलासयेह॰ ततपलहिलयोसोदिब्यदेह॰ पहलोसरूपपायोप्र
मानि॰ अनुआंगेमटेजोरिपानि॥ श्रीकृस्नउवाच॥ हसिकृस्नदेवपूछे
जुताहि॰ यहदेहकहातुमकोनआहि॥ नृपउवाच॥ सुनियेममपूरबनो
मस्यांम॰ इक्ष्वाकबंसनृगराजनाम॰ आतमारूपसबकेअनंत॰ तुम
तेनकछूहैदुस्योतंत॰ कहिहोतथापिकारनकृपाल॰ तुमदयासिंधुदी
ननिदयाल॰ मिलिसघनबुंदनाषित्रमेन॰ रजकनिकजेतेनमिरेन॰ दीनी
मेंएतीथेनदांन॰ सुदरसबछपरिकिरसमान॰ इकसमयदईमोंद्विजहि गा
र॰ सोचलेहाकिलेअहसुनार॰ इहपंथजातकोउबिप्रआनि॰ पुनिक

री धेन अपनी प्रमांन : द्विज मेरी मेरी करै दोर · करि स्वांतिन बरतैन ही कोर ·
गा दसो बिप्र दोर लीयै गार · द्वै झगरत मेरे द्वार आर : गहि लायो बिप्र जु बीच
गार : सो कारन मैं पूछौ सुनार : तिहि बिप्र कसो पूरब बृतंत : मुहि दई गा स
तुम पुनि निमंत : अह लीयै गयो फिर यहै गार : पुनि छुरी त बै आर पलट : य
ह पहचानी सो सुपै आज : धरि लायो फिर राजाधिराज : गहि दीजै मो कहं यहै गा
र · मैं प्रथम काल ही दान पार ॥ नृप उ० ॥ अनजानि यहै हम दई आज · अपर
ध छमऊ मम कैअ काज : द्विज देव धेनु यह छांडि देऊ : इस तज कुल दार
क अवर लेऊ : बसके धपरे हरि दोऊ बिप्र · छिरका रग रग येऊ हि छिप्र
मि लिर ही सुरनि के रूप माहि · निहचै मैं सोऊ लिषी नाहि : धरम गति अ
हि अनुप गधार · सो करै नृपति छन छन संभार : पुनि करम जो गनावी अ
मान : अनु अवधि पार मैं लजे प्रान : लै गये तत मोहि दिनमार · उपसहत
गयो जमराज द्वार ॥ धर्मराज उ० ॥ हित वचन धरम कहि सनहार : उ
प सुष है प्रानी सहंत दोर : पुनि है दिघ अरु अलप पाप · इन मह कहि न
जिहि प्रथम आप ॥ राजा उ० ॥ निरधार कह्यो मैं यह निदान : पहलें करजि
फल अघ प्रमान · उहां करम जो गउ तपन एऊ · देवत हाल हो फिर कलास दे
ऊ · मेर तेउ अब धि लकूप मांझ : सुष जानि सो नाहि निन रस साऊ : को उउ
दित नये सम करम काजे : अषिलेस कह्यो उधार आज ॥ श्रीकृष्ण ॥ अब
पाप अंत आयो प्रमान · सुरलोक धरम बिलसह सुजान : अषिलेस क
ही जब बचन ये ह · सुरपति बिमान लायो सनेह : करि बंदन प्रभु कहन
म सकार : आरोह बिमान कीनो उदार · सबहिन सुनायो कलेस याम ·
ब्रह्म अंस महा उरज राबिमान · अपातन जे जो ब्रह्म अंस · निरय गत हीन
पुरुषा निसंस : करि बल जे सुगतें असंकार : सो रहे न हारद सपन नहि
र : सब मानि लेऊ धरमोपदेस : ब्रह्म अंस सदा बरजित बिसेस ॥ दूहा ॥
सो सब ही है मैं सुमैं : यह नृग के आष्यान : करम धरम उपदेस कीय ·
नर हर प्रभु निदान ॥ १ ॥ इति श्रीभागवते दसम स्कंधे नाम बारह दन
रह रदा सेन विरचिते नृग आष्यान ॥ ६४ ॥ दूहा ॥ बरन गोर स्यामन
बसन : संकरषन तन सोह : कारन गोकुल नंद के : आये रथ आरोह ·
मिलि हित नंदादिक महर · हलधुक मधुन आर : जथा नयन आनंद ज
ल · नयरोमाच सुनार ॥ १ ॥ छंद पधरी ॥ हलधर मिले दिर सुष दआनि · पुलि
कुसल परस पर कहि प्रमानि · गोपिका आर सब ग्रहे हर्ष · हसि पूछ
तिन्हई मन को संदेह । गोपी उ० । पुरबनिता बल्लन चरित वाम · सुधि कर
त हमारी कब कृस्याम · पित पुत्र तजे कुल ग्रेह काज : जिहि नलोक

यिवे रहलोक: सोगयो छुटि तिहि संग॰ त्वजग्यो केंचुकी विषधर अंग॰ द
नको जो काल वितीत हुव॰ सो जानत आनन साखि सुव॰ कहि कह हरि
ति वचन कहि किलकि रतंत॰ समझ रही गोपी परम संत॰ मिलि छिवि केवु
बो मन: न हि मो हन जिन को समसो तो से॰ रहा श्रग रहे रही गोपी अनूप॰ वज
मो ऋतु लछन गुन सरूप॰ बलदेव करत तिन सों विलास॰ समरी तिविछि
धिवि धि हास रास॰ रहत रहे वि कुन आ म्पाल्य से पश्चात् नीरस तता ताहि
सेप॰ पवन चदि गंध विहि कीय श्रचार॰ बलदेव करत जिहि वृन विहार
बलत सखा रत होंगे थमाने॰ पुनि करत गोपिका सहत पान॰ बनि अवनु
येक कुंडल विसाल॰ मिलि गंध पुहुप केन तिमाल॰ गोपिका सहत की
रास गांन॰ अमत घोष हत पति समान॰ अमेरवे रतन तेऊ प्रकास॰ वार
नी विवस लोचन विसाल॰ रहा जल की उल्हरंग्पार॰ बलदेव तहां जल
नीके लए॰ सरिता नहीं मानी वचन सार॰ हल करि अनाद हग रवहां॰ उत
रत वृज मन नारी यम्ज्ञान॰ मदमत वचन नाहिन प्रमान॰ सो तपि कुवन
बलदाइ य सकल॰ सत धार करत जमनानि कल॰ बलदेव कोप कीनो कु
गात॰ हल अग्र श्रवे हिय आनी विहाल॰ सोरह थो तिकि पत ताहि॰ रहा ग्या
नि चर्न लागी अथा॥ जदुनाऊ॥ बलदेव तुम सेषा वतार॰ तुम सब
का जगजित विकार॰ ब्रह्म के धरि हल अयव तार॰ सुन स तना वन सि
सधीर॰ अपराध छमा करि ये अनंत॰ समता वस हातुम सब निसंत॥
कवित्त॥ नर लख्य नु या दिन तेन वीन॰ कालिंदी को र घनन नीक्की नि कु
की जावा रि बिहार करि॰ गम्भुरा सहत अमान॰ फु दरआत्म पन व सत
रहा कमल दिय आनि॥१॥ नरी विनीत विनावरी॰ बन बनक रत वित
सः नरत रर समतुलीला निरखि॰ सुरसु नि तय समहा मा॥२॥ इति श्री भ
गवत द सम स कंधे ते पाकार [illegible] सेन विर्वितो॥ बल देव
कालें दी ले द नो नाम॥ ६५॥ ६५॥ दे सकल पग्न मे पदल॰ कासी
पुरी सको न॰ राज करैत हा विजयरन॰ रूप पो द्रक यु जनास॥१॥ दिनयल
घो पगरो अति दिन॰ अकल्त रीवृ विअम्न तः पुनि तिहि वार वलि पुरी यु
रपन ठेरत॥२॥ च क्रादि क अयुध चिहन॰ धरि हरि के अनथाम॰ क
सी राज अम्प तनक रि॰ बय कार करतन रव॥३॥ छंद पधरी॥ कासिराज
जो वचन कहायो॰ यह सुनि तत वारिका आयो॰ उग्रसेन की यपरि
षद उतम॰ बलदेव जदु निने जथा क्रम॰ चर्चा धरम प्रसंग चल

ये॰ याही समय रतते आये : कासिराज के बचनस कारने : तहां कृस्नसो
कहे इतितिन ॥ पौंड्रक बाक्य ॥ नारायन के चिंन्ह जु निरमल : बालबु
धि तुम धरत कौन बल : जैसे बहु मिलि बाल समाज॰ रमत करत कौ
कौ राजा : जथा चिन्ह राजा के जानत : ताकहं मन बच करम प्रमान
त : अब यि पाइ तै सिसुथ हिआये : वृथा लये नृप चिन्ह बनाये॰ यो हि
तुम नृपता अन्यासत : पुनि नारायन भाव प्रकासत : यह सब छांडि चर
नन मम आवहु : पूरन कियौ करम फल पावहु ॥ कृस्न उ॰ ताकेहि कृस्न द
यो हसि उत्तर : पैतबक के अथ मंत्री पर : बल उनके बल च्वढि चढि बो
लत : लघु बीरा जौं नन कहं तोलत : बलति हि कुल सहेत कृटेवष
नयो चहत है स्वो न स्यालन ष : साजे दल बल सु पेसु हावत : ये समतु
म पाछे हि आवत ॥ कवित्त ॥ यह सुनि रत स्वामि पहं आये॰ सबे कृस्न
के बचन सुनाये : बासदेव सब सेन बनायो॰ अति सक्रोध कासीपुर
आयो॰ पौंड्रक को अति बल सेनापति : मित्र सुदरसन नाम महामति
व है आयो तैत्रैय अक्षौहनि : दुवै सेन एकत्र बकहनि : कासिराज मे
चिन्ह जथा क्रम॰ करि करि कपट बनाये कृरम : सष चक्र अरु गद
पदम सन : तहां सारंग पति बासनंतन : मनि स्तुल ताकं गरन नमाला॰ बस्नोग
रु॰ तहा धुजा बिसाल : कृतम चिन्ह बिलोके कान्हर॰ बेष अनेक करत जौं न
टबर॰ कृस्न हसे तिहि दे षि अचानक॰ रथा चिन्ह अरु रूरो बानक॰ धरि ध
रिथल आयुध सब धाये : सु पेअबा हत निरत सजाये : हनि हनि अस्त्र सस
त्र सब हारे॰ मोहन रतन तेर रतन टारे॰ इहां कृस्न राज सु हनु हआये : पुनि म
थव अति ही सुख पायो : कासिराज के हय रथ कारे॰ पुनि हति बान धजा उत
पारे : सम हर बिरथ नयो कासि सुर : स्याम चक्र धारा छेद्यो सिर : मस्तक से
बान निसें मास्यो : दुबरार कअंत हपुर रठास्यो : पटरानी पति सिर पहचा
न्यो॰ प्रलय कार सो काल प्रमान्यो॰ कस्यो नास कासे सुरकं दल॰ मित्र सुदरस
न सहत महाबल॰ अरि हरि चिहन समरतिधारी : पौंडुक सति सारूप सपारि
रहा कृस्न द्वारावति आये॰ बिजय सुघरि घरि बजे बधाये॰ कासिराज को पुर
कीया कर : नाम सुदरसन नयो नरेसुर॰ परयागत संपति तिहि पाये॰ न मिछु
त्र चामर मन न्हाये : पार राज तिहि बियर प्रकासे॰ अति करि क्रोध जु रुद्र उपासे
करी उग्र तप साहित संकर : पुनि भये संतु दयाल र या पर : मांगि जु पेर छाम
नमानी : बोले रुद्र दयाय हबानी ॥ सुदरसन बाचा ॥ नये सु प्रसन जु पेलतेसु
र॰ बिस्व बिदत मांगत हाय हवर॰ प्रनुनु मतीन काल गति पावो : पिता स्तक
बयजतन बतवो ॥ शिव बाचा ॥ सिव कहि है मजथा बिधि साधो : करि अति
लगति आग निआराधो ॥ कवित्त ॥ नृपति हि आग नि होत्र हत लीनो : कस्यो

होमद्विजहोताकीनों: अगतिकुंडतें निकस्यो ऐसो: जगदाहकप्रलयानलजै
सो: समतामृतनसिषातीनतस: दकुटिविशेषविसेषरोषवस: मसलक
धुनसम्रकठादीमुष: राजितदंसकुसलकालरुष: चावतअधरनिरसनि
सचाला: क्रूरदृस्यातिरूपकराला: तेजवंतअतिथरनिकंपावत: जिहिय
चितवंतरसाजरावत: स्नद्धरावतिओरचलायो: अतिरिसमुपेजरावनआसो: तपतपवनआगमनयोताको: जिहितनलगतभुरतसतजाके
आहिनाहिपुरलोकपुकारे: मृगज्योविसनदवानलमारे: हाहासबदसुन
मनमोहन: अनयदयोनयेबगआरोहन: कमलविलोकयोअनलकराल
जिततितनईगगनगतज्वाला: अद्भुतआकारनअगनिपिछानी: मनरोदीह
स्यायहमानी: कमलसुदरसनचक्रचलायो: धरिआगेतिहिअनलथकायो: दहाकेरिकासीपुरआयो: जास्योनगरसुरासुरजान्यो: दाहिपुरीसो
चक्रसुदरसन: प्रभुपहआयोकरिपूरनपन: यहप्रसंगजोसुनेसुनावे: प
पनसेसोपुनिफलपावे:॥ ६६॥ नामकत्योकाशीसुनप: उगमपुरीहतद
६: पारबिजयनरहरप्रन: अमरनिनयेउछाह॥ १॥ इतिश्रीभागवतेदसम
स्कंधेभाषाबारहटनरहरदासेनविरचितेपोंड्रकवधोनाम
६६॥ कवित्त॥ ६७॥ कपिमंत्रीसुग्रीवको: नामद्विविदबलवान: सोनरक
सुरकोसषा: रामविमुषअज्ञान॥ १॥ बलनरकासुरकोअनषि: प्रीतमबैरप्रमानि: द्विविदुदुष्टद्वारावती: करेउपद्रवआनि॥ छं दहचौपई॥ जह
तहाग्रामनगरलेजारे: दिग्घसिलाऊपरगहिडारे: सागरपैठिउछारतजलभ्र
म: महादुष्टबोरेरिषआश्रम: बैसानरजलमेलिबुझावे: आश्रमआनिअनति
उगवे: लैकुलबधूनिहषनलावे: जहातहाकपिग्रहीलजावे: पुनिरैवतनाम
स्कपरवत: पूरनवृजमहसोनापावत: रहिपरवतबलनजुआये: संगव्र
जबिननारीयेसुहाये: बलकोजानिअकेलोबानर: तिहिपरवतआयोअतिथ
र: सुपेप्रमनतहांसंकरषन: गानकरतमिलिमिलिगोपीगन: निकस्वद्वार
रसाषनवीनें: कपितहासबदकिलकिलाकीनें: सबदअचानकसुनिसंकरष
न: पुनिअतिक्रोधचलायोपाहन: बानरकूदिसुउपलबचायो: आनिबारनीक
लसनसायो: नारिबसनआकरष्योबानर: रहाबृजबनिताकूकआतुरसंक
रषनहलमुसलसंभारे: दहाकपिपादपसालिउपारे: चंचलकपितरसालिचलाये: बीचमुसलहनिसेषबचाये: कपिनप्रहारपरसपरकीने: नरदोऊमहाबी
ररसभीने: बानरजोईजोईवृक्षचलावे: नियतमारिबलदेवनसावे: जब
निरवृक्षभयोबनजान्यो: पुनिकपिबाहुजुथप्रमान्यो: साषामृगतहांसिल
संनारी: देवसुपेचूरनकरिडारी: पुनिकपिबलउरमुष्टिप्रहार्यो: कपिहलक
रषिमुसलसिरमार्यो: प्रानगयोनयेदेहपरायो: दहाषलमर्योसबनिसुष

[illegible]

बानमारि॰ करिकोपस्यामहनबिरथकान॰ पुनिछांदहपनुधर [illegible]
श्रोरश्रानिसेसुन्दर चारि॰ गहिलपोस्यामकेगरबगारि॰ कैरवनिसामकोसे
रिकोनि॰ अरथोमंदिरगदश्रानि॰ हहानारद ग्रारावतीश्रार॰ सोयहमसंगक
लसिसुनार॰ बिथिसुनीजबेयहवासदेव॰ अतिकोपेकेरवसोञ्जजेव॰ बलदे
वलिश्रोबिग्रहबिरूथ॰ जारवश्ररूकेरवउपजिजुथ॰ हसतनपुरगयेनबसातहि
न॰ संकरषननिजअवधसमेत॰ पुनिआगेदीयउथवपगर॰ तिहिसंकरषन
आगमसुनार॰ यहसुनतमिलेधृतराष्टश्रानि॰ पुनिबहोहरषञ्जतिहितप्रमा
नि॰ कीयप्रनाअरचाबहुप्रकार॰ सबबेठेकौरवमिलिसुदार॥ बलदेवउ
नलदेनकहेतछत्रीबिधान॰ नृपउग्रसेनयहकरिनिदान॰ तुमकोनथरमय
हजुधकीन॰ नरबारिबालहकपकरिलीना॥ कैरवा॥ करिकोपकहतकौरवकुवे
न॰ निहचेबिरोधञ्जारकननेन॰ नहिजानिकालगतिकिऊनिदान॰ पुनिचरनलगी
सिरपरउपान॰ हमकीनोराजापंडमाऊ॰ रनकेनबघरघरनयेउछाऊ॰ सेग
ननाहिसगपनसनेऊ॰ हमसोञ्जबसमताकरनयेऊ॰ अहिपानदुगधविषहो
इञ्जनत॰ सोतजेनाहिबलताअसंत॰ जोकरतहमारोदीयोराज॰ येआपहमसो
लरनञ्जाजा॥ बलदेवजा॥ बलदेवकसोहसिपहेबोल॰ सुपकरतआपनोआपमो
ल॰ दुसीलहसारनकेदुरंत॰ अबमनहोउपजेसोतञ्जंत॰ अतिगरबकरिछुछा
ईअपान॰ पुनिआहिदरुरकोप्रधान॰ अबिलेसक सञ्जबतारएह॰ दुहएगिन
तति हमनुजदेह॰ रजचरनउपासतञ्जहमरुद्र॰ सोफुलदेवककनासमु
द्र॰ [illegible]तिनहिकौरवकस्रथीस॰ ममदूतराजलहिनयेमहीसा॥ कबिकानिसे
मकहेदुरबादनोम॰ धृतराष्ट्रगयेउकिञ्जापधाम॰ येसुरयपारत्नयेमदत्तेथ॰
सोमानतहेंकडनहिसमथ॰ बिसेषहहसमयोबिचारि॰ धरनीधरकहि
लमुसलधारि॰ नहिकौरवकरिष्पथीनिदान॰ पुनिजैकुवारबलिप्रमान॰ पद
बारिगंगजलमारिखेत॰ सबकेरवहसतनपुरसमेत॰ दिमनदिसिचोमोल

उरंत। उतराय ओर औ औ अनंत : इक ओर लयो जव पुर उगर : ऊव ये ह्वै हल
व हाहाहार : जब लग्यो नगर जल मांझ जान : तब छुरे सब निके वल समान
करि स्याम अग्रसेन्नृप कुमारि : बलदेव सरन आये बिचारि : करजोरि स
योधन प्रनित कीन : मुख नये स्वित अति मन मलीन : यह प्रभु प्रभाव जानि
न अंत : अपराध छिमा करिये अनंत : पुनि पस्यो सजोधन आनि पाइ : इ
दयो अन्न यली नो उझार : हत मान नये अरु कंपहीय : दुरजोधन इहा दाय
जो दीय : षट सहस तुरंग अरु रथ प्रबंध : पुनि बाजि अयुत द्वादस प्रबंध : दी
य ऐक सहस दासी अनूप : रसरीति निपुन श्रंगार रूप : संग पुत्र बधू जय जस
समेत : आये बलजी तिय नास खेत : चेष्टा जथा कैरव कुचाल : सब कही जादव
निसों सुदाल ॥ ६० ॥ हति कैरव कुल गरब हति : बिजय पाइ बलदेव : स्याम हि
ले हलबल सहत : आये ये अजेव ॥ १ ॥ अद्या बधि उतर इदिसा : पुर हेधस्यो त्रि
पार : दिषन दिसि ऊचो दुगम : सब देषत संसार ॥ २ ॥ इति श्री भागवते दसम
स्कंधे लाल बिहारी हरि हर ॥ दासेन बिरचिते ॥ स्यांम दरजोधन कन्या बि
वाहो ॥ ६८ ॥ रहा ॥ नरकासुर को नास करि : सुरपुर धन अपनाइ : सोरस सहस्र
इ ऐक सो : आनी नरनि छुराइ ॥ १ ॥ कस्यो स बनिको करग्रहन : ऐक ही लग
न अनंत : यह देषी इच्छा अतुल : सब बिसमत सुर संत ॥ २ ॥ छंद बेअषरी ॥ कृस
ऐक अरु अगनित कामनि : भोग बिलास जुवे छिति भामनि : महा जोग जोगेस
रमोहन : पुनि क्यों होत मनोरथ पूरन : इहा नारद मन संभ्रम छायो : येक समै स
राव तिआयो : गगन आकास आ रुसोन इपुर : स्याम सरूप हृदय धरि सुंदर : प्र
तुर हऊने बिलास हासपर : मोहन ये दरनी के मंदिर : दयानिधान बिलोके
नारद : ब्रह्म पुत्र अरु बुधि बिसारद : अषिलेसर उगि सन मुष आए : ले अति
प्रीति सु केवल गाये : चरन पछालि बिस्रव रनो दिक : माध बले धारे ते मसत
क : पूजा करी जथा सुष पाए : बहु स्यों मुनि आसन बैठाए ॥ कृस्न उ ॥ माधव
तव पूछे अति हितमन : करिये मुनि आगम को कारन : जथा देव रिष आग्या
दीजे : काज मनोरथ पूरन कीजे ॥ नारद उ ॥ तुम अवतार पुरुष अषिलेसर : षल षप
कार सहार साधसुर : आये प्रभु के दरसन हित : चाहत जो ब्रह्मादिक हि चि
त : दयानिधान दान यह दीजे : कृस्न चरन थित मम उर कीजे ॥ कबित्व ॥ पुनि नार
द रही अति सुष पाये : आगया मांगि अवर ग्रह आये : नियत न हा तेइ कि स्यानि हारे :
की उ अछित करत हितकारे : ऊधो सहत सु सनमुष आये : बिधि जुत पूजा करि बै
ठाये ॥ ऋषि स्यंभाव ॥ प्रभु पूछो मुनि कव पाउधारे : ऊपै पुराक नउ दिन समार
कारिक ॥ बिप्र बिलो किउ ग्रीयह बानक : अवर त्रीया ग्रह गये अचानक : रहे
निहारि चकित पलरो के : बालबिलावत कृस्न बिलोके : यह अवलोकि अवर
ग्रह आये : पुनि मोहन तह मंजित पाये : अवर नारि ग्रह आये आतुर : आ
लि होत सा धत अषिलेसर : इस्मा दिक देषी लीला यह : ग्रह ब्यापार करत प्रभु
ग्रह ग्रह : मोहन महि लाम दिर मंदिर : आदि अंत अवलोके ईस्वर : ग्रेह ग्रेह

वगुनगावत: प्रेमत्रिपतनयेआनंदपावत: सुंदरिसुंदरिऐहसिधाये:पाऐ
नारदफिरिआये: रुकमनिकेमंदिरअवरेषो: दिअवहेरेकमूरतिदेषी।दे
कृस्नहसिबोलेनारद: बिसरेतनआतिबुधिबिसारदो।नारदठो।जगतईसमे
तवेजानी: प्रभुतवमायाप्रबलप्रमानी: जामहूलिरहेजोगेस्वर: चारिपच
अखिलचराचर: महाबिलोकीदईवीमाया। कैहवेजिहिसुरनच
: ध्यानसरूपकृस्नउरधारे: पुनिनारदनिजग्रेहपधारे॥दोहा॥कृस्नचरित्रय
हकृस्नके अवलोके अदभूत: मायाजिनकीमोहनी: भूतजगतअवधूत॥१॥
इतिश्रीभागवते दसम सकंधेनाभाजारहटनरहरदासेनबिर्चिते॥नारदधे
५ मस अध्याय ह श्रीकृस्नसरूपदरसनं॥६९॥दोहा॥नृपसुतनिकोआगमन:पु
निरिषराजमबोध: अखिलेसुरनिह्वेरहो: सबेपंकसुतसोय॥छंदउधारा
दकदिवसकृस्नदयाल: उठिकवरमातहकाल: निसकृतहितगुनकीन:छि
जदानसुरनीदीन: धरिबसनआभुषधारि: पुनिसनानमध्यपधारि: यहसमय
सातिकआर: प्रभुदरसउधवपाए: अनेकजादवअंस: बनिजथाछत्रीयबंस॥
मिलिसकतमागधसंग: प्रभुहोरकृतप्रसंग॥॥छंदपधरी॥दकरहतअपूरबरूत
आर: सोलपोतबैनीलरिबुलायौकिलबाचा॥किहिपठयेहोतुमकवनका
गनसंकलिवेदोसुपेआज: कृतहिपोपूछतकृस्नदेव: नवकहेजथआगमन:उह
नेभहाउ॥दकरेसमगधपनरूथधाम: नहनगरबसतगिरबजनाम: जगकेजिहिराजाजीतिजीति:दे
जरासंधराजाअजेव: हेउष्महदैवाधिदेव: तिहिमोंकसहतसोदु
अयनकंदिमिलेअनीत: गिरयेकगुफादुरगमगभीर: उननृपलि
सरीर: पगपेउनमोकहदैवपाए: अवगतअवसथानिकटआर: अनंत:
हयोबचनआप: प्रभुसुनियेतुमपूरनप्रताप: तुमअप्रमेयआतमअनंत: अखिलेसअखिलमय
णागतनिस्तयदनसंत: तुमदीनबधुदैवाधिदेव: अवताररल
जेव: निग्रहनुष्टदलनबनिहंत: पुनिकरतदीनरछाप्रमान: अप्रमान: जा
दहिहितयेह: दैवाधिदेवधरिमनुजदेह: प्रभुकरैसुआगमअप्रमान: यहबिरदनिहरोजग
बलसुरासुरकोउनजान: तुमदीनबंधुदैवाधिदेव: लिसंनार: गवअ
जेव: कोउदीनअवरहमतेनुम्हार: जगवेतकरननालि॥पूर्वपद॥नजिले
वसथानिकरआर: सरनागतहितकरियेसहार: बिस्वेसरक्करिहियपु
मफलआपनरूप: पाछेसुधिलिऊजोईसरूप: हसतिमनबलअसा
र: पुनिकाहिकरदुषसिंधुपार: यहअयत: करिप्रभुसोंसमताबिजयकाम:
सकरतदुष्टदिनदिनउपाऐ: यहजरासंधअगेअनंत: किऊकारनतिकसे
बारनागोसंग्राम: यातेहेबाढ्योगरबआर॥कबितु॥प्र
प्रभुयेकबाररहिबिजयपाए: याबिचिमुनिनारदरहोआर: प्रभुकरीजथाप्र
सुनीसनार: ... श्रीकृस्न। अथउरतुमगमनो

तुमतेअगम्यनहीजगवंत॰ सुनकहो विवरिपांडवसमाज: किहितोतिरहतकाज
रनकाज॥ नारौंउ॥ तुमतेनुस्योकछुहेदयाल॰ करुनानिधानवेतात्रिकाल॰ क
हिऊंतथापिजोसुमोकाज: धरिचितसुनऊंराजाधिराज: राजसूजग्यतवहेतर
ज॰ रुतउदिमकुलपांडवसकाज: उछाहहोतघरघरअपार: बिस्वेसयहेउन
केबिचार॰ नवआहिजितेनुवचक्रनृप॰ संपनराजसंपतिसरूप॰ सोजोति
नीतियहजरासंध: वडुत्योरीसकारागेहबंध: राजसूजग्यनहिबिनाराज
उनकोहेएतीकठिनआज॥ दोहा॥ नातेकरऊंसहायतुम: अर्जुनहाचुलऊंपु
नीत॰ सिधहोहिसाधनसबे॰ तेउनकेपषमीत॥१॥ कहीअवसथानृपन
की॰ रुतविसबेसदेस: रिषनारदउपदेसकरि: पुनिग्रहकरेप्रवेस॥१२
तिश्रीनगवतेदसमसकंधेभाषावारहदनरहरदासेनविर्चितं॥
जरासंधबंदिग्रहराजानदूतआगमनप्रतिआगमन७०॥ दोहा॥ सुनि
सुनिनसदेसमव: अरुनारदउपदेस॰ मोहनजादवरुधमिलि: करत
मंत्रबिसेस॥ १॥ छंदपधरी॥ माधवअपनोअभिप्रायमन॰ ऊधवसोपूछे
तहाआपन: मोहितअआहिपंडवयह: अरुनृपमोषनदितीयकाजयह:
पहलेकहाचलेंसुभ्रमानकूं: केतुमजुधसंबोविधिजानकू॥ ऊधवा। पहले
पांडवग्रहपधारऊं: स्योमतहासवकाजसुधारऊं: मागधवधकेहेनृपमो
षन: पुनिहोरराजसूयमषपूरन॰ अयतमतंगमहाबलओरई॰ साधनसत्रअ
तोहनिसोरई: मनुहैजरासंधकेयहपन॰ जाच्यानगहोतनहीजाचन: यद
मरमबाकोपुनिगाऊं॰ सुपेदेवउपतिसुनाऊं: मगधदेसकेअधपतिमांने
जरासंधकोपितजगजांन्यो: पूरनताकेकुलबलसंपति: सोनअसपुजित
हकसंतति: पुत्रनहीनमहादुषपावे: उरदाहैसोकहतनआवे॰ सोन्रुपरुप
हेतत्पसाधे: आलमदमनकरेआराधे॰ महादेवतवसेवामांनी: नवदीयहर
सनसहतनवानी: पुनिबोलेहरदयाप्रमानें: मांगऊंन्रुपतिजुपेमनमांने। न्रुप
उदिवनसंततियहमहादुष: सबेअहमेरेसंपतिसुषा॰ कहिकाताहिएकफ
लदयोरुद्रतब॰ वालेकाजसिधिकेहेअब: रह्योन्रुपतिफललेग्रहआयो॰ प
टरानीरुववहफलपायो: नारिनअरधअरधफललीनें॰ करिजुगनागसु
हनकीनें: नहारुवनिकेनरीगरनपित: पूरनअवधिदईवगतिप्राम
जुगमषंडदुवमातजाये॰ पेषिसबनिमनअचिरजपाये: कोउजरानामर
नकेकुल॰ विनतानरीजोगमायाबल: आनिकारदेऊंअवलोकी: यहक
छुइछादईवअलोकी: जराजबेकरपरसनकीने॰ निकरआनिदेषंडनवी
ने॰ सोमिलिगयेदेहअतिसुंदर: नामनयोतिहिजरासंधनर: दसहजारहे
सतीबलदुरधर॰ अपनेदलइकबीरवकोदर: मनुसमनताप्रतिजुधप्रमांन
ऊं॰ जथाजोगयेदोऊजानऊं: बीरतीमद्विजवेषबनावऊं॰ बीविताहित
नसंधिबनावऊं: जाचोईदजुधयहजाई: पुनि

निबहेरेऊ परमसुषपाई॰ तुमप्रभु आपुनरहऊ निकटनहो॰ जथाकाजकी
सिधहोइजहु॰ असजेनृपतिबदिहैंकाके॰ तिनसुधिकरिरोवतसिसुताके
अहेअहो त्रीयतनगुनगावहि॰ असबालकतिअनयउपजावहि॥नृपत्री॥
मतरोवहुरेदुषकेमारे॰ हेरेहकथनस्वामहमारे॰ दुष्टमारितवपितादिठेहै
पुनिहमपुत्रपरमसुषपेहैं॰ जहांजहांसंकरपरिजाको॰ तहांतहांहोतसहाय
कताको॰ तबनारदहोमंत्रबतायो॰ थिरकेरिसबहिनयहेथपायो॰ आपाक
रीत्रयांनकुलअब॰ तहांसूतलेआयोरथतब॰ अवरोजथाजोगपरथआयेर
क्षटिबद्धिचलाये॰ उगेसेनबलदेवप्रछिअब॰ ततछनरथआरोहि
क्षसतब॰ बाजतबिबिधिअनेकसुबाजे॰ सुनतजथाक्रमचढिचढिसाजे
तुरंगनिरहासेनचलाये॰ पंथजथाबिधिसोतापाये॰ प्रभुआगादेहत
पनाये॰ येहमतुमपाछेहीआये॰ नतमारगआपालहिनारद॰ बिद्युधलो
कगयेबुधिबिसारद॰ इंतंअनंतदिसिदिससमदाये॰ सोबीजमहमंकसु
ये॰ पुनिकुरषेतदेससबजिपावन॰ इहांनयेपंचालयआवन॰ पुरपत्तनगिरन
दसुबपाये॰ इंद्रप्रसथआतिसुषहीआये॰ पांडवसननसुषआरतीतिपर॰ सब
हिनिलेजथाक्रमसुंदर॰ बामाकुसमसोंधचढिबरषत॰ हितकरिक्राम
दरसमनहरषत॰ पुरबासीइहांदरसनपावन॰ बिननायहयहकलसबद
वत॰ बिबिधिनातियहहारबनाये॰ अवलोकतनृपमंदिरआये॰ इहदेप
तीकुंताआरी॰ लेतलोंनहरषतउरलारी॰ पुनिसबराजलोकअंतहपुर॰ अ
निमिलेअतिहरषबदेउर॰ पूजाकरीजथाबिधिपावन॰ भोजनपानसेज
मननावन॰ नियतजथाक्रमडेरादीनें॰ अगटबंधुसुतसुनरसबीनें॥हु
ऱ्येकयेककेअयरहो॰ आयेदासअनेक॰ तहांसबकीसेवाकरत॰ बिधि
बिधिसहतबिबेक॥१॥ अबिहितनयोसमजरहे॰ गरुआनंदउऊअर
करतबिबिधअपिटक्रम॰ सबमिलिराजकिताराा॥२॥ कृंतासुतकेहे
तकरि॰ स्यामरहेकेउमास॰ बननिहरजलकेलिबिधि॰ बंछितबित
बिलास॥३॥ इतिश्रीभागवते दसमस्कंधे नाभाबारहदनरह
रा॥ दासेनबिरचिते॥ जरासंधबधे इंद्रप्रसथआगमन
॥ महासनाबिराजितपरमसुत॰ सतमंत्रीतस्नप॰ तहांआये
॥ जुधिष्ठरजोउद्दप ॥ देवाधि
त्रयलोकपति॰ अगअगकुलअनूप॥ करजो
देवासदेव॰ अषिलेसअषिलमायाअजेव॰ करजो
॰ प्रभुपरमपुरुषपूरनप्रबीन॰ मषराजसुयकारनमहंत॰ अब
महिमाहिदिछाअनंत॰ सोईसिधहोरप्रभुकेसहाइ॰ इहिगिरआरन्तो
हिनउपार॰ यहमंत्रबिचास्योनलोआप॰ पुनिबदेकितप्रभुताप
सुरसिधराजसबहीप्रसंग॰ इकलकरतसबेइछाअनंग॰

रूचयै विसेष : संसार सार हूंतम षग्ग सेष : उतपन्न ग्रेसरि ग देवेएह : सो महावी
र धरम हि सनेह : इनते कछु करन हि न आज : रनबीर पगव कुअनुज राज :
नुव चक्क करहि दिगविजे भूप : साधि है काज जे सो सरूप ॥ कवित्त ॥ मिलि
सब निकुलकौ बचन मानि : पुनियहे मंत्र कीनो प्रमान : सहदेव परयद
हन दिगंत : पुनि निकुल बीर पछिम प्रजंत : उत्तर दिसि अरजन चले आप
पेत्तीम पूर्व दिसि बल अमाप : चारयो दिसि पग ये बंधु चारि : विष्यात बी
र पौरुष बिचारि : बसुमती द्रिव्य राजा विसेष : इन चारि दिसा जीते असे
ष : सो रसो अजित इक जरासंध : अति बली कृपयजुत मरातंध : सो सुने
ज बेपा फव नरेस : साम सो मंत्र कीनो सुदेस : जो कलो प्रथम उधव प्रमा
न : सो ईकार कुअ वेज रुपति सुजान : इहां नीमसेन अरजन अजेव : द्विजरू
प करे अनुबास देव : अतिथ कालये तहां आर : पुनि जरासंधि ये कोत
पार ॥ अरिल्ल ॥ चा ॥ वे देस कहे हम त्रये विप्र : प्रनुद्रस तरित्ते आर
छिप्र : जाचे सो अरथी क विप्र जानि : पुनिरेकु रानकुल हूंतमानि :
कुकरे जाचना संग को इ : क्षेत्री अरु साम र्थ हो इ : नरक पट्ल है सोइ
निदान : मह स्वगर्व बेद बाचा प्रमान : कछु अदान क्षत्रीन आज : जाचे हे
म राजान पुत्र राज : सिवरि हरिसचंद अरु बलि नरेस : व्याधा कपोत दषकु
विसेस : इसादिक जे राजा अनेक : विष्यात सुजस वसुधा बिबेक : अप
ने वसरीर दल बल अषंक : पुनि धरम हि धुवे जान कुमचेक ॥ जरासंध
बिचारी ॥ आकार बचन जाचकन एह : सो नयो नृपति मागध संदेह : कु
रम्र लस्व व्रण अरु नयन कोप : अंगुष्ट प्रति चाबिन्ह ओप : प्रतिमा नवि
त्र लक्षन प्रसिध : ये क्षत्रीय है को उ समर सिध : अब तो ये न दकनये
अनि : जाचे सु संग न धरम जानि : बलिराज छले बामन विष्यात : बि
थरी कित्ति त्रय लोक बात : अंवरोध करे गुरहा निश्रंग : नव रूपन की
नो बचन भंग : निरधार करे मागध नरेस : अभिलाष बि प्रजाचक असे
स ॥ नीम बाच ॥ हम क लो बिकोदर बचन एह : हित मानि देहु जुध हमहि
देउ ॥ अरिल्ल ॥ इहि बीचि कहुं सब बोले अजेव : यह नीम पथ रूप बासदे
व : करि हरष जुआ ए जुध काज : इन इन्द्रपुर कुमहाराज ॥ जरासंध उ
मागध हसि बोल्यो सुनहु साम : समता न मो हि तुम सो संग्राम : यतथ
म कांति सुधरा अधीर : तुम आर समर के बसा तीर : बय तुल्य न अरजु
न बल बिधान : सो पेन जुध मो सो समान : प्रति बीर समर में नीमपाह
यो कहत मात्र दोउ जुरे आइ : रनमन कुबज्र आयातन बीर : सम घात गद
जर जर सरीर : मिलि घाउ दाउ दोऊ समान : नीम हा जुध तत्तल नया ते
दारन कीय पंच बन कुल दाव : पेमरे न पलक ता ल्ड्ड पाउ : मो हने सुयिक

भेमलमंत्र:तब कहे नु उधव गदतंत्र:हवकरनि करावि त्रिन बासर देव:अस
नीमअर्जुन चितये अजेव·त्रिनतहा फारि केह्यौ अनंत:य हलि पीसमसानी
मअंत:पलमरमक लेऊ धवसुषेन·सोपे सुधि कीनें भीमसेन:मगधे
सकंग गहि मान मारि:पुनि भीमसेन सो धरपछारि:पग एक चापि पग सो
प्रबीन:करचरन द्वितीय गहि सद्द कीन:पलफारि उभयतन करे षंड
प्रतिसांजु संधि जानी प्रचंड:अवलोकि जुरासंध संधि आर:सोउ बकुति
सांधि लीने सुनार:सोई जरासंध संग्राम सूर·परसपर भिरत पोरुष सपू
र.पुनि उसह फारि रास्यो सकोप:अथ कृत काउकर पत्र ओप:उवषेरभी
मरन अजिर डारि·पुनि घसे धरनि मूधे पछारि·इहा जस्यो कस्यो कर पुरुस
आर:पे मिले नाहि कवि उपार:धरपरे बहु मिलि जरासंध:सब छुटे देह
देहसंबंध:अपि लेस र अरजन मिले आर:लीय भीमसेन कह केवलास
हा दुगम सतारीस दिन:समहरा भि स्यो समान:मगधराज कर भीमके
प्रतिजुध दीनें प्रान॥१॥ इहा मागध के पुत्र इक:सुपेनाम सहदेव
गहो सरन गोबिंद को:मन छांके अहमेव॥२॥ देस मगध को राजदल
पृथी अछत्र मजंत:कृष्ण धर्यो तिहि सीस कर:दीनों अभय अनंत॥३॥
जरासंध को बध सुजस:पायो भीम प्रकास:अनु नरहर कीनी कृपा:सु
पेकृतो निजदास॥४॥ इति श्री भगवते दसमसकंधे भाषा नारहट॥न
रहरदासेन विरचितो जरासंध बध भीम विजय।७२। इहा स
हस बीस अरु आगसे·नियह बंदि नरेस:करि गिन परे गिरकंदरा·सेवत
उप असेस॥१॥ छंद पधरी॥ तन मलिन बसन तन छुधा त्रास:पुनि सहत
महा परिभव प्रकास:रह छदन सो बपु दुरबल सरीर·उर कंप अपिल
अंतर अधार:नव मनुज गन पंजर नयान:निकसत अनेक पंषी नि
दान·साहि दुषअज थानिक सेनरेस·कृत बरनं दरसन वारकेस·येबंदि
मोष कीने अनाथ:निज दरस दिषायो बिसुनाथ·भुज चारि चारि आपु
ध अनंग:अंबुज दल लोचन स्याम अंग:कुंडल किरीट उर मनि बिका
स:करि सूत्र कनक बनि पीत बास:अस्तुत सरूप देषो अनंत:सोई
वेद बतावत परम संत:दुसह कृत परिभव गए दुष:सबहिन के उपज
अमित सुष॥नृप उ॥ कर जोरि कहत करुन प्रकास:तुम दीनबंधु हम
दीनदास:सरणागदि करदलक सघन स्याम·कृत मोष हमारो अनु अको
म·हमन ये राज मद अंध राज:कछु लष्यो नाहि का नऊ अकाज:माहनी
महमाय मुरारि:सो परी बीचि प्रभु नहीं संतति:नये राजन दम दमान
नेग:अवनरी सबे सुधि अंग अंग:अषिले सकर ऊ उपदेस यह:त्रिहि
कीन:

गतिदीन ॥ छंद ॥ नृपनजउ मोहितै सावधान : पुनिकरफुलेकरता
समान : सुषदुःषलाभअरुहानिसंग : इनकोसमानदेषउअनंग : निहकाम
करउसबधरमनेम : पुनिमोहिनमिलिहोसप्रेम : करिजथाजोगपआदर
आनंत तहाकहेबचनयहरमाकंत : हैधरमसुवनकेजगपधाम : सबतहाँ
आनिमिलियेसकाम : करिकृपानृपतिसबबिदाकीन : देवाधिदेवतहाँ
नयदीन : येराजअपनेगेहआइ : सोनजनतनथेस्यामहिसुनाइ : सबनीमप
थमिलिहलसंग : इहइंद्रप्रसथआयेअनंग : दीयुबिजयसंषपुनिबासदे
व : अतिहरषनयेग्रहग्रहअमेव ॥ दोहा ॥ कलजुधिष्टरकोकरे : बंदनचरन
बिसेष : जरासंधपोरुषजथा : सोसबकह्यअसेष ॥ १ ॥ कुंतीसुतकरजोरि
कहि : राजाबचनरसाल : यहतुमहीकरिहोहरी : कारिजसिधकृपाल ॥
॥ २ ॥ कर्योनृपनिकोमोषक्रम : छंनमहबेदिछुडाइ : प्रतुनरहरगेसीप
कृति : सदाअनाथसहाइ ॥ ३ ॥ इतिश्रीभगवते दसमसकंधेभाषायांबा
हरनरहरदासेनविरचितं ॥ बीसमहस्रराजाबंदिमोषनोनाम ७३ ॥
दोहा ॥ जरासंधकोबधजथा : पुनिसुनिकलप्रस्ताव : नृपधरमसुतकेत
पोः उरआनंदअमाव ॥ १ ॥ कह्योजुधिष्टरजोरिकर : प्रगटसमयजबपाइ
कह्योचहतहमजगपक्रम : सोप्रभुकरोसहाइ ॥ २ ॥ हरियहसुनतप्रसन
है : आगयाकीनीयेउ : करियेजगपारंतक्रम : सबहीछाडिसनेउ ॥ ३ ॥ छंदपद्ध
री ॥ द्वैपाइनगोतमभरद्वाज : कीनेबसिष्टअयेसकाज : मिलितहाँअसि
तअरुद्विजसमंत : मैत्रेयच्यिवनअरुत्रितमहंत : द्विजकवषकपवमि
लिबामदेव : मुनिबिस्वमित्रअतिनपअजेव : पुनिसुमतिपरासुरगर
गपाइ : अरुबामनकृतजुतपउलआइ : द्विजबेसंपाइनधोमदेव : अ
रुपरसरामतपबलअजेव : कसिपअथर्वआसुरकृपाल : द्विजबीत्रहोतमधुछ
दयाल : समअकृतबरनअरुबीरसेन : सोकीनेरिषरसजसुषेन : द्विजद्रोणकृपाच
रिजसकाज : भीषमधृतराष्ट्रसुतसमाज : पुनिबिदरसहतअनेकरूप : सबमिलेअ
निअपनेसरूप : करिजथाजोगिबिउवारकाज : रसरीतिसहतसबकरतराज : अ
नकहलजोत्रिभुवसोधकीन : दिगदेवआदिमापारदीन : जोबरनजगपआगेबि
सेष : इन्द्रादिअमरआयेअसेष : गंधरबसिधचारनसुगान : पुनिउरगजदरा
हसप्रमान : सुरकंन्याकिंनरसबरागसिध : सांगीतनिपुननाटकप्रसिध : अ
वमिलेसकलसुवचक्रभूप : अरुसहतराजरमनीअनूप : बिधिजथाजोगिउ
रजनबिचारि : सबहिनकहँकोरिजदीयसंभारि : अबिलेसकूपासबजुरी
आनि : पूरनतापाठवयहजमानि : कृतहोनलग्योआरंतकाज : सुरसिधबि
हतराजसमाज : पुनिजथाबेदबिधिअवधिपार : सुनजगपनयोपूरनसु
नार ॥ दोहा ॥ मषअंतउचितप्रजासनेह : इथीसुरपूजोसहतप्रेम : यहजग
पकहोधांकवनआज : किहिकरेप्रथमप्रजासकाज ॥ कबित्त ॥ मुषचाहिर
हेसबरिषनरेस : सोदयोनउतरोकिहिबिसेस ॥ सहदेवबाच ॥ कबित्त ॥ अ

ध्योतिन गु
अहमअखिलेस बिस्वरूपीबिस्वंनर · सर्बदेवमयदेह · रहांजो गिकोत्र
ाजधर : कृस्न छांडिकारुप्य · करनकारनसमथकलि । बासदेवकां
र · मथनपूजाकरियेमिलि · तसमातकरकृस्नको मतुम · बासदेवकां
अदेबिधि यहकेसोबचनसहदेवरहो · सबेकृीजिहिजगसिधि ५ । कवि
कृ॥ छंद दोधरी ॥ यहसबहिनकोमंत्रसुहायो · परिमदसुनतपरमसुख
पायो : कृस्नदेवरहोपूजिसकारन : मिलेजथाअनिलाषसकलमन · च
रनधोयजलसीसचढावत · पूजाकरतपरमसुषपावत : बिहतकृस्नगपि
कारबिलोक्यो · सत्रुचयोसिसपालसतोक्यो · उग्रिदोतहांजुजाउगई · म
हक्रोधनहिउरहिसमाई : बोलोदारुनबचनमहाबल · सबानसुनाईवेदि
अयचपल : जथापुरेसनमायाजानी अतिदुरबादकेअतिमानी ॥ सिस
पालउ ॥ मानिनजाइकालगतिजैसी · अनुचितकरीदधजनअैसी · अगरछांडि
रिपनृपप्रबीनै : कृस्नअजबालकहकीनै : जाकहकहतनदकोजायौ :
प्रगटअहोरवंसपदपायौ : जथाजोगपकृस्नहिमतजांनकृ : निंदतकाकेबुध
नहांनकृ : हेआश्रमबरनहिकुलहीनो : कृतनिरगुनकहप्रजितकीनो · नयोअ
जातिबंसमहलूपति उनकूनराजदयोहनकोअति : छांडिपविक्रमसिकीनोउ
ल : धारसिंधुनअपारबसोपल : तातेजोगपनपूजाताकों : अबतोउचितक
दिवेयकों ॥ कबिकृ ॥ सगजबसतदुखदिवनायो · पूरननबनकुलदुषप
ये · याकेबचननयोनहिआदर : जथासपालकेबचनमगसर · निंदकृस्न
सुनेजोईनिर : होसोईसरबधरमतेबाहर · सुनरपंचसुतरहांसन्तारे · नैन
सेनसोईकृस्ननिवारे : आपचक्रअनुजचक्रचलायौ · बहसिसपालमारिपि
रिआयो । कायोसिसनयोकोलाहल · उसहकालतिहिलागियोइल · निक
जोतिहरतेनिरमल · कृस्नप्रवेसकृस्नमहग्रनकल : कृस्नचितवनबेरभावक
कृ पीतनमेसुपेबिषेहरि : सांगनयोजबजगसपूरन रहसनयेअरथोसब
न : सबहोबिधिसबकोसंतोषे · पूजादानमानद्विजपोषे ॥ कृष्ण ॥ नृपसबनि
सुपनयो : अरयरयरउछाह : देषिसपूरनजगपदिन : दरजोधनउरदाहभ
लचरित्रअनतक्रम : निगहमोषनरेस ; कहिनजुधसिसपालको · अरबध
बिसेसा॥२॥ कीउ रनजदुनाथकी · करिहिनगावेकोर · कबिनरहरतिहि
कीः अतन बाधा हो य॥३॥ इतिश्री नगवते दसमसकंधे नाषाबरे हर
रदासेन बिरचिते ॥ राजसूजइसपूरनसमिमपालबध ॥ ७४ ॥
कस्योअमनसुषदेवसो : रहपरी दानराह : नृपसबनिकोसुषनयेन
रनतापरा ॥ १ ॥ ऐक हिदरजोधनउरहि : जथायारलगिलोन : जल
हीपरजस्यो : यह धूकारनकोना ॥ २ ॥ तहाकेहेसुषदेवतब : पूरव
र : अमरसियनपअगमन : बिबिधिजगमपारा ॥ ३ ॥ छंद पध
मरहाअनाथिकार · पुनिपथसजनसबाप्रकार : दरजोधनधनअ
दीव · पनिकरनदानकारिजप्रबीन · सब्रारसाधनानिकुलसा

गतिदीन ॥ छप्पै ॥ नृपनजऊ मोहित्के सावधान : पुनिकरऊ लोकपाल
समान : सुषदुःषलाभअरु हानिसंग : इनकोसमान देषऊअंग : निहकाम
करऊसबधरमनेम : पुनिमोहिमिलि होसप्रेम : करिजथाजोगपूजाहर
अनेत : तहाकलोबचनयहरमाकेत : है धरमसुबनके जगपथाम : सबतहा
आनिमिलियेसकाम : करिकृपानृपतिसबबिदाकीन : देवाधिदेवतहांअं
नयदीन : येराजअपनेगेहआइ : सोतजतनयेस्यामहित मुनाइ : सबनीमप
थमिलिकलसंग : इहइंद्रप्रसथआयेअनंग : दीयबिजैअसषयुनिबासदे
व : अतिहरषनयेग्रहअहअमेव ॥ दूहा ॥ कलजुधिष्ठरकोकरे : बंदनचरन
बिसेष : जरासंधपोरुषजथा : सोसबकहेअसेष ॥१॥ कुंतीसुतकरजोरि
कहि : राजाबचनरसाल : यहतुमहीकरिहो हरी : कारिजसिधकृपाल ॥
॥२॥ कह्योनृपनिकोमोषक्रम : छंनमहबेदिछुआर : प्रभुनरहरअैसीप्र
कृति : सदाअनाथसहार ॥३॥ इतिश्रीभागवते दसमसकंधेभाषाब
हट नरहरदासेनविरचितं ॥ श्रीरासहअराजाबंदिमोषनोनाम ७३ ॥
दूहा ॥ जरासंधकोबधजथा : पुनिसुनिकलप्रस्ताव : नृपधरमसुतकेन
पो : उरआनंदअमाव ॥१॥ कहेजुधिष्ठरजोरिकर : प्रगटसमयजबपार
कह्योचहतहमजगपक्रम : सोप्रभुकरोसहार ॥२॥ हरिश्वहसुनतप्रसन
के : आपुकीनीयेऊ : करियेजगपारंतक्रम : सबहीछालिसनेऊ ॥३॥ छंदपध
री ॥ द्वैपाइनगोतमनरद्वाज : कीनेबसिष्टअयेसकाज : मिलितहांअसि
तअरुद्विजसमंत : मैत्रेयच्चिवनअरुत्रितमहंत : द्विजकवषकपक्षमि
लिबामदेव : मुनिबिस्वमित्रआतितपअजेव : पुनिसुमतिपरासुरगर
गपार : अरुबामनकृतजुतपउलआर : द्विजबेसंपाइनधौमदेव : अ
रुपरसरामतपबलअजेव : कसिपअथर्वआसुरकृपाल : द्विजबीत्रहोतमधुछं
दस्याल : समअकृतबरनअरुबीरसेन : सोकीनेरिषिरमजसुबेन : द्विजद्रोणकृपाच
रिजसकाज : नीषमधृतराष्ट्रसुतसमाज : पुनिबिदरसहतअनेकभूप : सबमिलेअ
निअपनेसरूप : करिजथाजोगिबिकुवारकाज : रसरीतिसहतसबकरतराज : कु
नकहलजेत्रिभुवसोधकीन : दिगदेवआदिमापारदीन : औबरनजगपआगेबि
सेष : इंद्रादिअमरआयेअसेष : गंधरबसिधचारनसुगान : मुनिउरगजहार
होसप्रमान : सुरकंन्याकिंनरसबरागसिध : सांगीतनिपुननाटकप्रसिध : न
वमिलेसकलतुवचकनूप : अरुसहतराजरमनीअनूप : बिधिजथाजोगिउ
रजनबिचारि : सबहिनकहकारिजदीयसनारि : अषिलेसकृपासबजुरी :
आनि : पूरनतापालवअहसमानि : कृतहोनलग्योअरंतकाज : सुरसिधबि
हतराजसमाज : पुनिजथाबेदबिधिअूवधिपार : सुनतजगपनयोपूरनसु
नार ॥ छप्पै ३ ॥ मषअंतउचितपूजासलेल : पृथीसुरपूजोसहतप्रेम : यहजे
गपकहोधोंकवनआज : कितिहकिरेप्रथमपूजासकाज ॥ कबित्त ॥ मुषचाहिर
हेसबरिषिनरेस : सोदयोनउतराकिहिबिसेसासमहदे : उवाच ॥ कबित्त ॥ अ

मग्रबिलेस · बिस्वरूपी बिस्वेनर · सर्बदेवमयदेह · धर्मातन
धर : कृस्नछोकिकारुप्य · करनकारनसमयकेलि । रहांजोगिकोत्र
मषजपूजाकरियेमिलि · तसमातकरकृस्नजबे षतुम · बास
बिधि · यहकसोबचनसहदेवरहो · सबैकरी जिहिजगसिधि ५। क
।छंद दोधरी ।। यह सबहिनिकोमंत्रसुहायो · ९रिषदसुनतपरमसुष
यो : कृस्नदेवरहोपूजिसकारन · मिलेजथाग्रलिलाषसकलमन ।
नधोरनलसीसचढावत · पूजाकरतपरमसुषपावत · बिहतकुलग्रघि
कारबिलोक्यो : सत्रु बयो सिसपालससोक्यो · उग्रिगदोतहांनुजाउगई · म
तकोधनहिउ रहिसमाई : बोलेदारुनबचनमहाबल · सबनिसुनाइबोदि
श्रयचपघल : जथादुरजनमायाजानी · ग्रतिदुरबादकहेग्रनिमानी ।। सिस
पालउ ।। जानिनजाइकालगतिजैसी · ग्रनुचितकरीदुरजनग्रैसी : अगरछा
रिषरूपप्रबीने : क्रमग्रनषेषबालकहकीनै : जाकहकहतनदकोजायै
प्रगरग्रहीरबंसपदपायो : जथाजोगपकृस्नहिमतजानकु : निंदत
नदानकु : हैग्राश्रमबरनहिकुलहीनो : कतनिरगुनकहपूजितकीनो : न
जातिबंसमहनृपति उनकुनराजरयोहनकोग्रति : छाकिपबिक्रन्
लः पारसिपुतग्रारबसोपल : नातेजोगनपूजाताकौ : ग्रबतेउबि
हिबोधकियो ।कबित। सजनबैसनतुरबाहसुनाये · पूरनूनबनकुलसु
थे : यांकेबचनजयोनहिग्रादर : जथासालकेबचनमगोसर · निंदाकृस्न
सुनेंजोईनिर : होसोईसिरबधरमतेबाहर · सुनतरपंनसुतरहोसनारे : नैन
मैंनसोरक्रिस निबारे : ग्रापचत्रनुजचक्रचलायो · बहसिसपालमारिफि
तिग्राये : कायोसीसनयोकोलाहल · उसहकालतिहिलागियाहल : निकसी
जातिदहतेनिरमल : कस्योप्रवेसकृस्नमहग्रनकल : कृस्नचितवनबैरभावकरि
क्रोपोतनमेसुपेबिषेहरि : सांगजयोजबजगसपूरन रहस्नयेग्ररथीसबकर
नः सबहीबिधिसबकोसंतोषि · पूजादानमानद्विजपोषि ।। रुह ।। नृपसबनिको
सुपनयो : ग्ररथरथरउछाह : देषिसपूरनजगदिन : दरजोधनउरदाह ।।७।।ज
मर्वतिग्रगनतक्रम : निग्रहमोषनरेस : कमिनजुधसिसपालको : ग्ररबथन
बिसेसार ।। क्रीउरनजुनाथकी · करिहिलगावेकोइ : कविनरहरतिहिपि
कीः ग्रंतनबाधाहोइ ।।५७।। इतिश्रीभागवतेदसमस्कंधेभाषाबारहटन
रदसेनबिरचिते ।। राजसूजग्यसपूरनसिसपालबध ।।७४।।
कस्योप्रमनसुषदेवसो : हपरीहरतराह : नृपसबनिकोसुपनयो · म
रनतापाइ ।।१।। ऐकहिदरजोधनउरहि : जथाधारलगिलोन : जलनि
हीपरजस्यो · यहधूकारनकोना ।।२।। तहाकहैसुषदेवतब : पूरबजम
रः ग्रमरसिथनपग्रागमन : बिबिधिजगपग्रपोर ।।३।। छंद पध री
मरहाग्रनाथिकार : पुनिपथसजनसेवाप्रकार : दरजोधनधनग्रि
दीन : पुनिकरनदानकारिजप्रबीन : संतारसाधनोनिकुलसाध

वअषिलनृपनिआराध: द्विजवरवसोचकहृकृस्नदेव: आपहीलनेअधिकारे
व· सत्रुषानपरमनीसुनार: पंचालीयहअधिकारपार: राजाबिरारजुजधो
नरूप· आतामिलिनूरीअवानूप· इत्यादिकजेराजाअपार: कीयजथजे
पधरमाधिकार: मषराजसूयपूरनप्रमान: बनिजथाबिबिधिमंगलबिध
न: रहाबिजेदेवदुंदुभिप्रकास: पुनिकरीभुहपबरषासकास: अवमंजनकी
यसुरसुरीआर: सुवनूपराजरमनीसुनार: अनिलषजुधिष्टरबिनआन
नयेकृस्नकृपापूरनप्रमानि: रथबेगिरहात्रयपुरुषराज: मंगलजुतआये
यहसमाज।। अथमअध्यनसमा।। मयदयंतसन्ताअरजनहिमिल· सोई
रहाबनाईसानकूल· बिसतारबिबिधपरिषदबनाइ: रहाराजजुधिष्ट
रवेगिआइ: सबभ्रातपुत्रमिलिसजनसंग· अबआनिजथापितनयेअ
नग: आलीगवाभिमिलिजुवतिजाल: गवनतहामंगलगुनयुपाल: पुर
लोकआनिवेगकृपाल: सुषसनप्रगटदेषतसंसार: बिधिजुकतबसन
रूपनबनाइ: छितमानिजथासोरेनचढइ: रहादरजोनपयोअदेष:
संगदथसजनभ्राताअसेष: यहसभासजलथलभ्रमअपार: दुरयमनजथ
आकारद्वार· थलदेषितयोभ्रमजलअथाग: लीनेउंगरतबबसनलाग: ज
लगहरवोरथलबिमलजानि: पुनिदयेछोडितहाबसनपानि: जलकुंडमाझ
बूडेअजान: पुनिलगेनिचोरनबसनपानि: सोदेषिकृस्नतबकरीसैन: नि
रकहस्यातहाभीमसेन· लहिसमयहसेतबलोकलोक: अटाछिहासिकरि
श्रीकअोके रहीनरी षिसाहटषलहिआनि: परफिस्योनिचोरतबसनपा
नि· करितहासीसनीचोकुचार· अपनेयहआयोदुषअपार।। रहा।। नारउ
तारतनमिको· कुलकेरवषयकार: तारथकोसयास्तर· वयोबीजइन
बारा।।१।। संपतिपंडवराजसुष: पूरनजगपुत्रताप: सत्ताईषिकिंकुकरम
बस: पस्योकिसानेआप।।२।। हारनउपजेदोरदुष· दरजोधनहिदुरंत
नेवतातेअमरषनयो: तेसेईमिलितंत।।३।। अतिमनसुतसुकदेवश्री:
कीनोप्रसनप्रबीन· याकेउचितबिचाररहो· द्विजबरउतरदीन।।४।। इति
श्रीभागवते दसम सकंधे भाषा बारह हरन रहरदासेन बिरचितो।। म
असन्तामअध्याय जोअनतिसा ह टेजेम।।७५।। रहा।। कृस्नजुतपूरनज
हकरि· अहआयेगोबिंद· रूपजुधिष्टरकेनयो· रहापरमआनंद।।१।।
अबकीनेउछाहअति· कृस्नगतिकेकाज· रतपगयेद्वारिका· बोले
सजनसमाज।।२।। छंदपधरी।। अषिलेसकृस्नबलनआप: प्रभुभग
तिबिक्रमपूरनप्रताप: देसाधिकारसदमनहिदीन: करुनानिधानतव
गवनकीन: इहाइन्द्रप्रसथआयेअनंत: सबमिलेआनितहासजनसंत
दिनकछुकरतेदेवाधिदेव: रहाकरतधरमचर्चाअजेव: जबइन्द्रप्रस
थअकृस्नजानि: पेंडुसहयातपूजीप्रमानि: पनबाधिसातुषलसम
यपाइ: अबधेरीद्वारावतीआइ· महपतीसालसिसपालमित्र: तिहि

...कमनिचरित्र वहसमयआइरनमदाग्रंथः हमकि
...कमलिचरित्र वहसमयआइरनमदाग्रंथ सुनिसनेह रनमारिसव
...सालप्रतंग्याकरीयेह सपिपालसषाबंधसुनिसनेह
...राज अवनीनिरजादवकरोआज प्रथीसप्रतंग्याकरिसचेत
...यितपक्ष्मवंक मुष्टिकामात्रआहारमूल करिरहेरनकौसानकूल न
...वरषदिनकौबितीत नवसहेघामजलविषमसीत नतेसनेये
...रूप अनुदीनेहरसनदयारूप करजोरिसालतहाअनितकीत
...अंतरगतिप्रवीन मोहिदेऊरुदेसोबिमान मनतेजोसतगु
...सुरअसुरनागनरजहसंग गंधरबनिराहसकअंग सोजादव
...रजयस्थल तासौंकेऊबाहनकरिनकूल नवकीयप्रमानन्नपवित्र
...वः दीयमयकौआग्यामहादेव मयदीनौंकरितैसो बिमान जलगग
...गमनजहाविप्रजान॥ सालआयरिविप्रसलपूरबनिरोध करिआ ब
...रावतीकोंध घेस्योसुनगरकरिउसउघात बिसतरेसेनचऊ
...भात सिलसर्पवृछिबरषेअसाधि हसाहिकौउसहूतपाधि
रवतहपुरमोंऊहेर बृतकूलप्रदुमनिसुनेसोर हहास्प
कसधीर बनिअनुजसहतअक्रूरबीर हसाहिकजेजादवअनेग
मिलेआनिपरदमनिसंग सनाधबंधअयुधसजाइ हारथारोहन
नमिआइ करिसजधनुषटंकारसूर परदमनिबानसंधिकरूर सा
सोनयेजादवसंग्राम देवासुरज्योंआगेउगाम हहाकरीसालम
अकास सरमारिपरदमनिकच्योनास सालकोसेननारकस
सरपवपंचवेध्योसरीर परदम निकच्योपे रुषप्रकास प्रतिसुन
रबानदसरसप्रकास बिसतरेसालमायाविसेष एकतेरचेकिअर
असेष आकासविबेगिरकबऊआइ दिष्टपथकबऊकबउरहे
गलमधसकबउगिरसिषरजानि उलमुकाचक्रज्योंभ्रमतआनि चे
करतसालमायाअपार बहिविविधिबानबिषमुषविकार सालके
मुषिमंत्रीद्युमंत सोजुस्योपरदमनिसोंउसंत परसपरगदाकीनेप्रहार
मिलिदोउयोउमुषमारमार परदमनिकीसमंत्रीप्रहार सोमुरछागतर
सोसेनार हहानयेपरदम निजबअचेत रथहिलेगयोत जिसूतलै
परदमनिबत्व॥ परदमनिजबेकछुचेतपार सारथसोंबोल्योमति
साह हेजीयतछुराययोयेतमोहि जातेअसाधिकापतोहि कुल
हवनाहिनयोकोइ छाडिपरामुषसमरहरर॥ सारथीबोल्
गाआसोंतुमछिचेतअति मतियहउपजीमोहि हहानकरि
सोचअबु ताकोदोषनतोहि॥१॥इतिश्रीभागवतेदसमसकं
...जाइ रवरहरही सेनबिर्वितं॥ साल मुधरउअवरो

अद्दु मति जुध ॥७६॥ इहां परदमनि सुतसों : औसो कलो रिसार : जहांतु
मंतमंत्री तु सह : अबतहां मेपु हवार ॥ कवित्त रू ॥ छंद पधरी ॥ सेगयि
नहां रथ हांकि सूत : इहां तयो भेद सम हर अनंत : रनकअर चलाये बानचा
रि : मंत्री के चास्यो अस्व मारि : इक बांण सारथी छेदि अंग : उतनय करि धनु
ष साइक अनंग : मास्यो संग्राम मंत्री तु मंत : इक बान कस्यो सिर छेद अंत
अतु मनित बेरन बिजय पार : कहि साध साध सुरनर सुतार : दिन राति सम
बिसतरु रंत : इहां तयो जु भयसु तन अंत : यह समय धरम सुतयं इत्र
प : प्रतु कृत कुल पूरन प्रताप : दुरनिमत देषि नि सिसु पन देव : इहां त
यो चित बिसमय अमेव : इहां तरी । बिग्रता चित अचेन : नृप श्रीगोपाल
नी कमल नैन : उ म्भितें सेन संजुत अनंत : बिष्यात बीर जुध जीत वंत अ
षिलेसर धारावती आर : संग्राम होत देषौ सुतार : बलतत्र नगरर
हा बिधांन : धरि रहे सुआयुध सावधांन : इहां केलि सार संग्राम जोर :
जयहेत साल सों पराजे ए : षल देषि कुल कहे समर षेल : सूतक हे सक
लि वाही सचेत : रन बिजय बान मेले मुरारि : म थि पंकरि सो सक
ति मारि : पुनि बान कुल बेधे प्रकास : सो तरथ छत्र मन लागे अकास
ह बिसाल । बिसष हनि को पहो रह : स्याम के बाम तु जल गयेसो ह : पुनि
गिरि तूमि सारंग चाप : अपि लेस फेरि लिस ज्यो आप : इहां त्र मत गग
नरथस हकराप : दुरबाहु साल बोल्यो सदाप : पृथी समो हि सिसिपाल प्री
ति : ताकी त्रीय आनीय हरनीति : नृपसत्ता मोऽ सोई हतिनरेस : बिधि बु
पेना हि पो रूष बिसेस : अबतो हि पठै अंत हि अंत : इहां अवनहो रनपु
रि अनंत ॥ श्रीकृस्न बाच ॥ हसिक ले कुलतबब चन यहे : रे दुष्ट राषि
आपने देह : कृतअंध न देषत तम्यो काल : करि कोप सीस ऊपर करा
ल : जे महावीर तुव चक्र माहि : निहचे सु करत कृतक हत नाहिं ॥ क
बि रूबाच ॥ इहां कृस्न गदा हतक स्यो यह : दुष्ट उर लगी तो बिकल
देह : पुनि दंड मात्र फिरि चेत पार : सो रच ततयो माया सुतार : षल
कस्यो साल तब रूल वेष : बसक पट इहां आयो बिसेष ॥ कवित्त ॥
च : यह बचन कृस्न सों कहो आइ : मोहि पठयो हं देवकी माइ : सुत
कर ऊ साल सों समर जि साधि : बसदेव हि लेगो बलीबांधि : पसुसूत
जथा लेजात पाप : इहि भांति पिता तव अहो आप : मुक्कु ऊ संग्राम म
मबचन मांनि : अब पिता छुराव ऊ बेग आंनि : यहसु नत तनयो संत्र
म असेष : छिथि कपट हृत हिंयत बिसेष : बलतंत्र बीर पुरस हवि

तावनायहैबात॥ सालउ। इहिबीचसालरथ...
पबाध्योबिताइ: ईस्वरीदेहतंजपेग्राप: बधतहोराछिग्रपुनोनृप
रितहाक्रतमससरूप: इहलातिहिये इलमग्नत्रूप: तिहिहि घिनये:
कसवित: करिमनुजनावतहारमाकंत: धरिजोगध्यानकहिहि ग्यो
पेनसीसतानिसरीर: देखोनिहारितनबास्त्व: वहवेगेहरथम
नेवु: मास्योसुगदाकरि हरिबिमांन: निसेषतोरिकास्योनिदांन: जल
पस्योरथसोनजाइ: इहसालगहालेसनुषग्राह: उक्तुजाछिहिउग
तरेव: ग्ररुचक्रसुदरसनसिरग्रजेव॥ छह॥ मास्योसालसंग्रामनि
: माधवतोरिबिमान: सुरहरषेबरषेसुमन: दुंदुभिदियेनिदांन॥१॥
तश्रीनागवतेम हपुराण दसमसकंधअनुसारणेनाषावारहद
रहरदासेनबिरचितं॥ सालबधेनांन सतेतरिमग्रधाइ॥
७॥ कबित॥ सोरठ॥ प्रथमहसोसमिपाल: पेढ़कराजासाल
नृप: क्रततिहिबयरकराल: दंतबक्रबिदूरथहवो॥१॥ छंद पेग्रपी
ऐहोउमहासेनसजिग्रायो: बिग्रहबयरनिरोधनदायो: सोसुनिक्रस
देवचढिसमहर: पुरुषबलवनतहाकहतपरसपर॥ दंतबक्रगोर
बक्रबोलेउरग्रतिदुष: मैममभित्र हतकदेखेमुष: यहममगदा
कारा: ग्रोकुतुमकहीयतग्रवतारा॥ कबित॥ दंतबक्रकीगदहसु
हन: क्रस्नदेवकैलगीसकारन: कौमोदकीगदाबज्राकृत: हरीक्रस्नसोह
मोक्रोधग्रति: क्रदेग्रहारकस्योमाधवतन: छूटेप्रानसत्रुकेनिहिछिन: म:
स्योदंतबक्रग्रतिमांनी: सामसांगवएजोतिसमानी: दंतबक्रकोभ्रातवि
दूरथ: सोपेबयरजानिमनसमरथ: धरिग्रसिचरमरोषकरधायो: इहा
क्रस्नकेसनमुषग्रायो: पुनिसोऊहरिचक्रप्रहास्यो: महासंग्रामबिदू
रथमास्यो: दंतबक्रग्ररुसहबिदूरथ: रनसनमुषकेमेरमहारथ: दे
गनदुंदुभीदीनी: किंनरसिधचारनगनकीनी: ग्रादिभूतनाउपजु एते
होंनासकरेग्रस्तुतेते: इहांग्रनतदेवग्रहग्रायेे: बजेहातिकानगरव
धाए: महकेरवपाउवजुधउदिम: नयोसवनिकेचितवढ्योभ्रम: सुनि
रथउदिमसंकरषन: महाविम्रादसवयोमनहीमन: इहिहिसिक्रस्न
रथनउहिदिसि: सोउबिचलतीरथजात्रालिसि: महामित्रइरजोध
नमाल्यो: इहिहिसिक्रस्नत्रातउरग्रान्यो: तहावलदेवनिकसिगयेतीने
गुथदुसहसहिजातनजाते: उहग्रनासमप्रथमहीग्राये: ग्ररुपाछेसर
सतीग्रन्हाये: पृथ्वीहिकविंदुसरपावन: त्रितकूपग्ररुसुपदसुदरसन
...हमतीरथविधि: सरितागंगतमनमंजनसिधि।

इहा नैमषारन्य जब आये : मुनिजन तिन सनकादिक पाये । इहा द्विज करि सबनि
दये आदर : व्यास सिष्य इक रोमहरषवर : याते सो न उठ्यो अकुलाई : इहा बल
देव महा रिसि आई ।। बलदेव उ ।। अरे द्विजाधम अहमिति आई : इन्ने तो हि कु
ता अधिकाई : व्यास सिष्य सीषे विद्यावर : याते गरब बढ्यो तेरे उर : सो न ही उठि
न बि प्रकोरे सब : हेत नीति छाडे मो ठे हव : कीय मे मनुज देह इहि कारन : पाष
ंडनिको दंड प्रचारन : इहा संकरषन नर रत चलाये : तिहि प्रहार द्विज पंचत
पाये ।। रिषि वाच ।। द्विज यह हम व्यासासन दीनों : वांचत निज पुराननवी
नों : याहि न उचित ऊठिबो याते : नव अस्य षाकरी न ताते : तुम अनरथ यह
कीनो तैसो : इह ब्रह्म बध उपज्यो ऐसो : प्रायासति करिये अनुपावन :
नियत ब्रह्म बध पापन सावन ।। बलदेव उ ।। सत्य बचन रिषि तुमहि
सुनाऊ : जोग सकति करि बिप्र जिवाऊं ।। रिषि वाच ।। इहां विचार करू
ऊ प्रभु ऐसो : नव कुअसत्र सति होइ तैसो : वेद बचन यह बिप्र बतावे :
पुत्र पिता की समता पावे : उग्रस्रवा है पुत्र जु वाको : ताहि दियो व्यास
सन ताको ।। बलदेव उ ।। निहचे फेरि कहो संकरषन : मांगहु जो अ
भिलाष बिप्र मन : मन संतापनि वेदो मुनिवर : इहा बल्वल नाम एक
असुर : इल्वल को सुत महाबली अति : पापी दानव बहुत दुष्ट पति
इत पुरी प्रसु राअह आमिष : गारत जग्य बिगारत दुष : पूरन जग्य
न न ही पावत : सो दानव पल हम हि सतावत ।। दो ।। असुर करउ नि
मूल वह : सुर मुनि रेजु साल : याको प्रायस्चित यहै : करिये राम
कृपाल ।।१।। जितेक तीरथ जानिबे : बरस एक मह रूप : क्रम जात्र
तिनकी करहु : सो तुम मुनि सरूप ।।२।। इति श्री भागवते महापुराणे
दसम स्कंध अनुसारे ... हरदास... बिरचितं ।।
लोम हरष बध ... । बलदेव जी तीरथ जात्रा गमनं ।।७८।। क
बिरुवाच ।। दो ।। कीय आरंभ तजग्य को : सौनक आदि रिषेस : करन
लगे तहा दुष्ट क्रम : असुर आइ असेस ।।१।। छंद हरिपदी ।। रिधिर थूल
देह अति दारुन : कज्जल बरन अरुक लह अकारन : कपिल केस अरु दंत
कराला : भ्रकुटी कुटिल करूप कराला : ऐसे जग्य साल पल आये ग
पी देषे बिप्र पलाए : मुनि कोलाहल सुन संकरषन : जग्यसाल आ
ए रब्यक जन : कोपि मुसल हल सुमिरन कीने : आनि तये ते बचन अथ
नें : इहा गगन चढि गयो सु असुर : उर परित्रास न तयो अति आतुर : इ
हा हल अग्र सु खैंचि उतारयो : मसतक फटयो मुसल करि मारयो : इ
य प्रान दानव तिहि दारुन : रिषि जय जय ति उचारि महारन : आ

पामांगी कौसिक आये : आगे सरयू सरित अन्हाये : आर प्रीयाग पुलह के
आश्रम : करि मंजन गोमती गलिका क्रम • स्नु बिपासा सोन गया पुनि : सु
न क्रतमाला ताम्रपरन सुनि : अद्रि मलय कुंभज के आश्रम : दृढ नंआरणव
आदु श्रृंगम : कंन्यादेवी दरसन हरि कर : बिहरे फलगु पंचसरोवर : देवी श्र
नद्वैपायन दरसन : सूर्पारक गोकरन सनातन : अयन थेन इहा न गति आ
मीनी : देवज यथा बिधि बिप्र निदीनी : अवतापी रुपयो ली आयेन : निरवि
ध्या बिहरे दैंडकबन : रेवा महषमती मनु तीरथ : फिरि प्रभास आये पश्चिम
पथ : नयो महा तीरथ रूऊ नट : सो पे इहा सुन्यो रन संकट : बिहतन तीरथ
बरष बिती सो : इहा महा तीरथ अतीसो : रोष चदे इत भीम बिजय रन :
बहु जुध बढियो दुरजोधन : अजरु आप आप अकुलाये : सो पे रूअ हि
नन सुनाये : इहा बलदेव सोच करि आपन : चले ने मकरि तिन हिनि
वारन : इहा कुरषेत हाकिर थआए : पे दोउ निरत महा नट पाये : महा बि
रोध बिजय बंछा मन : रोष कदै नहीं हो त सांतरन ।। बल देव वाचा
हा बलदेव बचन कहि ऐसे : तुम महया लिन ही को उतै सो : सिष्य ब
लद दुरजोधन साथन : अरु तन बल अति तीम अराधन : कलह धरो तुम म
हन कोऊ : हतन जिबीर निवरत क हो ऊ ।। कबिरू । महा वेरति हिं बिच
ननमानो : उरनराम को आदर आनो : मह बलदेव बिचारी ऐसो : इन
कीय लाबी है ऐसो : इहा नेमधार न जु आये : मत्री सहत करि पुनि सु
हये ।।१।। दुहा ।। करि कै तीरथ परिक्रमन : नरतबंऊ नृपाल : तब आ
ये बलदेव तहां : द्वारावती दयाल ।।१।। कर मचरित बलदेव को : करि
हेतु मिरन को इ : कालतीन मन बच करहि : हरि सो बहुत न हो इ ।।२।।
रति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधानुसारेण भाषा बार
हटनरहरदासेन विरचितो ।। गुणात्तरो अध्याय ।।७९।। कबिरू
दुहा ।। इहा सुदामा बिप्र इक : महा दरिद्री मूढ : एक क्रीयाकरि सुध
वह : अरु हुत नागप अगूढ ।।१।। स्री ग्रंथ बिराग वह : मन निस चपनि :
काम : जथा लाभ संतोष जग : दीन बसन तन स्यामा ।।२।। छंद पधरी ।। सुषअय
र अति तन मलीन : उभ पतिव्रता जन बचन दीन : जो कौ सु उदिम अरु फलन
ह : पे कछु चित थिरता न पाइ : पतिव्रता तास पत्नी सप्रेम : नित सके सेवा गति
से वासनेम ।। सत्री ये ।। कहि त्रीया बचन तुम सुनऊ कंत : इक बिपति
हसि रे अलसवंत : श्री कृष्ण सषा जिनके समथ : अपान सहत रत उपम
बथ : सांदीपन के तुम पढे साथ : ऐईवास देव अनाथ नाथ : इहा निकट
द्वारिका बसत आप : धरि चित धीरपति करऊ थाप : पुनि बिप्र मंत्र कीनो
प्रमान : उनको कछु दीजे ते रआंनि : बसत्र के फेरु बांधे बिचारि : निस

चेत होत दुख बिसनारि : बास तनसो चाव रगो गिवाधि : करलो राघरी यु अस्यो को
धि : उ भिचैसो सो करत आस : बसरे व कवर को उर बिसास : यह बिस्रवारि को
नगर आर : सब पे रिलो घिनीत रि सिधार : अंत रहु र हत ब क्र लन आप : पर
नीय ह्रून नप्रताप : अनिवार तआयो बिप्रए कु : दुर बल पर फाट मलिन दकु
सषित हरि मुष क्वन दीन : पहचो नो प्रभु दृष्ट प्रबीन : उठि क्र लत हो स
मु है आर : लषि सष ॥ मिलत तिहि के गलार : धरि पो निरूं निकरूनो निधा नु
परजंक दये आसत प्रमोति : पट पीत ऊरि रज बिप्रपार : जगवंत चरन धोय
सुतार : सो ध स्यो चरनजल आप सीस : मन मुदित करी सेवा महीस : प्रभु बेगि
आप आय त्तवन रूप : अरु करत चरन मरदन अनूप : बैदरनी दे रत बिज
न बात : विधि जुक तकरी पूजा बिष्यात ॥ सत्री उ ॥ हरि आस राजर मनी ज्यो
र : गही सहूडु तिसो रवोर : पाक्रुनो को न यह कि हिं प्रसंग : अव धूत छीनप
र मलिन अंग : दारिद रूप यह धीन देह : सज्या बेग स्यो करि सनेह ॥ श्री कृष्ण
करि हेत सुदामो बाल काल : सांदीपन की हम पट साल : मेरे गुरु स्नात ायहम
हेत : यह नाम सुदामो बिप्र संत : कुसल नक्रष्ण पूछत कृपाल : बलबीर सत्ति
वह मित्र वाल : अब ता गि हमारे ग्रेह आर : सुत दयो सा थ दरसन सुतार
पदि बिछुरे हम तै जब पुनीत : तब का जन्त ये कि प्रुनो हि मीत : दे यीय त
अकाम से द्विज दयाल : है दसा को नय ह कौन हाल : सु धि आवत है वह दिन
सने ह : गुर पतनी पठये काज येह : ईंधन को हम तुम गए आप : बन माझ बि
षम तहा सीत ब्याप : वहि समय तई बरषा अकाल : जल पूरि मही मिलि
जल दजाल : ऋत निस गगन घन अंधकार : सो पंथ लहत नाहि न संचार
पुनि रहे षुध्या रथ सम यपार : बन मांऊ बिषम रजनी बिहार : कछु षे जत
षोजत प्रात काल : द्विज गुरू लहे हम को दयाल ॥ गुर बाबु ता नै स प्रेमत
व के वतार : हम हेत पुत्र तुम कष्ट पार : कृत सेवा हम अवि तुम सकाज : या
तै तुम ऊरन तये आज : बिद्या मेरी न जो बिसेष : सो फलल हु तुम को
असेष ॥ सुदामो बा चा ॥ प्रभु हेत ज पे बन कष्ट पार : सो ई स्वयो हमै स्वाय
सुतार ॥ हाँ ा न बग्राय गुर ग्रेह तुम : सांदीपन के संग : हां गुरपतनी ले
रजर : उपजे सुष अंग अंग ॥ १ ॥ कृष्ण सहार करदीन के : सो यह बिरद सव
रि : मो हि दरिद्री को मिले : प्रभु सा न हे पधारि ॥ २ ॥ सो र ठ गा ॥ धरि कर
ले उर धार : के सव महिमा बिरद की : बेद न सके बतार : सेष बषानत
मुष सहस ॥ १ ॥ नरहर प्रभु गावत निगम : यहे रावरी रीति : पतित उधारन
परगुरूष : पूरन प्रेम प्रतीत ॥ २ ॥ कहे पिछाने और को : प्रभु तुम बिन गु
पाल : मो हि दरिद्री मूढ को : दीनानाथ दयाल ॥ ३ ॥ इति श्री नाग ब तेन
हापु रा ण े दस म स्कं ध नुता रा नाम बा र ह ट न रह र दा से

कबित्त ॥ असी कौ अंक ॥८०॥ कबित्त ॥ दोहा ॥ कारन गुरु अंकी कथा
अपनी दसा अनंत : कृस्न सुदामा सौं कही · भगति हेत भगवंत ॥१॥ छंद पधरी
गाथेय मित्र पतनी प्रवीन : द्विज लाव कछु जो कछु हम हि दीन : हम येक तावग्रा
हीं अपेर · तव तू रि अल पलगन हीं नेर : तुलसिका पत्र फल फूल तेह : हेत
करि लेत सु प्रसन होइ ॥ कबित्त ॥ चकि रहे बिप्र तह थर निचा हि : ये तांव
र मुष्टी मात्र आहि : इनको कहा देहूं अब तु हि आज : लोकापवाद अरु हेत लल
ज : बिस्वेस बिस्व ब्यापक बिसेष : द्विज को तहां अंतर सनाव देषि : अबलो
कि गांठि तुल अनंत · कर षोलि लये तह रमाकंत : मुष्टी नरि मेले मुष
मंझारि : पुनि माधव जे कर पसारि : सो हथ्थ गहे रुकमनि सुनारि : प्र
भु अब तो रहहि द्विज सबै पाइ : तो जनम न बंछित द्विज हि दीन : करि त्रि
मत हा ति हि सियन कीन : इह प्रसन समय मोहन उदार : कीय बिदा बिप्र
करि नमसकार : जाचौ न सुदामा कछु जनाइ : निसेष कृस्न हरि दिन स
इ : इहां बिप्र सुदामा ये ह आइ : पेष रन कुटी अपनी न पाइ : पेषत ह अे ह
न येस मथान : अति ऊंच सर्व संपति समान · इहां फिरत दास दासी अने
क : बनि बसन कनक भूषन बिबेक : निरधार बिप्र चकु यानि हारि
बिसमय परि सोचंत नो बिचारि : पृथीपति का कन्य इत्र मानि : कहां
भूलि आयो अजानि ॥ कबित्त बाचा ॥ द्विज रहे तहां ठगे उ चित · कं
मनि पह्वा सों आप कंत : नग जटित कनक भूषन निदान : पट बेस
नब रन सो न प्रमान : आवति संग सहचरि अनूप : सो धरें उतरि आइ
सरूप : करि धूप दीप कलसा थिकार : चित मुदित महा मंगलाचार : धरि
भुजा कंत मंदिर पधारि : सो छावरि कीनी बिप्र नारि : बाजित्र गीत नृत्य
व बिसेषि : द्विज रहे इन्ह को बिनो देषि : सब संपति सुष मंदिर संगे
ऐ कृस्न बिना को देय और : प्रभु नृपा बिभूति छन मांझ पूरि : उरलभ करे
ओइ सरति सु हि जिन मद रि द्वीदीन जानि : अह्वा हरि के सब करि गलानि
पहचानि मो हि है सम सुषपाइ : ले मिले आपत हा कं गलाइ · प्रभु करी प्रीति
मो सें प्रमानि · जो गे स सिध से पेन जानि ॥ कबित्त ॥ इहां पाइ इंद्र संपति
अंसेष : बिप्र सो तये बिलसत बिसेष : पंच तल सो ति हि अब थि पाइ :
व्है बिप्र कृस्न मं हि मिले आइ ॥ दोहा ॥ बिप्र सुदामा की बिपति : प्रभु न
र हर की प्रीति : कृपासिंधु जदुबंस को · राजनीति यह रीति ॥१॥ कृपा व
रि त्रिजु कृस्न को : करि है सुमिरन कोइ · करम बिपाक दरिद्र को : हे तन
क बकु होइ ॥२॥ कबित्त ॥ नर हर मन बच करम : करि ये न जन त्रिकु
ल : कारन बंधन करम के : जथा छुरहि जिम जाल ॥३॥ इति श्री भगवत
तेम ॥ पुरां छंद सम स कंधा नु सा र ले ना षा बार इट न

रहरदसेन विदरवत॥ सुदामाचरित्र व्यासीकेअध्याय॥८१॥कविकृ
ताच॥दूहा॥कालजुसूर्यग्रहनकोः आगमबरसोआनिः कमजातकुरुषे
त्रकीः पुनिसबदेसप्रमानि॥१॥ कालंतरसुकब्यासकहं ःरहसिपरीछ
तरारः कारनयहन्नछीकथाः प्रेमसहतसुषपारा॥२॥ दृजगोपिनतैबीछ
रे। वृंदाबनबलबीरः पुनिकाऊअवसरकऊः नऊरिमिलेजदुबीरा॥१॥छंद
ठेअवरी॥उग्रसेनराजाचलिआपनः संगबसदेवकवरसंकरषनः क्रूलपर
दमनिगोमसकारनः गदसुवंद्रसंमिलिसुकसारनः बिनतावालकुरंव
बिराजेः सिंदनसिवकावाहनसाजेः इत्यादिकजादवसबआयेः देसनग
रपुरजनसमदायेः अनुरधक्रतबरमाअधिकारीः राषेनगरदेसरषवारी
करीनछित्रपृथीन्दपुनंदनः तिनकेरुधिरकरेनहातरपनः श्रोणीदहत
त्नरेसपूरनः बिजययजगकीनैंतहाबनबनः वहिपवित्रथलकृस्नजु
आयेः उतमकुरुसुषेतअन्हायेः द्विजनिसुरनिबऊदानजुदीनें ः कृस्न
गुतन्हातहाडेराकीनेंः मछउसीनरकोसलकेरेः पुनिबिदरवपुरदेस
नुग्रेरे। अजयअरुकंबोजसुकेकयः मद्रकुंतकेरलछरहितमयः न
रतषेनकेजेतेन्दपतिः इत्यादिकआयेसेनाअतिः घोषघोषकेगोपन्र
थयनः महरनंदसंगआरहरषमनः अवरसकलदृजजनचलिआए
सहलकुरंवनिसकटसजाएः उहांकुरषेतपरबसिरआवनः नयेम
हरकेरामनलावन॥ दूहा॥ कुटंबहितजबकृस्नकहः दहांमिलनस
बआनिः सेवाहितसबंधसुषः पूरनप्रीतिप्रमानि॥१॥ कृंतारहीबस
देवकाः सुषमिलिबहनीसंतः अबिलदसाआपनीः कहतनए
एकंत॥॥कुंतावाच॥छंदद्वैअणरी॥महाअवसथापतिहममारीः
निसचयतुमसुधिलीनीनाहीः देवहोइप्रतिकूलजुदुरदिनः आप
नेकीसुधिलीजेआपन॥बस.देव वाच॥दहांबसदेवदयोफिरिउत्तर
बरीबहनतमानसमोसरः तातेदोषहमहिनहिताकोः जथाकऊअ
बकारनजाकोः मानीअमतदैवकोऐस्योः फिरैपुत्रिकज्योंनट
फेस्योः दुषदकंसकेतयअतिदारुनः तातेहमनमिजथाबातविनःअ
बरहादेवजोगतैंआयेः सजनमिलेसकुटंबसुहायेः अरुहमसहीबि
पतिजुऐसीः तुमहींसुनीहोइगीतैसीः उग्रसेनदेआदिवयुअब।
सहतत्रीयानिमिलेकुंतासबः दहांकृस्नेटनकहंआयेः सबकेर
वसकुटंबसुहाएः भीषमद्रोणाचारिजरनन्दरः धराअधीसनृपति
धृतराष्ट्रः रानीपतिबरतागांधारीः पुत्रसबेसंगमिलनपधारीः
अजयबिदुरकृपाचारिजसमः कृतभोजभीषमकजथाक्रमः न्द
पतिजहांबैराटनगनजितः हैंनहाथ्यपकेतमेथलिहितः जुधाम

तुदमथोपमाद्रजहां : हितजुतबाल्हीककेकयतहां : संगसुसरमान्नपसु
हाये : इमादिककैरवमिलिआये : मातदेवकीरामकृस्नसम : कीनीत्रतिम
नुहारिजथाक्रम : इहानंदादिगोपगनआये : संगगोपीसकुटंबसुहाये : मि
लेसकलजादवमनमाने : हेतप्रीतिकरिअतिहरषाने : इतबसदेवनंदमि
मिलिआपन : अरुवैअतिहितएकासन : उपकेसबबसदेवहिदीनो :
कमकलेसनिवेदनकीनो : कृस्नप्रवेसनंदग्रहकारन : चितसंगसे
लगेचितारन : वेदिनसषाउजनिसुधिआये : छिनतिहिनयनप्रेमजलछ
ये : याहीसमयकृस्नयेआवन : लेपितमातलगेउरलावन : मनतनम
तक्रान्तहितैसे : इहांउपजेप्रातिकरसजैसे : जथाहरषबढिकैमनरिज
ल : बोलिनसकतरहतकरिकरिवल : तहानयेउऊंयसुषतेसोजाइ
नकलोबिधातजेसौ : रोहनिमातदेवकीराणी : हेतजसोदामिलिहरषा
नी॥ देवकी॥ कहैदेवकीवचनसकारन : महरिजसोदाधेमहेतमन
पयकुचपानप्यास्येपाषे : सोहमबिनुतुमअतिसंतोषे : पुनिकीयरिष्म
जथानैनपल : पानबसनसैगंथनिपलपल : इहांकृस्नउरिकेजब
आये : पुनिगोपिनएकांतसुपाये : रूपमगनआनंदजरोवत : जथा
बकोरचंदमुषजोवत : बिछुरीनिधिपाईजनुबामा : करतबिलोक
नबदनसकामा : प्रभुपूछतनयेप्रेमपरायन : निरविकारजोगीन
रायन : सषासाबहमसोजेसुंदरि : कबकृमनआवनहेसुधिकरि : क
सोगमनमथुराकिहिकारन : मेकिसजनदुष्टगनमारन : तातिक्रतय
नमोहीजानत : मायादेवीताहिनमानत : प्रेममिलनबिछुरतहैप्रानी :
पेयहसबदेवप्रमानी : बातबिधूतमिलतपुनिबिछुरत : जलदल
लत्रिनरेनाजितजित : बरतनजोगबिजोगकरमबस : पेतवन्नलस
हतहैपरहस : होसबमध्यसबनितेबाहरि : आदिमध्यअंतिसग्रत :
निरंतर : करैध्यानमेरैजोमनक्रम : मुकतिहोइसोमिलेमोऊमम
हां॥ अध्यातमउपदेसयह : करिगोपिनगोपाल : ऊठोतेबेबनम
रुहम : नरथेहनंदलाल॥१॥ हेप्रभुदीनानाथहरि : अंबुजचरन
अनूप : सुपेहमारेउरबसहिं : सुंदरस्यामसरूप॥२॥ वृजलील
हरिछबिबिमल : पुनिगोपिनकोप्रेम : नरहरमांगतजनजननित :
यहनिरंतरनेम॥३॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमसक
धेअनुसारणेभाषाबारहटनरहरदासेनविरचितो॥कुरषेत्र
जात्राआगमन॥अध्यासीकोअध्याइ॥८२॥ कबित॥ इहांपं
रवआयेकृस्नपहं : जथाभगतिहितजानि : मनवंछितजिनक

मिले : पूरन कृपा प्रमानि ॥ छंद पधरी ॥ रहे पांडु पुत्र सब मिले आ
ऐगे सुधरम परिषद बनाइ : कुसलात कृष्ण पूछी कृपाल : सुतधरम दये
उ तररसाल : तव चरन कमल पूरन प्रताव : पुनि वेद बचन तिस वेसु
ताव : पुनि साध मुषनि सुनिये पुरान : बिस्वास हत माने प्रमान : अषिले
सकुसल तिन के अनंत : निस मंगल अरु बरते निरंत : तव कृत हेत दव
हरन भार : तुम लये देव मनुजावतार : कौरव अरु पांडव जतु कलत्र
ऐन ईस बेस बरी एकत्र : कमजुक रा राजरमण अनेक : बिधिकर
त बात पूछत बिबेक : सोल हंस हंसा सत एक संग : पेंआग पररानी
प्रसंग : ये कृष्ण देव बिनता अनूप : सुन लछन जो बन गुन सरूप : त
का नुपत सुता पूछे बिख्यात : बिधि कहो आपनी ब्याहु बात ॥ रुक्
मनी ॥ इक बात रुक मम मम भदा अथ : ससिपाल सरसिकी नो सब
ध : सेना अनेक राजा सहार : रहा चेदिराज ससिपाल आर : तुव प
नीस बेक रिमानन तेग : गहि बास देव लाये अनंग : अज जूथ मध्य ते
सिघ ग्वार : जीव माने ताकु ल्लेय जार : रहि ना तिमो हि आनी अनंत
3 वल ब कृत केतो रि दत ॥ जाम्बवती उवाच ॥ अति बली पिता मे
हि जामवंत : जरज रिलद जुध जिजयंत : है न सतरी छ गिर बिवर
माहि : नर अमर तहां किउ गामि नाहि : दिन ऐक आर तहां कृष्ण देव
रत जामवंत तहां तिरि आजेव : रुक बीस अरु होनि मिलर आनि : अनु
को प्रताव नाहिन पिछानि : रहा बासदेव जाने अनंत : संगदरि
मो हि ते हब्या हि संत ॥ सतिभामा उवाच ॥ मम पिता बंध बधके
थ बिरोध : सो सिय हल्लो पवेन सोथ : मनि संजुत ताको बयर मानि
न हर्यो कृष्ण कहद दोष आनि : निरदोष कृष्ण मन तो मलीन : कृत मृग
याल हा बन गमन कीन : पुनि षोजि जथा कम मनि सुपार : रहि स
त्राजित कहद ईआर : रहा हर्यो दोष निरदोष अंत : इव सा षब यर
बा ब्रेउरत : रहा पिता मो हि उरत्रास आनि : पुनि दई ब्याहि प्राणेस
पानि ॥ 3 ॥ कालिंदी उवाच ॥ मैं स्याम चरन को सरन मानि : अ तिल
बचित तप करे आनि : प्रतु असे ओ तर तावपार : हित कह्यो साम
मेरो सहार : पुनि पत्य सब अरजन प्रबीन : करुनानिधान कर ग्र
हन कीन ॥ मित्रविन्दा उवाच ॥ कृत आउ काज पित सान कूल : मो हि
है तस्वयंबर रच्यौ मूल : रहा देस देस के नृप आनि : पुनि जथा जो प्र
ऐगे प्रमान : यह बात बत बेग अबिले सभार : आकर षी टि रिध पर उ
गार : रहि ता तिमो हि निज अरे आनि : प्रतु कह्यो ब्याउ हर षस

प्रमान ॥ सखी वाच ॥ नगनजित राज मम पिता नाम : कीय नेम यह प
न नाथन सकाम । सप्तक स्चोत हा सो इत प्रमान । विधियुक तब्या
ह मंगल विधान ॥ १ ॥ मित्र बृंदा वाच ॥ मम पिता लगन दिन सुनृप
गए : अप्रिले स बिवाही मो हि आए ॥ ६ ॥ लक्ष्मन वाच ॥ इत बृहत
सेन कीय मंछ बेध : सब आए नृप अति बल समेध : जर दिपी यउ
हि नृप समाज : का किन करे उष बेध काज : जदुनाथ इहा निज मरम
रम जानि : तहा मंछ बेध कीय बान तानि : बरमाल तबे कंठ ब्यारि
बिस्व सकल मोक हं बिवाहि : राजान सबै मद गतारि साइ : रणउप
निरे क्रोप पथ आइ : सारंग धनु पगुन बान संध : कटे सब हिन के तु
जोकें ध : पापिष्ट दैषि सो त्रास पाइ : पुनि गये सेष कातर पलाइ :
संग्राम जीत तहा सत्रु साल : प्रभु मो हि ऐ हलाये कृपाल ॥ ७ ॥ सेष स
षी वाच ॥ नरकासुर नाम असुर ऐक : बहु जीति जीति राजा अनेक : हम
कन्यां आनी हेरि हेरि : घर मो ऊ सुराषी घेरि घेरि : पुनि सुने नित हम हरिप्र
ताव : सब हीन सयो यह इत सुनाव : अभिलाष हमारे चित्त ऐहु : श्री देव हे
म हि बिर कृपा रेहु : प्रभु सब हिन को मन ज्ञाव पाइ : इहा नरकासुर बधक
र्यो आइ : ये कन्या सब द्वारिका आनि : पुनि ऐक लगन ब्याही प्रमानि : अ
भिलाष नये पूरन अनेक : यह अछो है मन मांझ ऐक : बिधि सों यहु जो स्व
नवार बार : नव नव हम पाव हिय हत्र तारा ॥ ८ ॥ सब हिन के सेनाव
सों : मन मोहन तन मांझ : चितवत चंद चकोर ती : संध्या दिवस रु सांझ
॥ ५ ॥ कही द्रोपदी सो कथा : बिधि जुत हसि हासि बाम : उग्र नाग पाये रहो
हम बर सुंदर स्याम ॥ २ ॥ इति श्री नारायन नेम हा पुराणे रस मसकंध
नुसारणे नाम भाषा र हट न र ह र दास न बिरचित । द्रोपदी प्र स
नुसारणे नाम भाषा बा र हट न र ह र दास न बिरचितं ॥ १०३ ॥ कवित्त ॥ छंद पधरी
रुकमणी आदि बिबाह कथनो नाम ॥ १०३ ॥ कवित्त ॥ छंद पधरी ॥ कमल था
पंचाली पूछी ह सिस प्रेम : निसेषक से रुकमनि सनेम : करपेत जितेम
आकृमी कृष्ण कीन : पुनि कहे सकल बिनता प्रबीन : कुरषेत जितेमु
निपरब काज : सो आर कृष्ण दरसन समाज : द्वैपारन नारद चिवन
देषि : अरु बिस्वामित्र देवल बिसेषि : द्विज सतानंद अरु त्र्याघ्र
पुत्र परसराम गौतम समाज : गालव वसिष्ट भृगु रिष समान : पुनि मि
लि पुलसतिक सिप प्रमान : पुनि अत्रि हसपति हुं आइ : अरु दि
जमृकंड सुत मिलि आइ : ये कत्र दिति यग रु नितीय यव : अंगिरा अग
सति द्विज बामदेव : अरु ज्यागवल्क रूसा दि आइ : सब तज सुथ
बल सुनाइ : अवलोकि इनहि मिलि कृष्ण राम : पाठ

रनाम । द्विजबर तब अरघासन दीन : अस्तुक लौं तहु माधव प्रबीन ।
रहा दृयो दरस तुम देव आज : क्रम नये हमारेस फल काज : जल में र
हैं तीरथ सकल जानि : प्रतिमासु देव पाथर प्रमान । सो फलत कष्ट चिर
काल सेव : द्विज दरस मात्र द्वै सफल देव ॥ रिषि बचो ॥ तुम ईस्वर अगुन
अरूप आप : पुनि धरत रूप पूरन प्रताप : अरु तीन धरम पालक अघम
दुष्ट निकौ दैदै महा दंड : अखिल स अगम माया अपार । कारन पुरुष पु
मन मसकार ॥ कबित्त ॥ मिलि बैठि सनातन रिषि समाज : कृत होत य
रम चर्चा सकाज : बसुदेव रहा पूछे बिचार : तुम त्रिकाल ग्य बरजित बि
कार : जब होत करम कि हि करम जोग : प्रभु कहो प्रगट अब सोत्र सेग लान
र दीजो च ॥ सुनि बोले नहान रददरिषेस : निरधार बेद मत यह नरेस
मुनि कहे नीत हालारद निदान : सिधांत सुन कुजदु बर सुजान : जग पति क
रत हैं करम जाल - बिधि जु कलप परपूरन बिसाल : धरि देह पुत्र लव बासु
देव : है दिब्य रूप देवाधिदेव : रन होत अखिल ईस्वर अनंत : तुम पूछ
न जो पे हम हितन : भगवंत हि जानत पुत्र भाव । पुनि प्रबल देव माया प्र
भाव : है निकट अनादर तास होइ : जल जस थरगत जिअन जोइ ॥
कबित्त ॥ करि जग्य जतन आरंभ कीन : पुनि मिले सबै मुनि बर प्रबी
न : भगवंत हेत करि मख सुभाइ : जगदीस जजन करि असु भाइ ।
पुनि भये जग्य पूरन प्रमान : निरघोष बजे मंगल निसान : राम स
द आंनि बसुदेव राइ ॥ मम त्रीया कुटंब अपने सुभाइ : मख अंत करे म
जन महीप : सुन दान मान मुनिवर समीप : सब देस देस के लोक सिध
अभिलाष भये पूरन प्रसिध : बसुदेव नंद मिलि करत बात : रथी प्रसिध मे
त्री पुन्यात ॥ बलदेव बाच ॥ श्री नंद तुरंत यह मोहि पास : जो गेस सिध प
रिश्रम न जास : तब श्री तिन करन भये भ्रात : तिहि कारन अब बिछुरे
न जात : प्रथम हम कंस के त्रास पाइ : अस मरथ भये सुन मिल आइ : पु
नि भये राज मद हम हि मित्र - तिन के सु भाव सुमत रवचित्र : प्रीतम च
पल बिरत जल प्रवाह : थक रहे न पावत प्रेम थाह : परस पर प्रीति
पूरन प्रमान : तहा रहे मास त्रय हेत मानि : पुनि भये कोमल पूरन प्रमा
ने : मिलि दई बिदा करि दान मान : इह नंद आदिक ब्रज घोष आइ : सु
मिरत सब श्री नम हि तिन भाइ ॥ दूहा ॥ द्वारावर बारित आगमन : क
रि जात्रा पुर खेत : कीनो आवन द्वारिको : जादव धरम निजेत ॥ १ ॥
इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंधे अनुसारेण भाषबार ह
ट नरहर दासेन बिरचितो ॥ बसुदेवजी कूं रख्यू जग्य करनो ॥

ांम ।। चौरासीकीधार ।।८४।। कविरुवाच ।।दोहा।। येकदिवसद्वाराव
ती·वनिबैठेवसदेव : तवसंकरषनकृस्नतहां : आयेपुत्रअजेव ।।१।। देषि
पितातवपुत्रदिसि : कुवसमरनक्रमहेत : कृतप्रनावगुनकृसनके· रिष
निकहेकुरषेत ।।२।। छंदपधरी ।। वसदेवकहेतवविमलवांनि : तुम
परमपुरुषवेदनिप्रमांनि : बिख्यातमहातुमवासदेव : नवरत्नवितबिन
सतआपनेव : जेअरकआदिदेजोतिवंत : उनमांझतुंमहीजासतअनंत·
पिरउरवीपंच्यागिरविथार : क्रमनादबरनअरुॐकार : नवन्नतमहा
इंद्रीमुनाव : पुनिवासदेवसोईप्रभुप्रनाव· सातिकाजेतामसगुनस
रूप : तवमायाकलपतनवनरूप : अरुतुव्यमगतिप्रभुकीअनंत : अग
ननजानतआदिअंत· क्रमबंधमतनवरतकोर· याहीतेंआवागव
नहोर : स्वारथहितनरकतसिंधुसात : ताहीतेंजनमजुरथाजात : संपति
कुटंबअरुजससमेत· हेंमतामांनतकुबुधिहेत· सोपासबंधतिनकेस
नेह : छकिरलेनपावतकरमछेह : पोसेनपुरुषनिरगुनप्रसिध : सुतनां
हिंमेरेस्वयंसिध : नवनारबिनासनहेतनृप : रविचक्रधर्योतुममनुज
रूप : बरदानपुत्रमोहिदयौवीर : सोईत्तोप्रमांनसुंदरसरीर ।। श्रीकृस्न
।। सुनिकृस्नतहांबोलेसुनार : पितमहानतुमयहेपार : ।। कविरु ।। पु
निमातपितातवग्यानपार : सुतआदिब्रह्मजानेंसुनार· इनदयेविप्र
केपुत्रआंनि : जगदीसजथाजमलोकजानि· हेंअप्रमेयआतमअनंत : ह
रिमहाजोगेसर्सत ।। वसदेववाच ।। आगेंतुमगुरकेपुत्रआंनि : पुनि
दयेहनगुरप्रमांन : करिबयरनावममपुत्रकंस· सोहतेवालवयर
हितसंस : मेरेसुतदीजेआंनिमोहि : तातेंअवजाचतपुत्रतोहि· अपि
लेसकृस्नतवसुनिउदार : कृतसुतनगमनवसदेकुमार· वलिराजप्रभु
कोंतवपिछांनि· अतिनगतिकरदंडवतआंनि : पुनिदेतराजप्रभुको
पिछांनि : सकुटंबउदिकसोईसीसधारि· प्रभुकरीजपाप्रजाप्रवीन
करजोरिदीनक्रोमनितकीन ।। वलिवाच ।। नमोअनंतमहंतनृप·
कृस्नब्रह्मनिजकार : सांषिजोगसायतसगुन : संभ्रितवेदसहार
।। प्रतिमाराजसंतमप्रकृति : ग्यानीहतकप्रमांन : प्रभुदरसनपाव
नप्रगट· ऐसेकोदीयआंनि ।।२।। आगमकारनजेउचित : कहियेक
मलाकंत : हितजुतसेवकजांनिमुहि· आग्यादेउअनंत ।।३।। श्री
कृस्नवाच ।। छंदपधरी ।। मुनिअतुलतेजमरीचनांम : वनितातिं . . मक
हिरण्यधरमनाम : तिहपूर्वजनमषटपुत्रपार :

मसुनाइ : इकदिवसपितातिनकेजुआप : पुत्रीतनचितयोदृष्टपाप : सोहि
सिजुउरअपनेसुताइ : दुसहसकोपतनब्रआपदीन : रिषभ्योमरीचतहामन
मलीन : पापिष्टजानितुमअसुरपार : जुगजथाकरमअनुसरऊजार : येहि
रनकसिपकेउदरआनि : पुनिजयेपुत्रक्रमजुतप्रमानि : पुनिमरेजोगमा
याप्रचार : अवतरेदेवकीगरभआइ : तेक्रमक्रममारेउष्टकंस : निरद
ईसिलापरकेनृसंस : पुनितिनहिपुत्रअपनेप्रमानि : उरबढतसोचदे
देवकीआनि : तवलोकमांऊहैवेसुतत्र : मोहिदेऊआनियहमूलमंत्र
अथ षट पुत्र नाम ॥ इकनामसमरउदगीथआन : परिषपतंगसुयेप्रमा
न : छुद्रभृतघृणीयेषटसरूप : रहातयेजोनिजअसुररूप : रहादयेत
रजसोदयेआनि : मोहनतहाआनेमोदमानि : बलिराजकरैलैअरबाल
देविकिहिआनिदीनेदयाल : रहामिलेजबषटपुत्रआनि : मातांकुचअ
वलिमोहमानि : प्रभुकेपुनीततनपरसपाइ : येवालतयेसरगतहिआ
इ ॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणे दसमस्कंधानुसारेण नाभावारह
टनरहरदासेनाविरचितं ॥ कंसहतदेवकीपुत्रआनयनो नाम
८५ ॥ सुकहिपरीछतमानिसुष : विधियहपूछिविचारि : पथसुतआपं
नियह : कहियेजथाप्रकार ॥१॥ एकसमयअरजनअनय : कहितीरथ
हितकाज : आयेषेत्रप्रभासरहां : सबमिलिबिप्रसमाज ॥२॥ संकरषन
कीसोदरीसुनीसुभद्रानाम : अतिमालछनरूपगुन : नईसजगभोम
॥३॥ दुरजोधनकहदैनकौ : कीयबलनजुबिचार : काऊनपूछतअरक
हं : अपुनीबुधिअनुसार ॥४॥ सोरहाअरजनबातसुनि : उपज्योचित
अंदेस : किऊंजतनयहकनिका : पाऊबुधिप्रवेस ॥५॥ छंद [illegible] प
कस्योरूपसन्यासकारन : धरिउरकपटत्रिदंडधारन : अरजनतबेव
रिकोआयो : बंचकबेषविरागबनायो : गूजतयाहिसनेवासीपुर : ग
हल्यानउपदेसजथागुर : कस्योनिमंत्रणभोजनकारन : महपुरुषब
लदेवजाणिमन : रहाबलदेवअहजबआयो : बिहनमध्यआसनबेग
यो : रहापरसपरकैनाअरजन : अलोअमनयेअवलोकन : यातेहैग
गरागबढ्योलहा : उपजीप्रथमअनंगदसायहा : रहारहेसंबनरकअरज
न : ताकतछिद्रकपटभाजनतन : किऊनिमंतसनरकुमारी : गूजनदेवसु
आपधारी : अतिहितरथआरोहिचलीरहां : तकतयातबनिअरजनकी
तहां : धरिगांजीवधनुषकरयायो : अरजनपाछेलागिआयो : समयपाइ
प्रजेजबस्वारथ : रथतिहिबेगकृदिमहारथ : कन्याहरनपथततहांकीनो
निरषतसकलकुटंबप्रबीनो : सोबसदेवकसकेसेमत : इन्द्रप्रसथलाये

उलअरजुत: इहाबलनर क्रोधबहुकीनों। पुनितहाबरजिकृस्नप्रबीनों। कइ
कृस्नातअबमारहिकैनैं: होनहरिबिसजोकछुहोनैं: तुहिकअंतसुकाकरेंहो
लोकमांझअपलोकतलेहो: संकरषनतबबिधिसमझाये: योंकहिकृस्नसों
नउपजाये: अरजुनअरुहनुमानअग्यानी: धरमराजसुतन्हांरजथांनी:॥६६॥
॥ दृग्यांनीकैन्हांजुहरि। अरुबहुत्तयेउछाह: अरजनसुनन्दाकोइ
हुं: बरीजुरास्नस्माउ॥१॥इतिसुनन्दाबिबाह॥ मिथलपुरबहुलासन्
प: हैंताबसतबिदेह। मनसाबाचाकरमनों: सततकृस्नसनेह॥१॥छंद
पुरी॥ श्रुतदेवनामइकद्विजसग्यांन: सोवसतपुरीतामहत्रमान: जगजथ
लाभसंतोषजानि: यहकरतकालबचनांगांनि। पुनिताकेकृस्नचरित्रप्रेम।
निसकरेंभजननिसिदिनसनेम। अतिलाषकृस्नदरसनअनंत: सोताइराज
द्विजकरतसंत: प्रभुतांकोअंतरजावपार: अबिलेसइहारीयदरसआइ: इह
नारदादिरिषबरअनंत। मिलिकृस्नसंगसोचलिमहंत: आनरतधन्वकुरदेस
आर। अरुजांगलइकहिमिछिजाइ: पंचालकूलमधुकयप्रवेस। सुनकोसल
केकयलंघिदेस: प्रभुउनकोअंतरजावपाइ: अबिलेसमिथलापुरीआइ: ब
हुलासनृपतिश्रुतदेवबिप्र: प्रभुसनमुखआयेतहाछिप्र: पूजास्तावकरि
लगेपाइ। सुनउकुनिमंत्रणकरिसुनाइ: देवाधिदेवधरिमनुजदेह। सबलिय
निसंगसंतसनेह: दुइकेरहकरेंभोजनदयाल: करुनानिधानऐकहीकाल।
उनकरीतबेअसतुतिअनेक: आतमासाषितुमपुरुषऐक: दीननिकोमाथव
इरसदेत: हैंकोनजाहिनहिचरनहेत: सबनातिकरेतिनसमाधानें: धरिहं
थसीसकरुनानिधान: अबिलेसद्वारकोपुरीआइ: सुषकरतजयेदीननि
सहाइ॥ इतिश्रीभगवतेमहापुराणेदसमसकधानुसारेणभाषाबार
हरनरहरदासेनबिरचितं॥ अरजनसुनन्दाबिबाहप्रसंग॥ रजबहु
लासश्रुतदेवबिप्रप्रसंग॥ ८६॥ कबित्त॥६६॥कल्योप्रसनजुगजोरि
कर। इहापरीछितराइ: बेदनिकीउतपतिजग: सुकमुनिकहेसुनाइ॥१॥
छंदबेअपरी॥ मुनिनारदइकसमयसांतमन: करतपृथीपरजटनसकार
न। इहांनरनारायनपैआये: भ्रमतबद्रिकाश्रमभनलाये। नरतपभक
सकलरिषेस्वर: बैठेसभाबिलोकेबुधिबर: तिनमहनरनारायनतैसें। उन
गनमधमनिसाकरऐसे: जोतुमबातमोहिपूछीजइ: नरनारायनप्रतिसोई।
नारद॥ नारायन॥ अगेकिऊसमयकालंतर: मिलिजनलोकसभासबमु
निवर: ब्रह्मग्यांनचर्चाबिसतारी: नयेब्रहमरिषहरषनभारी॥ रिषब
चासबनिकसोमिलिअहेसनंदन: प्रभुतुमआहिबुधिबयपूरन: बेदबकी
उतपतिबताबउ: स्वामीआदिअंतसमझावउ॥ सनंदनउवाच॥ महाप्रल
यतबजयोमहीतल: जहांतहांथलपूरिरहेजल: पुरुषअनादिसियस

मानी: सबैअछिताउदरसमानी: सोरहेजलअंतरस्वामी: जगतउपाजक
अंतरजामी: प्रभुपोढेतबअबधिसपूरन: इछानरीअछिउपराजन: प्रथम
स्वासचवनिकेसपावन: बेदनयेसोईधरमबढावन: जगतरीसयेबेदतिजा
ने: महअसतुतिकीनीमानें: जोतिसरूपबेदधुनिजागे: पुरुषप्रसिधनगुनि
रसपागे: जोबदीजनतनपहिंजगावत: बोलतबानेंबिरदबढावत: निरगुन
सगुनरूपनारायन: पुनितिनबरननकरेसहतपन: प्रभुकोवारपारनहीपा
यो: नेतिनेतिकहबेदबतायो॥ कथि रु॥ निगममरमयहसुनिकैनारद: बि
दानयेतबबुधिबिसारद: द्वैपाइनकेआस्रमआये: पुनिबेगतहांआदरपा
ये॥ नर नारायन उ॥ नरनारायनबचननिरंतर: ब्यासहिकहेजथाबिधि
बिसतर: पिताप्रसंगयहैद्वैपाइन: यहसुकपरमतत्तजोपायो: नृपेपरी
छतनृपहिसुनायो॥ दूहा॥ सुकहि पूछिअतिमसुमत: नृपनिगमकोनेर
व्यासजथाबिधिबरनयो: बिहतजुकारनबेद॥१॥ इतिश्रीनगरराजनमह
पुरांने दसमसकंधानुसारते नामावार हटनरहर दासेनबिरचते॥
बेदउतपतिबर्ननंनाम॥ ८७॥ इकपरीछतनेकुः अरथजुपूछेएक
दिन: सुकमभ्रमनसंदेह: सोतुमहीमेटनसमथ॥१॥ पावतरिथअपार:
नवजेसंकरकेनगत: नियतग्रथननिरधार: कमजुतप्रजतबिस्नुके॥२॥
श्रीसुकउवाच॥ छंदपधरी॥ सिवसकतिसगुनरूपीसजोग: गुनतेनिक
रहोइअप्रयोग: हैबिस्नुसदानिरगुननिदान: प्रभुप्रकृतपुरुषतेपरप्रमा
न: इनत्रजेसुनिरगुनताहिपाइ: जननिरथननिरगुनमाफजाइ: नृपकु
तेजुधिष्टरजगनरेस: बरबीरपितामहतवबिसेस॥ जुधिष्टर॥ हयमेध
जयोपूरनप्रमान: नृपप्रछियहैकृस्नहिनिदान॥ श्रीकृस्नउवाच॥ जि
तिकरोंकृपाजासोंबिसेष: सबहरूतासससंपतिअसेष: जबवाकोसंप
तिछाकिजाइ: सकुटंबताहिछांडेसुनाइ: जोकरेसुउदिमअफलजाइ: ता
कोतबउपजेबिरतिआइ: जोहोइकामनारहतजीव: दुषसुषनिवरतथ
वेदईव: करिब्रह्मध्यानसापेअकाम: सहिहोइमुकतिमिलिपरमधाम: इ
म्रिबरदेवकोतगनहोइ: सबकबहूमुकतिपावेनसोइ: अवरसुरदेहिसं
पतिअसेष: उनकेबसनाहिनमुकतिएक: मुकतिकेइनकेनगवानमानि:
पुनियहैबेदबाचाप्रमानि॥ श्रीसुकउवाच॥ सिवदेवबृकासुरवरसमा
प: वाहीकेसंकरपरेआप: बृकनामअसुरइकमहाबीर: सकुनिकेपुत्र
समहरसधीर॥ बृकउ॥ वहिपूछिनारदरिषहिआइ: त्रैदेवनप्रसनसुरसे
बनाइ: बिधिबिस्नुरुद्रकिंबाबिनीत: पुनिसबहिनतुमजानतपुनीत॥
नारद उ॥ हैदुराराध्यबिधिबिस्नुदेव: सोफलेनबाचिरकालसेव: हरसेव

वेगहीप्रसन्नहोइ॰ करिक्रोधकदाचितहेतकोइ: बरपाइहोइग्यानीसमन॰ लिखि
करेअनादरकुमतिरत॰ बरबंछाहेजोबेगबीर: सिवहेतकरोतोतपसधीर;
कबित॥ पुनिअसुरबचननारदप्रमान: सिवतयोआइकेदारथान॰ करिअग
निकुंडदीपतिसकाम॰ निजमांसजुहोमतरुद्रनाम: केप्रसनरुद्रतपउग्रहेत
सोनिकसिअगनितेतनसमेत॰ करकरषिनिवारनअसुरकीन: पुनिकरोहे
मपूरनप्रबीन॥श्रीसिवउ॥जिहहोमकरयोतेंविषयजीत॰ वृकमांगहुबर
सोबिधिबिनीत॥वृकउ॥किहुसीसकरोंकरहेतकोइ: असुरासुरनरसोईन
समहोइ॥कबित॥ प्रभुरुद्रकरेसोईप्रमाण॰ वृकपायेबरबंछितबिधान:
सोअसुरतबहहिदुष्टसाधि, पापिष्टकरीकारनउपाधि॰ यहदेवजोगबरद
नदीन: मनतयेरुद्रपाछेमलीन॰ आसुरयहदुरमदपरीआवि॰ तयोदिष्टसि
वापरकामनाव: सिवसीसहथमेलनसुतार: आसुरमनविसेय हुउपार;
तबलिभ्योअसुरकोचितनेह: बिसिचलेताजिअंतरसपेद॰ आतमकृतअप
नेरोषआनि॰ मनमाहिरुद्रतबत्रासमानि॰ तबतजेजातअंतरनयान: यह
असुरपीछधावतअपांन: तवत्रभ्योरुद्रजहोतहोसंताप: पथदिष्टजाइहु
चेनपाप: दुषतयेअकिसतहरुद्रदीन: करुनानिधानकोध्यानकीन: अ
नगतिव्यापकप्रभुअनंत॰ कीयसिवारूपतहारमाकंत: अपिलेसुरगदेमध्य
आइ: दृष्टिगतनयेसिवगयेपलाइ: करिमोहविवसयहचरितकीन: प्रभु
कपटरूपबोलेप्रबीन॥बिप्रउ॥ रुकोनतयोअतिस्रमितआज: किहिका
रनधावतहैंसकाज॥वृकवाच॥ मांननिजोपूछततहेतमोहि: तबहेततमो
अबलहीनोहि: ममग्येबलरुद्रबप्रीतिमांनि॰ करिअनयचितसबछांडि
कांम॰ ॥सिवारूप वाच॥ सिवारूपकहिअसुरसो॰ तोपोबतिहोतोहि,
करजुगसिरधरिनिसकरि: हुसेरिझावेमोहि॥१॥स्वामीनितिप्रतिहरषसों॰ त
जिनाइकतांति: क्रमजुतमेरेचितकी: तबहीप्रगतपांनि॥२॥सोआसुरछल
बचनसुनि: मायाबसतयोमूढ॰ कह्योसुमोहितरूपकरि॰ अंगीकारआ
र॥॥३॥सिरऊपरकरआनिसो: नाश्योअसुरअपांन॰ ताहीकेकृतकरितएं
तसमकस्योभगवान॥४॥ संकटटार्योसंभुको॰ नासकस्योनिसचार॰ है
नरहरप्रभुदीनहित॰ असेकृपाउदार॥५॥ तातेसकरकोचरित: करिहिंग
वेकोर जनमजनमताकोजथा॰ हेतनसंकटहोइ॥ इतिश्रीभागवतमहापु
राणे दसमस्कंधानुसारणेभाषाबार हट नर हर दासे नबिरचिते॥
वृकासुर बधनोम॥८८॥ कबित॥ दूहा॥ सरसतिसरितानरबसे
मिलिरिषराजसमाज: जथाबेदबिधिजपजजन: करतब्रहमकृतकाज
तर्ककरीइकसमयतहां: द्विजवरनिगमनिदान: महापुरुषत्रयलोकमहं
सोईकरोप्रमान॥१॥छंद पधरी॥ तहाब्रह्मपुत्रगुनतपप्रताप॰ याकहें

निसबदिनकलेआपः रघुकरहुजाइनिरणयअतीतः तुमपरमपूजिप्रतिमापु
नीतः बिधिलेकगयेरघुजुतबिचारः कीनोनपितकहंनमसकारः अपराधजा
लिसुतकेअसेषः बिधिकस्योनकछुआदरबिसेषः याहीक्रमतबकैलासआ
इः सिवउगिमिलनआयेसुजाइः करउनथरुद्रताहाअथकीनः पुनितयेपद
हैरघुसबीनः संकरतहांरिसकरिधरित्रिसूलः लषिकेपासिवाग्रहियेरनमू
लः रघुचलेताजि तनमन सनीतः पुनि बिसुलोकआयेपुनः सुणसेजसय
नेकमलासमानः निराबसहैकरुना निदानः अनिवारनतहांरघुबिअआति
जगदीसहंनेउरलातजानिः अवनितउठेप्रतिमाउदारः करजोरिकरेतहांन
मसकारः पदबिप्रपलोरतआपपानिः बिस्वेसबोलिमुषबिमलबानि॥श्रीकृ
स्नउवाच॥मतिबिथानईहोइचरनमूलः नातेउरहैममबज्रतूलः हेबिप्रचर
नपूजितबिसेषः अघनासकओतीरथअसेषः तवचरनचिहनपावनप्र
सिधः सवकालरहुममहिदयसिधः॥कबित॥प्रतुकरीनधाइजाप्रबी
नः देवाधिदेवद्विजबिदादीनः मुनिआइजहांरिषवरसमाजः कारनसबबि
न्योतहांसकाजः मुनिकीयप्रमानसबरिषसमाथः निरधारबिस्नुत्रैलोक
नाथः इनतेनबडोकोउअमरआनः पैयहैनिगमआगमप्रमान॥ इतिदे
व प्रसंगः॥हरि॥ बिप्रऐकद्वारावतीः बसतजुरहतबिकारः जथालाभसं
तोषजुतः अषिलब्रह्मआचार॥१॥छंद पधरी॥एकपुत्रतयेत्रीयउदरआ
इनिः सोजातमात्रमरिगयोजानिः द्विजगयोमृतकलजिराजद्वारः बिलपतअति
रोवतबारबारः सोसनामअबोलतससोकः लषितीहिदुषितसबसुनतलोक
बिप्रउवाच॥ लोभीद्विजदोषीविषयलीनः मूरषमहीपनित्यचितमलीनः क्रू
तओसे षत्रीअयकरालः यहबालमरयोमेरोअकालः हिंसानिहारकृतबिकल्प
इः नहनजिनरसुषपात्रहोइ॥कबित॥ द्विजछाडिमृतकगयोराजद्वार
क्रमजुकतपुत्रनवरहिप्रकारः इकसमयबिप्रसोसतआरः पुनिकरिबिल
पसबहिनसुनाइः उठिबोल्योइहांअरजनअनंगः प्रतिपालनीतिपोरुषप्रसंग
अर्जुनउवाच। सबअनुषधरतषत्रीसुजानः पुनिहोतनमषरहासमानः तेउ
दरनर षत्रीनआहिः जनदुःषसहतहेरहतजाहिः पुनिहोइपुत्रजोअवधि
पाइः सोकहोमेरछिकरिहुसहाइः यहहोइनजोरभ्याअसेसः पुनिकरिहुतन
मंगलप्रवेस॥बिप्रउवाच॥ यहसुनतबिप्रबोल्योसधीरः बलदेवकृस्न
परदमनिबीरः इनकनककोजेजतनआजः जगतुमतेसरिहेकहाकाजः॥
अरजनउवाच॥कृ रामकृस्नबालिननिदानः गांजीवधरनअरजनसमा
नः इकत्रेंबकतोषनमेंत्रआहिः हैसाथिमोहिऊनजतलाहिः जीतिऊमहि
कवलतासजानि अरुदेखतेरेपुत्रआनि॥बिप्रउवाच॥तबिदसमपुत्रको
प्रसवकालः कहिअरजनसोंद्विजतातकालः सोसुनतमात्रअरजनसधीरः

पुनि अयेन धामं जन सरीर : द्विज ग्रेह आए अरजन दयाल : संधान बान कीय स
भुसाल · अथ उरथ तिका ग्रेह आनि : पार सब उर रह्यो प्रमानि · करि तहा सरापेज
र फाल · दै रहात हाथ दै दयाल : काल गति प्रबल जानै न कोर : सुत जात मात्र
मरि गयो सोर : द्विज अरजन नं या करी देषि : रत नयो रहमि य्या बिसेष ·
रहो अरजन तब मृतलोक आर : पै तहा बिप्र बालक न पार · पुनि इन्द्र अगनि
नैरति प्रमानि : अरु अनिल देषि रीसान आनि : पुनि बरन रसातल नत प्र
जेत : द्विज मृतक पुत्र षोजे दिगेत : पै बिप्र बालक ऊन हि न पार : रह्यो अरजन
द्वारावती आर : अवलोक लोक लोक नि असेस · पुनि करन लगे मंगल प्रवेस ·
श्री कृस्न बाचा · प्रभु कलो कस्मय ल्ले दपार : सू चे न मरन करि क्रस हार ·
कछि रहो प्रभु लयो संग अरजन प्रबीन : रह्यो कस्मर थ हि आरोह कीन : हरि द्वी
कछि रहो प्रभु लयो संग अरजन प्रबीन : रह्यो कस्मर थ हि आरोह कीन : हरि द्वी

पलोक तीर सिंनि हारि : पर बल गये लोका लोक पारि : गो बि देआर पछिम
दिगेत · अथार तहां देषो अनंत : तब नये अस्व गति जेग जानि : पा वे नृप
धअति न मस मानि · जोगे सकृस्न यह दे बिजोग · प्रभु निज प्रकाव बिसो प्रयो
ग : प्रेस्यो सुदरसन चक्र पानि : रही करे अषिल तम नास आनि · पुनि तहु व
क्र कीनो प्रकास : तब पथ नापन हीस सोतास : पुनि सलिल माऊ कीनो प्रवे
स : देष्यो इक मंदिर ति हि सुदेस : सहस फन सेष मनि जुत सतेज : जिहि मनिके
ऊपर सुषद सेज : ईस्वरी जोति प्रतिमा अनूप : राजत तिहि ऊपर अतुल रूप
सप्रसन बदन तन सयन सोम · कुंडल किरीट मनि रतन दाम : सु तन छनतन
लोचन बिसाल · मनि लसति उर सिबैजंतिमाल : तन पीत बसन तु उत्र
श्रतास : अति अंग अंग सो भा प्रकास : पार षद सकल गदे पुनीत : अनमा
दि सिध आयुध अनीत · करि कृस्न पथ अुत न मसकार : अरु हाथ जोरि गरे
उदार : अषिले सपुरुष हसि कै अनंत : पुनि पूछि कुसल आगम प्रजंत ॥ पु
रुष ॥ ये ब्रहम पुत्र मैं र ह्यो आनि : प्रभु दरसन तब कारन प्रमानि ॥ श्री कृस्न
बाचा ॥ है दे हय स्यो हम धरम हेत : मनुजा वतार अमर निसमेत : नगवंत उत
सो नृमि नार : अब आवत हैं हम ऊ उदार ॥ पुरुष बा ॥ हे कृस्न आहि तुम पू
रनकाम : अषिले सर हत ईछा अकाम : तिहि पुरुष पुरुष महि मोअभा
नि : वे बालक दीने रह्यो आनि ॥ रह्यो ॥ वे बालक आने रह्यो द्वारावती दयाल :
कर धरि दीने बिप्र कों : प्रभु गोने प्रतिपाल ॥ १ ॥ जरत अगनि रा षे अरजन : क्रम पन
पूरन कीन : दुष्ट निहात दैत के : दे बस हार कदीन ॥ २ ॥ करम पराक्रम कृस्न के :
कहन समृथ नहीं कोर : कहे जथा नरहर सुकबि · संत बताये सो ॥ ३ ॥ अइति
श्री भागवते महा पुराने दसम सकंधे भुसार तोना पा बार हट नर ह
र दासे न बिरचितं ॥ द्विज पुत्र आन यो नाम ॥ ८९ ॥ काबि का रु

८॥ कह्यजथा बिधिहारिको: करत बिलास अनेक: बेनु बलि हनु बि
हारबन: बिद्या बिजय बिबेक ॥१॥ ब्यासपरीछतसों बिवरि: कह्यो दस
म अधिकार: नवतारन तागोतकें: सुनऊ श्रवन पुट सार ॥२॥ छंद
पधरी ॥ पुरबसत बरन चार्यो पुनीत: बिधिजुक्त बिनव बिद्या बिनी
त: चतुरंग चलत आग्या अधीन: पुनि सचिव धरम मत्तुहि प्रबीन: ग
जमत्त छरित घूमत अगान: प्रतिमा सरूप परबत समान: अतिबेग पंक
संतव पवंग: अति तेजरंग आकृत उतंग: बाटिका ये हउ जल बिसाल
जलकेलि जलासय कमलजाल: बन बुन बिचत्र मृगया बिहार: आ
खेर नेर कौतुक अपार: जलथल बिहार खेचार जंत: सिंयादि बिरद ग्रा
नी असंत: बिनतासम्ह बंछित बिहार: प्रति दिवस षेलन वनव प्रका
र: अनेक जाति नाटक अनूप: गति नेदृताल सुरत्री य सरूप: गंधरब
नरी किंनरी गोन: दिन दिन हिरी झिसोल हत दान: दस षष्ट सहस्र
न एक गोन: पटरानी अष्टोत्तर प्रमान: प्रतिमहिला दस दस पुत्र पा
र: सब हिनकी संष्या यह सुनार: इक लाष सहस इक सग्गि अनूप: सु
त असी नये सुंदर सरूप: पुनि महारथी तिनम ह प्रमान: अष्टादस बु
धि बल ग्यान ध्यान: नानि नाम बिदुअरूरह दनाम: पुनि अरुन नाम पु
सकर प्रमान: श्रुति देव सुनंदन बेदबाह: बनि चित्र बरु हिं अति क्रबिउ
छाह: निसचय बिरूथ निग्रोध नाम: पेनकोपद्यूमनि धरम धाम: अनु
रध नयो ताके अजीत: जो बज्रनाम सुत ति हि बिनीत: सो बज्रनाम ब
जमाऊ बीर: धरहेत हू सुराष्ट्र सधीर: प्रति बाहु नयो ताके प्रसिध: ता
के सुबाहु नयो समरा सिध: सुत उपज्यो ताके उग्रसेन: श्रुत सेन नयो ता
के सुषेन: या ही क्रम न्यो बिसतार बंस: पृथी प्रसिध जादव प्रसंस: कु
ल तामह निरधन नाहिन कोइ: अलपायु अधरमी सब छिजोइ: निरबीज
निलज षल निसंतान: पुनि ब्रदेबंस इहि बिधि प्रमान: त्रयकोटि सहस्र
मिलि आठ ग्यान: सत ऐक असीक पर सुजान: पुनि आस्चार्ज ऐते प्रका
स: नहा पढे बाल चटसाल तास: कुक्कवर सिष्य संष्यानकीन: नि
सपटत उन्नत बिद्या नवीन: यह सुनी बाल संष्या त्रय नृप: पायो न पार ज
दव प्रचेन: निसचार करन निरमूल काज: रवि चक्र सु जादव नये राज
यहि कारिज उपजे अमर आर: पृथीपति जादव समय पार: देवकी
गरभ संभूत देव: यह बिस्व बिदत हे बास देव: अखिलेसर हरि अवतर
यार: परब्रह्म पुरुष कोउ हेत पाइ: सबदु ष्ट असुर कीनो संघार

भगवान उतारेन्ह मिन्हार: अवतरे धरम के हेत आइ: चवबरननीतिम
रगचलाइ॥ दोहा॥ कृष्णचरित्र जु दसम को: कहे सुनै जन कोइ: नवसा
गरदुस्तर जगत: हितपारगत होइ॥१॥ कहे दसम नर एरसु कबि जथाबु
धिसंजोग: प्रभु सो जाचे परमपद: भ्रनन जनप्रयोग॥२॥ कृष्ण देवक
रनकरन: क्रम भ्ररन मन काम: पुनि मागत नरहरपति: भजन देउ
तवनांम॥३॥ इति श्री भगवते महापुराणे दसम स्कंध अनुसार
गोनाथ बारहट नरहरदास नबिरचित॥ निवेके अध्याय॥१०॥
श्री रस सप्तूरण॥ ऐकादसका अध्याइ बर्ननं॥ कबित्त॥
दोहा॥ नियत [illegible] दिदे भूतना: रामकृष्ण ब्रजराज: कामिन अरिष्ट
बिना सकम: करे जथा सुरकाज॥१॥ कुंतासुत के दोष करि: क
रम अनाद रकीन: हरिकीने ते मांन हत: नियह आंन नवीन॥२॥
छंद पधरी॥ बिषमो दकलाप्य हविधांन: क्रम चूत कपटत्री
सब सत्रतांन: इसा हिम्रवग्पा की यअसेष: बिधिबि बिधिबेर बिय
ह बिसेष. बिसेस कृष्ण कीनों बिचार: नवधरे देह भुव हरन भार. भेद
रेज द पित्र प्रमांन: निसेष नयो नां हिन निदान: ये छपनका टिजाद्व
अनेग: सब बरतत जब लो हम हि संग. सबनातिरन हि मेरो सहार: उपजे
ननासका कउपार: बाटे बिरोध रनम हबिसेष: आप कृतकपे तो ये असेष
उसाधि बेन बन होनदाह: उपजे आतम कृत दु यत्र थाह: मसि आप आप
मह बंसघात: ते ज्वाला नलज लिअलेजात: इनचांतिका जकरिकु दुरन
ये पेहैत बहीना सअंत॥ परीछत बाच॥ दोहा॥ कहे परीछत बचन ये ह
मुनि सुनि उपजत हे इक सो देह॥ दोहा॥ ब्रहम अगत दाता बिहत: कुल
गुर सेवत को इ: तिन हिन आप सनावनी: हेत कवन कहो इ॥१॥ ब्रहम
करम गुन बेद बित: अरु बिद्या बल आप: यहे अस नावित इहा: सो पे
दे तन आप॥२॥ श्री सुक बाच॥ छंद पधरी॥ सुक कहे बचनन ताही
संत: अवतरे न्ह मिमो नुष अनंत: प्रभु तहा चलायो धरम पंथ: संसार
हि हैं देनी निसंथ: बिसतार कि तिजग बिमल बांनि: पुनि जथा बर
न आतम समांनि: निज धरम मगन इच्छा निधांन: प्रभु जथा अवधि
पूरी प्रमांन: यह करी तहा लीला उदार: नव नूत हेत नरनारि न्हार॥
येदेव जोग रिसराज आइ: तपसि धसबे अपने सुन्हार: दुरबासा बिस
वामित्र देबि: अरु असित कण्व कस्यप बिसेषि: अंगिरा अगसति न्रि
गुर हां आइ: संग बामदेव नारद सुन्हार: ते मिलि वसिष्ठ द्विज अबि
सिध: इसादिक आये बयस रुध: तपसि दसाध सबिदित संसार

छिज आये द्वारावति उदार: मिलि षेलत हजार द्व कुमार। विप्रनि बिलोकि
अंतर विकार उपजी कु बुधि ना वीआधीन: कर्मजोग लवेष रचरित की
न: सुन हुतुम रूहे ना बैन सिध। पर स्पर कहत हसि हसि प्रसिध। अब
कर हु सबे मिलि मंत्र ये हु: हित कि हु प्रतीछा द्विजन लेहु। सुत हुल्ल सा
म नामा सरूप पुनि वनेअ गअ गनि अनूप। त्रीय वेष वनायो तबै तासु
पट ग्रंथ करी लेअ प्रकास: गरन थल बांधि सो यो पिगढ: मिलि चलि व
ल बस अदिन मूढ बनि बाल क सब त हा त्री या वेष: रनरिषि निवास
आये असेष: कर जोरि बाल छल प्रनितकीन: प्रभु त्रिकाल पतपसाप्र
बीन: यह बाल गरल थित अब पिआइ: सो करत पुत्र [illegible] सुनाइ: ब
सलजा बोल तब हि निबाल: कर जोरि कहत स्वामी हु [illegible]: याके ओर
न सिथत अनत। प्रभु कहे हुत्री कि थूपूत: रिषत बैजोग बिद्यानुसार
पायो सब हनको छल प्रकार॥ दुर बासाउ। दुरबा सात हा बोले सः
राप: याते तुम पै होनास आप: याके जु गरभ उपजे अरिष्ट: निःसेष क
रैजदुवे सनष्ट: सुनि बालय हे जबदु सहस्राप: उरकंप बदीनय वकि
त आप: बस त्रास तजे तब त्री या बेष: अयस पसो मुसल न यो असे
ष: बहुरि रेमुसल उतरे अनत: पुनि पलटि बेष जदु बेस पूत। सम अ
ग्र बसब नृप उग्रसेन: सजि धरम सत्ता राजत सुषेन: इहि बीचि तहा बह
बाल आइ: सब कहे मुसल कारन सुनाइ। सुनि दरेत हा आगपा नरेस: य
ह मुसल रेति डारो असेस: पुनि करी नृपति आएगा प्रमान: सो लयो मुसल
वृ रन समान: बारिध महडारे तिहि बेर। उपजे यह वातें तहां एर: बह
हे मुसल अवसेष सार: सो उदधि माझ डारे असेष: जब गिले सफर व ह
न हू जानि: पुनि लये उदर गतवरस मानि: मेल्हे जल जाल सुमीन मारि
सकुरव मछ बांधे सुदारि: सो मीन उदर फारे सुनार: अव सेष लोह वह नि
करि आर: कि हु हेत रहे जहां तहां प्रकास: निहचै निरह सा हो रनास: र
जरा नाम रक वसे आय: सब जंत सनि घातक असेध। सो मुसल षंड अव
सेष सार: कर बाध चरैका हि प्रकार: कमजुकत बेहेत त्र का कीन: सो रि
रारुन लेसर अयहीन: सुनि कह्य मुसल कारन सम्ल: तब तब्हे हत स
ईपरी नल॥ दुहा॥ कर तु अकर तु जअन्यथा: कारन समथ कृपाल:
तहपिय है रंछा अतुल: प्रभु नरहर प्रतिपाल॥१॥ इति श्री नागरवेल को
दस तक ६ नामा बार ह ठ नर हर दास नबिरचितं॥ जदुबंस
श्राप नाम॥१॥ प्रीहत नामा॥ दुहा॥ कम पुछे सुष देव सो: रह सि परी
छत राज: करी बिहार उधव कहा: कहा करे पुनि काज॥१॥ छंद पधरी॥

पातहिन लागेअकाल : इहिसमय गगन अंतराल : अनमित देखित हांक
आप : पुनि करत सोच अतर अमाप : एक दिवस सुधर मास्त्राओनि : प्र
बैसनजा देवसमानि ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ कमसु हउपद्रव येकराल : अन
दिदिह आवत अकाल : द्विजवर जेउ सह आपदीन : पुनिआगम सूवतय
प्रवीन : इहिमेरनरहिजेउ वितआज : करियेप्रयानइहि छनसकाज
पेपग्येसबोधारआप : नृपबालवृथअंतरसताप : मिलिकरेमैत्रसव
हिनसमान : नहिजानतकोउनविनानिदान · नहाअएकमत्रत्तासबेत
नातेमिलि [illegible] कुलसमेत : सुनथानथानपूजासनान · ओहानआदि
यमहादान [illegible] मगुरुजनमायाप्रवीन : कृतकारनइछायहैकीन : पु
निकरेनहाव [illegible] : उतपतिअमंगलवरतिआन · इहिमेर बिरुथवा
हेअसाथ : अ [illegible] नवनवउपाधि · रुवनहामतमतिन हिहोर : क
छुनितनाहि [illegible] वथकोर : करिकोयजुधउपजेकराल : रहा निरतमर
तजोआअकाल : रहासकअसत्रत्रअनेत · अवसे परहेनहोरहेअत
उपजेयहरुसावीर्यऐर : रुवपत्रुधराम डुगहेर · सोलेतस्तरकरिप
त्रसीय : करउनयअशकुनमहाक्रोध : विविधकहीतनिहिलगतबाउ
सोएरपत्र : साभुवाउ : प्रतिसुनटनिरतपारुषसपूर : तहानाजनदि
सिदिसिबिजयतूर : प्रभुमतिसामभिलिजुधप्रमानि : अकूरनोज
वरुमिलेआनि : अनुरथरसातिकआपआप · दुवहोतजुधउरआतिस
हाप · जरेसनद संग्राम जीत : जुरिसत जितसमहरसहसजीत : गद
मिलेसुहारनअंगअंग : जितिन हास मित्रसुरथीअनेग : याहीकमअनीत
क्लोअपार : संध्यानस्तूरसमहरसंघार · अमोननिरेइहिकमअनीत
जाजे रहसु नरसंग्रामजीत : नानेजामातुलबाहिनीर : पितुपुत्रनिरउ
रनाहिपार : त्राविजसोपित्रीयत्रातत्रात · मिलिपातिसातिसबंधसात : गो
मातिअरहिसोहासआनि : पुनितोजरहअंथकप्रमानि · मातनासुर
मिलिमान : पुनिसूरसेनमाथुरसुजान · अरुकृतिविसरजन
तनिसमरतीरथनिसंक · रसोदिशातिजादवअनेक · कोआ
ऐक : आपुधछतीसतूरअपार : पुनिकरेमुष्टिलतप्रहार
पुधत्रतेग · तबकरतऐरप्राहारअंग · बिहुहैकैरलजर
पिनिरतकरिबैरनाउ : पुनिरामकृष्णदोर्ष
रनआनि : नगवनउतारनूमिनार : सबको
सेपत्रयोजदुवंससनास : निरिसमर
निउपजीविसेषि · अवलोकिना
स्यार : वसकोकजुदरनासन

बैकुंठपधारेप्रभुप्रबीन : बलदेवगमनअतिदुषबियाप : यातेंभयेसोकाव
लितआप ॥ पुनितहांरकपीपलरुअपार : अषिलेसकलसंतिहितिहांआ
प्रभुधरेचतुरभुजदिब्यरूप : इहांकवलनयनअतिमांजअनूप : मकराकृ
तकुंडलतुलसिमाल : बनिब्रह्मसूत्रकिंकिनिबिसाल : इत्यादिकल
षनअंगअंग : अतिसोभालछनगुनअनंग : सुभपीतबसनतबरनस्या
म : संषादिकआयुधकरसकाम : वहजरानांमतहांब्याधआर : अहिफ
णाकारप्रभुचरनपार : क्रमजानउपरप्रभुचरनकीन : पद्मासनत
बैठेप्रबीन : नषजोतिहोतिमनुमनिसमान : नरनाराकृतलषरुनानिधा
न : कृष्णाविसेषनलकाकराल : कीयतहांबानसंधानछांसुलं : बिस्वस
चरनसिरहनेब्याध : ईस्वरीअतुलमायाअगाध [illegible] : यतदिषावत
कछूकाज : धरिसगुनरूपराआधिराज : अवलोकियोबिधकादिष्टक
रहोनिकटब्याधआयेनिसंक : येदेषिचतुरभुजरूपआप : अतिमांज
रूपपूरनप्रताप : बसग्यानकहेवहिजराब्याध : प्रभुआहिमहाकृपाप
राय : अबदेहुनाथमोहिग्यानदंड : अषिलेसधरमपालकअषंड : प्रभु
दंडपात्रमुनदंडपार : जनपुनिअनंथकोउकरेजार ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ इहि
गेरनक्रोधबिरोधआज : करिदयाकृष्णबोलेसकाज : इहइह [illegible] बमेरीअ
षंड : हांहाकेजाचकमानदंड : आगपायहमेरीब्याधयेह : दिब्यलोकग
हुतुमदिब्यदेहु : मेंहतेबालिरामावतार : पुनिबदलोलेतुमनएपार ॥ कलि
प्रभुकृपादरसआगप्रताप : वहचढिबिमानगयेस्वरगआप ॥ छंद ॥ इहद
रकअरथतेउतरि : आगेगदेआनि : कीजेआपमोहिकछु : माधवजोमनमानि
॥१॥ पाइजथामनभावप्रभु : गोबैकुंठबिमान : तहांयहेजवतब्यतप्रभुर
थापरवांन ॥२॥ कसोककृष्णतबसूतकह : अबेदारिकाजाइ : इहानरहिबोहेउ
चित : सोकहिसबनिसुनाइ ॥३॥ लेपैगोलहरीरवन : यहमरजादअनंग : इ
त्रसथजिनजाउअब : सबयरजनकेसंग ॥४॥ कीयदारकतहांपरिक्रमन
बंदिचरनबहुबार : तहांआयेद्वारावती : पुनिकहिसबेप्रकार ॥५॥ इ
तिश्रीभागवतेएकादसमस्कंधेभाषाबीरहटनरहरदासे
नबिरचितो बलदेवप्रयांन ॥ दारकसूत ॥ द्वारावतीआगमनो
नाम द्वितीयोअध्याय ॥२॥ परीक्षितउवाच ॥ छंद ॥ इहपरीक्षतनृपति
अब : आसहिपूछिबिचार : कृष्णगवनबैकुंठकहं : कीनोंकवनप्रकार
॥ श्रीसुकउवाच ॥ छंद पद्धरी ॥ ब्रह्मादिकरुद्रादिकमुनिवर : देवपित
रगंधरबअजेसुर : चारनसिधबिबिधिबिद्याधर : राक्षसजक्षमहोरग
किंनर : सुरकन्याद्विजराजसुहाये : येसबदरसहेतमिलिआये : सबके

हग्रतिलाषसुहवन: प्रभुममलो ककरकुग्रबपावन: नरपतपुरुपीडुउ
ीआजत: सुरकैमांमिलिनरकसजत: द्रिष्टसुधासनबहिनसुघरीनो। कु
सरहाद्विगमिलवनकीनो: निमचैकाफलदेवनिहारे। प्रभुसरहिवैकुंठसि
धारे: पैयहगतिकाफलहिपाई: जलदतेहिओंतरितजारी। ससधरमधीरज
धृतसंपति: क्रमजुतसगगयेतहाकीरति: औचपलागतिमनुमनजानत: पुनि
सुरलसहिगतिनपिछानत: बिधिकरओरिसनबिकीयबंदन: करतनते
सुसतुतिबलकंदन।। अथश्रीकल्की अवतार बरनन।। छंद त्रोटक
जयनावनदेवकीगरतनतए। निजरूपअनंतपदिमारनपे: क्रमनातहिमात
सनाधकरै [illegible] धिनलो तुमहो बस्यो। गतिगूढगुनंदकैंयेहगये: नग
वेतअनंत [illegible] ये: जेसुदपयपानजथाजननी: अरुकदधलयेजुरहा
अपनी: क्र [illegible] ल बिहारकरे। हठिमांणनरथदहीजुले करअसथरा
धरधारयेसौ [illegible] क्रमयबलिगुमानहस्यो: ज्वालानलमुजारनिजरे: क्रस
सुस्वानलपानकरै। मदमहम गुआहिमानमलो। बलिबितनयोदरतेजुव
लो: सिसपालदेआदिनरेससबै जुरिआरलयेवरहेतगजे: गुरलाति
कीपतिगतिगई अवनीसरुतासहछीनिलई: औरओनिसुरासुरजु
जुरे। हतप्रानलयेकेउमांनमुरे: जवनासुरजेजुवलोकजयो। नगवे
रिजिलसमनयो: इछाकछुचितयहेउपजी। जुवबारसमुद्रकीज
नजी: क्रमजुकतत हारजथा निकरी: प्रभुबारको। कमलबिचत्र
जुवतारजुकारकजुष्टनए: जगदीसनहानसिसरवजये: कन्याये
जुगानिकरी: बिनताहतिजोमसबैजुबरी। नगवंतअनंतजुमीननत
रणाछिहतेलबिनेदलये। करुनानिधिकछपरूपकरे। हितसिंधुम
हारतनहरे। कृतकारनरूपनृसिंघकीयो: हिरनाकुसमारिबिह
यो: नगवानजुबामनरूपनये। बलिबांधिपतालतहांपठये: न
महाद्विजरामनयो: द्विजदीननिकोजुवचकदयो: जुवरामके
मगांनिनजो: तिहिहेतबिनीसनसबतजो: नगवंतकृपातेंसि
दसकंधहतेगदलेकहई: नगनंतअबेतरीकसनयः जगगुरु
मारिजये: अवतारजुकेहिबुधअबे। तेधरमअहिंसापालतबै: सि
बकारनरूपकरे। हठिमारिमलेछअसेषहरे: करुनामयकृष्ण
हितकींनसमथसुरासुरहे: रसनागतिहाअहमादिरये। जुगा
सुधामगये:।। छंददिअवरी।। गहिमनवांचकज्ञुनगाजे: धीरा
हपावै: हारकसतवारिकाआयो: सबहिनकमकलेसजुगायो: उ
देवसुनतउर। हारु नजु: पनयोअतिउरधर: हानबासनसबगा
जहवयकुगसिधाये। पुनिबसदेवसुसनकानी: होहनिसहत
[illegible] पदहेतलिसहगतिपायो। हावनद
[illegible] कमनहिपाय

आई: सो रहस्स हगमनसिधाई: नारद अमर अवतरे जेते: तजित नलोकलोक
येते ते: नियत पतिब्रता जोई जोई नारी: सती नई पति लोक सिधारी: मिलि
देव कृस्न की बामा: कीनों अगनि प्रवेस सकामा: अरजन आदि सोक आधीने
मजुत जदु मृत्त कृत कीने: रहा समुद्र सेतत जिआयो: बोरि नगर जल मांझ
राख्यो: तहां तयेजल बिंब निरंतर: रहे कृस्न रुकमनि के मंदिर: रहा निरंत
अंतरजामी: सदा बिराजित त्रिभुवन स्वामी: अद्याबदि रजधानी आई: सा
संत अवलोकत सोई: पुनि अवसेष रह जो पाये: बालक घत्री यकरम बच
ये: इंद्रप्रसथ ते आने अरजन: जथ जुकत सो बसे तहां जन: [illegible] पुनि अर
नमु थरा आये: अवलोकत पुर दिग छाये: कृस्न बिना यु [illegible] छा स्रा कियो: रह
त नप्रान किऊ बिधि रो कैसो: बज्रनाभ सिर तिलक बनाये [illegible]: अथरिन्वमरन्
लाये: क्रम अन्तषेष जथा बिधि कीनों: देसराज परजा गत [illegible] फिरि इंद्रप्र
स थत बआयो: सबे अमंगल मरम सुनायो: अंतरगत बसन नयो अब जथ
मसों न तयेमंदिर जब: स्याम बिना लागत जग सूनों: देषि देषि दुपंउ पजत म
नो:॥ दूहा॥ राजुधिष्ट्र आदि दे: पांडव सकल पुनीत: करे परीछत को ति
लक: बैन च राज बिनीत॥१॥ देस बिनव पोत हिं दयो: सबे धरम समझाइ
मन चिंता पछली मिटे: अगलि हु करत उपार॥२॥ कीयो प्रयान प्रमान करि
कृस्न मिलन के हेत: सबै छाडि गृह इंद्र सुष: तहा द्रोपदी समेत॥३॥ करम ज
नमक हि कृस्न के: अधा नगति संजोग: सुपनै कृ देषे न सो: यह अनिष्ट अघ रोग
॥४॥ कहे जथा नरहर सुकबि: कृस्न चरित्र सु तकाज: मन क्रम बच जा चेत
मुकति: द्यो राज निके राज॥५॥ कबित॥ कल्प कल्प सत कोरि कोरि प्रतुक
लप वारे: सेषस हस मुष गनाधीस: सुन जाहि सनारे: घन धारा रजरेन: र
न रुपे संष्या आवे: कृस्न चरित्र बिचत्र: पार तिन को कोपावे: जा पे जु ब्यास सु
क भागवत: रहि हैं जो लों चंद रवि: कबि दास दास अंतम सकति: कहे ज
थानरहर सुकबि॥६॥ इति श्री भागवते ऐ का द स म स्कंधे भाषा ब
रह रन र॥ हर दासे न बिरचितं॥ श्री कृस्न बे कुं भा ग व न त्रितीये
अध्याइ॥३॥ श्री रामे ज य ति अ थ श्री बुधा अ वतार बरननं॥ कबि
त॥ असुर वाच॥ समय एक असुरेस: असुर मिलि मंत्र उचारीय: तब पूछे
गुर सुक: नयो सदेह सु तारीय: जब देवासुर जुध: होत सुर निरत निरंतर: त्रि
आपि पासा रहत: रहत सन मुष आयुध कर: कबहुं न जात तो जन करन: बसतु
न हन हीं संग बहत: कबि कहउ सु पेकारन कवन: रिष्ट पुष्ट सब दिन रहत
॥१॥ सुक्र वाच॥ दीय उतर तब सुक्र: प्रसन तुम करबु धिपर: अगनि हो
त द्विज अवनि: बसत हो मतप्रति बासुर: अरु अनेक तव व्रत: हो मम ष
करत सुरनि हित: सुर सुष अनल प्रसिध: तहा मेलत पंचामृत: हयमेध आ

हकीयंतहवन गंधवारसुरसेग्रहतं: निहिक्लमसिधसिधंनयह मदति
सुरगनरहे॥ अ सुर आयहग्रसंगअसुर समूह जवमुनेसुक्रपे
रहिजोनिसुप्रसन: कहेकरजोरिनेवनह: सोईवजगपसविसेष कृपाक
तेहमहिकावक अबमबघूरनहोइ तहमतुदछिनंपवक सुरकादिहे
हितबस्वरगतें होहिवफवलबिनरैय: ककगंमसादेयुररेवके: सबेम
नैरथसिधईय॥३॥ सुक्राचारिजकीयअमान असुरनिउछाहकीय
सबेसिधसतार सारउहिमआरंनय बेहुग्रथरबनसोधि सोधिलीय
मंत्रअसुर [illegible] हुसहयहवात नवहिसुरलोकसुनीसुर उतपनबि
नचिंताय [illegible] बिबुधगुरग्रेहतब: आरंनजगपअसुरनिकरे अंत
रथिरन [illegible] ॥३॥ सुनी ब्रहस्पति सबे अमरचितउतपनीय
इंद्रादिकसु [illegible] करिनतईबुधिजुकिनीय: सबमिलिगयेससेव
विस्वजिततहांबिस्वेनर कारनआगमकह्यु मगटमनुपूछि दयाप
र: जगदीससरनपंजरबिजय: जीयनकफगहरानजव करजोरिदु: प
कारनुसह: लागेकहनसुरेसवन॥४॥ सदाअसुरगुरसुक्र मंत्रसजी
वनिमाधत: अखिलजिवावतअसुर: बिबुधसंग्रामजुबाधत मगटजग
बलपाइ अजयजेहैंअसुर: छुधापिपासारहत: सुकोतिनजीति
समरसुर: जयधरमसराजानहुअमर बलत्रैहै निजदोषमय: सुरर
जकाजतुमस्वरगसुष: अखिलदीसदीनेंअनय॥६॥ श्रीहरिबचा
तहा॥ हरिनबकहेप्रसनके सुनसुनिदेवपुकार: करिउरहाबुधिकरि
केबुधअवतार॥७॥ कवि रुवाच॥ अनयपारइमादितहो सबेगऐस
सधान: दीनसहारकजिहिबिरद दयेसुरनिबरदान॥८॥ सुथेहनिन
तासती: जिनजयेपितअजेव: धरेबुधअवतारतहां हरिदेवनिकेरव
॥९॥ छंदपधरी॥ अनुकरेबुधबुधहनकास: श्रीइजिसूरिसंगपास
हास: सबलुंचनुलुंचितसरीर: धरिरूपकरेकचनासधीर: कीनेंसक
सनिरमलकाज: बपुबसनमेलसछि मबिराज: परवयोपटआसनत्र
सिथ: सुसि: धकोरितेलीससिथ: कंनपात्रनालिकेरअनेक: करिलि
नैऔधऐकऐक: कीयऐकपानआहारकाज: बपुधुघनगनमुखबिरा
ज: ग्रेथितकरपल्लवपंचग्रास: आहारउदिकऐकेअन्यास: मुनिमा
निबिराजितहरिपद: थितहोतसि: धआवकघट: पापिकबेपबुसतक
प्रचार: मघबाधहोतचर्चाबिचार: निस्कयाजगधातकनिदान: ध
नियनमूर्तिअरिहंतध्यान: सबत्रावकपासादिवससाथि सुपपरीकथ

आरंनउपाधि। सिरषोलिकैसलविनंससोह: महिमासुजपालीसुत्रमोह
श्रावकीआरसुंदरिसमाज: वपुपटकूलविधिविधिविराज: नगजटितहेमभू
षनअनेक: वकुमुखिनिवियबानकविवेक। अतिनगतिसुचितवनभृजि
अेर: चाहनसप्रेमज्योससिचकोर। कृतजथावेषपरिकरअनेक: अरु
नजतअहिंसाधरमऐक: मतथपतष्टथकपाषंडमांन: परचारग्रंथनूतन
प्रमांन: मथबिबिधकरतपषंडनमजाद: बिपरीतवेषसूचकबिबाद: श्रा
वकासंगअनेकसाथ: बोलतसुबोलजिहिनिगमबाथ। सिवपरमलोपक
नेसहास: पाषंडधरमइथीप्रकास: सबषंडियांधिवे [illegible] पार: आयु
धनिग्रंथकोनेअपार: इहिबुधिअसुरउदिमअकाज [illegible] जगपआरंभ
साज: सोअसुरबोधमतअहेसार: सबचलेएक [illegible] : सुरमनु
चिंतनयेमोहसंग: परहरेजगपकारनप्रसंग: जग [illegible] राबुधअसु
रजाति: इहादिअमरनयरहिअराति: यहअतुलदेवमाया [illegible] : अपात
अषिलआसुरअनीति: अवलोपिजगपसाधनअनेक: अनुसरअहिंसा
धरमएक।। कबित्त।। अतुलबुधिबलईस: रूपअदभुतअवरेष्यो। अ
गररूपपाषंड: देवकुसुमानदेष्यो। असुरमोहउपजाइ: निगममगपक
नेषंडन: ऐकअहिंसाधरम: बिदितसुरसोकबिषंडन: सुरतियकरेज
ग्यजयसबद: कित्तिमुकबिनरहरकरीय: अषिलसअमरकीनेंअभय:
बोधधरमजगबिसतरीय।।१।। इति श्री त्रितीयवीसमर्ग बुधअवता
रचरित्रसंपूरन।। नानाबार हरनर हरदासे नाकिरचिते।। अ
थ श्री चतुरबीसमर्ग कलकीअवतार बरनन।। [illegible] ।। कबि
रुवाच।। ईसअनंतनवव्यअव। किल्किनामकरतार। धरमबिप
रजयहेरकलि: तबद्वेहैअवतार।।१।। जबद्वेहैयेचिन्हजग: कह
तसुनिगमनिदांन: तबजानहुनिरधारतुम: अगरेकलिजुप्रमांन।।२।।
छंद बेताल।। जबब्रहमकरिहैवेदबिक्रय: असुरसेवाअनुसरैग
इत्रीमंत्रपदाइबरननि: द्विजलैलैघरन्तरें। पुनिसुसत्रधारकग्रामज
एक: संनानसंध्यापहरें। बिनुबेदनेदकुदानलैलै: करमनिरितकृषि
करे: सोईपात्रजापेग्रामजाचक: स्नानसबकेआचरें: यवनादिकेअहवे
गिनिरन्तय: वेदसाषाबिसतरें: सत्रमात्रजुबिप्रताबो: आचारजषिग्र
नेक: कीयाकरमसंतोषसंजुत: अनेकमहकोउएक: अनपढेलैलै
धोरपतिग्रह: अनलदिव्यउपाइहैं: देव्याजकरिकरिएककेसत: को
धबसबिबबाइहैं: छितिमांझनगरकहारछत्रीय: करमचोरकरावे

उनिपंथमारहि हलहिम्रांनी: धारिदसदि सिधवही: उपराजिअंनअनीति
अप·कुटंबके पोषनकों· जिहितिहिप्रकारउपाजिअनहि: उदरहितहित
नरें: अनुअक्रूतिसंततधंनपरायन· अजापीउनतमरा·जनउहातिजम
जहातहं·निकटबरतिनिरंतरा।। अनदोषवली अवली निसोकंरि उद्दिक्त
नउतारिहों।।तिहिअंसनिदितआनिनिसरति: आपमुखिग्रहारिहें।। सो द्विजा
नतपितासंपति: जागबसप्रामनयो।।। विहिगरबकरतप्रसिधपोरुष·देवपस्य
गतदयो।।नीचसोंमिलिमंत्रपूछहि: वहैमतलेअनुसरो।। नीतिधरमहितोंकि
निलय:अ[illegible]जमततिउरो।।मंत्राधिकारपाइमंत्रीय·नीतियहबिसतारि
हें।।साथ[illegible]ततिह्छिन·निरपराधहिमारिहे।।ओरकोंकरिसाउस
वो·आनि[illegible]हें।।तिहिपासिलेबकदिअताकें·सर्वकाजसुधारि
हें।।आपनें[illegible]ततपर:स्वामिकेहितकोगनें।।राजकाजबिगारिनि
रलज:कानं[illegible]आपनें।।प्रजाकोंनउकारलगिहें·मारिवारनिकासि
ये।।कमिअसचाखोंलागतेले·अखिलरदेसउजारिये।।सनयससत्राग्र
सम्रधारहि·सरसुनटकहारहें।।मरनकेनयसत्रसोंमिलि स्वामिकाज
नसारहें।।वकदिअदेहिमंत्रवादिन·बीरबिद्याबिसतरो।।करिविवस
जिहितिहिदाउस्वामहि·मंत्रकेबल बसकरें·अनुअगरछिकनिकट
बरती·सहअनरथअन्यासिहें।।स्वामिकोंरिपुमित्रकरिहें·बिअप्रयेगअकालि
हें।।खानपानबिस्वासबिअ·कछुनअंतरजानिहें।।बिसासमारिमहपा
पी·स्वामिघातसुगनिहें।।कमिकरमकमीअकमकरिकरि रजअंसतु
रावही।।तिहिदोषजांहिसमूलनसूनि·करमकेफलपावहीं।।कफिक
तसूदसुविप्रकरमनि·सिषासूत्रहिधारही।।आपानकरनउरांनव
त·वेदअरथविचारही।।सबंधकोंदेविदअगनित·जरवकेसोंवउ
रे।।करिसूद्रजाति विरूधकरमहि·ब्रह्मविद्याबिवहरें।।ब्रह्म
रीनहिदिकअरु·बानप्रसथअहाअमी।।संन्याससेंहेनीचजातिसु:सम
रकअरुनी·ओहारततपरचेरगतिरत:दमलेलुपरीसता।।अक
दाहीगोपिमअगत:पाग बिनुहीपंकिता।।मदअंत्रसूचतनिसादिनम
जवाठकआनियें।।मगमांसलेकरिअसुरमंत्रनि:बधविधांनवधु
सोईहेवनेजनचेटिकासंग·सुरापांनसुसाथही।।मुनिवहतसंत
मुअ·यहसंन्यासआराथही।।नषकांषबाल बिसालजरधर·अस
नअनासही।।करयेहठउंचअवासउजल·बिबिधिसुषनिबिल
सोगधेतलंदोलबिनुते·कालछेपननहीकरें।।आपआपपि
रम·कोधदिषनिपरजरें।।जबबलतस्वामीतीरथजात्रा·अ
ढताचगुदिसिसतनिबेला·बिबिधनानकवि

सनाथउउत्तिनेरिसींग· बनेबाजत बाजही॥ मातंगजिममदमत्तग्रनमिलि·ग्रां
मग्रांम निगाजही॥तहांबेठिग्रष्टासनहिस्वामी· बीचिसिषन बिराजही॥ बनि
बेषजोगसंजोगसंजुत· स्वांगग्रद्भुतसाजही॥ चलकुटिलत्रकुटीग्ररुनले
चन·चोपग्रमलचढाउ॥ बजरंगकाछसुलोहकीबनि· मिलितसिषउमराउ॥
सबकहतस्वामीधंन्यसाधन· सधेएकसरीर॥ग्रापारजोगबिरागबेसव·बन
तनृपतबीर·जरतसोंग्रग्निमानज्वाला· रोमरोमनिरोष॥ ग्रामतेलयेदाम
गनिगनि· तयेसातसंतोष॥ सबकालत्रकुटिबिलाससंजुत·बसतमाउकस
वही॥ मिलिकरतजुधजमातितीरथ· येकयेकनिजेवही॥ ध[illegible]तपात्रसुगंध
सज्या बसत्रबहुसुधारिहे॥ चढिग्रस्वरथगजकरत्तिसिवक[illegible]गरबिहारि
हे॥करिग्रलंकारग्रमूलिनगमय· श्रवनिकरकेंगत[illegible]जातिजम
लिजुतजित· ग्रापथापीग्रनुसरे॥ संन्यासबर्जितबस[illegible]जोग[illegible]त· सुषहिं
तेतेसेवही॥येस्वर्यजुतत्तयेग्रापईस्वर· द्विजनमान[illegible]॥जतीजोग
साधतबाधिग्रासन·क्रीयापसुपतिकीकरे॥ चतुरंगलछि[illegible]केलिचकुदि
सि· सतनिचेलाबिसतरे॥ ग्रहिफेनसंगीसुराग्रामिष· कनकबीजचढार
हे॥ चमरतमुद्रसमभेषल· कलूसियकहारहै॥ कलिसाथसतमहंत
कहिवे· बसनसछिमबासिहे॥ पुनिबेगिग्रसथलग्रमलऊपर· प्रेमकथ
प्रकासिहे॥ सतजूथनारिसिंगारसंजुत· सेवहीनित्यसुंदरी॥ करिहावभाव
कटाछिकेवल· जगतिहितग्रतिरसभरी॥ सबजातिदेहिमहांतसद्दा· कामप
गपसावही॥ गुरदृष्टनातहातनकीसुजस· प्रेमसंजुतपावही॥ जनछाडियेघ
कुरबग्रपने· बसबिदेसबिहारहे॥ ग्ररुवृधकालसुतातमातहिं· छांडि
छेहदिषारहै॥ निजबाकुबलउपराजि बितहिं· सासुसुसरनिपोषिहें॥ सि
वाइपुत्रीयपुत्रबांधव· सादुसालातोषिहै॥ त्रीयपंचबरषाकेप्रसूत· बिबि
धिबसबढारहे॥ तनछोरबफुलग्राहारग्रतिसय· बचिक्षनबनषारहे॥ दसम
त्तबरषजुग्रायुक्तेहैं· चिरजीवीजांनिहैं॥ निसिदिवसमृसतिग्रेहसंपति· कु
लहपतिसींगनिहैं॥ जोईहोस्त्रीयग्रतिपतिहिप्यारी· ग्रधिककोमनसोंक
रे॥ बकुरहेमंत्रग्राराधततपर· बसत्रुकेपुतलाकरे॥ तिहिसिंधिसंधिनसू
चिकादे· जतनसोंतिहिलेधरे॥ पतिमरेकेतोहोरग्रपाहत· तबेरोवेदिन
भरे॥ रतिकरेपतितजिग्रापइछा· ग्रंगबिक्रयकारनी॥ थिरचित्तहेपतिव्रत
धोर्‍ह· बकुतसीबिभचारनी॥ पुनिलोकधरममजादछांडे· उदरकेहितग्र
पनें॥ तिहिकाजवृतिग्रनेकग्राश्रय· करमकुकरमकोगनें॥ बाचालकहि
बेमहापंडित· कबिसुजोमिथ्याकहें॥ चतुरजोपरचितबंचक· उदरभरपे
रुषवहे॥ कचकुचसोईलावन्यकहिबो· सरतामृगीयासही॥ कृषिकरम
थाननिवानपु·कर· कोएनीरनिकासही॥ पसुकाजकाटतहरितपीप

कनग्रानिहैं।।द्विजमारिकरिचारानरहा·मनहिपीरूपमानिहैं।।सि
केयबेसकरिहैं·बतीग्रबलनिमारिहैं।।पुनिबहुबेगिजुवीचपंचनि
रमूछसंवारिहैं।।परमहाराद्रोहनतपुर·जेनग्रलोकनलाजिहैं।।
ासघातबिसबर्बचक·स्वजनमैत्रीसाजिहैं।।जगर्बचकक्केहैंजहीजागर
हितिहिबिसारिहैं।।बेराग्यलेग्रनुरागबिह्वल·बिबिधिलोगबिहरिहैं
रिमिलेलेमुनिमहंतनु·पुष्टतनकरिपोषिहैं।।हरगानिछीनिग्रहसंथले
रीतिकोंग्रतिरोषिहैं।।सुरग्रसलेलेकरेंसंचय·येग्रधर्मतपारहैं।।तिहि
पग्रापर [illegible] नत·जगसमूलसुजाइहैं।।जबधेनग्रजाप्रमानक्केहैं·नेघ
जत [illegible] मावद्वछनिरुधक्केहैं·छिनकमैत्रीमानियें।।नरना·
रिजिहि [illegible] कें·सोतहारतिमानिहैं।।कुललाजबेदग्रजादतजि
कें·सोर्ई [illegible] हैं।।बिष्णुपूजिबिधानबेमुष·जपनतीरथजानियें
रतबकबे [illegible] बचित·पुनिनहीपहचानियें।।बनिनीचबेगतऊंचप
ईई·नेम्रफाग्र [illegible] नीतियें।।पापरूकपरसुदंतप्रानी·नित्तकरहिनयेनये·इस
स्गिकृतग्रन्रथग्रबिहित·बिबिधिलोकहिबिसतरे।।बितिनासक्केहैंमे
घब्बी·पृथ्वीजलबुंदनपुरे।।रबिचक्केहैरदुरतहरोरव·पुष्पारोगप्रक
सिहैं।।त्रिपन्नपर्वीऊतलेकतिहितुम·बसतनग्रबिबासिहैं।।बनगह
नपरबतजाइबसिबसि·ग्ररुग्रकासनिहारिहैं।।फलफूलमूलसुत्वचप
लव·जथालबधग्रहारिहैं।।बरषासुबिघ्नतमानक्केहैं·तदपिग्रासनछूटि
हें।।सबंधहरापितासुतसों·मोहमैत्रीरहिहैं·गहिजातिहहानतबैंहैं·सूं
तुपनबलतजे।।पृथ्वीसुपापकोतिपीडित·नवृतिरिहिजिहिहरिनजे।।बि
परीतकेहैंधरमकीबिधि·बिगलिकरमबखानियें।।दिगबिजयकालका
उसह·येचरितकलिजानियें।।।।दुहा।।छह।।बिधिकलिमहधरमसब·जव
हेंबिपरीत·तहाकल्किग्रवतारहरि·ग्रनुधरेहैंसुपुनीत।।१।।छप्पय धरि
सुनथानसुसंबलनामग्राम·द्विजबसतबिष्णुजसधरमधाम·बहिग्रे
निग्रवतरहिदेव·ग्रहयग्रनंतकलकीग्रजेव·कलिफालग्रंतसतजुगप्रवे
ग्रारोहसेतबाजीसुरेस·बिसतारधरमपापनिबिकार·पितिपुरगयारग
सबयार·सुनसमसीलजपतपसहास·पूजासनेमधरमहिप्रकास·
पसोचवृतदानसंग·ग्राराधसाधसंगतिग्रनंग·द्विजसुरनिकुलसिती
हेव·सवतावसहजसरथासुसेव·बिप्रानप्रानतत्वोबिनाग·न
देवलहिजपनाग·नजिब्रहमब्रहमबिद्याबियान·सुनछित्रिक
यमुजान·निजबेससूद्रनिजकरमनेम·पसुपालकृषीसेवासंप्र
मयधरमबिनतासुसाधि·पतिव्रतासतीबिरजितउपाधि·निज
नचवसावधान·बिद्याबिबेकसंजुतबियान·दिठ्ठनगतिदय

गध्यान· संसारेकंपटबरजितप्रमान· गुनचासकोरि हथ्थीपरेस :परिक्रमनक
ल्किकरिहैं सवेस· साम्लदुष्टअसुरसंघारि ·सुरद्वैदकरहिरन्हासंन्नारि :प
रिक्रमनकलकिकरिहेप्रमानि · इहिहेतलेहिअवतारआनि : आगेंनवबिअ
वतारयेह : सुनधरमस्वेतकिल्कीसेदेह : ।। कबित्त ।। धरमधामसंनतसु
धाम· बिश्रामसुषदबर : तहांबिस्नुजसबिप्र·प्रगटवसिहेंजुधरमपर ।।
तिहिसुअेह अवतार अषिलजुवतारउतारन : कलिप्रन्नावनिरमूल अव
निगतधरमउधारन : निकलंकनीतिकिल्कीनिपुन ·नु[illegible]रिपपाल
जनि : कलिजुगबितीतनरहरसुकबि·महत्तबष्पअ[illegible] ।।१।। इ
तिश्री किल्कीअवतार चरित्रसपूरन ।। अ[illegible] नाम
[illegible]मबरनन ।। कबित्त ।। बिसदआदिबाराह[illegible]जोगद्दि[illegible]रिदिकस
मी· तथाजग्यअवतार· नरजुनारायननामी ।कपिलमुनि[illegible]रिषनधु
वहथ्थुहयग्रीवा : कूरमसफरनरसिंघ· द्विजुबामनहरिदेव[illegible]रूहंसत
नतरथनंतरिह : जामदगनिजगव्यासजयु : रघुनाथकृस्नअरूबाेधअरु
तुवयेतेअवतारनय ।।१।। बिदितनीनअरूबीस· नयेअवतारअगजी
य : सनत्रेतात्रपुरसंजोग· कारनसरूपकीय : अबकलिजुगकेअंत·हत
अवतारसुधेहे· धरमकरममषध्यान· जवेनिरमूलनसेहैं :नवतब
पुनिअवतारजुव· हरिप्रसेषजवनेस हति : अषिलेसस्वेतहयआरुहि
त· प्रभुकिल्कीत्रयलोकपति ।।२।। इहप्रकारअवतार· नयेनवतत्र्प्रन
यजुव : चितानंदस्वोईस·हेतअदभ्भुतदेहजुव । दुष्टदीनदमदयारूप·
रसरोषसुरिजय :नईजुमिनाराक्रांति· तबहिजुवतारसुनजीय ।।द्वि
जबेदसहास्कधर्मद्धि· हितत्रिलोकबंदितहरे ।।सुनसाधसुकदआत
मसकति· कबिनरहरबंदनकरे ।।।३।। सतरहसेतेतीस· नियतसंबत
उतरायन : रितग्रीषमआषाढमास· पषकृस्नसुपावन :बनिआगेति
थजुमिबार· सिधजोगसुमंगल : पुहकररन्मप्रसिध· मध्यपूजितजु
वमंडल· अवतारचरित्रचोईसयें· बिजयसुजसजगबिथ्थस्ये :कबि
दासदासनरहरसुकबि· कृतउधारअपनोकस्ये ।।।।४।। छंदचोपाई ।।
अवतारगीताईस्वरी ।।करिजगतिकबिनरहरकरी ।।महमुगतिमारग
मानिये ।।सोपानसुरगसुजानिये ।। यहसतसरथाउचरे ।।पुनिसोनच
वनेथनपरे ।।समसाधजोबांचेसुने ।।अतिप्रेमनेमहिअपुने ।। सोईस
तजोतिसमाइहैं ।।पैपुनरजनमनपाइहैं ।। दाेहा ।। सोरसह
सअरुआगसो ।। इकसगिकपरआन ।।छंदअनुष्टपकरिसकल :प्र

रनग्रथग्रमान॥१॥ मेजोईसुमेपुरानमहा।कमसोईवरननर्दन [illegible]

तापाक्कहेतसें॥पावेनगविप्रबीन॥२॥ इति श्रीपो [illegible]

वतारचरेत्रेपूबारहटनरहरदासेनबिरचितं॥ इतिश्री [illegible]

पूरन॥सुननबत॥कल्यानमस्त॥राजमहाराजधिराज [illegible]

श्री७सग्रामसिघ [illegible] जागीरीमाहाराजिधिरजमाहारा [illegible]

जीराणावत [illegible] थे॥लिषतंचचोथरीनग्यारामजा [illegible]

सी॥बांचे [illegible] सम बांचज्यो॥मिती मासोत्तम [illegible]

मासेसकल [illegible] ४ सनिवासुरे॥संबत१९८८॥व्रबा -